विशय सूची

रोमियों के विषेश विशयों की सूची

रोमियों की पत्री

रोमियों की पत्री

रोमियों की पत्री

लेखक द्वारा कुछ षब्द : यह टीका कैसे आपकी सहायता कर सकती है?

बाइबलीय अनुवाद एक बुद्धिसंगत और आत्मिक प्रक्रिया है जो प्राचीन प्रेरणा पाए हुए लेखक को इस तरह समझने की कोषिष करता है कि परमेष्वर का संदेष आज के समय में समझा और लागू किया जा सके।

आत्मिक प्रक्रिया बहुत ही महत्वपूर्ण है पर इसे वर्णन करना कठिन है। इसमें परमेष्वर की षरण में जाना और परमेष्वर के प्रति खुल्लापन ज़रूरी है। भूख होना ज़रूरी है (1) परमेष्वर के लिए, (2) उन्हें जानने के लिए, (3) उनकी सेवा करने के लिए। इस प्रक्रिया में प्रार्थना, पाप स्वीकार करना और जीवन षैली में परिवर्तन के लिए तैयार होना षामिल है। बाइबल की अनुवाद प्रक्रिया के लिए पवित्र आत्मा का होना ज़रूरी है पर ईमानदार और भक्त मसीही कैसे बाइबल को अलग रीति से समझते हैं ये एक रहस्य है।

बुद्धिसंगत प्रक्रिया का वर्णन करना आसान है। हमें मूलपाठ में ही बने रहना चाहिए और बिना पक्षपात के और अपने व्यक्तिगत या कलीसियाई पृश्ठभूमी से प्रभावित नहीं होना चाहिए। हम सभी एतिहासिक रूप से सषर्त है। हम में से कोई भी मन से बाहर के या स्वतंत्र अनुवादक नहीं है। यह टीका अनुवाद के तीन सिद्धान्त के साथ बुद्धिसंगत प्रक्रिया को सावधानी से प्रयोग करने के कार्य को प्रस्तुत करती है ताकी हम अपनी पृश्ठभूमी पर विजय पा सकें।

पहला सिद्धान्त

पहला सिद्धान्त यह है कि बाइबल की पुस्तक किस ऐतिहासिक घटना के समय लिखी गई उसे लिखिए और किस ऐतिहासिक घटना के कारण यह लिखी गई। वास्तविक लेखक का इसे लिखने का कोई उद्देष्य था और एक संदेष था जिसे वह बताना चाहते थे। मूलपाठ का अर्थ हमारे लिए कभी भी वो नहीं हो सकता जो अर्थ उसके वास्तविक, प्राचीन और प्रेरणा प्राप्त लेखक के लिए नहीं था। उनका उद्देष्य ही इसकी कुंजी है न कि हमरी ऐतिहासिक , भावनात्मक, सांसकृतिक, व्यक्तिगत या कलीसियाई आवष्यकता। यह लगातार दोहराया जाना चाहिए कि प्रत्येक बाइबलीय मूलपाठ का केवल एकमात्र अर्थ होता है। यह वही अर्थ है जिसे आज के समय के लिए पवित्र आत्म की अगुवाई में वास्तविक लेखक बताना चाहते थे। इस एक अर्थ की विभिन्न संस्कृतियों और परिस्थितियों में विभिन्न व्यवहारिकताऐं हो सकती हैं। पर यह तमाम व्यवहारिकताऐं वास्तविक लेखक के केंन्द्रीय सत्य से जुड़ी होनी चाहिए। इसी कारण बाइबल की हरेक पुस्तक की भूमिका प्रदान करने के उद्देष्य से यह पढ़ने में मार्गदर्षन देने वाली टीका बनाई गई है।

दूसरा सिद्धान्त

दूसरा सिद्धान्त यह है कि मूलपाठ के पूर्ण लेखन संदर्भ को पहचानना। बाइबल की सम्पूर्ण पुस्तकें एक ही लेख हैं। अनुवादक को कोई अधिकार नहीं कि वह किसी एक सत्य का प्रयोग करे और बाकी भाग को एसे ही छोड़ दे।एक भाग का अनुवाद करने से पहले हमें बाइबल की पूरी पुस्तक के उद्देष्य को समझना होगा। एक भाग जैसे– पाठ, अनुच्छेद, और आयत का कभी भी वह अर्थ नहीं हो सकता तो पूरे भाग का नहीं है। अनुवाद पूर्ण भाग का व्याख्यान करने के साथ षुरू होना चाहिए और फिर आयतों के अनुवाद तक पंहुचना चाहिए। इसलिए यह टीका बनाई गई ताकी विद्यार्थी प्रत्येक लिखित संदर्भ को समझ सके। अनुच्छेद और अध्याय प्रेरणा पाए हुए नहीं हैं पर वह हमारी सहायता करते हैं कि एका ही सोच या विशय के भाग को समझ सकें।

एक षब्द, मुहावरा, वाक्यांष या वाक्य का अनुवाद नहीं परन्तु सम्पूर्ण अनुच्छेद का अनुवाद करना ही लेखक के उद्देष्य को समझने की कुंजी है। अनुच्छेद षीर्शक पर आधारित होता है और अधिकतर ये केन्द्रीय विशय या षीर्शक वाक्य के नाम से जाना जाता है। प्रत्येक अनुच्छेद के षब्द, मुहावरे, वाक्यांष और वाक्य उसके षीर्शक पर आधारित होते हैं। ये उसे सीमित करते हैं, बड़ाते हैं, व्याख्या करते हैं और उससे सवाल करते हैं। सही तरह से व्याख्या करने की कुंजी ये है कि प्रत्येक अनुच्छेद को लिखने के पिछे के लेखक के उद्देष्य को समझना जिनके जुड़ने से ही बाइबल का निर्माण हुआ है। ये अध्ययन टीका इसलिए रची गई ताकी विद्यार्थी विभिन्न अंग्रेजी अनुवादों की आपस में तुलना करके अनुवाद कर सके। इन अनुवादों का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि ये भिन्न प्रणालियों से रचे गए हैं।

1. यूनाईटेड़ बाइबल सोसाइटी का यूनानी मूलपाठ चौथी प्रती है। यह मूलपाठ नवीन बुद्धि जीवीयों द्वारा अनुच्छेदों में बाँटा गया।

2. न्यू कींग जेम्स वरषन हरेक षब्द का अनुवाद करके रचा गया जो कि यूनानी हस्त लेख परम्परा जिसे टक्सटस रेसिप्टस कहते हैं पर आधारित है। इसके अनुच्छेद बाकी अनुवादों की अपेक्षा बड़े हैं। यह बड़े अनुच्छेद विद्यार्थी की सहायता करते हैं कि वह जुड़े हुए षीर्शक को देख सके।

3. न्यू रिवाईरुड़ स्टेन्ड़र्ड़ वरषन नवीनतम हरेक षब्द का अनुवाद है। यह दोनों अनुवादों के मध्य के बिन्दु पर केन्द्रीत है। विशय को पहचानने के लिए इसके अनुच्छेद काफी सहायक हैं।

4. टूड़ेस ईंग्लीस वरषन यूनाईटेड़ बाइबल सोसाईटी का षक्तियुक्त समानता का प्रकाषन है। इसमें बाईबल का इस तरह अनुवाद किया गया है कि आज के समय के अंग्रेज़ी बोलने वाले यूनानी मूलपाठ के अर्थ को समझ सकें। अधिकतर, विषेश रूप से सुसमाचारों में, अनुच्छेदों को इसमें वक्ता के आधार पर न कि विशय के आधार पर, ठीक उसी प्रकार जैसे कि एन आई वी में। अनुवाद के उद्देष्य के लिए यह सहायक नहीं है। यह बहुत ही आष्चर्य की बात है कि यू बी एस और टी ई वी एक ही प्रकाषन ने प्रकाषित किए हैं पर फिर भी इनके अनुच्छेद विभाजन में कितना अंतर है।

5. यरूषलेम बाइबल फ्रांस कैथलिक अनुवाद पर आधारित एक षक्तियुक्त समानता का अनुवाद है।

6. छापा हुआ मूलपाठ 1995 का न्यू अमेरिकन स्टेन्ड़र्ड बाइबल का उन्नत अनुवाद है जो कि हरेक षब्द का अनुवाद है। इसके अनुच्छेद में प्रत्येक आयत पर टिप्पणी की गई है।

तीसरा सिद्धान्त

तीसरा सिद्धान्त यह है कि बाइबल के विभिन्न अनुवादों को पढ़ें ताकी इसके विस्तरित अर्थ को समझा जा सके। साधारण तौर पर यूनानी षब्दों और मुहावरों को कई अर्थों में समझा जा सकता है। ये अनुवाद हमारी सहायता करते हैं कि हम यूनानी हस्त लेखों के उन विभिन्न अर्थों को समझ सकें। ये हमारे सिद्धान्तो को प्रभावित नहीं करते परन्तु हमारी सहायता करते हैं कि हम प्रेरणा पाए हुए वास्तविक लेखक द्वारा लिखे षब्दों का सही अर्थ समझ सकें।

टीका विद्यार्थी की सहायता करता है कि वह अपने अनुवाद की जांच कर सके। यह पूर्ण अनुवाद है एसा नहीं है पर यह जानकारी देने वाला और सोचने के लिए प्रेरणा देने वाला है। बाकी अनुवाद हमारी सहायता करते है ताकी हम संकुचित, हठधर्मी और जातीय विचारधारा के न हो जाएें। अनुवादक के पास बहुत से प्रकार के अनुवाद के चुनाव होने चाहिए ताकी वह जान सके कि प्राचीन अनुवाद कितने अनेकार्थी हो सकते हैं। यह बहुत ही चौंका देने वाली बात है कि मसीहियों के बीच कितना थोड़ी सहमति है जो बाइबल को अपने सत्य का स्रोत मानते हैं।

इन सिद्धान्तों ने मेरी सहायता की है कि मैं प्रचीन अनुवादों से संघर्श कर सकूं और अपनी ऐतिहासिक षर्तों पर विजय पा सकूं। मेरी आषा यह है कि यह आपके लिए भी एक आषीश का कारण होगा।

बॉब यूट्ले
ईस्ट टेक्सास बापटिस्ट यूनिवर्सिटी

बाइबल अध्ययन के लिए दिषा निर्देष :
प्रमाणित कर सकने वाले सत्य की स्वयं खोज करना

क्या हम सच जान सकते हैं? यह कहाँ मिलता है? क्या इसे हम तर्कानुसार प्रमाणित कर सकते हैं। क्या कोई अनन्त षक्ति है? क्या ऐसा कोई परम सत्य हैं जो हमारे जीवन और संसार की अगुवाई कर सके? क्या जीवन का कोई अर्थ है? हम क्यों यहाँ पर हैं? हम कहाँ जा रहे हैं? ये बुद्धिसंम्पन्न लोगों द्वारा घृणा किए गए वो सवाल हैं जिन्होंने षुरूवात से ही बुद्धिमान लोगों को भयभीत किया हुआ है (सभो. 1:13–18; 3:9–11)। मैं अपने जीवन के मध्य अंषों की व्यक्तिगत खोज को याद कर सकता हूँ। अपने ही परिवार के मुख्य सदस्यों की गवाही के कारण मैं युवा अवस्था में ही मसीही विष्वासी बन गया। जब मैं जवान हो गया तो अपने और संसार के बारे में प्रष्न भी बढ़ने लगे। साधारण संस्कृति और धार्मिक अनुश्ठान वह अर्थ नहीं ला सके जो मैंने पढ़े और अनुभव किए थे। यह इस अचेतन और कठोर संसार में मेरे दुविधा, खोज, अभिलाशा और आषाहीनता के अनुभव करने का समय था।

बहुत से लोग यह दावा करते हैं कि इन सवालों का उत्तर उनके पास है पर खोज और मनन के बाद मैंने पाया कि उनके उत्तर इन बातों पर आधारित थे : 1) व्यक्तिगत तत्वज्ञान, 2) प्राचीन मिथ्या, 3) व्यक्तिगत अनुभव और 4) मनोवैज्ञानिक प्रवृति। मुझे जरूरत थी कुछ प्रमाणों, कुछ सबूतों, कुछ तर्काधार बातों की जिन पर मैं अपना संसारिक दृश्टिकोणों, अंषों का बना मेरा जीवन और मेरे जीने का कारण आधारित कर सकूं।

मैंने ये सब कुछ अपने बाइबल के अध्ययन में पाया। मैं इसकी विष्वासयोग्यता के प्रमाणों का खोजने लगा, जो मुझे इन जगहों पर मिले : 1) पुरातत्व विज्ञान के द्वारा बाइबल विष्वस्त ऐतिहासिकता का प्रमाण, 2) पूराने नियम की भविश्यवाणीयों की पूर्णता, 3) 1600 साल के बाइबल के लेखन काल में भी बाइबल के संदेष में एकता, 4) उन लोगों के व्यक्तिगत जीवन की गवाही जिनका जीवन बाइबल के सम्पर्क में आते ही पूरी तरह से बदल गया। विष्वास और मत विचार का मिश्रण होने के कारण मसीहत में वो काबलियत है कि वह मानव जीवन के पेंचीदा सवालों के जवाब दे सकती है। इसने न केवल प्रमाणिक चौखट प्रदान कर अपितु बाइबलीय विष्वास के प्रायोगिक चरण को भी प्रस्तुत किया जिसने मेरे अन्दर भावनात्मक आनन्द और दृढ़ता उत्पन्न की। मैंने सोचा कि मैंने अपने जीवन के मध्य अंष को पा लिया है–मसीह, जैसा कि पवित्र षास्त्र से समझा जा सकता है। यह एक विचारात्मक अनुभव और भवात्मक छुटकारा है। मैं अब भी उन धक्कों और दर्दों को याद करता हूँ जब एक ही कलीसिया और एक ही विचार रखने वाले विद्यालयों से इस पुस्तक के अलग–अलग अनुवादों की वकालत करते थे। बाइबल की प्रेरणा और विष्वस्तता को साबित करना अन्त नहीं परन्तु केवल षुरूवात है। मैं कैसे बाइबल को आधिकारिक और विष्वस्त समझने वाले लोगों द्वारा बाइबल के कठिन भागों के आपस में टकराने वाले अनुवादों को ग्रहण कर सकता हूँ या उनका तिरस्कार कर सकता हूँ?

यह कार्य मेरे जीवन का लक्ष्य और मेरे विष्वास का तीर्थस्थल बन गया। मैं जानता था कि मसीह पर विष्वास करने के कारण : 1) मेरे जीवन में अगम्य षान्ति और आनन्द था। मेरी संस्कृति के बीच मेरा दिमाग किसी पूर्णता की खोज में था। 2) संसारिक विवादास्पद धर्मों का हठधर्मीपन; और 3) जातीय घमण्ड। प्राचीन लेख की प्रमाणिक अनुवाद की विधियों की तलाष ने मेरे अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, जातीय और अनुभव के पक्षपात को समझने में मेरी देखरेख की। अधिकतर मैं अपने ही विचारों को थोपने के लिए बाइबल पढ़ा करता था। मैंने दूसरों पर प्रहार करने के लिए इसका प्रयोग हठधर्म के स्रोत के रूप किया और साथ ही अपनी असुरक्षा और अपर्याप्तता को प्रमाणित किया। इसे समझना मेरे लिए कितना दर्दनाक है।

मैं कभी भी स्थूल नहीं हो सकता परन्तु केवल बाइबल का एक अच्छा पाठक बन सकता हूँ। मैं अपने पक्षपात को पहचान कर और उनके अस्तित्व की मौजूदगी को समझ कर उसे सीमित कर सकता हूँ। मैं उनसे स्वतंत्र नहीं हूँ पर मैने अपनी कमज़ोरी का सामना कर लिया है। अधिकतर एक अनुवादक ही बाइबल का सबसे बुरा षत्रु होता है।

मैं अपनी पूर्वधारणा की सूची जो बाइबल को पढ़ने के समय मेरे मन में थी उसे प्रस्तुत करना चाहता हूँ ताकी आप, पाठक, स्वयं को जांच सकें।

(1) पूर्वधारणा

क) मैं विष्वास करता हूँ कि बाइबल एक सच्चे परमेष्वर की स्वयं को प्रकट करने के लिए एक स्वयं प्रकाषन है। इसलिए इसका अनुवाद इसके वास्तविक ईष्वरीय लेखक (पवित्रात्मा) के उद्देष्य के प्रकाष में तथा मानव लेखक की ऐतिहासिक परिस्थिति में होना चाहिए।

ख) मैं विष्वास करता हूँ कि बाइबल सामान्य व्यक्ति (सभी मनुश्यों) के लिए लिखी गई है। परमेष्वर ने हमसे स्पश्ट बातें करने के लिए स्वयं को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में ढ़ाल लिया। परमेष्वर कभी भी सत्य नहीं छिपाते पर चाहते हैं कि हम उसे जानें। इसलिए उसे उसके दिन के प्रकाष में ही अनुवाद करना चाहिए न कि हमारे। बाइबल का हमारे लिए वह अर्थ नहीं होना चाहिए जो उसके सबसे पहले पढ़ने और सुनने वालों के लिए नहीं था। इसे साधारण मानवीय दिमाग द्वारा समझा जा सकता है क्योंकि यह साधारण मनुश्य की भाशा और विधि में लिखी गई है।

ग) मैं विष्वास करता हूँ कि बाइबल में एक संदेष और इसका एक उद्देष्य है। यह कभी भी स्वयं का विरोध नहीं करती यद्धपि इसमें कठिन लिखित भाग हैं। इसलिए बाइबल का उत्तम अनुवादक बाइबल स्वयं है।

घ) मैं विष्वास करता हूँ कि भविश्यवाणीयों को छोड़ सभी भागों का एक ही अर्थ है जो प्रेरणा पाए हुए और वास्तविक लेखक के उद्देष्य पर आधारित है। हम कभी भी वस्तविक लेखक की सम्पूर्ण मनसा को नहीं जान सकते पर उस ओर जाने के कुछ निर्देष हैं।

1) संदेष को पहुँचाने के लिए किस तरह की लेखन विधि का प्रयोग किया गया है।
2) ऐतिहासिक घटना या विषेश घटना जिसने लेख को जन्म दिया।
3) सम्पूर्ण पुस्तक और लिखित साहित्य भाग का साहित्य सम्बन्धी संदर्भ।
4) मूलपाठ रचनातंत्र जो साहित्य भाग जो सम्पूर्ण संदेष का वर्णन करता है।
5) संदेष पहुँचाने के लिए विषेश व्याकरण का प्रयोग किया गया है।
6) संदेष को प्रस्तुत करने के लिए किन षब्दों का प्रयोग किया गया है।
7) सदृष्य लेख।

इन सभी बातों का अध्ययन करना लेख के अध्ययन करने का साधन है। इससे पहले कि मैं अपनी बाइबल पढ़ने की अच्छी विधि बताऊँ, मैं आज कल प्रयोग में लाई जाने वाली गलत विधियों की चर्चा करना चाहता हूँ जिन्होंने अनुवाद में भिन्नता उत्पन्न कर दी है और इन्हें प्रयोग में नहीं लाना चाहिए।

(2) गलत विधियाँ

1. बाइबल के सम्पूर्ण साहित्य संदर्भ को छोड़ एक वाक्य, वाक्यांष, या षब्द को सत्य वाक्य के रूप में प्रयोग करना जो लेखक और पूरे संदर्भ का उद्देष्य न हो। इसे ''प्रमाणित–मूलपाठ'' कहते हैं।

2. बाइबल के ऐतिहासिक आधार को छोड़ देना और काल्पनिक इतिहास जिसे मूलपाठ या तो थोड़ा या बिलकुल भी प्रमाणित नहीं करता।

3. बाइबल के ऐतिहासिक आधार को छोड़ देना और उसे सुबह के अख़बार के समान पढ़ना जैसे कि वह प्राथमिक रूप से नए ज़माने के मसीहियों के लिए लिखी गई हो।

4. बाइबल के ऐतिहासिक आधार को छोड़ देना और रूपक कथा द्वारा मूलपाठ को तत्वज्ञान और धर्मषिक्षा के रूप में संदेष को प्रकट करना जो पहले पाठक और लेखक के उद्देष्य से बिलकुल मेल न खाता हो।

5. वास्तविक संदेष को छोड़कर अपनी ही धर्मषिक्षा, सिद्धान्त और वर्तमान घटनाओं के बारे में सीखना जो वास्तविक लेखक और दिए गए संदेष से मेल न खाए। यह बात तब होती है जब वक्ता अपने अधिकार को साबित करने के लिए बाइबल पढ़ता है। इसे ''पाठक के प्रतिउत्तर'' के रूप में जाना जाता है (इस मूल पाठ का मेरे लिए क्या अर्थ है)।

प्रत्येक मानव रचित लेखों में तीन अंष पाए जाते हैं।

वास्तविक लेखक का उद्देष्य	लिखित मूलपाठ	वास्तविक प्राप्तकर्ता

पीछलि अध्ययन प्रणाली तीन में से एक बात पर केन्द्रीत थी। सही रूप से अतुल्य प्रेरणात्मक बाइबल को प्रमाणित करूँ तो नवीनतम रेखा चित्र अधिक सही है।

पवित्रात्मा	हस्तलेख वर्गभेद	बाद के विष्वासी
वास्तविक लेखक का उद्देष्य	लिखित मूलपाठ	वास्तविक प्राप्तकर्ता

सच्चाई में ये तीनों ही अंष अनुवाद प्रणाली में षामिल होना चाहिए। प्रमाणिकता के उद्देष्य से मेरे अनुवाद षुरू के दो अंषों पर केन्द्रीत होते हैं : वास्तविक लेखक और मूलपाठ। मैं उन दुरूपयोगों का विराध कर रहा हूँ जिन्हें मैंने देखा है। 1) मूलपाठ को रूपक कहानियों और आत्मिक बातों में बदलना। 2) पाठक का प्रतिउत्तर (इस मूल पाठ का मेरे लिए क्या अर्थ है)। दुरूपयोग किसी भी स्तर पर हो सकता है। हमें हमेषा अपने उद्देष्य, पक्ष, तरीके और व्यवहारिकता को जाँचना चाहिए। इन्हें हम कैसे जाँचें अगर अनुवाद करने की कोई सीमा न हो? वास्तविक लेखक और मूलपाठ का उद्देष्य ही मुझे अनुवाद की सीमा रखने में सहायता करता है।
इन गलत अध्ययन विधियों के प्रकाष में अच्छे बाइबल अध्ययन और अनुवाद के कौन से तरीके हो सकते हैं जो प्रमाणिकता और एकजुटता लाते हैं।

(3) अच्छे बाइबल अध्ययन के सम्भव तरीके

यहाँ पर मैं विषेश बाइबल अनुवाद के बारे में चर्चा नहीं कर रहा पर सामान्य अनुवाद सिद्धान्त के बारे में बात कर रहा हूँ जो सभी प्रकार के साहित्य के अनुवाद में सहायता कर सकता है। विभिन्न प्रकार के लेखों का अनुवाद कैसे करना है इसके लिए गॉर्ड़न फी और ड़गलस स्ट्राउट की पुस्तक ''हाऊ टू रीड़ बाईबल फॅार ऑल इट्स वर्थ'' उत्तम है।

मेरा तरीका यह है कि षुरूवात में पवित्रात्मा को कार्य करने दें कि वह साहित्य के चार अध्ययन क्रमों में इसे समझने में आपकी सहायता करे। यह पवित्रात्मा, मूलपाठ और पाठक को प्राथमिक बनाता है न कि अप्रधान। यह पाठक की भी सहायता करता है कि वह पूरी तरह से टीका पर आश्रीत न हो जाए। मैंने एसा कहते हुए सुना है कि ''बाइबल टीका पर रोषनी ड़ालती है।'' इसका अर्थ यह नहीं कि मैं अध्ययन सहायक सामग्री की आलोचना कर रहा हूँ पर मैं यह विनती करना चाहता हूँ कि उनका प्रयोग सही समय पर करें।

हममें अपने अनुवाद को मूलपाठ से प्रमाणित करने की क्षमता होनी चाहिए। पाँच क्षेत्र सीमित प्रमाणिकता प्रदान करते हैं।

1. वास्तविक लेखक की

क) ऐतिहासिक पृश्ठभूमी
ख) साहित्य संदर्भ

2. वास्तविक लेखक का चुनाव

क) व्याकरण रचना

ख) समकालीन कार्य प्रयोग
ग) लेखन विधि

3. सही की हमारी पहचान

क) सदृष्य सहित्य

हममें अपने अनुवाद के पीछे के कारण और स्वभाविकता को प्रमाणित करने की क्षमता होनी चाहिए। विष्वास और प्रयोग के लिए हमारे पास बाइबल ही एक मात्र स्रोत है। दुःख की बात है कि मसीह लोग इसकी षिक्षा और प्रमाणिकता का इन्कार करते हैं। यह स्वयं को ही हराने की बात है कि विष्वासी बाइबल को प्रेरणा पाया हुआ कहते हैं पर इसकी षिक्षाओं और उसकी मांग का इन्कार करते हैं।

चार अध्ययन कालचक्र जो कि अनुवाद के कार्य पर प्रकाष ड़ालने के लिए रचे गए हैं।

1. पहला अध्ययन कालचक्र

क) एक ही बार में पुस्तक को पढ़ना। फिर उसे दूसरे अनुवाद में पढ़ना।
– हरेक षब्द का अनुवाद (एन के जे वी, एन ए एस बी, एन आर एस वी)
– षक्तियुक्त समानता (टी इ वी, जे बी)
– भावानुवाद (लीवीगं बाईबल, एम्पलीफाइड़ बाईबल)

ख) पूरे लेख के केन्द्रीय उद्देष्य की खोज कीजिए। केन्द्रीय विशय को पहचानिए।

ग) साहित्य भाग को अलग कीजिए जैसे– अध्याय, अनुच्छेद, वाक्य जो स्पश्ट रूप से केन्द्रीय उद्देष्य या विशय को प्रकट करता हो।

घ) विषिश्ट साहित्य लेखन प्रणाली को पहचानिए।

– पूराना नियम
(1) इब्रानी वृत्तान्त
(2) इब्रानी काव्य (बुद्धि साहित्य, भजन संहिता)
(3) इब्रानी भविश्यवाणी (गध्य, काव्य)
(4) व्यवस्था नियम

– नया नियम
(1) वृ त्तान्त (सुसमाचार, प्रेरित)
(2) दृश्टान्त (सुसमाचार)
(3) पत्र
(4) भविश्यसूचक साहित्य

2. दूसरा अध्ययन कालचक्र

क) मुख्य षीर्शक या विशय को पहचानने के उद्देष्य से पूरी पुस्तक को फिर से पढ़ें।

ख) मुख्य षीर्शक को लिखिए और उसकी लिखित सामग्री को साधारण वाक्यों में लिखिए।

ग) अपने उद्देष्य वाक्य को जाँचीए और रूपरेखा को बढ़ाइए।

3. तीसरा अध्ययन कालचक्र

क) पूरी पुस्तक को फिर से पढ़िए और उसके ऐतिहासिक पृश्ठाधार और लिखने के पीछे की परिस्थितियों को पहचानने की कोषीष कीजिए।

ख) ऐतिहासिक चीज़ें जो पुस्तक में लिखी गई हैं उन्हें लिखिए।
– लेखक
– तारीख
– प्राप्तकर्ता
– लिखने का कारण
– लिखने के उद्देष्य का सांस्कृतिक पृश्ठाधार।
– ऐतिहासिक लोगों और घटनाओं के बारे में लेख।

ग) जिस पुस्तक का आप अनुवाद करना चाहते हैं उसकी रूपरेखा को अनुच्छेद के रूप मे विस्तरित कीजिए। साहित्य लेख को हमेषा पहचानिए। ये षायद बहुत से अनुच्छेद और अध्याय हो सकता है। यह आपकी सहायता करता है कि आप वास्तविक लेखक के उद्देष्य और लेखन प्रणाली को समझ सकें।

घ) अध्ययन सामग्री की सहायता से ऐतिहासिक पृश्ठाधार को जाँचिए।

4. चौथा अध्ययन कालचक्र

क) विभिन्न अनुवादों में साहित्य भाग को बार – बार पढ़ें।
– हरेक षब्द का अनुवाद (एन के जे वी, एन ए एस बी, एन आर एस वी)
– षक्तियुक्त समानता (टी इ वी, जे बी)
– भावानुवाद (लीवीगं बाईबल, एम्पलीफाइड़ बाईबल)

ख) साहित्य और व्याकरण की संरचना को पहचानिए।
– दोहराए गए मुहावरे, इफि.1:6, 12, 13
– दोहराए गए व्याकरण संरचना, रोमियों8:31
– सामान्य विचार अवधारणा में विरोध।

ग) निम्नलिखित चीज़ों की सूची बनाईए।
– अर्थपूर्ण बातें
– असाधारण बातें
– महत्वपूर्ण व्याकरण संरचना
– खास तौर पर कठिन षब्द, वाक्यांष और वाक्य।

घ) सदृष्य लेख की खोज कीजिए
– निम्नलिखित के द्वारा अपने विशय के स्पश्ट षिक्षा देने वाले लेख की खोज कीजिए :
(1) ''यथाक्रम धर्मषास्त्र'' की पुस्तकें
(2) परस्पर सम्बन्ध वाली बाइबल
(3) अनुक्रमणिका
– अपने ही विशय में विरोधाभासी जोड़े को खोज़ें। बहुत से बाइबलीय सत्य द्वंद्वात्मक जोड़े में आते हैं, विभिन्न कलीसियाई जातीय विवाद आधे बाइबलीय परेषानियों के साहित्य को साबित करने के कारण आते हैं। सम्पूर्ण बाइबल प्रेरणा द्वारा रची गई है हमें इसके पूर्ण संदेष को तलाषना है ताकी अनुवाद में वचनों का तौल बराबर हो।
– एक ही पुस्तक, लेखक और एक ही प्रकार के साहित्य लेख में सदृष्यता खोजिए, बाइबल ही अपनी सबसे अच्छी अनुवादक है क्योंकि इसका एक ही लेखक है, पवित्रात्मा।
ङ) अपनी ऐतिहासिक और घटना क्रम की परख को जाँचने के लिए अध्ययन के लिए सहायक सामग्री को प्रयोग करें।

– अध्ययन सहायक बाइबल
– बाइबल के षब्दकोश, विष्व कोश, गुटिका
– बाइबल की भूमीका

– बाइबल की टीका (अपने अध्ययन के इस बिन्दु पर विष्वासियों के पुर्व और वर्तमान समूह को अनुमति दें कि वह आपके व्यक्तिगत अध्ययन को ठीक कर सकें।)

(4) बाइबलीय अनुवाद का व्यवहारिकरण

इस बिन्दु पर हम व्यवहारिकरण की ओर मुड़ते हैं। आपने साहित्य को इसके वास्तविक पृश्ठाधार में समझने के लिए समय लगाया है अब इसे अपने जीवन और संस्कृति में लागु करने की आवष्यकता है। मैं बाइबल के अधिकार का इस प्रकार वर्णन करता हूँ ''बाइबल के वास्तविक लेखक उनके समय में क्या कहना चाहते थे उसे समझना और उस सत्य को अपने दिनों में लागु करना''।

समय और तर्क के आधार पर वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने के बाद किए गए अनुवाद के बाद उसे व्यवहार में लाना भी जरूरी है। हम बाइबल के भाग को तब तक अपने दिनों में लागु नहीं कर सकते जब तक हम यह नहीं जानतें कि उसके वास्तविक दिनों में उसका क्या अर्थ था। बाइबल के भाग का कभी भी वो अर्थ नहीं निकलना चाहिए जो उसका अर्थ कभी नहीं था।

आपकी विवर्णात्मक रूपरेखा से अनुच्छेद तक का स्तर (तीसरा अध्ययन कालचक्र) आपकी अगुवाई करेगा। व्यवहारिकरण अनुच्छेद स्तर पर होना चाहिए न कि षब्द स्तर पर। षब्द, वाक्यांष और वाक्य का अर्थ केवल संदर्भ में है। अनुवाद प्रक्रिया में प्रेरणा पाया हुआ केवल एक ही व्यक्ति षामिल है और वो है वास्तविक लेखक। हम पवित्रात्मा की ज्योति में केवल उनका अनुसरण करते हैं। यह ज्योति प्रेरणा नहीं है। ''यहोवा यूँ कहते हैं'' कहने के लिए हमे वास्तविक लेखक के उद्देष्य के साथ बने रहना पड़ेगा। व्यवहारिकता का पूरे लेख के सामान्य उद्देष्य, विषेश लेख साहित्य भाग और अनुच्छेद स्तर की विचार उन्नति के साथ सम्बन्ध होना चाहिए।

हमारे प्रतिदिन की घटनाऐं अनुवाद न करें परन्तु बाइबल को बोलने दें। यह हमसे साहित्य में से सिद्धान्त निकालने की माँग करेगा। यह तभी प्रमाणित है जब साहित्य सिद्धान्त का समर्थन करता हो। दुर्भाग्यवष अधिकतर हमारे सिद्धान्त हमारे सिद्धान्त होते हैं न कि साहित्य के सिद्धान्त।

जब हम बाइबल का व्यवहारिकता में लातें हैं तो यह याद रखना बहुत ही आवष्यक है कि भविश्यद्वाणी को छोड़ बाकी सभी भागों का केवल एकमात्र अर्थ होता है। अर्थ इसके वास्तविक लेखक के उद्देष्य से सम्बन्धित है जब उन्होंने उस समय की जरूरत और मुसीबतों के लिए लिखा था। इसके एक ही अर्थ से कई व्यवहारिक बातें निकाली जा सकती हैं। व्यवहारिकता लोगों की आवष्यकता के अनुसार हो सकती है पर वास्तविक लेखक के अर्थ से सम्बन्धित होनी चाहिए।

(5) *अनुवाद का आत्मिक भाव*

अब तक मैं अनुवाद और व्यवहारिकता के तार्किक और साहित्यीक प्रक्रिया के विशय मे चर्चा कर रहा था। पर अब मैं थोड़े षब्दों में अनुवाद के आत्मिक भाव की चर्चा करना चाहता हूँ। निम्नलिखित जाँच सूची मेरे लिए सहायक सिद्ध हुई :

1. पवित्रात्मा की सहायता पाने के लिए प्रार्थना करो (1कुरि.1:26–2:16)

2. व्यक्तिगत क्षमा के लिए और प्रकट पापों के लिए प्रार्थना करो (1यूह.1:9)

3. परमेष्वर को जानने के लिए अत्यधिक इच्छा के लिए प्रार्थना करो (भ.सं.19:7–14; 42:1...; 119:1...)

4. अगर कोई नया प्रकाष मिला है तो तुरन्त उसे अपने जीवन में लागु करो।

5. दीन और षिक्षा पाने को तैयार रहो।

तर्क प्रक्रिया और पवित्रात्मा की अगुवाई में समान तौल बनाए रखना बहुत कठिन है। निम्नलिखित लेखों ने इसमें मेरी काफी सहायता की है :

क) स्क्रीपचर टवीस्टींग (पृश्ठ 17–18) – जेमस डबल्यू सरी
केवल आत्मिक तौर पर उन्नत ही नहीं पर परमेष्वर के लागों के दिमाग में भी ज्योति आती है। बाइबलिय मसीहत में कोई गुरू स्तर या प्रकाष पाए हुए मात्र लोग नहीं हैं जिनसे सिद्ध अनुवाद मिलता हो। जब पवित्रात्मा बुद्धि, ज्ञान और आत्मा की परख का वरदान देती है तो वह इन्हीं वरदान पाए हुए मसीहियों को ही वचन के अधिकार पाए हुए मात्र अनुवादक के रूप में नहीं रहने देती। यह परमेष्वर के लोगों पर निर्भर करता है कि वह बाइबल जो की सर्वाधिकारी है से सिखें, जाँचें और परखें और साथ ही उनसे भी जिन्हें विषेश वरदान मिले हैं। परिकल्पना को पूरी पुस्तक के साराषं के तौर पर मैं यूँ कहता हूँ कि ''बाइबल पूरी मानव जाती के लिए परमेष्वर का सत्य प्रकाष है, जिस किसी विशय पर ये बात करती है उन सभी पर इसका सर्वाधिकार है, यह पूरी तरह से रहस्य नहीं है तथा हरेक संस्कृति के सामान्य लोग इसे समझ सकते हैं।''

ख) प्रोटेस्टेन्ट बिबलिकल इन्टरप्रटेषन (पृश्ठ 75) :

केरिगार्ड के अनुसार बाइबल का व्याकरण, षब्द–संग्रह, और ऐतिहासिक अध्ययन आवष्यक है परन्तु सबसे पहले सच्चा बाइबल अध्ययन जरूरी है। ''बाइबल को परमेष्वर के वचन के रूप में पढ़ने के लिए व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने हृदय को मुँह में रखकर पढ़े, पूर्ण तैयारी के साथ, पाने की आषा से, और परमेष्वर से बात करने के उद्देष्य से पढ़े। बाइबल को बिना विचार, असावधानी, पढ़ाई के उद्देष्य, व्यवसायीक तौर पर पढ़ना इसे परमेष्वर के वचन के रूप में पढ़ना नहीं है। जब व्यक्ति इसे प्रेम पत्र के रूप में पढ़ता है तो वह इसे परमेष्वर के वचन के रूप में पढ़ता है।''

ग) एच. एच. रौले की द रैवलेषन ऑफ द बाइबल (पृश्ठ 19) :

''बाइबल को केवल बुद्धिमता से समझना, चाहे वह पूरा ही क्यों न हो, इसके सम्पूर्ण खज़ानों को नहीं समझ को समा नहीं सकता। यह एसी समझ को तिरस्कार नहीं कर रहा क्योंकि पूर्ण समझ होना जरूरी है। यदि इसे पूरा होना है तो ये हमें बाइबल के आत्मिक खज़ाने के लिए आत्मिक समझ की ओर ले जाने वाला होना चाहिए। इसके लिए बुद्धिमता की जागरूकता से अधिक आत्मिक समझ की जरूरत है। आत्मिक चीज़ो को आत्मिक रूप से ही पहचानना चाहिए, और बाइबल के विद्यार्थी को आत्मिक ग्रहणषील होना चाहिए, परमेष्वर को पाने के लिए खोजी होना चाहिए ताकी वह स्वयं को परमेष्वर में लीन कर सके, यदि वह अपनी वैज्ञानिक समझ से ऊपर इस सबसे महान पुस्तक के समृद्ध उत्तराधिकार को पाना चाहता है।''

(5) इस टीका की विधि

अध्ययन सहायक टीका निम्नलिखित तरह से अनुवाद की प्रक्रिया में आपकी सहायता करने के लिए बनाई गई है :

1. छोटी सी ऐतिहासिक रूपरेखा प्रत्येक पुस्तक की भूमीका बान्धती है। ''अध्ययन का कालचक्र तीन'' पूरा करने के बाद आप इस जानकारी को जाँचीए।

2. संदर्भ पर प्रकाषन प्रत्येक अध्याय की षुरूवात में पाया जाता है। यह आपकी सहायता करेगा ताकी आप साहित्य भाग की बनावट देख सकें।

3. हरेक अध्याय और मुख्य साहित्य भाग की षुरूवात में अनुच्छेद विभाजन और उनका व्याख्यात्मक षीर्शक विभिन्न अनुवादों से दिया गया है :

क) यूनाईटेड़ बाइबल सोसाईटी का यूनानी मूलपाठ चौथी प्रती पुनः प्रकाषित (यू बी एस)

ख) न्यू अमेरिकन स्टेन्ड़र्ड बाइबल, 1995 में पुनः उन्नत (एन ए एस बी)

ग) न्यू कींग जेम्स वरषन (एन के जे वी)

घ) न्यू रिवाईस्ड़ स्टेन्ड़र्ड वरषन (एन आर एस वी)

ङ) टूड़ेस ईंग्लीस वरषन (टी इ वी)

च) यरूषलेम बाइबल (जे बी)

अनुच्छेद विभाजन प्रेरणा पाया हुआ नहीं है। इनका निष्चय संदर्भ से करना चाहिए। अलग अलग प्रकार की अनुवाद प्रणाली और धार्मिक विचार की नवीनतम अनुवादों की आपस में तुलना करने के द्वारा हम वास्तविक लेखक के विचारों के ढ़ाँचे को समझ सकते हैं। हरेक अनुच्छेद का एक मुख्य सच होता है। इसे ''षीर्शक वाक्य'' या ''साहित्य का केन्द्रीय विचार'' कहते हैं। ये एकता पूर्ण विचार ऐतिहासिक, व्याकरात्मक अनुवाद की कुजीं है। अनुच्छेद से कम में किसी को भी प्रचार या षिक्षा नहीं देनी चाहिए। यह भी याद रखें कि हरेक अनुच्छेद अपने आस पास के अनुच्छेदों से जुड़ा होता है। इसी लिए पूरी पुस्तक की अनुच्छेद स्तर की रूपरेखा इतनी महत्वपूर्ण है। हमें वास्तविक लेखक के विशय का अनुसरण करना जरूरी है।

4. बॉब के लेख प्रत्येक आयत का अनुवाद है। ये हम पर दवाब ड़ालता है कि हम वास्तविक लेखक के विचारों का अनुसरण कर सकें। ये लेख विभिन्न क्षेत्रों से जानकारी प्रदान करता है :

1) साहित्य संदर्भ
2) ऐतिहासिक, सांस्कृतिक प्रकाषन
3) व्याकरण की जानकारी
4) षब्दों का अध्ययन
5) सदृष्य साहित्य

5. टीका के किसी – किसी भाग में न्यू अमेरिकन स्टेंड़र्ड़ वरषन की जगह अन्य अनुवादों का प्रयोग किया गया है।

क) न्यू कींग जेम्स वरषन (एन के जे वी), जिसमें ''टैक्सटस रिसील्टस'' के साहित्यीक हस्त लेख का अनुसरण किया गया है।

ख) न्यू रिवाइस्ड़ स्टेंड़र्ड़ वरषन(एन आर एस वी), जो नेषनल काऊँसिल ऑफ चर्चचिस के रिवाइस्ड़ स्टेंड़र्ड़ वरषन का षब्द प्रति षब्द अनुवाद है।

ग) टूड़ेस ईंग्लीस वरषन(टी इ वी), अमेरिकन बाइबल सोसाइटी का षक्तियुक्त समानता अनुवाद है।

घ) यरूषलेम बाइबल (जे बी), फ्रेन्च कैथोलिक षक्तियुक्त समानता अनुवाद का अंग्रेज़ी अनुवाद।

6. जो लोग यूनानी नहीं पढ़ सकते, अंग्रेज़ी के विभिन्न अनुवादों की तुलना उनकी सहायता कर सकती है कि वे साहित्य की समस्या को पहचान सकें।
क) हस्तलिखित अन्तर
ख) वैकल्पिक षब्दार्थ
ग) व्याकरण तौर पर कठिन साहित्य और ढ़ाँचा
घ) संदिग्ध साहित्य

यूँ तो अंग्रेज़ी अनुवाद इन समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते, पर वे उन क्षेत्रों पर लक्ष्य बनाकर गहरी और ध्यान पूर्वक अध्ययन करने में सहायता करते हैं।

7. हरेक अध्याय के अन्त में चर्चा के लिए सम्बन्धित प्रष्न दिए गए है जो कि अध्याय के मुख्य अनुवाद के विशय को लक्ष्य बनाकर पूछे गए हैं।

रोमियों की पत्री

भूमिका

प्रथम वाक्य

1) प्रेरित पौलुस द्वारा लिखित रोमियों बहुत ही क्रमबद्ध तथा तर्कानुसार सैद्धान्तिक पुस्तक है। यह रोम की परिस्थितियों से प्रभावित है इस कारण यह एक ''प्रासंगिक'' लेख है। किसी घटना के कारण पौलुस को यह पत्र लिखना पडा। यह पौलुस का बहुत ही अनाविश्ट लेख है इसमें समस्याओं से जुझने का तरिका, (सम्भवतः विष्वासी यहूदियों तथा अन्यजातिय अगुवों के बीच जलन, देखिए 14:1–15:13) बहुत ही स्पश्ट सुसमाचार का प्रस्तुतिकरण और प्रतिदिन के जीवन में इसका उपयोग है।

2) रोमियों में पौलुस के सुसमाचार के प्रस्तुतिकरण ने कलीसियाई जीवन को हरेक सदी में प्रभावित किया है।

क) रोमियों 13:13–14 पढ़ने के कारण 386 ई0 में अगस्तिन का हृदय परिवर्तन हुआ।

ख) मार्टिन लूथर की उद्धार की समझ तब मौलिक रूप से बदल गई जब उसने 1513 ई0 में भजन संहिता 31:1 की तुलना रोमियों 1:17 से की (देखिए हबक्कूक 2:4)

ग) जॉन वैसली का परिवर्तन लन्दन में 1738 ई0 में हुआ। वह मेनोनाईट चर्च के साथ चल रहा था जब उसने मार्टिन लूथर द्वारा रोमियों की भूमिका पर लिखित प्रचार पढ़ते हुए सुना।

3) रोमियों को जानना मसीहत को जानना है। यह पत्र यीषु मसीह के जीवन और षिक्षाओं को सर्वकालीन कलीसियाओं की आधार षील सत्य के रूप में प्रस्तुत करता है। मार्टिन लूथर कहता है ''यह नए नियम की प्रमुख पुस्तक तथा षुद्ध सुसमाचार है।''

लेखक

पौलुस ही इसके स्वभाविक लेखक हैं। उनका अभिवादन करने का तरीका 1:1 में मिलता है। यह साधारतया माना जाता है कि पौलुस के ''षरीर का कांटा'' उनकी आँखों की खराब रोषनी थी इस कारण उन्होंने षारीरिक तौर से स्वयं यह पत्र नहीं लिखा पर एक लेखक तिरतियुस से लिखवाया। (देखिए 16:22)

तारीख

क) सम्भवतः रोमियों को लिखने की तारीख 56–58 ई0 है। यह नए नियम की उन पुस्तकों में से है जिनकी तारिख लगभग ठीक लगाई जा सकती है। यह काम प्रेरित20:2 के बाद की तुलना रोमियों15:17 के बाद से करके किया गया है। रोमियों की पत्री पौलुस की तीसरी मिष्नरी यात्रा के लगभग अन्त में उनके यरूषलेम जाने से पहले कुरिन्थुस से लिखी गई।

ख) सम्भवतः पौलुस के लेखों के कालक्रम के अनुसार के लेख एफ. एफ ब्रूस और मुरी हैरिक के लेखों में थोड़े बहुत दत्तक रूप में पाए जाते है।

पुस्तक	तरीख	लिखने की जगह	प्रेरितों के काम से सम्बन्ध
गलातियों	48	सिरियाई अन्ताकिया	14:28, 15:2
1थिस्सलुनीकियों	50	कुरिन्थुस	18:5
2थिस्सलुनीकियों	50	कुरिन्थुस	
1कुरिन्थियों	55	इफ़िसुस	19:20
2कुरिन्थियों	56	मकिदुनिया	20:2
रोमियों	57	कुरिन्थुस	20:3
जेल से लिखी पत्रियां			
कुलुस्सियों	60 के दषक की षुरूवात		
इफ़िसियों	60 के दषक की षुरूवात	रोम	
फिलेमोन	60 के दषक की षुरूवात		
फिलिप्पियों	62–63 के अन्त में		28:30–31
चौथी मिष्नरी यात्रा			
1तीमुथियुस	63	मकिदुनिया	
तीतुस	63	इफ़िसुस ?	
2तीमुथियुस	64 से पहले	रोम	

प्राप्तकर्ता

यह पत्र अपना लक्ष्य रोम को दर्षाता है। हम नहीं जानते कि रोम की कलीसिया की स्थापना किसने की।

क) यह वो लोग हो सकते हैं जो पेन्तिकोस्त के दिन यरूषलेम आए थे और वहां से परिवर्तित होकर गए तथा घर जा कर कलीसिया की स्थापना की। (देखिए प्रेरित 2:10)

ख) यह चेले भी हो सकते हैं जो स्तिफनुस की मृत्यु के बाद यरूषलेम में सताव के कारण भाग गए थे। (देखिए प्रेरित 8:4)

ग) यह पौलुस की मिष्नरी यात्राओं के दौरान रोम में जाने के कारण परिवर्तित लोग भी हो सकते हैं। पौलुस कभी भी इस कलीसिया में नहीं गए पर जाने के लिए बहुत ही इच्छा रखते थे (प्रेरित19:21)। उनके वहां कई मित्र थे (रोमियों 16)।

उनकी योजना थी कि यरूषलेम में ''स्नेह तोहफे'' बांटने जाने के बाद स्पेन जाते समय रोम भी जाएगें (रोमियों 15:28)। पौलुस को लगा की भूमध्य सागर के पूर्वी भाग में उनकी सेवा समाप्त हो गई है। उन्होने नए क्षेत्र खोजने षुरू कर दिए (रोमियों 15:20–23,28)। पौलुस का पत्र युनान से रोम ले जाने वाली फीबे थी जो कि एक सेविका थी और उस ओर जा रही थी (रोमियों 16:1)। यह पत्र इतना महत्वपूर्ण क्यों है जो एक यहूदी तम्बू बनाने वाले के द्वारा कुरिन्थुस की गलियों में पहली सदी में लिखा गया? मार्टिन लूथर कहता है ''यह नए नियम की प्रमुख पुस्तक तथा षुद्ध सुसमाचार है।'' इस पुस्तक का मूल्य इस तथ्य में पाया जाता है कि यह एक परिवर्तित रब्बी, तर्षीष के षाऊल, द्वारा सुसमाचार का गहरा व्याख्यान है जो कि अन्यजातियों का प्रेरित होने के लिए बुलाया गया। पौलुस के ज्यादातर पत्र स्थानिय परिस्थितियों में रंगे गए हैं पर रोमियों की पत्री नहीं। यह एक प्रेरित के विष्वास का क्रमबद्ध प्रस्तुतिकरण है।

क्या आप जानते हैं कि ''विष्वास'' षब्द की व्याख्या करने वाले बहुत से तकनीकि षब्द (जैसे ''दोश षुद्धि करना'', ''श्रेय देना'', ''गोद लेना'', ''पवित्र करने का कार्य'') सब रोमियों से आए हैं? परमेष्वर से प्रार्थना कीजिए कि वह इस अद्भूत पत्र को आप पर प्रकट करे जब हम मिलकर उनकी इच्छा को आज अपने जीवन में लागू करने की कोषिष कर रहे हैं।

उद्देष्य

क) स्पेन की अपनी मिष्नरी यात्रा के लिए मदद की मांग। पौलुस ने देखा की भूमध्य सागर के पूर्वी भाग में उनकी सेवा समाप्त हो गई है (रोमियों 15:20–23,28)।

ख) रोम की कलीसिया में विष्वासी यहूदियों और विष्वासी अन्यजातियों के बीच समस्या का समाधान करने के लिए। यह सम्भवतः यहूदियों के रोम से चले जाने और वापस आने के कारण हुआ। तब तक अन्यजातिय मसीही अगुवे यहूदी मसीही अगुवो की जगह ले चुके थे।

ग) स्वयं को रोमियों की कलीसिया पर प्रकट करना। यरूषलेम में ईमानदार परिवर्तित यहूदी पौलुस का विरोध कर रहे थे (प्रेरित 15 की यरूषलेम सभा) बेईमान यहूदीयों द्वारा (कट्टर पंथ गलातियों और 2 कुरि. 3, 10–13) और अन्यजातियों द्वारा (कुलुस्सियों और इफिसियों) जो सुसमाचार को अपनी प्रिय षिक्षाओं और तत्वज्ञान में विलीन कर देना चाहते थे जैसे रहस्य ज्ञान।

घ) पौलुस को एक खतरनाक प्रवर्तक कहकर उन पर दोश लगया कि वह लापरवाही से यीषु मसीह की षिक्षाओं में अपनी बातें जोड़ रहे हैं। रोमियों की पुस्तक पुराने नियम और यीषु मसीह की षिक्षा (सुसमाचारों) का प्रयोग करके अपने सुसमाचार को सच साबित करने का और क्रमबद्ध रीति से अपना पक्ष साबित करने का एक मार्ग है।

संक्षिप्त रूपरेखा

1) भूमिका (1:1–17)

क) अभिवादन (1:1–7)
– लेखक (1:1–5)
– अन्तिम लक्ष्य (1:6–7[क])
– अभिवादन (1:7[ख])

ख) परिस्थिति (1:8–15)

ग) केन्द्रिय विशय (1:16–17)

2) ईष्वरीय धार्मिकता की आवष्यकता (1:18–3:20)

क) अन्यजातिय समाज का पतन (1:18–32)

ख) यहूदी और अन्यजातिय नैतिक अगुवों का पाखण्ड (2:1–16)

ग) यहूदियों का न्याय (2:17–3:8)

घ) सारी सृश्टि को दण्ड (3:9–20)

3) ईष्वरीय धार्मिकता क्या है?

क) केवल विष्वास से धार्मिकता (3:21–31)

ख) धार्मिकता का आधार – परमेष्वर की वाचा
– इब्राहीम के अधिकार अटल रहेंगे (4:1–5)
– दाऊद (4:6–8)
– इब्राहीम का खतने से सम्बन्ध (4:9–12)

– इब्राहीम के साथ परमेष्वर की वाचा (4:13–25)

ग) धार्मिकता को पाना (5:1–21)
– आत्मगत रूपः योग्यता बिना प्रेम पाना, अतुलनिय आनन्द (5:1–5)
– मन से बाहर का आधारः परमेष्वर का अद्भूत प्रेम (5:6–11)
– आदम/मसीह की तुलनाः आदम का पाप, परमेष्वर का उपाय (5:12–21)

घ) ईष्वरीय धार्मिकता व्यक्तिगत धार्मिकता में प्रकट होनी चाहिए (6:1–7:25)

पाप से छुटकारा (6:1–14)
– माना हुआ विरोध (6:1–2)
– बपतिस्मा का अर्थ (6:3–14)

षैतान के दास या परमेष्वर के दास : आपका चुनाव (6:15–23)

व्यवस्था से मनुश्य का विवाह (7:1–6)

व्यवस्था अच्छी है पर पाप अच्छे को दूर रखता है (7:7–14)

विष्वासी के अन्दर अच्छे और बुरे का अन्नत युद्ध (7:15–25)

ङ) ईष्वरीय धार्मिकता के प्रकट प्रतिफल (8:1–39)
– आत्मा में जीवन (8:1–17)
– सृश्टि का छुटकारा (8:18–25)
– पवित्रात्मा की लगातार सहायता (8:26–30)
– विष्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने की न्यायीक जीत (8:31–39)

4) सम्पूर्ण मानव जाती के लिए परमेष्वर का उद्देष्य (9:1–11:32)

क) इस्राएल का चुनाव (9:1–33)
– विष्वास के सही उत्तराधिकारी (9:1–13)
– परमेष्वर का आधिपत्य (9:14–26)
– परमेष्वर की सार्वभौमिक योजना में अन्यजाती भी षामिल हैं (9:27–33)

ख) इस्राएल का उद्धार (10:1–21)
– परमेष्वर की धार्मिकता और मनुश्य की धार्मिकता (10:1–13)
– परमेष्वर की दया संदेषवाहकों की मांग करती है, विष्व व्यापी लक्ष्य की मांग (10:14–18)
– मसीह पर इस्राएल का लगातार अविष्वास (10:19–21)

ग) इस्राएल की असफलता (11:1–36)
– चुने हुए यहूदी (11:1–10)
– यहूदी जलन (11:11–24)
– इस्राएल का अस्थाई अंधापन (11:25–32)
– पौलुस स्तुति करने का निवेदन करते हैं (11:33–36)

5) ईष्वरीय धार्मिकता के तोहफे का फल (12:1–15:13)

क) पवित्रता के लिए बुलाहट (12:1–2)

ख) वरदानों का प्रयोग (12:3–8)

ग) विष्वासियों का दूसरे विष्वासियों से सम्बन्ध (12:9–21)

घ) राज्य के साथ सम्बन्ध (13:1—7)

ङ) पडोसियों के साथ सम्बन्ध (13:8—10)

च) स्वामियों के साथ सम्बन्ध (13:11—14)

छ) कलीसिया के सदस्यों के साथ सम्बन्ध (14:1—12)

ज) दूसरों पर हमारा प्रभाव (12:13—23)

झ) मसीह के साथ समानता से सम्बन्ध (15:1—13)

6) सारांष (15:14—33)

– पौलुस की व्यक्तिगत योजना (15:14—29)
– प्रार्थनाओं के लिए विनती (15:30—33)

7) अन्तिम लेख (16:1—27)

– अभिवादन (16:1—24)
– आषीर्वाद (16:25—27)

अध्ययन कालचक्र एक

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए और अपने ही षब्दों में इसके सम्पूर्ण केन्द्रिय विशय को लिखिए।

क) सम्पूर्ण पुस्तक का केन्द्रिय विशय

ख) साहित्य की छाया

अध्ययन कालचक्र दो

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए और मुख्य विशय का रेखाचित्र बनाओ और विशय को एक वाक्य में लिखो।

क) पहले लिखित भाग का विशय
ख) दूसरे लिखित भाग का विशय
ग) तीसरे लिखित भाग का विशय
घ) चौथे लिखित भाग का विशय
ङ) इत्यादि

रोमियों – 1

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
प्रणाम	अभिवादन प्रणाम	प्रणाम	प्रणाम	संबोधन
1:1–7	1:1–7	1:1–6	1:1	1:1–2
			1:2–6	
				1:3–7
		1:7[क]	1:7[क]	
		1:7[ख]	1:7[ख]	
रोम जाने की पौलुस की इच्छा	रोम जाने की इच्छा	धन्यवाद	धन्यवाद की प्रार्थना	धन्यवाद और प्रार्थना
1:8–15	1:8–15	1:8–15	1:8–12	1:8–15
			1:13–15	
सुसमाचार का सामर्थ	धर्मी जन विष्वास से जीवित रहेगा	पत्र का केन्द्रीय विशय	सुसमाचार का सामर्थ	केन्द्रीय विशय बताया गया
1:16–17	1:16–17	1:16–17	1:16–17	1:16–17
मनुश्य जाती का पाप	अधार्मिकता पर परमेष्वर का क्रोध	पाप के उपर परमेष्वर का न्याय	मनुश्य जाती का पाप	अन्यजातियों के विरूद्ध परमेष्वर का क्रोध
1:18–23	1:18–32	1:18–23	1:18–23	1:18–25
1:24–32		1:24–25	1:24–25	
		1:26–27	1:26–27	1:26–27
		1:28–32	1:28–32	1–28–32

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद
2) दूसरा अनुच्छेद
3) तीसरा अनुच्छेद
4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि

क) 1–7 आयत पत्र की भूमिका है। यह पौलुस के किसी भी पत्र से बड़ी भूमिका है। वह उस कलीसिया पर स्वयं को और अपनी ईष्वरीय षिक्षा को प्रकट कर रहे हैं जो उन्हें व्यक्तिगत तौर पर नहीं जानती और हो सकता है कि उनके बारे गलत बातें सुनी हों।

ख) 8–12 आयत षुरू की प्रार्थना और धन्यवाद है। यह यूनानी पत्रों की खासियत है और विषेश कर पौलुस के पत्रों की।

ग) 16–17 आयत पत्र के केन्द्रीय विशय को प्रकट करता है।

घ) 18–3:20 पहला लिखित भाग है और सुसमाचार को प्रकट करने का पौलुस का पहला अंष है, हरेक मनुश्य खोया हुआ है और उसे उद्धार की आवष्यकता है (उत्पति 3)
 – अनैतिक अन्यजातियां
 – नैतिक अन्यजातियां
 – यहूदी

ङ) रोमियों 1:18–3:20 उत्पति 3 की झलक देता है (आष्चर्य की बात यह है कि रब्बी इसे पाप की षुरूवात के रूप में नहीं मानते पर उत्पति 6 को मानते हैं)। मनुश्य जाति परमेष्वर से सहभागिता के लिए रची गई और परमेष्वर के स्वरूप में रची गई (उत्पति 1:26–27)। परन्तु मनुश्य ने प्रबोधन संस्कार, षक्ति के वायदे और श्रेश्ठता को चुना। परिणामस्वरूप मनुश्य ने स्वयं को परमेष्वर के रूप में बदल दिया।

परमेष्वर ने इसकी अनुमति दी और षायद इस पतन को रचा भी। परमेष्वर के स्वरूप में होने का अर्थ है ज़िम्मेदार होना, नैतिक रूप में जवाबदेह होना और अन्त में पाप के परिणाम से मुक्ति। परमेष्वर मनुश्य को उनके और अपने चुनाव से अलग करते हैं (वाचा का रिष्ता) । वे मनुश्य को चुनाव करने देते हैं पर पाप के परिणाम के साथ। परमेष्वर खेदित होते हैं (उत्पति 6:5–7) पर मनुश्य स्वतंत्र नैतिक प्राणी है जिसके पास सारे अधिकार हैं जो साथ में जिम्मेदारी लाती है। दोहराया गया वाक्य ''परमेष्वर ने उन्हें दिया'' (उत्पति 1:24,26,28) उस स्वतंत्रता की पहचान है, लेकिन यह एच्छिक त्याग नहीं है। यह परमेष्वर का चुनाव नहीं था। परमेष्वर ने एसे संसार को रचने की इच्छा नहीं की थी (उत्पति 3:22़6:5–7,11–13)।

च) रोमियों 1:18–3:20 का धर्मषास्त्रीय साराषं 3:21–31 में मिलता है। यह सुसमाचार का पहला ''षुभ संदेष'' है– हरेक मनुश्य ने पाप किया है और उसे उद्धार की आवष्यकता है तथा परमेष्वर ने अपनी बड़ी दया के कारण अपने साथ सहभगिता के लिए मार्ग तैयार किया है (अदन की वाटिका का अनुभव)।

छ) इसे पहले लिखित भाग में पौलुस के सुसमाचार प्रस्तुत करने के तरीके में एक विषेश भाग ध्यान देने योग्य है कि पतित मनुश्य अपने पाप और विद्रोह के लिए ज़िम्मेदार है न कि षैतान या दुश्टात्मा (रोमियों 1:18–3:20)। यह भाग उत्पति 3 के धर्मदर्षन को प्रकट करता है पर बिना व्यक्तिगत मिज़ाज के। परमेष्वर पतित मनुश्य को फिर से षैतान या परमेष्वर पर दोश लगाने नहीं देंगे (उत्पति 3:12,13)। मनुश्य परमेष्वर के स्वरूप मे रचा गया है (उत्पति 1:26,5:1,3,9:6)। उनके पास चुनाव करने का अधिकार, सामर्थ और आवष्यकता है। वह अपने चुनाव के लिए ज़िम्मेदार हैं चाहे वो आदम के साथ हो या व्यक्तिगत पाप (रोमियों 3:23)।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों 1:1–6

1 पौलुस की ओर से जो यीशु मसीह का दास है, और प्रेरित होने के लिये बुलाया गया, और परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिये अलग किया गया है।

2 जिस की उस ने पहले ही से अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पवित्र षास्त्र में।

3 अपने पुत्रा हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी, जो शरीर के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ।

4 और पवित्राता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्रा ठहरा है।

5 जिस के द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली; कि उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके उस की मानें।

6 जिन में से तुम भी यीशु मसीह के होने के लिये बुलाए गए हो।

1:1

''पौलुस''

उस समय के यहूदी लोगों के दो नाम हुआ करते थे एक यहूदी और एक रोमी (प्रेरित 13:9)। पौलुस का यहूदी नाम षाऊल था। वह इस्राएल के पुराने राजा के समान बिन्यामिन गोत्र के थे (रोमियों 11:1 फिलि.3:5)। उनका यूनानी षब्दों में रोमी नाम पौलुस था जिसका अर्थ है ''छोटा''। यह नाम षायद

क) उनकी षारीरिक बनावट के कारण रखा गया था, जैसा कि दूसरी सदी की एक पुस्तक ''पौलुस के काम'' के थिस्सलुनीकियों के बारे लिखे अध्याय ''पौलुस और थेकला'' में लिखा है।

ख) उनकी अपनी नज़र में स्वयं को संतों में सबसे छोटा समझने के कारण क्योंकि वह कलीसिया को सताने वाले थे (1कुरि. 15:9, इफि.3:8, 1तिमु.1:15)।

ग) यूं ही जन्म के समय उनके माता–पिता ने यह नाम रखा।
अन्तिम वाला सही लगता है।

यीषु मसीह का दास – यह षब्द या तो यीषु मसीह को स्वामी के रूप में प्रकट करता है या पुराने नियम के समान प्रतिश्ठा सूचक है (गिनती12:7 और यहोषू 1:1 में मूसा, यहोषू 24:29 में यहोषू, भजन संहिता के षीर्शक में दाउद, और यषायाह 42:1,19,52:13 में यषायाह)।

''प्रेरित होने के लिए बुलाया गया''

यह परमेष्वर का चुनाव था न कि उनका (प्रेरित9:15, गला.1:15, इफि.3–7)। पौलुस अपने आत्मिक अधिकार और योग्यता को (जैसा वह 1कुरि.1:1, 2कुरि.1:1, गला1:1, इफि.151, कुलु.1:1, 1तीमु.1:1, तितुस1:1 में करते हैं)। कभी न मिली हुई कलीसिया पर प्रकट करते हैं। देखिए विषेश षीर्शक बुलाए गए 1:6।

पहली सदी में पलिस्तीन में यहूदी लोगों के बीच ''प्रेरित'' षब्द उन लोगों के लिए प्रयोग किया जाता था जो ''सरकारी प्रतिनिधि के रूप में भेजे जाते थे'' (2इति.17:7–9)। नए नियम में यह षब्द विषेश तौर पर दो अर्थों में प्रयोग किया गया है।

1) 12 प्रमुख चेलों तथा पौलुस के लिए।

2) आत्मिक वरदान जो कलीसिया में चले आ रहे हैं (1कुरि.12:28–29, इफि.4:11)

विषेश षीर्शक : भेजा हुआ (अपोस्टेलो)

यह साधारण यूनानी षब्द है जो ''भेजा हुआ'' के लिए प्रयोग किया जाता है। पर इसके प्रयोग धर्मषास्त्रीय षिक्षण में कई हैं।

1. रब्बी इसका प्रयोग उसके लिए करते हैं जो दूसरी जगह के सरकारी प्रतिनिधि के रूप में बुलाया और भेजा जाता है। यह राजदूत के समान है (2कुरि.5:20)।

2. सुसमाचारों में इस षब्द का प्रयोग यीषु को पिता द्वारा भेजे जाने के लिए किया गया है। यूहन्ना में यह मसीह को प्रकट करता है (मत्ती10:40, 15:24, मरकुस9:37, लूका9:48 विषेश– यूहन्ना4:34, 5:24, 30, 36, 37, 38, 6:29, 38, 39, 40, 57, 7:29, 8:42, 10:36, 11:42, 17:3, 8, 18, 21, 23, 25, 20:21)। यीषु द्वारा विष्वासियों को भेजे जाने के लिए इस षब्द का प्रयोग किया गया है (यूहन्ना17:18, 20:21)।

3. नया नियम इसे चेलों के लिए प्रयोग करता है।

क) यीषु के 12 षिश्य (लूका6:13, प्रेरित1:21–22)

ख) प्रेरितों के सहायक और उनके साथ काम करने वाले
–वरनबास (प्रेरित14:1, 14)
–अन्द्रुनीकुस और यूनियास (रोमियों16:7)
–अपुल्लोस (1कुरि.4:6–9)
–प्रभु के भाई याकूब (गला.1:19)
–सिलवानुस और तीमुथियुस (1थिस्स.1:1, 2:6)
–हो सकता है तीतुस (2कुरि.8:23)
–हो सकता है इपफ्रुदीतुस (फिलि.2:25)

ग) वरदान जो कलीसिया में आ गए (1कुरि.12:28–29, इफि4:11)

4. पौलुस अपने बहुत से पत्रों में स्वयं के लिए इस षब्द का प्रयोग परमेष्वर के दिए अधिकार और स्वयं को मसीह के प्रतिनिधि के रूप में प्रकट करने के लिए करते हैं। (रोमियों1:1, 1कुरि.1:1, 2कुरि.1:1, गला.1:1, इफि.1:1, कुलु.1:1, 1तीमु. 1:1, 2तीमु.1:1, तीतुस1:1)

''अलग किया गया''

यह प्रकट करता है कि वह भूतकाल में परमेष्वर द्वारा अलग किए गए हैं (यिर्म.1:5 और गला.1:15) और यह अस्तित्व में बदल गया। यह अरामीक षब्द ''फारीसी'' का सम्भवतः दूसरा प्रयोग है। वह यहूदी व्यवस्था के अनुसार अलग किए गए लोग थे (पौलुस भी फिलि.3:5, दमिष्क मार्ग में यीषु से मुलाकात होने से पहले) पर वह अब सुसमाचार के लिए अलग किए गए थे।

यह इब्रानी षब्द ''पवित्र'' से जुड़ा हुआ है जिसका अर्थ है ''परमेष्वर के प्रयोग के लिए अलग किया हुआ'' (निर्ग.19:6, 1पत. 2:5)। ''संत'', ''षुद्ध किया हुआ'', और ''अलग किया हुआ'' का एक ही यूनानी मूल षब्द है ''पवित्र'' (हगियोस)।

''प्रभु के सुसमाचार के लिए''

आयत 5 पौलुस के ''बुलाए'' जाने के उद्देष्य 1:1 और ''अलग किए जाने'' के उद्देष्य 1:1 को प्रकट करता है।

''सुसमाचार'' षब्द ''षुभ'' और ''समाचार'' के मिश्रण से बना है। यह षब्द नई वाचा के सिद्धान्त की व्याख्या करने के लिए प्रयोग किया गया है (यिर्म.31:31–34, यहे.36:22–32) जो परमेष्वर द्वारा वायदा किया हुआ मसीह है (रोमियों 1:3–4)।

यह परमेष्वर का सुसमाचार है पौलुस का नहीं (रोमियों15:16, मरकुस1:14, 2कुरि.11:7, 1थिस्स.2:2, 8, 9, 1पत.4:17)। पौलुस कोई प्रवर्तक, संस्कृति को ग्रहण करने वाले नहीं थे परन्तु वह स्वयं पाए हुए सत्य को घोशित करने वाले थे (1कुरि.1:18–25)।

1:2

''जिसकी उसने पहले ही से अपने भविश्यद्वक्ताओं
के द्वारा पवित्रषास्त्र में''

सुसमाचार परमेष्वर द्वारा बाद में सोचा नहीं गया पर यह अनन्त और उद्देष्य पूर्ण योजना थी (उत्पति3:15, यषा.53, भ.सं.118, मरकुस10:45, लूका2:22, प्रेरित2:23, 3:18, 4:28, तीतुस1:2)। प्रेरितों के काम के षुरूवाती प्रचार यीषु मसीह को पुराने नियम के वायदों और भविश्यद्वाणियों के पूरक के रूप में प्रकट करते हैं।

विषेश षीर्शक : षुरूवाती कलीसिया का केरीगमा

1. परमेष्वर द्वारा पुराने नियम में किए हुए वायदे यीषु मसीह के आने से पूरे हो गए (प्रेरित2:30,3:19, 10:43, 26:6–7, 22, रोमियों1:2–4, 1तीमु.3:16, इब्रा.1:1–2, 1पत.1:10–12, 2पत.1:18–19)।

2. यीषु का मसीह के रूप में अभिशेक उनके बपतिस्मे के समय हुआ (प्रेरित10:38)।

3. बपतिस्मे के बाद यीषु ने अपनी सेवकाई गलील से षुरू की (प्रेरित10:37)।

4. उनकी सेवकाई परमेष्वर के सामर्थ के द्वारा अच्छे और अद्‌भुत कार्य से सुसज्जित थी (मरकुस10:45, प्रेरित2:22, 10:38)।

5. परमेष्वर की योजना के तहत मसीह को क्रूस पर चढ़ाया गया (मरकुस 10:45, यूहन्ना3:16, प्रेरित2:23, 3:13–15, 18, 4:11, 10:39, 26:23, रोमियों8:34, 1कुरि1:17–18, 15:3, गला.1:4, इब्रा.1:3, 1पत.1:2, 19, 3:18, 1यूहन्ना4:10)।

6. वह मृतकों मे से जी उठे और चेलों पर प्रकट हुए (प्रेरित2:24, 31–32, 3:15, 26, 10:40–41, 17:31, 26:23, रोमियों8:34, 10:9, 1कुरि.15:4–7, 12..., 1थिस्स.1:10, 1तीमु.3:16, 1पत.1:2, 3:18, 21)।

7. यीषु परमेष्वर द्वारा ऊँचा उठाए गए और उन्हें ''प्रभु'' नाम दिया गया (प्रेरित 2:25–29, 33–36, 3:13, 10:36, रोमियों8:34, 10:9, 1तीमु.3:16, इब्रा.1:3, 1पत.3:22)।

8. परमेष्वर के नए समाज की स्थापना के लिए उन्होंने पवित्रात्मा दी (प्रेरित 1:8, 2:14–18, 38–39, 10:44–47, 1पत. 1:12)।

9. वह न्याय और सब वस्तुओं के उद्धार के लिए फिर आएंगे (प्रेरित3:20–21, 10:42, 17:31, 1कुरि.15:20–28, 1थिस्स. 1:10)।

10. जो कोई सुसमाचार सुनता है उसे पष्चाताप करना और बपतिस्मा लेना जरूरी है (प्रेरित 2:21, 38,3:19, 10:43, 47–48, 17:30, 26:20, रोमियों1:17, 10:9, 1पत.3:21)।

यह बातें षुरूवाती कलीसिया के प्रचार का मुख्य भाग थीं यद्धपि नए नियम के लेखकों ने अपने प्रचार में कुछ बातों को छोड़ दिया और कुछ पर अधिक बल दिया। मरकुस का सुसमाचार पतरस के प्रचार करने के तरीके का अनुसरण करता है। परम्परागत तरीके से देखा जाए तो मरकुस पतरस के प्रचारों का लेखक था जो उसने रोम में किए थे और वह सुसमाचार के रूप में लिखा गया। मत्ती और लूका दोनो ने ही मरकुस के अधारभूत ढांचे का प्रयोग किया।

1:3

''अपने पुत्र हमारे प्रभु यीषु मसीह के
विशय में प्रतिज्ञा की थी...''

सुसमाचार का केन्द्रीय संदेष कुंवारी मरीयम द्वारा जन्मे व्यक्ति यीषु नासरी हैं। पुराने नियम में देष, राजा, और मसीह ''पुत्र'' कहलाते थे (2षमू.7:14, होषे11:1, भ.सं.2:7, मत्ती2:15)।

पुराने नियम में परमेष्वर दासों और भविश्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करते थे। यीषु परमेष्वर के दास नहीं थे। वह उनके परिवार के सदस्य थे (इब्रा.1:1–2, 3:6, 5:8, 7:28)। आष्चर्य की बात है कि यह एकमात्र जगह है जहां पौलुस मसीहषास्त्र पर चर्चा करते हैं। रोमियों सम्पूर्ण यथाक्रम धर्मषास्त्र नहीं है।

विषेश षीर्शक : परमेष्वर का पुत्र

नए नियम में यीषु के लिए दिए गए षीर्शकों में से यह बड़ा षीर्शक है। जरूर इसका दैवीय सम्बन्ध है। इसमे ''पुत्र'', ''मेरा पुत्र'', और परमेष्वर को ''पिता'' कहकर सम्बोधित करना षामिल है। यह लगभग 124 बार नए नियम में आया है। यहां तक कि यीषु ने स्वयं को जो ''मनुश्य का पुत्र'' कहकर पुकारा उसका भी दैवीय सम्बन्ध है (दानि.7:13–14)।

पुराने नियम में ''पुत्र'' संज्ञा तीन विषेश समूहों को दी जाती थी।

1. स्वर्गदूत (बहुवचन में) (उत्पति6:2, अय्यूब1:6, 2:1)

2. इस्राएल के राजा (2षमू.7:14, भ.सं.2:7, 89:26–27)

3. पूर्ण इस्राएल देष (निर्ग.4:22–23, व्यव.14:1, होषे11:1, मलाकी2:10)

4. इस्राएल के न्यायी (भ.सं.82:6)

यह दूसरा प्रयोग है जो यीषु के साथ जुड़ा हुआ है। इस प्रकार ''दाऊद का पुत्र'' और ''परमेष्वर का पुत्र'' दोनों (2षमू.7, भ.सं.2, 89) से सम्बन्ध रखता है। पुराने नियम मे ''परमेष्वर का पुत्र'' षब्द मसीहा के लिए प्रयोग नहीं किया गया पर केवल अनन्त राजा के लिए किया गया जो कि इस्राएल का ''अभिशिक्त पद'' है। पर मृत सागर के समीप पाए गए लेखों में मसीह के लिए यह षब्द साधारण है (देखिए यीषु और सुसमाचार का षब्दकोश पृश्ठ 770)। साथ ही बाइबल के मध्य काल के यहूदी लेखों में ''परमेष्वर का पुत्र'' षब्द का प्रयोग मसीह के लिए किया गया है (2एसद्रास 7:28, 13:32, 37, 25, 14:9, 1हनोक105:2)।

उनके नए नियम की पृश्ठभूमि यीषु को कई श्रेणियों में बांटने में सहायक है।

1. आदी से उनका होना (यूहन्ना 1:1–18)

2. उनका कुवांरी द्वारा जन्म (मत्ती 1:23, लूका1:31–35)

3. उनका बपतिस्मा (मत्ती3:17, मरकुस1:11, लूका3:22 परमेष्वर की स्वर्ग से की गई घोशणा भ.सं.2 के राजा को यषा.53 के दुःख उठाने वाले दास से जोड़ती है)।

4. षैतान द्वारा उनकी परीक्षा (मत्ती4:1–11, मरकुस 1:12, 13, लूका4:1–13 उनकी परीक्षा की गई कि वह अपने ईष्वर पुत्र होने पर संदेह करें या कम से कम अपने उद्देष्य को क्रूस को छोड़ किसी दूसरे मार्ग से पूरा करें)।

5. अस्वीकार्य दोश स्वीकार करने वालों से उनकी अभिपुश्टि

क) दुश्टात्मा (मरकुस 1:23–25, 3:11–12, लूका4:31–37)

ख) अविष्वासी (मत्ती 27:43, मरकुस14:61, यूहन्ना19:7)

6. चेलों द्वारा उनकी अभिपुश्टि
   मत्ती14:33,16:16
   यूहन्ना1:34, 49, 6:69, 11:27

7. स्वयं अभिपुश्टि
   मत्ती11:25–27
   यूहन्ना10:36

8. उनके द्वारा परमेष्वर के लिए पारिवारिक षब्दों का प्रयोग

क) परमेष्वर को ''अब्बा'' कहकर पुकारना
–मरकुस14:36
–रोमियों8:15
–गला.4:6

ख) परमेष्वर को पिता कहकर पुकारना उनके और परमेष्वर के बीच सम्बन्ध को दर्षाता है।

संक्षेप में षीर्शक ''परमेष्वर का पुत्र'' का बहुत ही गहरा धर्मषास्त्रिय अर्थ है उन लोगों के लिए जो पुराने नियम के वायदों को जानते हैं परन्तु नए नियम के लेखक अन्यजातियों की पृश्ठभूमि के कारण इसका प्रयोग करने में संकोच करते हैं क्योंकि उनके ''देवता'' स्त्रियों को ले जाते थे और जो संतान पैदा होती थी वो ''राक्षस'' होते थे।

''दाऊद के वंष से उत्पन्न हुआ''

यह 2षमू.7 की भविश्यद्वाणी से सम्बन्धित है। मसीह दाऊद के राजकीय वंष (यषा.9:7, 11:1, 10, यिर्म.23:5, 30:9, 33:15) और यहूदा के गोत्र से थे (उत्प.49:4–12, यषा.65:9) मत्ती के सुसमाचार में यीषु को कई बार इस षीर्शक से सम्बोधित किया गया है (मत्ती9:27, 12:23, 15:22, 20:30), जो मसीह के इन्तज़ार की यहूदियों की आषा को प्रकट करती है।

यह बहुत ही आष्चर्य की बात है कि पौलुस ने इस बात पर जोर नहीं दिया। उन्होंने इसका ज़िक्र केवल यहां पर और 2तीमु.2:8 में किया है, यह दोनो ही षुरूवाती कलीसिया के प्रचारकीय तरीके से लिए गए हैं।

''वह षरीर के भाव से तो''

यह यीषु के मनुश्य होकर जन्म लेने की भविश्यद्वाणी को पूरा करने के लिए है क्योंकि पहली सदी के संसारिक धर्म ने इसका इन्कार किया था (1युहन्ना1:1–4, 4:1–3)। यह आयत हमें बताता है कि पौलुस हमेषा ''षरीर'' षब्द का प्रयोग नकारात्मक बातों के लिए नहीं करते (रोमियों2:28, 9:3)। अधिकतर पौलुस ने ''षरीर'' षब्द का प्रयोग ''आत्मा'' के विरूद्ध किया है (रोमियों 6:19, 7:5, 18, 25, 8:3–9, 12, 13, 1कुरि.5:5, 2कुरि1:17, 11:18, गला.3:3, 5:13, 16, 17–19, 24, 6:8, कुलु.2:11, 13, 18, 23)।

आयत 3 और 4 में यीषु के लिए दोनो षब्द प्रयोग किए गए हैं, षरीर के भाव से और आत्मा के भाव से। यह अवतरण का सिद्धान्त बहुत ही महत्वपूर्ण है (1यूह.4:1–3)। ये यीषु द्वारा स्वयं चुने हुए षीर्शक ''मनुश्य का पुत्र'' का प्रयोग है (भ.सं.8:4, यहे. 2:1 मनुश्य और दानि.7:13 ईष्वरीय)।

विषेश षीर्शक : षरीर

इसका अभिप्राय मनवीय बुद्धि और संसारिक स्तर है (1कुरि.1:20 2:6, 8, 3:18)। पौलुस ने ''षरीर'' षब्द का प्रयोग कई तरह से किया है।

1. मनुश्य का षरीर (रोमियों2:28, 1कुरि.5:5, 7:28)

2. मानव वंष पिता–पुत्र, (रोमियों1:3, 4:1, 1कुरि.10:18)

3. मानव जाती (1कुरि.1:26,29)

4. उत्पति 3 में मनुश्य के पतन के कारण मनुश्य की कमज़ोरी (रोमियों6:19, 7:18)

1:4

''ठहरा''

परमेष्वर ने निसंदेह यीषु को ''परमेष्वर का पुत्र'' ठहराया। इसका मतलब यह नहीं कि बेतलेहम में यीषु की षुरूवात हुई और वह पिता से निचले स्तर के हैं। (देखिए विषेश षीर्शक त्रिएक 8:11 में)।

''परमेष्वर के पुत्र होना''

नए नियम के लेखक यूनानी मिथ्या के प्रयोग के कारण अधिकतर यीषु को इस षीर्शक ''परमेष्वर के पुत्र'' से सम्बोधित नहीं करते (मत्ती.4:3) और ये कुंवारी से जन्म के लिए भी सही है। ये विचार ''अद्वितिय, एक प्रकार'' के कारण योग्य है (युह.1:18; 3:16ए 18; 1युह.4:9)। इसलिए इसका अर्थ है कि ''यीषु, परमेष्वर के एकमात्र सच्चे पुत्र।''

नए नियम में पिता परमेष्वर और पुत्र प्रभु यीषु मसीह से सम्बन्धित दो धुव्र हैं (1) वे बराबर हैं (यूह.1:1; 5:18; 10:30; 14:9; 20:28; 2कुरि.4:4; फिलि.2:6; कुलु.1:15; इब्रा.1:3) और (2) वे अलग अलग व्यक्तित्व हैं (मरकुस.10:18; 14:36; 15:34)।

''पुनरूत्थान के द्वारा''

परमेष्वर पिता ने प्रभु यीषु मसीह के जीवन और संदेष को उन्हें मृत्यु में पुनः जीवित करके प्रमाणित किया (रोमियों.4:24; 6:4, 9; 8:11)। यीषु मसीह का ईष्वरत्व (यूह.1:1–14; कुलि.4:4; फिलि.2:6–11) और पुनरूत्थान (रोमियों.4:25; 1कुरि.15) मसीहत के दो स्तम्भ हैं।

यह आयत अक्सर ''गोद लेने'' की झूठी षिक्षा की वकालत करता है कि यीषु मसीह को परमेष्वर ने उनके उदाहरणमय जीवन और अज्ञाकारिता के कारण पुरस्कृत किया। झुठे षिक्षक कहते हैं कि वे हमेषा से परमेष्वर नहीं थे पर जब पिता परमेष्वर ने उन्हें मृतकों में से जिलाया तब वे परमेष्वर बने थे। जबकी ये प्रकट रूप से असत्य है जो कि बहुत से मूलपाठों से प्रमाणित है जैसे यूह.1 और 17, यीषु के पुनरूत्थान ने कुछ अद्भूत प्रदान किया। ये समझना बहुत ही कठिन है कि कैसे परमेष्वर को पुरस्कृत किया जा सकता है पर एसा हुआ है। यद्धपि यीषु ने पिता की अनन्त महिमा को बाँटा पर उनका स्तर उनके उद्धार के कार्य को पूरा करने के कारण भरपूर किया गया। पुनरूत्थान पिता परमेष्वर द्वारा यीषु नासरी के जीवन, षिक्षा, उदाहरण और बलिदान पूर्ण मृत्यु को प्रमाणित करता है और अनन्त परमेष्वर, पूर्ण मनुश्य, सिद्ध उद्धारकर्ता का पुनः स्थापित होना और पुरस्कृत किया जाना और अद्वितिय पुत्र को प्रगट करता है।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''पवित्रता की आत्मा के अनुसार''

टी इ वी ''जैसे उनकी ईष्वरीय पवित्रता''

जे बी ''आत्मा के क्रमानुसार, पवित्रता की आत्मा''

कुछ अनुवाद ''स्पीरिट'' के ''एस'' में बड़े एस का प्रयोग करते हैं जो पवित्र आत्मा को प्रगट करता है जबकी छोटा एस यीषु की आत्मा को प्रकट करता है। जैसे कि पिता परमेष्वर आत्मा हैं वैसे ही यीषु भी आत्मा हैं। प्रचीन इब्रानी और यूनानी लेख में बड़े षब्द, वाक्यावली, अध्याय और आयत नहीं थे पर ये सब अनुवादकों द्वारा किया गया है।

आयत 3 और 4 को देखने के तीन तरीके हैं।
1) यीषु के दो स्वभावों मानव और परमेष्वर के सम्बन्ध में
2) उनके पृथ्वी के जीवन के दो स्तरों मानव और पुनर्जीवित परमेष्वर के सम्बन्ध में
3) ''यीषु मसीह हमारे प्रभु'' के सदृष्य में

''यीषु''

अरामीक नाम यीषु वैसा ही है जैसा कि इब्रानी नाम यहोषू है। यह दो इब्रानी षब्दों ''यहोवा'' और ''उद्धार'' का मिश्रण है। इसका अर्थ हो सकता है कि ''याहोवा बचाते हैं'', ''यहोवा छुड़ाते हैं'', ''यहोवा उद्धार हैं।'' इस अर्थ की प्रमुखता मत्ती.1:21, 25 में देखी जा सकती है।

''ख्रिश्ट(मसीह)''

ये यूनानी षब्द इब्रानी षब्द मसीह से लिया गया है जिसका अर्थ है ''अभिशेक किया हुआ।'' पुराने नियम में बहुत से अगुवों के समूह का (भविश्यद्वक्ता, याजक, और राजा) परमेष्वर के चुनाव और षिक्षा को प्रगट करने के लिए अभिशेक किया जाता था। यीषु ने इन तीनों ही अभिशिक्त दफ़तरों को पूरा किया (इब्रा.1:2–3)।

पुराना नियम बताता है कि परमेष्वर अपने अभिशिक्त को भेजेंगे ताकि नए युग में धार्मिकता को स्थापित करें। यीषु उनके विषेश ''दास'', ''पुत्र'', ''मसीह'' हैं।

''प्रभु''

यहूदियों में परमेष्वर का वाचा नाम ''यहोवा'' इतना पवित्र हो गया था कि वचन पढ़ते वक्त रब्बी इसकी जगह प्रभु षब्द का प्रयोग करते थे व डरते थे कि कहीं वे परमेष्वर का नाम व्यर्थ में न ले लें (निर्ग.20:7; व्यव.5:11) और 10 में से एक आज्ञा तोड़ दें। जब नए नियम के लेखक धार्मिक संदर्भ में ''प्रभु'' कहकर पुकारते हैं तो वे उनके परमेष्वरत्व को प्रमाणित करते हैं (प्रेरित. 2:36; रोमियों.10:9–13; फिलि.2:6–11)।

विषेश षीर्शक : परमेष्वर के नाम

1) एल
क) परमेष्वर के प्राचीन नाम का वास्तविक अर्थ निर्धारित नहीं है पर बहुत से ज्ञानी ऐसा विष्वास करते हैं कि ये अकाड़ियन मूल से आया है जिसका अर्थ है ''बलवन्त होना'', ''सामर्थी होना'' (उत्प.17:1; गिन.23:19; व्यव.7:21; भ.सं.50:1)।
ख) कनानी देवावली में एल सबसे बड़ा देवता है।
ग) बाइबल में एल षब्द दूसरे षब्दों के साथ अधिकतर मिलाया नहीं गया। ये मिश्रण विषेश कर परमेष्वर के चरित्र को प्रगट करते हैं।
(1) एल–एलियोन (परमेष्वर सर्वोच्च), उत्प.14:18:22; व्यव.32:8; यषा.14:14

(2) एल–रोही (''परमेष्वर जो देखते हैं'' या ''परमेष्वर जो स्वयं को प्रगट करते हैं''), उत्प.16:13

(3) एल–षद्दाय (''परमेष्वर सर्वषक्तिमान'' या ''परमेष्वर पूर्ण दया'' या ''पर्वतों के परमेष्वर''), उत्प.17:1; 35:11; 43:14; 49:25; निर्ग.6:3

(4) एल–ओलाम (अनन्त परमेष्वर), उत्प.21:33। ये षब्द दाऊद से परमेष्वर की वाचा को प्रकट करता है, 2षमू.7:13, 16

(5) एल–बैरीट (वाचा के परमेष्वर), न्या.9:46

घ) एल को समान किया गया है

(1) यहोवा भ.सं.85:8; यषा.42:5

(2) इलोहिम उत्प.46:3; अय्य.5:8, ''मैं एल हूँ, तेरे पिता का इलोहिम''

(3) षद्दाय उत्प.49:25

(4) ''जलन'' निर्ग.34:14; व्यव.4:24; 5:9; 6:15

(5) ''दया'' व्यव.4:31; नहे.9:31; ''विष्वासयोग्य'' व्यव7:9; 32:4

(6) ''महान और अद्भूत'' व्यव.7:21; 10:17; नहे.1:5; 9:32; दानि.9:4

(7) ''ज्ञान'' 1षमू.2:3

(8) ''मेरा दृढ़ गढ़'' 2षमू.22:33

(9) ''मेरा पलटा लेने वाले'' 2षमू.22:48

(10) ''पवित्र'' यषा.5:16

(11) ''बल'' यषा.10:21

(12) ''महान और सामर्थी'' यिर्म.32:18

(13) ''प्रतिफल'' यिर्म.51:56

ङ) पुराने नियम के सभी प्रमुख नामों का मिश्रण यहो.22:22 में मिलते हैं (एल, इलोहिम, यहोवा, दोहराए गए हैं)

2) एलियोन
क) इसका आधारभूत अर्थ है ''उच्च'', ''उठाया गया'', ''ऊँचा उठाया गया'' (उत्प.40:17; 1राजा.9:8; 2राजा.18:17; नहे.3:25; यिर्म.20:2; 36:10; भ.सं.18:13)।

ख) ये षब्द परमेष्वर के अन्य कई नामों की समानता में प्रयोग किया गया है।

(1) इलोहिम भ.सं47:1–2; 73:11; 107:11

(2) यहोवा उत्प.14:22; 2षमू.22:14

(3) एल–षद्दाय भ.सं.91:1, 9

(4) एल गिन.24:16

(5) एलाह इसका प्रयोग दानि.2–6 और एज्रा.4–7 किया गया है, इलायर से जोड़कर (अरामिक – उच्चतम परमेष्वर) दानि. 3:26; 4:2; 5:18, 21

ग) ये अधिकतर गैर इस्राएलियों द्वारा प्रयोग किया गया।

(1) मलिकिसिदक उत्प.14:18–22

(2) बिलाम गिन.24:16

(3) मूसा, राश्ट्रों के बारे में बात करते हुए व्यव.32:8

(4) नए नियम में लूका के सुसमाचार में, अन्यजातियों के लिखा गया, यूनानी समानार्थ हुपोसीसटोस का प्रयोग (लूका.1:32, 35, 76; 6:35; 8:28; प्रेरित.7:48; 16:17)

3) इलोहिम (बहुवचन), इलोख (एकवचन) प्राथमिक तौर पर काव्य में प्रयोग किया गया है।

क) पुराने नियम के बाहर ये षब्द नहीं मिलता।

ख) ये षब्द इस्राएल के परमेष्वर को और अन्य राश्ट्रों के देवतओं को भी प्रगट कर सकता है (निर्ग.12:12; 20:3)।इब्राहीम का परिवार बहुदेववादी था (यहो.24:2)।

ग) ये इस्राएल के न्यायियों को व्यक्त कर सकता है (निर्ग.21:6; भ.सं.82:6)

घ) इलोहिम षब्द का प्रयोग अन्य आत्मिक जीवों के लिए भी किया गया है (स्वर्गदूत और दुश्टात्मा) जैसे व्यव.32:8 (सैप्टूआजैन्ट); भ.सं.8:5; अय्य.1:6; 38:7। यह मानव न्यायियों के लिए प्रयोग किया जा सकता है (निर्ग.21:6; भ.सं.82:6)।

ङ) बाइबल में परमेष्वर के लिए यह पहला नाम है (उत्प.1:1)। इसका प्रयोग लगातार उत्प.2:4 किया गया जहाँ पर ये यहोवा के साथ जोड़ दिया गया। यह आधारभूत तौर पर सृश्टिकर्ता परमेष्वर, पालनहार, और सभी की आवष्यकता को पूरा करने वाले परमेष्वर को प्रगट करता है (भ.सं.104)।

यह एल का समानार्थ है (व्यव.32:15–19)। यह यहोवा के भी सदृष्य है भ.सं.14 का (इलोहिम) भ.सं.53 के (यहोवा) के समान है, केवल ईष्वरीय नामों में परिवर्तन के इलावा।

च) यद्धपि यह षब्द बहुवचन है और दूसरे देवताओं के लिए प्रयोग किया गया है पर अधिकतर यह इस्राएल के परमेष्वर को प्रगट करता है परन्तु ज्यादातर यह एकवचन कर्म है जो एकवचन प्रयोग को प्रकट करता है।

छ) यह षब्द गैर यहूदियों के षब्दों में परमेष्वर के लिए प्रयोग किया गया है।

(1) मलिकिसिदक उत्प.14:18–22

(2) बिलाम गिन.24:16

(3) मूसा, राश्ट्रों के बारे में बात करते हुए व्यव.32:8

ज) यह बहुत ही आष्चर्य की बात है कि इस्राएल के एकमात्र परमेष्वर के सामान्य नाम बहुवचन में हैं। यहाँ कोई निष्चयता नहीं है पर कुछ सिद्धान्त हैं।

(1) इब्रानी में कई बहुवचन हैं जो ज़ोर देने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। इससे नज़दीक के संदर्भ में इब्रानी व्याकरण तन्त्र ''महिमा के बहुवचन'' है जहाँ पर बहुवचन षब्द प्रयोग को बढ़ावा देता है।

(2) यह स्वर्गदूतों की सभा को सम्बोधित कर सकता है जिन्हें परमेष्वर स्वर्ग में मिलते हैं और वे परमेष्वर की आज्ञा का पालन करते हैं (1राजा.22:19–23; अय्य.1:6; भ.सं.82:1; 89:5, 7)।

(3) यह भी सम्भव है कि ये नए नियम के त्रिएक परमेष्वर को प्रगट कर रहा हो, एक परमेष्वर तीन व्यक्तित्वों में। उत्प.1:1 में परमेष्वर सृश्टि करते हैं, 1:2 में आत्मा मण्डलाती थी और नए नियम में यीषु सृश्टि में पिता परमेष्वर के कार्यकर्ता हैं (यूह.1:3, 10; रोमियों.11:36; 1कुरि.8:6; कुलु.1:15; इब्रा.1:2; 2:10)।

4) यहोवा

क) यह नाम परमेष्वर को वाचा के परमेष्वर के रूप में व्यक्त करता है; परमेष्वर उद्धार करने वाले और छुड़ाने वाले। मनुश्य वाचा तोड़ता है पर परमेष्वर अपने वचनों, वायदों और वाचा के प्रति वफ़ादार हैं (भ.सं.103)।

यह नाम इलोहिम के साथ जोड़कर सबसे पहले उत्प.2:4 में लिखा गया है। उत्प.1 और 2 में दो सृश्टियों के बारे में नहीं लिखा गया पर इसमें दो बातों पर ज़ोर दिया गया है : (1) परमेष्वर सम्पूर्ण जगत के सृश्टिकर्ता के रूप में (षारीरिक तौर पर) और (2) परमेष्वर मानवजाति के विषेश सृश्टिकर्ता के रूप में। उत्प.2:4 विषेश प्रकाषन प्रस्तुत करता है जो मानवजाति के स्तर और उद्देष्य को और साथ ही साथ पाप की समस्या को और विषेश स्तर से सम्बन्धित विद्रोह को प्रगट करता है।

ख) उत्प.4:26 में लिखा है ''उसी समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे''। निर्ग.6:3 प्रगट करता है कि षुरूवाति वाचा के लोग परमेष्वर को एल–षद्दाय के रूप में जानते थे। यहोवा नाम केवल एक ही बार निर्ग.3:13–16 विषेश आयत 14। मूसा के लेखों में षब्दों का अनुवाद प्रसिद्ध षब्दों से किया गया है न कि षब्द साधन से (उत्प.17:5; 27:36; 29:13–35)। इस नाम के अर्थ के साथ जुड़ी हुई कई बाते हैं (आई डी बी , भाग–2 के पृश्ठ409–411 से लिया गया)।

(1) अरबी मूल से ''उत्सुक प्रेम को प्रगट करना''

(2) अरबी मूल से ''बहा देना'' (यहोवा तूफ़ान के परमेष्वर)

(3) कनानी मूल से ''बोलना''

(4) प्राचीन लेखों में ''वह जो पालते हैं'', ''वह जो स्थिर करते हैं''।

(5) इब्रानी क्वाल रीति से ''वह जो हैं'' या ''वह जो उपस्थित हैं'' (भविश्य विचार में ''वह जो रहेंगे'')।

(6) इब्रानी हिपहिल से ''वह जो रचते हैं''।

(7) इब्रानी मूल से ''जीवित रहना'' (उदाहरण के लिए उत्प.3:20), अर्थ है ''हमेषा जीवित रहने वाले, सिर्फ वही जीवित हैं''।

(8) निर्ग.3:13–16 के संदर्भ में अपूर्ण षब्दों का प्रयोग सिद्ध विचार के लिए ''मैं लगातार वही रहूँगा जो मैं था'' या ''मैं जो हमेषा से था मैं वही बना रहूँगा'' (जे. वॉस वॉट्स, ए सर्वे ऑफ सीन्टैक्स इन द ओल्ड टैस्टामैन्ट, पृश्ठ.67)।

पूरा नाम यहोवा अधिकतर संक्षिप्त में व्यक्त किया गया है या वास्तविक रूप में प्रयोग किया गया है।

(१) याह (हाल्लेलु–याह)

(२) याहू (नाम – यषायाह)

(३) यो (नाम – योएल)

ग) पाष्चात्य यहूदी धर्म में ये नाम पवित्र हो गया था कि यहूदी लोग इसे लेने से डरते थे कि कहीं वे एक आज्ञा न तोड़ दें, निर्ग.20:7; व्यव.5:11; 6:13। इसलिए उन्होंने इसे ''मालिक'', ''गुरू'', ''पति'', ''प्रभु'' के लिए इब्रानी षब्द अडोन या अडोनाय से बदल दिया (मेरे प्रभु)। जब वे वचन पढ़ते समय यहोवा पर पहुँचते हैं तो वे उसे ''प्रभु'' पुकारते थे। इसलिए यहोवा षब्द को अग्रेज़ी में लॉर्ड लिखा गया है।

घ) एल के समान ही इस्राएल के वाचामय परमेष्वर के विभिन्न चरित्रों को प्रगट करने के लिए यहोवा के साथ भी कई अन्य षब्द जोड़े गए हैं। कई और भी मिश्रित षब्द हो सकते हैं पर यहाँ पर कुछ दिए गए हैं।

(1) यहोवा–यिरे (यहोवा उपाय करेंगे), उत्प.22:14

(2) यहोवा–राफा (यहोवा तुम्हारे चंगा करने वाले), निर्ग.15:26

(3) यहोवा–निस्सी (यहोवा मेरा झण्डा), निर्ग.17:15

(4) यहोवा–मकादेषकेम (यहोवा जो पवित्र करते हैं), निर्ग.31:13

(5) यहोवा–षालोम (यहोवा षान्ति हैं), न्या.6:24

(6) यहोवा–सावोथ (सेनाओं के यहोवा), 1षमू.1:3, 11; 4:4; 15:2 अधिकतर भविश्यद्वक्ताओं की पुस्तक में

(7) यहोवा–रोही (यहोवा मेरे चरवाहा), भ.सं.23:1

(8) यहोवा–सिद्केनो (यहोवा मेरी धार्मिकता), यिर्म.23:6

(9) यहोवा–षम्मा (यहोवा वहाँ हैं), यहे.48:35

1:5

''हम''

पौलुस अपनी भूमिका में किसी और व्यक्ति का ज़िक्र नहीं करते जैसा कि वे अधिकतर पत्रों में करते हैं। यह पहला वाक्यांष पौलुस के दमिष्क मार्ग के परिवर्तन और उनकी नियुक्ति को प्रगट करता है (प्रेरित.9), जो ''हम'' षब्द के सम्पादन को व्यक्त करता है।

''हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली''

पौलुस न केवल उद्धार के दान को प्रमाणित करते हैं परन्तु इसके साथ जुड़ी अपनी बुलाहट अन्यजातियों के लिए प्रेरित को भी प्रमाणित करते हैं। यह सब एक साथ दमिष्क मार्ग में हुआ (प्रेरित.9)। यह योग्यता के कारण नहीं पर उद्देष्यपूर्ण अनुग्रह से है।

''में लाना''

सुसमाचार मनुश्य में परमेष्वर के स्वरूप को पुनः स्थापित करता है यीषु मसीह पर विष्वास करने के द्वारा। यह परमेष्वर के वास्तविक उद्देष्य को प्रगट होने में सहायता करता है जो कि वह लोग हैं जो परमेष्वर के चरित्र को प्रगट करते हैं (रोमियों1:7)।

एन ए एस बी, जे बी ''विष्वास का आज्ञापालन''

एन के जे वी ''विष्वास के प्रति आज्ञाकारिता''

एन आर एस वी ''विष्वास के प्रति आज्ञाकारिता लाना''

टी इ वी ''विष्वास करना और आज्ञा मानना''

रोमियों में विष्वास षब्द का यह प्रथम प्रयोग है। इस अध्याय और पुस्तक में इसका प्रयोग तीन विभिन्न तरीकों से किया गया है।

1) आयत 5 में ये मसीह तथा मसीही जीवन की सच्चाईयों और सिद्धान्तों के लिए प्रयोग किया गया है (प्रेरित.6:7; 13:8; 14:22; 16:5; रोमियों.14:1; 16:26; गला.1:23; 6:10; यहू.3, 20)।

2) आयत 8 में ये यीषु पर व्यक्तिगत भरोसे को व्यक्त करता है। विष्वास और भरोसा षब्द एक ही यूनानी षब्द पिस्टेस या पिस्टेओ का अनुवाद हैं। सुसमाचार दोनों ही सैद्धान्तिक और व्यक्तिगत है (रोमियों.1:16; यूह.1:12; 3:16)।

3) आयत 17 में ये पुराने नियम के विचार भरोसेमन्द, वफ़ादार के संदर्भ में लिया गया है। यही अर्थ है हब.2:4 का। पुराने नियम में विष्वास का उन्नत सिद्धान्त नहीं था विष्वास के उदाहरणमय जीवन थे (इब्राहीम उत्प.15:6); सिद्ध नहीं परन्तु संघर्श करने

वाला विष्वास (इब्रा.11)। मानवजाति की आषा उनके कार्य करने की क्षमता या सही विष्वास करने में नहीं है परन्तु परमेष्वर के चरित्र में है। केवल परमेष्वर ही विष्वासयोग्य हैं।

बहुत से क्रमबद्ध कार्य हैं जिन्हें उद्धार के क्रम कह सकते हैं।

(क) पष्चाताप (रोमियों.2:4; मरकुस.1:15; लूका.13:3, 5; प्रेरित.3:16, 19; 20:21)।

(ख) विष्वास (रोमियों.1:16; यूह.1:12; 3:16; प्रेरित.16:31, बपतिस्मा किसी के विष्वास का सार्वजनिक प्रगटिकरण है)।

(ग) आज्ञाकारिता (रोमियों.2:13; 2कुरि.9:13; 10:5; 1पत.1:2, 22)।

(घ) धीरज (रोमियों.2:7; 2कुरि.4:1, 16; गला.6:9; 2थिस्स.3:13)।

यह नई वाचा के नियम हैं। हमें मसीह में परमेष्वर द्वारा दिए गए अवसर को ग्रहण करना है और लगातार करते रहना है (रोमियों.1:16; यूह.1:12)।

एन ए एस बी ''उनके नाम की खातिर''

एन के जे वी ''उनके नाम के लिए''

एन आर एस वी ''उनके नाम की खातिर''

टी इ वी ''मसीह की खातिर''

एन जे बी ''उनके नाम के सम्मान के लिए''

देखिए विषेश षीर्शक 10:9 में

एन ए एस बी, एन आर एस वी ''सभी अन्यजातियों के बीच में''

एन के जे वी ''सभी राश्ट्रों के बीच में''

टी इ वी ''सभी राश्ट्रों के लोग''

जे बी ''सभी अन्यजातिय राश्ट्रों में''

ये सुसमाचार सभी के लिए है। उत्प.3:15 में उद्धार के लिए परमेष्वर का वायदा सारी मानवजाति के लिए था। यीषु मसीह की मृत्यु आदम की पतित संतान के बदले में थी (यूह.3:16; 4:42; इफि.2:11–3:13; 1तीमु.2:4; 4:10; तीतु.2:11; 2पत.3:9)। पौलुस अपनी विषेश बुलाहट अन्यजातियों को सुसमाचार सुनाने में देखते हैं (प्ररित.9:15; 22:21; 26:17; रोमियों.11:13 15:16; गला.1:16; 2:29; इफि.3:2, 8; 1तीमु.2:7; 2तीमु.4:15)। देखिए नीचे दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : बॉब के सुसमाचार का झुकाव या पक्षपात

पाठको मैं आपसे कहना चाहता हूँ यहाँ पर मैं पक्षपाती हूँ। मेरा सैद्धान्तिक धर्मविज्ञान कैलविन या प्रकोप समय का नहीं परन्तु महान आज्ञा का सुसमाचार है। मैं विष्वास करता हूँ कि परमेष्वर के पास मानवजाति के उद्धार के लिए अनन्त योजना थी (उत्प.3:15; 12:3; निर्ग.19:5–6; यिर्म.31:31–34; यहे.18; 36:22–39; प्रेरित.2:23; 3:18; 4:28; 13:29; रोमियों.3:9–18, 19–20, 21–32), जो काई भी उनके स्वरूप और समानता में रचे गए (उत्प.1:26–27)। वाचाऐं मसीह से जुड़ी हैं (गला.3:28–29; कुलु. 3:11)। यीषु परमेष्वर का रहस्य हैं जो छुपा हुआ था पर अब प्रगट हुआ है (इफि.2:11–3:13)।

यह पहले की समझ वचन के मेरे अनुवाद को प्रभावित करती है (उदा. योना)। मैं सभी मूलपाठ इसी से पढ़ता हूँ। यह निष्चय ही पक्षपात है (सभी अनुवादकों में ऐसा होता है) पर ये वचन से प्राप्त पुर्व ज्ञान है।

1:6

''तुम भी''

पौलुस (कलीसिया को सताने वाले)परमेष्वर के अगम्य अनुग्रह के उत्तम उदाहरण हैं पर उनके पाठक भी परमेष्वर के अनुग्रह उदाहरण हैं जिसके वे योग्य नहीं थे।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''यीषु मसीह के बुलाए हुए''

एन आर एस वी ''जो यीषु मसीह का होने के लिए बुलाए गए''

टी इ वी ''जिन्हें परमेष्वर ने यीषु मसीह का होने के लिए बुलाया है''

जे बी ''उनकी बुलाहट के कारण यीषु मसीह के हैं''

ये षायद :

1) ''कलीसिया'' षब्द का प्रयोग षायद दूसरे तरीके से किया गया हैं जिसका अर्थ है ''बुलाए गए लोग'' या ''इकट्ठा किए गए''।

2) ईष्वरीय चुनाव की तरफ इषारा करता है (रोमियों.8:29–30; 9:1 के बाद; इफि.1:4, 11; 3:21;4:1, 4)।

3) आर एस वी अग्रेज़ी अनुवाद इस वाक्यांष को यूँ प्रस्तुत करता है, ''तुम जिन्होंने बुलाहट को सुना है और जो यीषु मसीह के हो।''

ये एन आर एस वी, टी इ वी और जे बी के इस वाक्यांष के अनुवाद और समझ को भी प्रस्तुत करता है। देखिए दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : बुलाए हुए

विष्वासियों को बुलाने, चुनने और अपने समीप लाने में हमेषा परमेष्वर षुरूवात करते हैं (यूह.6:44, 65; 15:16; 1कुरि.1:12; इफि.1:4–5, 11)। ''बुलाहट'' षब्द कई प्रकार के धर्मषास्त्रीय विचारों में प्रयोग किया गया है।

क. पापी उद्धार के लिए परमेष्वर के अनुग्रह मसीह के पुर्ण किए गए कार्य और पवित्र आत्मा से प्रभावित होकर बुलाए जाते हैं (क्लेटोस, रोमियों.1:6–7; 9:24 जो कि धर्मषास्त्रीय तौर पर 1कुरि.1:1–2 और 2तीमु.1:9; 2पत.1:10 के तुल्य है)।

ख. पापी उद्धार पाने के लिए परमेष्वर का नाम लेते हैं (एपिकालेओ, प्रेरित.2:21; 22:16; रोमियों.10:9–13)। ये वाक्य यहूदी मुहावरा है।

ग. विष्वासी मसीह के समान जीवन जीने के लिए बुलाए गए हैं (क्लेसीस, 1कुरि.1:26; 7:20; इफि.4:1; फिलि.3:14; 2थिस्स. 1:11; 2तीमु.1:9)।

घ. विष्वासी सेवा के कार्य के लिए बुलाए गए हैं (प्रेरित.13:2; 1कुरि.12:4–7; इफि.4:1)।

रोमियों 1:7

7 उन सब के नाम जो रोम में परमेश्वर के प्यारे हैं और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं। हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।

1:7

''परमेष्वर के प्रिय''

यह वाक्यांष अधिकतर यीषु मसीह के लिए प्रयोग किया गया है (मत्ती.3:17; 17:5)। अब ये रोम की कलीसिया के लिए प्रयोग किया गया है। ये उन लोगों के प्रति परमेष्वर के प्रेम की गहराई को प्रगट करता है जो उनके पुत्र प्रभु यीषु पर भरोसा रखते हैं। इस प्रकार का परिवर्तन इफि.1:20 में देखा जा सकता है (यीषु मसीह की तरफ से परमेष्वर का कार्य) और 2:5–6 (परमेष्वर की तरफ से प्रभु यीषु का कार्य)।

''रोम में''

पौलुस ने इस कलीसिया की स्थापना नहीं की। कोई नहीं जानता कि किसने की। रोमियों की पत्री स्थापित कलीसिया को स्वयं का परिचय देते हुए लिखा गया पत्र है। रोमियों पौलुस द्वारा प्रचार किए गए सुसमाचार का विस्तृत लेख है। यह स्थानीय परिस्थितियों से बहुत ही कम प्रभावित है यद्धपि ये पत्र यहूदी और अन्यजातिय विष्वासीयों के बीच के मतभेद को सम्बोधित करता है।

एन ए एस बी ''संत के रूप में बुलाए गए''

एन के जे वी, एन आर एस वी, जे बी ''संत होने के लिए बुलाए गए''

टी इ वी ''उनके अपने लोग होने के लिए बुलाए गए''

''संत'' षब्द मसीह में विष्वासियों के स्तर को दर्षाता है न कि उनके पाप रहित होने को। यह उनके मसीह के समान होने की प्रक्रिया को भी प्रगट करता है। फिलि.4:21 को छोड़ सभी जगह यह षब्द बहुवचन में है। यहाँ तक कि यहाँ पर भी ये मिश्रित है। मसीही होना एक समाज, परिवार और देह का भाग होना है।

आयत 1 बताता है कि पौलुस प्रेरित होने के लिए बुलाए गए। आयत 6 में विष्वासी ''यीषु मसीह में बुलाए गए हैं''। आयत 7 में विष्वासियों को ''संत'' पुकारा गया है। यह ''बुलाहट'' नए नियम में परमेष्वर द्वारा षुरूवात की प्राथमिकता को प्रगट करती है। कोई भी पतित मानव स्वयं को नहीं बुला सकता (रोमियों.3:9–13; यषा.53:6; 1पत.2:25)। परमेष्वर हमेषा षुरूवात करते हैं (यूह. 6:44, 65; 15:16)। वे हमेषा वाचा को हमारे पास लाते हैं। यह हमारे उद्धार के लिए बिलकुल सच है (हम पर थोपी गई धार्मिकता और कानूनन जगह) पर प्रभावषाली सेवकाई के लिए हमारे वरदानों के लिए भी (1कुरि.12:7, 11) और हमारे मसीही जीवन के लिए। देखिए नीचे दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : संत

यह इब्रानी षब्द ''*कादाष*'' का यूनानी समानार्थ षब्द है, जिसका अर्थ है, किसी जगह, वस्तु और किसी व्यक्ति को यहोवा के उपयोग लिए अलग करना। यह अंग्रेज़ी के ''पवित्र'' विचार को प्रगट करता है। यहोवा अपने स्वभाव (अनन्त अरचित आत्मा) और चरित्र (नैतिक सिद्धता) के कारण मानवजाति से अलग हैं। वह वो स्तर हैं जिसके द्वारा सभी बातों को जाँचा और उनका न्याय किया जाता है। वह अपरिवर्तनिय और पवित्र हैं।

परमेष्वर ने लोगों को संगति के लिए बनाया पर पतन (उत्प.3) ने पवित्र परमेष्वर और पतित मानवजाति के बीच नैतिक और तर्कानुसार दरार पैदा कर दी, परन्तु परमेष्वर ने चुनाव किया कि वह अपनी विवेकषील सृश्टि का अपने साथ पुनः सम्बन्ध स्थापित करेंगे इसलिए वह उन्हें ''पवित्र'' होने के लिए बुलाते हैं (लैव्य.11:44; 19:2; 20:7, 26; 21:8)। विष्वास सम्बन्ध से और वाचा के स्तर के कारण उनके लोग यहोवा के साथ पवित्र बन जाते हैं, परन्तु साथ ही वे पवित्र जीवन जीने के लिए भी बुलाए गए हैं (मत्ती.5:48)।

यह पवित्र जीवन सम्भव है क्योंकि विष्वासी पूरी तरह से मसीह के जीवन और कार्य और उनके मन और हृदय में पवित्र आत्मा की उपस्थिति के कारण स्वीकार किए गए हैं। यह एक विरोधाभास की परिस्थिति की स्थापना कर देता है

1) मसीह की थोपी गई धार्मिकता के कारण धर्मी होना

2) पवित्र आत्मा की उपस्थिति के कारण पवित्र जीवन जीने के लिए बुलाए गए हैं

विष्वासी ''संत'' हैं (***हगीओइ***) क्योंकि उनके जीवन में ये उपस्थित हैं (1) पवित्र परमेष्वर (पिता) की इच्छा; (2) पवित्र पुत्र (यीषु) के कार्य; (3) पवित्र आत्मा की उपस्थिति।

नए नियम में ''संत'' षब्द हमेषा बहुवचन में आता है (केवल फिलि.4:12 में नहीं पर वहाँ भी संदर्भ इसे बहुवचन बना देता है)। उद्धार पाना एक परिवार, देह और इमारत का भाग होना है। बाइबलीय विष्वास व्यक्तिगत स्वीकार के साथ षुरू होता है, परन्तु साझी संगति में बदल जाता है। हम सभी को वरदान मिला है (1कुरि.12:11) मसीह की देह – कलीसिया के स्वस्थ्य, उन्नति और भलाई के लिए (1कुरि.12:7)। हम सेवा करने के लिए बचाए गए हैं। पवित्रता परिवार का चरित्र है।

''तुम्हें अनुग्रह और परमेष्वर से षान्ति मिले''

यह आषीश की षुरूवात करने का पौलुस का तरीका है। यह यूनानी ''अभिवादन'' (कारीन) का प्रयोग है जिसे मसीही षब्द ''अनुग्रह'' (कारीस) में बदला गया है। पौलुस ने षायद इस यूनानी षुरूवाती षब्द और परम्परिक इब्रानी षब्द ''षालोम'' या षान्ति को जोड़ा हो। यह मात्र एक कल्पना है। ध्यान दीजिए कि धर्मषास्त्रीय तौर पर अनुग्रह हमेषा षान्ति के साथ प्रयोग में लाया जाता है।

''हमारे पिता परमेष्वर और प्रभु यीषु मसीह से''

पौलुस दोनों नामों के लिए एक ही विभक्ति का प्रयाग लगातार करते हैं (1कुरि.1:3; गला.1:3; इफि.1:2; फिलि.1:2; 2थिस्स.1:2; 1तीमु.1:1; 2तीमु.1:2; तीत.1:4)। यह उनका तरीका था व्याकरण तौर पर त्रिएकता के इन दोनों व्यक्तियों को जोड़ने का। यह यीषु मसीह के ईष्वरत्व और समानता पर ज़ोर डालता है।

विषेश षीर्शक : पिता

पुराना नियम पारिवारीक रूपक तौर पर परमेष्वर को पिता के रूप में प्रगट करता है।

1) इस्राएल राश्ट्र का व्याख्यान यहोवा के ''पुत्र'' के रूप में किया गया है (होषे.11:1; मला.3:17)।

2)षुरूवाती व्यवस्थाविवरण में परमेष्वर को पिता रूपक से प्रगट किया गया है (व्यव.1:31)।

3) व्यव.32 में इस्राएल को ''उनकी संतान'' और परमेष्वर को ''तुम्हारे पिता'' कहकर पुकारा गया है।

4) ये रूपक भ.सं.103:13 में भी प्रयोग किया गया है और भ.सं.68:5 में उन्नत रूप से प्रगट किया गया है (अनाथों के पिता)।

5) भविश्यद्वक्ताओं में यह सामान्य है (यषा.1:2; 63:8; इस्राएल पुत्र, परमेष्वर पिता, 63:16; 64:8; यिर्म.3:4, 19; 31:9)।

यीषु अरामिक बोलते थे, इसका अर्थ यह है कि जहाँ भी ''पिता'' षब्द यूनानी ''पेटेर'' के रूप में नज़र आता है वहाँ अरामिक ''अब्बा'' का प्रयोग किया गया है। यह पारिवारिक षब्द ''पापा'', ''डैडी'' पिता के साथ यीषु के नज़दिक के सम्बन्ध को प्रगट करता है; अपने अनुयायियों पर इसे प्रगट करना उन्हें पिता के साथ नज़दिक का सम्बन्ध रखने के लिए प्रोत्साहित करता है। ''पिता'' षब्द पुराने नियम में यहोवा के लिए प्रयोग किया गया है पर यीषु इसका प्रयोग व्यापक तौर पर करते हैं। यह मसीह में परमेष्वर के साथ हमारे सम्बन्ध का प्रमुख प्रकाषन है।

रोमियों 1:8—15

8 पहले मैं तुम सब के लिये यीशु मसीह के द्वारा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, कि तुम्हारे विश्वास की चर्चा सारे जगत में हो रही है।

9 परमेश्वर जिस की सेवा मैं अपनी आत्मा से उसके पुत्रा के सुसमाचार के विषय में करता हूं, वही मेरा गवाह है; कि मैं तुम्हें किस प्रकार लगातार स्मरण करता रहता हूं।

10 और नित्य अपनी प्रार्थनाओं में विनती करता हूं, कि किसी रीति से अब भी तुम्हारे पास आने को मेरी यात्रा परमेश्वर की इच्छा से सुफल हो।

11 क्योंकि मै। तुम से मिलने की लालसा करता हूं, कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूं जिस से तुम स्थिर हो जाओ।

12 अर्थात् यह, कि मैं तुम्हारे बीच में होकर तुम्हारे साथ उस विश्वास के द्वारा जो मुझ में, और तुम में है, शान्ति पाऊं।

13 और हे भाइयों, मैं नहीं चाहता, कि तुम इस से अनजान रहो, कि मैं ने बार बार तुम्हारे पास आना चाहा, कि जैसा मुझे और अन्यजातियों में फल मिला, वैसा ही तुम में भी मिले, परन्तु अब तक रूका रहा।

14 मैं यूनानियों और अन्यभाषियों का और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्जदार हूं।

15 सो मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूं।

1:8

''पहले''

इस संदर्भ में ''पहले'' का अर्थ है ''षुरूवात से'' या ''मुझे षुरू करना है'' (जे. बी. फिलिप्स)।

''मैं अपने परमेष्वर का यीषु मसीह
द्वारा धन्यवाद करता हूँ''

पौलुस सामान्य तौर पर परमेष्वर से अपनी प्रार्थना प्रभु यीषु मसीह द्वारा करते हैं। परमेष्वर तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग प्रभु यीषु मसीह हैं। देखिए विषेश षीर्शक : पौलुस द्वारा परमेष्वर की स्तुति, प्रार्थना और परमेष्वर को धन्यवाद करना 7:25।

''तुम सब के लिए''

आयत 7 के समान ''सब'' षब्द का प्रयोग यहूदी अगुवे जो निरो के षासन काल के सताव के कारण भाग गए थे और अन्यजातिय अगुवे जो कुछ वर्शों के लिए अगुवे बने थे उनके बीच जलन और मतभेद को प्रगट करता है। रोमियों.9–11 इसी बात को प्रगट करते है।

यह भी सम्भव है कि यह ''कमज़ोर'' और ''बलवानों'' को सम्बोधित करता हो जिनका ज़िक्र रोमियों.14:1–15:13 में किया गया है। परमेष्वर पूरी रोम की कलीसिया से प्रेम करते हैं और समान प्रेम करते हैं।

'' क्योकि तुम्हारे विश्वास की चर्चा
सारे जगत में हो रही है।''

रोमियों.16:19 इसी सत्य को व्यक्त करता है। यह निष्चय ही अतिषयोक्ति है जो रोमन राश्ट्र को प्रगट करता है (1थिस्स.1:8)।

1:9

''परमेष्वर...मेरे गवाह हैं''

पौलुस परमेष्वर के नाम से सपथ लेते हैं (रोमियों.9:1; 2कुरि.1:23; 11:10–11, 31; 12:19; गला.1:20; 1थिस्स.2:5)। यह अपने सत्य को साबित करने का उनका यहूदी तरीका था।

''मेरी आत्मा में''

यह मानव आत्मा के लिए न्यूमा के प्रयोग का उत्तम उदाहरण है (रोमियों.8:5, 10, 16; 12:11) जो कि मानव जीवन के अभिप्राय में प्रयोग किया गया है (उदा. स्वास, इब्रानी रूहा, उत्प.2:7)।

1:10

''नित्य अपनी प्रार्थनाओं में विनती करता हूँ''

पौलुस ने इस कलीसिया की स्थापना नहीं की पर फिर भी उनके लिए नित्य प्रार्थना करते थे (2कुरि.11:28), जैसा कि वह अपनी कलीसिया के लिए करते थे। देखिए विषेश षीर्शक : अंतरविनती प्रार्थना 9:3।
रोम की कलीसिया में पौलुस के बहुत से मित्र और सहकर्मी थे जैसा कि 16 अध्याय में स्पश्ट रीति से दिया गया है।

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। पौलुस अपनी स्पेन यात्रा के दौरान रोम जाना चाहते थे (रोमियों.15:22–24)। लम्बे समय वहाँ रूकने की उनकी योजना नहीं थी। पौलुस हमेषा नई जगह चाहते थे जहाँ किसी ने काम न किया हो (रोमियों.15:20; 2कुरि.10:15, 16)। यह भी सम्भव है कि रोमियों के पत्र का उद्देष्य उनकी स्पेन की मिष्नरी यात्रा के लिए धन इकट्ठा करना हो (रोमियों.15:24)।

'' कि किसी रीति से अब भी तुम्हारे पास आने को
मेरी यात्रा परमेश्वर की इच्छा से सुफल हो''

यह आयत 13 और 15:32 के सदृष्य है। पौलुस ने कभी भी ऐसा अनुभव नहीं किया कि उनका जीवन और यात्रा योजनाऐं उनकी हैं परन्तु वे जानते थे कि वे परमेष्वर के हैं (प्रेरित.18:21; 1कुरि.4:199 16:7)। देखिए 12:2 का विषेश षीर्शक।

1:11

''मैं तुम से मिलने की लालसा करता हूँ''

ये 15:23 के सदृष्य है। लम्बे समय से पौलुस रोम के विष्वासियों से मिलना चाहते थे (प्रेरित.19:21)।

''कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूं''

वाक्यांष ''आत्मिक वरदान'' आत्मिक दृश्टि और आषीश के अभिप्राय से प्रयोग किया गया है (रोमियों.11:29; 15:27)। पौलुस ने स्वयं को अद्वितिय तरीके से अन्यजातियों के प्रेरित के रूप में देखा (रोमियों.1:15)।

''जिस से तुम स्थिर हो जाओ।''

देखिए विषेश षीर्शक 5:2।

1:12

यह मसीही संगति का उद्‌देष्य है। वरदान इसलिए दिए गए हैं ताकि विष्वासियों को सेवा करने वाले समाज में जोड़ सके। विष्वासियों को सभी की भलाई के लिए वरदान दिए गए हैं (1कुरि.12:11)। सभी विष्वासियों को पूरे–समय की सेवा के लिए बुलाया गया और वरदान दिया गया (इफि.4:11–12)। पौलुस स्पश्ट रीति से प्रेरिताई अधिकार के अभिप्राय को व्यक्त करते हैं पर साथ ही पूर्ण समाज की एक समान समझ को भी व्यक्त करते हैं। विष्वासियों को एक दूसरे की जरूरत है।

1:13

''हे भाइयों, मैं नहीं चाहता, कि तुम
इस से अनजान रहो''

यह एक मुहावरा है जिसे पौलुस महत्वपूर्ण विशय को व्यक्त करने के लिए अधिकतर प्रयोग करते हैं (रोमियों.11:25; 1कुरि.10:1; 12:1; 2कुरि.1:8; 1थिस्स.4:13)। यह यीषु मसीह द्वारा प्रयोग में लाये गए ''आमीन, आमीन'' के समान है।

''परन्तु अब तक रूका रहा''

यही वाक्यांष 1थिस्स.2:18 में भी प्रयोग किया गया है जहाँ षैतान अभिकर्ता है। पौलुस विष्वास करते थे कि उनका जीवन परमेष्वर द्वारा चलाया जाता है परन्तु षैतान उसमें बाधा लाता है। दोनों ही सत्य हैं (अय्य.1–2; दानि.10)। इस षब्द का प्रयोग बताता है कि यहाँ पर रूकावट का कारण भूमध्य सागर के पूर्वी क्षेत्र में उनकी सेवा का कार्य है जो अब तक पूरा नहीं हुआ।

''कि जैसा मुझे और अन्यजातियों में फल मिला,
वैसा ही तुम में भी मिले''

इस संदर्भ में ''फल'' का अर्थ परिवर्तित लोग हैं पर यूह.15:1–8 और गला.5:22 में यह मसीही परिपक्वता को प्रगट करता है। मत्ती.7 कहता है कि ''तुम अपने फल से पहचाने जाओगे'' पर ये फल षब्द की व्याख्या नहीं करता। इसका सदृष्य निष्चय ही फिलि.1:22 है जहाँ पर पौलुस इसी प्रकार के खेती–बाड़ी रूपक का प्रयोग करते हैं।

1:14

''मैं कर्जदार हूँ।''

पौलुस इस वाक्यांष का प्रयोग रोमियों में कई बार करते हैं।

1) पौलुस अन्यजातियों को सुसमाचार सुनाने के लिए कर्जदार हैं।

2) पौलुस ''षरीर'' के कर्जदार नहीं हैं (रोमियों.8:12)।

3) अन्यजातिय कलीसिया यरूषलेम की माता कलीसिया की सहायता के लिए कर्जदार है (रोमियों.15:27)।

''यूनानियों का''

यह सभ्य, सांस्कृतिक लोगों को प्रगट करता है जो भूमध्य सागर के आस–पास बसे हुए थे। सिकन्दर महान और उसके अनुयायियों ने संसार को अपने धर्म की ओर बढ़ाया। परन्तु रोमियों ने जब राज्य ले लिया तो उन्होंने यूनानी संस्कृति को फैलाया।

''अन्यभाषियों का''

यह षब्द अनपढ़ और असभ्य लोगों को व्यक्त करता है, विषेश करके उत्तर के। ये वे लोग थे जो यूनानी नहीं बोलते थे। उनकी भाशा रोमियों को ''बर बर बर'' सुनाई देती थी।

''बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का''

यह सम्भव है कि ये यूनानीयों और अन्यभाशियों को प्रगट करता हो पर आवष्यक नहीं कि ऐसा ही हो। यह षायद सभी लोगों के समाज और व्यक्तियों को सम्बोधित करने का एक और तरीका हो।

रोमियों.1:16–17

16 क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।

17क्योंकि उस में परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिये प्रगट होती है; जैसा लिखा है, कि विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।

1:16–17

पूरी पुस्तक का केन्द्रीय विशय है। यह केन्द्रीय विशय रोमियों.3:21–31 में विस्तृत और संक्षिप्त किया गया है।

1:16

एन ए एस बी, एन आर एस वी ''मैं सुसमाचार से नहीं लजाता''

एन के जे वी ''मैं मसीह के सुसमाचार से नहीं लजाता''

टी इ वी ''मेरा सुसमाचार पर पूर्ण विष्वास है''

जे बी ''मैं षुभ संदेष से नहीं लजाता''

पौलुस षायद मरकुस.8:38 और लूका.9:26 के यीषु के कथनों की ओर संकेत कर रहे हैं। वे सुसमाचार की सामग्री से लजाते नहीं और न ही फलस्वरूप होने वाले सताव से (2तीमु.1:12, 16, 18)।

1कुरि.1:23 में यहूदी सुसमाचार से लजाते थे क्योंकि ये दुःख उठाने वाले मसीह के बारे में था और यूनानी इससे लजाते थे क्योंकि ये षरीर के पुनरूत्थान को साबित करता है।

''उद्धार''

पुराने नियम में इब्रानी षब्द ''याषो'' प्राथमिक रूप से षारीरिक छुटकारे को प्रगट करता है (याक.5:15), पर नए नियम का यूनानी षब्द ''सोड़ज़ो'' प्राथमिक रूप से आत्मिक छुटकारे को प्रगट करता है (1कुरि.1:18, 21)। देखिए रॉबर्ट बी. ग्रीडलस्टोन की पुस्तक, सिनोनिमस ऑफ द ओल्ड टैस्टामैन्ट, पृश्ठ.124–126।

एन ए एस बी ''उन सब के लिए जो विष्वास करते हैं''

एन के जे वी ''उन सब के लिए जो विष्वास करते हैं''

एन आर एस वी ''उन सब के लिए जिनके पास विष्वास है''

टी इ वी ''सभी जो विष्वास करते हैं''

जे बी ''सभी जिनके पास विष्वास है''

सुसमाचार सभी लोगों के लिए है (मैं ''सभी'', ''जो कोई भी'', ''सब'' षब्दों से कितना प्यार करता हूँ), पर विष्वास करना ग्रहण करने के लिए एक षर्त है (प्रेरित.16:30–31)। दूसरा है पष्चाताप (मरकुस.1:15; प्रेरित.3:16, 19; 20:21)। परमेष्वर मानव से वाचा के साधन से लेन–देन करते हैं। वे हमेषा षुरूवाती कदम उठाते हैं और विशय की स्थापना करते हैं (यूह.6:44, 65)। पर इसके लिए कई परस्पर षर्तें हैं। देखिए नोट 1:5।

यहाँ पर जिस यूनानी षब्द का अनुवाद ''विष्वास'' के लिए किया गया है उसे ''भरोसे'' में भी अनुवाद किया जा सकता है। यूनानी षब्द अग्रेज़ी षब्दों की अपेक्षा अधिक विस्तृत हैं। बचाने वाला विष्वास प्रगतिमय विष्वास है (1कुरि.1:18; 15:2; 2कुरि.2:15; 1थिस्स.4:14)।

वास्तविक तौर पर ''विष्वास'' के लिए यूनानी षब्द के पिछे के इब्रानी षब्द का अर्थ है दृढ़ खड़ा होना, एक व्यक्ति जो पाँवों को थोड़ा सा फैलाए खड़ा है और आसानी से हिलाया नहीं जा सकता। इसका विपरीत पुराना नियम का रूपक है ''मेरे पैर दलदल की कीच में थे'' (भ.सं.40:2), ''मेरे पैर फिसलना चाहते थे'' (भ.सं.73:2)। इब्रानी षब्द एमुन, एमुनाह, अमन रूपक तौर पर उन लोगों के लिए प्रयोग में लाए जाने लगे जो भरोसेमन्द और वफ़ादार थे। बचाने वाला विष्वास पतित मनुश्य के विष्वासयोग्य होने की योग्यता को प्रगट नहीं करता पर परमेष्वर की। विष्वासियों की आषा उनकी योग्यता पर नहीं पर परमेष्वर के चरित्र और वायदों पर आधारित है। यह उनका भरोसेमन्द होने, उनकी विष्वासयोग्यता और उनके वायदे हैं।

''पहले तो यहूदी''

इसके पिछे के कारण को संक्षिप्त रूप से 2:9–10 और 3 में दिया गया है और विस्तृत तौर पर अध्याय 9–11 में दिया गया है। ये मत्ती.10:6; 15:24; मरकुस.7:27।

यह रोम की कलीसिया में यहूदी और यूनानी विष्वासियों के मध्य जलन से सम्बन्धित है।

1:17

''परमेश्वर की धार्मिकता''

इस संदर्भ में ये षब्द निम्न बातों को व्यक्त करता है (1) परमेष्वर का चरित्र, और (2) कैसे वह पापी मानवजाति को वो चरित्र देते हैं। यरूषलेम बाइबल अनुवाद कहता है ''ये ही परमेष्वर के न्याय को प्रगट करता है''। ये विष्वासी के नैतिक जीवनषैली को प्रस्तुत करता है पर प्राथमिक तौर पर ये उसके धर्मी न्यायी के सामने खड़े होने के कानूनन स्तर को प्रगट करता है। यह पतित, पापी मानवजाति पर परमेष्वर की धार्मिकता का थोपा जाना जबसे वह बदल गया है ''विष्वास द्वारा सेंतमेंत धर्मी ठहराया जाना'' कहलाता है (2कुरि.5:21; फिलि.3:9)। इसी आयत ने मार्टिन लूथर के जीवन और धर्मसमझ को बदल दिया। सेंतमेंत धर्मी ठहराए जाने का उद्देष्य षुद्धिकरण, मसीह की समानता और परमेष्वर का धर्मी चरित्र है (रोमियों.8:28–29; इफि.1:4; 2:10; गला. 4:19)। धार्मिकता केवल कानूनी घोशणा नहीं है पर ये पवित्र जीवन के लिए बुलाहट है; मानवजाति में परमेष्वर के स्वरूप को कार्यषील रूप में पुनः स्थापित करना (2कुरि.5:21)।

विषेश षीर्शक : धार्मिकता

''धार्मिकता'' इतना महत्वपूर्ण षीर्शक है कि प्रत्येक बाइबल विद्यार्थी को इस पर विस्तृत अध्ययन करना चाहिए।

पुराने नियम में परमेष्वर के चरित्र को ''न्यायी'' और ''धर्मी'' के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मेसोपोटामिया का षब्द नदी किनारे पाए जाने वाले बेंत से लिया गया है जो दिवारों इत्यादि की सीधाई को नापने के प्रयोग में लाई जाती थी। परमेष्वर रूपक रीति से इस षब्द का प्रयोग अपने चरित्र को प्रस्तुत करने के लिए करते हैं। वे सीधा कोना हैं जिसके द्वारा सभी बातों को परखा जाता है। ये विचार परमेष्वर की धार्मिकता और उनके न्याय करने के अधिकार को प्रमाणित करता है।

मनुश्य परमेष्वर के स्वरूप में रचा गया था (उत्प.1:26–27; 5:1, 3; 9:6)। मानवजाति परमेष्वर के साथ संगति के लिए रची गई थी। सारी सृश्टि परमेष्वर और मनुश्य के वार्तालाप के लिए मंच है। परमेष्वर चाहते थे कि उनकी सबसे उत्तम सृश्टि मानव उन्हें जाने, उनसे प्रेम करे, उनकी सेवा करे, और उनके समान हो। मनुश्य की वफ़ादारी की परीक्षा हुई (उत्प.3) और वास्तविक जोड़ा इस परीक्षा में असफल हुआ। इसके फलस्वरूप परमेष्वर और मानव के बीच का सम्बन्ध टूट गया (उत्प.3; रोमियों. 5:12–21)।

परमेष्वर ने वायदा किया है कि वह इस संगती को पुनः स्थापित करेंगे (उत्प.3:15)। इसे वह अपनी इच्छा और अपने पुत्र के द्वारा करते हैं। मानव इस दूरी को भरने में असमर्थ है (रोमियों.1:18–3:20)।

पतन के बाद पुनः स्थापना की ओर परमेष्वर का पहला कदम था उनकी वाचा जो उनके निमन्त्रण और मानवजाति के पष्चाताप, विष्वासयोग्यता और आज्ञाकारी प्रतिउत्तर पर आधारित था। पतन के कारण मनुश्य सही प्रतिउत्तर के कार्य के लिए असमर्थ था (रोमियों.3:21–31; गला.3)। परमेष्वर को स्वयं ही षुरूवात करनी पड़ी पतित मनुश्य को पुनः स्थापित करने के लिए। ऐसा उन्होने इस तरह किया।

1) पापी मनुश्य को मसीह के कार्य द्वारा धर्मी <u>घोशित</u> करके (अदालती धार्मिकता)।

2) मसीह के कार्य द्वारा मनुश्य को <u>मुफ्त</u> धार्मिकता देकर (थोपी गई धार्मिकता)।

3) भीतर बसने वाली आत्मा <u>देकर</u> जो मनुश्य में धार्मिकता उत्पन्न करती है (नैतिक धार्मिकता)।

4) मसीह द्वारा परमेष्वर के स्वरूप को विष्वासियों में पुनः स्थापित करने के द्वारा अदन की वाटिका की संगति को <u>पुनः स्थापित</u> करके (उत्प.1:26–27) (सम्बन्धित धार्मिकता)।

परमेष्वर वाचामय प्रतिउत्तर चाहते हैं। परमेष्वर मुफ्त में देते हैं परन्तु मनुश्य को प्रतिउत्तर देना होगा और लगातार प्रतिउत्तर देना होगा
क) पष्चाताप में

ख) विष्वास में

ग) आज्ञाकारी जीवनषैली

घ) धीरज

धार्मिकता परमेष्वर और मनुश्य के बीच वाचामय और परस्पर कार्य है। यह परमेष्वर के चरित्र, मसीह के कार्य और पवित्र आत्मा के प्रोत्साहन कार्य पर आधारित है जिसका सभी व्यक्तियों को व्यक्तिगत रूप से प्रतिउत्तर देना होगा। यह विचार ''विष्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना'' कहलाता है। यह विचार सुसमाचारों में प्रगट हुआ पर इन षब्दों में नहीं। यह प्राथमिक तौर पर पौलुस द्वारा प्रयोग में लाया गया जो ''धार्मिकता'' के लिए यूनानी षब्द का प्रयोग विभिन्न तरह से 100 से अधिक बार करते हैं।

पौलुस एक षिक्षित रब्बी थे जो डिकाओसुने षब्द का प्रयोग इब्रानी अभिप्राय के सैप्टूआजैन्ट के एस डी क्यू से करते हैं न कि

यूनानी साहित्य से। यूनानी लेखों में ये षब्द उस व्यक्ति से जुड़ा है जो परमेष्वर और समाज की आषाओं को पूरा करता है। इब्रानी अभिप्राय में ये हमेषा वाचा षब्दों के ढाँचे से जुड़ा है। यहोवा न्यायी, नैतिक और धर्मी परमेष्वर हैं। वे चाहते हैं कि उनके लोग उनके चरित्र को प्रगट करें। छुड़ाए गए मनुश्य नई सृश्टि बन जाते हैं। यह नयापन नई जीवनषैली को जन्म देता है जो भक्तिपूर्ण जीवन है (सेंतमेंत धर्मी ठहराए जाने पर रोमन कैथोलिक केन्द्रीत हैं)। क्योंकि इस्राएल परमेष्वर के राज्य में है इसकारण सामाजिक और धार्मिक कानून में कोई अन्तर नहीं है। ये अन्तर इब्रानी और यूनानी षब्दों का अंग्रेज़ी में अनुवाद करने के कारण आया और ''न्याय'' (सामाजिक कानून) और धार्मिकता (धर्मिक कानून) बन गया।

यीषु मसीह का सुसमाचार यह है कि पतित मानव परमेष्वर के साथ संगति के लिए पुनः स्थापित किया गया है। पौलुस का पक्ष यह है कि परमेष्वर मसीह के द्वारा दोशी को क्षमा करते हैं। यह पिता के प्रेम, दया और अनुग्रह; पुत्र के जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान; पवित्रात्मा के सुसमाचार के करीब लाने से होता है। धर्मी ठहराया जाना परमेष्वर का मुफ्त में किया गया कार्य है पर ये भक्तिपूर्ण जीवन में बदलना चाहिए। जागृति लानेवालों के लिए ''परमेष्वर की धार्मिकता'' पापी मनुश्य को परमेष्वर के सम्मुख ग्रहण योग्य बनाना है और कैथोलिक के लिए यह परमेष्वर के समान होना है। यह दोनों ही सही हैं।

मेरे दृश्टिकोण में पूरी बाइबल उत्प.4—प्रका.20 तक परमेष्वर द्वारा अदन की संगति को परमेष्वर द्वारा पुनः स्थापित करने का वृतान्त है। बाइबल की षुरूवात परमेष्वर और मनुश्य के बीच पृथ्वी में संगति से होती है (उत्प.1—2) और बाइबल का अन्त भी इसी प्रकार की संगति से होता है (प्रका.21—22)। परमेष्वर का स्वरूप और उद्देष्य पुनः स्थापित होगा।

ऊपर की चर्चा को प्रमाणित करने के लिए दिए गए नए नियम के आयतों पर ध्यान दीजिए जो यूनानी षब्द समूह को प्रस्तुत करते हैं।

1) परमेष्वर धर्मी हैं (अधिकतर परमेष्वर न्यायी हैं से जुड़ा हुआ है)

क. रोमियों.3:26

ख. 2थिस्स.1:5—6

ग. 2तीमु.4:8

घ. प्रका.16:5

2) यीषु धर्मी हैं

क. प्रेरित.3:14; 7:52; 22:14 (मसीहा का षीर्शक)

ख. मत्ती.27:19

ग. 1यूह.2:1, 29; 3:7

3) अपनी सृश्टि के लिए परमेष्वर की इच्छा धार्मिकता है

क. लैव्य.19:2

ख. मत्ती.5:48 (रोमियों.5:17—20)

4) धार्मिकता को प्रदान और उत्पन्न करने के परमेष्वर के साधन

क. रोमियों.3:21—31

ख. रोमियों.4

ग. रोमियों.5:6—11

घ. गला.3:6–14

ङ. परमेष्वर द्वारा दिए गए
(1) रोमियों.3:24; 6:23

(2) 1कुरि.1:30

(3) इफि.2:8–9

च. विष्वास द्वारा प्राप्त

(1) रोमियों.1:17; 3:22, 26; 4:3, 5, 13; 9:30; 10:4, 6, 10

(2)1कुरि.5:21

छ. पुत्र के कार्य द्वारा

(1) रोमियों.5:21–31

(2) 2कुरि.5:21

(3) फिलि.2:6–11

5) परमेष्वर की इच्छा यह है कि उनके अनुयायी धर्मी बनें

क. मत्ती.5:3–48; 7:25–27

ख. रोमियों.2:13; 5:1–5; 6:1–23

ग. 2कुरि.6:14

घ. 1तीमु.6:11

ङ. 2तीमु.2:22; 3:16

च. 1यूह.3:7

छ. 1पत.2:24

6) परमेष्वर धार्मिकता से संसार का न्याय करेंगे

क. प्रेरित.17:31

ख. 2तीमु.4:8

धार्मिकता परमेष्वर का चरित्र है जो पापी मनुश्य को मुफ्त में यीषु मसीह द्वारा प्राप्त हुआ है। यह

1) परमेष्वर की आज्ञा है

2) परमेष्वर का वरदान है

3) मसीह का कार्य है

पर साथ ही यह धर्मी बनने की एक प्रक्रिया है जो पूर्ण हृदय और जोष से खोजी जानी चाहिए जो एक दिन मसीह के दूसरे आगमन पर समाप्त हो जाएगी। परमेष्वर के साथ संगति उद्धार के समय पुनः स्थापित कर दी गई थी परन्तु यह जीवनभर प्रगतिषील रहती है कि परमेष्वर के आमने–सामने मृत्यु या उठा लिए जाने के द्वारा समाप्त हो।

यहाँ पर एक अच्छा लेख है जो पौलुस और उनके पत्रों के षब्दकोश से लिया गया है।

''कैल्वीन, लूथर से अधिक, परमेष्वर की धार्मिकता के विचार पर अधिक ज़ोर देते हैं। परमेष्वर की धार्मिकता के प्रति लूथर का दृश्टिकोण छुटकारे के विचार से भरा है। कैल्वीन परमेष्वर की धार्मिकता को हमें देने और हम पर प्रगट करने के अद्भूत स्वभाव को प्रगट करते हैं।'' (पृश्ठ.834)

मेरे लिए परमेष्वर से विष्वासी के सम्बन्ध के तीन चरण हैं।

1) सुसमाचार व्यक्ति है (पूर्वी कलीसिया और कैल्वीन का अवधारणा)

2) सुसमाचार सत्य है (अगस्तीन और लूथर का अवधारणा)

3) सुसमाचार परिवर्तित जीवन है (कैथोलिक अवधारणा)

ये सभी सच हैं और स्वस्थ बाइबलीय मसीहत के लिए इसका इकट्ठा रहना आवष्यक है। यदि किसी एक पर अधिक ज़ोर दिया गया और दूसरे को दबाया तो समस्याऐं षुरू हो जाऐंगी।

हमें यीषु का स्वागत करना होगा।

हमें सुसमाचार पर विष्वास करना होगा।

हमें मसीह की समानता के लिए लगातार कोषिष करनी होगी।

एन ए एस बी ''विष्वास से विष्वास तक''

एन आर एस वी ''विष्वास के द्वारा विष्वास के लिए''

टी इ वी ''ये विष्वास के द्वारा षुरू से अन्त तक''

जे बी ''यह बताता है कि कैसे विष्वास विष्वास की ओर ले जाता है''

यह वाक्यांष प्रगति के परिवर्तन को प्रस्तुत करता है। ऐसा ही ढाँचा वह 2कुरि.2:16 और अपो और एइस 2कुरि.3:18 में प्रयोग करते हैं। मसीहत एक तोहफा है जो अपेक्षा करता है कि चरित्र और जीवनषैली बने।

इस वाक्यांष को अनुवाद करने के कई तरीके हैं। विलियमस का नया नियम इसका अनुवाद यूँ करता है ''विष्वास का मार्ग जो बड़े विष्वास की ओर ले जाता है''। मुख्य धर्मषास्त्रीय बातें है (1) विष्वास परमेष्वर से आता है (''प्रकाषित''); (2) मानवजाति को प्रतिउत्तर देना होगा और लगातार देना होगा; और (3) विष्वास का फल भक्तिपूर्ण जीवन होना चाहिए।

एक बात निष्चित है कि मसीह पर ''विष्वास'' महत्वपूर्ण है (रोमियों.5:1; फिलि.3:9)। परमेष्वर के उद्धार का अवसर विष्वास प्रतिउत्तर की षर्त पर आधारित है (मरकुस.1:15; यूह.1:12; 3:16; प्रेरित.3:16, 19; 20:21)।

एन ए एस बी ''पर धर्मी जन विष्वास से जीवित रहेगा''

एन के जे वी ''धर्मी विष्वास से जीवित रहेगा''

एन आर एस वी ''जो धर्मी है वह विष्वास से जीवित रहेगा''

टी इ वी ''पर जो परमेष्वर के सामन धर्मी ठहराया गया वह विष्वास से जीवित रहेगा''

जे बी ''धर्मी मनुश्य विष्वास के द्वारा जीवन प्राप्त करता है''

यह हब.2:4 से लिया गया है परन्तु मैसोरैटिक या सैप्टूआजैन्ट मूलपाठ नहीं है। पुराने नियम मे ''विष्वास'' रूपक तौर पर ''भरोसेमन्द'', ''विष्वासयोग्य'' और ''वफ़ादार'' अर्थ में लिया गया है। बचाने वाला विष्वास परमेष्वर की विष्वासयोग्यता पर आधारित है (रोमियों.3:5, 21, 22, 25, 26)। मनुश्य की विष्वासयोग्यता इस बात का प्रमाण है कि व्यक्ति ने परमेष्वर के उपाय पर भरोसा किया है। यही पुराने नियम का आयत गला.3:11 और इब्रा.10:38 में भी लिखा गया है। आगे का मूलपाठ रोमियों. 1:18–3:20 परमेष्वर के प्रति विष्वासयोग्यता के विपरीत बातों को प्रगट करता है।

बहुत से टीका लेखक इस वाक्यांष के अन्तिम भाग को किस तरह समझते हैं इसकी सूची बनाना हमारे लिए सहायक होगा।

1) वाउघान : ''विष्वास से षुरू करते हैं और विष्वास से अन्त करते हैं''

2) हॉडजे : ''केवल विष्वास के द्वारा''

3) बारीट : ''किसी और बात के नहीं पर विष्वास के आधार पर''

4) नॉक्स : ''विष्वास पहला और अन्तिम''

5) स्टैग : ''धर्मी विष्वास से जीवित रहेगा''

रोमियों.1:18–23

18 परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं।

19 इसलिये कि परमश्ेवर के विषय में ज्ञान उन के मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है।

20 क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उस की सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते है, यहां तक कि वे निरूत्तर हैं।

21 इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्हों ने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उन का निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया।

22 वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए।

23 और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला।

1:18

''उनके लिए''

केन्द्रीय विशय 1:16–17 में कितनी बार 'गार' षब्द का प्रयोग किया गया है उस पर ध्यान दीजिए–तीन बार, और अब यह पौलुस के सुसमाचार के पहले भाग का परिचय दे रहा है (रोमियों.1:18–3:31), जो कि उद्धार के लिए परमेष्वर के सामर्थ के विरूद्ध है (रोमियों.1:16–17)।

''परमेष्वर का क्रोध''

आयत 18–23 पौलुस के समय के अन्यजातिय राश्ट्रों को प्रस्तुत करते हैं। पौलुस का अन्यजातिय देषों का चित्रण यहूदी साहित्य में भी है (सुलैमान की बुद्धि 13:1 के बाद और अरिसटिआस का पत्र,134–138) और यूनान और रोम के नैतिक लेखों में भी। वही बाइबल जो हमें परमेष्वर के प्रेम के बारे में बताती है वही उनके क्रोध के बारे में भी बताती है (रोमियों.1:23–32; 2:5, 8; 3:5; 4:15; 5:9; 9:22; 12:19; 13:4–5)।

दोनों क्रोध और प्रेम मानवीय षब्द हैं जो परमेष्वर के लिए प्रयोग किए गए हैं। यह इस सत्य को प्रस्तुत करते हैं कि परमेष्वर के विष्वासियों के प्रति कुछ स्तर हैं कि वे किस तरह से प्रतिउत्तर दें और जीवन यापन करें। किसी का जानबूझकर परमेष्वर की इच्छा को त्यागना (मसीह का सुसमाचार) इस आयत में लिखे गए थोड़े समय का प्रतिफल और अनन्त प्रतिफल लाता है (रोमियों.2:5)। परमेष्वर को बदला लेने वाले के रूप में नहीं देखना चाहिए। न्याय उनका ''अद्भुत कार्य'' है (यषा.28:21 के बाद)। प्रेम उनका चरित्र है, तुलना कीजिए व्यव.5:9 की 5:10; 7:9 से। उनमें न्याय और अनुग्रह दोनों ही षामिल हैं। फिर भी सब परमेष्वर के बारे में बता सकते हैं (सभो.12:13–14; गला.6:7), मसीही भी (रोमियों.14:10–12; 2कुरि.5:10)।

''प्रगट हुआ है''

जैसे कि सुसमाचार प्रगट हुआ सत्य है (1:17) वैसे ही परमेष्वर का क्रोध भी। इनमें से कोई भी मनुश्य की खोज नहीं है।

''जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं''

यह मनुश्य के जानबूझकर किए गए त्याग को दर्षाता है न कि इसके प्रति अन्जान होने को (1:21, 32; यूह.3:17–21)। इस वाक्यांष का अर्थ हो सकता है (1) वे सत्य को जानते हैं पर उसे त्याग देते हैं; (2) उनकी जीवनषैली बताती है कि उन्होंने सत्य को त्याग दिया है; और (3) उनका जीवन और बातें दूसरों को सत्य जानने और ग्रहण करने से रोकते हैं।

विषेश षीर्शक : पौलुस के लेखों में ''सत्य''

पौलुस का इस षब्द और इसके समानता के षब्दों का प्रयोग इसके पुराने नियम के समानार्थ षब्द 'एमेट' से आया है जिसका अर्थ है भरोसेमन्द या विष्वासयोग्य। बाइबल के समय के यहूदी लेखों के ये षब्द झुठ के विपरीत सत्य के लिए प्रयोग किया गया है। षायद सबसे नज़दिक का सदृष्य लेख मृत सागर लेख ''धन्यवाद के गीत'' है, जहाँ पर ये प्रगट सिद्धान्तों के लिए प्रयोग किया गया है। एस्सेन सभा के सदस्य ''सत्य के गवाह'' बन गए।

पौलुस इस षब्द का प्रयोग यीषु मसीह के सुसमाचार को प्रस्तुत करने के लिए करते हैं।

1) रोमियों.1:18, 25; 2:8, 20; 3:7; 15:8

2) 1कुरि.12:6

3) 2कुरि.4:2; 6:7; 11:10; 13:8

4) गला.2:5, 14; 5:7

5) इफि.1:13; 6:14

6) कुलु.1:5, 6

7) 2थिस्स.2:10, 12, 13

8) 1तीमु.2:4; 3:15; 4:3; 6:5

9) 2तीमु.2:15, 18, 25; 3:7, 8; 4:4

10) तीत.1:1, 14

पौलुस इस षब्द का प्रयोग अपनी सही बात को प्रस्तुत करने के लिए भी करते थे।

1) प्रेरित.26:25

2) रोमियों.9:1

3) 2कुरि.7:14; 12:6

4) इफि.4:25

5) फिलि.1:18

6) 1तीमु.2:7

वह इसका प्रयोग 1कुरि.5:8 में अपने उद्देष्य को व्यक्त करने के लिए करते है और साथ ही अपनी जीवनषैली (मसीहियों की भी)के लिए इफि.4:24, 5:9; फिलि.4:8।

वे कई बार इसका प्रयोग लोगों के लिए भी करते थे :

1) परमेष्वर, रोमियों.3:4 (यूह.3:33; 17:17)

2) यीषु, इफि.4:21 (यूह.14:6 के समान)

3) प्रेरितों की गवाही, तीत.1:13

4) पौलुस , 2कुरि.6:8

केवल पौलुस ही इस कर्म संज्ञा (एलेथियुओ) का प्रयोग करते हैं, गला.4:16 और इफि.4:15 में, जहाँ पर ये सुसमाचार को व्यक्त करता है। बाकी अध्ययन के लिए कॉलिन ब्राऊन द्वारा सम्पादित, द न्यू इन्टरनैष्नल डिक्सनरी ऑफ न्यू टैस्टामैन्ट थियोलौजी के भाग.3 के पृश्ठ.784–902 पढ़ें।

1:19

''इसलिये कि परमश्ेवर के विषय में
ज्ञान उन के मनों में प्रगट है,
क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है''

हर मनुश्य सृश्टि द्वारा परमेष्वर के बारे में कुछ न कुछ जानता है (1:20; अय्य.12:7—10 और भ.सं.19:1—6; प्रकृति द्वारा, 12—15; वचन द्वारा, साथ ही बुद्धि द्वारा भी)। धर्मषास्त्रीय षिक्षा में इसे ''प्राकृतिक प्रकाषन'' कहते हैं। यह पूर्ण नहीं है, पर यह परमेष्वर का तरीका है उन लोगों को ज़िम्मेदार ठहराने का जिन्हें वचन में परमेष्वर का ''विषेश प्रकाषन'' यीषु मसीह नहीं मिला (कुलु. 1:15; 2:9)।

''जानना'' षब्द नए नियम में दो अभिप्रायों से प्रयोग किया गया है : (1) इसके पुराने नियम का अर्थ है नज़दिक का व्यक्तिगत सम्बन्ध (उत्प.4:1' यिर्म.1:5), और (2) इसका यूनानी अभिप्राय है विशय के तथ्य को जानना (1:21)। सुसमाचार दोनों है एक व्यक्ति जिसका स्वागत करना है और व्यक्ति के बारे में संदेष जिस पर विष्वास करना है। यहाँ पर ये दूसरे अभिप्राय से प्रयोग किया गया है।

1:20

ये आयत परमेष्वर के तीन भावों को प्रस्तुत करता है

1) उनके अदृष्य गुण (उनका चरित्र, कुलु.1:15; 1तीमु.1:17; इब्रा.11:27)

2) उनकी अनन्त सामर्थ (जो प्रकृति की सृश्टि में नज़र आता है)

3) उनका ईष्वरीय स्वभाव (उनके सृश्टि की रचना के कार्य और उद्देष्य में नज़र आता है)

''जगत की सृश्टि के समय से ही''

ऐसा ही वाक्यांष मरकुस.10:6; 13:19; 2पत.3:4 में भी मिलता है। अदृष्य परमेष्वर अब प्रगट हुए हैं (1) षारीरिक सृश्टि (इस आयत में); (2) वचन (भ.सं.19, 119); और (3) अन्त में यीषु मसीह में (यूह.14:9)।

''ईष्वरीय स्वभाव''

यूनानी साहित्य के थिओटेस का अनुवाद ''ईष्वरीय स्वभाव'' में किया जा सकता है। ये सर्वोच्च रूप से यीषु मसीह में नज़र आता है। उनमें अद्वितिय रूप से ईष्वरीय स्वभाव विद्यमान है (2कुरि.4:4; इब्रा.1:3)। वे मानव रूप में परमेष्वर के पूर्ण प्रकाषन हैं (कुलु.1:19; 2:9)। सुसमाचार का सबसे अद्भुत सच यह है कि पतित मानव मसीह पर विष्वास करने के द्वारा मसीह की समानता बाँटेगा (इब्रा.12:10; 1यूह.3:2)। मानवजाति में परमेष्वर का स्वरूप (उत्प.1:26—27)पुनः स्थापित किया गया (थियोस, 2पत.1:3—4)।

एन ए एस बी ''स्पश्ट रीति से दिखे, जो उन्होंने रचा उसके द्वारा समझे गए''

एन के जे वी ''स्पश्ट दिखे, जो चिज़ें रची गई हैं उनके द्वारा समझे गए''

एन आर एस वी ''जो चिज़े रची गई उनके द्वारा दिखे और समझे गए''

टी इ वी ''स्पश्ट रीति से दिखे; परमेष्वर ने जो चिज़ें रची उनके द्वारा पहचाने गए''

एन जे बी ''चिज़ों की सृश्टि के प्रति मानव समझ के द्वारा स्मश्ट रीति से समझे गए''

नोइओ (मत्ती.15:17) और *काथोरेओ* का मिश्रण सच्ची समझ को व्यक्त करता है। परमेष्वर ने दो पुस्तकें लिखीं हैं (1) प्रकृति और (2) वचन। ये दोनो मानव समझ के लायक हैं और प्रतिउत्तर की माँग करती हैं (बुद्धि, 13:1—9)।

''ताकि वे निरूत्तर हों''

यह साहित्यिक है ''कानूनन बचाव नहीं''। पूरे नए नियम में यूनानी षब्द (अपोगेओमाय) केवल यहाँ पर और 2:1 में प्रयोग किया गया है। अध्याय 1:18–3:20 के धर्मषास्त्रीय उद्देष्य को याद रखिए कि ये मनुश्य के आत्मिक खोयापन को प्रगट करता है। मनुश्य अपने पास के ज्ञान के लिए ज़िम्मेदार है। परमेष्वर मनुश्य को केवल उन्हीं बातों के लिए ज़िम्मेदार ठहराते हैं जो वो जानते हैं या जान सकते हैं।

1:21

''क्योंकि वे परमेष्वर को भी जानते हैं''

मानव धार्मिक तौर पर उन्नति नहीं कर रहा–वे बुराई में उन्नति कर रहा है। उत्पति 3 से मानवजाति नीचे की ओर जा रही है। अन्धकार बढ़ रहा है।

''उन्होंने उन्हें परमेष्वर के समान आदर नहीं दिया
और न ही धन्यवाद दिया''

रोमियों.1:23–24 में ये अन्यजातिय मूर्ति पूजा की विपदा है (यिर्म.2:9–13)।

''परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि
उन का निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया।''

नया नियम : ऑल्फ मॉरली का नया अनुवाद इसे यूँ लिखता है ''उन्होंने परमेष्वर के बारे में व्यर्थ की बातों में स्वयं को व्यस्त कर लिया और उनके मुर्ख दिमाग अन्धेरे में भटकते रहे।''मानव के धार्मिक प्रबन्ध परमेष्वर के प्रति मनुश्य के विद्रोह और घमण्ड के स्मारक हैं (1:22; कुलु.2:16–23)।

दोनों कर्म संज्ञा इस बात को प्रगट करते है कि उनमें सही प्रतिउत्तर देने की समझ की कमी है और इसका कारण यह है कि परमेष्वर ने उनके हृदय पर पर्दा रखा हुआ है यह फिर ज्योति को त्याग देने के कारण उनका मन कठोर हो गया है (रोमियों. 10:12–16; 2राजा.17:15; यिर्म.2:5; इफि.4:17–19)।

''मन''

यह पुराने नियम के अभिप्राय में पूर्ण व्यक्ति को व्यक्त करता है। यह मनुश्य के विचारों और भावों को व्यक्त करने का तरीका है। देखिए विषेश षीर्शक 1:24।

1:22

एन ए एस बी, एन के जे वी ''बुद्धिमान होने की प्रतिज्ञा करते थे और वे निर्बुद्धि हो गए''

एन आर एस वी ''बुद्धिमान होने का दावा करते थे और वे निर्बुद्धि हो गए''

टी इ वी ''वे कहते हैं कि वे बुद्धिमान हैं पर वे निर्बुद्धि हैं''

जे बी ''वे स्वयं को जितना तर्कषास्त्री पुकारते रहे वे उतने ही मुर्ख होते गए''

यूनानी के ''निर्बुद्धि'' षब्द से हमें अंग्रेज़ी का ''मंदबुद्धि'' मिला है। समस्या मानवजाति के घमण्ड और अपने ही ज्ञान पर भरोसे में है (1कुरि.1:18–31; कुलु.2:8–23)। यह उत्प.3 में वापस पहुँचाता है जहाँ ज्ञान अलगाव और न्याय लाया। ऐसा नहीं है कि मनुश्य का ज्ञान हमेषा गलत होता है पर ये अधूरा है।

1:23

जनबूझकर अनजान बनना, मनुश्य को परमेष्वर के स्वरूप में रचा गया (उत्प.1:26–27; 5:1, 3; 9:6) जिन्होंने परमेष्वर को धरती की चिज़ों के रूप में बदल दिया।

1) जानवर (मिस्र)

2) प्रकृति की ताकतें (फारस)

3) मानव स्वरूप (यूनान/रोम)–मूर्ति। यहाँ तक कि परमेष्वर के अपने लोगों ने ऐसा किया (व्यव.4:15–24)

इस पुराने पाप के कुछ नए तरीके हैं

1) प्रकृति की पूजा (धरती माता)

2) नए युग का पूर्वी विचार (रहस्यवाद, प्रेतों कि उपासना, जादू–टोना)

3) नास्तिक मानववाद (मार्कसवाद, उथापियावाद, प्रगतिषील विचारवाद, राजनीति और षिक्षा पर अटूट विष्वास)

4) पवित्र दवाईयाँ (स्वास्थ्य और लम्बा जीवन)

5) षिक्षा

''महिमा''

देखिए विषेश षीर्शक 3:23

''नाषवान मनुश्य''

देखिए नीचे दिया गया विषेश षीर्शक

विषेश षीर्शक : नाष करना, बिगाड़ना, खराब करना (पेथेरो)

पेथेरो का आधारभूत अर्थ है, नाष करना, बिगाड़ना, खराब करना। ये इन बातों के लिए प्रयोग किया जा सकता है

1) आर्थिक नाष (सम्भवतः 2कुरि.7:2)

2) षारीरिक नाष (1कुरि.3:17[क])

3) नैतिक नाष (रोमियों.1:23; 8:21; 1कुरि.15:33, 42, 50; गला.6:8; प्रका.19:2)

4) यौन कामुकता के लिए भटकाना (2कुरि.11:3)

5) अनन्त नाष (2पत.2:12, 19)

6) मनुश्य की नाष होती हुई संस्कृति (कुलु.2:22; 1कुरि.3:17[ख])

अधिकतर ये षब्द इसी संदर्भ में प्रयोग किया जाता है जहाँ इसका विपरीत तात्पर्य होता है (रोमियों.1:23; 1कुरि.9:25; 15:50, 53)। हमारी धरती की देह और अनन्त देह के बीच सदृष्य विपरीत अन्तर पर ध्यान दीजिए।

1) नाषवान और अविनाषी, 1कुरि.15:43

2) अनादर और महिमा, 1कुरि.15:43

3) निर्बलता और सामर्थ, 1कुरि.15:43

4) स्वभविक देह और आत्मिक देह, 1कुरि.15:44

5) पहला आदम और अन्तिम आदम, 1कुरि.15:45

6) मिट्टी का स्वरूप और स्वर्गीय का स्वरूप, 1कुरि.15:49

रोमियों.1:24–25

24 इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उन के मन के अभिलाषों के अुनसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया, कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें। 25 क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन।।

1:24, 26, 28

''परमेष्वर ने उन्हें छोड़ दिया''

यह बहुत ही भयंकर पर सम्भव न्याय है। यह परमेष्वर का कथन है ''पतित मानवजाति को अपने ही मार्ग पर चलने दो'' (भ.सं. 81:12; हाषे.4:17; प्रेरित.7:42)। आयत 23–32 परमेष्वर द्वारा अन्यजातियों और उनकी धार्मिक बातों (हमारी भी) के त्याग (लौकिक क्रोध) के विशय में व्याख्या करते हैं। अन्यजातियाँ यौन भ्रश्टता और षोशण का चित्रण करती हैं।

1:24

''मन''

देखिए दिया गया विषेश षीर्शक

विषेश षीर्शक : हृदय या मन

सैप्टूआजैन्ट और नए नियम में इब्रानी षब्द लैब को प्रस्तुत करने के लिए यूनानी षब्द कार्डीया का प्रयोग किया गया है। यह बहुत से तरीकों से प्रयोग किया गया है (बाउएर, अरनद्ट, गिन्गरीच और ड़न्कर, ए ग्रीक–इग्लिष लैक्सीकन, पृश्ठ.403–404)।

1) दैहीक जीवन का केन्द्रीय भाग, व्यक्ति का रूपक (प्रेरित.14:17; 2कुरि.3:2–3; याक.5:5)

2) आत्मिक (नैतिक) जीवन का केन्द्रीय भाग

क) परमेष्वर हृदय को जानते हैं (लूका.16:15; रोमियों.8:27; 1कुरि.14:25; 1थिस्स.2:4; प्रका.2:23)

ख) मनुश्य के आत्मिक जीवन का प्रयोग (मत्ती.15:18–19; 18:35; रोमियों.6:17; 1तीमु.1:5; 2तीमु.2:22; 1पत.1:22)

3) विचार जीवन का केन्द्रीय भाग (उदा. ज्ञान, मत्ती.13:15; 24:48; प्रेरित.7:23; 16:14; 28:27; रोमियों.1:21; 10:6; 16:18; 2कुरि.

4:6; इफि.1:18; 4:18; याक.1:26; 2पत.1:19; प्रका.18:7; हृदय दिमाग का समानार्थ है 2कुरि.3:14–15 और फिलि.4:7 में)

4) इच्छा का केन्द्रीय भाग (प्रेरित.5:4; 11:23; 1कुरि.4:5; 7:37; 2कुरि.9:7)

5) भावना का केन्द्रीय भाग (मत्ती.5:28; प्रेरित.2:26, 37; 7:54; 21:13; रोमियों.1:24; 2कुरि.2:4; 7:3; इफि.6:22; फिलि.1:7)

6) आत्मा के कार्य के लिए अद्वितिय स्थान (रोमियों.5:5; 2कुरि.1:22; गला.4:6; मसीह हमारे हृदय में – इफि.3:17)

7) हृदय या मन एक व्यक्ति को प्रस्तुत करने का रूपक तरीका है (मत्ती.22:37, व्यव.6:5 से लिया गया)। विचार, उद्देष्य और कार्य जो मन से जुड़े होते हैं वह एक व्यक्ति को प्रस्तुत करते हैं।

पुराने नियम में इस षब्द के कुछ चौंका देने वाले प्रयोग हैं।

क) उत्प.6:6; 8:21, ''परमेष्वर मन में अति खेदित हुए'' (देखिए होषे.11:8–9)

ख) व्यव.4:29; 6:5, ''अपने पूरे मन से और अपने सारे प्राण से''

ग) व्यव.10:16, ''खतना किया हुआ ह्रदय'' और रोमियों.2:29

घ) यहे.18:31–32, ''एक नया हृदय''

ङ) यहे.36:26, ''एक नया हृदय'' और ''पत्थर का ह्रदय''

1:25

''परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर
झूठ बना डाला''

ये कई तरीकों से समझा जा सकता है (1) मानवजाति का स्वयं को परमेष्वर ठहराना (2थिस्स.2:4, 11); (2) मानवजाति ने यहोवा जिन्होंने सब कुछ बनाया (1:18–23) की उपासना न करके अपनी ही बनाई वस्तुओं –मूर्तियों की उपासना की (यषा. 44:20; यिर्म.13:25; 16:19); और (3) मानवजाति द्वारा सुसमाचार के सत्य का पूर्ण त्याग (यूह.14:17; 1यूह.2:21, 27)। इस संदर्भ में (2) सही बैठता है।

''उपासना और सेवा की''

मानवजाति के पास हमेषा देवता होंगे। हरेक मनुश्य जानता है कि कुछ सत्य है और कोई है जो उससे बड़ा है।

''जो सदा धन्य है। आमीन।''

पौलुस यहूदी आषीश देते हैं, जो उनके स्वभाव में है (रोमियों.9:5; 2कुरि.11:31)। पौलुस अपनी प्रार्थनाओं में अकसर यह लिखते हैं (रोमियों.9:59 11:36; 15:33; 16:27)।

''हमेषा''

देखिए दिया गया विषेश षीर्शक

विषेश षीर्शक : हमेषा (यूनानी मुहावरे)

एक यूनानी मुहावरे का वाक्यांष है ''युगों तक'' (लूका.1:25; 11:36; 16:27; गला.1:5; 1तीमु.1:17), जो इब्रानी 'ओलाम' को व्यक्त करता है। देखिए रॉबर्ट बी. ग्रीड़लस्टोन, सिनॉनिमस ऑफ द ओल्ड टैस्टामैन्ट, पृश्ठ.319–321। बाकी सम्बन्धित वाक्यांष

हैं ''युग तक'' (मत्ती21:19, मरकुस.11:14; यूह.6:58; 8:35; 12:34; 13:8; 14:16; 2कुरि.9:9) और ''युगानुयुग'' (इफि.3:21)। इन मुहावरों में ''हमेषा'' के लिए कोई भेद नहीं है। ''युग'' षब्द रब्बीयों के व्याकरण ''बहुवचन की श्रेश्ठता'' के अभिप्राय से बहुवचन रूपक है, यह यहूदियों के कई ''युगों'' को प्रगट करता है जैसे ''अज्ञानता का युग'', ''बुराई का युग'', ''आने वाला युग'' और ''धार्मिकता का युग''।

''आमीन''

देखिए दिया गया विषेश षीर्शक

विषेश षीर्शक : आमीन

1) पुराना नियम

क) ''आमीन'' षब्द ''सत्य'' के लिए इब्रानी षब्द 'एमेथ' या ''सच्चाई'' 'एमुन', 'एमुनाह' और विष्वास और विष्वासयोग्य से लिया गया है।

ख) यह व्यक्ति के दृढ़ खड़े रहने के तरीके को प्रगट करता है। इसका विपरीत है वह जो अस्थिर है या फिसलता है (व्यव. 28:64–67; 38:16; भ.सं.40:2; 73:18; यिर्म23:12) और ठोकर खाना (भ.सं.73:2)। इस वास्तविक प्रयोग से ही विष्वासयोग्य, भरोसेमन्द, वफ़ादार का रूपक प्रयोग प्रगतिषील हुआ (उत्प.15:16; हब.2:4)।

ग) विषेश प्रयोग

– स्तम्भ, 2राजा.18:16 (1तीमु.3:15)

– निष्चय, निर्ग.17:12

– स्थिर, निर्ग.17:12

– दृढ़ता, यषा.33:6; 34:5–7

– सत्य, 1राजा.10:6; 17:24; 22:16; नीति.12:22

– अटल, 2इति.20:20; यषा.7:9

– भरोसेमन्द (तोरह), भ.सं.119:43, 142, 151, 168

घ) पुराने नियम में दो और इब्रानी षब्द कार्यरत विष्वास के लिए प्रयोग किए गए हैं।

– बताख़, भरोसा

– यरा, भय, आदर, आराधना (उत्प.22:12)

ङ) भरोसे और भरोसेमन्द के अभिप्राय से दूसरों द्वारा कहे गए वाक्यों के सत्य और भरोसेमन्द होने का रूपक प्रयोग किया गया है (व्यव.27:15–26; नेह.8:6; भ.सं.41:13; 70:19; 89:52; 106:48)।

च) इस षब्द की धर्मषास्त्रीय कुंजी मानवजाति की विष्वासयोग्यता नहीं पर यहोवा की विष्वासयोग्यता है (निर्ग.34:6; व्यव.32:4;

भ.सं.108:4; 115:1; 117:2; 138:2)। पतित मानवजाति की केवल एक ही आषा है यहोवा की वाचा जिसके प्रति वे अनुग्रही विष्वासयोग्य वफ़ादारी हैं और उनके वायदे।

जो यहोवा को जानते हैं उन्हें उनके समान होना होगा (हब.2:4)। बाइबल परमेष्वर द्वारा अपने स्वरूप को मानवजाति में पुनः रचने का इतिहास और लेखा है (उत्प.1:26–27)। उद्धार मनुश्य की परमेष्वर से संगति रखने की क्षमता की पुनः रचना करता है। इसलिए हम रचे गए हैं।

2) नया नियम

क) वाक्य के अन्त में वाक्य के भरोसेमन्द होने की पुश्ठी के लिए "आमीन" षब्द का प्रयोग करना नए नियम में सामान्य बात है (1कुरि.14:16; 2कुरि.1:20; प्रका.1:7; 5:14; 7:12)।

ख) प्रार्थना के अन्त में इस षब्द का प्रयोग नए नियम में सामान्य बात है (रोमियों.1:25; 9:5; 11:36; 16:27; गला.1:5; 6:18; इफि.3:21; फिलि.4:20; 2थिस्स.3:18; 1तीमु.1:17; 6:16; 2तीमु.4:18)।

ग) केवल यीषु ही हैं जिन्होंने इस षब्द (यूहन्ना में दो बार)का प्रयोग महत्वपूर्ण वाक्यों का परिचय देने के लिए किया (लूका. 4:24; 12:37; 18:17, 29; 21:32; 23:43)।

घ) यह षब्द प्रका.3:14 यीषु के लिए षीर्शक के रूप प्रयोग किया गया है (सम्भवतः यषा.65:16 में ये यहोवा का नाम था)।

ङ) विष्वासयोग्यता और विष्वास, भरोसेमन्द और भरोसे के विचार को व्यक्त करने के लिए यूनानी षब्द पिस्टोस और पिस्टेस का अंग्रेज़ी अनुवाद विष्वास और भरोसे में किया गया है।

रोमियों.1:26–27

26 इसलिये परमश्ेवर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया; यहां तक कि उन की स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को, उस से जो स्वभाव के विरूद्ध है, बदल डाला।

27 वैसे ही पुरूष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे, और पुरूषों ने पुरूषों के साथ निर्लज्ज काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया।

1:26, 27

समलैंगिकता परमेष्वर से अलग जीवन का एक उदाहरण है क्योंकि सृश्टि में परमेष्वर की इच्छा थी (फूलो–फलो)। यह पाप और बहुत बड़ी सांस्कृतिक समस्या है (1) पुराने नियम में (लैव्य.18:22; 20:13; व्यव.23:18); (2) यूनानी–रोमी संसार में (1कुरि. 6:9; 1तीमु.1:10); (3) हमारे दिनों में।

उत्प.1–3 के संदर्भ के कारण समलैंगिकता पतित जीवन का एक उदाहरण है। मानवजाति परमेष्वर के स्वरूप में रची गई है (उत्प.1:26–27; 5:1, 3; 9:6)। मानवजाति को स्त्री और पुरूश के रूप में रचा गया (उत्प.1:27)। परमेष्वर की आज्ञा थी कि फूलो और फलो (उत्प.1:28; 9:1, 7)। मानव के पतन (उत्प.3) ने परमेष्वर की इच्छा और योजना में रूकावट पैदा कर दी। समलैंगिकता निसंदेह ही विद्रोह है। यह कहना आवष्यक है कि इस संदर्भ में केवल इसी पाप के बारे में चर्चा नहीं की गई है (रोमियों.1:29–31)। प्रत्येक पाप मानवजाति की परमेष्वर से दूरी को प्रस्तुत करता है और इसके लिए उसे दण्ड के योग्य ठहराता है। प्रत्येक पाप विषेश कर जीवनषैली का पाप परमेष्वर के सामने घृणित वस्तु है।

विषेश षीर्शक : समलैंगिकता

समलैंगिक जीवनषैली को सामान्य जीवनषैली के रूप में ग्रहण करने के लिए आज के समय का बहुत ही दबाव है। बाइबल इसका नाषवान जीवनषैली के रूप में खण्डन करती है, ये सृश्टि के लिए परमेष्वर की इच्छा के विरूद्ध है।

1) यह फूलो और फलो की आज्ञा (उत्प.1) का उल्लंघन है।

2) यह अन्यजातिय उपासना और संस्कृति को चित्रित करता है (लैव्य.18:22; 20:13; रोमियों.1:26–17; यहू.1:7)।

3) यह परमेष्वर से अलग स्वयं पर केन्द्रीत स्वतंत्रता को प्रगट करता है (1कुरि.6:9–10)।

इससे पहले कि मैं इस विशय को समाप्त कर दूँ मैं आष्वासन देना चाहता हूँ परमेष्वर का प्रेम और क्षमा सभी विद्रोही व्यक्तियों के लिए उपलब्ध है। मसीहियों को कोई अधिकार नहीं कि वे इस पाप से ग्रसित व्यक्तियों के प्रति नफ़रत और क्रूरता से व्यवहार करें जब वह ये जानते हों कि हम सब ने पाप किया है। दोश लगाने से अधिक फायदा प्रार्थना, सांत्वना, गवाही और दया इससे उभरने के लिए अधिक लाभदायक हैं। परमेष्वर का वचन और आत्मा दोश लगाने का काम करेंगे यदि हम उन्हें अवसर देंगे तो। प्रत्येक यौन पाप परमेष्वर के सामने घृणित है और दण्ड के योग्य है। यौन इच्छा मानवजाति की भलाई, आनन्द और स्थिर समाज के लिए परमेष्वर की ओर से दिया गया उत्तम वरदान है। पर परमेष्वर द्वारा दी गई यह तीव्र इच्छा विद्रोह, आत्मकेन्द्रित, भोग–विलास की खोज , ''किसी भी कीमत पर मेरे लिए अधिक'' जीवनषैली में बदल जाती है (रोमियों.8:1–8; गला.6:7–8)।

रोमियों.1:28–32

28 और जब उन्हों ने परमेश्वर को पहचानना न चाहा, इसलिये परमेश्वर ने भी उन्हें उन के निकम्मे मन पर छोड़ दिया; कि वे अनुचित काम करें।

29 सो वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैरभाव, से भर गए; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्षा से भरपूर हो गए, और चुगलखोर।

30 बदनाम करनेवाले, परमेश्वर के देखने में घृणित, औरों का अनादर करनेवाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी बुरी बातों के बनानेवाले, माता पिता की आज्ञा न माननेवाले।

31 निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित और निर्दय हो गए। 32 वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले मुत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तौभी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं, वरन करनेवालों से प्रसन्न भी होते हैं।

1:28–31

यूनानी में ये एक ही वाक्य है। यह विद्रोही, पतित, स्वतंत्र मानवजाति का चित्रण करता है (रोमियों.13:13; 1कुरि.5:11; 6:9; गला. 5:19–21; इफि.5:5; 1तीमु.1:10; प्रका.21:8)।

मानवजाति का पाप यह था कि उसने अपने अस्तित्व को परमेष्वर से अलग तलाषा। नरक ही वह अटल अस्तित्व है। स्वतंत्रता एक दुर्घटना है। मानवजाति को परमेष्वर की आवष्यकता है और वह उनके बिना खोई हुई, बिना उद्देष्य के और अधूरी है। नरक का सबसे दुःखद भाग परमेष्वर की उपस्थिति का अभाव है।

विषेश षीर्शक : नए नियम के पाप और सदाचार

पाप और सदाचार की सूची नए नियम में बहुत ही सामान्य है। अधिकतर वह रब्बीयों और संस्कृति की सूची को प्रगट करते हैं। नया नियम विपरीत चरित्र प्रगट करता है जो देखे जा सकते हैं।

	पाप	सदाचार
1) पौलुस	रोमियों.1:28—32	...
	रोमियों.13:13	रोमियों.2:9—21
	1कुरि.5:9—11	...
	1कुरि.6:10	1कुरि.6:6—10
	2कुरि.12:20	2कुरि.6:4—10
	गला.5:19—21	गला.5:22—23
	इफि.4:25—32	...
	इफि.5:3—5	...
	...	फिलि.4:8—9
	कुलु.3:5, 8	कुलु.3:12—14
	1तीमु.1:9—10	...
	1तीमु.6:4—5	...
	2तीमु.2:22[क], 23	2तीमु.2:22[ख], 24
	तीत.1:7; 3:3	तीत.1:8—9; 3:1—2
2) याकूब	याक.3:15—16	याक.3:17—18
3) पतरस	1पत.4:3	1पत.4:7—11
	2पत.1:9	2पत.1:5—8
4) यूहन्ना	प्रका.21:8	...
	प्रका.22:15	...

1:29

''भ्रश्ट मन''

पतित मनुश्य स्वतंत्रता को स्वयं की उपासना के रूप में देखता है : ''कोई भी और प्रत्येक वस्तु केवल मेरे लिए।'' रोमियों.1:24, 26, 28 में परमेष्वर अभिकर्ता हैं पर इस संदर्भ में मानवजाति द्वारा ज्ञान और अह्म के चुनाव ने समस्या पैदा कर दी। परमेष्वर अपनी सृश्टि को अपने चुनाव और स्वतंत्रता का फल भोगने देते हैं।

''से भरे हुए''

मनुश्य जिस बात के ऊपर जीवन जीता है उसी से भरा और चित्रित होता है। रब्बी कहेंगे कि प्रत्येक मनुश्य के हृदय में एक काला (बुरा येटज़र) और एक सफेद (भला येटज़र) होता है। जिसे अधिक खिलाया जाता है वही बड़ा हो जाता है।

1:29—31

ये परमेष्वर बिना के जीवन के लक्षण और प्रतिफल हैं। ये उस व्यक्ति और समाज का चित्रण करते हैं जिन्होंने बाइबल के परमेष्वर को त्यागने का चुनाव किया है। यह पौलुस द्वारा दी गई पापों की सूचीयों में से एक है (1कुरि.5:11; 6:9; 2कुरि.12:20; गला.5:19—21; इफि.4:31; 5:3—4; कुलु.3:5—9)।

1:30

''अभिमानी''

देखिए दिया गया विषेश षीर्शक

विषेश षीर्शक : पौलुस द्वारा हुपर मिश्रित षब्दों का प्रयोग

यूनानी विभक्ति *हुपर* का प्रयोग करके नए षब्दों की रचना करने का पौलुस को बहुत षौक था, जिसका अर्थ है ''ऊपर''। जब इसका प्रयोग शश्ठी विभक्ति के साथ किया जाता है तो इसका अर्थ होता है ''बदले में''। इसका अर्थ ''बारे में'' भी हो सकता है जैसे फेरी (2कुरि.8:23; 2थिस्स.2:1)। पाँचवीं विभक्ति के साथ प्रयोग करने पर इसका अर्थ होता है ''ऊपर'' या ''पार'' (ए. टी. रॉबर्टसन, ए ग्रामर ऑफ द ग्रीक न्यू टैस्टमैन्ट इन द लाईट ऑफ हीस्टौरिकल रिसर्च, पृश्ठ.625–633)। जब पौलुस किसी बात पर अधिक बल देना चाहते थे तो वह इस षब्द का विभक्ति के साथ प्रयोग करते थे। निम्नलिखित सूची पौलुस द्वारा इस विभक्ति के साथ जोड़कर प्रयोग किए गए षब्दों की सूची है।

क) *हापक्स लैगोमैनोन* (नए नियम में केवल एक ही बार प्रयोग किया गया)

1) *हुपराकमोस,* कोई जीवन के मुख्य भाग से बाहर चला जाता है, 1कुरि.7:36

2) *हुपराउक्सानो,* बहुतायत से बढ़ना, 2थिस्स.1:3

3) *हुपरबाइनो,* हद से आगे बढ़ना या उल्लंघन करना, 1थिस्स.4:6

4) *हुपरकेईना,* पार, 2कुरि.10:16

5) *हुपरिकटेइना,* अधिकबढ़ाना, 2कुरि.10:14

6) *हुपरिनटुगचानो,* मध्यस्थता करना, रोमियों.8:26

7) *हुपरनिकाओ,* बहुतायत से विजयी होना, रोमियों.8:37

8) *हुपरप्लेओनाज़ो,* बहुतायत से अधिकता में होना, 1तीमु.1:14

9) *हुपरूपसो,* श्रेश्ठता से ऊपर उठाना, फिलि.2:9

10) *हुपरफ्रोनेओ,* अस्थिर विचार आना, रोमियों.12:3

ख) षब्द जो केवल पौलुस के लेखों में प्रयोग किए गए हैं

1) *हुपराएरोमाय,* स्वयं को ऊँचा उठाना, 2कुरि.12:7; 2थिस्स.2:4

2) *हुपरबालोनटोस,* नापने से ऊपर, बहुतायत से, 2कुरि.11:23 (2कुरि.3:10; 9:14; इफि.1:19; 2:7; 3:19)

3) *हुपरबोले,* अधिक निषाने लगाना, रोमियों.7:13; 1कुरि.12:31; 2कुरि.1:8; 4:7, 17; 22:7; गला.1:13

4) *हुपरीकपेरीसोउ,* सभी माप के पार, इफि.3:20; 1थिस्स.3:10; 5:13

5) *हुपरलीअन,* सर्वश्रेश्ठ उपाधि में, 2कुरि.11:5; 12:11

6) *हुपरोचे,* श्रेश्ठता, 1कुरि.2:1; 1तीमु.2:2

7) *हुपरपेरीसेउओ,* श्रेश्ठ बहुतायत, रोमियों.5:20 (मध्य, बहुतायत से भरना, भरकर बह जाना, 2कुरि.7:4)

ग) षब्द जो पौलुस और नए नियम के अन्य लेखकों द्वारा प्रयोग किए गए।

1) *हुपरानो,* बहुत ऊपर, इफि.1:21; 4:10; इब्रा.9:5

2) *हुपरेचो,* श्रेश्ठता, रोमियों.13:1; 2तीमु.3:2; लूका.1:51; याक.4:6; 1पत.5:5

पौलुस तीव्र उत्तेजना वाले पुरूश थे, जब लोग अच्छे होते थे तो वे भी अच्छे होते थे और जब लोग बुरे होते थे तो वे भी बुरे होते थे। इस विभक्ति ने पाप, स्वयं और मसीह और सुसमाचार के बारे में उनकी उच्च भावना को व्यक्त करने में उनकी सहायता की।

1:32

''ऐसे ऐसे काम करनेवाले मुत्यु के दण्ड के योग्य हैं''

यह वाक्य मूसा की व्यवस्था को प्रगट करता है। इसे रोमियों.6:16, 21, 23; 8:6, 13 में साराषं रूप में व्यक्त किया गया है। मृत्यु परमेष्वर की इच्छा और परमेष्वर के जीवन के विपरीत है (यहे.18:32; 1तीमु.2:4; 2पत.3:9)।

''वरन करनेवालों से प्रसन्न भी होते हैं।''

विपदा सहभागी से प्रेम करती है। पतित मानवजाति दूसरों के पापों को बहाने के रूप में प्रयोग करती है, ''सभी तो ऐसा ही कर रहे हैं''। संस्कृतियाँ अपने विषेश पापों से पहचानी जाती हैं।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) पौलुस क्यों रोम की कलीसिया को पत्र लिखते हैं?

2) रोमियों क्यों मसीहत के लिए इतना महत्वपूर्ण धार्मिक वाक्य है?

3) रोमियों.1:18–3:20 की अपने षब्दों में रूपरेखा बनाईए।

4) जिन्होंने कभी सुसमाचार नहीं सुना क्या वो मसीह पर भरोसा न करने के लिए त्याग दिए जाऐंगे?

5) ''प्राकृतिक प्रकाषन'' और ''विषेश प्रकाषन'' के बीच अन्तर का वर्णन कीजिए।

6) परमेष्वर के बिना मानव जीवन का वर्णन कीजिए।

7) क्या आयत 24–27 समलैंगिकता की समस्या के बारे में है?

रोमियों – 2

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
परमेष्वर का धर्मी न्याय	परमेष्वर का धर्मी न्याय	यहूदी न्याय के अधीन	परमेष्वर का न्याय	यहूदी क्रोध से बचे रहेंगे
2:1–16	2:1–16	2:1–11	2:1–16	2:1–11
यहूदी और व्यवस्था	यहूदी भी अन्यजातियों के समान ही दोशी हैं	न्याय का आधार	यहूदी और व्यवस्था (2:17–3:8)	व्यस्था उन्हें बचा नहीं सकती
		2:12–16		2:12–16
2:17–3:8	2:17–24	2:17–24	2:17–24	2:17–24
	खतना किसी काम का नहीं			खतना उन्हें बचा नहीं सकता
	2:25–29	2:25–29	2:25–29	2:25–29

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद
2) दूसरा अनुच्छेद
3) तीसरा अनुच्छेद
4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि

क) अध्याय 2 और 3, 1:18 से षुरू हुए साहित्य भाग को पूर्ण करता है। ये भाग निम्न बातों से सम्बन्धित है :

1) मानवजाति का खोयापन

2) पाप पर परमेष्वर का न्याय

3) व्यक्तिगत विष्वास और पष्चाताप और मसीह के द्वारा मानवजाति को परमेष्वर की धार्मिकता की आवष्यकता।

ख) अध्याय 2 में परमेष्वर के न्याय से सम्बन्धित सात सिद्धान्त हैं।

1) आयत 2, सत्य के अनुसार

2) आयत 3, इकट्ठा किया गया दोश

3) आयत 6 और 7, कामों के द्वारा

4) आयत 11, किसी व्यक्ति के प्रति पक्षपात नहीं करते

5) आयत 13, जीवनषैली

6) आयत 16, मनुश्य के हृदय के रहस्य

7) आयत 17–29, कोई विषेश राश्ट्र समूह नहीं।

ग) टीका लेखकों के बीच बहुत चर्चा है कि रोमियों.2:1–17 किसे व्यक्त करते हैं। रोमियों.2:12–29 निष्चय ही यहूदियों से सम्बन्धित है। आयत 1–17 के दो उद्देष्य हैं यह दोनों नैतिक अन्यजातियों जैसे सिनेका (सामाजिक कानून) और यहूदी राश्ट्र (मूसा की व्यवस्था) से बात करते हैं।

घ) रोमियों.1:18–21 में पौलुस बताते हैं कि मनुश्य परमेष्वर को सृश्टि के द्वारा जान सकता है। रोमियों.2:1–17 में पौलुस कहते हैं प्रत्येक मनुश्य के अन्दर परमेष्वर द्वारा दिया गया एक नैतिक विवेक है। ये दो गवाह, सृश्टि और विवेक, मानवजाति को दोशी ठहराने के आधार हैं उन लोगों को भी जो पुराना नियम और सुसमाचार नहीं जानते। मनुश्य ज़िम्मेदार है क्योंकि वह अपने अन्दर दिए गए प्रकाष के आधार पर जीवन यापन नहीं करता।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.2:1–11

1 सो हे दोष लगानेवाले, तू कोई क्यों न हो; तू निरूत्तर है! क्योंकि जिस बात में तू दूसरे पर दोष लगाता है, उसी बात में अपने आप को भी दोषी ठहराता है, इसलिये कि तू जो दोष लगाता है, आप ही वही काम करता है।

2 और हम जातने हैं, कि ऐसे ऐसे काम करनेवालों पर परमेश्वर की ओर से ठीक ठीक दण्ड की आज्ञा होती है।

3 और हे मनुष्य, तू जो ऐसे ऐसे काम करनेवालों पर दोष लगाता है, और आप वे ही काम करता है; क्या यह समझता है, कि तू परमेश्वर की दण्ड की आज्ञा से बच जाएगा?

4 क्या तू उस की कृपा, और सहनशीलता, और धीरजरूपी धन को तुच्छ जानता है? और कया यह नहीं समझता, कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है?

5 पर अपनी कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके क्रोध के दिन के लिये, जिस में परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने निमित्त क्रोध कमा रहा है।

6 वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा।

7 जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में है, उन्हें अनन्त जीवन देगा।

8 पर जो विवादी हैं, और सत्य को नहीं मानते, वरन अधर्म को मानते हैं, उन पर क्रोध और कोप पड़ेगा।

9 और क्लेश और संकट हर एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है, पहले यहूदी पर फिर यूनानी पर।

10 पर महिमा और आदर ओर कल्याण हर एक को मिलेगा, जो भला करता है, पहले यहूदी को फिर यूनानी को।

11 क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता।

2:1

एन ए एस बी ''तुम जो दूसरों पर दोश लगाते हो, तुम निरूत्र हो''

एन के जे वी ''तुम निरूत्र हो, हे मनुश्य, तुम जो दूसरों पर दोश लगाते हो''

एन आर एस वी ''तुम निरूत्र हो, तुम चाहे कोई भी हो, जब तुम दूसरों पर दोश लगाते हो''

टी ई वी ''तुम बिलकुल निरूत्र हो, तुम चाहे कोई भी हो। क्योंकि तुम दूसरों पर दोश लगाते हो''

जे बी ''तुम कोई भी हो यह कोई अर्थ नहीं रखता, यदि तुम दोश लगाते हो तो तुम निरूत्र हो''

यह वास्तविक तौर पर ''कोई कानूनी बचाव नहीं है'' (रोमियों.1:20)। यूनानी वाक्य में इसके महत्व को प्रगट करने के लिए इस षब्द का प्रयोग सबसे पहले लिखा गया है। आयत 1–16 दोनो को सम्बोधित करता है स्वधर्मी यहूदियों को और यूनानी नैतिकवादियों को। दूसरों पर दोश लगाने के कारण वे स्वयं को दोशी ठहराते हैं।

2:2

''हम जानते हैं''

यह विभक्ति यहूदियों को सम्बोधित करती है और साथ ही मसीहियों को भी सम्बोधित करता है। आयत 2–4, पौलुस अपने सवाल जवाब तरीके को प्रयोग करते हैं, जो कि सत्य को प्रस्तुत करने का तरीका है एक काल्पनिक विरोधी का प्रयोग करके। इसका प्रयोग हबक्कूक, मलाकी, रब्बी और यूनानी तर्कषास्त्री भी करते थे (जैसे सोक्रेटिस और स्टोइक्स)।

वाक्यांष ''हम जानते हैं'' का प्रयोग कई बार रोमियों में हुआ है (रोमियों.2:2; 3:19; 7:14; 8:22, 28)। पौलुस ऐसी कल्पना करते हैं कि उनके पाठकों में अध्याय 1 के अनैतिक अन्यजातिय पाठकों की अपेक्षा अधिक ज्ञान होगा।

''परमेष्वर का न्याय''

बाइबल इस सत्य के बारे में बिलकुल स्पश्ट है। प्रत्येक मनुश्य को परमेष्वर द्वारा दिए गए जीवन रूपी तोहफे का लेखा देना होगा (रोमियों.2:5–9; मत्ती.25:31–46; प्रका.20:11–15)। यहाँ तक कि मसीही भी मसीह के सामने खड़े होंगे (रोमियों.14:10–12; 2कुरि.5:10)।

2:3

पौलुस के आलंकारिक प्रष्नों का व्याकरण रूप ''नहीं'' उत्तर की अपेक्षा करता है।

''क्या तुम समझते हो''

यह यूनानी कर्म है लोजिओमाय। पौलुस अक्सर इसका प्रयोग करते हैं (रोमियों.2:3, 26; 3:28; 4:3, 4, 5, 6 , 8, 9, 10, 11, 22, 23, 24; 6:11; 8:18, 36; 9:8; 14:14; गला.3:6 और दस बार 1 और 2कुरि. और दो बार फिलि. में)। देखिए नोट 4:3 और 8:18।

''हे मनुश्य'' ये आयत 1 के मुहावरे के सदृष्य है। 9:20 में ये यहूदियों के लिए है।

2:4

ये भी यूनानी में प्रष्न है।

''उन की कृपा, और सहनशीलता,
और धीरजरूपी धन''

मनुश्य ने हमेषा परमेष्वर के अनुग्रह, कृपा और धीरज को गलत समझा है और उन्होंने इसे पाप करने के अवसर में बदल दिया है न कि पष्चाताप (2पत.3:9)।

पौलुस अक्सर परमेष्वर के गुणों की व्याख्या उनके ''धन'' के रूप में करते हैं (रोमियों.9:23; 11:33; कुलु.1:27; इफि.1:7, 18; 2:4, 7; 3:8, 16; फिलि.4:19)।

''तुम्हें मन फिराव को सिखाती है''

परमेष्वर के साथ विष्वास–वाचा सम्बन्ध के लिए पष्चाताप बहुत ही महत्वपूर्ण है (मत्ती.3:2; 4:17; मरकुस.1:15; 6:12; लूका.13:3, 5; प्रेरित.2:38; 3:16, 19; 20:21)। इब्रानी में इस षब्द का अर्थ है कार्यों में परिवर्तन और यूनानी में इसका अर्थ है मन का परिवर्तन। पष्चाताप का अर्थ होता है कि स्वयं पर केन्द्रीत से बदलकर परमेष्वर द्वारा सिखाए गए और अगुवाई किया हुआ जीवन जीना। यह प्राथमिकताओं और अपनी ही अधीनता से पलटने की माँग करता है। वास्तव में यह है नई अवस्था, नया दृश्टिकोण और नए स्वामी को ग्रहण करना है। आदम की प्रत्येक पतित सन्तान जो परमेष्वर के स्वरूप में रची गई है उनके लिए पष्चाताप ही परमेष्वर की इच्छा है (यहे.18:21ख 23, 32, 2पत.3:9)।

नए नियम का मूलपाठ 2कुरि.7:8–12 पष्चाताप के लिए विभिन्न यूनानी षब्दों को व्यक्त करता है : (1) लुपेओ, ''षोक'' और ''दुःख'' 7:8–दो बार; 7:9–तीन बार; 7:10–दो बार; 7:11; (2) मेटामेलोमाय, ''पछतावा'' और ''बाद की देखभाल'' 7:8–दो बार; 7:9; और (3) मेटानोइया, ''पष्चाताप'' और ''बाद का मन'' 7:9, 10। इसके विपरीत है झुठा पष्चातााप 'मेटामेलोमाए' (यहूदा, मत्ती.27:3 और एसाव इब्रा.12:16–17) के विपरीत सच्चा पष्चाताप 'मेटानोइओ' है।

सच्चा प्ष्चाताप धर्मषास्त्रीय तौर पर निम्न बातों से जुड़ा हुआ है (2) नई वाचा की षर्तों पर यीषु मसीह का प्रचार (मत्ती.4:17; मरकुस.1:15; लूका.13:3, 5); (2)प्रेरितों के काम में प्रेरितों के प्रचार (केरिगमा, प्रेरित.3:16, 19; 20:21); (3) परमेष्वर का श्रेश्ठ तोहफा (प्रेरित.5:31; 11:18; 2तीमु.2:25); और (4) नाष होने वाले (2पत.3:9)। पष्चाताप कोई विकल्प नहीं है।

विषेश षीर्शक : पष्चाताप

पष्चाताप (विष्वास के साथ) पुरानी वाचा (नाचम, 1राजा.8:47; षुव, 1राजा.8:48; यहे.14:6; 18:30; योए.2:12–13; जक.1:3–4) और नई वाचा के लिए आवष्यक है।

1) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला (मत्ती.3:2; मरकुस.1:4; लूका.3:3, 8)

2) यीषु (मत्ती.4:17; मरकुस.1:15; 2:17; लूका.5:32; 13:3, 5; 15:7; 17:3)

3) पतरस (प्रेरित.2:38; 3:19; 8:22; 11:18; 2पत.3:9)

4) पौलुस (प्रेरित.13:24; 17:30; 20:21; 26:20; रोमियों.2:4; 2कुरि.2:9–10)

पर पष्चाताप क्या है? क्या ये षोक है? क्या यह पाप का अहसास है? इस विचार को नए नियम में समझने के लिए सबसे सही अध्याय है 2कुरि.7:8–11 जहाँ इससे सम्बन्धित तीन भिन्न यूनानी षब्दों का प्रयोग किया गया है।

1) ''षोक'' (लुपे, 7:8–दो बार, 9–तीन बार, 10–दो बार, 11)। इसका अर्थ है षोक और निराषा और धर्मषास्त्रीय तौर पर सामान्य है।

2) ''पष्चाताप'' (मैटानोइओ, 7:9, 10)। यह ''बाद'' और ''मन'' का मिश्रण है, जिसका अर्थ है नया मन, सोचने का नया

तरीका, परमेष्वर और जीवन के प्रति नया नज़रिया। यही सच्चा पष्चाताप है।

3) ''पछतावा'' (मैटामैलोमाय, 7:8–दो बार, 10)। यह ''बाद'' और ''देखभाल'' का मिश्रण है। इसका प्रयोग यहूदा के लिए मत्ती.27:3 और एसाव के लिए इब्रा.12:16–17 में किया गया है। इसका अर्थ है प्रतिफल पर षोक न कि कार्य पर।

पष्चाताप और विष्वास वाचा के लिए आवष्यक कार्य हैं (मरकुस.1:15; प्रेरित.2:38, 41; 3:16, 19; 20:21)। कुछ मूलपाठ बताते है कि परमेष्वर पष्चाताप देते हैं (प्रेरित.5:31; 11:18; 2तीमु.2:25)। पर बहुत मूलपाठ बताते हैं कि ये परमेष्वर द्वारा प्रदान किए गए मुफ्त उद्धार के प्रति मानव का आवष्यक वाचामय प्रतिउत्तर है।

दोनों इब्रानी और यूनानी परिभाशाऐं पष्चाताप के पूरे अर्थ की माँग करते हैं। इब्रानी ''कार्यों में परिवर्तन'' की माँग करता है और यूनानी ''मन के परिवर्तन'' की माँग करते थे। उद्धार पाया हुआ व्यक्ति नया मन और हृदय पाता है। वह भिन्न सोचता है और अलग जीवन जीता है। ''मेरे लिए क्या है?'' इसकी जगह अब प्रष्न है ''परमेष्वर की इच्छा है?'' ष्चाताप एक भावना मात्र नहीं है जो समय के साथ फीका पड़ जाए और न ही ये पूर्ण पाप रहित होना है पर ये पवित्र परमेष्वर के साथ सम्बन्ध को बताता है जो प्रगतिषील परिवर्तन जो परमेष्वर की ओर लेकर जाता है।

2:5–9

ये आयत बताते हैं कि (1) पतित मानवजाति का हठीपन और (2) परमेष्वर का क्रोध और न्याय।

2:5

''हठीपन''

निर्ग.32:9; 33:3, 5; 34:9; व्यव.9:6, 13, 27 में इस्राएल का इसी तरह से वर्णन किया गया है।

''मन''

देखिए विषेश षीर्शक 1:24

''क्रोध के दिन में''

इसे पुराने नियम (योएल, आमोस) में ''यहोवा का दिन'' कहा जाता है। यह न्याय के दिन और विष्वासियों के लिए पुनरूत्थान का विचार है। मानवजाति परमेष्वर द्वारा दिए गए जीवन रूपी तोहफे का लेखा देगा (मत्ती.25:31–46; प्रका.20:11–15)।

ध्यान दीजिए कि पापी स्वयं ही परमेष्वर के क्रोध को इकट्ठा कर रहे हैं। परमेष्वर यूँ ही किसी समय में इस जमा हुए क्रोध को प्रगट होने देते हैं और इसे पूरे बहाव में कार्य करने देते हैं।

क्रोध भी बाकी मानव षब्दों के समान ही रूपक तौर पर परमेष्वर पर प्रयोग किया गया है। परमेष्वर अनन्त, पवित्र और आत्मा हैं। मानव सीमित, पापी और षरीर है। परमेष्वर भावना में क्रोधित नहीं होते। बाइबल उन्हें पापी से प्रेम करने वाले और उनसे पष्चाताप की अपेक्षा करने वाले पर साथ ही मानव के विद्रोह के प्रति कठोर विरोध करने वाले के रूप में प्रगट करती है। परमेष्वर व्यक्तिगत हैं; वह पाप को व्यक्तिगत तौर पर लेते हैं और हम व्यक्तिगत तौर पर अपने पाप के लिए ज़िम्मेदार हैं।

परमेष्वर के क्रोध के प्रति एक और विचार। बाइबल में ये दोनों है समय में (अस्थाई, रोमियों.1:24, 26, 28) और अन्त समय में (अन्तिम में, रोमियों.2:5–8)। यहोवा का दिन (न्याय का दिन) एक तरीका था पुराने नियम के भविश्यद्वक्ताओं का इस्राएल को वर्तमान समय में पष्चाताप करने के लिए कहते हैं ताकि उनका भविश्य आषीशमय हो सके और वे न्याय में न पड़ें (व्यव. 27–28)। पुराने नियम के भविश्यद्वक्ता अक्सर अपने समय की विपत्तियों को लेकर भविश्य की बातों के बार में बताते थे।

2:6

ये भ.सं.62:12 से लिया गया भाग है। यह सर्वव्यापी सिद्धान्त है कि प्रत्येक मानव अपने कार्यों के लिए ज़िम्मेदार हैं और परमेष्वर को लेखा देंगे (अय्य.34:11; नीति.24:12; सभो.12:12; यिर्म.17:10; 32:19; मत्ती.16–27; 25:31–46; रोमियों.2:6; 14:12; 1कुरि.3:8;

गला.6:7–10; 2तीमु.4:14; 1पत.1:17; प्रका.2:23; 20:12; 22:12)। यहाँ तक कि विष्वासियों को भी अपने जीवन और मसीह की सेवा का लेखा देंगे (2कुरि.5:10)। विष्वासी कर्म द्वारा नहीं बचाए गए परन्तु कर्म के लिए बचाए गए हैं (इफि.2:8–10, विषेश करके 2:14–26; याकूब और 1यूहन्ना)।

2:7

''उनके लिए जो''

आयत 7 और 8 में वर्णन किए गए लोगों के बीच मतभेद है (''पर उनके लिए जो'')।

एन ए एस बी ''जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में है, उन्हें अनन्त जीवन देंगे''

एन के जे वी ''अनन्त जीवन उनके लिए, जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में हैं''

एन आर एस वी ''जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में है, वह उन्हें अनन्त जीवन देंगे''

टी इ वी ''कुछ लोग लगातार सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में है, परमेष्वर उन्हें अनन्त जीवन देंगे''

जे बी ''जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में है, उनके लिए अनन्त जीवन है''

यह कुरनेलियुस जैसे लोगों को सम्बोधित करता है (प्रेरित10:34–35)। ये भाग ऐसा प्रतित होता है जैसे धार्मिकता कर्म से आती है (मनुश्य के कार्यों द्वारा धार्मिकता की प्राप्ति) पर ये रोमियों के प्रमुख केन्द्रीय विशय के विपरीत है। याद रखिए कि या तो 1–16 आयत या 1–11 आयत एक ही अनुच्छेद है। इस पूरी बात का धर्मषास्त्रीय बिन्दु यह है कि परमेष्वर किसी व्यक्ति का पक्षपात नहीं करते (2:11) और सब ने पाप किया है (2:12)। यदि लोग जो प्रकाष (अन्यजातियों के लिए प्राकृतिक और यहूदियों के लिए विषेश प्रकाषन) उन्हें दिया गया है उसके अनुसार जीवन बिताऐं तो वह परमेष्वर के साथ सही हो सकते हैं। 3:9–18, 23 का सारांष बताता है कि कोई भी ऐसा नहीं कर सकता और न ही कर पाऐगा।

एक विष्वासी का बदला हुआ जीवन उसके विष्वास प्रतिउत्तर को साबित करता है। परिवर्तित जीवन अन्दर निवास परमेष्वर की आत्मा का सबूत है (2:10, 13; मत्ती.7; इफि.2:8–10; याक.2:14–26 और 1यूहन्ना)। देखिए विषेश षीर्शक : निरन्तर प्रयत्न करने की आवष्यकता 8:25

''अनन्त जीवन''

यह यूहन्ना का प्रमुख वाक्यांष है और बाकी सुसमाचार लेखकों ने भी कहीं कहीं इसका प्रयोग किया है। पौलुस ने षायद इसका उपयोग दानि.12:2 (तीत.1:2; 3:7) से किया है जहाँ यह नए जीवन को व्यक्त करता है, जीवन जो परमेष्वर के साथ हो, पुनर्जीवित जीवन। वह पहली बार इसका प्रयोग गला.6:8 में करते हैं। रोमियों के सैद्धान्तिक भाग में ये एक सामान्य केन्द्रीय विशय है (2:7; 5:21; 6:22, 23)। पास्तरीय पत्रियों में भी यह कई बार प्रयोग किया गया है (1तीमु.1:16; तीत.1:2; 3:7)।

2:8

एन ए एस बी ''जो स्वार्थी रूप से महत्वाकांक्षी हैं''

एन के जे वी, एन आर एस वी ''जो केवल अपने लाभ के बारे में सोचते हैं''

टी इ वी ''बाकी लोग स्वार्थी हैं''

एन जे बी ''जो विवादी हैं''

षब्द का वास्तविक अर्थ है ''उत्तराधिकार के लिए कार्य''।
लोऊ और निदा, ग्रीक–इग्लिष लैक्सीकन, भाग.2, पृश्ठ.104 इस षब्द के दो प्रयोगों की सूची बताती है।

1) ''स्वार्थी महत्वाकांक्षा'' रोमियों.2:8 का प्रयोग करके, ''दूसरों से अच्छा बनना चाहते हैं'' जो इस संदर्भ में सही बैठता है।

2) ''विवादी'' फिलि.1:17 का प्रयोग करके, ''षत्रु'' अनुवाद के विकल्प के रूप में (देखिए 2कुरि.12:20; गला.5:20; फिलि.2:3; याक.3:14, 16)।

''और सत्य को नहीं मानते''

षब्द ''सत्य'' (अलेथिया) इसके इब्रानी (एमेथ) भरोसे के योग्य और भरोसेमन्द के तात्पर्य में प्रयोग किया गया है। इस संदर्भ में इसका केन्द्रबिन्दु नैतिक है बुद्धिमता का नहीं। देखिए विषेश षीर्शक : पौलुस के लेखों में ''सत्य'' 1:18।

2:9

''हरेक मनुश्य के प्राण के लिए''

पौलुस रोमियों के षुरूवाती भागों में 'बुरे समाचार' (मानवजाति का खोयापन और परमेष्वर के न्याय में कोई पक्षपात नहीं होगा) और 'षुभ समाचार' (परमेष्वर द्वारा मुफ्त में उद्धार और मसीह में पूर्ण क्षमा उन लोगों के लिए जो पष्चाताप करते और विष्वास करते हैं) के सर्वव्यापी महत्व को प्रस्तुत करने के लिए यूनानी षब्द 'पास' का प्रयोग करते हैं, जिसका अर्थ है ''सब'' या ''हरेक''।

यह संदर्भ दृढ़ रीति से सर्वव्यापी न्याय और इसके प्रतिफल को प्रस्तुत करता है। यह सत्य धर्मी और दुश्ट दोनों के पुनरूत्थान की माँग करता है (दानि.12:2; यूह.5:28–29; प्रेरित.24:15)।

यदि 6–11 आयत महत्वपूर्ण हैं तो 8–9 आयत न्याय और दुश्टों को प्रगट करने के कुंजी आयत हैं।

2:9–10

''पहले यहूदी''

यह जोर देने के लिए दोहराया गया है। यहूदियों को पहले अवसर दिया गया है क्योंकि उनके पास परमेष्वर का प्रकाषन है (1:61; मत्ती.10:6; 15:24; यूह.4:22; प्रेरित.3:26; 13:46), परन्तु न्याय में भी वो पहले होंगे (9–11) क्योंकि उनके पास परमेष्वर को प्रगट करने वाला है (9:4–5)।

2:11

एन ए एस बी, एन के जे वी ''क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करते''

एन आर एस वी ''क्योंकि परमेष्वर पक्षपात नहीं करते''

टी इ वी ''क्योंकि परमेष्वर सभी का न्याय एक ही आधार पर करते हैं''

एन जे बी ''परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करते''

वास्तव में यह ''मुँह उठाना'' है, जो कि पुराने नियम की कानून व्यवस्था का रूपक है (लैव्य.19:15; व्यव.10:17; 2इति.19:7; प्रेरित.10:34; गला.2:6; इफि.6:9; कुलु.3:25; 1पत.1:17)। यदि न्यायी यह देखे कि वह किसका न्याय कर रहा है तो पक्षपात की सम्भावना रहती है। इसलिए वह न्याय के लिए सामने खड़े व्यक्ति को अपने सामने मुँह उठाने नहीं देता।

विषेश षीर्शक : जातिवाद

क) *भूमिका*
1) यह पतित मानवजाति की अपने समाज में विष्वव्यापी प्रतिक्रिया है। यह मानवजाति का अहंकार है, दूसरों के पिछे छुपकर अपना पक्ष साबित करना। जातिवाद कई तरह से नया विचार है, जबकी राश्ट्रवाद प्रचीनतम विचार है।

2) राश्ट्रवाद बाबुल से षुरू हुआ (उत्प.11) और जो कि वास्तविक तौर पर नूह के पुत्रों से सम्बन्धित है जहाँ से जातियों की षुरूवात हुई (उत्प.10)। पर वचन से ये बिलकुल स्पश्ट है कि मानवजाति का एक ही श्रोत है (उत्प.1:3; प्रेरित.17:24–26)।

3) जातिवाद बहुत से भेदभावों में से एक है। कुछ और हैं (1) षिक्षा में भेदभाव; (2) आर्थिक अहंकार और भेदभाव; (3) स्वधर्मी धार्मीक कट्टरता; और (4) सैद्धान्तिक राजनैतिक षोशण।

ख) *बाइबल की सामग्री*

पुराना नियम
1) उत्प.1:27 मानवजाति को परमेष्वर ने नर और नारी के रूप में अपने ही स्वरूप में रचा, जो उन्हें अद्वितिय बनाता है। यह उनके व्यक्तिगत मूल्य और अस्तित्व को भी प्रगट करता है (यूह.3:16)।

2) उत्प.1:11–25 में दस बार लिखा है ''...एक एक की जाति के अनुसार...''। ये जाति भेदभाव की सराहना करने के लिए प्रयोग किया जाता है। पर संदर्भ से ये बिलकुल स्पश्ट है कि ये जानवरों और पेड़–पौधों के लिए है मानवजाति के लिए नहीं।

3) उत्प.9:18–27 का प्रयोग जातिय षोशण की सराहना करने के लिए किया जाता है। यह ध्यान में रखना अति आवष्यक है कि परमेष्वर ने कनान को श्राप नहीं दिया। नषे से जागने के बाद उसके पिता नूह ने ही उसे श्राप दिया। बाइबल कहीं पर भी यह नहीं बताती कि परमेष्वर ने इसे मन्जुर किया। यदि उन्होंने ऐसा किया तो भी यह काली जाति को प्रभावित नहीं करता। कनान उन लोगों का पिता था जो पलिस्तीन में रहते थे और मिस्र के चित्र बताते हैं कि वे काले नहीं थे।

4) यहो.9:23 का प्रयोग इस उद्‌देष्य से किया गया कि एक जाति दूसरी जाति के दासत्व में रहेगी। जबकी इस संदर्भ में गिबोन भी उसी जाति में से हैं जिससे यहूदी हैं।

5) एज्रा.9–10 और नहे.13 का प्रयोग जातिवाद के विचार के लिए किया गया है पर इस संदर्भ षादियाँ जाति (सभी नूह के एक ही पुत्र की संतान थे) के कारण नहीं पर धार्मिक कारणों से गलत ठहराई गईं।

नया नियम
1) सुसमाचार

क. यीषु ने यहूदियों और सामरियों के बीच की नफ़रत का कई जगह प्रयोग किया, जो यह बताता है कि जातिय नफ़रत गलत है।
– अच्छे सामरी का दृश्टान्त (लूका.10:25–37)

– कुँए के पास सामरी स्त्री (यूह.4:4)

– धन्यवादि कोढ़ी (लूका.17:7–19)

ख. सुसमाचार सारी मानवजाति के लिए है
– यूह.3:16

– लूका.24:46–47

– इब्रा.2:9

– प्रका.14:6

ग. परमेष्वर के राज्य में सारी मानवजाति से लोग होंगे

– लूका.13:29

– प्रका.5

2) <u>प्रेरितों के काम</u>

क. पेरित.10 सम्भवतः वो मूलपाठ है जो परमेष्वर के सार्वभौमिक प्रेम और संदेष को प्रस्तुत करता है।

ख. पतरस पर प्रेरित.11 के उनके कार्य के कारण आक्रमण किया गया और इस समस्या का समाधान प्रेरित.15 की यरूषलेम सभा तक नहीं हुआ। पहली सदी के यहूदियों और अन्यजातियों के बीच बहुत अधिक भेदभाव था।

3) <u>पौलुस</u>

क. मसीह में कोई रूकावट नहीं है

(1) गला.3:26–28

(2) इफि.2:11–22

(3) कुलु.3:11

ख. परमेष्वर किसी व्यक्ति का पक्ष नहीं लेते
(1) रोमियों.2:11

(2) इफि.6:9

4) <u>पतरस और याकूब</u>

(१) परमेष्वर किसी व्यक्ति के प्रति पक्षपात नहीं करते, 1पत.1:17

(२) क्योंकि परमेष्वर पक्षपात नहीं करते इसलिए मनुश्य को भी नहीं करना चाहिए, याक.2:1।

5) <u>यूहन्ना</u>

क. विष्वासियों की ज़िम्मेदारी से सम्बन्धित दृढ़ वाक्यों में से एक 1यूह.4:20 में मिलता है।

ग) *<u>सारांष</u>*

1) जातिवाद या कोई भी भेदभाव परमेष्वर की सतान के लिए पूर्णतया गलत है। हैनली बारनीटी द्वारा कहा गया वाक्य, जो उन्होंने ग्लोरीटा, न्यू मैक्सीको में क्रिष्चन लाइफ कमीषन में 1964 में कहा। वह है ''जातिवाद बिलकुल गलत और झुठा है क्योंकि यह गैरबाइबलीय और गैरमसीही है, बयान करने की आवष्यकता नहीं कि ये गैरविज्ञानिक है।''

2) ये समस्या मसीहियों को अवसर प्रदान करती है कि वह मसीही प्रेम, क्षमा और खोए हुए संसार के प्रति समझ दिखाऐं। इस क्षेत्र में अवसर को ठुकराना मसीही की अपरिपक्वता को प्रगट करता है और षैतान को अवसर देता है कि वह विष्वासी के विष्वास, पुश्ठि और उन्नति में रूकावट डाले। यह खोए हुए लोगों को मसीह के पास आने में भी रूकावट है।

3) मैं क्या कर सकता हूँ? (ये भाग क्रिष्चन लाइफ कमीषन की पुस्तिका ''जाति सम्बन्ध'' से लिया गया है)

''व्यक्तिगत स्तर पर''

(1) जातिवाद से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को ग्रहण कीजिए।

(2) प्रार्थना, बाइबल अध्ययन, और दूसरी जाति के लोगों के साथ संगति रखिए और जातिय भेदभाव से बाहर निकालने की कोषिष कीजिए।

(3) जहाँ पर जातिय नफ़रत को फैलाने वाले लोगों को चुनौती देने वाला कोई नहीं वहाँ जाति के प्रति अपने विचारों को व्यक्त करो।

''पारिवारीक जीवन में''

(1) जातियों के प्रति भावना के परिवार के उत्तरदायित्व के महत्व को पहचानिए।

(2) बच्चे और माता पिता जाति के बारे में बाहर क्या सुनते हैं उसके बारे में चर्चा करके मसीही भावना को उत्पन्न करो।

(3) माता पिता को दूसरी जाति के प्रति उदाहरण प्रस्तुत करते समय सावधान रहना चाहिए।

(4) दूसरी जाति वालों के साथ पारिवारीक सम्बन्ध बनाने के अवसरों की खोज कीजिए।

''आपकी कलीसिया में''

(1) जाति के बारे में बाइबल की सच्चाईयों की षिक्षा और प्रचार कीजिए, जिसके द्वारा कलीसिया के लोग उत्साहित होकर सारे समाज के लिए एक उदाहरण बन सकें।

(2) जैसे नए नियम की कलीसिया सभी जातियों के लिए खुली थीं वैसे ही ध्यान दीजिए कि आपकी कलीसिया भी सभी जाति के लोगों को आराधना, संगति, और सेवा में आने देने के लिए खुली हो (इफि.2:11—22; गला.3:26—29)।

''प्रतिदिन के जीवन में''

(1) कार्य क्षेत्र में हर प्रकार के जातिय भेदभाव पर विजय पाने के लिए सहायता कीजिए।

(2) सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर सभी जातियों के लिए समान अधिकार प्राप्त करने के अवसरों में कार्य कीजिए, यह ध्यान में रखकर कि जाति की समस्या पर आक्रमण करना है न कि किसी व्यक्ति पर। उद्देष्य है समझ पैदा करना न कि कड़ुवाहट पैदा करना।

(3) यदि यह सही जान पड़ता हो तो समाज की भलाई सोचने वाले लोगों के साथ मिलकर एक समिति का गठन कीजिए जो सर्व षिक्षा के बारे में और सभी जातियों के आपसी सम्बन्ध को सुधारने का कार्य करे।

(4) जातिय न्याय और जो राजनैतिक लाभ के लिए जातिय षोशण को बढ़ावा देते हैं, ऐसे लोगों के विरूद्ध कानून और उसे पारित करने वाले लोगों का साथ दीजिए।

(5) कानून पारित करने वाले लोगों से अनुरोध कीजिए कि वे कानून को बिना भेदभाव के पारित करें।

(6) हिंसा को रोकिए और कानून के प्रति आदर फैलाइऐ और मसीही नागरिक होने के नाते देखिए कि जो लोग भेदभाव उत्पन्न करते हैं उनके हाथ में कानून व्यवस्था साधन न बने।

(7) मानवीय सम्बन्ध में मसीह के मन और आत्मा को आदर्ष रूप में प्रगट करो।

रोमियों.2:12–16

12 इसलिये कि जिन्हों ने बिना व्यवस्था पाए पाप किया, वे बिना व्यवस्था के नाश भी होंगे, और जिन्हों ने व्यवस्था पाकर पाप किया, उन का दण्ड व्यवस्था के अनुसार होगा।

13 (क्योंकि परमेश्वर के यहां व्यवस्था के सुननेवाले धर्मी नहीं, पर व्यवस्था पर चलनेवाले धर्मी ठहराए जाएंगे।

14 फिर जब अन्यजाति लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, तो व्यवस्था उन के पास न होने पर भी वे अपने लिये आप ही व्यवस्था हैं।

15 वे व्यवस्था की बातें अपने हृदयों में लिखी हुई दिखने हैं और उन के विवेक भी गवाही देते हैं, और उन की चिन्ताएं परस्पर दोष लगाती, या उन्हें निर्दोष ठहराती है।)

16 जिस दिन परमेश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा।

2:12

''इसलिये कि जिन्हों ने बिना व्यवस्था पाए पाप किया''

परमेष्वर सभी लोगों को ज़िम्मेदार ठहराऐंगे चाहे वह पुराने नियम और सुसमाचार को जानते हों या नहीं। हरेक मनुश्य प्रकृति (रोमियों.1:19–20; भ.सं.19:1–6), और अपने अन्दर के विवेक (रोमियों.2:14–15) से परमेष्वर के बारे में कुछ न कुछ जानता है। सबसे दु:ख की बात यह है कि सबने जानबूझकर अपने अन्दर के प्रकाष का उल्लंघन किया है (रोमियों.1:21– 23; 3:9, 19, 23; 11:32; गला.3:22)

''व्यवस्था''

रोमियों में जब पौलुस ''व्यवस्था'' षब्द का प्रयोग कई बातों को व्यक्त करने के लिए करते हैं (1) रोम का कानून; (2) मूसा की व्यवस्था; और (3) मानव समाज के सामान्य कानून। संदर्भ ही प्रगट करता है कि इनमें से किस के बारे में लिखा गया है। यह संदर्भ बताता है कि प्रत्येक मनुश्य के हृदय में परमेष्वर के प्राकृतिक प्रकाषन के द्वारा कुछ ज्ञान है (2:15)।

2:13

''क्योंकि परमेश्वर के यहाँ व्यवस्था के सुननेवाले धर्मी नहीं''

षब्द ''सुननेवाले'' का रब्बीय तात्पर्य है जो कि रब्बी बनने कि षिक्षा प्राप्त करने आए तोरह के विद्यार्थीयों को प्रगट करता है। याद रखिए कि नए नियम के लेखक इब्रानी विचारक थे जिन्होंने कोईनी यूनानी में लिखा। इसलिए षब्दों का अध्ययन सैप्टूआजैन्ट से किया जाना चाहिए न कि यूनानी षब्दकोश से।

''धर्मी'' या ''धर्मी ठहराया जाना'' षब्द पौलुस के धर्मषास्त्रीय लेख में बहुत ही महत्वपूर्ण है (रोमियों.3:4, 20, 24, 26, 28, 30; 4:2, 5; 5:1, 9; 6:7; 8:30, 33)। षब्द ''धर्मी'', ''धर्मी ठहराया जाना'', ''धार्मिकता'' इत्यादि एक ही यूनानी षब्द डिकायोस से लिए गए हैं। देखिए विषेश षीर्शक : धार्मिकता 1:17। इब्रानी षब्द (षदाग) लम्बी सीधी (15–20 फुट) बेंत के लिए प्रयोग किया जाता है जो दीवारों की सीधाई नापने के लिए प्रयोग की जाती थी। यह रूपक तौर पर परमेष्वर के न्याय के स्तर को प्रगट करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

पौलुस के लेखों में इसके दो केन्द्र बिन्दु हैं। पहला यह कि परमेष्वर की धार्मिकता मसीह पर विष्वास करने के द्वारा मनुश्य को मुफ्त तोहफे के रूप में प्रदान की गई। यह थोपी गई धार्मिकता के नाम से जानी जाती है। यह धर्मी परमेष्वर के सामने व्यक्ति के कानूनन सही होने को प्रस्तुत करता है। यह पौलुस के विख्यात विचार ''विष्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने'' को व्यक्त करता है। दूसरा यह है कि परमेष्वर का मनुश्य को अपने स्वरूप में दोबारा रचने का कार्य (उत्प.1:26–27) या दूसरे षब्दों में कहा जाए तो मसीह के चरित्र की समानता में लाना। यह आयत मत्ती.7:24; लूका.8:21; 11:28; यूह.13:17; याक.1:22, 23, 25 के समान ही विष्वासियों से अनुरोध करता है कि वह केवल सुनने वाले नहीं पर कार्य करने वाले बनें। थोपी गई धार्मिकता का प्रतिफल धार्मिक जीवनषैली होना चाहिए। परमेष्वर पापियों को क्षमा करते और बदल देते हैं। पौलुस का प्रयोग दोनों ही कानूनी और नैतिक है। नई वाचा मानव को कानूनन सही तो ठहराती है पर साथ ही भक्तिपूर्ण जीवनषैली की भी माँग करती है। यह मुफ्त तो है पर कीमती है।

''पर व्यवस्था पर चलनेवाले''

जानना कि परमेष्वर नई आज्ञाकारी जीवनषैली की माँग करते हैं (लैव्य.18:5; मत्ती.7:24–27; लूका.8:21; 11:28; यूह.13:17; याक. 1:22–25; 2:14–28)। कई तरह से ये विचार इब्रानी षब्द षेमा की नकल करता है, जिसका अर्थ है करने के लिए सुनिए (व्यव. 56:1; 6:4; 9:1; 20:3; 27:9–10)।

2:14

एन ए एस बी ''फिर जब अन्यजाति लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, तो व्यवस्था उन के पास न होने पर भी वे अपने लिये आप ही व्यवस्था हैं।''

एन के जे वी ''फिर जब अन्यजाति लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, तो व्यवस्था उन के पास न होने पर भी वे अपने लिये आप ही व्यवस्था हैं।''

एन आर एस वी ''जब अन्यजाति लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, तो व्यवस्था उन के पास न होने पर भी वे अपने लिये आप ही व्यवस्था हैं।''

टी इ वी ''अन्यजाति लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, वे अपने लिये आप ही व्यवस्था हैं, व्यवस्था उन के पास न होने पर भी ।''

जे बी ''अन्यजाति लोग जिनहोंने व्यवस्था के बारे में नहीं सुना, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, तो व्यवस्था उन के पास न होने पर भी वे अपने लिये आप ही व्यवस्था हैं।''

हरेक संस्कृति के अपने अन्दरूनी–नैतिक कानून होते हैं, सामाजिक कानून। अपने अन्दर के प्रकाष के लिए वे स्वयं ज़िम्मेदार हैं (1कुरि.9:21)। यह आयत इसलिए नहीं लिखा गया कि यह साबित करे कि मनुश्य अपनी संस्कृति के प्रकाष से परमेष्वर के सामने धर्मी हो सकता है पर इसका अर्थ यह है कि वह परमेष्वर के बारे में अपने ज्ञान के लिए ज़िम्मेदार हैं।

2:15

*''उन के विवेक भी गवाही देते हैं,
और उन की चिन्ताएं परस्पर दोष लगाती,
या उन्हें निर्दोष ठहराती है''*

एक अन्दरूनी–नैतिक आवाज़ होती है। पर केवल वचन, जो पवित्रात्मा द्वारा प्ररित है और पूरी तरह से भरोसे के लायक है। पतन ने हमारे विवेक को भ्रश्ट कर दिया है। सृश्टि (रोमियों.1:18–20) और ये अन्दरूनी नैतिक कानून (रोमियों.2:14–15) दोनो परमेष्वर का ज्ञान है जो हरेक मनुश्य के पास है। विवेक के लिए यूनानी षब्द (सिनैडिसीस) की समानता का कोई इब्रानी षब्द नहीं है। अन्दरूनी नैतिक आभास जो सही और गलत का फैसला करता है उसका स्टोइक तर्कषास्त्रियों द्वारा अक्सर प्रयोग किया है। पौलुस यूनानी तर्कषास्त्रियों से अच्छी तरह से वाकिफ थे (वह प्रेरित.17:28 में क्लिनथिस, 1कुरि.15:33 में मेनानदर और तीत.1:12 में एपिमेनडेस का प्रयोग करते हैं) जो उन्हें अपनी पहले की तर्शीश की षिक्षा से मिला। उनका मातृ ग्राम अपनी यूनानी तर्क षिक्षा और विचार के लिए प्रसिद्ध था।

2:16

"उस दिन"

देखिए नोट 2:5।

"सुसमाचार के अनुसार"

इस संदर्भ में पौलुस का प्रचार यीषु मसीह के प्रकाषन को सम्बोधित करता है। विभक्ति "मेरा" पौलुस की सुसमाचार के प्रति भंण्डारीपन की समझ को प्रगट करता है (रोमियों.16:25; 1कुरि.15:1; 1तीमु.1:11; 2तीमु.2:8)। यह अद्वितिय रूप से उनका नहीं था पर अन्यजातियों का प्रेरित होने के कारण उन्होंने सुसमाचार को यूनानी–रोमी संसार में फैलाने की अपनी ज़िम्मेदारी को भली भांती समझा।

"परमेष्वर मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेंगे"

परमेष्वर मनुश्य के मनों को जानते हैं (1षमू.2:7; 16:7; 1राजा.8:39; 1इति.28:9; 2इति.6:30; भ.सं.7:9; 44:21; 139:1–6; यिर्म. 11:20; 17:10;20:12; लूका.15:16; प्रेरित.1:24; 15:8; रोमियों.8:27; प्रका.2:23)। पिता, पुत्र द्वारा दोनों मनसा और कार्यों को न्याय के सम्मुख लाऐंगे (मत्ती.25:31–46; प्रका.20:11–15)।

"मसीह यीषु में"

यीषु न्यायी बनकर कार्य करने नहीं आए (यूह.3:17–21)। वह पिता परमेष्वर को प्रगट करने के लिए, बदले में मृत्यु, विष्वासियों को अनुसरण करने के लिए एक आदर्ष दिखाने आए थे। जब लोग यीषु का त्याग करते हैं तो वह अपना ही न्याय करते हैं।

नया नियम सिखाता है कि यीषु पिता के प्रतिनिधि के रूप में न्याय में कार्य करेंगे (यूह.5:22, 27; प्रेरित.10:42; 17:31; 2तीमु. 4:1)। यीषु का न्यायी और उद्धारकर्ता के रूप के बीच तनाव यूहन्ना के सुसमाचार में देखा जा सकता है (यूह.3:17–21; 9:39)।

रोमियों.2:17–24

17 यदि तू यहूदी कहलाता है, और व्यवस्था पर भरोसा रखता है, और परमेश्वर के विषय में घमण्ड करता है।

18 और उस की इच्छा जानता और व्यवस्था की शिक्षा पाकर उत्तम उत्तम बातों को प्रिय जानता है।

19 और अपने पर भरोसा रखता है, कि मैं अन्धों का अगुवा, और अन्धकार में पड़े हुओं की ज्योति।

20 और बुद्धिहीनों का सिखानेवाला, और बालकों का उपदेशक हूँ, और ज्ञान, और सत्य का नमूना, जो व्यवस्था में है, मुझे मिला है।

21 सो क्या तू जो औरों को सिखाता है, अपने आप को नहीं सिखाता? क्या तू चोरी न करने का उपदेश देता है, आप ही चोरी करता है?

22 तू जो कहता है, व्यभिचार न करना, क्या आप ही व्यभिचार करता है? तू जो मूरतों से घृणा करता है, क्या आप ही मन्दिरों को लूटता है।

23 तू जो व्यवस्था के विषय में घमण्ड करता है, क्या व्यवस्था न मानकर, परमेश्वर का अनादर करता है?

24 क्योंकि तुम्हारे कारण अन्यजातियों में परमेश्वर के नाम की निन्दा की जाती है जैसा लिखा भी है।

2:17

''यदि''

ये प्रथम दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के दृश्टिकोण से इस साहित्य उद्देष्य के लिए सही है। ये षर्त आयत 20 तक है, पर इसका कोई सारांष नहीं है, इसलिए टी इ वी इसका अनुवाद इस काल्पनिक तौर पर जैसे यीषु इसका प्रमाण देते। यहूदी अपने वंष, रीति रिवाज़ों और कर्मों पर भरोसा रखते थे कि वो उन्हें उद्धार दिलाऐंगे (मत्ती.3:9; यूह.8:33, 37, 39)।

''परमेष्वर में घमण्ड करो''

बहुत से यहूदी निम्न बातों पर भरोसा रखते थे (1) उनका जातिय वंष; (2) मूसा की व्यवस्था का व्यक्तिगत रूप से पालन करना ताकि वो परमेष्वर द्वारा ग्रहण किए जाए। जबकी उनके स्वधर्मीपन ने उन्हें परमेष्वर से अलग कर दिया (मत्ती.5:20; गला. 3)। कितने दुःख की बात है।

पौलुस घमण्ड के विचार को 1कुरि. में उन्नत करते हैं। पौलुस ने हठी इस्राएलियों और यूनानी ज्ञानियों का सामना किया। आधारभूत सत्य यह है कि कोई भी मनुश्य परमेष्वर के सामने घमण्ड नहीं कर सकता (इफि.2:8–9, दूसरे षब्दों में कहें तो जब परमेष्वर ने तुम्हे खरीदा तो लाभ का सौदा नहीं किया)।

विषेश षीर्शक : घमण्ड करना

यूनानी षब्द कउचाओमाय, कउचेमा और कउचेसिस का प्रयोग पौलुस ने लगभग 35 बार किया होगा जबकी बाकी की नए नियम की पुस्तकों में इसका प्रयोग 2 बार (याकूब में) हुआ है। इसका अधिक प्रयोग 1 और 2 कुरि में हुआ है।

(१) कोई षरीर परमेष्वर के सामने घमण्ड नहीं कर सकता (1कुरि.1:29; इफि.2:9)

(२) विष्वासियों को परमेष्वर पर घमण्ड करना चाहिए (1कुरि.1:31; 2कुरि.10:17, जो एक कल्पना है यिर्म.9:23–24 में)।

इसलिए सही और गलत प्रकार के घमण्ड हैं।

1) सही

क. महिमा की आषा में (रोमियों.4:2)

ख. परमेष्वर में प्रभु यीषु के द्वारा (रोमियों.5:11)

ग. प्रभु यीषु के क्रूस में (पौलुस का प्रमुख केन्द्रीय विशय, 1कुरि.1:17–18; गला.6:14)

घ. पौलुस घमण्ड करते हैं
(1) बिना आर्थिक लाभ के सेवकाई (1कुरि.9:15, 16; 2कुरि.10:12)

(2) मसीह द्वारा अपने अधिकार पर (2कुरि.10:8, 12)

(3) दूसरे मनुश्य की मेहनत पर घमण्ड न करने पर (कुरिन्थ में कुछ लोग, 2कुरि.10:15)

(4) अपने जातिय उत्तराधिकार पर (जैसा कि कुरिन्थ में बाकी कर रहे थे, 2कुरि.11:17; 12:1, 5, 6)

(5) अपनी कलीसियाओं पर
(क) कुरिन्थ (2कुरि.7:4, 14; 8:24; 9:2; 11:10)

(ख) थिस्सलुनिकिया (2थिस्स.1:4)

(6) परमेष्वर की सांत्वना और छुटकारे पर उनके भरोसे पर (2कुरि.1:12)

2) गलत

क. यहूदी उत्तराधिकार में (रोमियों.2:17, 23; 3:27; गला.6:13)

ख. कुरिन्थ की कलीसिया में कुछ लोग घमण्ड करते थे

(1) मनुश्य पर (1कुरि.3:21)

(2) बुद्धि पर (1कुरि.4:7)

(3) स्वतंत्रता पर (1कुरि.5:6)

ग. झुठे षिक्षक कुरिन्थ की कलीसिया में घमण्ड करना चाहते थे (2कुरि.11:12)

2:18

''प्रषंसा करना''

देखिए दिया गया विषेश षीर्शक : परीक्षा

विषेश षीर्शक : ''परीक्षाओं'' के लिए यूनानी षब्द और उनके अनुमान

यूनानी में दो षब्द हैं जो किसी उद्‌देष्य से किसी की परीक्षा के विचार को प्रगट करते हैं।

1) *डोकिमाज़ो, डोकिमियोन, डोकिमासिया*

यह परीक्षा का धातुरूपक षब्द है जो धातु के वास्तविक होने की आग से जाँच के लिए प्रयोग में लाया जाता है। आग सच्चे धातु को प्रगट करती है कुडे को जलाने के द्वारा। यह षारीरिक प्रक्रिया परमेष्वर और मनुश्य द्वारा दूसरों की परीक्षा के लिए एक उत्तम मुहावरा बन गई। यह षब्द ग्रहण करने के लिए केवल सकारात्मक बातों के लिए प्रयोग की जाता है।

नए नियम में परीक्षा के लिए इसका प्रयोग किया गया है।

(क) बैल, लूका.14:19

(ख) अपने आप को, 1कुरि.11:28

(ग) हमारा विष्वास, याक.1:3

(घ) परमेष्वर को भी, इब्रा.3:9

इन परीक्षाओं का प्रतिफल सकारात्मक निकला (रोमियों.1:28; 14:22; 16:10; 2कुरि.10:18; 13:3; फिलि.2:27; 1पत.1:7)। इसलिए यह षब्द इस विचार को व्यक्त करता है कि किसी की परीक्षा हुई और वह निकाला :

(क) मूल्यवान

(ख) अच्छा

(ग) वास्तविक

(घ) कीमती

(ङ) आदरयोग्य

2) *पेइराज़ो, पेइरासोमाय*

इस षब्द का अर्थ है गलती निकालने और त्यागने के उद्‌देष्य से परीक्षा। इसका प्रयोग मरूभूमि में यीषु की परीक्षा के लिए किया गया है।

(क) यीषु मसीह को फंसाने के लिए (मत्ती.4:1; 16:1; 19:3; 22:18, 35; मरकुस.1:13; लूका.4:2; 10:25; इब्रा.2:18)

(ख) (पेइराज़ो) षैतान के षीर्शक के रूप में प्रयोग किया गया (मत्ती.4:3; 1थिस्स.3:5)

(ग) परमेष्वर की परीक्षा (मिश्रित षब्द एकपेइराज़ो)मत करो, में यीषु द्वारा प्रयोग किया गया (मत्ती.4:7; लूका.4:12, देखिए 1कुरि.10:9)

(घ) विष्वासियों की परीक्षाओं के सम्बन्ध में इसका प्रयोग किया गया है (1कुरि.7:5; 10:9, 13; गला.6:1; 1थिस्स.3:5; इब्रा.2:18; याक.1:2, 13, 14; 1पत.4:12; 2पत.2:9)।

''व्यवस्था''

आयत 17 के बाद यहूदी लोगों के बारे में है सो यहाँ पर ''व्यवस्था'' षब्द मूसा की व्यवस्था को प्रगट करता है। यह आयत 25 से साबित होता है जो खतना के बारे में है।

2:18–20

यहूदी अगुवे ये विष्वास करते थे कि उनका रास्ता (यहूदी पंथ) ही सही और एकमात्र रास्ता है परमेष्वर तक पहुँचने का। उन्हें निष्चय था कि वे ही धर्म के सच्चे षिक्षक हैं। अवसर ज़िम्मेदारी लाता है (लूका.12:48)।

उनके निष्चय के सदृष्य वाक्यांषों पर ध्यान दीजिए।

(1) अन्धों का अगुवा (रोमियों.2:19)

(2) अन्धकार में पड़े हुओं की ज्योति (2:19)

(3) बुद्धिहीनों का सिखानेवाला (2:20)

(4) बालकों का उपदेशक (2:20)

(5) सत्य का नमूना, जो व्यवस्था में है, मुझे मिला है (2:20)

2:21–24

यदि कोई अपनी व्यक्तिगत आज्ञाकारीता पर भरोसा करता है तो वो पूरी आज्ञाकारीता होनी चाहिए (मत्ती.5:20, 48; गला.3:10 जो व्यव.27:26 है और याक.2:10)। यह पतित मानवजाति के लिए असम्भव है। आयत 21–33 में 5 प्रमुख सवाल हैं।

2:22

आयत 22–23 में पौलुस किसे सम्बोधित कर रहें हैं यह जानना कठिन है। क्योंकि यह वर्णन पौलुस के समय के यहूदियों पर ठीक नहीं बैठता तो सम्भव है कि ये पाप आत्मिक विचारों में लिए गए हैं ठीक उसी प्रकार जैसे कि मत्ती.5:20–48 तक यीषु ने व्यवस्था का वर्णन किया है। जॉर्ज लाड, ए थियोलौजी ऑफ द न्यू टैस्टामैन्ट में कहते हैं ''षायद पौलुस परमेष्वर के सम्मान जो केवल उनका होना चाहिए को लूटने, आत्मिक व्यभिचार, अपने आप को बाकी की सृश्टि पर न्यायी और मालिक के रूप में ऊँचा उठाकर जो आराधना केवल परमेष्वर के लिए है उसे भ्रश्ट करने को व्यक्त कर रहे हैं।'' पृश्ठ.505

2:22

''घृणित मूर्तियाँ''

किसी वस्तु से दुर्गन्ध के कारण पलट जाना इस षब्द का मूल अर्थ है।

''क्या आप ही मन्दिरों को लूटता है''

ऐतिहासिक तौर पर यह साबित करना कठिन है कि ये किस विशय में है पर सम्भवतः मूर्ति पूजा से सम्बन्धित है।

2:24

यह सैप्टूआजैन्ट से यषा.52:5 से लिया गया है। वाचा का पालन करने पर परमेष्वर द्वारा इस्राएल को आषीश देना (व्यव.27–28) संसार के लिए एक गवाही थी। पर इस्राएल ने वाचा का पालन नहीं किया इसलिए संसार ने केवल परमेष्वर का न्याय ही देखा (यहे.36:22–32)। पूरे संसार को यहोवा के पास लाने के लिए (उत्प.12:3; इफि.2:11–3:13)इस्राएल को याजकों का समाज होना चाहिए था (निर्ग.19:5–6) देखिए विषेश षीर्शक : बॉब के सुसमाचार का झुकाव या पक्षपात 1:5।

रोमियों.2:25–29

25 यदि तू व्यवस्था पर चले, तो खतने से लाभ तो है, परन्तु यदि तू व्यवस्था को न माने, तो तेरा खतना बिन खतना की दशा ठहरा।

26 सो यदि खतनारहित मनुष्य व्यवस्था की विधियों को माना करे, तो क्या उस की बिन खतना की दशा खतने के बराबर न गिनी जाएगी?

27 और जो मनुष्यजाति के कारण बिन खतना रहा यदि वह व्यवस्था को पूरा करे, तो क्या तुझे जो लेख पाने और खतना किए जाने पर भी व्यवस्था को माना नहीं करता है, दोषी न ठहराएगा?

28 क्योंकि वह यहूदी नहीं, पर प्रगट में है, और देह में है।

29 पर यहूदी वही है, जो मन में है; और खतना वही है, जो हृदय का और आत्मा में है; न कि लेख का: ऐसे की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है।

2:25

''खतना''

पौलुस अभी भी काल्पनिक विरोधी का प्रयोग करते हैं। कोई यह मुद्दा उठाएगा कि कम से कम हमारा खतना हुआ है (उत्प. 17:10–11)। हम इब्राहीम के वंष से हैं। पौलुस दृढ़ता और हिम्मत के साथ इस यहूदी आषा का खंण्डन करते हैं (मत्ती.3:7–10; यूह.8:31–59)।

पलिस्तियों को छोड़ इस्राएल के सभी पड़ोसी राश्ट्र खतना किए हुए थे। इस कार्य का कोई महत्व नहीं है पर ग्रहण करने का जो प्रगतिषील विष्वास है वो महत्वपूर्ण है (रोमियों.2:26–27)। ये सभी धार्मिक रिवाज़ों के लिए सत्य है। धार्मिक लोग अक्सर परमेष्वर की वाचामय आषीश चाहते हैं पर बिना ज़िम्मेदारी के।

2:25–26

''यदि...यदि...यदि''

ये तीन तृतिय श्रेणी के षर्तिया वाक्य हैं जो सम्भावित भविश्य कार्य को प्रस्तुत करते हैं। आज्ञाकारीता (व्यव.27–30) अध्याय 2 में पौलुस के तर्क की कुंजी है, पर 3:21–31 में नहीं (गला.3)।

2:26–27

ये आयत इस आषा को पकड़े हुए हैं कि कुछ अन्यजातियों ने अपने अन्दर के प्रकाष का प्रतिउत्तर दिया है। इसका एकमात्र सम्भावित उदाहरण प्रेरित.10 में कुरनेलियुस हैं। फिर भी यह उनके लिए सही नहीं बैठता क्योंकि वह परमेष्वर का भय मानते थे और स्थानीय आराधनालय में प्रार्थना करने जाते थे।

ये आयत वास्तव में पौलुस के तर्क यहूदियों को उद्धार की आवष्यकता है
का सहायक अंग है। रोमियों.3:23 मसीह बिना मानवजाति आत्मिक रूप से खोई हुई है का सारांष है। यदि ऐसे अन्यजातिय लोग हैं जो प्रकृति और अन्दरूनी विवेक के प्रकाष में चलते हैं तो परमेष्वर जरूर उन्हें अवसर प्रदान करगें कि वे मसीह को प्रतिउत्तर दें–कैसे भी, किसी भी रास्ते से, किसी भी समय।

2:28–29

''क्योंकि वह यहूदी नहीं है...वह यहूदी है''

यह बहुत ही महत्वपूर्ण तर्क है आज के धार्मिक वितरणवाद के उत्थान की वजह से जो पुराने नियम के परमेष्वर के लोगों को नए नियम के परमेष्वर के लोगों से अलग करता है। केवल एक ही वाचा और एक ही परमेष्वर के लोग हैं (रोमियों.9:6; गला. 3:7–9, 29; 6:16; 1पत.3:6)। नई वाचा पूरानी वाचा की उन्नत वाचा और पूरक है। परमेष्वर के लोग हमेषा विष्वास से बनते हैं न कि वंष से। वह ''मन के लोग'' हैं न कि रीति रिवाज़ और वंष के लोग। माता पिता नहीं अपितु विष्वास ही कुंजी है। वाचा मय मन चिन्ह है न कि वाचा का निषान।

''षरीर या देह''

देखिए विषेश षीर्शक 1:3

2:29 वाचा का निषान खतना (उत्प.17:14) पुराने नियम में एक व्यक्ति का परमेष्वर के प्रति खुला होने का रूपक था। रूपक तौर पर इसका उत्थान कई तरह से हुआ (1) मन या हृदय का खतना (व्यव.10:16; यिर्म.4:4); (2) कान का खतना (यिर्म.6:10); और (3) होंठों का खतना (निर्ग.6:12, 30)। व्यवस्था कभी भी बाहरी पहचान के लिए नहीं थी पर ये जीवन बदलने का सिद्धान्त थी। देखिए विषेश षीर्शक : व्यवस्था के प्रति पौलुस का दृश्टिकोण 7:12।

एन ए एस बी ''जो हृदय का और आत्मा में है; न कि लेख का''

एन के जे वी ''जो हृदय का और आत्मा में है; न कि लेख में''

एन आर एस वी ''ये हृदय की बात है–ये आत्मिक है न कि लेख''

टी इ वी ''जो कि परमेष्वर की आत्मा का कार्य है न कि लिखी हुई व्यवस्था का''

जे बी ''हृदय में–कुछ जो लेख का नहीं पर आत्मा का है''

यूनानी में यह वाक्य संदिग्ध है। कुछ अनुवाद इसे आत्मिक आयत के रूप में लेते हैं (एन आर एस वी, 20वीं सदी का नया नियम, नॉक्स का अनुवाद, लम्सा का पिषीटा अनुवाद, विलियम्स का न्यू ब्रेकले अनुवाद)। बाकी अनुवाद इसके विपरीत इसे पवित्र आत्मा (रोमियों.7:6; 2कुरि.3:6, जहाँ समान विचार आता है) और लिखित मूलपाठ के बीच बताते हैं (एन ए एस बी, एन के जे वी, एन इ बी, एन आई वी और टी इ वी)।

पौलुस इस तथ्य पर चर्चा कर रहें हैं कि कुछ अन्यजातिय षायद व्यवस्था के बिना परमेष्वर को प्रसन्न करने का कार्य कर सकते हैं। यदि यह सत्य है तो परमेष्वर की संतान में केवल षारीरिक खतना पाए हुओं से अधिक बातें हैं (गलातियों)। परमेष्वर का परिवार यहूदी वंष से बड़ा है (उत्प.3:15; 12:3; निर्ग.19:5); अय्यूब, मलिकिसिदक, यित्रो, कालेब, राहाब, और रूत यहूदी वंष के नहीं थे। यहाँ तक कि मनश्शे और एप्रैम गोत्र भी आधे मिस्री थे (उत्प.41:50–52)।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) यहूदियों के अविष्वास ने कैसे परमेष्वर के वायदे को प्रभावित किया (3:3–4)?

2) क्या परमेष्वर के सामने यहूदी होने का कोई लाभ है?

3) काल्पनिक उग्र भाशण क्या है?

4) आयत 5–8 में काल्पनिक विरोधी को रखने का क्या उद्देष्य था?

5) यदि धर्मी ठहराया जाना बिना कर्म के विष्वास के द्वारा अनुग्रह से है तो एक व्यक्ति को कैसे जीवन बिताना चाहिए (3:8)?

6) पूर्ण भ्रश्टता का धर्मषास्त्रीय विचार क्या है (3:10–18)?

7) मूसा की व्यवस्था और सामान्य कानून का क्या उद्देष्य है (3:20; गला.3:24–25)?

8) अध्याय 1–3 में षैतान का ज़िक्र क्यों नहीं किया गया जबकि ये मानवजाति के खोयापन से सम्बन्धित हैं?

9) पुराने नियम के वायदे में षर्तें थीं या फिर ये बिना षर्तों के थे?

10) मूसा की व्यवस्था का (1) गैर–यहूदियों; और (2) यहूदियों के जीवन में क्या उद्देष्य था?

11) अनुच्छेद–अनुच्छेद करके अपने षब्दों में रोमियों.1:18–3:20 के पौलुस के तर्क को लिखिए।

रोमियों – 3

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
यहूदी और व्यवस्था (2:17–3:8)	परमेष्वर के न्याय का बचाव	यहूदी होने का लाभ	यहूदी और व्यवस्था (2:17–3:8)	परमेष्वर के वायदे उन्हें बचा नहीं सकेंगे
3:1–8	3:1–8	3:1–8	3:1–4	3:1–8
			3:5–6	
			3:7–8	
कोई भी धर्मी नहीं है	सबने पाप किया है	सभी दोशी हैं	कोई भी मनुश्य धर्मी नहीं है	सब दोशी हैं
3:9–20	3:9–20	3:9–18	3:9–18	3:9–18
		3:19–20	3:19–20	3:19–20
विष्वास द्वारा धार्मिकता	विष्वास द्वारा परमेष्वर की धार्मिकता	सच्ची धार्मिकता	कैसे परमेष्वर मनुश्य को धर्मी ठहराते है	परमेष्वर के न्याय का प्रकाषन
3:21–16	3:21–16	3:21–16	3:21–16	3:21–16
	घमण्ड का अवरोध	घमण्ड का अवरोध		विष्वास क्या करता है
3:27–31	3:27–31	3:27–31	3:27–31	3:27–31

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का ह्रदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद
2) दूसरा अनुच्छेद
3) तीसरा अनुच्छेद
4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि

क. आयत 1–8 सम्बन्धित लेख है पर पौलुस के तर्क को समझ पाना कठिन है क्योंकि वह काल्पनिक विरोधी का प्रयोग करते हैं।

ख. ऐसा प्रतित होता है कि पौलुस यह प्रगट कर रहे हैं कि यहूदी किस प्रकार रोमियों.2:17–29 का प्रतिउत्तर देंगे इसलिए वह विरोधी को उत्तर देते हैं (कॉर्ले, वाउघान, रोमन्स, पृश्ठ.37–39)।

1) पहला सवाल। क्या सच में यहूदी होने का कोई लाभ नहीं? (3:1–2)

2) दूसरा सवाल। क्या कुछ यहूदियों के अविष्वासी होने से परमेष्वर का वचन असफल हो गया? (3:3–4)

3) तीसरा सवाल। यदि परमेष्वर ने अपना चरित्र प्रगट करने के लिए प्रयोग किया तो क्या वो फिर भी कानूनन ज़िम्मेदार हैं? (3:5–8)

ग. सारांष रोमियों.2:11 में वापस जाता है। परमेष्वर पक्षपात नहीं करते। प्रत्येक मनुश्य अपने अन्दर के प्रकाष (प्राकृतिक प्रकाषन या विषेश प्रकाषन) से अलग रहने का लेखा देगा।

घ. आयत 9–18 पुराने नियम से लिए गए आयत हैं जो यहूदियों के पापों को प्रगट करते हैं।

ङ. आयत 19–20 इस्राएल की आत्मिक दषा और पुराने नियम के उद्देष्य को प्रगट करते हैं (गला.3)।

च. आयत 21–31 रोमियों.1:18–3:20 का सारांष है। वे सुसमाचार के प्रथम धर्मषास्त्रीय भाग हैं (देखिए संक्षिप्त रूपरेखा पृश्ठ 3 पर)।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.3:1–8

1 सो यहूदी की क्या बड़ाई, या खतने का क्या लाभ?

2 हर प्रकार से बहुत कुछ। पहले तो यह कि परमश्ेवर के वचन उन को सौंपे गए।

3 यदि कितने विश्वसघाती निकले भी तो क्या हुआ। क्या उनके विश्वासघाती होने से परमेश्वर की सच्चाई व्यर्थ ठहरेगी?

4 कदापि नहीं, वरन परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य झूठा ठहरे, जैसा लिखा है, कि जिस से तू अपनी बातों में धर्मी ठहरे और न्याय करते समय तू जय पाए।

5 सो यदि हमारा अधर्म परमेश्वर की धार्मिकता ठहरा देता है, तो हम क्या कहें? क्या यह कि परमेश्वर जो क्रोध करता है अन्यायी है? (यह तो मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं)।

6 कदापि नहीं, नहीं तो परमेश्वर क्योंकर जगत का न्याय करेगा?

7 यदि मेरे झूठ के कारण परमेश्वर की सच्चाई उस को महिमा के लिये अधिक करके प्रगट हुई, तो फिर क्यों पापी की नाई मैं दण्ड के योग्य ठहराया जाता हूं?

8 और हम क्यों बुराई न करें, कि भलाई निकले? जब हम पर यही दोष लगाया भी जाता है, और कितने कहते हैं? कि इन का यही कहना है: परन्तु ऐसों का दोषी ठहराना ठीक है।

3:1

''सो यहूदी की क्या बड़ाई''

अपने संदेष को प्रस्तुत करने के लिए पौलुस लगातार काल्पनिक विरोधी का प्रयोग कर रहे हैं। यहूदियों के अवसरों के लिए देखिए 3:2 और 9:4–5।

3:2

''सबसे पहले''

पौलुस ''पहले'' षब्द का प्रयोग 1:8 में करते है पर दूसरे षब्द को व्यक्त नहीं करते। यहाँ पर भी वह ऐसा ही करते हैं। पौलुस के वाक्य इतने गहरे और अक्सर बोल कर लिखवाए गए होते हैं इसलिए कई बार उनका व्याकरण अधूरा होता है।

''परमश्ेवर के वचन उन को सौंपे गए''

परमेष्वर का प्रकाषन होना एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है और साथ ही साथ एक सुनहरा अवसर भी है (लूका.9:4–5)। वे परमेष्वर के तोहफे के भण्डारी हैं (1थिस्स.2:4)।

सैप्टूआजैन्ट में लोगियोन षब्द का प्रयोग किया गया है परमेष्वर द्वारा कहे गए षब्दों के लिए (गिन.24:4, 16; व्यव.33:9; भ.सं. 119:67; यषा.5:24; 28:13)। नए नियम में भी ये इसी अभिप्राय से प्रयोग किया गया है (प्रेरित.7:38; इब्रा.5:12; 1पत.4:11)।

3:3

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। आयत 5 और 7 भी पहले दर्जे का षर्त वाक्य हैं।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''कुछ ने विष्वास नहीं किया''

एन आर एस वी, जे बी ''कुछ अविष्वासी निकले''

टी इ वी ''क्या हुआ यदि उनमें से कुछ अविष्वासी निकले तो''

यह षायद एक एक इस्राएली को प्रस्तुत करता है (1) जो विष्वासघाती है (2) जिसमें यहोवा पर व्यक्तिगत विष्वास की कमी है। परमेष्वर के षर्तहीन वायदे से जुड़ना बुद्धि से सम्भव नहीं है (उदा. पतित मानवजाति का छुटकारा) और मानव का षर्तिया प्रतिउत्तर। फिर भी यह बाइबल का विचार है (रोमियों.3:4–5)। परमेष्वर तब भी विष्वासयोग्य हैं जब उनके लोग उनके प्रति विष्वासयोग्य नहीं हैं (होषे.1, 3)।

''व्यर्थ ठहराना''

देखिए दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : अर्थहीन और खाली (कटारगेयो)

यह कटारगेयो पौलुस के मनपसंद षब्दों में से एक है। उन्होंने इसका प्रयोग लगभग 25 बार किया पर यह बहुअर्थ षब्द है।

क. *इसका आधारभूत व्युतप्ति मूल अग्रोस है जिसका अर्थ है*

1) निश्क्रिय

2) आलस्य

3) जिसका प्रयोग न हुआ हो

4) बेकार

5) निरर्थक

ख. *कटा के साथ मिश्रित करने पर*

1) निश्क्रियता

2) बेकार का

3) जिसे खारिज कर दिया गया हो

4) जिसे छोड़ दिया गया हो

5) जो पूरी तरह से निरर्थक हो

ग. *लूका में एक बार इसका प्रयोग किया गया है फलरहित पेड़ का वर्णन करने के लिए, इसलिए बेकार पेड़ (लूका.13:7)*

घ. *पौलुस इसका प्रयोग रूपक तौर पर दो प्राथमिक तरह से करते हैं*

1) परमेष्वर निरर्थक वस्तुऐं बनाते हैं जो मानवजाति के विरूद्ध हैं

क) मानवजाति का पापमय स्वभाव – रोमियों.6:6

ख) मूसा की व्यवस्था जो परमेष्वर के ''वंष'' के वायदे से सम्बन्धित है – रोमियों.4:14; गला.3:17; 5:4, 11; इफि.2:15

ग) आत्मिक ताकतें – 1कुरि.15:24

घ) अधर्मी मनुश्य – 2थिस्स.2:8

ङ) षारीरिक मृत्यु – 1कुरि.15:26; 2तीमु.1:16 (इब्रा.2:14)

2) परमेष्वर पुराने (वाचा, युग) को नए में बदल रहे हैं

क) वस्तुऐं जो मूसा की व्यवस्था से सम्बन्धित हैं – रोमियों.3:3, 31; 4:14; 2कुरि.3:7, 11, 13, 14

ख) विवाह की समानता व्यवस्था के लिए प्रयोग की गई – रोमियों.7:2, 6

ग) इस युग की वस्तुऐं – 1कुरि.13:8, 10, 11

घ) यह षरीर – 1कुरि.6:13

ङ) इस युग के अगुवे – 1कुरि.1:28; 2:6

इस षब्द का अनुवाद बहुत तरह से किया गया है पर इसका वास्तविक अर्थ है बेकार, व्यर्थ, खाली, निरर्थक, बलहीन पर आवष्यक नहीं कि अस्तित्वहीन, नाष किया हुआ हो।

3:4

एन ए एस बी ''ऐसा कभी नहीं हो सकता''

एन के जे वी, टी इ वी ''कदापि नहीं''

एन आर एस वी ''किसी भी तरह नहीं''

जे बी ''यह असंगत है''

यह बहुत ही कम प्रयोग किया जाता है जो इच्छा और प्रार्थना को व्यक्त करता है और इसका अनुवाद यूँ किया जाना चाहिए, ''ऐसा कभी नहीं हो सकता।'' यह चौंका देने वाला अविष्वास वाक्यांष अक्सर पौलुस द्वारा प्रयोग में लाया गया है उनके काल्पनिक विरोधी प्रणाली के कारण (रोमियों.3:4, 6, 31; 6:2, 15; 7:7, 13; 9:14; 11:1; 1कुरि.6:15; गला.2:17; 3:21; 6:14)। यह उनका तरीका था दृढ़ता से काल्पनिक दोश को नकारने का।

ध्यान दीजिए कि किस तरह पौलुस काल्पनिक विरोधी और वाक्यों को नकारते हैं।

1) ''ऐसा कभी नहीं हो सकता'', 3:4, 6

2) ''वरन परमेश्वर सच्चे और हर एक मनुष्य झूठा ठहरे'', 3:4

3) ''(यह तो मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं)'', 3:5

4) ''जब हम पर यही दोष लगाया भी जाता है, और कितने कहते हैं'', 3:8

''वरन परमेश्वर सच्चे और
हर एक मनुष्य झूठा ठहरे''

यह षब्द रचना विशय की प्रगतिषील दषा पर केन्द्रीत है : परमेष्वर विष्वासयोग्य और सच्चे हैं, मनुश्य विष्वासघाती और झुठा है। यह भ.सं.116:11 की ओर संकेत है और अय्यूब को जो अय्य.32:2; 40:8 में सीखना पड़ा उस के समान है।

इस अध्याय में पाप के विष्वव्यापी तत्व पर ध्यान दीजिए, जो पौलुस के पास (सब, सभी) षब्द के प्रयोग को दर्षाता है (रोमियों. 3:4, 9, 12, 19, 20, 23, 24) पर परमेष्वर का धन्यवाद हो कि वे विष्वव्यापी उद्धार भी प्रदान करते हैं (रोमियों.3:22)।

''जैसा कि लिखा है''

वास्तव में ''यह लगातार लिखा जा रहा है।'' यह तकनीकी मुहावरा बन गया है यह बताने के लिए कि वचन परमेष्वर की प्रेरणा से लिखा गया है (मत्ती.5:17–19)। यह सैप्टूआजैन्ट के भ.सं.51:4 से लिया गया है।

3:5–6

इन आयतों में पौलुस, परमेष्वर का इस्राएल को साधन के रूप में विषेश तौर पर चुनना ताकि संसार तक पहुँच सकें, पर तर्क कर रहे हैं (उत्प.12:3; निर्ग.19:5–6)। पुराने नियम में 'चुनाव' सेवा को प्रगट करता है विषेश अवसर को नहीं। परमेष्वर ने उनके साथ वाचा बाँधी। परमेष्वर विष्वासयोग्य थे और वे विष्वासघाती (नेह.9)। परमेष्वर ने विष्वासघाती इस्राएलियों को दण्ड दिया ये परमेष्वर की धार्मिकता का सबूत है।

इस्राएल अन्यजातियों तक पहुँचने का साधन था। वे असफल हुए (रोमियों.3:24)। विष्वव्यापी उद्धार की परमेष्वर की योजना (उत्प.3:15) इस्राएल के असफलता से प्रभावित नहीं हुई। तथ्य के रूप में अपनी वास्तविक वाचा के प्रति परमेष्वर की विष्वासयोग्यता रोमियों.9–11 में साबित होती है। अविष्वासी इस्राएल त्यागा गया पर विष्वास करने वाले इस्राएली परमेष्वर के उद्धार की योजना को पूरा करेंगे।

3:5–6 में पौलुस के काल्पनिक विरोधी का तरीका 3:7–8 के सदृष्य है।

3:6

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। आयत 3 और 7 भी पहले दर्जे का षर्त वाक्य हैं।

''सो यदि हमारा अधर्म परमेश्वर की धार्मिकता ठहरा देता है''

हमारा षब्द मिश्रित तौर पर यहूदियों को प्रगट करता है। देखिए विषेश षीर्शक 1:17।

''हम क्या कहें''

पौलुस काल्पनिक विरोधी का प्रयोग करते हैं (रोमियों.3:5; 7:7; 8:31; 9:14, 39)। पौलुस अपने प्रस्तुतीकरण को काल्पनिक विरोधी के द्वारा स्पश्ट करते हैं (मला.1:2, 6, 7, 12, 13; 2:14, 17–दो बार; 3:7, 13, 14)।

एन ए एस बी ''मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूँ''

एन के जे वी ''मैं मनुष्य के समान बोलता हूँ''

एन आर एस वी ''मैं मनुष्यों के समान कहता हूँ''

टी इ वी ''मैं यहाँ ऐसे कहता हूं जैसे मनुष्य कहते हैं''

जे बी ''–मनुश्य के षब्द प्रयोग करना–''

पौलुस अक्सर अपनी धर्मषास्त्रीय तर्क में मानवीय तथ्य का प्रयोग करते हैं (रोमियों.6:19; 1कुरि.9:8; गला.3:15)। यहाँ पर यह काल्पनिक विरोधी के दोशों को नकारने का कार्य कर रहा है।

3:7–8 आयत 5 और 7 के बीच समानता है। या तो पौलुस (1) काल्पनिक विरोधी का प्रयोग कर रहे हैं (रोमियों.3:5, 7; 7:7; 8:31; 9:14, 30) या फिर (2) विष्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने के प्रचार के विरोध का प्रतिउत्तर दे रहे हैं (3:8)।

पौलुस ने किसी भी दोश का वर्णन नहीं किया और न ही उसका उत्तर दिया परन्तु दृढ़ता के साथ उसे नकारा। यह सम्भव है कि विष्वास द्वारा मुफ्त में मिलने वाली धार्मिकता और भी व्यवस्थाहीनता की ओर ले जाए या और भी विष्वासघाती अनाज्ञाकारीता लाए। पौलुस ऐसा विष्वास करते थे कि मुफ्त अनुग्रह नई आत्मा और धन्यवादी के द्वारा मसीह की समानता की ओर ले जाऐगा। यहूदी, यूनानी नैतिकवादी और पौलुस सभी अपने द्वारा परिवर्तित किए लोगों में नैतिक जीवन चाहते थे। पर यह बाहरी व्यवस्था को साबित करने से नहीं परन्तु नए हृदय से आता है (यिर्म.31:31–34; यहे.26:22–32)।

3:7

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। आयत 3 और 5 भी पहले दर्जे का षर्त वाक्य हैं।

''अधिक करके''

देखिए विषेश षीर्शक 15:3।

''उनकी महिमा''

देखिए नोट 3:23।

रोमियों.3:9–18

9 तो फिर क्या हुआ? क्या हम उन से अच्छे हैं? कभी नही; क्योंकि हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर यह दोष लगा चुके हैं कि वे सब के सब पाप के वश में हैं। 10 जैसा लिखा है, कि कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। 11 कोई समझदार नहीं, कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं। 12 सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए, कोई भलाई करनेवाला नहीं, एक भी नहीं। 13 उन का गला खुली हुई कब्र हैः उन्हीं ने अपनी जीभों से छल किया हैः उन के होठों में सापों का विष है। 14 और उन का मुंह श्राप और कड़वाहट से भरा है। 15 उन के पांव लोहू बहाने को फुर्तीले हैं। 16 उन के मार्गों में नाश और क्लेश है। 17उन्हों ने कुशल का मार्ग नहीं जाना। 18 उन की आंखों के साम्हने परमेश्वर का भय नहीं।

3:9

''क्या हम उन से अच्छे हैं''

इस जगह पर व्याकरण संदिग्ध है। यह पक्का है कि इस मूलपाठ में मुख्य सत्य यह है कि सारी मानवजाति को परमेष्वर के अनुग्रह की आवष्यकता है (रोमियों.3:9, 19, 23; 11:32; गला.3:22)। इसलिए यह कह पाना बहुत ही कठिन है कि विषेश तौर पर ये यहूदियों (पौलुस और उनके रिष्तेदारों, टी इ वी, आर एस वी) के लिए है या फिर मसीहियों (पौलुस और उनके संगी विष्वासी जो परमेष्वर के अनुग्रह से दूर हो गए हैं) के लिए है। यहूदियों को ज़रूर कुछ लाभ हैं (रोमियों.3:1–2; 9:4–5), पर ये लाभ उन्हें और भी ज़िम्मेदार ठहराते हैं। प्रत्येक मनुश्य आत्मिक रीति से खोया हुआ है और उसे परमेष्वर के अनुग्रह की आवष्यकता है।

षब्द ''अच्छे'' थोड़े ही ज्ञानियों की समझ में आया है, जिसका प्रतिफल इसका अनुवाद ''श्रेश्ठ होना'' में हुआ।

रोमियों की पत्री के बारे में अक्सर कहा जाता है कि ये पौलुस की पत्रियों में से बहुत ही तर्कानुसार तटस्थ पत्री है। पौलुस के अधिकतर पत्र स्थानिय ज़रूरत या समस्या को सम्बोधित होते हैं (परिस्थिति लेख)। इस मूलपाठ और 9–11 अध्याय के पीछे यहूदी और अन्यजातिय अगुवों के बीच मतभेद है।

''पाप के वश में''

पौलुस ''पाप'' में व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग करके उसे मानवजाति के ऊपर एक क्रूर षासक के रूप में व्यक्त करते हैं (रोमियों.6:16–23)।

3:10–18

''जैसा कि लिखा है''

यह वाक्यांष 3:4 में प्रकट होता है। निम्नलिखित बातें पुराने नियम के आयत हैं जो मानव षरीर के रूपक के तौर पर मानवजाति के पतन को व्यक्त करने के लिए प्रयोग किए गए हैं : (1) रोमियों.3:10–12; सभो.7:20; भ.सं.14:1–3; (2) रोमियों. 3:13; भ.सं.5:9; 140:3; (3) रोमियों.3:14; भ.सं.10:7; (4) रोमियों.3:15–17; यषा.59:7–8; नीति.1:16; (5) रोमियों.3:18; भ.सं.36:1। यह आष्चर्य की बात है कि पौलुस ने यषा.53:6 का प्रयोग नहीं किया।

रोमियों.3:19–20

19 हम जानते हैं, कि व्यवस्था जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था के आधीन हैं: इसलिये कि हर एक मुंह बन्द किया जाए, और सारा संसार परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे।

20 क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके साम्हने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिये कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है।

3:19

''हम जानते हैं''

देखिए नोट 2:2।

''व्यवस्था''

इस संदर्भ में ये पूरे पुराने नियम को प्रस्तुत करता है रोमियों 3:10–18 में लिखे गए पुराने नियम के आयतों के कारण। पौलुस ''व्यवस्था'' में भी ''पाप'' के समान ही व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग करते हैं (रोमियों.6:16–23)।

''जो व्यवस्था के अधीन हैं''

यह अद्वितिय तौर पर यहूदियों और परिवर्तित यूनानीयों को सम्बोधित करता है। यह कहा जा सकता है कि नए नियम में लिखे गए बहुत से पुराने नियम के आयत अन्यजातियों के लिए हैं।

एन ए एस बी ''इसलिये कि हर एक मुंह बन्द किया जाए, और सारा संसार परमेश्वर को लेखा दे''

एन के जे वी ''इसलिये कि हर एक मुंह बन्द किया जाए, और सारा संसार परमेश्वर के सामने दोशी ठहरे''

एन आर एस वी ''इसलिये कि हर एक मुंह चुप हो जाए, और सारा संसार परमेश्वर के सामने लेखे के लिए खड़ा किया जाए''

टी इ वी ''मनुश्य के सारे बहानों को समाप्त करने के लिए और सारे संसार को परमेश्वर के न्याय के अधीन लाने के लिए''

जे बी ''यह इसलिये रचा गया कि सब चुप रहें, और सारा संसार परमेश्वर के न्याय के लिए खुला रहे''

ये रोमियों.1:18–3:20 का मुख्य केन्द्रीय विशय है जो 3:23 में संक्षिप्त किया गया है।

''हर एक मुंह''

3:19–20 में बहुत से वाक्यांष हैं जो पूरी मानवजाति को प्रस्तुत करते हैं।

1) ''हर एक मुंह'' 3:19

2) ''सारा संसार'' 3:19

3) ''कोई प्राणी'' 3:20

3:20

''क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी
उसके साम्हने धर्मी नहीं ठहरेगा''

यह भ.सं.143:2 की ओर संकेत करता है, पर एक वाक्यांष जोड़ा गया है। यह पौलुस के सुसमाचार को मुख्य भाग है (गला. 2:16; 3:11)। एक समर्पित फारीसी होने के नाते पौलुस अद्वितिय रूप से जानते थे कि धार्मिक उत्तेजना और कर्म अन्दरूनी षान्ति प्रदान करने में असमर्थ है।

एन ए एस बी, एन आर एस वी ''व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है''

एन के जे वी ''क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है''

टी इ वी ''व्यवस्था क्या करती है कि मनुश्य को बताती है कि उसने पाप किया है''

जे बी ''सब कुछ जो व्यवस्था करती है वो ये है कि वह हमें बताती है कि क्या पापमय है''

ये पुराने नियम का एक उद्देष्य था। देखिए विषेश षीर्शक 13:9। ये पतित मानवजाति को उद्धार में लाने के लिए नहीं रची गई। इसका उद्देष्य यह था कि बताए कि क्या पाप है और मनुश्य को परमेष्वर की दया की ओर जाने के लिए विवष करे (रोमियों.4:159 5:13, 20; 7:7; गला.3:19–22, 23–29)।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) यहूदियों के अविष्वास ने कैसे परमेष्वर के वायदे को प्रभावित किया (3:3–4)?

2) क्या परमेष्वर के सामने यहूदी होने का कोई लाभ है?

3) आयत 5–8 में काल्पनिक विरोधी को रखने का क्या उद्देष्य था (उग्र भाशण) ?

4) यदि धर्मी ठहराया जाना बिना कर्म के विष्वास के द्वारा अनुग्रह से है तो एक व्यक्ति को कैसे जीवन बिताना चाहिए (3:8)?

5) पूर्ण भ्रश्टता का धर्मषास्त्रीय (कैल्विन) विचार क्या है (3:10–18)?

6) मूसा की व्यवस्था और सामान्य कानून का क्या उद्देष्य है (3:20; गला.3:24–25)?

7) अध्याय 1–3 में षैतान का ज़िक्र क्यों नहीं किया गया जबकि ये मानवजाति के खोए पन से सम्बन्धित हैं?

रोमियों.3:21–31 का प्रासंगिक अन्तरदृश्टि

क. रोमियों.3:21–31

1) 1:18–3:20 का क्रांतिक सारांष

2) 1:16–17 का विस्तार

3) 4–8 अध्याय की भूमिका (विषेश कर 3:28)

ख. विष्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने के सिद्धान्त के क्रांतिक सारांष का प्रयोग जागृति लाने वालों ने किया।

1) मार्टिन लूथर ''पूरी बाइबल और रोमियों की पत्री के प्रमुख बिन्दु यह केन्द्रीय भाग के रूप में''

2) जॉन कैल्विन ''पूरी बाइबल में और कोई आयत नहीं जो मसीह में परमेष्वर की धार्मिकता को इतनी अच्छी तरह से साबित करे''

ग. यह सुसमाचारिय मसीहत का धर्मषास्त्रीय निश्कर्श है। इस संदर्भ को समझना मसीहत को समझना है। यह दो अनुच्छेद सारांष में सुसमाचार है वैसे ही जैसे यूह.3:16 एक आयत में है। यह पौलुस के सुसमाचार प्रस्तुतिकरण का मन और प्राण है।

तीन अनुवाद के सवाल हैं :

1) ''व्यवस्था'' षब्द का अर्थ क्या है?

2) ''परमेष्वर की धार्मिकता'' वाक्यांष का क्या अर्थ है?

3) ''विष्वास करना'' और ''भरोसे'' का क्या अर्थ है?

घ. मैं 3:23, 29 में ''सब'' षब्द के लिए और 3:24 (5:15, 17; 6:23) में ''वरदान'' षब्द के लिए परमेष्वर का धन्यवाद करता हूँ।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.3:21–26

21 पर अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की धार्मिकता प्रगट हुई है, जिस की गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं।

22 अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है; क्योंकि कुछ भेद नहीं।

23 इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है।

24 परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।

25 उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित्त ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहले किए गए, और जिन की परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की; उन के विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे।

26 वरन इसी समय उस की धार्मिकता प्रगट हो; कि जिस से वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे, उसका भी धर्मी ठहरानेवाला हो।

3:21

''पर अब''

पौलुस नई वाचा से पुरानी वाचा का विरोध करते हैं, पुराने समय का विद्रोह और धार्मिकता का नया युग। ये ''वर्तमान समय'' के सदृष्य है (3:26; ''पर अब'' 6:22; 7:6)।

''अब बिना व्यवस्था''

यह निष्चय कर पाना कठिन है कि षरूवाती अध्यायों में पौलुस मूसा की व्यवस्था को (एन ए एस बी) या फिर सामाजिक कानून (एन आर एस वी, टी इ वी, एन जे बी, एन आई वी) को सम्बोधित कर रहे हैं। इस संदर्भ में पौलुस के तर्क में यहूदी व्यवस्था सही बैठती है। प्रत्येक मनुश्य ने नैतिक और सामाजिक कानून का उल्लंघन किया है चाहे वह भीतरी हो चाहे बाहरी। पतित मानवजाति की समस्या यह है कि हम कोई भी नियम नहीं चाहते हम सिर्फ अपनी स्वार्थी और स्वयं पर केन्द्रीत अभिलाशाओं को पूरा करना चाहते हैं (उत्प.3)।

एन ए एस बी ''परमेष्वर की धार्मिकता''

एन के जे वी, एन आर एस वी ''परमेष्वर की धार्मिकता''

टी इ वी ''परमेष्वर का तरीका लोगों को अपने सामने धर्मी रखने का''

एन जे बी ''परमेष्वर का बचाने वाला न्याय''

यह परमेष्वर के चरित्र को प्रगट नहीं करता, पर परमेष्वर द्वारा पापी मनुश्य को क्षमा करने और उसे ग्रहण करने के परमेष्वर के तरीके को प्रगट करता है। यही वाक्यांष रोमियों.1:16–17 के धर्मषास्त्रीय केन्द्रीय विशय के लिए प्रयोग किया गया है। यह स्पश्ट है कि यन्त्ररचना क्रूस पर चढ़ाऐ गए यीषु मसीह पर विष्वास है (रोमियों.3:22, 24–26)।

तथ्य यह है कि षब्द (डिकायोसोने) और इसके समानार्थ (देखिए नोट 2:13) का इस संदर्भ में प्रयोग इसके महत्व को दर्षाता है (रोमियों.1:17; 3:5, 21, 22, 25, 26; 4:3, 5, 6, 9, 11, 13, 22; 5:17, 21; 6:13, 16, 18, 19, 20; 8:10; 9:28, 30, 31; 10:3, 4, 5, 6, 10, 17)। यह यूनानी षब्द पुराने नियम के रूपक षब्द (सदाख) ''स्तर'' या ''नाँपने का बेन्त'' से लिया गया है। स्तर परमेष्वर स्वयं हैं। यह षब्द परमेष्वर के चरित्र को प्रगट करता है जो मसीह द्वारा पतित मनुश्य को दिया गया है (2कुरि.5:21)। अपनी ज़रूरत को मानना और परमेष्वर के तोहफे को ग्रहण करना अहंकारी, स्वयं पर केन्द्रीत मनुश्य – विषेश करके कानूनी और धार्मिक व्यक्ति के लिए बहुत ही नीचा दिखाने वाला कार्य है। देखिए विषेश षीर्शक 1:17।

''प्रगट हुई है''

यह वाक्यांष 1:17 के समान है। पर कर्म षब्द अलग है। यहाँ पर कर्म षब्द का अनुवाद यूँ किया जा सकता है ''हुआ है और स्पश्ट रूप से लगातार प्रगट होता रहेगा''। परमेष्वर ने स्पश्ट तौर पर सुसमाचार को प्रगट किया है दोनों पुराने नियम में (रोमियों.4) और यीषु में।

''जिस की गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं''

यह इब्रानी धर्मपुस्तक (व्यवस्था, भविश्यद्वक्ता और लेख) कानून (कैनोन) के तीन भागों में से दो भागों को सम्बोधित करता है। ये पहले दो पूरी बातों को सम्बोधित करते हैं (देखिए विषेश नोट 3:19)। यह स्पश्ट तौर पर प्रगट करता है कि सुसमाचार षुरूवाती रीति से पुराने नियम में मौजुद था (लूका.24:27, 44; प्रेरित.10:43)। यह बाद का विचार या योजना–2 या फिर अन्तिम क्षंणों में किया गया तुरन्त कार्यक्रम नहीं है (रोमियों.1:2)।

3:22

''यीषु मसीह में विष्वास द्वारा''

वास्तविक रूप में ये है ''यीषु मसीह के विष्वास द्वारा'' ये गला.2:16 और फिलि.3:9 में दोहराया गया है और समान तरह से रोमियों.3:26; गला.2:16, 20; 3:22 में भी। इसका अर्थ हो सकता है (1) यीषु का विष्वास या विष्वासयोग्यता; या (2) यीषु हमारे विष्वास का विशय। गला.2:16 में ऐसी ही व्याकरण रचना (2) को सही चुनाव बताती है।

यह परमेष्वर द्वारा धर्मी ठहराए जाने के मुख्य भाव को प्रगट करता है। यह मसीह की धार्मिकता है जो एक व्यक्ति के जीवन में कार्य करती है जो मसीह द्वारा परमेष्वर के मुफ्त वरदान के रूप में मनुश्य को दिया गया है (रोमियों.4:5; 6:23), जिसे विष्वास के द्वारा ग्रहण करना आवष्यक है(इफि.2:8–9) और प्रतिदिन के जीवन में जीना ज़रूरी है (इफि.2:10)।

''सबके लिए''

सुसमाचार सारी मानवजाति के लिए है (रोमियों.3:24; यषा.53:6; यहे.18:23; यूह.3:16–17; 4:42; 1तीमु.2:4; 4:10; तीत.2:11; 2पत. 3:9; 1यूह.4:14)। श्रेश्ठ सत्य का है? ये बाइबल के चुनाव के सत्य की तुलना में होना चाहिए। परमेष्वर का चुनाव न तो इस्लाम के नियत्यवाद और न ही कैल्विनवाद के एक से दूसरे के विचार अनुसार होना चाहिए पर वाचा के अभिप्राय से होना चाहिए। पुराने नियम का चुनाव सेवा के था और इसमें कोई अवसर नहीं था। परमेष्वर ने पतित मनुश्य को बचाने का वायदा किया है (उत्प.3:15)। परमेष्वर ने सारी मानवजाति को इस्राएल के द्वारा बुलाया और चुना है (उत्प.12:3; निर्ग.19:5–6)। परमेष्वर मसीह में विष्वास के द्वारा चुनाव करते हैं। उद्धार के कार्य के लिए हमेषा परमेष्वर पहल करते हैं (यूह.6:44, 65)। इफि.1 और रोमियों.9 बाइबल के महत्वपूर्ण भाग हैं जो पहले से नियुक्ति के सिद्धान्त को व्यक्त करते हैं जिनका प्रयोग धर्मषास्त्रीय तौर पर अगस्तिन और कैल्विन ने किया।

परमेष्वर विष्वासियों का चुनाव केवल उद्धार (धर्मी ठहराने) के लिए नहीं पर षुद्धिकरण के लिए भी करते हैं (इफि.1:4; कुलु. 1:12)। यह सम्बन्धित है (1) मसीह में हमारे स्तर से (2कुरि.5:21) और (2) परमेष्वर की अपने बच्चों में अपने चरित्र को उत्पन्न करने की इच्छा से (रोमियों.8:28–29; गला.4:19; इफि.2:10)। अपने बच्चों के लिए परमेष्वर की इच्छा दोनों हैं एक दिन स्वर्ग और अभी मसीह की समानता।

पहले से चुनाव का उद्देष्य पवित्रता है न कि सुअवसर। परमेष्वर की बुलाहट आदम की संतान में से कुछ को चुनना नहीं है पर सभी के लिए है (1थिस्स.5:23; 2थिस्स.2:13)। पहले से चुनाव को पवित्र जीवन की जगह धर्मषास्त्रीय विवाद में बदलना मानवीय धर्मषास्त्रीय प्रणाली विपदा है। अक्सर हमारे धर्मषास्त्रीय विवाद बाइबल के मूलपाठ का रूप बिगाड़ देते हैं।

देखिए विषेश षीर्शक : चुनाव या पहले से नियुक्ति और धर्मषास्त्रिय संतुलन की आवष्यकता 8:33।

''विश्वास करनेवालों के लिये''

यीषु सारी मानवजाति के लिए मारे गए। सषक्त जिससे सभी उद्धार पा सकते हैं। यह मनुश्य का व्यक्तिगत ग्रहण करना है जो यीषु की धार्मिकता को जीवन में व्यवहारिक बनाता है (रोमियों.1:16; यूह.1:12; 3:16; 20:31; रोमियों.10:9–13; 1यूह.5:13)। बाइबल थोपी जाने वाली धार्मिकता के लिए दो नियम बताती है; विष्वास और पष्चाताप (मरकुस.1:15; प्रेरित.3:16, 19; 20:31 और देखिए नोट 1:5)। यह मूलपाठ उद्धार के विष्व व्यापी अवसर को प्रस्तुत करता है पर सभी उद्धार नहीं पाऐंगे।

''क्योंकि कुछ भेद नहीं''

केवल एक ही मार्ग और एक ही व्यक्ति है जिनके द्वारा मानव (यहूदी और अन्यजाति) उद्धार पा सकता है (यूह.10:1–2, 7; 11:25; 14:6)। कोई भी और हरेक केवल मसीह पर विष्वास करने के द्वारा ही उद्धार पा सकता है (रोमियों.1:16; 4:11, 16; 10:4, 12; गला.3:28; कुलु.3:11)।

3:23–26

यूनानी में यह एक ही वाक्य है।

3:23

एन ए एस बी, एन के जे वी, एन आर एस वी ''इसलिए की सबने पाप किया है और...रहित हैं''

टी इ वी ''सब मनुश्यों ने पाप किया है और...से दूर हैं''

जे बी ''पाप किया और अलग हो गए''

यह रोमियों.1:18–3:20 का सारांष है। हरेक को आवष्यकता है मसीह द्वारा बचाए जाने की (रोमियों.3:9, 19; 11:32; गला.3:22; यषा.53:6)। यह वाक्यांष मानवजाति के आदम के साथ पतन (रोमियों.5:12–21) और उसके लगातार विद्रोह को प्रगट करता है। कोई भी नवीन अंग्रेज़ी अनुवाद इस भिन्नता को प्रगट नहीं करता।

यह आयत धर्मषास्त्रीय तौर पर 3:21 से और सीधे 3:24 से सम्बन्धित है।

''परमेष्वर की महिमा''

पुराने नियम में सामान्य तौर पर ''महिमा'' (ख्वद) के लिए प्रयोग किया जाने वाला इब्रानी षब्द वास्तव में व्यवसायिक षब्द है (जो तराजू को व्यक्त करता है) जिसका अर्थ है ''भारी होना''। जो भारी है वही मूल्यवान है। परमेष्वर की महिमा को प्रस्तुत करने के लिए अक्सर इस षब्द के साथ प्रकाष का विचार जोड़ा जाता है (निर्ग.19:16–18; 24:17; यषा.60:1–2)। केवल वह आदरणीय और योग्य हैं। वे अति प्रकाषमान हैं इसलिए पतित मानवजाति उन्हें देख नहीं सकती (निर्ग.33:17:23; यषा.6:5)। परमेष्वर सच में केवल मसीह द्वारा जाने जा सकते हैं (यिर्म.1:14; मत्ती.17:2; इब्रा.1:3; याक.2:1)।

''महिमा'' षब्द कुछ हद तक संदिग्ध है : (1) यह षायद ''परमेष्वर की धार्मिकता'' के सदृष्य हो सकता है (रोमियों.3:21); (2) ये षायद परमेष्वर की मान्यता को व्यक्त करता है (यूह.12:43); (3) ये परमेष्वर के स्वरूप को प्रस्तुत कर सकता जिसमें मानवजाति रची गई (उत्प.1:26–27; 5:1; 9:6), पर ये विद्रोह के कारण भ्रश्ट हो गया (उत्प.3:1–22), परन्तु परमेष्वर इसे पुनः बहाल करेंगे (2कुरि.3:18)। ये षब्द पहली बार पुराने नियम में यहोवा की अपने लोगों के बीच उपस्थिति के लिए प्रयोग किया गया (निर्ग. 16:7, 10; लैव्य.9:23; गिन.14:10), जो आज भी उद्देष्य है।

विषेश षीर्शक : महिमा

''महिमा'' के बाइबलीय विचार का वर्णन कर पाना बहुत कठिन है। विष्वासी की महिमा इसमें है कि वे सुसमाचार को समझें और परमेष्वर में घमण्ड करें अपने ऊपर नहीं (रोमियों.1:29–31; यिर्म.9:23–24)।

पुराने नियम में सामान्य तौर पर ''महिमा'' (ख्वद) के लिए प्रयोग किया जाने वाला इब्रानी षब्द वास्तव में व्यवसायिक षब्द है (जो तराजू को व्यक्त करता है) जिसका अर्थ है ''भारी होना''। जो भारी है वही मूल्यवान है। परमेष्वर की महिमा को प्रस्तुत करने के लिए अक्सर इस षब्द के साथ प्रकाष का विचार जोड़ा जाता है (निर्ग.19:16–18; 24:17; यषा.60:1–2)। केवल वह आदरणीय और योग्य हैं। वे अति प्रकाषमान हैं इसलिए पतित मानवजाति उन्हें देख नहीं सकती (निर्ग.33:17:23; यषा.6:5)। यहोवा सच में केवल मसीह द्वारा जाने जा सकते हैं (यिर्म.1:14; मत्ती.17:2; इब्रा.1:3; याक.2:1)।

''महिमा'' षब्द कुछ हद तक संदिग्ध है : (1) यह षायद ''परमेष्वर की धार्मिकता'' के सदृष्य हो सकता है (रोमियों.3:21); (2) ये षायद परमेष्वर की ''पवित्रता'' और ''सिद्धता'' को व्यक्त करता है (यूह.12:43); (3) ये परमेष्वर के स्वरूप को प्रस्तुत कर सकता जिसमें मानवजाति रची गई (उत्प.1:26–27; 5:1; 9:6), पर ये विद्रोह के कारण भ्रश्ट हो गया (उत्प.3:1–22), परन्तु परमेष्वर इसे पुनः बहाल करेंगे (2कुरि.3:18)। ये षब्द पहली बार पुराने नियम में यहोवा की अपने लोगों के बीच उपस्थिति के लिए प्रयोग किया गया, जब वह मरूभूमि में भटक रहे थे (निर्ग.16:7, 10; लैव्य.9:23; गिन.14:10)।

3:24

''उसके अनुग्रह से...
सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं''

यहाँ पर सुसमाचार की षुरूवात होती है–परमेष्वर का अनुग्रह जो धार्मिकता प्रदान करता है (रोमियों.15, 17; 6:23)। यूनानी षब्द ''सेंतमेंत धर्मी ठहराना'' (डिकायो) उसी मूल से है जहाँ से ''धार्मिकता'' (डिकायोसुने) आया है। परमेष्वर हमेषा पहल करते हैं (यूह.6:44, 65)।

24–25 आयत में उद्धार का वर्णन करने के लिए तीन रूपक प्रयोग किए गए हैं (1) ''सेंतमेंत धर्मी ठहराना'' कानून का षब्द है, जिसका अर्थ है ''कोई दण्ड नहीं दिया गया'' या बेगुनाह घोशित किया गया; (2) ''छुटकारा'' जो दासों की मंण्डी से लिया गया है, जिसका अर्थ है ''वापस खरीदा गया'' या ''स्वतंत्र किया गया''; और (3) ''संतुश्ट करना'' जो बलिदान प्रणाली से आया है, जिसका अर्थ है ढ़कने की जगह। यह वाचा के सन्दूक के ढ़कन को व्यक्त करता है जहाँ बलिदान पषु का लहु प्रायश्चित्त का दिन छिड़का जाता है (लैव्य.16; इब्रा.9:5)।

विषेश षीर्शक : एक व्यक्ति के उद्धार के बारे में नए नियम में प्रमाण

यह आधारित है

1) परमेष्वर के चरित्र (यूह.3:16), पुत्र के कार्य (2कुरि.5:21), और पवित्र आत्मा की सेवकाई (रोमियों.8:14–16) न कि मनुश्य के कार्य, आज्ञाकारिता की मज़दूरी, और वंष पर

2) यह तोहफा है (रोमियों.3:24; 6:23; इफि.2:5, 8–9)

3) यह नया जीवन है, संसार के प्रति नया दृश्टिकोण है (याकूब और 1यूहन्ना)

4) यह ज्ञान है (सुसमाचार), संगति है (यीषु मसीह में और के साथ विष्वास), नई जीवनषैली (आत्मा द्वारा संचालित मसीह की समानता), तीनों ही, कोई एक अकेला नहीं।

''वरदान या तोहफा''

पौलुस इस विचार का कई बार अलग अलग षब्दों के द्वारा करते हैं।

1) *डोरिअन* ''मुफ्त में''

2) *डोरिआ* ''मुफ्त वरदान''

3) *डोरोन* ''वरदान'' (इफि.2:8)

4) *करिस्मा* ''मुफ्त उधार'' या ''मुफ्त पक्ष'' (रोमियों.1:11; 5:15, 16; 6:23; 11:29; 12:6)

5) *करिसोमाय* ''मुफ्त में पक्ष के रूप में देना'' (रोमियों.8:32)

6) *करिस* ''मुफ्त पक्ष'' या ''मुफ्त दान'' (रोमियों.4:4, 16; 11:5, 6; इफि.2:5, 8)

''उस छुटकारे के द्वारा जो
मसीह यीशु में है''

हमारे उद्धार का यन्त्र यीषु मसीह की हमारे बदले में मृत्यु और पुनरूत्थान है। बाइबल का केन्द्र बिन्दु यह नहीं है कि कितना दिया गया या मूल्य किसे दिया गया (अगस्तिन), पर इस तथ्य पर है कि मानवजाति पाप के दोश और दण्ड से निर्दोश स्थानापन्न के कारण छुट गई (यूह.1:29, 36; 2कुरि.5:21; 1पत.1:19)।

आयत उत्प.3:15 की बहुमूल्यता को प्रगट करता है। यीषु ने श्राप उठा लिया (गला.3:13) और मर गए (2कुरि.5:21) पतित मानवजाति की जगह। बेषक उद्धार मुफ्त है पर निष्चय ही सस्ता नहीं है।

विषेश षीर्शक : दाम चुकाना या छुड़ाना

पुराना नियम

क. प्राथमिक तौर पर दो इब्रानी षब्द हैं जो इस विचार को प्रगट करते हैं।

1) गाल, जिसका आधारभूत अर्थ है ''स्वतंत्र करना'' दाम चुकाने के द्वारा। इस षब्द की आकृति गोएल इस विचार में जोड़ देता है, व्यक्तिगत सम्बन्धी, अक्सर परिवार का सदस्य (छुड़ाने वाला रिष्तेदार)। ये वस्तुऐं, जानवर, भूमी और रिष्तेदारों को वापस खरीदने (लैव्य.25, 27) का सांस्कृतिक भाव धर्मषास्त्रीय रूप से यहोवा को स्थानानतरित कर दिया गया मिस्र से इस्राएल को छुड़ाने के कारण (निर्ग.6:6; 15:13; भ.सं.74:2; 77:15; यिर्म.31:11)। वह ''छुड़ाने वाले'' बन गए (अय्य.19:25; भ.सं. 19:19:14; 78:35; नीति.23:1; यषा.41:14; 43:14; 44:6, 24; 47:4; 48:17; 49:7, 26; 54:5, 8; 59:20; 60:16; 63:16; यिर्म.50:34)।

2) पदाह, जिसका आधारभूत अर्थ है ''छुड़ाना'' या ''बचाना''

क) पहलौठे का छुटकारा, निर्ग.13:13, 14; गिन.18:15—17

ख) षारीरिक छुटकारे के विपरीत आत्मिक छुटकारा, भ.सं.49:7, 8, 15

ग) यहोवा इस्राएल को उसके पाप और विद्रोह से छुड़ाएंगे, भ.सं.130:7–8

ख. धर्मषास्त्रीय भाव में तीन वस्तुएं हैं।

1) ज़रूरत है, दासत्व, अर्थदण्ड, जेल की सज़ा।

क) षारीरिक

ख) सामाजिक

ग) आत्मिक (भ.सं.130:8)

2) स्वतंत्रता, छुटकारे और पुनः रचना के लिए मूल्य चुकाना होगा।

क) इस्राएल राश्ट्र के लिए (व्यव.7:8)

ख) वैयक्तिक (अय्य.19:25–27; 33:28)

3) किसी को बीचवाई और दाता का कार्य करना होगा। गाल में ये परिवार का सदस्य और नज़दीकि रिष्तेदार है (गोएल)।

4) यहोवा अक्सर स्वयं को पारिवारिक षब्दों को व्यक्त करते हैं।

क) पिता

ख) पति

ग) नज़दीकि रिष्तेदार

छुटकारा यहोवा की व्यक्तिगत संस्था द्वारा पक्का है; मूल्य चुका दिया गया है, और छुटकारा पा लिया गया है।

नया नियम

क. धर्मषास्त्रीय भाव को व्यक्त करने के लिए बहुत से षब्द प्रयोग किए गए हैं।

1) *अगोराज़ो* (1कुरि.6:20; 7:23; 2पत.2:1; प्रका.5:9; 14:34)। यह व्यवसायिक षब्द है जो किसी वस्तु के मूल्य को व्यक्त करता है। हम लहु से खरीदे गए लोग हैं जिनका अपने जीवन पर कोई अधिकार नहीं। हम मसीह के हैं।

2) *एक्सागोराज़ो* (गला.3:13; 4:5; इफि.5:16; कुलु.4:5)। यह भी व्यवसायिक षब्द है। यह हमारी स्थान पर यीषु मसीह की मृत्यु को दर्षाता है। यीषु ने व्यवस्था (मूसा की व्यवस्था) के अनुसार ''श्राप'' को उठा लिया जो कि पापी मानव कभी नहीं कर सकता था। उन्होंने हम सब के श्राप को उठा लिया (व्यव.21:23)। यीषु मसीह में परमेष्वर का न्याय और प्रेम पूर्ण क्षमा, ग्रहण और परमेष्वर तक पहुँच के रूप में समा गया।

3) *लूओ, ''स्वतंत्र कर देना''*

क) *लूटरोन,* ''मूल्य चुका दिया गया'' (मत्ती.20:28; मरकुस.10:45)। ये यीषु मसीह के मुँह से निकले हुए सामर्थी वचन हैं उनके आगमन के उद्देष्य के बारे में, पाप का मूल्य चुकाकर जो उन्होंने कभी नहीं किया और संसार के उद्धारकर्ता बन गए (यूह.1:29)।

ख) *लूट्रो,* ''छुड़ाना''

(1) इस्राएल को छुड़ाना, लूका.24:21

(2) लोगों को छुड़ाने और षुद्ध करने के लिए स्वयं को देना, तीत.2:14

(3) पाप रहित स्थानापन्न बनना, 1पत.1:18–19

ग) *लूट्रोसीस*, ''छुटकारा, स्वतंत्रता''

(1) यीषु मसीह के बारे में जकर्याह की भविश्यद्वाणी, लूका.1:68

(2) यीषु मसीह के लिए हन्ना द्वारा परमेष्वर की स्तुति, लूका.2:38

(3) यीषु का एक ही बार में उत्तम बलिदान, इब्रा.9:12

4) *अपोलिट्रोसीस*

क) दूसरे आगमन पर छुटकारा (प्रेरित.3:19–21)

(1) लूका.21:28

(2) रोमियों.8:23

(3) इफि.1:14; 4:30

(4) इब्रा.9:15

ख) मसीह की मृत्यु में छुटकारा

(1) रोमियों.3:24

(2) 1कुरि.1:30

(3) इफि.1:7

(4) कुलु.1:14

5) *एन्टीलिट्रोन* (1तीमु.2:6)। यह (तीत.2:14 के समान) महत्वपूर्ण मूलपाठ है, जो यीषु की क्रूस पर स्थानापन्न मृत्यु को प्रगट करता है। वह ही एकमात्र ग्रहण किए जाने वाले बलिदान थे, जो ''सबके'' लिए मारे गए (यूह.1:29; 3:16–17; 4:42; 1तीमु. 2:4; 4:10; तीत.2:11; 2पत.3:9; 1यूह.2:2; 4:14)।

ख. नए नियम के धर्मषास्त्रीय भाव ये व्यक्त करते हैं

1) मानवजाति पाप के दासत्व में है (यूह.8:34; रोमियों.3:10–18; 6:23)।

2) मानवजाति का पाप के दासत्व में होना पुराने नियम की मूसा की व्यवस्था से प्रगट हुआ (गला.3) और यीषु के पहाड़ी उपदेष से प्रगट हुआ (मत्ती.5–7)। मनुश्य के कार्य मृत्यु की सजा बन चुके थे (कुलु.2:14)।

3) यीषु, परमेष्वर के दोश रहित मेमने, आए और हमारे स्थान पर मारे गए (यूह.1:29; 2कुरि.5:21)। हम पाप से खरीदे जा चुके हैं ताकि हम परमेष्वर की सेवा करें (रोमियों.6)।

4) भाव अनुसार दोनों यहोवा और यीषु हमारे नज़दीकि रिष्तेदार हैं जो हमारे स्थान पर कार्य करते हैं। यह पारिवारिक रूपक को बरकरार रखता है (पिता, पति, पुत्र, भाई, नज़दीकि रिष्तेदार)।

5) छुटकारा षैतान को दिया गया मूल्य नहीं है, पर परमेष्वर के वचन और परमेष्वर के न्याय का समझौता है परमेष्वर के प्रेम और मसीह में पूर्ण उपाय के साथ। क्रूस पर षान्ति पुनः स्थापित की गई, मनुश्य का विद्रोह क्षमा किया गया, मनुश्य में परमेष्वर का स्वरूप फिर से पूरी तरह काम कर रहा पर परमेष्वर के साथ नज़दीकि सम्बन्ध में।

6) छुटकारे का भविश्य भाव अभी बाकी है (रोमियों.8:23; इफि.1:14; 4:30), जिसमें हमारी देह का पुनरूत्थान और त्रिएक परमेष्वर के साथ करीबी सम्बन्ध बाकी है।

3:25

एन ए एस बी "जिन्हें परमेष्वर ने सार्वजनिकरूप से प्रगट किया"

एन के जे वी "जिन्हें परमेष्वर ने ठहराया"

एन आर एस वी "जिन्हें परमेष्वर ने सामने किया"

टी इ वी "परमेष्वर ने प्रस्तुत किया"

जे बी "जो परमेष्वर द्वारा ठहराये गए"

इसका अर्थ है परमेष्वर ने स्वयं अपने मन को और मसीह की मृत्यु के उद्देष्य को प्रगट किया (इफि.1:9)। परमेष्वर के उद्धार की अनन्त योजना में यीषु का बलिदान षामिल था (यषा.53:10; प्रका.13:8)। देखिए नोट 9:11।

यूनानी षब्द *एण्डीक्नुमाय* (*एण्डीक्सीस,* रोमियों.3:25, 26) रोमियों में कई बार प्रयोग किया गया है (रोमियों.2:15; 9:17, 23; सैप्टूआजैन्ट–निर्ग.9:16)। इसका मुख्य अर्थ है प्रगट होना या सामने रखना। परमेष्वर चाहते थे कि मानवजाति उनके छुटकारे के उद्देष्य, योजना और धार्मिकता को समझे। ये संदर्भ बाइबलीय दृश्टिकोण प्रस्तुत करता है

1) परमेष्वर के चरित्र के प्रति

2) मसीह के कार्य के प्रति

3) मानवजाति की आवष्यकता के प्रति

4) छुटकारे की योजना के प्रति

परमेष्वर चाहते हैं कि हम समझें। मसीहत को समझने के लिए इस संदर्भ के बारे में पूर्ण जानकारी होना आवष्यक है। कुछ षब्द और वाक्यांष संदिग्ध हैं और कई अर्थों में समझे जा सकते हैं पर सभी का उद्देष्य एकदम स्पश्ट और साफ है। यह संदर्भ नए नियम का धर्मषात्रीय धूव्र का तारा है।

एन ए एस बी "उनके लहु में सन्तुश्ट करना"

एन के जे वी "उनके लहु द्वारा सन्तुश्ट करना"

एन आर एस वी "उनके लहु के द्वारा प्रायष्चित का बलिदान"

टी इ वी "ताकि उनके लहु के द्वारा वे ऐसे साधन बन जाऐं जिसके द्वारा मानवजाति के पाप क्षमा हो सकें"

जे बी "अपना जीवन बलिदान के रूप में देना ताकि समझौते को जीत सकें"

यूनानी–रोम संसार में इस षब्द मूल्य चुकाकर किसी अपरिचित परमेष्वर के साथ समझौते के विचार को व्यक्त करता है, पर सैप्टूआजैन्ट में नहीं। सैप्टूआजैन्ट और इब्रा.9:5 में ये ''प्रायश्चित्त के ढकने'' में अनुवाद किया गया है, जो वाचा के सन्दूक का ढकन था जो अति पवित्र स्थान में रखा जाता था जहाँ प्रायष्चित के दिन सारे राश्ट्र के लिए बलिदान किया जाता था (लैव्य. 16)।

इस षब्द के साथ इस तरह व्यवहार किया जाना चाहिए जिससे ये पाप के प्रति परमेष्वर की घृणा को कम न करे, पर उनके पापियों के छुटकारे के प्रति सकारात्मक भाव को प्रगट करे। जेम्स स्टीवर्ट की ए मैन इन क्राईस्ट, पृश्ठ.214–224 में एक अच्छी चर्चा पाई जाती है। इसे पाने का एक तरीका ये है कि इस षब्द का अनुवाद इस तरह से करें कि ये मसीह में परमेष्वर के कार्य को प्रगट करे ; ''षान्तिकारी बलिदान'' या ''षान्तिकारी सामर्थ द्वारा''।

''उनके लहु में'' इब्रानी तरीका है, परमेष्वर के निश्पाप मेमने स्थानापन्न बलिदान को व्यक्त करने का (यूह.1:29)। इस विचार को समझने के लिए लैव्य.1–7 महत्वपुर्ण हैं और साथ ही प्रायष्चित का दिन लैव्य.16 भी। लहु, दोशी के बदले में पाप रहित जीवन देने को प्रगट करता है (यषा.52:13–53:12)।

''विष्वास द्वारा''

यहाँ (रोमियों.1:17; 3:22, 25, 26, 27, 28, 30) फिर से यीषु की बदले में मृत्यु द्वारा सभी के लिए व्यक्तिगत लाभ के अवसर उपलब्ध है (रोमियों.15:53)।

यह वाक्यांष प्राचीन बड़े अक्षरों के हस्तलेखों में त्याग दिया गया था 5वीं सदी और 12वीं सदी में भी। यह बाकी सभी यूनानी हस्तलेखों में षामिल किया गया।

''अपनी धार्मिकता प्रगट करे''

परमेष्वर को अपने षब्दों और चरित्र के प्रति सच्चा होना होगा (मला.3:6)। पुराने नियम में जो प्राणी पाप करता है उसे मर जाना चाहिए (यहे.18:4, 20)। परमेष्वर ने कहा वो दोशी को निर्दोश नहीं ठहराएंगे (निर्ग.23:7)। पतित मानवजाति के लिए परमेष्वर का प्रेम इतना महान था कि वो मनुश्य बनने के लिए तैयार हो गए इतना ही नहीं व्यवस्था को पूरा करके पतित मानवजाति के लिए मर गए। प्रेम और न्याय यीषु में मिल गए (रोमियों.3:26)।

एन ए एस बी, एन के जे वी, एन आर एस वी ''उन्होंने उन पापों को छोड़कर आगे गुज़र गए जो पहले किए थे''

टी इ वी ''भूतकाल में वे धीरजवन्त थे और लोगों के पापों पर ध्यान नहीं दिया''

एन जे बी ''भूतकाल में जब, पाप बिना दण्ड पाए चला गया''

षब्द ''गुज़र जाना'' *(पारिसीस)* नए नियम में केवल यहाँ प्रयोग किया गया है सैप्टूआजैन्ट में नहीं। यूनानी पिता और जेरोम ने इसे यूनानी साहित्य अर्थ में लिया ''उधार या कर्ज की क्षमा'' (मौउलटोन और मीलीगन, पृश्ठ.493)। पारीमीय, जहाँ से ये षब्द आया ह, का अर्थ है ''पास से गुज़र जाने देना'' या ''आराम से बैठना'' (लूका.11:42)।

तो सवाल यह है कि क्या परमेष्वर ने भविश्य में मसीह के काम को देखकर उनके पाप क्षमा कर दिए या फिर यूँ ही उन्हें गुज़र जाने दिया ये जानकर कि मसीह की मृत्यु पाप की समस्या से निपट लेगी? प्रतिफल समान है। मनुश्य के भूतकाल, वर्तमानकाल और भविश्यकाल के पाप यीषु मसीह के बलिदान से क्षमा हो गए।

यह परमेष्वर का भूतकाल में किया हुआ अनुग्रह का कार्य है जो उन्होंने मसीह के आने वाले कार्य को देखकर किया (प्रेरित. 17:30; रोमियों.4:15; 5:13) साथ ही साथ वर्तमान और भविश्य कार्य भी (रोमियों.3:26)। परमेष्वर पाप को हलके से नहीं लेते पर वह मसीह के मानवजाति के बदले में दिए गए बलिदान को, मनुश्य के विद्रोह जो परमेष्वर के साथ अनन्त संगति में बाधा है, के लिए पूर्ण और अन्तिम बलिदान के रूप में ग्रहण करते हैं।

3:26

आयत 25 का ''धार्मिकता'' षब्द भावनात्मक रूप से 3:26 के ''धर्मी'' और ''धर्मी ठहराने वाले'' से जुड़ा हुआ है। परमेष्वर चाहते हैं कि मसीह पर विष्वास करने के द्वारा विष्वासियों में उनका चरित्र प्रगट हो। यीषु हमारी धार्मिकता बन जाते हैं (2कुरि.5:21)

पर विष्वासियों को भी उनकी धार्मिकता के अनुरूप और उनके ही समान होना पड़ेगा (रोमियों.8:29)। देखिए विषेश षीर्शक 1:17।

रोमियों.3:27–30

27 तो घमण्ड करना कहाँ रहा? उस की तो जगह ही नहीं: कौन सी व्यवस्था के कारण से? क्या कर्मों की व्यवस्था से? नहीं, वरन विश्वास की व्यवस्था के कारण।

28 इसलिये हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं, कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।

29 क्या परमेश्वर केवल यहूदियों हीं का है? क्या अन्यजातियों का नहीं? हाँ, अन्यजातियों का भी है।

30 क्योंकि एक ही परमेश्वर है, जो खतनावालों को विश्वास से और खतनारहितों को भी विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराएगा।

3:27

''तो घमण्ड करना कहाँ रहा''

यहाँ पर 'घमण्ड' षब्द यहूदियों के घमण्ड को प्रगट कर रहा है (रोमियों.2:17, 23)। सुसमाचार दीनता है। पतित मानवजाति (यहूदी और अन्यजाति) अपनी सहायता नहीं कर सकती (इफि.2:8–9)। देखिए विषेश षीर्शक : घमण्ड 2:17।

''उस की तो जगह ही नहीं है''

षब्द (ऐक–बाहर + क्लेइओ–बन्द) केवल यहाँ और गला.4:17 में प्रयोग किया गया है। इसका वास्तविक अर्थ है ''बन्द करना''।

''विश्वास की व्यवस्था के कारण''

यिर्म.31:31–34 में दी गई परमेष्वर की नई वाचा कर्म पर आधारित नहीं है बलकि परमेष्वर के चरित्र और वायदों के ऊपर विष्वास पर आधारित है। दोनों ही पुरानी और नई वाचा पतित मानवजाति को परमेष्वर के चरित्र (धार्मिकता) में बदलने के तात्पर्य से रची गईं। पुरानी बाहरी व्यवस्था द्वारा और नई वाचा नए हृदय द्वारा (यहे.36:26–27)। उद्देष्य एक ही है।

3:28

*''इसलिये हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं,
कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना
विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है''*

यह 3:21–26 का सारांष है और अध्याय 4–8 की पहले सूचना देता है (2तीमु.1:9; तीत.3:5)। उद्धार मसीह द्वारा पूरे किए गए कार्य का मुफ्त वरदान या तोहफा है (रोमियों.3:24; 5:15, 17; 6:23; इफि.2:8–9)। परिपक्वता ''सभी का मूल्य'' है, आज्ञाकारीता का जीवन, सेवा, और आराधना (गला.5:6; इफि.2:10; फिलि.2:12; देखिए नोट 1:5)।

3:29

हमेषा से परमेष्वर का उद्देष्य था अपने स्वरूप में रचे मनुश्य को छुड़ाना (उत्प.1:26; 5:1; 9:6)। उद्धार का वायदा (उत्प.3:15) सभी के लिए है। उन्होंने संसार को चुनने के लिए इब्राहीम को चुना (उत्प.12:31; निर्ग.19:4–6; यूह.3:16)।

ये आयत 3:9 के समान रोम कलीसिया में यहूदी अगुवों (जो षायद नीरो के सताव के कारण रोम से भाग गए थे और फलस्वरूप अन्यजातिय अगुवे उनकी जगह कलीसिया के अगुवे बन गए) और अन्यजातिय अगुवों के बीच मतभेद को प्रगट करता है। अध्याय 9–11 भी षायद इसी मतभेद को प्रगट करता है।

3:30

एन ए एस बी ''यदि अवष्य ही एक ही परमेश्वर हैं''

एन के जे वी ''क्योंकि एक ही परमेश्वर हैं''

एन आर एस वी ''क्योंकि परमेश्वर एक ही हैं''

टी इ वी ''परमेश्वर एक ही हैं''

जे बी ''क्योंकि सिर्फ एक ही परमेश्वर हैं''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। यदि अद्वैत्यवाद सच है तो, जो कि है (निर्ग.8:10; 9:14; व्यव.4:35, 39; 6:4; 1षमू.2:2; 2षमू7:22; 22:32; 1राजा.8:23; भ.सं.86:8, 10; यषा.43:11; 44:6, 8; 45:6–7, 14, 18, 21–22; 46:5, 9; यिर्म.2:11; 5:7; 10:6; 16:20), तो वह सभी लोगों के परमेष्वर हैं।

''जो खतनावालों को विश्वास से...
धर्मी ठहराऐंगे''

यूनानी षब्द ''धर्मी ठहराना'' उसी मूल से आया है जहाँ से ''धार्मिकता'' आया है। देखिए विषेश षीर्शक 1:17। परमेष्वर के सामने धर्मी होने का केवल एक ही रास्ता है (रोमियों.9:30–32)। उद्धार के लिए दो नियम हैं विष्वास और पष्चाताप (मरकुस.1:15; प्रेरित.3:16, 19; 21:21; देखिए नोट 1:5)। यह यहूदी और यूनानी दोनों के लिए सच है।

''विष्वास से...विष्वास द्वारा''

इन दो वाक्यांषों में निष्चय ही समानता है। भिन्नता का कोई इरादा नहीं है।

रोमियों.3:31

31 तो क्या हम व्यवस्था को विश्वास के द्वारा व्यर्थ ठहराते हैं? कदापि नहीं; वरन व्यवस्था को स्थिर करते हैं।

3:31

एन ए एस बी ''तो क्या हम व्यवस्था को विश्वास के द्वारा व्यर्थ ठहराते हैं''

एन के जे वी ''तो क्या हम व्यवस्था को विश्वास के द्वारा बेकार ठहराते हैं''

एन आर एस वी ''तो क्या हम इस विश्वास के द्वारा व्यवस्था को व्यर्थ ठहराते हैं''

टी इ वी ''तो क्या इसका अर्थ यह है कि हम इस विश्वास के द्वारा व्यवस्था को व्यर्थ ठहराते हैं''

जे बी ''तो क्या हमारा मतलब यह है कि विश्वास व्यवस्था को व्यर्थ ठहराता है''

नया नियम पुराने नियम को दो अलग अलग तरीकों से प्रस्तुत करता है।

1) यह प्रेरणा द्वारा रचा गया है, जो परमेष्वर द्वारा दिया गया प्रकाषन है और कभी टलेगा नहीं (मत्ती.5:17–19; रोमियों.7:12, 14, 16)।

2) पुराना हो गया है और समाप्त हो गया है (इब्रा.8:13)।

पौलुस ''व्यर्थ ठहराना'' षब्द का प्रयोग लगभग 25 बार करते हैं। इसका अनुवाद ''व्यर्थ ठहराने और खाली'', ''बलहीन बनाना'' और ''बिना प्रभाव का बनाना'' में किया गया है। देखिए विषेश षीर्शक 3:3। पौलुस के लिए व्यवस्था रखवाली करने वाली है (गला.3:24) और षिक्षक है (गला.3:24), पर अनन्त जीवन नहीं दे सकती (गला.2:16, 19; 3:19)। यह मनुश्य के ऊपर दण्ड का आधार है (गला.3:13; कुलु.2:14)। मूसा की व्यवस्था ने दोनों ही कार्य किए यह प्रकाषन भी था और नैतिक परीक्षा भी जैसे कि ''भले या बुरे के ज्ञान का वृक्ष'' था।

इसमें अनिष्चियता है कि पौलुस का ''व्यवस्था'' से क्या तात्पर्य है :

1) यहूदी धर्म की धार्मिक कार्य प्रणाली

2) अन्यजातिय विष्वासियों के लिए मसीह में उद्धार को पार करने का स्तर

3) एक स्तर जिस तक कोई मनुश्य पहुँच नहीं सका (रोमियों.1:18–3:20; 7:7–25; गला.3:1–29)।

''हम व्यवस्था को स्थिर करते हैं''

पीछले वाक्यांष के प्रकाष में इस वाक्यांष का क्या अर्थ है? यह षायद बताता है कि

1) व्यवस्था उद्धार के लिए मार्ग नहीं है परन्तु यह नैतिकता की निर्देषक है

2) यह ''विष्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने'' के सिद्धान्त की गवाही देता है, रोमियों.3:21; 4:3 (उत्प.15:6; भ.सं.32:1–2, 10–11)

3) व्यवस्था की कमज़ोरी (मानव का विद्रोह, रोमियों.7, गला.3) पूरी तरह से मसीह की मृत्यु से संतुश्ट हो गए, रोमियों.8:3–4

4) प्रकाषन का उद्‌देष्य मनुश्य में परमेष्वर के स्वरूप को पुनः स्थापित करना है

व्यवस्था, कानूनन धार्मिकता के बाद सच्ची धार्मिकता और मसीह की समानता की ओर निर्देष्न करती है। देखिए विषेश षीर्शक : मूसा की व्यवस्था के प्रति पौलुस का दृश्टिकोण 13:9।

चौंका देने वाली बात यह है कि व्यवस्था परमेष्वर की धार्मिकता ही स्थापना करने में असफल रही पर इसके व्यर्थ हो जाने से परमेष्वर के अनुग्रहरूपी वरदान पर विष्वास के द्वारा मसीही धर्मी और भक्तिपूर्ण जीवन जीते हैं। व्यवस्था का लक्ष्य पूरा हो गया, मनुश्य के कार्य द्वारा नहीं, परन्तु परमेष्वर के मसीह में अनुग्रहरूपी मुफ्त वरदान के द्वारा। ''स्थिर करना'' के लिए देखिए विषेश षीर्शक : खड़ा रहना 5:2।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) अपने ही षब्दों में रोमियों.3:21–31 की रूपरेखा तैयार कीजिए।

2) परमेष्वर ने क्यों पुराने समय मनुश्य के पाप को अनदेखा कर दिया (3:25)?

3) पुराने नियम पर विष्वास करने वाले कैसे पाप से बचाए गए (3:25)?

4) यीषु पर विष्वास कैसे व्यवस्था को साबित करता है (3:31)?

रोमियों – 4

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
इब्राहीम का उदाहरण	इब्राहीम विष्वास द्वारा धर्मी ठहराए गए	इब्राहीम विष्वास द्वारा धर्मी ठहराए गए	इब्राहीम का उदाहरण	इब्राहीम विष्वास द्वारा धर्मी ठहराए गए
4:1–12	4:1–4	4:1–8	4:1–8	4:1–8
	दाऊद भी धन्य कहते हैं			खतने से पहले धर्मी ठहराए गए
	4:5–8			
	इब्राहीम खतने से पहले धर्मी ठहराए गए			
	4:9–12	4:9–12	4:9–12	4:9–12
प्रतिज्ञा विष्वास द्वारा महसूस की गई	प्रतिज्ञा विष्वास द्वारा दी गई	इब्राहीम की सच्ची संतान	परमेष्वर की प्रतिज्ञा ग्रहण की गई	व्यवस्था की आज्ञाकारीता के कारण धर्मी नहीं ठहराए गए
4:13–25	4:13–25	4:13–15	4:13–15	4:13–17
		4:16–25	4:16–25	इब्राहिम का विष्वास मसीही विष्वास के लिए आदर्ष
				4:18–25

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का ह्रदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद
2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद
4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि

क. पौलुस का चौंका देने वाला धर्मषास्त्रीय विचार जो 3:21—31 साबित करता है कि पतित मानवजाति परमेष्वर के सामने मुफ्त वरदान द्वारा धर्मी ठहराई गई, पूरी तरह से मूसा की व्यवस्था से अलग। पौलुस पुराने नियम से इब्राहीम और दाऊद (रोमियों. 4:6—8) दोनों के उदाहरण देने के द्वारा अब ये साबित करने की कोषिष कर रहें हैं कि कोई बदलाव नहीं है (रोमियों.3:21[ख])।

ख. रोमियों.4 मूसा की व्यवस्था से उदाहरण प्रस्तुत करता है, उत्प.—व्यव, विष्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने के सिद्धान्त के लिए। ये 3:21—31 में सारांष रूप में प्रस्तुत किया गया है। यहूदियों के लिए मूसा के लेखों में से लिए गए आयतों का धर्मषास्त्रीय तौर पर बहुत मूल्य था विषेश करके जब वह इब्राहीम से सम्बन्धित हों, क्योंकि उन्हें इस्राएल राश्ट्र के पिता के रूप में देखा जाता था। दाऊद को आने वाले मसीह के रूपक के तौर पर देखा जाता था (2षमू.7)। यहूदियों और विष्वासी अन्यजातियों के बीच मतभेद इस चर्चा की परिस्थिति थी। यह सम्भव है कि यहूदी मसीही अगुवे नीरो (जिसने सभी यहूदी रस्मों को समाप्त कर दिया) द्वारा रोम छोड़ने पर मजबूर किए गए। इस समय उनके पद अन्यजातिय मसीही अगुवों को दे दिए गए। पहले अगुवों के समूह के लौट आने के कारण यह समस्या सामने आ गई कि अगुवों के पद पर कौन होगा।

ग. रोमियों.4 बताता है कि पतित मानवजाति हमेषा से अपने अन्दर की आत्मिक ज्योति के सम्बन्ध में परमेष्वर पर विष्वास और पष्चाताप द्वारा उद्धार पाती है (उत्प.15:6; रोमियों.4:3)। कई बातों में नई वाचा (सुसमाचार) पुरानी वाचा से मौलीक रूप से भिन्न नहीं है (यिर्म.31:31—34; यहे.36:22—38)।

घ. यह विष्वास द्वारा धार्मिकता का मार्ग सभी के लिए खुला है, केवल पितरों या इस्राएल के नागरिकों के लिए नहीं। पौलुस यहाँ पर इब्राहीम का प्रयोग करके अपने धर्मषास्त्रीय तर्क को बढ़ा रहें हैं जो उन्होंने गला.3 में षुरू किया था।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.4:1—8

1 सो हम क्या कहें, कि हमारे शारीरिक पिता इब्राहीम को क्या प्राप्त हुआ?

2 क्योंकि यदि इब्राहीम कामों से धर्मी ठहराया जाता, तो उसे घमण्ड करने की जगह होती, परन्तु परमेश्वर के निकट नहीं।

3 पवित्र षास्त्र क्या कहता है? यह कि इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया।

4 काम करनेवाले की मजदूरी देना दान नहीं, परन्तु हक्क समझा जाता है।

5 परन्तु जो काम नहीं करता वरन भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना जाता है।

6 जिसे परमेश्वर बिना कर्मों के धर्मी ठहराता है, उसे दाऊद भी धन्य कहता है।

7 कि धन्य वे हैं, जिन के अधर्म क्षमा हुए, और जिन के पाप ढाँपे गए।

8 धन्य है वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न ठहराए।

4:1

''सो हम क्या कहें,
कि हमारे शारीरिक पिता इब्राहीम''

इब्राहीम नाम का अर्थ है ''जातियों के पिता'' (रोमियों.4:16–18)। उनके वास्तविक नाम, अब्राम का अर्थ था ''ऊँचा उठाए गए पिता''।

यहाँ पर तीव्र भाशण साहित्य का प्रयोग किया गया है (रोमियों.4:1; 6:1; 7:7; 8:31; 9:14, 30)। इब्राहिम (उत्प.11:27–25:11) को उदाहरण के रूप में प्रयोग करने निम्नलिखित कारण हैं (1) क्योंकि यहूदी अपने वंष की षुरूवात को बहुत महत्व देते थे (मत्ती. 3:9; यूह.8:33, 37, 39); (2) क्योंकि उनका व्यक्तिगत विष्वास वाचा रस्म का उदाहरण था (उत्प.15:6); (3) उनके विष्वास ने मूसा को व्यवस्था देने के लिए अगुवाई की (निर्ग.19–20) और (4) झुठे षिक्षकों द्वारा उन्हें प्रयोग किया गया था।

''देह या प्राण''

देखिए विषेश षीर्शक 1:3।

4:2

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है (ए. टी. रॉबर्टसन, वर्ड पिक्चरस, भाग.4, पृश्ठ.350) जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है का अच्छा उदाहरण है जो कि वास्तव में झुठ है पर धर्मषास्त्रीय बिन्दु बनाने में सहायक है (रोमियों.4:14)।

जॉसफ ए. फीटज़मेयर, द एन्कर बाइबल, भाग.33, पृश्ठ.372, बताता है कि ये मिश्रित षर्त वाक्य है जिसमें पहला भाग दूसरे दर्जे का (तथ्य के विपरीत) और दूसरा भाग पहले दर्जे का हो।

''कार्यों द्वारा धर्मी ठहराया जाना''

यह मसीह पर विष्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने के विपरीत है। मनुश्य के कार्यों द्वारा उद्धार पाना (4:4) यदि सम्भव हो तो मसीह की सेवा बेकार ही में थी। पुराना नियम स्पश्ट रीति से परमेष्वर के वाचा के कार्य करने में मनुश्य की असमर्थता को प्रगट करता है। इसलिए पुराना नियम श्राप बन गया, मृत्यु दण्ड की आज्ञा (गला.3:13; कुलु.2:14)।

यहूदी ज्ञानी जानते हैं कि इब्राहीम मूसा की व्यवस्था आने से पहले जीवित थे पर वे विष्वास करते हैं कि उन्होंनें व्यवस्था में भाग लिया और इसका पालन किया (एकलिसीआसटीकस. 44:20 और जुबीलीस.6:19; 15:1–2)।

''तो उन्हें घमण्ड करने की जगह होती''

यह केन्द्रीय विशय अक्सर पौलुस के लेखों में प्रगट होता है। फरीसी के रूप में उनकी पृश्ठभूमि उन्हें इस समस्या के विशय में भावुक कर देती है (रोमियों.3:27; 1कुरि.1:29; इफि.2:8–9)। देखिए विषेश षीर्शक : घमण्ड 2:17।

4:3

एन ए एस बी, एन के जे वी, एन आर एस वी, टी इ वी ''इब्राहीम ने परमेष्वर पर विष्वास किया''

जे बी ''इब्राहीम ने अपना विष्वास परमेष्वर पर रखा''

यह उत्प.15:6 से लिया गया आयत है। इसी अध्याय में पौलुस इसका प्रयोग तीन बार करते हैं (रोमियों.4:3, 9, 22), जो पौलुस की उद्धार के बारे में धर्मषास्त्रीय समझ में इसके महत्व को बताता है। पुराने नियम में ''विष्वास'' षब्द का अर्थ है वफ़ादारी, भरोसेमन्द जो कि परमेष्वर के चरित्र से सम्बन्धित था न कि मनुश्य के। यह इब्रानी षब्द (एमुन, एमुनाह) से आया है जिसका अर्थ है ''निष्चित होना या दृढ़ होना''। बचाने वाला विष्वास मन से सम्बन्धित है (सत्य का समूह), स्वेच्छा से किया गया समर्पण (निर्णय), नैतिक जीवन (जीवनषैली), और प्राथमिक सम्बन्ध (व्यक्ति का स्वागत करना)।

इस पर ज़ोर देना अनिवार्य है कि इब्राहीम का विष्वास भविश्य में आने वाले मसीह पर नहीं था पर परमेष्वर के वायदे पर था कि वह उन्हें एक पुत्र होगा और वंष होगा (उत्प.12:2; 15:2–5; 17:4–8; 18:14)। इब्राहीम ने परमेष्वर पर भरोसा रखकर इस वायदे का प्रतिउत्तर दिया। उनमें इस वायदे के प्रति षक और समस्या थी, तथ्य के रूप में इसे पूरा होने में 13 साल लगे। उनका अधूरा विष्वास भी परमेष्वर द्वारा ग्रहण किया गया। परमेष्वर सामान्य लोगों के साथ कार्य करने के लिए तैयार जो उन्हें और उनके वायदों का प्रतिउत्तर विष्वास से देते है, अगर उनका विष्वास राई के दाने के बराबर हो तो भी (मत्ती.17:20)।

4:3, 4, 5, 6, 8, 9, 10, 22, 23, 24

एन ए एस बी, एन आर एस वी ''यह उनके लिए...गिना गया''

एन के जे वी ''यह उनके लिए...गिना गया''

टी इ वी ''परमेष्वर ने उन्हें ग्रहण किया''

जे बी ''यह विष्वास गिना गया''

''यह'' षब्द इब्राहीम के परमेष्वर के वायदे के प्रति विष्वास को प्रगट करता है।

''गिना गया'' *(लोगिज़ोमाय)* व्यवसायिक षब्द है जिसका अर्थ है ''किसी के खाते में जामा किया'' (सैप्टूआजैन्ट, उत्पत्र15:6; लैव्य.7:18; 17:4)। यही सत्य बहुत ही सुन्दर तरीके से 2कुरि.5:21 और गला.3:6 में व्यक्त किया गया है। यह सम्भव है कि पौलुस ने उत्प.15:6 और भ.सं.32:2 को मिला दिया हो क्योंकि इन दोनो में ही व्यसायिक षब्द ''गिना गया'' का प्रयोग किया गया है। यह मूलपाठों को मिलाने का बाइबल व्याख्या का सिद्धान्त है जो कि रब्बीयों द्वारा प्रयोग किया जाता था।

पुराना नियम मे सैप्टूआजैन्ट में यह षब्द बैंक का लेखा रखने का षब्द नहीं है पर सम्भवतः दानि.7:10; 12:1 का ''पुस्तकों'' से सम्बन्धित षब्द है। यह दो रूपक पुस्तकें (परमेष्वर की स्मरण षक्ति) हैं

1) कार्यों या हिसाब की पुस्तक (भ.सं.56:8; 139:16; यषा.65:6; मला.3:16; प्रका.20:12–13)

2) जीवन की पुस्तक (निर्ग.32:32; भ.सं.69:28; यषा.4:3; दानि.12:1; लूका.10:20; फिलि.4:3; इब्रा.12:23; प्रका.3:5; 13:8; 17:8; 20:15; 21:27)।

जिस पुस्तक में इब्राहिम के विष्वास को धार्मिकता गिना गया वह ''जीवन की पुस्तक'' है।

4:3, 5, 6, 9, 10, 11, 13, 22, 25

''जैसे धार्मिकता''

यह पुराने नियम के ''नाप के बेन्त'' (षडाक) को प्रस्तुत करता है। यह रचने के प्रयोग में लाया जाने वाला रूपक परमेष्वर के चरित्र के लिए प्रयोग किया गया है। परमेष्वर सीधे हैं और सभी मनुश्य टेड़े हैं। नए नियम में इसका प्रयोग कानूनी स्तर के लिए किया गया है सम्भवतः भक्तिमय जीवनषैली की ओर। हरेक मसीही के लिए परमेष्वर का उद्‌देष्य उनका अपना चरित्र है और दूसरे षब्दों में मसीहसमानता (रोमियों.8:28–29; गला.4:19)। देखिए विषेश षीर्शक 1:17।

4:5

विष्वास का भाव यह है कि परमेष्वर को प्रतिउत्तर देना जो स्वयं को प्रगट करते हैं, बिना अपने व्यक्तिगत प्रयत्न के। इसका यह अर्थ नहीं कि एक बार हमने उद्धार पा लिया और हमारे अन्दर पवित्र आत्मा ने निवास किया तो हमारी जीवनषैली महत्वपूर्ण

नहीं है। मसीहत का उद्देष्य केवल मरने के बाद स्वर्ग नहीं है पर अभी मसीहसमानता है। हम अपने कार्यों द्वारा नहीं बचाए गए और न ही परमेष्वर के सामने धर्मी ठहराए जाते हैं परन्तु भले कामों के लिए छुड़ाए गए हैं (इफि.2:8–9, 10; याकूब और 1यूहन्ना)। बदला हुआ या बदलता हुआ जीवन इस बात का सबूत है कि व्यक्ति उद्धार पाया हुआ है। धर्मी ठहराए जाने के द्वारा षुद्धिकरण का जन्म होना चाहिए।

''विष्वास करना''

देखिए नीचे दिया गया षीर्शक।

विषेश षीर्शक : विष्वास करना या विष्वास (पीसटेस, पीसटेउओ, पीसटोस)

क. यह बाइबल में बहुत ही महत्वपूर्ण षब्द है (इब्रा.11:1, 6)। यह यीषु के षुरूवाती प्रचार का विशय था (मरकुस.1:15)। वाचा की दो मुख्य माँगें हैं : पष्चाताप और विष्वास (रोमियों.1:15; प्रेरित.3:16, 19; 20:21)।

ख. इसका षब्द साधन

1) पुराने नियम में ''विष्वास'' षब्द का अर्थ था वफ़ादारी, भरोसेमन्द जो परमेष्वर के स्वभाव को प्रगट करता था हमारे नहीं।

2) यह इब्रानी षब्द (एमुन, एमुनाह) से आया है जिसका अर्थ है ''निष्चित होना या दृढ़ होना''। बचाने वाला विष्वास मन से सम्बन्धित है (सत्य का समूह), स्वेच्छा से किया गया समर्पण (निर्णय), नैतिक जीवन (जीवनषैली), और प्राथमिक सम्बन्ध (व्यक्ति का स्वागत करना) और स्वच्छा समर्पण (चुनाव) उस व्यक्ति के प्रति।

ग. इसका पुराने नियम में प्रयोग

इस पर ज़ोर देना अनिवार्य है कि इब्राहीम का विष्वास भविश्य में आने वाले मसीहा पर नहीं था पर परमेष्वर के वायदे पर था कि वह उन्हें एक पुत्र होगा और वंष होगा (उत्प.12:2; 15:2–5; 17:4–8; 18:14)। इब्राहीम ने परमेष्वर पर भरोसा रखकर इस वायदे का प्रतिउत्तर दिया। उनमें इस वायदे के प्रति षक और समस्या थी, तथ्य के रूप में इसे पूरा होने में 13 साल लगे। उनका अधूरा विष्वास भी परमेष्वर द्वारा ग्रहण किया गया। परमेष्वर सामान्य लोगों के साथ कार्य करने के लिए तैयार जो उन्हें और उनके वायदों का प्रतिउत्तर विष्वास से देते है, अगर उनका विष्वास राई के दाने के बराबर हो तो भी (मत्ती.17:20)।

घ. इसका नए नियम में प्रयोग

''विष्वास किया'' षब्द यूनानी 'पीसटेउओ' से आया है जिसका अर्थ है ''विष्वास'' और ''भरोसा''। यूह.2:23–25 में यीषु नासरी पर मसीहा के रूप में भीड़ के समर्पण की वास्तविकता संदेह है। बाकी उदाहरण जहाँ पर ''विष्वास'' षब्द को श्रेश्ठता से प्रयोग किया गया है वो हैं यूह.8:31–59 और प्रेरित.8:13, 18–24। सच्चा बाइबलीय विष्वास षुरूवाती प्रतिउत्तर से कहीं बढ़कर है। इसके पीछे षिश्यता की प्रक्रिया आनी चाहिए (मत्ती.13:20–22, 31–32)।

ङ. विभक्तियों के साथ इसका प्रयोग

1) एइस अर्थात ''पर''। यह अद्वितिय रचना विष्वासी के यीषु पर विष्वास और भरोसे पर ज़ोर देता है

(क) उनके नाम पर (यूह.1:12; 2:23; 3:18; 1यूह.5:13)

(ख) उन पर (यूह.2:11; 3:15, 18; 4:39; 6:40; 7:5, 31, 39, 48; 8:30; 9:36; 10:42; 11:45, 48; 17:37, 42; मत्ती.18:6; प्रेरित. 10:43; फिलि.1:29; 1पत.1:8)

(ग) मुझ पर (यूह.6:35; 7:38; 11:25, 26; 12:44, 46; 14:1, 12; 16:9; 17:20)

(घ) पुत्र पर (यूह.3:36; 9:35; 1यूह.5:10)

(ङ) यीशु पर (यूह.12:11; प्रेरित.19:4; गला.2:16)

(च) ज्योति पर (यूह.12:36)

(छ) परमेष्वर पर (यूह.14:1)

2) एन अर्थात ''में'' जैसे कि यूह.3:15; मरकुस.1:15; प्रेरित.5:14

3) एपी अर्थात ''में'' या ''ऊपर'' जैसे मत्ती.27:42; प्रेरित.9:42; 11:17; 16:31; 22:19; रोमियों.4:5, 24; 9:33; 10:11; 1तीमु.1:16; 1पत.2:6।

4) बिना विभक्ति के जैसे गला.3:6; प्रेरित.18:8; 27:25; 1यूह.3:23; 5:10

5) होटी, अर्थात ''विष्वास करो कि'' बताता है कि क्या विष्वास करना है।

(क) यीशु परमेश्वर के पवित्र जन हैं (यूह.6:69)

(ख) यीशु ही ''मैं हूँ'' हैं (यूह.8:24)

(ग) पिता यीशु में हैं, और वह पिता में हैं (यूह.10:38)

(घ) यीशु ही मसीह हैं (यूह.11:27; 20:31)

(ङ) यीशु परमेष्वर के पुत्र हैं (यूह.11:27; 20:31)

(च) यीशु पिता द्वारा भेजे गए (यूह.11:42; 17:8, 21)

(छ) यीशु पिता में हैं (यूह.14:10–11)

(ज) यीशु पिता की ओर से आए हैं (यूह.16:27ख 30)

(झ) यीशु अपनी पहचान पिता के वाचा नाम ''मैं हूँ'' के साथ बताते हैं (यूह.8:24; 13:19)

(ण) हम उनके साथ जीएंगे (रोमियों.6:8)

(त) यीशु मर गए और फिर से जीवित हो गए (1थिस्स.4:14)

एन ए एस बी, एन के जे वी ''उनका विष्वास''

एन आर एस वी ''ऐसा विष्वास''

टी इ वी, एन जे बी ''यह विष्वास''

इब्राहीम का विष्वास उनके लिए धार्मिकता गिना गया। यह इब्राहीम के कार्य पर नहीं पर उनके स्वभाव पर आधारित था।

षब्द ''गिना गया'' पीनिहास के लिए सैप्टूआजैन्ट के भ.सं.106:31 में प्रयोग किया गया है जो गिन.25:11:13 की ओर संकेत करता है। यहाँ पर यह पीनिहास के कार्य पर आधारित था पर उत्प.15:6 में इब्राहीम के साथ ऐसा नहीं था।

''वरन भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले
पर विश्वास करता है,
उसका विश्वास उसके लिये
धार्मिकता गिना जाता है''

यह 4:3 में इब्राहीम के सदृष्य है (उत्प.15:6)। धार्मिकता परमेष्वर का वरदान है न कि मानव कार्य का प्रतिफल। देखिए विषेश षीर्शक 1:17।

''दाऊद''

जैसे इब्राहीम सिद्ध मनुश्य नहीं थे फिर भी अपने विष्वास के कारण परमेष्वर के सामने धर्मी थे, वैसे ही पापी दाऊद भी (भ.सं.32 और 51)। परमेष्वर उन पतित मनुश्यों (उत्प.3) से प्रेम करते और उनके साथ कार्य करते हैं जो उन पर विष्वास करते हैं (पुराना नियम) और साथ ही उनके पुत्र पर भी (नया नियम)।

4:6

''बिना कर्मों के''

पौलुस पुराने नियम का आयत (भ.सं.32:1—2) लिखने से पहले इस वाक्यांष पर ज़ोर देते हैं।

4:7—8

यह भ.सं.32:1—2 का लेख है। 4:7 के दोनो कर्म संज्ञा ''जिनके अधर्म क्षमा हुए'' और ''जिनके पाप ढाँपे गए'' भूत कालिक क्रिया संज्ञा है। परमेष्वर इसके कारक हैं। आयत 8 में में दुगनी नकारात्क संज्ञा है ''किसी भी परिस्थिति में नहीं'' थोपी गई, गिनी गई, लिखी गई। इस लेख की तीनों संज्ञाऐं पाप के प्रति घृणा को प्रगट करती हैं।

4:7

''जिनके पाप ढाँपे गए''

यह भ.सं 32:1 का लेख है। ''ढाँपने'' का विचार इस्राएल के धार्मिक विष्वास के बलिदान भाव का केन्द्रीय भाग था। परमेष्वर पाप को ढाँपने के द्वारा उसे अपनी नज़रों से दूर कर देते हैं (ब्राऊन, ड्राइवर, ब्रीगस, पृश्ठ.491)। यही विचार दूसरे इब्रानी षब्द (काफर) के द्वारा प्रायष्चित के दिन में (ढाँपने) के लिए प्रयोग किया जाता है जहाँ ''प्रायष्चित ढ़कने'' के ऊपरु छिड़का लहु इस्राएल के पापों को ढाँप देता है। इससे सम्बन्धित बाइबलीय रूपक है किसी के पाप मिटा देना।

4:8

''धन्य है वह मनुष्य जिसे
परमेश्वर पापी न ठहराए''

यह भ.सं. 32:2 से लिया गया वचन है। यह षब्द ''हिसाब करना'',''थोपने'' या ''दूसरे के खाते में जमा कराने'' का विपरीतार्थ में प्रयोग है। परमेष्वर विष्वासी के आत्मिक खाते में पाप जमा नहीं करते पर धार्मिकता जमा करते हैं। यह परमेष्वर के दयावान चरित्र, वरदान, और घोशणा पर आधारित है न कि मनुश्य की योग्यता, उपलब्धि और मूल्य पर।

रोमियों.4:9—12

9 तो यह धन्य कहना, क्या खतनावालों ही के लिये है, या खतनारहितों के लिये भी? हम यह कहते हैं, कि इब्राहीम के लिये उसका विश्वास धार्मिकता गिना गया।

10 तो यह धन्य कहना, क्या खतनावालों ही के लिये है, या खतनारहितों के लिये भी? हम यह कहते हैं, कि इब्राहीम के लिये

उसका विश्वास धार्मिकता गिना गया।

11 और उस ने खतने का चिन्ह पाया, कि उस विश्वास की धार्मिकता पर छाप हो जाए, जो उस ने बिना खतने की दशा में रखा थाः जिस से वह उन सब का पिता ठहरे, जो बिना खतने की दशा में विश्वास करते हैं, और कि वे भी धर्मी ठहरें।

12 और उन खतना किए हुओं का पिता हो, जो न केवल खतना किए हुए हैं, परन्तु हमारे पिता इब्राहीम के उस विश्वास की लीक पर भी चलते हैं, जो उस ने बिन खतने की दशा में किया था।

4:9—12

सम्भव है कि पौलुस ने खतने की इस चर्चा को इसलिए षुरू किया क्योंकि यहूदी उद्धार के लिए खतने की आवष्यक पर अधिक जोर दे रहे थे (गलातियों की पत्री और यरूषलेम सभा प्रेरित.15 में)। पौलुस ने रब्बीयों के अनुवाद ज्ञान की षिक्षा पाई थी इसलिए वह जानते थे कि उत्प.15:5 और भ.सं.32:2 में एक ही क्रिया षब्द प्रयोग किया गया है (इब्रानी और यूनानी दोनों में)। इसने धर्मरषास्त्रीय उद्देष्य के लिए इन दोनों मूलपाठों को जोड़ दिया होगा।

4:9

आयत 9 का प्रष्न 'नहीं' में उत्तर चाहता है। परमेष्वर सभी लोगों को यहाँ तक कि अन्यजातियों को भी विष्वास द्वारा ग्रहण करते हैं। उत्प.15:6 फिर से लिखा गया है। इब्राहीम, इस्राएलियों के पिता खतने से पहले धर्मी गिने गए।

4:10—11

''उन्होंने खतने का चिन्ह पाया,
कि उस विश्वास की
धार्मिकता पर छाप हो जाए''

इब्राहीम के बुलाए जाने और धर्मी ठहराए जाने के बाद परमेष्वर ने वाचा के निषान के रूप में खतने का चिन्ह दिया (उत्प. 17:9—14)। पलिष्तियों को छोड़ इस्राएल के पड़ोस के सभी राश्ट्र खतना किए हुए थे। उनके लिए खतना बालक से पुरूशार्थ में प्रवेष करने की रस्म थी। यहूदियों में यह धार्मिक वाचा के सदस्य पर धार्मिक चिन्ह था जो पुरूशों में उनके जन्म के 8वें दिन की जाती थी।

इस आयत में ''चिन्ह'' और ''छाप'' का एक ही अर्थ है जो इब्राहीम के विष्वास को प्रगट करता है। खतना उस व्यक्ति के लिए एक षारीरिक चिन्ह था जो परमेष्वर पर अपने विष्वास को कार्यषील करता है। ''विष्वास की धार्मिकता'' वाक्यांष 13 आयत में भी प्रयोग किया गया है। परमेष्वर के सामने धर्मी गिने जाने की कुन्जी विष्वास है खतना नहीं।

4:11

''जिस से वह उन सब के पिता ठहरें,
जो बिना खतने की दशा में
विश्वास करते हैं''

रोमियों की पत्री गलातियों की पत्री के बाद लिखी गई है। पौलुस यहूदी लोगों के भरोसे के प्रति भावुक थे (1) उनका जातिय वंष (मत्ती.3:9; यूह.8:33, 37, 39) और (2) मूसा की व्यवस्था के उस समय के अनुवाद पर यहूदियों के कार्य (जुबानी या पुर्वजों का रीति रिवाज जिसे बाद में लिखा गया जो तालमूद के नाम से जाना जाता है)। इसलिए उन्होंने इब्राहीम को एक आदर्ष के रूप में प्रस्तुत किया उन लोगों के लिए जो विष्वास करते हैं (खतना रहित विष्वास करने वालों के पिता ; गला.3:7, 9)।

''छाप''

देखिए नीचे दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : छाप

परमेष्वर की छाप को पुनः 9:4; 14:1 और सम्भवतः 22:4 में दोहराया गया है। षैतान की छाप का प्रयोग 13:16; 14:9 और 20:4 में किया गया है। छाप का प्रयोग प्राचीन समय में कुछ बातों को प्रगट करने के लिए किया गया है

1) सत्य (यूह.3:33)

2) प्रभुता (यूह.6:27; 2तीमु.2:19; प्रका.7:2–3)

3) सुरक्षा (उत्प.4:15; मत्ती.27:66; रोमियों.15:28; 2कुरि.1:22; इफि.1:13; 4:30)

4) यह परमेष्वर के वरदान के वायदे की सच्चाई का चिन्ह हो सकता है (रोमियों.4:11; 1कुरि.9:2)

इस छाप का उद्देष्य यह है कि परमेष्वर के लोगों को पहचाना जा सके और परमेष्वर का क्रोध उन्हें प्रभावित न कर सके। षैतान की छाप उसके लोगों की पहचान है जो परमेष्वर के क्रोध के पात्र हैं। प्रकाषितवाक्य में ''सताव'' *(थैलीपसीस)* षब्द का प्रयोग अविष्वासियों द्वारा विष्वासियों के सताव के लिए किया गया है और क्रोध *(ओरजिओर थुमोस)* षब्द का प्रयोग परमेष्वर के न्याय के लिए किया गया है जो कि अविष्वासियों पर होगा ताकि वे परमेष्वर के पास आ सकें। यह न्याय का सकारात्मक उद्देष्य व्यव.27–28 की आषीश और श्राप की वाचा में देखा जा सकता है।

वाक्यांष ''जीवित परमेष्वर'' यहोवा षब्द का दूसरा प्रयोग है (निर्ग.3:14; भ.सं.42:4; 84:2; मत्ती.16:16)। यही षब्द बाइबल के षपथ में भी पाया जाता है, ''जैसे कि परमेष्वर जीवित हैं''

4:12

''लीक पर भी चलते हैं''

यह सैनिक षब्द है (स्टोइचिओ) जो सैनिकों की एक पंक्ति में चलने के लिए प्रयोग किया जाता है (प्रेरित.21:24; गला.5:25; 6:16; फिलि.3:16)। यहाँ पर पौलुस विष्वास करने वाले यहूदियों (''खतने के पिता'') से बातें कर रहे हैं। इब्राहीम उन तमाम लोगों के पिता हैं जो परमेष्वर और उनके वायदों पर विष्वास को कार्य में लाते हैं।

दो विशय भाग के कारण यह सम्भव है कि (''लीक पर भी चलते हैं'') विष्वासमय जीवनषैली को प्रस्तुत करता है न कि केवल एक बार के विष्वास को। उद्धार एक आगे बढ़ने वाली प्रक्रिया है न कि सिर्फ एक निर्णय या संकल्प का एक समय।

रोमियों.4:13–15

13 क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा, न इब्राहीम को, न उसके वंश को व्यवस्था के द्वारा दी गई थी, परन्तु विश्वास की धार्मिकता के द्वारा मिली।

14 क्योंकि यदि व्यवस्थावाले वारिस हैं, तो विश्वास व्यर्थ और प्रतिज्ञा निष्फल ठहरी।

15 व्यवस्था तो क्रोध उपजाती है और जहां व्यवस्था नहीं वहां उसका टालना भी नहीं।

<u>*4:13*</u>

''इब्राहीम को, उसके वंश को''
परमेष्वर ने इब्राहीम के साथ ''देष और वंष'' का वायदा किया था (उत्प.12:1—3; 15:1—6; 17:1—8; 22:17—18)। पुराना नियम देष (पलिस्तिन) पर केन्द्रीत है, पर नया नियम वंष पर केन्द्रीत है (यीषु जो मसीह हैं, गला.3:16, 19), पर यहाँ ''वंष'' विष्वासी लोगों को सम्बोधित करता है (गला.3:29)। परमेष्वर के वायदे विष्वासियों के विष्वास का आधार हैं (गला.3:14, 17, 18, 19, 21ख 22ख 29; 4:28; इब्रा.5:13—18)।

''कि वह जगत के वारिस होंगे''
यह विष्वव्यापि कथन उत्प.12:3; 18:18; 22:18 और निर्ग.19:5—6 के प्रकाष में बहुत ही महत्वपूर्ण है। परमेष्वर ने इब्राहीम को सारी मानवजाति को बुलाने के लिए बुलाया (उत्प.1:26—27; 3:15)। इब्राहीम और उनका वंष सारे संसार के लिए प्रकाषन का एक साधन थे। यह दूसरा तरीका है परमेष्वर के राज्य को पृथ्वी पर प्रगट करने का (मत्ती.6:10)।

''व्यवस्था के द्वारा नहीं''
मूसा की व्यवस्था अभी तक प्रगट नहीं हुई है। इसके महत्व को व्यक्त करने के लिए यह वाक्यांष पहली बार यूनानी में लिखा गया। यह बहुत ही महत्वपूर्ण बिन्दु है जो मनुश्य की कोषिष और परमेष्वर के अनुग्रह के बीच अन्तर पर ज़ोर देता है (रोमियों. 3:21—31)। अनुग्रह ने उद्धार के लिए व्यवस्था के उपयोग को अप्रचलित कर दिया है (इब्रा.8:7, 13)। देखिए विषेश षीर्शक : मूसा की व्यवस्था के प्रति पौलुस का दृश्टिकोण 13:9।

<u>*4:14*</u>

''यदि''
यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। पौलुस इस षब्द का प्रयोग करके अपने तर्क की षुरूवात करते हैं। यह आलंकारिक ज़ोर के लिए प्रयोग किए जाने वाले पहले दर्जे के षर्त वाक्य का उत्तम उदाहरण है। वह ऐसा विष्वास नहीं करते थे कि यह वाक्य सत्य है पर यहाँ पर इसे इसलिए लिखा कि इसके स्पश्ट भ्रम को बता सकें (रोमियों.4:2)।

जातिय यहूदी खतने के प्रगट चिन्ह के कारण संसार के वारिस हैं, पर जो परमेष्वर की इच्छा और वचन पर विष्वास करते हैं और उसके अनुसार कार्य करते हैं वही असली वारिस होंगे। षारीरिक खतना नहीं परन्तु विष्वास ही सच्चा चिन्ह है (रोमियों. 2:28—29)।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''तो विश्वास व्यर्थ ठहरा''

एन आर एस वी ''विश्वास व्यर्थ है''

टी इ वी ''मनुश्य के विष्वास का कोई अर्थ नहीं''

जे बी ''विष्वास अर्थहीन हो जाता है''

केनोओ के प्रभावषाली यूनानी क्रिया षब्द का अर्थ है ''खाली करना'', ''ऐसा प्रगट करना कि यह बिना नींव का है'' और ''झूठा साबित करना'' (1कुरि.1:17)। यह षब्द पौलुस के द्वारा 1कुरि.1:17; 9:15; 2कुरि.9:3 और फिलि.2:7 में भी प्रयोग किया गया है।

एन ए एस बी ''प्रतिज्ञा निष्फल ठहरी''

एन के जे वी ''प्रतिज्ञा को बिना प्रभाव के बना दिया''

एन आर एस वी ''प्रतिज्ञा व्यर्थ है''

टी इ वी ''परमेष्वर की प्रतिज्ञा मूल्यहीन हो गई''

जे बी ''प्रतिज्ञा का मूल्य कुछ नहीं''

यह भी प्रभावषाली यूनानी क्रिया षब्द है जिसका अर्थ है ''खाली कर देना'', ''अन्त तक लाना'' और ''नश्ट कर देना''। यह षब्द पौलुस द्वारा रोमियों.3:3, 31; 6:6; 7:2, 6; 1कुरि.2:6; 13:8; 15:24, 26; 2कुरि.3:7; गला.5:4; 2थिस्स.2:8। इस आयत में एक स्पश्ट समानता है। उद्धार के लिए दो रास्ते नहीं हैं। अनुग्रह की नई वाचा ने कर्म की पुरानी वाचा को व्यर्थ और खाली बना दिया है। देखिए विषेश षीर्शक : अर्थहीन और खाली (कटारगेयो) 3:3।

4:15

''व्यवस्था...व्यवस्था''

इस षब्द के पहले प्रयोग में यूनानी विभक्ति का प्रयोग किया गया है परन्तु दूसरे प्रयोग के साथ नहीं। यह बहुत ही खतरनाक है कि यूनानी विभक्ति की उपस्थिति और अनुपस्थिति की ओर ध्यान खीचा जाए पर इस संदर्भ में पौलुस द्वारा इस षब्द के दो अर्थों में प्रयोग को प्रस्तुत करने के लिए यह आवष्यक है (1) मूसा की व्यवस्था इसके मौखिक रीति रिवाज़ के साथ जिस पर यहूदी लोग उद्धार के लिए विष्वास करते हैं। (2) कानून का सामान्य विचार। यह फैला हुआ विचार स्वधर्मी अन्यजातियों को षामिल करता है जो इस सांस्कृति नैतिक नियम और धार्मिक विधियों और अपने ही कर्मों द्वारा परमेष्वर द्वारा स्वयं को ग्रहण किया हुआ मानते हैं।

''व्यवस्था तो क्रोध उपजाती है''

यह चौंका देने वाला वाक्य है (रोमियों.3:20; गला.3:10—13; कुलु.2:14)। मूसा की व्यवस्था का उद्देष्य कभी भी उद्धार दिलाना नहीं था (गला.3:23—29)। इस सच को किसी भी यहूदी के लिए समझ पाना और ग्रहण कर पाना बहुत मुष्किल है पर यह पौलुस के तर्क का आधार है। देखिए विषेश षीर्शक 13:9।

*''और जहाँ व्यवस्था नहीं
वहाँ उसका टालना भी नहीं''*

परमेष्वर मनुश्य को उसके अन्दर के प्रकाष के लिए ज़िम्मेदार ठहराते हैं। अन्यजातियों का न्याय कभी भी मूसा की व्यवस्था के अनुसार नहीं किया जाएगा जिसके बारे में उन्होंने कभी नहीं सुना। वे प्राकृतिक प्रकाषन के लिए ज़िम्मेदार हैं (रोमियों.1:19—20; 2:14—15)।

यहाँ पर पौलुस के तर्क में यह सच और एक कदम आगे बढ़ाया गया है। मूसा की व्यवस्था में परमेष्वर के प्रगट होने से पहले उन्होंने मानवजाति के विद्रोह का लेखा नहीं रखा (रोमियों.3:20, 25; 4:15; 5:13, 20; 7:5, 7—8; प्रेरित.17:30; 1कुरि.15:56)।

रोमियों.4:16—25

16 इसी कारण वह विश्वास के द्वारा मिलती है, कि अनुग्रह की रीति पर हो, कि प्रतिज्ञा सब वंश के लिये दृढ़ हो, न कि केवल उसक लिये जो व्यवस्थावाला है, वरन उन के लिये भी जो इब्राहीम के समान विश्वासवाले हैंः वही तो हम सब का पिता है।

17 (जैसा लिखा है, कि मैं ने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है) उस परमश्ेवर के साम्हने जिस पर उस ने विश्वास किया और जो मरे हुओं को जिलाता है, और जो बातें हैं ही नहीं, उन का नाम ऐसा लेता है, कि मानो वे हैं।

18 उस ने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिये कि उस वचन के अनुसार कि तेरा वंश ऐसा होगा वह बहुत सी जातियों का पिता हो।

19 और वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ।

20 और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की।

21 और निश्चय जाना, कि जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरी करने को भी सामर्थी है।

22 इस कारण, यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया।

23 और यह वचन, कि विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिया गया, न केवल उसी के लिये लिखा गया।

24 वरन हमारे लिये भी जिन के लिये विश्वास धार्मिकता गिना जाएगा, अर्थात् हमारे लिये जो उस पर विश्वास करते हैं, जिस ने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया।

25 वह हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिये जिलाया भी गया।

4:16

यह आयत 14 में पौलुस के तर्क का सुन्दर सारांष है (1) मनुश्य को विष्वास में प्रतिउत्तर देना होगा; (2) परमेष्वर के अनुग्रह के वायदे के लिए; (3) इब्राहीम के वंष जो विष्वास में कार्य करते हैं (यहूदी और यूनानी) उनके लिए परमेष्वर का वायदा पक्का है और (4) इब्राहीम उन तमाम लोगों के लिए एक उत्तम उदाहरण हैं जो विष्वास से हैं।

''प्रमाणिकता''

देखिए नीचे दिया गया षीर्शक।

विषेश षीर्शक : प्रमाणिकता

यह यूनानी षब्द है बिबायोस, जिसके तीन अर्थ हैं।

1) वह जो पक्का हो, और जिस पर भरोसा किया जा सके (रोमियों.4:16; 2कुरि.1:7; इब्रा.2:20; 3:6, 14; 6:19; 2पत.1:10, 19)।

2) वह प्रक्रिया जिसके द्वारा किसी वस्तु की विष्वासयोग्यता प्रगट हो या साबित हो (रोमियों.15:8; इब्रा.2:2 – लोऊ एण्ड नीडा, ग्रीक–इग्लिष लैक्सीकन ऑफ द न्यू टैस्टामैन्ट, भाग.1 पृश्ठ.340, 377, 670)।

3) पापीरी के यह कानूनी प्रमाणिकता का षब्द बन गया (मॉउलटोन एण्ड मीलीगन, द वॉकेबलरी ऑफ द न्यू टैस्टामैन्ट, पृश्ठ. 107–108)।

यह आयत 14 का विरूद्ध अलंकार है। परमेष्वर के वायदे पक्के हैं।

''सभी...सभी''

यह सभी विष्वासियों को व्यक्त करता है (यहूदी और अन्यजातिय)।

4:17—23

पौलुस फिर से इब्राहीम का प्रयोग करते हैं इन बातों की प्राथमिकता प्रगट करने के लिए (1) परमेष्वर द्वारा षुरू किए गए अनुग्रह की प्रतिज्ञा (वाचा); (2) मनुश्य का आवष्यक षुरूवाती विष्वास और प्रगतिषील विष्वास (वाचा)। (देखिए नोट 1:5)। वाचा में हमेषा दोनों समूह षामिल होता है।

4:17

''जैसा लिखा है,
कि मैंने तुझे बहुत सी जातियों का
पिता ठहराया है''

यह उत्प.17:5 का लेख है। सैप्टूआजैन्ट में ''अन्यजातिय'' लिखा है। परमेष्वर हमेषा आदम की सारी सन्तान का उद्धार चाहते थे (उत्प.3:15), केवल इब्राहीम की सन्तान का नहीं। अब्राम के नए नाम इब्राहीम का अर्थ है ''जातियों का पिता'' अब हम जानते हैं कि इसमें केवल षारीरिक सन्तान ही नहीं परन्तु विष्वास की सन्तान भी षामिल है।

''जो मरे हुओं को जिलाते हैं''

इस संदर्भ में इसका प्रयोग इब्राहीम और सारा की मृत यौन सामर्थ को पुनः जागृत करने के अर्थ में किया गया है (रोमियों. 4:19)।

''और जो बातें हैं ही नहीं,
उन का नाम ऐसा लेते हैं,
कि मानो वे हैं''

इस संदर्भ में इसका प्रयोग सारा के इसहाक के रूप में गर्भधारण को प्रगट करने के लिए किया गया है, पर साथ ही यह विष्वास के महत्वपूर्ण विचार को भी प्रगट करता है (इब्रा.11:1)।

4:18

एन ए एस बी ''निराषा में आषा रखकर उन्होंने विष्वास किया''

एन के जे वी ''जिन्होंने, आषा के विपरीत में भी, आषा से विष्वास किया''

एन आर एस वी ''निराषा के विपरीत आषा रखकर, उन्होंने विष्वास किया''

टी इ वी ''इब्राहीम ने आषा रखी और विष्वास किया, तब भी जब आषा के लिए कोई कारण नहीं था''

एन जे बी ''कोई भी आषा नज़र नहीं आती थी पर उन्होंने आषा रखी और विष्वास किया''

12:12 में ''आषा'' के लिए विषेश षीर्शक है। इस षब्द का विस्तृत सामी क्षेत्र है। हारॉल्ड के. माउल्टोन, द एनालिटीकल ग्रीक लैक्सीकन रिवाइस्ड, पृश्ठ.133, में इसके विभिन्न प्रयोग दिए गए हैं।

1) आधारभूत अर्थ, आषा (रोमियों.5:4; प्रेरित.24:15)

2) विष्वास प्रयोजन (रोमियों.8:24; गला.5:5)

3) लेखक या श्रोत (कुलु.1:27; 1तीमु.1:1)

4) भरोसा, दृढ़ निष्चय (1पत.1:21)

5) सुरक्षा में जमानत के साथ (प्रेरित.2:26; रोमियों.8:20)

इस संदर्भ में आषा का प्रयोग दो अर्थों में किया गया है। मनुश्य की योग्यता और सामर्थ पर आषा (रोमियों.4:19–21) और परमेष्वर के वायदों पर आषा (रोमियों.4:17)।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''ऐसे ही तुम्हारा वंष भी''

एन आर एस वी ''ऐसे ही अनगिनत तुम्हारा वंष भी''

टी इ वी ''तुम्हारा वंष अनगिनत होगा''

जे बी ''तुम्हारा वंष भी तारों के समान अनगिनत होगा''

यह उत्प.15:5 का लेख है जो इब्राहीम को पुत्र के बारे में वायदे की पूर्णता पर ज़ोर देता है (रोमियों.4:19–22)। याद रखिए कि इसहाक का जन्म हुआ

1) वायदे के 13 साल बाद

2) जब इब्राहीम सारा को छोड़ देना चाहते थे (दो बार, उत्प.12:10–19; 20:1–7)

3) हाजिरा नामक सारा की मिस्री दासी के द्वारा इब्राहीम को एक पुत्र होने के बाद (उत्प.16:1–16)

4) सारा (उत्प.18:12) और इब्राहीम (उत्प.17:17) के वायदे पर हंसने के बाद।

उनके पास सिद्ध विष्वास नहीं था। परमेष्वर का धन्यवाद हो कि उद्धार के लिए सिद्ध विष्वास की आवष्यकता नहीं होती अपितु सही प्रयोजन की आवष्यकता होती है (पुराने नियम में परमेष्वर और नए नियम में उनके पुत्र)।

4:20

षुरूवात में इब्राहीम ने प्रतिज्ञा को अच्छी तरह से नहीं समझा कि संतान सारा से होगी। यहाँ तक कि इब्राहीम का विष्वास भी सिद्ध नहीं था। परमेष्वर अधूरे विष्वास को ग्रहण करते और उस पर कार्य करते हैं क्योंकि वह अधूरे लोगों से प्रेम करते हैं।

''न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया''

यही क्रिया डाइक्रीनो षब्द यीषु द्वारा प्रयोग किया गया मत्ती.21:21; मरकुस.11:23 में। सारे षारीरिक कारणों से (रोमियों.4:19) परमेष्वर के वचन पर सवाल करने की वजाए इब्राहीम विष्वास में बढ़ते गए। आयत 20 की दोनों क्रियाऐं परमेष्वर की एजेन्सी को प्रस्तुत करते हैं पर इब्राहीम को परमेष्वर की सामर्थ को अनुमती देनी थी कि वह उन्हें उर्जा प्रदान करे।

''परमेष्वर की महिमा की''

देखिए विषेश षीर्शक 3:23।

4:21

एन ए एस बी ''निश्चय जाना''

एन के जे वी, एन आर एस वी ''पूरी तरह से स्वीकार किया''

टी इ वी ''पूरी तरह से भरोसा किया''

एन जे बी ''पूरी तरह स्वीकार किया''

यह किसी वस्तु (लूका.1:1; कुलु.4:12), किसी व्यक्ति (रोमियों.4:21; 14:5) पर पूर्ण भरोसे को प्रगट करता है। पूर्ण भरोसे के कर्ता षब्द का प्रयोग कुलु.2:2 और 1थिस्स.1:5 में किया गया है। यह परमेष्वर की इच्छा, वचन और सामर्थ पर भरोसा मनुश्य की सहायता करता है कि वह विष्वास में कार्य करे।

''जिस बात की उन्होंने प्रतिज्ञा की है,
वह उसे पूरी करने को भी सामर्थी हैं''

विष्वास का सार यह है कि वह परमेष्वर के चरित्र और वायदों पर भरोसा करता है (रोमियों.16:25; इफि.3:20; यहू.1:24) न कि मनुश्य के कर्मों पर (यषा.55:11)। विष्वास वायदों के परमेष्वर पर भरोसा करता है (यषा.55:11), जो वह पूरा करते हैं (उत्प. 12:1—3 और 15:6, 12—21; यहे.36:22—36)।

4:22

यह उत्प.15:6 की ओर संकेत है (रोमियों.4:3), जो कि पौलुस के इस तर्क का धर्मषास्त्रीय बिन्दु है कि कैसे परमेष्वर पापी मनुश्य को अपनी धार्मिकता प्रदान करते हैं।

4:23—25

ये आयत यूनानी में एक वाक्य है। प्रगमन पर ध्यान दीजिए।

1) इब्राहीम की खातिर, 4:23

2) सभी विष्वासियों की खातिर, 4:24

3) परमेष्वर के यीषु को जिलाने के द्वारा, 4:24

4) यीषु हमारे पाप के लिए दिए गए (यूह.3:16), यीषु हमारे पापों की क्षमा के लिए जीवित हो गए (दोशमुक्ति), 4:25

4:24

इब्राहीम का विष्वास सभी वंषजों को अनुसरण करने के लिए एक आदर्ष बन गया। इब्राहीम ने परमेष्वर के पुत्र और वंष के वायदे पर विष्वास किया (देखिए विषेश षीर्शक 4:5)। नई वाचा के विष्वासी यह विष्वास करते हैं कि यीषु मसीह ही पतित मानव के साथ परमेष्वर के वायदे के पूरक हैं। 'वंष' षब्द दोनों है एकवचन भी और बहुवचन भी (एक पुत्र, लोग)।

''जिलाया'' के लिए देखिए नोट 8:11

4:25

''वह हमारे अपराधों के लिये
पकड़वाए गए''

यह कानूनी षब्द है जिसका अर्थ है ''किसी को दण्ड के लिए पकड़वाना''। आयत 25 सैप्टूआजैन्ट की यषा.53:11—12 से ली मसीहषास्त्र का अद्भुत वाक्य है।

''हमारे धर्मी ठहरने के लिये
जिलाए भी गए''

आयत 25 के दोनों वाक्यांष सदृष्य हैं। फ्रैन्क स्टैग का अनुवाद (न्यू टैस्टामैन्ट थियोलौजी, पृश्ठ.97) ''हमारे पापों के लिए पकड़वाए गए और जिलाए गए ताकि हम धर्मी ठहराए जाऐं'' इसे और भी प्रभावषाली बना देता है। यह अनुवाद पौलुस द्वारा प्रयोग किए गए षब्द ''दोशमुक्ति'' के दो पहलूओं को प्रगट करता है (1) कानूनन स्तर (2) भक्तिपूर्ण, मसीह के समान जीवन। देखिए विषेश षीर्शक 1:17।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) रोमियों का यह भाग इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

2) पौलुस क्यों इब्राहीम और दाऊद को उदाहरण के रूप में प्रयोग करते हैं?

3) निम्नलिखित षब्दों की व्याख्या पौलुस के प्रयोग के अनुसार कीजिए (अपनी परिभाशा न दें)।

क. ''धार्मिकता''

ख. ''मेल–मिलाप कराना''

ग. ''विष्वास''

घ. ''वायदा''

4) यहूदियों के लिए खतना इतना आवष्यक क्यों है (4:9–12)?

5) आयत 13 और 16 में ''वंष या सन्तान'' षब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

रोमियों – 5

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
दोशमुक्ति का परिणाम	विष्वास समस्याओं पर जयवन्त होता है	दोशमुक्ति के परिणाम	परमेष्वर के साथ सही	विष्वास उद्धार की जमानत है
5:1–11	5:1–5	5:1–5	5:1–5	5:1–11
	मसीह हमारे स्थान हैं			
	5:6–11	5:6–11	5:6–11	
आदम और मसीह	आदम में मृत्य, मसीह में जीवन	आदम और मसीह, संकेत और विपरीत	आदम और मसीह	आदम और यीषु मसीह
5:12–14	5:12–21	5:12–14	5:12–14[ख]	5:12–14
			5:14[ग]–17	
5:15–21		5:15–17		5:15–21
		5:18–21	5:18–19	
			5:20–21	

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद
2) दूसरा अनुच्छेद
3) तीसरा अनुच्छेद
4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि

क. आयत 1–11 यूनानी में एक ही वाक्य है। यह पौलुस के ''विष्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने या दोशमुक्ति'' के विचार को प्रस्तुत करते हैं।

ख. 5:1–11 की सम्भव रूपरेखा

5:1–5	5:6–8	5:9–11
उद्धार के फायदे	उद्धार का आधार	उद्धार के भविश्य का तथ्य
दोशमुक्ति के व्यक्तिनिश्ठ अनुभव	दोशमुक्ति के विशयपरकता तथ्य	दोशमुक्ति के भविश्य का तथ्य
दोशमुक्ति	प्रगतिषील षुद्धिकरण	महिमित
मानवषास्त्र	ईष्वरीयषास्त्र	अन्तिम समय अध्ययन

ग. आयत 12–21 यीषु मसीह की दूसरे आदम के रूप में चर्चा है (1कुरि.15:21–22, 45–49; फिलि.2:6–8)। यह धर्मषास्त्रीय विचार पर ज़ोर डालता है दोनों व्यक्तिगत पाप और साझा दोश। पौलुस का मानवजाति (सारी सृश्टि) का आदम में पतन के बारे में लेख रब्बीयों के लेख से बिलकुल भिन्न है जबकी उनका साझा विचार उनसे मिलता जुलता है। यह पौलुस की योग्यता को प्रगट करता है कि वह प्रेरणा के अधीन यरूषलेम में गमलीएल के अधीन पाई षिक्षा के सत्य को किस खूबी से प्रयोग कर सकते हैं (प्रेरित.22:3)।

जागृत वास्तविक पाप की षुरूवात उत्प.3 से का सिद्धान्त अगस्तिन और कैल्विन ने उन्नत किया। यह आधारभूत रूप से बताता है कि मनुश्य जन्म से ही पापी है। अक्सर पुराने नियम के मूलपाठ भ.सं.51:5; 58:3; अय्य.15:14; 25:4 का प्रयोग इसे बताने के लिए किया जाता है। साथ ही साथ पेलाग्युअस और अरमीनीयस द्वारा जनित धर्मषास्त्रीय स्तर कि मनुश्य प्रगतिषील रूप से नैतिक और आत्मिक रूप से अपने चुनाव और अन्तिम गन्तव्य स्थान के लिए ज़िम्मेदार है भी प्रयोग में आया। उनके नज़रिए के कुछ सबूत व्यव.1:39; यषा.7:15; योना.4:11; यूह.9:41; 15:22, 24; प्रेरित.17:30; रोमियों.4:15 में पाऐ जाते हैं। इस धर्मविज्ञान का ज़ोर इस बात पर है कि बच्चा नैतिक ज़िम्मेदारी उठाने की उम्र तक निर्दोश होता है (रब्बीयों के लिए यह आयु लड़कों के लिए 13 और लड़कियों के लिए 12 थी)।

एक बीच का स्तर है जिसमें षुरू से पापी और नैतिक ज़िम्मेदारी की उम्र दोनों ही सही हैं। बुराई केवल साझी नहीं है पर यह किसी व्यक्ति के पाप करने की बुराई की प्रगति है (जीवन जो परमेष्वर से दूरी की ओर प्रगति कर रहा है)। मानवजाति का पाप यहाँ पर मुद्दा नहीं है (उत्प.6:5, 11– 12, 13; रोमियों.3:9–18, 23) पर यह कि कब, जन्म के समय या बाद के जीवन में?

घ. आयत 12 के प्रयोग के बारे में कई विचार हैं :

1) सभी लोग मरते हैं क्योंकि सबने पाप करने का चुनाव किया है (पेलाग्युअस)

2) आदम के पाप ने सारी सृश्टि को प्रभावित किया इसलिए सभी मरते हैं (5:18–19, अगस्तिन)

3) वास्तव में यह भौतिक पाप और इच्छा से सम्बन्धित पाप का मिश्रण है।

ङ. पौलुस की तुलना ''जैसे कि'' आयत 12 में षुरू होती है और आयत 18 तक रहती है। आयत 13–17 निक्षिप्त वाक्यांष की रचना करते हैं जो पौलुस के लेख की खुबी है।

च. याद रखिए सुसमाचार को प्रस्तुत करने के प्रति पौलुस का तर्क, 1:18–8:39 जो साबित किया हुआ तर्क है। पूरे का सही अनुवाद करना आवष्यक है और भागों की सराहना की जानी चाहिए।

छ. मार्टिन लूथर ने अध्याय 5 के बारे में कहा है, ''पूरी बाइबल में मुष्किल से कोई दूसरा अध्याय होगा जो इस विजयी मूलपाठ के बराबर हो''।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.5:1–5

1 अतः जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।

2 जिस के द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिस में हम बने हैं, हमारी पहुंच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें।

3 केवल यही नहीं, वरन हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज।

4 ओर धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है।

5 और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्रा आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।

''अतः''

यह षब्द अक्सर संकेत करता है (1) इस बिन्दु तक धर्मषास्त्रीय तर्क का सारांष; (2) इस धर्मषास्त्रीय के आधार पर सारांष; और (3) नए विष्वास का प्रस्तुतिकरण (रोमियों.5:1; 8:1; 12:1)।

''धर्मी ठहरे''

परमेष्वर ने विष्वासियों को धर्मी ठहराया है। ज़ोर देने के लिए यूनानी वाक्य में इसका प्रयोग पहले षब्द के रूप में किया गया है (5:1–2)। आयत 1–11 में समय का क्रम नज़र आता है : (1) 5:1–5, हमारा अभी का अनुग्रह का अनुभव; (2) 5:6–8, हमारी जगह पर मसीह का पूरा किया हुआ कार्य; और (3) 5'9–11, हमारी भविश्य आषा और उद्धार की प्रमाणिकता। देखिए रूपरेखा ''ख'' प्रासंगिक अन्तरदृश्टि में।

पुराने नियम के ''धर्मी ठहराए जाने'' (डिकायो) की पृश्ठभूमि है ''सीधा कोना'' या ''नापने का बेन्त''। यह रूपक तौर पर परमेष्वर के लिए प्रयोग किया गया है। देखिए विषेश षीर्शक : धार्मिकता 1:17। परमेष्वर का चरित्र, पवित्रता ही न्याय का स्तर है (सैप्टूआजैन्ट, लैव्य.24:22; धर्मषास्त्रीय तौर पर मत्ती.5:48)। यीषु मसीह की बदले में बलिदान मृत्यु के कारण विष्वासी परमेष्वर के सामने कानूनी तौर पर खड़े रह सकते हैं (देखिए नोट 5:2)। यह विष्वासी के अन्दर दोश की कमी है ऐसा नहीं बताता वरन् यह बताता है कि वे दोश रहित के रूप में देखे गए। किसी दूसरे ने उनका दण्ड सह लिया (2कुरि.5:21)। विष्वासियों को क्षमा किया हुआ घोशित किया गया है (रोमियों.5:8, 10)।

''विष्वास द्वारा''

विष्वास वह हाथ है जो परमेष्वर द्वारा दिए गए तोहफे को ग्रहण करता है (रोमियों.5:2; 4:1 के बाद)। विष्वास एक विष्वासी की समस्या का समाधान करने की क्षमता के स्तर पर केन्द्रीत नहीं है पर परमेष्वर के चरित्र और वायदों पर केन्द्रीत है (इफि. 2:8–9)। पुराने नियम में ''विष्वास'' के लिए प्रयोग किए गए षब्द का अर्थ है दृढ़ता से खड़ा होना। यह रूपक तौर पर उसके लिए प्रयोग में लाया गया जो वफ़ादार और भरोसेमन्द हो। विष्वास हमारी विष्वासयोग्ता या भरोसेमन्द होने पर आधारित नहीं है पर परमेष्वर पर आधारित है। देखिए विषेश षीर्शक : विष्वास 4:5।

''हमारा मेल है''

1–11 का संदर्भ उत्साहित करने के लिए नहीं है पर यह घोशणा है कि एक विष्वासी मसीह में क्या है और उसके पास मसीह में होने के कारण क्या है। यूनानी हस्तलेखों में ऐसे होते थे कि एक बोलता था और उसकी प्रतीयाँ बनाई जाती थी। इसलिए एक समान उच्चारण किए जाने वाले षब्दों को लिखते समय अक्सर धोखा हो जाता था। यहाँ पर संदर्भ या लेखन विधि द्वारा प्रयोग किए गए षब्द का अर्थ लेना चाहिए जो अनुवाद को सरल बना देता है।

''मेल या षान्ति''

देखिए दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : मेल या षान्ति

यूनानी षब्द का वास्तविक अर्थ है ''जो टूट गया है उसे आपस में जोड़ना'' (यूह.14:27; 16:33; फिलि.4:7)। नया नियम तीन तरह से मेल के बारे में बताता है :

1) मसीह में परमेष्वर के साथ हमारे मेल का विशयपरकता विचार (कुलु.1:20)

2) परमेष्वर के साथ सही होने का व्यक्तिनिश्ठ विचार (यूह.14:27; 16:33; फिलि.4:7)

3) परमेष्वर ने मसीह द्वारा एक देह में जोड़ा है दोनों विष्वास करने वाले यहूदियों और अन्यजातियों को (इफि.2:14–17; कुलु. 3:15)। एक बार हमारा मेल परमेष्वर के साथ हो गया तो यह दूसरों के साथ मेल को जन्म देगा। लम्बरूप क्षितिज समानान्तर में परिवर्तित होना चाहिए।

न्यूमैन एण्ड नीडा, ए ट्रान्सलेटरस हैन्डबुक ऑन पॉलस लैटर टु द रोमनस, पृश्ठ.92 में मेल के बारे में अच्छा लेख है।

दोनों पुराने नियम और नए नियम में मेल का विस्तृत अर्थ है। वास्तविक रूप से यह एक व्यक्ति के पूर्ण भलाई का वर्णन करता है, इसका प्रयोग यहूदियों द्वारा दूसरों को अभिवादन करने के लिए भी किया जाता था। इस षब्द का अर्थ इतना सामर्थ पूर्ण है कि यहूदियो द्वारा इसका प्रयोग मसीह द्वारा प्राप्त उद्धार का वर्णन करने के लिए भी किया जा सकता था। इस तथ्य के कारण कभी – कभी इसका प्रयोग ''परमेष्वर के साथ सही सम्बन्ध'' को व्यक्त करने के लिए भी किया गया। यहाँ पर यह षब्द ऐसा प्रतीत होता है कि यह परमेष्वर और मनुश्य के बीच मेल–मिलाप के रिष्ते को व्यक्त कर रहा है जो

परमेष्वर द्वारा मनुश्य को अपने साथ सही करने के कार्य पर आधारित है।

''परमेष्वर के साथ
हमारे प्रभु यीषु मसीह के द्वारा''

यीषु वह एजेन्सी हैं जो परमेष्वर के साथ मेल कराते हैं। यीषु ही एकमात्र मार्ग हैं परमेष्वर के साथ मेल करने के लिए (यूह. 10:7–8; 14:6; प्रेरित.4:12; 1तीमु.2:5)। यीषु मसीह के विभिन्न नाम के षीर्शकों के लिए देखिए नोट 1:4।

5:2

''जिस में हम बने हैं''

यह भूतकाल के बारे में बात करता है जो समाप्त हो गया जो होने को जन्म देता है। ''बने'' षब्द का वास्तविक अर्थ है ''तक पहुँचना'' या ''प्रवेष होना'' (प्रोसागोगे, इफि.2:18; 3:12)। यह रूपक तौर पर इन बातों के लिए प्रयोग किया गया है (1) व्यक्तिगत तौर पर राजकीय बनना या (2) सुरक्षा के साथ बंदरगाह तक पहुँचाना।

इस वाक्यांष में यूनानी हस्तलेख के विभिन्नार्थ हैं। कुछ प्राचिन हस्तलेखों में ''विष्वास द्वारा'' षब्द भी षामिल किया गया है (साथ ही पुराने लैटिन, वलगेट, सिरीयाक और कॉप्टिक वरषन में भी)। बाकी हस्तलेख भी ''विष्वास द्वारा'' अभिव्यक्ति का प्रयोग किया गया है। ऐसा प्रतित होता है कि लेखक द्वारा 5:1 और 4:16 (दो बार), 19 और 20 के सदृष्य को भरने के लिए प्रयोग किया गया है। ''विष्वास द्वारा'' पौलुस का पुनः होने वाला केन्द्रीय विशय है।

''उस अनुग्रह तक''

यह षब्द परमेष्वर के जिसके हम योग्य नहीं, कोई धागे नहीं जुड़े, दया से दिए गए प्रेम को प्रगट करता है (इफि.2:4–9)। यह पापी मानवजाति के बदले यीषु की मृत्यु में नज़र आता है (रोमियों.5:8)।

''हमारी पहुँच भी हुई''

''हमारी पहुँच और लगातार पहुँच है।'' यह मसीह में विष्वासी के धर्मषास्त्रीय स्तर को प्रगट करता है और साथ ही परमेष्वर की महानता के साथ उनके विष्वास में बने रहने को प्रगट करता है (1कुरि.15:1) और मनुश्य की स्वतंत्र इच्छा को भी (इफि.6:11, 13, 14)।

विषेश षीर्शक : खड़ा या बने रहना (हिसटेमी)

इस षब्द का प्रयोग नए नियम में विभिन्न धर्मषास्त्रीय विचारों को प्रगट करने के लिए किया गया है।

क. साबित करना

1) पुराने नियम की व्यवस्था, रोमियों.3:31

2) एक व्यक्ति की अपनी धार्मिकता, रोमियों.10:3

3) नई वाचा, इब्रा.10:9

4) दोश, 2कुरि.13:1

5) परमेष्वर का सत्य, 2तीमु.2:19

ख. आत्मिकता का त्याग

1) षैतान, इफि.6:11

2) न्याय का दिन, प्रका.6:17

ग. एक व्यक्ति के खडे होने स्तर के मंच का त्याग

1) सैनिक रूपक, इफि.6:14

2) सामाजिक रूपक, रोमियों.14:4

घ. सत्य का स्तर, यूह.8:44

ङ. अनुग्रह में स्तर

1) रोमियों.5:2

2) 1कुरि.15:1

3) 1पत.5:12

च. विष्वास में स्तर

1) रोमियों.11:20

2) 1कुरि.7:37

3) 1कुरि.15:1

4) 2कुरि.1:24

छ. अहंकार का स्तर, 1कुरि.10:12

यह षब्द वाचामय अनुग्रह और महान परमेष्वर की दया और यह तथ्य कि विष्वासियों को विष्वास के साथ इसका प्रतिउत्तर देना है। दोनों ही बाइबलीय सत्य हैं। दोनों का साथ में रहना आवष्यक है।

''हम भी घमण्ड करें''

यह व्याकरण रूप ऐसे समझा जा सकता है (1) हम घमण्ड करें (2) आओ हम घमण्ड करें। ज्ञानी इस चुनाव के लिए भिन्न विचार रखते हैं। यदि कोई आयत 1 में ''हमारे पास है'' लेता है तो यह आयत 3 तक रहेगा।

''घमण्ड'' का मूल ''अंहकार'' है (एन आर एस वी, जे बी)। देखिए विषेश षीर्शक 2:17। विष्वासी स्वयं पर घमण्ड नहीं कर सकते (रोमियों.3:27), पर परमेष्वर ने उनके लिए किया (यिर्म.9:23–24)। यह समान यूनानी षब्द 3 और 11 आयत में दोहराया गया है।

''आषा में''

पौलुस ने इस षब्द का विभिन्न तरह से प्रयोग किया है पर एक ही विचार में। देखिए विषेश नोट 4:18। अक्सर यह विष्वासी के विष्वास की सिद्धि से सम्बन्धित है। इसे महिमा, अनन्त जीवन, पूर्ण उद्धार और दूसरे आगमन के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। यह सिद्धता निष्चित है, पर समय भविश्य का है और अनजान है। यह ''विष्वास'' और ''प्रेम'' से सम्बन्धित है (1कुरि.13:13; गला.5:5–6; इफि.4:2–5; 1थिस्स.1:3; 5:8)। पौलुस के प्रयोग की सूची हैः

1) दूसरा आगमन, गला.5:5; इफि.1:18; तीत.2:13

2) यीषु हमारी आषा हैं, 1तीमु.151

3) विष्वासी को परमेष्वर के सामने प्रस्तुत करना है, कुलु.1:22–23; 1थिस्स.2:19

4) आषा उसकी जो स्वर्ग में है, कुलु.1:5

5) पूर्ण उद्धार, 1थिस्स.4:13

6) परमेष्वर की महिमा, रोमियों 5:2; 2कुरि.3:12; कुलु.1:27

7) उद्धार की पुश्टि, 1थिस्स.5:8–9

8) अनन्त जीवन, तीत.152; 3:7

9) मसीही परिपक्वता के परिणाम, रोमियों.5:2–5

10) सारी सृश्टि का छुटकारा, रोमियों.8:20–22

11) परमेष्वर के षीर्शक, रोमियों.15:13

12) लेपालकपन की सिद्धता, रोमियों.8:23–25

13) पुराना नियम नए नियम के विष्वासियों के लिए मार्ग दर्षक, रोमियों.15:4

''परमेष्वर की महिमा''

यह वाक्यांष परमेष्वर की व्यक्तिगत उपस्थिति के लिए पुराने नियम का मुहावरा है। यह यीषु मसीह के पुनरूत्थान द्वारा विष्वासियों को परमेष्वर के सामने प्रदान की गई विष्वास–धार्मिकता है (2कुरि.5:21)। धर्मषास्त्रीय षब्दों में इसे ''*महिमित*'' कहते हैं (रोमियों.5:9–10; 8:30)। विष्वासी मसीह की समानता बाँटेंगे (1यूह.3:2; 2पत.1:4)। देखिए विषेश षीर्शक : महिमा 3:23।

5:3

एन ए एस बी ''और केवल यही नहीं, वरन''

एन के जे वी ''और सिर्फ वो ही नही, वरन''

एन आर एस वी ''और सिर्फ वो ही नही, वरन''

टी इ वी –छोडिए–

एन जे बी ''केवल वही नहीं''

पौलुस इन षब्दों के मिश्रण का प्रयोग कई बार करते हैं (रोमियों.5:3, 11; 8:23; 9:10; 2कुरि.8:19)।

एन ए एस बी ''हम अपने क्लेषों में भी घमण्ड करें''

एन के जे वी ''हम क्लेषों में भी घमण्ड करते हैं''

एन आर एस वी ''हम अपने दुःखों में भी घमण्ड करें''

टी इ वी ''हम अपनी मुष्किलों में भी घमण्ड करें''

एन जे बी ''आइए हम घमण्ड करें, मुष्किलों में भी''

यदि संसार ने यीषु से नफरत की तो उनके अनुयायियों से भी नफरत करेगा (मत्ती.10:22; 24:9; यूह.15:18–21)। मानवीय षब्दों में कहुँ तो जिन बातों को यीषु ने सहा है उन्हीं से वह परिपक्व हुए (इब्रा.5:8)। दुःख सहना धार्मिकता लाता है, जो कि हरेक विष्वासी के लिए परमेष्वर की योजना है (रोमियों.8:17–19; प्रेरित.14:22; याक.1:2–4; 1पत.4:12–19)।

''जानकर''

विष्वासियों की सुसमाचार के सत्य के बारे में जानकारी की उसमें क्लेष भी षामिल है उन्हें जीवन का सामना आनन्द से करने में सहायता करती है जो परिस्थितियों का मौहताज नहीं होता चाहे वह क्लेष में ही क्यों न हो (फिलि.4:4; 1थिस्स.5:16, 18)।

5:3

''सताव या क्लेष''

देखिए दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : सताव या क्लेष

पौलुस और यूहन्ना द्वारा इस षब्द (***थेलीपसीस***) के प्रयोग की धर्मषास्त्रीय भिन्नता को समझना आवष्यक है।

1) पौलुस के प्रयोग (जो यीषु के प्रयोग को प्रगट करता है)

क. समस्याऐं, कश्ट, पतित संसार में षामिल बुराईयाँ

(1) मत्ती.13:21

(2) रोमियों.5:3

(3) 1कुरि.7:28

(4) 2कुरि.7:4

(5) इफि.3:13

ख. समस्याऐं, कश्ट, बुराईयाँ जो अविष्वासियों द्वारा लाई जाती हैं

(1) रोमियों.5:3; 8:35; 12:12

(2) 2कुरि.1:4, 8; 6:4; 7:4; 8:2, 13

(3) इफि.3:13

(4) फिलि.4:14

(5) 1थिस्स.1:6

(6) 2थिस्स.1:4

ग. समस्याऐं, कश्ट, और अन्त–समय की बुराईयाँ

(1) मत्ती.24:21, 29

(2) मरकुस.13:19, 24

(3) 2थिस्स.1:6

2) यूहन्ना का प्रयोग

क. यूहन्ना प्रकाषितवाक्य में *थेलीपसीस* और *ऑरजे* या *थुमोस* (क्रोध) के बीच निष्चित अन्तर प्रगट करते हैं। *थेलीपसीस* वह है जो अविष्वासी विष्वासियों के साथ करते है और *ऑरजे* वह है जो परमेष्वर अविष्वासियों के साथ करते हैं।

(1) *थेलीपसीस,* प्रका.1:9; 2:9–10, 22; 7:14

(2) *ऑरजे,* प्रका.6:16–17; 11:18; 16:19; 19:15

(3) *थुमोस,* प्रका.12:12; 14:8, 10, 19; 15:2, 7; 16:1; 18:3

ख. यूहन्ना अपने सुसमाचार में भी इसका प्रयोग करते हैं हरेक युग में विष्वासियों द्वारा सहे जाने वाले क्लेष को प्रगट करने के लिए, यूह.16:33

5:3, 4

''धीरज''

इस षब्द का अर्थ है ''स्वेच्छा से'', ''कार्य'', ''तत्पर'' और ''सहनषीलता''। यह षब्द लोगों तथा परिस्थिति के साथ धैर्य को प्रगट करता है।

5:4

एन ए एस बी ''साबित किया हुआ चरित्र''

एन के जे वी, एन आर एस वी ''चरित्र''

टी इ वी ''परमेष्वर द्वारा प्रमाणित''

एन जे बी ''जाँचा गया चरित्र''

सैप्टूआजैन्ट के उत्प.23:16; 1राजा.10:18; 1इति.28:18 में यह षब्द धातु की जाँच के लिए प्रयोग किया गया है (2कुरि.2:9; 8:2; 9:13; 13:3; फिलि.2:22; 2तीमु.2:15; याक.1:12)। परमेष्वर की परीक्षा हमेषा सामर्थ देने के लिए होती है (इब्रा.12:10–11)। देखिए विषेश षीर्शक : परीक्षा 2:18।

5:5

''वरन परमेष्वर का प्रेम
हमारे हृदयों में उंडेला गया है''

परमेष्वर का प्रेम उंडेला गया है और लगातार उंडेला जा रहा है। यह क्रिया अक्सर पवित्र आत्मा के लिए प्रयोग की जाती है (प्रेरित.2:17, 18, 33; 10:45; तीत.3:6) जो योएल. 2:28–29 की ओर संकेत करता है।

'परमेष्वर का प्रेम' निम्न बातों की ओर संकेत करता है (1) परमेष्वर के लिए हमारा प्रेम; (2) हमारे लिए परमेष्वर का प्रेम (2कुरि. 5:14)। '(2)' संदर्भ पर आधारित है।

''पवित्र आत्मा जो हमें दी गई है''

यह प्रगट करता है कि विष्वासियों को और पवित्र आत्मा की आवष्यकता नहीं है। या तो उनके पास पवित्र आत्मा है या फिर वो मसीही नहीं हैं (रोमियों.8:9)। पवित्र आत्मा का दिया जाना नए युग (योए.2:28–29), नई वाचा (यिर्म.31:31–34; यहे. 36:22–32) का चिन्ह है।

इस अनुच्छेद में त्रिएक के तीन व्यक्तित्व की उपस्थिति पर ध्यान दीजिए।
1) परमेष्वर, 5:1, 2, 5, 8, 10

2) यीषु, 5:1, 6, 8, 9, 10

3) पवित्र आत्मा, 5:5

देखिए विषेश षीर्शक त्रिएक 8:11।

रोमियों.5:6–11

6 क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा।

7 किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाब करे।

8 परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।

9 सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे?

10 क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्रा की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे?

11 और केवल यही नहीं, परन्तु हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जिस के द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर के विषय में घमण्ड भी करते हैं।

5:6

एन ए एस बी ''क्योंकि जब हम निर्बल ही थे''

एन के जे वी ''क्योंकि जब हम बिना बल के थे''

एन आर एस वी ''क्योंकि जब हम कमज़ोर ही थे''

टी इ वी ''क्योंकि जब हम निर्बल ही थे''

एन जे बी ''जब हम निर्बल ही थे''

यह मानवजाति के पतित आदम स्वभाव को प्रगट करता है। मनुश्य पाप के विरूद्ध निर्बल है। 'हम' षब्द 5:6[ख] में 'भक्तिहीन', 5:8 में 'पापीयों' और 5:10 में 'षत्रुओं' को प्रगट करता है। 6 और 8 आयत धर्मषास्त्रीय रूप से सदृष्य हैं।

एन ए एस बी, एन आर एस वी ''सही समय पर''

एन के जे वी ''नियत समय पर''

टी इ वी ''उस समय पर जिसे परमेष्वर ने चुना''

जे बी ''उनके द्वारा ठहराए गए समय में''

ऐतिहासिक तौर पर यह सम्बोधित करता है (1) रोम की षान्ति जो स्वतंत्र यात्रा की इजाज़त देती थी; (2) यूनानी भाशा जो दूसरी संस्कृति से बात करने की इजाज़त देती थी; (3) यूनानी और रोमी देवताओं का देहान्त जिसने आत्मिक रूप से भुखे संसार को जन्म दिया (मरकुस.1:15; गला.4:4; इफि.1:10; तीत.1:3)। धर्मषास्त्रीय तौर पर अवतरण योजनाबद्ध ईष्वरीय कार्य है (लूका.22:22; प्रेरित.2:23; 3:18; 4:28; इफि.1:11)।

5:6, 8, 10

''भक्तिहीनों के लिए मरे''

यह यीषु मसीह के जीवन और मृत्यु को समान घटना के रूप में प्रस्तुत करता है। ''यीषु ने वह कर्ज चुकाया जो उनके ऊपर नहीं था और जो कर्ज हमारे ऊपर है हम उसे चुका नहीं सकते'' (गला.3:13; 1यूह.4:10)।

मसीह की मृत्यु पौलुस के लेखों में बार – बार दोहराया जाने वाला केन्द्रीय विशय है। उन्होंने विभिन्न षब्दों और वाक्यांषों का प्रयोग किया यीषु के बदले में दिए गए बलिदान को प्रगट करने के लिए;

1) ''लहु'' (रोमियों.3:25; 5:9; 1कुरि.11:25, 27; इफि.1:7; 2:13; कुलु.1:20)

2) ''अपने आप को दे दिया'' (इफि.5:2, 25)

3) ''पकड़वाए गए'' (रोमियों.4:25; 8:32)

4) ''बलिदान'' (1कुरि.5:7)

5) ''मर गए'' (रोमियों.5:6; 8:34; 14:9, 15; 1कुरि.8:11; 15:3; 2कुरि.5:15; गला.5:21; 1थिस्स.4:14; 5:10)

6) ''क्रूस'' (1कुरि.1:17–18; गला.5:11; 6:12–14; इफि.2:16; फिलि.2:8; कुलु.1:20; 2:14)

7) ''क्रूसीकरण'' (1कुरि.1:23; 2:2; 2कुरि.13:4; गला.3:1)

विभक्ति *हुपर* इस संदर्भ में क्या प्रगट करता है

1) प्रस्तुतिकरण, ''हमारे बदले''

2) बदले में, ''हमारी जगह''

सामान्य तौर पर *हुपर* षब्द सम्बन्ध सूचक विभक्ति के साथ ''बदले में'' अर्थ देता है (*लौऊ और नीडा*)। यह कुछ लाभों को प्रगट करता है जो व्यक्ति के साथ जुड़े हैं (*द न्यू इन्टरनैष्नल डिक्सनरी ऑफ न्यू टैस्टामैन्ट थियोलौजी,* भाग.3, पृश्ठ.1196)। *हुपर* विरोध के विचार को भी प्रगट करता है ''की जगह में'' इसलिए धर्मषास्त्रीय तौर पर यह बदले में बलिदान को प्रगट करता है (मरकुस.10:45; यूह.11:50; 18:14; 2कुरि.5:14; 1तीमु.2:6)। एम. जे. हरीस (एन आई डी एन टी टी, भाग.3, पृश्ठ.1197) कहता है, ''पौलुस क्यों नहीं कहते कि मसीह मर गए *एन्टी हेमोन* (1तीमु.2:6 के काफी करीब वह आते हैं–एन्टीलिट्रोन हाइपर पैन्टोन)? सम्भव है कि विभक्ति, हाइपर, एन्टी के विपरीत, समानभाव से प्रस्तुतिकरण और बदले में को व्यक्त करता है।''

एम. आर. वीनसेन्ट, वर्ड स्टडी, भाग.2 कहता है
''यह बहुत ही तर्क का विशय है कि *हुपर,* के बदले में, *एन्टी,* बदले में समानार्थ हैं या नहीं। क्लासिकल लेखकों ने ऐसी घटनाओं को प्रस्तुत किया जहाँ अर्थ आपस में बदल जाते हैं...इस वाक्यांष का अर्थ भी इतना अस्पश्ट है कि यह यूँ ही सबूतों के आधार पर प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। विभक्तियों का षायद स्थानिय अर्थ हो, मृतकों के ऊपर, के लिए''। इनमें से कोई भी मूलपाठ निर्णायक रूप में नहीं लिया जा सकता। सबसे अधिक यह कहा जा सकता है कि *हुपर एन्टी* के अर्थ की बाहरी सीमा है। बदले में को सैद्धान्तिक मंच द्वारा बहुत खोजा जाता है। अधिकतर मूलपाठों में यह कि जगह पर के विचार को स्पश्ट तौर पर व्यक्त करता है। सच्ची व्याख्या ऐसी प्रतित होती है कि, मूलपाठों में सैद्धान्तिक सवाल में, वो, नामों से, यहाँ कि तरह मसीह की मृत्यु से जुड़े हैं, गला.3:13; रोमियों.14:15; 1पत.3:18। यहाँ पर बदले में अर्थ भी षामिल किया गया है परन्तु अस्पश्ट रूप से'' (पृश्ठ.692)।

5:7

यह आयत मनुश्य के प्रेम को दर्षाता है जबकी आयत 8 परमेष्वर के प्रेम को दर्षाता है।

एन ए एस बी, एन के जे वी, टी इ वी ''धर्मी मनुश्य के लिए''

एन आर एस वी ''धर्मी व्यक्ति के लिए''

जे बी ''भले मनुश्य के लिए''

षब्द उसी विचार से प्रयोग किए गए हैं जैसे नूह और अय्यूब धर्मी और दोशरहित व्यक्ति थे। उन्होंने अपने समय की धार्मिक माँगों का अनुसरण किया। यह पापरहित होने को नहीं दर्षाता। देखिए विषेश षीर्शक 1:17।

5:8

''परमेष्वर अपने ही प्रेम को प्रगट करते हैं''
पिता ने अपने पुत्र को भेजा (रोमियों.8:, 32; 2कुरि.5:19)। परमेष्वर का प्रेम केवल भावनात्मक नहीं है पर कार्य पर आधारित है (यूह.3:16; 1यूह.4:10) और अचल है।

5:9

''जबकी हम''
यह पौलुस का मनपसंद व्यक्त करने का तरीका है (रोमियों.5:10, 15, 17)। यदि परमेष्वर विष्वासियों को इतना प्रेम कर सकते हैं जब वे पापी ही थे, तो अब वह उनसे कितना अधिक प्रेम करेंगे जब वे उनकी संतान बन गए हैं (रोमियों.5:10; 8:22)।

''अब धर्मी ठहरे''
यह धर्मी ठहराए जाने के पूर्ण कार्य को प्रगट करता है जो परमेष्वर ने किया है। पौलुस आयत 1 के सत्य को पुनः दोहरा रहे हैं। ''धर्मी ठहराए जाने'' (रोमियों.5:9) और ''फिर से रिष्ता कायम करना'' (रोमियों.5:10–11) की समानता को ध्यान में रखिए।

''उनके लहु के द्वारा''
यह यीषु मसीह की बलिदानपूर्ण मृत्यु को दर्षाता है (रोमियों.3:5; मरकुस.10:45; 2कुरि.5:21)। यह बलिदान का विचार, दोशी जीवन के बदले में निर्दोश जीवन देना, वापस लैव्य.1–7 की ओर ले जाता है और सम्भवतः निर्ग.12 (फसह का मेमना), और

धर्मषास्त्रीय तौर पर यीषु को दर्षाता है यषा.53:4–6 में। इब्रानियों में यह मसीहीषिक्षा के रूप में उन्नत किया गया है। इब्रानियों के कई भागों मे पुराने नियम और नए नियम के बीच तुलना की गई है।

''हम बचेंगे''

यह हमारे पूर्ण उद्धार को प्रगट करता है, जिसे ''महिमित'' कहते हैं (रोमियों.5:2; 8:30; 1यूह.3:2)।

नया नियम उद्धार को क्रिया वाक्यों में व्याख्या करता हैः

1) पूर्ण कार्य (प्रेरित.15:11; रोमियों.8:24; 2तीमु.1:9; तीत.3:5)

2) भूतकाल के कार्य का परिणाम वर्तमान स्तर (इफि.2:5, 8)

3) प्रगतिषील प्रक्रिया (1कुरि.1:18; 15:2; 2कुरि.2:15; 1थिस्स.4:14; 1पत.3:21)

4) भविश्य पूर्णता (रोमियों.5:9, 10; 10:9)

देखिए विषेश षीर्शक 10:13। उद्धार की षुरूवात आरम्भिक निर्णय से होती है परन्तु यह सम्बन्ध में प्रगतिषील होता है और एक दिन पूर्ण हो जाएगा। यह विचार तीन धर्मषास्त्रीय षब्दों से व्यक्त किया जाता है : दोशमुक्ति, जिसका अर्थ है, ''पाप के दण्ड से छुटकारा'' ; षुद्धिकरण अर्थात ''पाप के सामर्थ से छुटकारा'' और महिमित अर्थात ''पाप की उपस्थिति से छुटकारा''।

दोशमुक्ति और षुद्धिकरण दोनों ही परमेष्वर के अनुग्रह के कार्य हैं, जो विष्वासी को मसीह पर विष्वास करने के कारण दिए जाते हैं। नया नियम षुद्धिकरण को भी प्रगतिषील कार्य बताता है मसीहसमानता की ओर। इसलिए धर्मषास्त्री ''पदवीय षुद्धिकरण'' और ''प्रगतिषील षुद्धिकरण'' की बात करते हैं। यह है मुफ्त उद्धार का रहस्य है जो भक्तिपूर्ण जीवन से जुड़ा हुआ है।

''परमेष्वर के क्रोध से''

यह भविश्य का संदर्भ है। बाइबल परमेष्वर के महान, जिसके हम योग्य नहीं ऐसे प्रेम के बारे में बताती है पर साथ ही यह पाप और विद्रोह के विरूद्ध परमेष्वर के स्तर को भी बताती है। परमेष्वर ने मसीह के द्वारा उद्धार और क्षमा का मार्ग तैयार किया है परन्तु जो उनका त्याग करते हैं वे परमेष्वर के क्रोध के अधीन हैं (रोमियों.1:18–3:20)। यह आस्था का वाक्यांष है पर वास्तविकता को प्रगट करता है। यह बहुत ही भयानक बात है कि हम क्रोधित परमेष्वर के हाथों में पड़ें (इब्रा.10:31)।

5:10

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। मानवता, परमेष्वर की महानतम सृश्टि, षत्रु बन गई। मनुश्य (उत्प.3:5) और षैतान (यषा.14:14; यहे.28:2ख 12–17) की एक समान समस्या थी, अधिकार की इच्छा और परमेष्वर के तुल्य बनने की इच्छा।

''हमारा मेल परमेष्वर के साथ हुआ है
और मेल होने के कारण''

क्रिया ''मेल'' का वास्तविक अर्थ है ''आपस में बदलना''। परमेष्वर ने हमारे अपराधों को यीषु की धार्मिकता से बदल लिया है (यषा.53:4–6)। षान्ति पुनः स्थापित की गई (रोमियों.5:1)।

''उनके पुत्र की मृत्यु के द्वारा''

क्षमा का सुसमाचार आधारित है (1) परमेष्वर के प्रेम; (2) मसीह के कार्य; (3) पवित्र आत्मा के द्वारा जन्म और (4) विष्वास और पष्चाताप के प्रतिउत्तर पर। परमेष्वर के सामने सही होने का और कोई मार्ग नहीं है (यूह.14:6)। उद्धार की पुश्टी त्रिएक परमेष्वर के चरित्र पर आधारित है मनुश्यों के कार्यों पर नहीं। सही बात यह है कि भले काम उद्धार पाने के बाद मुफ्त उद्धार का सबूत है (याकूब और 1यूहन्ना)।

''हम बचाए जाऐंगे''

नया नियम उद्धार को भूतकाल, वर्तमान और भविश्य काल के रूप में प्रगट करता है। भविश्य मसीह के दूसरे आगमन में हमारे सिद्ध और पूर्ण उद्धार को प्रगट करता है। देखिए विषेश नोट आयत 9 और विषेश षीर्शक 10:13।

''उनके जीवन के द्वारा''

जीवन के लिए यूनानी षब्द *ज़ाओ* है। यूहन्ना के लेखों में यह पुनरूत्थान जीवन, अनन्त जीवन और परमेष्वर के राज्य के जीवन को प्रगट करता है। पौलुस ने भी इसी धर्मषास्त्रीय विचार में इसका प्रयोग किया है। इस संदर्भ की महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेष्वर ने विष्वासियों की क्षमा के लिए भारी कीमत चुकाई है वह इसे बरकरार रखेंगे।

''जीवन'' प्रगट करता है (1) मसीह का पुनरूत्थान (रोमियों.8:34; 1कुरि.15); (2) यीषु का मध्यस्थ का कार्य (रोमियों.8:34; इब्रा. 7:25; 1यूह.2:1); और (3) पवित्र आत्मा हमारे अन्दर मसीह को रच रही हैं (रोमियों.8:29; गला.4:19)। पौलुस प्रमाणित करते हैं कि यीषु मसीह का पृथ्वी का जीवन और मृत्यु और साथ ही उनका उठाया जाना हमारे मेलमिलाप का आधार हैं।

5:11

''केवल यही नहीं, परन्तु''

देखिए आयत 3 का नोट।

''हम भी घमण्ड करेंगे''

देखिए नोट 5:2। यह ''घमण्ड'' का इस संदर्भ में तीसरा प्रयोग है।

1) महिमा की आषा में घमण्ड करना, 5:2

2) क्लेष में घमण्ड करना, 5:3

3) मेलमिलाप में घमण्ड करना, 5:11

नकारात्मक घमण्ड 2:17, 23 में दिखाई देता है।

''हमारा मेल हुआ है''

यह पूर्ण कार्य है। विष्वासियों के मेलमिलाप के बारे में रोमियों.5:10 और 2कुरि5:18–21; इफि.2:16–22; कुलु.1:19–23 भी चर्चा की गई है। इस संदर्भ में ''मेलमिलाप'', ''धर्मी ठहराए जाने'' का धर्मषास्त्रीय समानार्थ है।

रोमियों.5:12–14

12 इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया।

13 क्योंकि व्यवस्था के दिए जाने तक पाप जगत में तो था, परन्तु जहां व्यवस्था नहीं, वहां पाप गिना नहीं जाता।

14 तौभी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया, जिन्हों ने उस आदम के अपराध की नाईं जो उस आनेवाले का चिन्ह है, पाप न किया।

5:12

''इसलिए''
रोमियों में इसलिए का प्रयोग बहुत ही रणनिति के साथ विभिन्न स्थानों में किया गया है (5:1; 8:1; 12:1)। अनुवाद का प्रष्न यह है कि वह किससे जुड़े हैं। यह षायद पौलुस के पूरे तर्क को सम्बोधित करने का तरीका हो सकता है। निष्चय है कि यह उत्पति को सम्बोधित करता है और, इसलिए, सम्भवतः रोमियों.1:18–32 को।

'जैसा एक मनुष्य के द्वारा
पाप जगत में आया''
आदम का पतन मृत्यु लाया (1कुरि.15:22)। बाइबल पाप की षुरूवात पर आधारित नहीं है। पाप स्वर्गदूतों के संसार में भी हुआ (उत्प.3 और प्रका.12:7–9)। कब और कैसे यह अनिष्चित है (यषा.14:12–27; यहे.28:12–19; अय्य.4:18; मत्ती.25:41; लूका.10:18; यूह.12:31; प्रका.12:7–9)।

आदम के पाप में दो बातें षामिल थीं (1) निष्चित आज्ञा का उल्लंघन (उत्प.2:16–17), और (2) स्वयं पर आधारित घमण्ड (उत्प. 3:5–6)। यह उत्प.3 की ओर संकेत रोमियों.1:18–32 में षुरू हुआ।

यह पाप की धर्मषास्त्रीय षिक्षा ही पौलुस को रब्बीयों की षिक्षा से अलग करती है। रब्बी उत्प.3 पर केन्द्रीत नहीं होते वरन् वह कहते हैं कि हरेक मनुश्य में दो ''इच्छाऐं'' (कुत्ते–येटज़रस) होती हैं। उनका सबसे प्रसिद्ध कथन है ''हरेक मनुश्य के हृदय में काला और सफेद कुत्ता होता है। जिसे तुम अधिक खिलाते हो वही बलवान हो जाता है''। पौलुस ने पाप को पवित्र परमेष्वर और उनकी सृश्टि के बीच पाप को प्रमुख रूकावट के रूप में देखा। पौलुस क्रमावर धर्मषास्त्री नहीं थे (जेम्स स्टीवर्ड, ए मैन इन क्राइस्ट)। उन्होंने पाप के विभिन्न जनक बताए (1) आदम का पतन; (2) षैतानी परीक्षाऐं और (3) मनुश्य का प्रगतिषील विद्रोह।

धर्मषास्त्रीय विपरीत और सदृष्य अर्थ में आदम और यीषु के मध्य दो सम्भव बातें हैं।

1) आदम वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्ति थे।

2) यीषु वास्तविक मनुश्य थे।

यह दोनों सत्य झूठी षिक्षाओं के बीच बाइबल को साबित करते हैं। ''एक व्यक्ति'' या ''एक'' के बार बार प्रयोग पर ध्यान दीजिए। इस संदर्भ में 11 बार इन दो षब्दों का प्रयोग यीषु और आदम को प्रस्तुत करने के लिए किया गया है।

''पाप द्वारा मृत्यु''
बाइबल मृत्यु के तीन स्तरों को प्रगट करती है (1) आत्मिक मृत्यु (उत्प.2:17; 3:1–7; इफि.2:1); (2) षारीरिक मृत्यु (उत्प.5); और (3) अनन्त मृत्यु (प्रका.2:11; 20:6, 14; 21:8)। इस संदर्भ में जिसको ज़िक्र किया गया है वह आदम की आत्मिक मृत्यु है (उत्प. 3:14–19) जिसका परिणाम सारी मानवजाति की षारीरिक मृत्यु हुआ (उत्प.5)।

''मृत्यु सभी मनुश्यों में फैल गई''
इस अनुच्छेद का प्रमुख विशय पाप (रोमियों.5:16–19; 1कुरि.15:22; गला.1:10) और मृत्यु का सार्वभौमिक होना है।

''क्योंकि सबने पाप किया''
प्रत्येक मनुश्य ने आदम की सहभागिता में पाप किया है (पापमय स्तर और उत्तराधिकार)। इसलिए हरेक मनुश्य व्यक्तिगत रूप से और लगातार पाप करने का चुनाव करता है। बाइबल बहुत ही स्पश्ट है कि प्रत्येक मनुश्य सहभागिता में और व्यक्तिगत रूप में पापी है (1राजा.8:46; 2इति.6:36; भ.सं.14:1–2; 130:3; 143:2; नीति.20:9; सभो.7:20; यषा.9:17, 53:6; रोमियों.3:9–18, 23; 5:18; 11:32; गला.3:22; 1यूह.1:8–10)।

फिर भी यह कहा जाना चाहिए कि संदर्भ का ज़ोर (रोमियों.5:15–19) इस बात पर है कि एक कार्य द्वारा मृत्यु आई (आदम) और एक कार्य द्वारा जीवन आया (यीषु)। फिर भी परमेष्वर ने मनुश्य के साथ सम्बन्ध को इतना क्रमानुसार बना दिया कि *''खोयापन''* और *''धर्मी ठहराए जाने''* में मनुश्य का प्रतिउत्तर महत्वपूर्ण है। मनुश्य पूरी तरह से अपने भविश्य लक्ष्य के लिए ज़िम्मेदार है। वह या तो लगातार पाप करने का चुनाव करते हैं या फिर मसीह का चुनाव करते हैं। वे इन दोनों चुनावों को प्रभावित नहीं कर सकते पर स्पश्ट रीति से प्रगट करते हैं कि वह किसमें षामिल हैं।

'इस कारण' का अनुवाद सामान्य है पर इसका अर्थ अक्सर तर्कषील है। पौलुस *इफहो* का प्रयोग करते हैं 2कुरि.5:4; फिलि. 3:12; 4:10 में ''इस कारण'' के विचार में। इसलिए हरेक मनुश्य परमेष्वर के विरूद्ध पाप और विद्रोह में व्यक्तिगत रूप से भाग लेता है। कुछ विषेश प्रकाषन को त्यागने के द्वारा पर सभी प्राकृतिक प्रकाषन को त्यागने के द्वारा (रोमियों.1:18–3:20)।

5:13–14

यही सत्य रोमियों.4:15 और प्ररित.17:30 में भी सिखाया गया है। परमेष्वर न्यायी हैं। मनुश्य जो उसके लिए उपलब्ध है उसके लिए ज़िम्मेदार है। यह आयत विषेश प्रकाषन की बात कर रहा है (पुराना नियम, यीषु, नया नियम), प्राकृतिक प्रकाषन के बारे में नहीं (रोमियों.1:18–3:20)।

ध्यान दीजिए कि एन के जे वी आयत 12 की तुलना को लम्बे पद में विच्छेद करता है (5:13–17) की उसके सारांष के साथ 5:18–20 में।

5:14

एन ए एस बी, एन के जे वी, जे बी ''मृत्यु ने राज्य किया''

एन आर एस वी ''मृत्यु ने प्रभुता की''

टी इ वी ''मुत्यु का राज्य''

मृत्यु ने राजा के समान राज्य किया (रोमियों.5:17, 21)। यह पाप और मृत्यु का व्यक्तिरूपण इस अध्याय और अध्याय 6 में प्रस्तुत किया गया है। सारे संसार द्वारा मृत्यु का अनुभव मानवजाति के सार्वभौमिक पाप को साबित करता है। आयत 17 और 21 में अनुग्रह को व्यक्तिरूप दिया गया है। अनुग्रह राज्य करता है। मानव के पास चुनाव है (पुराने नियम के दो रास्ते): मृत्यु और जीवन। आपके जीवन में कौन राज्य करता है?

''जिन्होंने उस आदम के अपराध की नाई
जो उस आनेवाले का चिन्ह है,
पाप न किया''

आदम ने परमेष्वर द्वारा कही गई आज्ञा का उल्लंघन किया यहाँ तक कि हव्वा ने भी ऐसा पाप नहीं किया। उन्होंने आदम से पेड़ के बारे में सुना था परमेष्वर से सीधे नहीं। मूसा तक आदम द्वारा आए मनुश्य आदम के विद्रोह से प्रभावित हुए। उन्होंने परमेष्वर की सीधी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया, परन्तु 1:18–32, जो कि निष्चय ही इस धर्मषास्त्रीय संदर्भ का भाग है, प्रगट करता है कि उन्होंने उस ज्योति का उल्लंघन किया जो उनमें थी जो उन्हें प्रकृति से मिली थी इसलिए वह विद्रोह और पाप के लिए ज़िम्मेदार हैं। आदम का पाप का उत्तराधिकार उनकी संतान में फैल गया।

एन ए एस बी, एन के जे वी, एन आर एस वी ''जो उन्हीं के समान है जो आने वाले हैं''

टी इ वी ''आदम उनका चिन्ह हैं जो आने वाले हैं''

जे बी ''आदम उनका पूर्व चिन्ह हैं जो आने वाले हैं''

यह स्पश्ट रूप से आदम–मसीह के रूपक को व्यक्त करता है (1कुरि.15:21–22, 45–49; फिलि.2:6–8)। दोनों ही जाति के षुरूवात के रूप में देखे जाते हैं (1कुरि.15:45–49)। आदम पुराने नियम से एक मात्र व्यक्ति हैं जिन्हें नए नियम द्वारा ''रूपक'' कहा गया है। देखिए विषेश षीर्शक : सांचा (टूपोस) 6:17।

रोमियों.5:15—17

15 पर जैसा अपराध की दशा है, वैसी अनुग्रह के बरदान की नहीं, क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मरे, तो परमेश्वर का अनुग्रह और उसका जो दान एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के अनुग्रह से हुआ बहुतेरे लागों पर अवश्य ही अधिकाई से हुआ।

16 और जैसा एक मनुष्य के पाप करने का फल हुआ, वैसा ही दान की दशा नहीं, क्योंकि एक ही के कारण दण्ड की आज्ञा का फैसला हुअ, परन्तु बहुतेरे अपराधों से ऐसा वरदान उत्पन्न हुआ, कि लोग धर्मी ठहरे।

17 क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कराण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूमी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।

5:15—19

यह साबित किया हुआ तर्क है सदृष्य वाक्यांषों का प्रयोग करके। एन ए एस बी, एन आर एस वी और टी इ वी अनुच्छेद को आयत 18 में बाँट देते हैं। जबकी यू बी एस, एन के जे वी और जे बी इसका अनुवाद एक ही भाग के रूप में करते हैं। याद रखिए कि वास्तविक लेखक के अर्थ का अनुवाद करने की कुन्जी है एक अनुच्छेद में एक मुख्य सत्य है। ध्यान दीजिए कि 15, 16 में *''कई''* 12, 18 के *''सभी''* का समानार्थ है। यह यषा.53:11—12 और रोमियों.5:6 में भी सत्य है। इन षब्दों को आधार बनाकर कोई धर्मषास्त्रीय भिन्नता नहीं बनानी चाहिए (कैल्वीन के चुने हुए और न—चुने हुए)।

5:15

''मुफ्त वरदान''

इस संदर्भ में 'वरदान' के लिए दो अलग अलग षब्द हैं — *करिसमा,* 5:15, 16 (6:23) और *डोरेया/डोरामा,* 5:15, 16, 17 (देखिए नोट 3:24) — पर ये समानार्थ हैं।यह उद्धार के बारे में षुभ समाचार है। यह मसीह यीषु द्वारा परमेष्वर का मुफ्त वरदान है (रोमियों.3:24; 6:23; इफि.2:8, 9) उन सभी के लिए जो मसीह पर विष्वास करते हैं।

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। आदम का पाप सारी मानवजाति के लिए मृत्यु लाया। यह आयत 17 के सदृष्य है।

''अधिकाई''

देखिए विषेश षीर्शक 15:13।

5:16

''दण्ड...धर्मी ठहराया जाना''

यह दोनों की कानूनी षब्द हैं। अक्सर पुराना नियम भविश्यद्वक्ताओं के संदेष को न्यायालय मंच पर प्रगट करता है। पौलुस इस सांचे का प्रयोग करते हैं (रोमियों.8:31—34)।

5:17

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। आदम के आज्ञा उल्लंघन का परिणाम सारे मनुश्यों की मृत्यु है।

''जो बहुत अधिक पाते हैं''

आयत 18–19 धर्मषास्त्रीय रूप से तौल में नहीं हैं। यह वाक्यांष रोमियों.1–8 के संदर्भ से अलग नहीं किया जा सकता और सार्वभौम के सबूत मूलपाठ के रूप में प्रयोग किया जाता है (कि सभी अन्त में बच जाऐंगे)। मनुश्य को आवष्यक है कि वह मसीह में परमेष्वर के वरदान को ग्रहण करे (रोमियों.5:17[ख])। उद्धार सब के लिए मौजूद है पर इसे व्यक्तिगत रूप से ग्रहण करना आवष्यक है (यूह.1:12; 3:16; रोमियों.10:9–13)।

आदम के विद्रोह के एक कार्य ने सारी मानवजाति के विद्रोह को उत्पन्न किया। पाप का एक कार्य बहुत बढ़ गया। परन्तु मसीह में एक धार्मिक बलिदान ने बढ़कर प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तिगत पापों के साथ साथ पाप के साझा प्रभाव को ढाँप दिया। ''बहुत अधिक'' मसीह के कार्य पर ज़ोर दिया गया है (रोमियों.5:9, 10, 15, 17)। अनुग्रह की अधिकाई।

5:17, 18

''धार्मिकता का वरदान जीवन में राज्य करेगा...
जीवन का धर्मी ठहराया जाना''

यीषु परमेष्वर के वरदान और पतित मानवजाति की आत्मिक ज़रूरत को पूरा करने के लिए परमेष्वर का उपाय हैं (1कुरि.1:30)। इन सदृष्य वाक्यांषों का अर्थ हो सकता है (1) पापी मानवजाति को यीषु मसीह के पूर्ण कार्य के द्वारा परमेष्वर के सामने सही स्थान मिला जिसका परिणाम ''भक्तिपूर्ण जीवन'' है; (2) यह वाक्यांष ''अनन्त जीवन'' का समानार्थ है। संदर्भ पहले भाग को सही ठहराता है। धार्मिकता के लिए देखिए विषेश षीर्शक 1:17।

विषेश षीर्शक : परमेष्वर के राज्य में राज करना

मसीह के साथ राज करना ''परमेष्वर का राज्य'' के धर्मषास्त्रीय षिक्षा क्षेत्र का एक भाग है। यह पुराने नियम से लिया गया विचार है जहाँ परमेष्वर इस्राएल के सच्चे राजा थे (1षमू.8:7)। उन्होंने रूपक तौर पर राज किया (1षमू.8:7; 10:17–19) यहूदा गोत्र के वंष द्वारा (उत्प.49:10) और यिषै के परिवार द्वारा (2षमू.7)।

यीषु पुराने नियम की मसीह के बारे में भविश्यद्वाणी के पूरक हैं। उन्होंने बैतलहम में अपने जन्म द्वारा परमेष्वर के राज्य की षुरूवात की। यीषु के प्रचार का मध्य स्तम्भ परमेष्वर का राज्य बन गया। राज्य पूरी तरह से उन्हीं में आया (मत्ती.10:7; 11:12; 12:28; मरकुस.1:15; लूका.10:9, 11; 11:20; 16:16; 17:20–21)।

यह राज्य भविश्य भी है। यह वर्तमान है पर पूरा नहीं हुआ (मत्ती.6:10; 8:11; 16:28; 22:1–14; 26:29; लूका.9:27; 11:2; 13:29; 14:10–24; 22:16, 18)। पहले यीषु दुःख उठाने वाले दास के रूप में आए (यषा.52:13–53:12); नम्र होकर आए (जक. 9:9) पर वह राजाओं के राजा के रूप में वापस आएंगे (मत्ती.2:2; 21:5; 27:11–14)। ''राज करने'' का विचार ''राज्य'' के धर्मषास्त्रीय षिक्षा का भाग है। परमेष्वर ने राज्य यीषु के अनुयायियों को दिया है (देखिए लूका.12:32)।

मसीह के साथ राज्य करने के कई विचार और प्रष्न हैं:

1) क्या मूलपाठ यह साबित करता है कि परमेष्वर ने मसीह में विष्वासियों के जो ''राज्य'' दिया है वो ''राज'' करने को प्रगट करता है (मत्ती.5:3, 10; लूका.12:32)?

2) क्या पहली सदी में यहूदी चेलों को यीषु द्वारा कहे गए षब्द विष्वासियों को भी प्रस्तुत करते हैं (मत्ती19:28; लूका. 22:28–30)?

3) क्या पौलुस द्वारा इस जीवन में राज करने पर ज़ोर ऊपर के मूलपाठ के विपरीत है या फिर उसकी सराहना करने वाला है (रोमियों.5:17; 1कुरि.4:8)?

4) दुःख उठाना और राज करना कैसे सम्बन्धित है (रोमियों.8:17; 2तीमु.2:11–12; 1पत.4:13; प्रका.1:9)?

5) प्रकाषितवाक्य का बार बार दोहराया जाने वाला केन्द्रीय विशय है महिमित मसीह के रात्य को बाँटना।

क. पृथ्वी का, प्रका.5:10

ख. 1000 वर्ष का, प्रका.20:5, 6

ग. अनन्त का, प्रका.2:26; 3:21; 22:5 और दानि.7:14, 18, 27

रोमियों.5:18–21

18 इसलिये जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वेसा ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ। 19 क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे। 20 और व्यवस्था बीच में आ गई, कि अपराध बहुत हो, परन्तु जहां पाप बहुत हुआ, वहां अनुग्रह उस से भी कहीं अधिक हुआ। 21 कि जैसा पाप ने मृत्यु फैलाते हुए राज्य किया, वैसा ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनुग्रह भी अनन्त जीवन के लिये धर्मी ठहराते हुए राज्य करे।

5:18

एन ए एस बी ''वैसे ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ''

एन के जे वी ''वैसे ही एक व्यक्ति के धार्मिक कार्य के द्वारा मुफ्त वरदान सभी मनुश्यों के पास आया''

एन आर एस वी ''इसलिए एक व्यक्ति के धार्मिकता के काम ने सभी को धर्मी ठहरान का काम किया''

टी इ वी ''उसी तरह एक व्यक्ति के धार्मिकता का कार्य सभी मनुश्यों को स्वतंत्र करता है और उन्हें जीवन देता है''

जे बी ''इसलिए एक व्यक्ति के भले काम सबके लिए जीवन लाए और उन्हें धर्मी ठहराया''

यह ऐसा नहीं कह रहा है कि हरेक बच जाएगा। इस आयत का अनुवाद रोमियों के संदेष और इसके नज़दीकि संदर्भ से अलग नहीं किया जा सकता। यह यीषु मसीह के जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा मानवजाति के प्रभावषाली उद्धार को सम्बोधित करता है। मानवजाति को विष्वास और पष्चाताप के द्वारा सुसमाचार के अवसर का प्रतिउत्तर देना होगा (मरकुस.1:15; प्रेरित. 3:16, 19; 20:21)। परमेष्वर हमेषा पहल करते हैं (यूह.6:44, 65), परन्तु उन्होंने यह भी चुनाव किया है कि प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत तौर पर प्रतिउत्तर देना होगा (मरकुस.1:15; यूह.1:12; रोमियों.10:9–13)। उनका अवसर सबके लिए है (1तीमु.2:4, 6; 2पत.3:9; 1यूह.2:2), पर पाप का रहस्य यह है कि बहुत से ''नहीं'' कहेंगे।

'धार्मिकता का कार्य' या तो (1) यीषु का आज्ञाकारिता का पूरा जीवन और परमेष्वर का प्रकाषन है या (2) विषेश रूप से पापी मानवजाति के बदले उनकी मृत्यु। जैसे एक व्यक्ति के जीवन ने सबको प्रभावित किया (सभी यहूदियों को, यहो.7) वैसे ही एक निर्दोश जीवन ने भी सबको प्रभावित किया। यह दोनों कार्य सदृष्य है पर समान नहीं। सभी आदम के पाप से प्रभावित हुए, परन्तु सभी केवल सामर्थ रूप से यीषु द्वारा प्रभावित हुए परन्तु केवल विष्वासी ही धर्मी ठहराए जाएंगे। यीषु का कार्य भी मानव पाप को प्रभावित करता है, उन लोगों के लिए जो विष्वास और ग्रहण करते हैं, उनके भूतकाल, वर्तमान और भविश्यकाल के पापों पर।

<u>*5:18—19*</u>

''सभी मनुश्यों के लिए दण्ड...
सभी मनुश्यों को जीवन के लिए धर्मी ठहराया जाना...
बहुत से पापी बनाए गए...
बहुत से धर्मी बनाए गए''

यह सदृष्य वाक्यांष है यह बताने के लिए कि ''बहुत'' षब्द सीमित नहीं पर बहुअर्थ का षब्द है। यही समानता यषा.53:6 के ''सभी'' और 53:11, 12 के ''बहुत'' में पाई जाती है। ''बहुत'' षब्द का प्रयोग सीमित रूप से नहीं किया जा सकता कि ये सारी मानवजाति के लिए परमेष्वर द्वारा उद्धार के अवसर को सीमित कर दे (कैल्वीन के, चुने हुए और न—चुने हुए)।

दो क्रिया विभक्तियों पर ध्यान दीजिए। वे परमेष्वर के कार्य को सम्बोधित करती हैं। परमेष्वर के चरित्र के सम्बन्ध में मनुश्य का पाप और वे परमेष्वर के चरित्र के सम्बन्ध में धर्मी ठहराए गए।

<u>*5:19*</u>

''एक व्यक्ति की अनाज्ञाकारिता...
एक व्यक्ति की आज्ञाकारिता''

पौलुस पुराने नियम के साझे धर्मषास्त्रीय विचार का प्रयोग कर रहे हैं। एक व्यक्ति के कार्य ने पूरे समाज को प्रभावित किया (आकान यहो.7)। आदम और हव्वा के आज्ञा उल्लंघन ने सारी सृश्टि को परमेष्वर के न्याय के सामने खड़ा कर दिया (उत्प.3)। आदम के विद्रोह के परिणामस्वरूप सारी सृश्टि प्रभावित हुई (रोमियों.8:18—25)। संसार वो ही नहीं है। मनुश्य भी वो ही नहीं हैं। मृत्यु पृथ्वी के जीवन का अन्त बन गई (उत्प.3)। यह वो संसार नहीं हैं जैसा परमेष्वर चाहते थे।

इसी विचार में यीषु कि एक आज्ञाकारी कार्य, कलवरी, का परिणाम (1) एक नया युग; (2) नए लोग; (3) एक नई वाचा हुई। इस प्रतिनिधित्व धर्मषास्त्र को ''आदम—मसीह रूपक'' कहते हैं (फिलि.2:6)। यीषु दूसरे आदम हैं। वह पतित मानवजाति के लिए नई षुरूवात हैं।

''धर्मी बनाया''

देखिए विषेश षीर्शक 1:17।

<u>*5:20*</u>

एन ए एस बी ''और व्यवस्था बीच में आ गई कि अपराध बहुत हों''

एन के जे वी ''व्यवस्था आ गई, कि अपराध बहुत हों''

एन आर एस वी ''पर व्यवस्था बीच में आ गई, इसके परिणामस्वरूप अपराध बढ़ गए''

टी इ वी ''व्यवस्था को परिचित कराया गया ताकि गलत काम बढ़ जाऐं''

जे बी ''जब व्यवस्था आई, तो इसने गिरने के अवसरों को बढ़ा दिया''

व्यवस्था का उद्देष्य मानवजाति का उद्धार करना नहीं था बल्की उसकी ज़रूरत और लाचारी को प्रगट करना था (इफि.2:1—3) ताकि उन्हें मसीह के पास ला सके (रोमियों.3:20; 4:15; 7:5; गला.3:19, 23—26)। व्यवस्था अच्छी है परन्तु मनुश्य पापी है।

''अनुग्रह उस से भी कहीं अधिक हुआ''

इस भाग में यह पौलुस का प्रमुख बोझ है। पाप भयानक और कुटिल है पर अनुग्रह इसके कठोर प्रभाव के ऊपर है। यह पहली सदी की षुरूवाती कलीसिया को उत्साहित करने का तरीका था। वे मसीह में जयवंत थे (रोमियों.5:9–11; 8:31–39; 1यूह.5:4)। यह अधिक पाप करने के लिए प्रमाणपत्र नहीं है। देखिए विषेश षीर्शक : पौलुस द्वारा *हुपर* मिश्रित षब्दों का प्रयोग 1:30।

5:21

दोनों ''पाप'' और ''अनुग्रह'' को व्यक्तिरूपक बनाकर राजा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पाप सार्वभौमिक मृत्यु के सामर्थ द्वारा राज करता है (रोमियों.5:14, 17)। अनुग्रह थोपी गई धार्मिकता के सामर्थ द्वारा, जो मसीह के पूरा किए हुए कार्य तथा विष्वासी के व्यक्तिगत विष्वास और पष्चाताप से सुसमाचार का प्रतिउत्तर देने से आती है, राज कारता है।

परमेष्वर के नए जन, मसीह की देह, मसीही भी मसीह के साथ राज करेंगे (रोमियों.5:17; 2तीमु.2:12; प्रका.22:5)। यह पृथ्वी पर या 1000 वर्श के राज में देखा जा सकता है (प्रका.5:9–10; 20)। बाइबल भी इसी सत्य के बारे में बात करती है यह साबित करते हुए कि राज्य संतों को दिया गया है (मत्ती.5:3, 10; लूका.12:32; इफि.2:5–6)। देखिए विषेश षीर्शक : परमेष्वर के राज्य में राज करना 5:17।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) परमेष्वर की ''धार्मिकता'' की व्याख्या कीजिए।

2) ''पदवीय षुद्धिकरण'' और ''प्रगतिषील सम्पत्ती'' के बीच क्या धर्मषास्त्रीय अन्तर है?

3) क्या हम अनुग्रह या विष्वास द्वारा बचाए गए है (इफि.2:8–9)?

4) मसीहियों को क्यों दुःख भोगना पड़ता है?

5) क्या हम उद्धार पा चुके हैं या उद्धार पा रहे हैं या उद्धार पाएंगे?

6) क्या हम पापी हैं क्योंकि हम पाप करते हैं या हम पाप करते हैं क्योंकि हम पापी हैं?

7) इस अध्याय में ''धर्मी ठहराया जाना'', ''उद्धार या बचाया जाना'' और ''मेलमिलाप'' षब्द कैसे सम्बन्धित हैं?

8) परमेष्वर मुझे क्यों दूसरे व्यक्ति के पाप का ज़िम्मेदार ठहराते हैं जो हज़ारों साल पहले जीवित थे (रोमियों.5:12–21)?

9) आदम और मूसा के बीच के समय में क्यों सभी मर गए जब उस समय पाप गिना नहीं जाता था (रोमियों.5:13–14)?

10) क्या षब्द ''सभी'' और ''बहुत'' समानार्थ हैं (रोमियों.5:18–19; यषा.53:6, 11–12)?

रोमियों – 6

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
पाप के लिए मर गए पर मसीह में जीवित हैं	पाप के लिए मर गए, परमेष्वर के लिए जीवित हैं	मसीह के साथ मरना और पुनः जीवित होना	पाप के लिए मर गए पर मसीह में जीवित हैं	बपतिस्मा
6:1—11	6:1—14	6:1—4	6:1—4	6:1—7
		6:5—11	6:5—11	
				6:8—11
				पवित्रता, पाप मालिक नहीं
6:12—14	6:12—14	6:12—14	6:12—14	6:12—14
धार्मिकता के दास	पाप के दास से परमेष्वर के दास	दो दासत्व	धार्मिकता के दास	मसीही पाप के दासत्व से स्वतंत्र है
6:15—23	6:15—23	6:15—19	6:15—19	6:15—19
				पाप का प्रतिफल और पवित्रता का प्रतिफल
		6:20—23	6:20—23	6:20—23

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद
2) दूसरा अनुच्छेद
3) तीसरा अनुच्छेद
4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि

क. अध्याय 6:1–8:39 एक ही विचार का भाग है जो मसीहियों के पाप के साथ सम्बन्ध को प्रगट करता है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण चर्चा है क्योंकि सुसमाचार मसीह द्वारा परमेष्वर के जिसके हम योग्य नहीं ऐसे मुफ्त अनुग्रह पर आधारित है (रोमियों. 3:21–5:21) इसलिए पाप कैसे विष्वासी को प्रभावित करता है? अध्याय 6 दो काल्पनिक प्रष्नों पर आधारित है, आयत 1 और 15। आयत 1 का सम्बन्ध 5:20 से है और 15 का सम्बन्ध 6:14 से है। पहला पाप की जीवनषैली से सम्बन्धित है और दूसरा व्यक्तिगत रूप से पाप के कार्य से सम्बन्धित है। यह प्रगट है कि 1–14 आयत पाप के दासत्व से विष्वासी की स्वतंत्रता को प्रगट करता है और 15–23 विष्वासी की सेवा के लिए स्वतंत्रता को प्रगट करता है जैसे वह पहले पाप की सेवा करते थे – पूरी तरह और पूर्ण हृदय से।

ख. षुद्धिकरण दोनों है :

1) पदवी (उद्धार में धर्मी ठहराए जाने के समान, 3:21–5:21)

2) प्रगतिषील तौर पर मसीहसमानता
(क) 6:1–8:39 इस सत्य को धर्मषास्त्रीय रूप से व्यक्त करता है

(ख) 12:1–15:13 इसे व्यवहारिक रूप से व्यक्त करता है (देखिए विषेश षीर्शक 6:4)

ग. अक्सर टीका लेखक धर्मषास्त्रीय रूप से धर्मी ठहराए जाने के विशय और पदवीय षुद्धिकरण में अन्तर कर देते है ताकि बाइबलीय अर्थ को समझा जा सके। वास्तव में वे अनुग्रह का क्रमानुसार कार्य है (पदवीय, 1कुरि.1:30; 6:11)। दोनों की ही तकनीक एक ही है– परमेष्वर का अनुग्रह यीषु के जीवन और मृत्यु में प्रगट हुआ जिसे विष्वास से ग्रहण करना आवष्यक है (इफि.2:8–9)।

घ. यह अध्याय मसीह में परमेष्वर की संतान की पूर्ण परिपक्वता की षिक्षा देता है (पापरहित, 1यूह.3:6, 9; 5:18)। अध्याय 7 और 1यूह.1:8–2:1 विष्वासियों के पाप में ही लगे रहने के सत्य को प्रगट करता है।

पौलुस के क्षमा के विचार में सबसे अधिम मतभेद नैतिकता के तर्क की वजह से था। यहूदी चाहते थे कि भक्तिपूर्ण जीवन यह माँग करता है कि नया परिवर्तित व्यक्ति मूसा की व्यवस्था के सदृष्य कार्य करे। यह मानना होगा कि कुछ ने किया और पौलुस के विचारो को पाप करने के प्रमाणपत्र के रूप में प्रयोग किया (रोमियों.6:1, 15; 2पत.3:15–16)। पौलुस विष्वास करते थे कि अन्दर बसने वाली आत्मा, न कि बाहरी कानून, भक्तिपूर्ण मसीह समान अनुयायियों को उत्पन्न करता है। वास्तव में यह पुरानी वाचा (व्यव.27–28) और नई वाचा (यिर्म.31:31–34; यहे.36:26–27) के बीच अन्तर है।

ङ. बपतिस्मा धर्मी ठहराए जाने और षुद्धिकरण की आत्मिक सच्चाई का षारीरिक नमूना है। रोमियों में पदवीय षुद्धिकरण (धर्मी ठहराया जाना) और अनुभवीय षुद्धिकरण (मसीह की समानता) दोनों ही सिद्धान्तों पर ज़ोर दिया गया है। उनके साथ दफनाया जाना (6:4) उनके साथ क्रूस पर चढ़ाऐ जाने के सदृष्य है (6:6)।

च. मसीही जीवन में परीक्षाओं और पाप पर विजय पाने की कूंजी है :

1) जानों कि तुम मसीह में कौन हो। जानों कि उन्होंने तुम्हारे लिए क्या किया। तुम पाप से स्वतंत्र हो। तुम पाप के लिए मर चुके हो।

2) अपने प्रतिदिन के जीवन में मसीह के साथ अपने स्तर को पहचानो।

3) हम अपने नहीं हैं। हमें अपने स्वामी की सेवा और उनकी आज्ञा का पालन करना है। हम प्रेम और धन्यवाद से उनकी सेवा करते हैं जिन्होंने हमसे प्रेम किया।

4) मसीही जीवन अलौकिक जीवन है। यह, उद्धार के समान, मसीह में परमेष्वर का वरदान है। वह इसे षुरू करते हैं और सामर्थ देते हैं। हमें पष्चाताप और विष्वास में प्रतिउत्तर देना है, दोनों बार षुरू में और लगातार।

5) पाप के साथ मत खेलो। जो यह है इसे वही षीर्शक दो। इससे मुड़ जाओ; इससे भाग जाओ। स्वयं को परीक्षा की जगह पर मत खड़ा करो।

6) पाप एक आदत है जो तोड़ी जा सकती है पर इसमें समय, प्रयत्न और इच्छा षक्ति लगती है।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.6:1–7

1 सो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो?

2 कदापि नहीं, हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताएं?

3 क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया?

4 सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।

5 क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।

6 क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।

7 क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा।

6:1

एन ए एस बी ''क्या हम लगातार पाप करते रहें ताकि अनुग्रह बढ़ सके''

एन के जे वी ''तो क्या हम लगातार पाप में रहें कि अनुग्रह बहुत हो''

एन आर एस वी ''तो क्या हम लगाता पाप में ही रहें कि अनुग्रह बढ़ता जाऐ''

टी इ वी ''कि हम लगातार पाप में जीवन बिताते रहें कि परमेष्वर का अनुग्रह बढ़े''

जे बी ''क्या यह ऐसा बताता है कि हम पाप में रहें ताकि अनुग्रह के लिए बड़ा अवसर हो''

यह साफ तौर पर प्रष्न करता है कि क्या मसीहियों को ''पाप के साथ रहना'' या ''पाप को गले लगाना'' चाहिए? यह प्रष्न 5:20 की ओर संकेत करता है। पौलुस काल्पनिक विरोधी का प्रयोग करते हैं अनुग्रह के दुरूपयोग के बारे में चर्चा करने के लिए (1यूह.3:6, 9; 5:18)। परमेष्वर का अनुग्रह और दया विद्रोही जीवन बिताने का प्रमाणपत्र देने के उद्देष्य से नहीं दिया गया।

पौलुस के सुसमाचार के संदेष कि मसीह द्वारा उद्धार परमेष्वर की ओर से दिया गया मुफ्त वरदान है (रोमियों.3:24; 5:15, 17; 6:23) ने धार्मिक जीवनषैली के बारे में कई प्रष्न खड़े कर दिए हैं। कैसे मुफ्त वरदान नैतिक धार्मिकता ला सकता है? धर्मी ठहराया जाना और षुद्धिकरण को अलग नहीं किया जाना चाहिए (मत्ती.7:24–27; लूका.8:21; 11:28; यूह.13:17; रोमियों.2:13; याक.1:22–25; 2:14–26)।

इस जगह पर मैं एफ. एफ. ब्रूस के पॉलः अपोस्टल ऑफ द हार्ट सैट फ्री, से कुछ कहना चाहता हूँ, ''मसीहियों का बपतिस्मा उनके पुराने अस्तित्व और मसीह में नए जीवन का षुरूवाती कदम हैः यह उनके पुराने चाल चलन के लिए उनकी मृत्यु का चिन्ह है, इसलिए बपतिस्मा पाए हुए विष्वासी का पाप में लगे रहना वैसा ही है जैसे कि एक छुड़ाया हुआ दास अपने पुराने मालिक के दासत्व में रहता है (रोमियों.6:1–4, 15–23) या फिर जैसे एक विधवा अपने 'पति के कानून के अधिन' रहती है'' पृश्ठ.281–282 (रोमियों.7:1–6)।

जेम्स एस स्टीवर्ट की पुस्तक, ए मैन इन क्राइस्ट में लिखते हैं, ''प्रेरितो के विचार का केन्द्र और संस्कृति रोमियों 6 में पाई जाती है। यहाँ पर पौलुस दृढ़ता पूर्वक हृदय और चेतना को यह पाठ सीखा रहे हैं कि मसीह के साथ उनकी मृत्यु में षामिल होना एक विष्वासी के लिए पूरी तरह से पाप से अलग होना है'' पृश्ठ.187–188।

6:2

''ऐसा कभी न हो''

यह इच्छा या प्रार्थना को प्रगट करता है। यह पौलुस का काल्पनिक विद्रोही को उत्तर देने का तरीका था। यह विष्वास न करने वाली मानवजाति के नासमझपन और अनुग्रह का दुरूपयोग करने के प्रति पौलुस के भौचक्के रह जाने और भयभीत होने को प्रगट करता है (रोमियों.3:4, 6)।

''हम जो पाप के लिए मर चुके हैं''

इसका अर्थ है ''हम मर चुके हैं''। एकवचन में 'पाप' षब्द का प्रयोग इस पूरे अध्याय में किया गया है। यह प्रतित होता है कि यह आदम से आए हमारे पाप के स्वभाव को प्रगट करता है (रोमियों.5:12–21; 1कुरि.15:21–22)। पौलुस अक्सर मृत्यु को रूपक तौर पर प्रयोग करके मसीह के साथ विष्वासियों के नए सम्बन्ध को प्रगट करते हैं। वे अब पाप के अधीन नहीं हैं।

''अब भी उसमें जीवन बिताते हैं''

वास्तव में ''चलते'' हैं। यह रूपक या तो हमारी जीवनषैली विष्वास (इफि.4:1; 5:2, 15) या फिर जीवलषैली पाप पर ज़ोर देने के लिए प्रयोग किया गया है (रोमियों.4)। विष्वासी कभी पाप में खुष नहीं हो सकते।

6:3–4

''बपतिस्मा लिया...गाड़े गए''

यह व्याकरण रचना बाहरी ऐजेन्ट द्वारा पूरे किए कार्य को प्रगट करती है, यहाँ पर पवित्र आत्मा। इस संदर्भ में वे समान हैं।

विषेश षीर्शक : बपतिस्मा

युनानी भाशा में बपतिस्मा के लिए आदेषात्मक तृतीयपुरूश, मनफिराव के लिए आदेषात्मक द्वतीयपुरूश का प्रयोग है। आदेषात्मक द्वतीयपुरूश का प्रयोग आदेषात्मक तृतीयपुरूश बपतिस्मा से बढकर मनफिराव केलिए पतरस की प्राथमिक माँग हें। यह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला (मत्ती.3:2) और यीषु के (मत्ती.4:7) प्रचार के षब्दबल से अग्रित किया है। मनफिराव आत्मिक परिवर्तन की कुंजी तथा बपतिस्मा उस परिवर्तन का बाहरी प्रगटन है। नए नियम में बिना बपतिस्मा प्राप्त विष्वासियों के बारे में कोई जानकारी नहीं है। प्रारम्भिक कलीसिया के लिए बपतिस्मा अपने विष्वास की सार्वजनिक घोशणा थी। यह मसीह में अपने विष्वास को कबूलने का अवसर है न कि उद्धार पाने का एक तरीका। यह जानना आवष्यक है कि पतरस के दूसरे प्रचार में बपतिस्मा के विशय में चर्चा नहीं है। परन्तु मनफिराव के विशय में है (प्रेरित.3:19; लूका.24:17)। बपतिस्मा यीषु के

द्वारा रखा गई एक मिसाल है (मत्ती.3:13–18) यह यीषु का आदेष भी है (मत्ती.28:19)। उद्धार के लिए बपतिस्मा की आवष्यकता के प्रति जो आधुनिक सवाल है जिसका ज़िक्र नए नियम मे नहीं है; अवष्य है कि प्रत्येक विष्वासी बपतिस्मा पाए। हालाँकी हरेक को धार्मिक अनुश्ठान के प्रति सावधान रहना है। उद्धार विष्वास का मामला है, न कि सही जगह, सही षब्द, सही रस्म का मामला।

''मसीह यीषु में''

यहाँ पर 'मैं' षब्द का प्रयोग महान आदेष (मत्ती.28:20) के सदृष्य में किया गया है जहाँ पर नए विष्वासियों ने पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम में बपतिस्मा लिया। यहाँ विभक्ति प्रत्य का प्रयोग यह जाताने को हुआ कि 1कुरि.12:13 में आत्मा के बपतिस्मा द्वारा वे मसीह यीषु की देह में हैं। समानार्थ तरीके से विष्वासियों को सूचित करने के लिए पौलुस ने ''से'' और ''में'' का प्रयोग किया। यह एक स्थान निर्धारक क्षेत्र है। मसीह में अस्तित्व रखते हुए विष्वासी जीवन बिताएंगे तथा चेश्ठा करेंगे। यह विभक्ति प्रत्य घनिश्ठ एकता, संगति के क्षेत्र, दाखलता और डाली के सम्बन्ध को प्रगट करती है। विष्वासी मसीह की मृत्यु और जी उठने के साथ जुड़कर (रोमियों.6:5) उनके राज्य में परमेष्वर के प्रति सेवाकार्य में, आज्ञाकारीता में पहचाने जाऐंगे।

''उनकी मृत्यु में..
उनके साथ गाड़े गए''

डुबकी बपतिस्मा मृत्यु और गाड़े जाने को चित्रित करता है (रोमियों.6:5; कुलु.2:12)। यीषु ने स्वयं की मृत्यु के प्रति बपतिस्मा को रूपक के तौर पर प्रयोग किया (मरकुस.10:38, 39; लूका.12:50)। यहाँ पर जोर बपतिस्मा के उपदेष के लिए नहीं परन्तु मसीही के यीषु की मृत्यु और गाड़े जाने के साथ घनिश्ठ सम्बन्ध पर है। विष्वासी मसीह के बपतिस्मे, उनके चरित्र, उनके बलिदान, उनके लक्ष्य के साथ पहचाने जाऐंगे। विष्वासियों के ऊपर पाप का कोई अधिकार नहीं है।

6:4

''उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से
हम उनके साथ गाड़े गए''

इस अध्याय में पौलुस कई समासयुक्त (के साथ) पदों का प्रयोग करते हैं (इफि.2:5–6)।

1) *सुन + थाप्टो* – साथ गाड़े गए (रोमियों.6:4, 8; कुलु.2:12,)

2) *सुन + स्टाउरू* – साथ जुट गए (रोमियों.6:5)

3) *सुन + अज़ो* – साथ जीएंगे (रोमियों.6:8; 2तीमु.2:11)

(साथ मर गए और साथ जीएंगे)

''ताकि हम भी नए जीवन
की सी चाल चलें''

उद्धार से पवित्रीकरण का परिणाम चाहते हैं। क्योंकि विष्वासी यीषु के द्वारा परमेष्वर के अनुग्रह को जानते हैं, इसलिए उनका जीवन बदलना आवष्यक है। हमारा नया जीवन हमें उद्धार नहीं दिलाता, पर उद्धार का परिणाम है नया जीवन (रोमियों.6:16, 19; इफि.2:8–9, 10; याक.2:14–26)। यह न तो चुनाव है और न ही सवाल, विष्वास और कार्य परन्तु अनुक्रमिक सिलसिला है।

विषेश षीर्शक : षुद्धिकरण

नया नियम यह सिखाता है कि जब कोई पापी मनफिराव और विष्वास के साथ यीषु की ओर मुड़ता है तब वह तत्कालिक रूप से धर्मी और षुद्ध ठहराया जाता है। यह उसकी यीषु में नई पदवी है। यीषु की धार्मिकता उसे पहनाई गई (रोमियों.4)।

उसे धर्मी और पवित्र के रूप में घोशित किया गया (परमेष्वर का न्यायलय सम्बन्धित कार्य)।

नया नियम विष्वासियों से अनुरोध करता है कि वे पवित्रताई में जीएं। यह यीषु के द्वारा पूर्ण किए हुए काम के प्रति ईष्वरिय पदवी तथा प्रतिदिन के जीवन में मसीह समानता के प्रति एक बुलाहट भी है। हालाँकी उद्धार मुफ्त है पर षुद्धीकरण के लिए सब कुछ खर्च करना है।

प्राथमिक प्रतिक्रिया	*प्रगतिषील मसीह समानता*
प्रेरित.20:23; 26:18	रोमियों.6:19
रोमियों.15:16	2कुरि.7:1
1कुरि.1:2–3; 6:11	1थिस्स.3:13; 4:3–4, 7; 5:23
2थिस्स.2:13	1तीमु.2:15
इब्रा.2:11; 10:10, 14; 13:12	2तीमु.2:21
1पत.1:1	इब्रा.12:14
	1पत.1:15–16

''मसीह जिलाए गए''

इस संदर्भ में पुत्र का वचन और कार्य पिता द्वारा स्वीकृति और मंजूरी दो महान घटना से प्रदर्षित किया गया है ।

1) यीषु का मुर्दों में से जी उठना ।
2) यीषु का स्वर्गारोहण पिता के दहिनी ओर ।

''पिता की महिमा''

महिमा के लिए 3:23, पिता के लिए 1:7 विषेश षीर्शक देखिए।

6:5

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। यदि षब्द के प्रयोग द्वारा लेखक यह बताना चाहते हैं कि इसको पढनेवाले विष्वासी ही होंगे।

''समानता में उनके साथ
जुट गए हैं''

ये इस प्रकार अनुवाद किया जाना चाहिए कि हम उनकी समानता में निरन्तर साथ साथ मिल गए हैं, या निरन्तर उनके साथ साथ बोए गए हैं। धर्मषास्त्र के आधार पर यह सच्चाई यूह.15 के ''बने रहने'' की ओर संकेत करता है। यदि विष्वासीगण यीषु की मृत्यु में सहभागी बने हैं तो (गला.2:19–20; कुलु.2:20; 3:3–5) धर्मषास्त्र के आधार पर वे उनके जी उठने में भी सहभागी होंगे (रोमियों.6:10)।

बपतिस्मा की तुलना मृत्यु के साथ इस लिए की गई कि

1) हम पुराने जीवन और वाचा के लिए मारे गए।

2) अब हम आत्मा और नई वाचा में जीवित हैं।

इसलिए मसीही बपतिस्मा पुराने नियम के अन्तिम नबी यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बपतिस्मे से भिन्न है। बपतिस्मा प्रारम्भीक कलीसिया के लिए अपने विष्वास की सार्वजनिक घोशणा करने का एक अवसर था। बपतिस्मा का षरूवाती तरीका यह था कि एक व्यक्ति को कहना चाहिए कि ''मैं यीषु पर विष्वास करता हूँ'' (रोमियों.10:9–13)। पहले जो अनुभव हूआ उसकी सार्वजनिक घोशणा और रस्मी प्रक्रिया है बपतिस्मा। बपतिस्मा पाप क्षमा, उद्धार, आत्मा के आवास का एक ढाँचा नहीं है, परन्तु यह उनकी

सार्वजनिक प्रतिज्ञा तथा घोशणा का अवसर है (प्रेरित.2:38)। यह किसी भी प्रकार से एक विकल्प नहीं है। यीषु ने आदेष दिया (मत्ती.28:19–20), और आदर्ष रखा (मत्ती.3; मरकुस.1)। यह प्रेरितों के प्रचार का भाग तथा उनके काम की कार्यविधि बना।

6:6

एन ए एस बी ''जानते हैं कि हमारा पुराना व्यक्तिमत्व उनके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया''

एन के जे वी ''जानते हैं कि हमारा पुराना मनुश्यत्व उनके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया''

एन आर एस वी ''हम जानते हैं कि हमारा पुराना व्यक्तित्व उनके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया''

टी इ वी ''और हम यह जानते हैं; हमारी पुरानी प्रकृति यीषु और उनके क्रूस के साथ मृत्यु में डाल दिए गए''

जे बी ''हमें जानना ज़रूरी है कि हमने अपने प्राचिन व्यक्तिमत्व को उनके साथ क्रूस में चढ़ा दिया है''

अर्थात हमारा पुराना मनुश्यत्व एक बार और हमेषा के लिए आत्मा के द्वारा क्रूस पर चढ़ा दिया गया। यह सच्चाई जयवन्त मसीही जीवन के लिए अत्यन्त आवष्यक है। विष्वासियों को पाप के प्रति उनके नए रिष्ते को समझना आवष्यक है (गला.2:20; 6:14)। मानवजाति का प्राचीन और पतित मनुश्यत्व (आदम का स्वभाव) यीषु के साथ मारा गया (रोमियों.6:7; इफि.4:22; कुलु. 3:9)। इसलिए विष्वासी होने के कारण पाप के प्रति जो चुनाव आदम के पास था वह आज हमारे पास है।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''ताकि पाप का षरीर दूर किया जाए''

एन आर एस वी ''ताकि पाप का षरीर व्यर्थ हो जाए''

टी इ वी ''ताकि पापमय मनुश्यत्व का सामर्थ नश्ट किया जाए''

जे बी ''कि पापमय षरीर नश्ट किया जाए''

पौलुस यहाँ षरीर (*सोमा*) षब्द के द्वारा कई सम्बन्ध–सूचक षब्द–समूह का प्रयोग करते हैं।

1) पाप का षरीर (रोमियों.6:6)

2) मृत्यु का षरीर (रोमियों.7:24)

3) षारीरिक देह (कुलु.2:11)

पौलुस भौतिक जीवन में इस समय के पाप और विद्रोह के विशय में कह रहे हैं। यीषु का नया पुररूत्थित षरीर धार्मिकता के नए समय का है (2कुरि.5:17)। विवाद का विशय भौतिकता नहीं (यूनानी तर्कषास्त्र), पर पाप और विद्रोह है। षरीर बुरा नहीं है। मसीहत अनन्त काल के जीवन में भौतिक षरीर की भूमिका को साबित करती है (1कुरि.15)। लेकिन भौतिक षरीर प्रलोभन, पाप, और स्वयं की एक रणभूमि है।

''दूर किया जाए'' का अर्थ है निश्क्रिय बनाना, निर्बल बनाना, या बाँझ बनाना, न कि नश्ट करना। यह षब्द पौलुस का पसन्दीदा षब्द है और कम से कम 25 से अधिक बार उन्होंने इसका प्रयोग किया है। देखिए विषेश षीर्शक 3:3। हमारा भौतिक षरीर नैतिक तौर से निश्पक्ष है परन्तु जारी रहने वाले आत्मिक संघर्श की रणभूमि है (रोमियों.6:12–13; 5:12–21; 12:1–2)।

6:7

''जो मर गया वो पाप से छूट गया''

अर्थात जो मर गए हैं वे चिरस्थाई रूप से पाप से छुट जाएेंगे। क्योकि विष्वासीगण मसीह में नई सृश्टि है तथा वे आदम के पतन के द्वारा प्राप्त पाप की गुलामी के चिरस्थाई रूप से छुटकारा पा चुके हैं (रोमियों.7:1–6)।

षुरूवाती अध्यायों में ''दोशमुक्ति या धर्मी ठहराए जाने'' के लिए जो षब्द प्रयोग किया गया था वह यहाँ पर ''छूट गया'' के लिए यूनानी भाशा में प्रयोग किया गया है। इस संदर्भ में ''छुट गया'' के कई अर्थ निकलते हैं (जैसे प्रेरित.13:38 में)। याद रखिए कि संदर्भ सही अर्थ बताते हैं न कि षब्दकोश और तकनीकी परीभाशा। षब्द का अर्थ तब बनता है जब वह वाक्य में हो और वाक्य का अर्थ तब बनता है जब वह अनुच्छेद में हो।

रोमियों.6:8–11

8 सो यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हमारा विश्वास यह है, कि उसके साथ जीएंगे भी।

9 क्योंकि यह जानते हैं, कि मसीह मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं, उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की।

10 क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिये एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है, तो परमेश्वर के लिये जीवित हैं।

11 ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो।

6:8

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। विष्वासी का बपतिस्मा मसीह के साथ उसकी मृत्यु को दर्षाता है।

''उनके साथ जीएंगे''

यह प्रसंग तुरन्त और वर्तमान की पूर्वीय स्थिति है न कि परिपूर्ण भविश्य काल की बातें। आयत 5 मसीह की मृत्यु के साथ हमारी सहभागिता बताता है और आयत 8 उनके साथ जीने की सहभागिता को बताता है। यह समान फैलाव है जो सामान्य विचार परमेष्वर के राज्य के प्रति बाइबल में निहित है। यह तुरन्त और वर्तमान तथा भविश्य का भी है। मुफ्त अनुग्रह संयम को पैदा करना है न कि खुली छुट।

6:9

''मरे हुओं में से जी उठकर''

नया नियम दृढ़ता से कहता है कि यीषु के जी उठने में त्रिएकता के तीनों व्यक्तित्व कार्यषील थे;

1) पवित्रात्मा (रोमियों.8:11)

2) पुत्र (यूह.2:19–22; 10:17–18) प्रायः

3) पिता (प्रेरित.2:24, 32; 3:15, 26; 4:10; 5:30; 10:40; 13:30, 33, 34, 37; 17:31; रोमियों.6:4, 9)। पिता का कार्य यीषु का जीवन, मृत्यु और षिक्षा की स्वीकृति का प्रमाणीकरण था। यह प्रेरितों के प्रचार का प्रमुख पहलू था। देखिए विषेश षीर्शक : *केरिग्मा* 2:14।

एन ए एस बी ''अब मृत्यु उनपर स्वामी नहीं है''

एन के जे वी, एन आर एस वी ''अब मृत्यु उनपर प्रभुता नहीं करेंगे''

टी इ वी ''फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होगी''

एन जे बी ''अब कभी भी मृत्यु उनके ऊपर अपना अधिकार नहीं रखेगी''

क्रिया *''कुरियो'', ''कुरियोस''* नामक षब्द से आया जिसका अर्थ है मालिक, स्वामी, पति और प्रभु। अब यीषु मृत्यु पर भी प्रभु हैं (प्रका.1:8)। यीषु मृत्यु की प्रभुता पर जय पाए हुए पहले व्यक्ति हैं (1कुरि.15)।

6:10

''क्योंकि वह जो मर गए तो
पाप के लिए मर गए''

हालांकी यीषु पापमय दुनिया में जीवित रहे परन्तु कभी पाप नहीं किया, इस पापी संसार ने उन्हें क्रूस पर चढ़ाया (इब्रा.10:10)। यीषु के मानवजाति के बदले में मरने की वजह से व्यवस्था की माँग पूरी हो गई और साथ ही पाप के मानव पर प्रभाव को भी उनकी मृत्यु ने समाप्त कर दिया (गला.3:13; कुलु.2:13–14)।

''सबके लिए एक ही बार''

पौलुस इस प्रसंग द्वारा यीषु के क्रूसीकरण को विषेश महत्व दे रहे हैं। उनके पाप के लिए एक ही बार मरने ने उनके अनुयायियों के पाप में मरने को द्रवित कर दिया है।

इब्रानियों की पत्री भी यीषु के बलिदान पर विषेश महत्व देती है। यह एक ही बार का उद्धार और पाप क्षमा का कार्य हमेषा रहता है। यह सम्पन्न किया गया पुनारावर्तक बलिदान का प्रतिज्ञा पूर्वक वचन है।

''परन्तु जो जीवित है
वह परमेष्वर के लिए जीवित है''

विष्वासी मसीह के साथ मारे गए; अब मसीह के द्वारा वे परमेष्वर के लिए जीवित हैं। सुसमाचार का लक्ष्य केवल पाप क्षमा (दोश मुक्ति) ही नहीं परन्तु परमेष्वर के प्रति रूतबा (षुद्धीकरण) भी है। सेवा के लिए विष्वासियों का उद्धार हुआ है।

''तुम अपने आप को
पाप के लिए मरा समझो''

यह विष्वासियों के लिए जारी रहने वाला तथा आदतन आदेष है। उनके लिए मसीह के कार्य के प्रति मसीहियों की समझ प्रतिदिन के जीवन के लिए निणयात्म है। षब्द समझ (रोमियों.4:4, 9) हिसाब किताब का षब्द का षब्द है जिसका अर्थ सावधानी से एक दूसरे से जोड़ो तथा उस ज्ञान पर कार्य करे। आयतें 1–11 मसीह में एक की पदवी (पदवीय षुद्धीकरण) तथा 12–13 उनके साथ चलने को विषेश महत्व (प्रगतिषील षुद्धीकरण) देते हैं। देखिए विषेश षीर्शक 6:4।

रोमियों.6:12–14

12 इसलिये पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे, कि तुम उस की लालसाओं के अधीन रहो।

13 और न अपने अंगो को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो, पर अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमश्ेवर को सौंपो, और अपने अंगो को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो।

14 और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं वरन अनुग्रह के आधीन हो।

6:12

''इसलिए पाप तुम्हारे

मरणहार षरीर में
राज्य न करे''

षब्द राज्य का सम्बन्ध 5:7–21 और 6:23 के साथ है। पौलुस कई धर्मषास्त्रीय विचारों को यहाँ जीवधारी ठहराते हैं।

1) मृत्यु ने राजा के रूप में राज्य किया (रोमियों.5:14, 17; 6:23)।

2) अनुग्रह ने राजा के रूप में राज्य किया (रोमियों.5:21)

3) पाप ने राजा के रूप में राज्य किया (रोमियों.6:12, 14)

अब वास्तविक सवाल यह है कि कौन आपके जीवन में राज्य कर रहा है? चुनाव के लिए विष्वासी के पास मसीह में सामर्थ है। लेकिन दुःख की बात यह है कि व्यक्ति, स्थानिय कलीसिया अनुग्रह का नाम लेते हुए स्वयं और पाप का चुनाव कर रही है।

6:13

''न अपने अंगों को
पाप को सौंपो''

यह जो काम चालु है उसकी रोकथाम के लिए कहा गया है। यह विष्वासियों के अन्दर की षक्ति जो पाप के प्रति है उसे प्रगट करती है (रोमियों.7:1 के बाद, 1यूह.1:8–2:1)। विष्वासी के मसीह के साथ सम्बन्ध ने पाप की भूमिका को हटा दिया है (रोमियों. 6:1–11)।

''हथियार''

यह षब्द एक सिपाही के अस्त्र–षस्त्र को दर्षाता है। हमारा भौतिक षरीर प्रलोभन की रणभूमि है (रोमियों.6:12–13; 12:1–2; 1कुरि.6:20; फिलि.1:20)। हमारा जीवन सार्वजनिक रूपसे सुसमाचार को प्रदर्षित करता है।

''पर अपने आप को
परमेष्वर को सौंपो''

यह एक निर्णयात्क कार्य के लिए बुलाहट है (रोमियों.12:1)। विष्वासी इस काम को विष्वास के द्वारा उद्धार के साथ षुरू करते हैं परन्तु उन्हें जीवन भर इसमें लगे रहना है।
इस आयत में कुछ समानता दिखाई पड़ती है।

1) एक जैसी क्रिया

2) रूपक–युद्ध

क. अधर्म के हथियार

ख. धार्मिकता के हथियार

3) विष्वासी अपने आप को या तो पाप के लिए नहीं तो परमेष्वर के लिए सौप सकते हैं।

याद रखिए यह आयत विष्वासियों से कहता है चुनाव अभी भी जारी है तथा युद्ध भी जारी है।

6:14

''और तुम पर पाप की
प्रभुता न होगी''

यह भविश्यकाल सम्बन्धि वाक्य है (भ.सं19:13)। विष्वासियों के ऊपर पाप इसलिए प्रभुता नहीं कर सकता क्योंकि पाप मसीह के ऊपर प्रभुता नहीं करता (रोमियों.6:9; यूह.16:33)।

रोमियों.6:15–19

15 तो क्या हुआ? क्या हम इसलिये पाप करें, कि हम व्यवस्था के आधीन नहीं वरन अनुग्रह के आधीन हैं? कदापि नहीं।

16 क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास होः और जिस की मानते हो, चाहे पाप के, जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिस का अन्त धार्मिकता है?

17 परन्तु परमश्ेवर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे।

18 और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।

19 मैं तुम्हारी शारीरिक दुर्बलता के कारण मनुष्यों की रीति पर कहता हूं, जैसे तुम ने अपने अंगो को कुकर्म के लिये अशुद्धता और कुकर्म के दास करके सौंपा था, वैसे ही अब अपने अंगों को पवित्राता के लिये धर्म के दास करके सौंप दो।

6:15

यह जैसे 6:1 में सवाल है वैसा ही एक सवाल है। एक मसीही का पाप के प्रति सम्बन्ध के विशय विभिन्न सवालों का जवाब मिलता है। 1 आयत में कहते हैं अनुग्रह पाप करने के लिए खुलि छुट नहीं है। आयत 15 एक मसीही को व्यक्तिगत तौर पर पाप के विरूद्ध सामना करना एवं लड़ने की आवष्यकता के विशय में बताता है। ठीक उसी समय एक विष्वासी को जितने उत्साह से वह पाप की सेवा करता था उतने ही उत्साह से परमेष्वर की सेवा करनी चाहिए।

एन ए एस बी, एन के जे वी, टी इ वी ''क्या हम पाप करें''

एन आर एस वी ''क्या हमें पाप करना चाहिए''

जे बी ''ताकि हम पाप से मुक्त हुए''

विलियम और फिलिप ने 6:15 का अनुवाद 6:1 जैसा ही किया है लेकिन यह सही अर्थ का नहीं लाता। कुछ अन्य अनुवादों को भी हम देखेंगे।

1) *के जे वी, ए एस वी, एन आई वी ''क्या हम पाप करें''*

2) *द सेन्टनरी ट्राँसलेषन ''क्या हम पाप के एक कार्य के लिए अपने आप को समर्पित करें''*

3) *आर एस वी ''क्या हम पाप करने के लिए हैं''*

यूनानी भाशा में यह सवाल काफी महत्वपूर्ण है और हाँ में उत्तर चाहता है। यह पौलुस की सच्चाई बताने का अलग तरीका है। यह आयत एक झूठे धर्मषास्त्र को प्रगट करती है। पौलुस इसका उत्तर ''कदापी नहीं'' करके देते हैं। पौलुस की ओर से मिला हुआ मुफ्त परमेष्वर के अनुग्रह का समाचार कई झूठे उपदेषकों के द्वारा गलत रीति से समझाया गया तथा लागू किया गया

6:16

''यह सवाल उत्तर 'हाँ' में चाहता है'' मनुश्य किसी वस्तु या व्यक्ति की सेवा करता है। आपके जीवन में कौन राज्य करता है, पाप या परमेष्वर? जिसकी आज्ञा मनुश्य मानता है वह उसकी सेवा करता है (गला.6:7–8)।

6:17

''परन्तु परमेष्वर का धन्यवाद हो''

पौलुस बीच – बीच में परमेष्वर की स्तुति करते हैं। उनका लेख प्रार्थना से षुरू होकर सुसमाचार के प्रति उनके ज्ञान की ओर बढ़ता है। देखिए विषेश षीर्शक : पौलुस की प्रार्थना स्तुति तथा परमेष्वर के प्रति धन्यवाद 7:25।

''तुम थे...
तुम हो गए''

यह वाक्य उनके भूतकाल की अवस्था (पाप का गुलाम) के बारे में बताता है। और कहता है कि उनके विद्रोह का समय खत्म हो चुका है।

''मन से उस उपदेष के मानने वाले हो गए'' यह उनके विष्वास के द्वारा दोश मुक्ति की ओर संकेत देता है, इस प्रसंग में उन्हें प्रतिदिन मसीही समानता में जीना है। ''उपदेष'' षब्द प्रेरितों की षिक्षा या सुसमाचार की ओर संकेत देता है।

''मन''

देखिए विषेश षीर्शक 1:24

एन ए एस बी, ''उस सांचे की षिक्षा की ओर तुम समर्पित हो''

एन के जे वी, ''उस सांचे के उपदेष की ओर तुम छुड़ाए गए हो''

एन आर एस वी, एन आई वी ''उस सांचे की षिक्षा की ओर तुम सौंपे गए हो''

टी इ वी ''तुम्हें मिली हुई षिक्षा में तुमने सच्चाई पाई है''

एन जे बी ''षिक्षा का वो नमूना जिससे तुम्हे परिचित किया गया है''

विषेश षीर्शक : सांचा (टूपोस)

टूपोस षब्द के कई प्रयोग हैं।

1) मूल्टोन एण्ड मिलिगन, द वॉकाबलरी ऑफ द ग्रीक न्यू टैस्टामैन्ट, पृश्ठ.645

क. नमूना

ख. ढाँचा

ग. ढंग

घ. आदेष या अधिकृत घोशणा

ङ. आज्ञा देना या निर्णय

च. चंगाई देवता के लिए मनुश्य की अंगों के नकल की मन्नत चढ़ाना

छ. कानून की आज्ञाओं को समझाने के लिए प्रयोग की गई क्रिया

2) लाऊ एण्ड निडा, ग्रीक–इग्लिष लैक्सिकन, भाग.2, पृश्ठ.249

क. दाग (यूह.20:25)

ख. रूप (प्रेरित.7:43)

ग. ढाँचा (इब्रा.8:5)

घ. नमूना (1कुरि.10:6; फिलि.3:17)

ङ. मूलभूत आदर्ष (रोमियों.5:14)

च. वर्ग (प्रेरित.23:25)

छ. पदार्थ (प्रेरित.23:25)

3) हारोल्ड के मुल्टन, द एनालिटिकल ग्रीक लैक्सिकन रिवाइस्ड, पृश्ठ.411

क. बहना, प्रतीती, चिन्ह (यूह.20:25)

ख. वर्णन

ग. ढाँचा (प्रेरित.7:43)

घ. सूत्र, रूपरेखा (रोमियों.6:17)

ङ. रूप, तात्पर्य (प्रेरित.23:25)

च. आकार, प्रतिरूप (1कुरि.10:6)

छ. परिकल्पना किया हुआ रूप या ढंग (रोमियों.5:14; 1कुरि.10:11)

ज. एक आदर्षमय नमूना (प्रेरित.7:44; इब्रा.8:5)

झ. एक नैतिक नमूना (फिलि.3:17; 1थिस्स.1:7; 2थिस्स.3:9; 1तीमु.4:12; 1पत.5:3)

इस संदर्भ में पहले वाला ज्यादा सही है। सुसमाचार में उपदेष तथा जीवनषैली का गूढ़ार्थ है। मसीह में मिला हुआ मुफ्त उद्धार मसीह समान जीवन की माँग करता है।

6:18

''पाप से छुड़ाए जाकर''

विष्वासियों को सुसमाचार ने मसीह के कार्य के द्वारा आत्मा से छुड़ाया है। विष्वासियों को पाप की सज़ा (दोशमुक्त) एवं पाप की क्रूरता से (षुद्धिकरण, रोमियों.6:7, 22) छुड़ाया है।

''तुम धर्म के दास होगे''

अर्थात तुम धार्मिकता के गुलाम बन गए हो। देखिए विषेश षीर्शक 1:7। विष्वासियों को पाप से छुड़ाया कि वे परमेष्वर की सेवा करें (रोमियों.6:14, 19, 22; 7:4; 8:2)। मुफ्त में मिले हुए अनुग्रह का लक्ष्य है भक्तिपूर्ण जीवन। व्यक्तिगत धार्मिकता के लिए दोशमुक्ति एक प्रबल हुकुमनामा है। परमेष्वर हमें बचाना तथा बदलना चाहते हैं ताकि हम दूसरों तक पहुँचें। अनुग्रह हम पर खत्म नहीं होता।

6:19

''मैं तुम्हारी षारीरिक दुर्बलता
के कारण
मनुश्यों की रीति पर कहता हूँ''

पौलुस यहाँ पर रोम के विष्वासियों को सम्बोधित कर रहे हैं। क्या वह किसी सुनी हुई प्रादेषिक समस्या (यहूदी तथा अन्यजातिय विष्वासियों के बीच की जलन) को सम्बोधित कर रहे हैं? या फिर वह समस्त विष्वासियों को किसी एक सच्चाई का पूर्वज्ञान करवा रहे हैं। पौलुस ने इस वाक्य खण्ड को 3:5 में पहले भी प्रयोग किया है ठीक जैसे गला.3:15 में किया है। 19वाँ आयत 16वें आयत के सदृष्य है। पौलुस अपनी धर्मषास्त्रीय बातों को महत्व देने के लिए यहाँ पर दोहरा रहे हैं। कुछ लोग ऐसा भी कह सकते हैं कि षायद पौलुस ने यहाँ पर प्रयोग किया हुआ रूपक (गुलाम/दास) के लिए माफ़ी मांग रहे हैं। हालाकि यह व्याख्या ''तुम्हारी षारीरिक दुर्बलता के कारण'' के लिए ठीक नहीं बैठता। पहली षताब्दी का समाज, विषेश रूप से रोमी साम्राज्य, गुलामी को बुराई नहीं समझता था। गुलामी उनके समय की संस्कृति थी।

''षरीर''

देखिए विषेश षीर्शक 1:3।

''षुद्धिकरण पवित्रताई के लिए''

दोशमुक्ति का यही लक्ष्य है (रोमियों.6:2)। उद्धार के सम्बन्ध में नया नियम इस षब्द को दो धर्मषास्त्रीय समझ में प्रयोग करता है।

1) पदवीय षुद्धिकरण उद्धार के समय परमेष्वर की ओर से मिला हुआ एक तोहफा है (सकर्मक पहलू) मसीह में विष्वास करने के द्वारा दोशमुक्ति के साथ साथ (प्रेरित.26:18; 1कुरि.1:2; 6:11; इफि.5:26–27; 1थिस्स.5:13; 2थिस्स.2:13; इब्रा.10:10; 13:12; 1पत.1:2)।

2) प्रगतिषील षुद्धिकरण यह भी परमेष्वर का ही कार्य है जिससे आत्मा द्वारा विष्वासियों का जीवन बदलकर मसीह की डील–डौल तक बढ़ता है (कर्ता परक पहलू) (2कुरि.7:1; 1थिस्स.4:3, 7; 1तीमु.2:15; 2तीमु.2:21; इब्रा.12:10, 14)। देखिए विषेश षीर्शक : षुद्धिकरण 6:4।

यह तोहफा और आदेष भी है। यह एक पदवी (सकर्मक) और कार्य (कर्ता परक) है। यह आदेषात्मक तथा सूचकात्मक है। आरम्भ में यह षुरू होता है जब तक अन्त न आए तब तक पौढ़ नहीं होता (फिलि.1:6; 2:12–13)

रोमियों.6:20–23

20 जब तुम पाप के दास थे, तो धर्म की ओर से स्वतंत्रा थे।

21 सो जिन बातों से अब तुम लज्जित होते हो, उन से उस समय तुम क्या फल पाते थे?

22 क्योंकि उन का अन्त तो मृत्यु है परन्तु अब पाप से स्वतंत्रा होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्राता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है।

23 क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।

6:20–21

यह 6:18–19 के विपरीत में है। विष्वासी केवल एक ही स्वामी की सेवा कर सकते हैं।

6:22–23

यह आयतें मज़दूर की मज़दूरी के प्रति एक युक्तिसंगत से लिए गए हैं। परमेष्वर का धन्यवाद हो कि पाप की चर्चा करते करते विष्वासी अन्त में अनुग्रह पर ध्यान दे रहे हैं। उद्धार का वरदान हमारे सहयोग से हमें मिलता है और मसीही जीवन भी हमारे सहयोग से ही सम्भव है। यह दोनों वरदान मनफिराव और विष्वास के द्वारा प्राप्त होते हैं।

6:22

''तुमको फल मिला जिससे
पवित्रता प्राप्त होती है
और उसका अन्त अनन्त जीवन है''

पाप के परिणाम को बताने के लिए 21वीं आयत में फल षब्द का प्रयोग हुआ है; लेकिन 22वीं आयत में यह षब्द परमेष्वर की सेवा के परिणाम को बताने के लिए प्रयोग हुआ है। विष्वसियों का तुरन्त परिणाम है, मसीही समानता। अन्तिम परिणाम है, उनके साथ रहना और उनके समान अनन्त काल के लिए बनना (1यूह.3:2)। अगर तुरन्त परिणाम (बदला हुआ जीवन, याक.2) न हुआ तो अन्तिम परिणाम भी सवाल के घेरे में आता है (अनन्त जीवन, मत्ती.7)। ''न जड़ और न फल''।

6:23

यह समस्त अध्याय का सारांष है। पौलुस ने चुनाव की बहुत ही अच्छी एक तस्वीर बनाई। चुनाव हमारे पास है–पाप और मृत्यु या मसीह के मुफ्त अनुग्रह से अनन्त जीवन। यह पुराने नियम के बुद्धि साहित्य के दो राह जैसा है (भ.सं.1; नीति.4:10–19; मत्ती.7:13–14)।

''पाप की मज़दूरी''

पाप को विभिन्न प्रकार से चित्रित किया है :

1) दास का मालिक

2) फौज का सरदार

3) राजा जो मज़दूरी देता है
(रोमियों.3:9; 5:21; 6:9, 14, 17)

''परमेष्वर का वरदान अनन्त जीवन है''

वरदान (*करिस्मा*) अनुग्रह के मूल षब्द से निकला है (*कारिस,* रोमियों.3:24; 5:15, 16, 17; इफि.2:8, 9)। देखिए नोट 3:24।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाषा प्रस्तुत करने वाले।

1) उद्धार के साथ भले कामों का क्या सम्बन्ध है (इफि.2:8–10)?

2) उद्धार के साथ एक विष्वासी के जीवन के चालु पाप का क्या सम्बन्ध है (1यूह.3:6, 9)?

3) क्या यह अध्याय पापरहित सम्पूर्णता के विशय में सिखाता है?

4) किस प्रकार अध्याय 6 अध्याय 5 और 7 से सम्बन्धित है?

5) क्यों यहाँ पर बपतिस्मा के बारे में चर्चा हुई?

6) क्या मसीही लोग अपने पुराने स्वभाव को रख छोड़ते हैं? क्यों?

7) 1–14 आयत पर वर्तमान काल क्रिया और 15–23 आयत पर अनिष्चित भूतकाल क्रिया का क्या प्रभाव हैं?

रोमियों – 7

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
विवाह की समरूपता	व्यवस्था से छुटकारा	विवाह की समरूपता	विवाह से दृश्टान्त	मसीही व्यवस्था से बन्धे हुए नहीं हैं
7:1–6	7:1–6	7:1–3	7:1–6	7:1–6
		7:4–6		
पाप के निवास की समस्या	व्यवस्था में पाप का महत्व	व्यवस्था और पाप	व्यवस्था और पाप	व्यवस्था का कार्य करने का तरीका
7:7–12	7:7–12	7:7–12	7:7–11	7:7–8
				7:9–11
	व्यवस्था पाप से छुड़ा नहीं सकती		7:12–13	7:12–13
7:13–25	7:13–25	7:13		
		भितरी संघर्श	मनुश्य में संघर्श	संघर्श का प्रतिफल
		7:14–20	7:14–20	7:14–20
		7:21–25क	7:21–25क	7:21–23
				7:24–25क
		7:25ख	7:25ख	7:25ख

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद
2) दूसरा अनुच्छेद
3) तीसरा अनुच्छेद
4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि रोमियों.7:1–6

क. 7वें अध्याय की व्याख्या

1) 6वें अध्याय के प्रकाष पर आधारित होना चाहिए, विषेश रूप से 12–14 आयत तक

2) यह 9–11 अध्यायों में ज़िक्र किए गए तनाव (अन्यजातिय विष्वासी और यहूदी विष्वासियों के बीच) से सम्बन्ध रखता है। यह पक्का पता नहीं है कि असली समस्या क्या है; निम्नलिखित में से कोई होगा :

(1) मूसा की व्यवस्था पर आधारित कानूनी बातें

(2) यहूदियों द्वारा पहले मूसा को फिर मसीह को महत्व

(3) यहुदियों के जीवन में सुसमाचार की भूमिका के विशय में गलतफेहमी

(4) पुरानी और नई वाचाओं के बीच के सम्बन्ध के प्रति गलतफेहमी

(5) राजाज्ञा द्वारा यहूदी विष्वासियों को नेतृत्व स्थान से हटा कर अन्यजाति विष्वासियों को उस जगह रखने के कारण उत्पन्न हुई जलन जिसके द्वारा सारे यहूदी रस्म को रोम में रोका गया। हो सकता है कई यहूदी विष्वासी वापस चले भी गए हों।

ख. रोमियों.7:1–6 उन आलंकारिक भाशाओं का प्रयोग किया गया है जिसे 6वें अध्याय में एक मसीही का अपने पुराने जीवन के साथ सम्बन्ध को जताने के लिए किया गया है। यहाँ पर निम्नलिखित रूपकों का प्रयोग किया है :

(1) किसी दूसरे मालिक का होने के लिए गुलामी से छुटकारा तथा मृत्यु।

(2) विवाह बन्धन से छुटकारा तथा मृत्यु

ग. अध्याय 6 और 7 समानान्तर साहित्य है। अध्याय 6 विष्वासी के पाप के साथ सम्बन्ध को प्रगट करता है और अध्याय 7 विष्वासी के व्यवस्था के साथ सम्बन्ध को प्रगट करता है। दास की स्वतंत्रता (रोमियों.6:12–23) के लिए मृत्यु का रूपक विवाह बन्धन (रोमियों.7:1–6) से छुटकारे की समरूपता में प्रयोग किया गया है।

अध्याय 6	अध्याय 7
6:1 पाप	7:1 व्यवस्था
6:2 पाप के लिए मर गए	7:4 व्यवस्था के लिए मर गए
6:4 ताकि हम नए जीवन की सी चाल चलें	7:6 आत्मा की नई रीति पर सेवा करें
6:7 क्योंकि जो मर गया वो पाप से छूट गया	7:6 जिसके बन्धन में हम थे उसके लिए मर कर व्यवस्था से छूट गए
6:18 पाप से छुड़ाए जाकर	7:3 व्यवस्था से छूट गए

(अण्डर्स निगरेन, कॉमेन्ट्री ऑन रोमनस, कार्ल सी. रासमुसैर द्वारा अनुवादित, पृश्ठ.268)

घ. व्यवस्था स्वयं मृत्युदण्ड की घोशणा से भरी हुई थी। प्रत्येक मनुश्य व्यवस्था के अधीन दोशी पाया गया (रोमियों.6:14; 7:4; गला.3:13; इफि.2:15; कुलु.2:14)। व्यवस्था एक अभिषाप थी।

ङ. 7वें अध्याय की व्याख्या हेतु 4 प्रमुख सिद्धान्त हैं।

(1) पौलुस स्वयं के बारे में कहते हैं (आत्म कथा)

(2) पौलुस मानवजाति के एक प्रतिनिधि के रूप में बातें कर रहे हैं (प्रतिनिधि)।

(3) आदम के अनुभव के बारे में पौलुस कहते हैं (थियोडर ऑर मॉपस्युटिया)

(4) इस्राएल के अनुभव के बारे में कहते हैं

च. कई प्रकार से रोमियों.7 उत्प.3 के समान कार्यषील है।

जो परमेष्वर के साथ सहभागी हैं उनके अन्दर के विद्रोह के विशय में यह अध्याय बताता है। पतित मानवजाति को ज्ञान नहीं बचा सकता; केवल परमेष्वर का अनुग्रह, एक नया हृदय ही यह काम कर सकता है (नई वाचा, यिर्म.31:31–34; यहे.36:26–27) इसके बाद भी संघर्श जारी है।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.7:1–3

1 हे भाइयो, क्या तुम नहीं जातने (मैं व्यवस्था के जाननेवालों से कहता हूं), कि जब तक मनुष्य जीवित रहता है, तक तक उस पर व्यवस्था की प्रभूता रहती है?

2 क्योंकि विवाहिता स्त्री व्यवस्था के अनुसार अपने पति के जीते जी उस से बन्धी है, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह पति की व्यवस्था से छूट गई।

3 सो यदि पति के जीते जी वह किसी दूसरे पुरूष की हो जाए, तो व्यभिचारिणी कहलाएगी, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह उस व्यवस्था से छूट गई, यहां तक कि यदि किसी दूसरे पुरूष की हो जाए, तौभी व्यभिचारिणी न ठहरेगी।

7:1

''मैं व्यवस्था के जानने वालों से कहता हूँ''

यह उन लोगों को समबोधित कर रहा होगा (1) केवल यहूदी विष्वासियों को; (2) रोमी कलीसिया के अन्दर के यहूदी तथा अन्यजाति विष्वासियों के बीच मतभेदों को; (3) साधारण समझ में व्यवस्था पूरी मानवजाति से सम्बन्धित है; या तो (4) नए अन्यजातिय विष्वासियों को जो अपने नए विष्वास के बारे में पुराने नियम से सीख रहे हों।

''व्यवस्था''

इस अध्याय की मुख्य बात यही है (7:1, 2, 4, 5, 6, इत्यादि)। लेकिन पौलुस षब्द को अलग अलग अर्थों में प्रयोग किया है। ऐसा लगता है कि इस चर्चा की कमान रोमियों.6:14 में है। 6वे अध्याय के ढाँचे की समानता में है पौलुस का प्रस्तुतिकरण। देखिए प्रासंगिक अन्तरदृश्टि ''ग.''। यीषु मसीह में नई वाचा के सम्बन्ध तथा व्यवस्था के विशय में 3:21–31 और 4:13–16 में चर्चा की गई है।

एन ए एस बी ''जब तक मनुश्य जीवित रहता है तब तक व्यवस्था का क्षेत्र अधिकार रहता है''

एन के जे वी ''जब तक मनुश्य जीवित रहता है तब तक व्यवस्था की प्रभुता रहती है''

एन आर एस वी ''जब तक एक व्यक्ति जीवित है तब तक ही व्यवस्था का बन्धन रहता है''

टी इ वी ''जब तक मनुश्य जीवित है तब तक व्यवस्था अधिकार रखती है''

जे बी ''एक व्यक्ति के जीवन में ही व्यवस्था प्रभावित करती है''

षाब्दिक अर्थ है प्रभुता रखना (*कुरियो,* रोमियों.6:9, 14)। आषीश (भ.सं.19, 119) और भयंकर अभिषाप (गला.3:13; इफि.2:15; कुलु.2:14) दोनों मूसा की व्यवस्था में है। षारीरिक मृत्यु के द्वारा व्यवस्था के साथ का बाध्यकारी करार खत्म हो जाता है। यह 6वें अध्याय विष्वासी के पाप के लिए मरने की तुलना में है।

7:2

''क्योंकि विवाहित स्त्री''

यह 7:1–6 में पौलुस द्वारा प्रयोग किया गया मुख्य उदाहरण है। 6वें अध्याय में एक व्यक्ति के गुलाम होने के बाध्यकारी करार को बताता है। यहाँ पर विवाह और बाध्यकारी करार को बताता है। विधवा के पुनः विवाह का उदाहरण पौलुस यहाँ इसलिए दे रहे हैं कि विष्वासी मर गया इसलिए वह परमेष्वर के लिए जीवित है।

''वह छूट गई''

6:6 में प्रयोग की गई क्रिया का ही यहाँ पर प्रयोग किया गया है। जिसका अर्थ है ''प्रभावहीन बनाना'', ''निश्क्रीय कर देना'', या ''नश्ट कर देना''। इस आयत में इस क्रिया का अर्थ है लगातार छूटते रहना। देखिए विषेश षीर्शक 3:3।

7:3

''तो वह व्यभिचारिणी कहलाएगी''

यह व्यव.24:1–4 के तर्क पर आधारित है। विषेश रूप से षम्माई और हिलेल यहूदी पाठषाला इसपर अधिक तर्क वितर्क करते थे। हिलेल पाठषाला बिना किसी बात के किसी को भी तलाक देने की अनुमती दिया करती थी। परन्तु षम्माई पाठषाला यदि कोई व्यभिचार में पकड़ा जाए तो ही तलाक की अनुमती देते थे (मत्ती.5:32; 19:9)।

रोमियों.7:4–6

4 सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुओं में से जी उठाः ताकि हम परमेश्वर के लिये फल लाएं

5 क्योंकि जब हम शारीरिक थे, तो पापों की अभिलाषायें जो व्यवस्था के द्वारा थी, मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिये हमारे अंगों में काम करती थीं।

6 परन्तु जिस के बन्धन में हम थे उसके लिये मर कर, अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए, कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं, वरन आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं।

7:4

''तुम भी मरे हुए बन गए''

यह इस अनुच्छेद की मुख्य बात है। 6वें अध्याय के मसीहियों के पाप के प्रति मरना की समानता से यह सम्बन्धित है। इस नए युग में आत्मा द्वारा विष्वासी एक नई सृश्टि हैं (2कुरि.5:17)।

''मसीह की देह के द्वारा''

यहाँ पर उस धर्मषास्त्रीय विचार को नहीं रख रहे हैं जिसमें कहते हैं कि कलीसिया मसीह की देह है (1कुरि.12:12, 27)। लेकिन जैसे 6:3—11 में मसीह भौतिक षरीर के साथ, जहाँ बपतिस्मा द्वारा, जब मसीह मरे तब विष्वासी भी मर गए। उनकी मृत्यु विष्वासियों की मृत्यु थी (2कुरि.5:14—15; गला.2:20)। उनके पुनरूत्थित जीवन ने उन्हें परमेष्वर और अन्यों की सेवा करने के लिए छुड़ाया।

''ताकि हम परमेष्वर
के लिए फल लाऐं''

यह 6:22 के सदृष्य है। मसीह के साथ बाँधे जाने के लिए विष्वासी अब स्वतंत्र हैं। यह है विवाहित जीवन मे लगे रहने की समरूपता। जैसे मसीह विष्वासियों के लिए मरे वैसे अब विष्वासियों का पापों के लिए मरना है (2कुरि.5:13—14; गला.2:2)। जैसे मसीह जी उठे वैसे वे भी परमेष्वर की सेवा हेतु नई आत्मा में जिलाए गए (रोमियों.6:22)।

7:5

एन ए एस बी ''क्योंकि जैसे हम षारीरिक थे''

एन के जे वी ''क्योंकि जब हम षारीरिक थे''

एन आर एस वी ''जैसे हम षारीरिक रूप से जी रहे थे''

टी इ वी ''क्योंकि जब हम मानुशिक स्वभाव से जीवन बिता रहे थे''

जे बी ''हमारे परिवर्तन से पहले''

यह आयत, 4थे आयत के विपरीत है। आयत 4 एक विष्वासी के अनुभव से सम्बन्धित है जैसे आयत 6 में है। आयत 5 परमेष्वर के सामर्थ के बिना जीवन के फल को प्रगट करता है (गला.5:18—24)। व्यवस्था विष्वासियों को उनके पाप दिखाती है (रोमियों. 7:7—9; गला.3:23—25), लेकिन उन्हें जयवन्त होने के लिए सामर्थ प्रदान नहीं कर पा रही है।

यहाँ पर आदम से विरासत में मिला हुआ पतित, पापमय स्वभाव का प्रसंग है (रोमियों.6:19)। पौलुस यहाँ सार्कस षब्द का प्रयोग दो भिन्न तरीकों से कर रहे हैं।

(1) पाप स्वभाव (पुराना मनुश्य)

(2) भौतिक षरीर (रोमियों.1:3; 4:1; 9:3—5)

यह यहाँ पर नकारात्मक है पर देखिए 1:3; 4:1; 9:3, 5 गला.2:20। षरीर/देह (*सार्कस/सोमा*) अपने आप में बुरा नहीं है, परन्तु वह मन (*नॉउस*) के समान रणभूमि है जो बुरी षक्तियों और पवित्र आत्मा के मुकाबले की जगह है। पौलुस इन षब्दों का प्रयोग सैप्टुआजैन्ट के तरीके से करते हैं न कि यूनानी साहित्य के।

''जो व्यवस्था के द्वारा थीं''

विद्राही मानुशिक स्वभाव की चहल पहल स्पश्ट रूप से उत्प.3 मे और समस्त मानवजाति में पाई जाती है। व्यवस्था ने सीमाऐं रखीं (रोमियों.7:7—8)। यह सीमाऐं मानवजाति की सुरक्षा के लिए थीं। लेकिन मनुश्य ने इसको जंजीर तथा बन्धन के रूप में देखा। पापमय तथा स्वतंत्र आत्मा को व्यवस्था के द्वारा उकसाया गया। समस्या यहाँ पर सीमा नहीं है (रोमियों.7:12—13) परन्तु मनुश्य की इच्छा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता है।

7:6

''परन्तु अब''

इस विशय में न्यूमैन और निडा, ए ट्रॉंस्लेटरस हैण्ड बुक ऑन पॉलस लैटर टू रोमनस, मे एक अच्छी टिप्पणी करते हैं ''आयत 5 और 6 के बीच की समानता को देखना आवष्यक है और आने वाले वचनों के साथ उनका क्या सम्बन्ध है यह भी देखना आवष्यक है। 5वीं आयत मसीह में आने से पहले का अनुभव बताती है जिसे फिर से हम 7:7–25 में पाते हैं। 6वीं आयत वर्तमान जीवन जो परमेष्वर की आत्मा की अधीनता में विष्वास के द्वारा है उसे बाताती है, इसे फिर से हम 8:1–11 में देखते हैं'' (पृश्ठ.130)।

''हम छूट गए हैं''

यह 5वीं आयत के विपरीत है। विष्वासी व्यवस्था के द्वारा बताए गए पाप में लगातार फंसते जा रहे थे पर अब वे सुसमाचार से पवित्रात्मा द्वारा छुड़ाए गए हैं। 7:2 में जो षब्द प्रयोग किया गया है वो ही षब्द यहाँ भी प्रयोग किया गया है।

*''जिसके बन्धन में हम थे
उसके लिए मर कर''*

मसीह की मृत्यु के द्वारा परमेष्वर ने विष्वासियों को निम्नलिखित बातों से छुड़ाया :

1) पुराने नियम के अभिषाप से

2) उनके अन्दरूनी पापमय मनुश्यत्व से

वे पतित स्वभाव, व्यक्तिगत पाप, और अलौकीक प्रलोभन से बन्धी हुई अवस्था में परमेष्वर की प्रगट की हुई इच्छा का विद्रोह लगातार कर रहे थे (इफि.2:2–3)।

*''पुरानी रीति...
नई रीति''*

यह नई वाचा के बारे में बताने का नया आत्मिक तरीका है (यिर्म.31:31–34; यहे.36:22–32)। निम्नलिखित बातों के लिए पौलुस ने यूनानी भाशा में ''नया'' (केइनोस, केइनोटस) षब्द का प्रयोग किया :

1) नया जीवन (रोमियों.6:4)

2) आत्मा की नई रीति (रोमियों.7:6)

3) नई वाचा (1कुरि.11:2; 2कुरि.3:6)

4) नई सृश्टि (2कुरि.5:17; गला.6:15)

5) नया मनुश्य (इफि.2:15; 4:24)

षब्द 'पुराना' मूसा की व्यवस्था को प्रगट करता है जो बिलकुल जीर्ण–षीर्ण है। पौलुस यहाँ नई और पुरानी वाचाओं की तुलना कर रहे हैं जैसे लेखक इब्रानियो की पत्री में करते हैं (रोमियों.8:7, 13)।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''ताकि हम आत्मा की नई रीति पर सेवा कर सकें''

एन आर एस वी ''ताकि हम पुराने लेख के गुलाम नहीं परन्तु आत्मा के नए जीवन में हैं''

टी इ वी ''वरन् आत्मा की नई रीति पर हैं''

जे बी ''आत्मा की नई रीति से सेवा करने के लिए स्वतंत्र हैं''

यह आक्षरिक रूप से आत्मा में नयाप्पन है। लेकिन यह मालूम नहीं है कि यह षब्द पवित्र आत्मा की ओर या नया जन्म प्राप्त मनुश्य की आत्मा को दर्षाता है। ज्यादातर अंग्रेज़ी अनुवादों में बड़े अक्षरों में लिखने के कारण यह पवित्र आत्मा की ओर संकेत करता है जिसे संदिग्ध रूप से 8वें अध्याय में 15 बार प्रयोग किया गया है। यहाँ पर षब्द 'आत्मा' सुसमाचार और पवित्र आत्मा के द्वारा नया किए गए मनुश्य की आत्मा ही है (रोमियों.1:4, 9; 2:29; 7:6; 8:15; 11:8; 12:11; 1कुरि.2:11; 4:21; 5:3, 4, 5; 7:34; 14:15, 16, 32; 16:18)।

पौलुस के लेखों में ''षरीर'' और ''आत्मा'' षब्द का प्रयोग अलग–अलग प्रकार के विचारों और जीवनषैली को बताने के लिए किया गया है (रोमियों.7:14; 8:4; गला.3:3; 5:16, 17, 25; 6:8)। परमेष्वर बिना भौतिक जीवन षारीरिक और परमेष्वर के साथ भौतिक जीवन आत्मिक है। पवित्रात्मा का अन्दर निवास (रोमियों.8:9, 11) एक विष्वासी के जीवन को मसीह में नई सृश्टि के रूप में परिवर्तित करता है (अनुभव तथा पदवी)।

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि रोमियों 7:7–25

क. मानवजाति की वास्तविकता को रोमियों.7:7–25 प्रगट करता है। प्रत्येक मनुश्य, चाहे उद्धार पाया हुआ हो या खोया हुआ हो, अवष्य ही अपने दिल दिमाग में भली और बुरी बातों के बीच के संघर्श से होकर गुज़रता है। यहाँ पर व्याख्यात्मक प्रष्न यह है कि पौलुस समझ के लिए किस प्रकार इस अनुच्छेद का प्रयोग करते हैं। यह अनुच्छेद 1:18–6:23 और 8:1–39 के साथ प्रासंगिक सम्बन्ध रखता है। कुछ इस अनुच्छेद को इस प्रकार देखते हैं कि यह समस्त मानवजाति के लिए है इसलिए पौलुस का व्यक्तिगत अनुभव एक षब्द निरूपावली है। इस व्याख्या को आत्मचरित्रीय सिद्धान्त कहते हैं। 1कुरि.13:1–3 में पौलुस ने ''मैं'' षब्द को गैर व्यक्तिगत विचार में प्रयोग किया। यह गैर व्यक्तिगत विचार यहूदी गुरूओं के लेखों से लिया गया होगा। अगर यह बात सच है तो यह अनुच्छेद समस्त मानवजाति को दर्षाता है जिसका स्थिति परिवर्तन निर्दोशता से उद्धार की ओर है (रोमियों.8), जिसे प्रतिनिधी सिद्धान्त कहते हैं। कई लोग ने इस अनुच्छेद को एक विष्वासी के पतित स्वभाव के साथ का भिशण संघर्श की ओर संकेत करता हुआ पाया है। 7:24 की दुःख दायक पुकार अन्दरूनी संघर्श को स्पश्ट करती है। 7:7–13 में अनिष्चित भूतकालिक क्रिया तथा 7:14–25 में वर्तमान क्रिया मुख्य भूमिका निभाती हैं। ऐसा लगता है कि आत्म चरित्रीय सिद्धान्त में पौलुस अपने अनुभव को निर्दोषता से, अपराध धारणा, धर्मी ठहराया जाना, और संघर्श पूर्ण मार्ग की ओर से प्रगतिषील षुद्धिकरण की ओर बढ़कर विष्वास दिलाता है (*ओटोस इगो* – मैं और मैं ही, 7:25)।

हो सकता है दोनों राय सही हों। छुड़ाई हुई समस्त मानवजाति के प्रतिनिधी के रूप में 7:7–13 और 25ख में पौलुस अपनी आत्म कथा बताते हैं। लेकिन 7:14–25क में अपने अन्दरूनी संघर्श जो पाप के प्रति है कहते हैं। हालाकी इस बात को भूलना नहीं है कि यह अनुच्छेद उद्धार से पहले के यहूदी धार्मिक पौलुस के बारे में बताता है। पौलुस का अपना अनुभव अनोखा है।

ख. व्यवस्था अच्छी है। यह परमेष्वर की ओर से है। इसने ईष्वरीय उद्‌देष्य की सेवा की और लगातार करती रहेगी (रोमियों.7:7, 12, 14, 22, 25)। यह उद्धार और षान्ति नहीं दिला सकती। ए मैन इन क्राइस्ट के लेखक जेम्स स्टूवर्ट अपने लेख में पौलुस का असत्याभास विचार और लेख के बारे में इस प्रकार कहते हैं :

षायद आप इस प्रकार के एक मनुश्य की कामना कर रहे होंगे जो एक प्रकार के विचार और उपदेष को पेष करने के लिए विभिन्न षब्दों का प्रयोग करते हुए अपने आप को अलग रखा हो। मुख्य विचारधारा को प्रगट करने हेतु वाक्यांषों का प्रयोग करने वाले एक व्यक्ति के तौर पर आप उसे देख रहे होंगे। लेखक के द्वारा प्रदर्षित किए हुए उस खास षब्द की मांग आप आखरी तक चाहेंगे। लेकिन यह बात पौलुस के लेख में न होने के कारण आप निराषित होंगे। अधिकतर वाक्यांष कड़ा नहीं है पर सरल रूप में है। वह लिखते हैं कि व्यवस्था पवित्र है, मैं व्यवस्था से प्रसन्न हूँ (रोमियों.7:12–13)। लेकिन यह *नोमोस* का दूसरा पहलू है। जिसका ज़िक्र दूसरी जगह पर भी किया गया है कि ''मसीह ने हमें व्यवस्था के पाप से छुड़ाया'' गला.3:3 (पृश्ठ.26)।

ग. क्या पौलुस 7:14–25 में उद्धार प्राप्त या खोए हुए लोगों को सम्बोधित कर रहे हैं – इस सवाल का मूलपाठ पर आधारित उत्तर निम्नलिखित हैं।

1) खोया हुआ व्यक्ति

(क) यह प्राचीन यूनानी भाषा बोलने वाली कलीसियाओं के पिताओं की व्यख्या है।

(ख) निम्नलिखित वाक्यांष इस बात का समर्थन करते हैं

(1) मैं षारीरिक हूँ (रोमियों.7:14)

(2) पाप के हाथों बिका हुआ हूँ (रोमियों.7:19)

(3) मुझमें कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती (रोमियों.7:18)

(4) मुझे पाप के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है (रोमियों.7:23)

(5) मै कैसा अभागा मनुश्य हूँ मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा (रोमियों.7:24)

(ग) 6वें अध्याय का संदर्भ है हम पाप के दासत्व से स्वतंत्र हैं। 8वें अध्याय का संदर्भ ''अतः अब'' से आरम्भ होता है।

(घ) इस संदर्भ के अन्त तक आत्मा और मसीह के बारे में जानकारी की कमी।

2) उद्धार प्राप्त व्यक्ति

(क) यह अगस्टीन और कैल्वीन के अनुवाद तथा जागृती की परम्परा है।

(ख) निम्नलिखित वाक्यांष इस बात का समर्थन करता है

(1) ''हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है'' (रोमियों.7:14)

(2) ''मैं जानता हूँ कि व्यवस्था भली है'' (रोमियों.7:16)

(3) ''जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूँ वह तो नहीं करता'' (रोमियों.7:19)

(4) ''मैं भीतरी मनुश्यत्व से तो परमेष्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूँ'' (रोमियों.7:22)

(ग) षुद्धिकरण के संदर्भ में रोमियों.7 में अधिक चर्चा की गई है।

(घ) 7:7–13 में अनिष्चित भूतकाल क्रिया से 7:14–24 में वर्तमानकाल की ओर स्पश्ट बदलाव, पौलुस के जीवन के नए और अलग पहलू को बताता है (परिवर्तन)।

घ. जितना अधिक एक विष्वासी मसीहसमानता की ओर बढ़ता है उतना अधिक उसके जीवन में वह पाप का सामना करता है। यह असत्याभास पौलुस के व्यक्तिगत जीवन और इस प्रसंग में बिलकुल ठीक बैठता है। हैनरी ट्वीलस के एक गीत का हिस्सा इस प्रकार है :

हे प्रभु किसी के पास भी सम्पूर्ण विश्राम नहीं है,
कोई भी सम्पूर्ण रीति से पाप से छूटा हुआ नहीं;
जो निर्बल है वह अधिक आपकी सेवा करता है,
अपने अन्दर की गलतियों के बारे में जानते हैं।

रोमियों.7:7–12

7 तो हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप है? कदापि नहीं! वरन बिना व्यवस्था के मैं पाप को नहीं पहचानताः व्यवस्था यदि न कहती, कि लालच मत कर तो मैं लालच को न जानता।

8 परन्तु पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझ में सब प्रकार का लालच उत्पन्न किया, क्योंकि बिना व्यवस्था के पाप मुर्दा है।

9 मैं तो व्यवस्था बिना पहले जीवित था, परन्तु जब आज्ञा आई, तो पाप जी गया, और मैं मर गया।

10 और वही आज्ञा जो जीवन के लिये थी; मेरे लिये मृत्यु का कारण ठहरी।

11 क्योंकि पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझे बहकाया, और उसी के द्वारा मुझे मार भी डाला।

12 इसलिये व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा भी ठीक और अच्छी है।

7:7

''तो हम क्या कहें''

पौलुस अपनी बातें करने की षैली की ओर वापस आ रहें हैं (रोमियों.6:1, 15; 7:1, 13)।

''क्या व्यवस्था पाप है''

परमेष्वर ने व्यवस्था की पवित्रता तथा भलाई को एक दर्पण के समान उपयोग किया ताकि पाप प्रगट हो और पतित मानवजाति को मनफिराव और विष्वास की ओर ला सके (रोमियों.7:12–13; गला.3)। आष्चर्यजनक रूप से व्यवस्था षुद्धिकरण प्रक्रिया में भाग लेती रही लेकिन धर्मी ठहराए जाने के लिए नहीं।

''कदापि नहीं''

पौलुस यहाँ एक झूठ कथन का विषेश तिरस्कार कर रहे हैं (रोमियों.7:13; 3:4, 6, 31; 6:2, 15; 9:14; 11:1, 11; गला.2:17; 3:21)।

''वरन्''

रोमियों में पौलुस खास लेखन षैली के द्वारा अपने विचार को स्पश्ट करते हैं (रोमियों.3:4, 6, 31; 6:2, 15; 7:13; 9:14; 11:1, 11)।

''मैं''

आप अपनी बाइबल व्यक्तिगत सर्वनाम पर चिन्ह लगाएं, 7:7–25 में ''मैं'', ''मेरा'', ''मुझे'' षब्दों का प्रयोग 40 से अधिक बार हुआ है।

''बिना व्यवस्था के मैं पाप को
नहीं पहचानता''

यह पाप को प्रगट करने वाले दर्पण के समान कार्य करने वाले मूसा की व्यवस्था का सामान्य विचार प्रगट करने वाला कुंजी अनुच्छेद है (रोमियों.3:20; 4:6; 5:20; गला.3:14–29, विषेश 24)। एक बार व्यवस्था को तोड़ने का अर्थ है वाचा को तोड़ना इसलिए उसका फल भी अवष्य है (रोमियों.7:10; याक.2:10)।

''बिना व्यवस्था के''

यह दूसरी श्रेणी का षर्तीया वाक्य है जिसे वस्तुतः के विपरीत कहा जाता है। पौलुस को मालूम हो गया था कि वह पाप के अपराधी हैं। रोमियों का व्याकरणात्मक एक मात्र उदाहरण यही है। पौलुस ने इसी षैली का प्रयोग गलातियों और कुरिन्थियों में भी किया (गला.1:10; 3:21; 1कुरि.2:8; 5:10; 11:31; 2कुरि.12:11)।

''तू लालच न करना''

यह दस आज्ञा की अन्तिम आज्ञा से लिया हुआ है (गिन.20:17; व्यव.5:21)। सही आचरण पर आधारित है अन्तिम आज्ञा और यह उन सब का निचोड़ भी है (मत्ती.5–7)। कई बार व्यवस्था को आज्ञा कहा गया (रोमियों.7:8, 9, 11, 12, 13)। षब्द लालच का अर्थ है ''एक का हृदय उस पर लग जाना'' या ''दृढ़ता पूर्वक इच्छा करना''। सृश्टि के द्वारा परमेष्वर ने मानवजाति को बहुत कुछ दिया परन्तु मनुश्य ने परमेष्वर द्वारा ठहराई गई सीमा से पार होकर कई अधिक चिज़ें हासिल करनी चाहीं। उनका लक्ष्य यह बना कि मुझे और भी चाहिए। स्वयं, एक भयानक अत्याचारी राजा है। देखिए विषेश षीर्शक : निर्गमन पर नोट 20:17, रोमियों.13:8–9 में।

7:8

एन ए एस बी, एन के जे वी ''अवसर पाकर''

एन आर एस वी ''अवसर छीनकर''

टी इ वी ''अवसर पाकर''

जे बी ''मौका पाकर''

यह सैनिक कार्यवाही के लिए प्रयोग किया जाने वाला षब्द है (रोमियों.7:8, 11)। लेकिन यहाँ पर इसे व्यक्तिगत तौर पर प्रयोग किया गया है। पाप को, सेना के सरदार के द्वारा अगुवाई की गई सैनिक कार्यवाही की तरह चित्रण किया गया है (रोमियों.7:11, 17; 6:12, 14, 16)।

''क्योंकि बिना व्यवस्था
पाप मूर्दा है''

पाप हमेषा परमेष्वर की विद्रोह में है (रोमियों.4:15; 5:13; 1कुरि.15:56)। इस वाक्यांष में क्रिया नहीं है, अगर कोई इसमे वर्तमानकाल की क्रिया मिलाए तो ये विष्वस्तर सिद्धान्त बनेगा। अगर कोई अनिष्चित भूतकाल क्रिया मिलाए तो ये केवल पौलुस के जीवन को ही प्रगट करता है।

7:9

''मैं पहले जीवित था''

यह पौलुस की निम्नलिखित बातों को दर्षाता होगा :

1) एक बच्चा जो निर्दोश अवस्था में है।

2) सुसमाचार द्वारा उसके हृदय को छेदने से पहले का समर्पित फरीसी (प्रेरित.23:1; फिलि.3:6; 2तीमु.1:3)।

पहले वाला 7वें अध्याय के आत्मचरित्रीय सिद्धान्त व्याख्या तथा दूसरे वाला 7वें अध्याय का प्रतिनिधि सिद्धन्त व्याख्या है।

''परन्तु जब आज्ञा आई
तो पाप जीवित हो गया
और मैं मर गया''

रोक–टोक से मनुश्य की विद्रोह की आत्मा सामर्थ प्राप्त करती है। परमेष्वर की आज्ञा ''नहीं करना'' पतित मनुश्य के अहंकार को बढ़ावा देती है (उत्प.2:16–17; 3:1–6)। रोमियों.5:21, 7:8, 11, 17, 20 में ध्यान दीजिए कि पाप किस प्रकार जीवित होता है।

7:10

''और वो ही आज्ञा
जो जीवन के लिए थी,
मेरे लिए मृत्यु का कारण ठहरी''

यह लैव्य.18:5 और रोमियों.2:13 के वायदे से सम्बन्धित है। मानवजाति निर्बल और विद्रोही होने के कारण व्यवस्था ने जो वायदा किया उसे पूरा नहीं कर पाई, इसका अर्थ यह नहीं है कि व्यवस्था पाप है। व्यवस्था मृत्यु दण्डादेष बन गई (गला.3:13; इफि. 2:15; कुलु.2:4)।

7:11

''मुझे बहकाया और उसी के द्वारा
मुझे मार भी ड़ाला''

उत्प.3:13 में सैप्टूआजैन्ट के अन्दर बहकाया षब्द हव्वा के सम्बन्ध में प्रयोग किया गया है। पौलुस इस षब्द का प्रयोग कई बार करते हैं (रोमियों.16:18; 1कुरि.3:18; 2कुरि.11:3; 2थिस्स.2:3; 1तीमु.2:14)। आदम और हव्वा में भी लालच की समस्या थी (2कुरि. 11:3; 1तीमु.2:14)।

परमेष्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने के द्वारा आदम और हव्वा आत्मिक रूप से मर गए इसलिए पौलुस और समस्त मानवजाति भी मृत्यु के अधीन हो गई (रोमियों.1:18–3:20)।

7:12

यह पौलुस की तरफ से व्यवस्था की भलाईयों का वर्णन है। पौलुस का सदृष्य ढाँचे, जिसमें उन्होंने अध्याय 6 में पाप और 7वें अध्याय में व्यवस्था का प्रयोग किया है, ने रोमी कलीसिया के कट्टर यहूदी विष्वासियों में हलचल मचा दी (रोमियों. 14:1–15:13)।

रोमियों.7:13

13 तो क्या वह जो अच्छी थी, मेरे लिये मृत्यु ठहरी? कदापि नहीं! परन्तु पाप उस अच्छी वस्तु के द्वारा मेरे लिये मृत्यु का उत्पन्न करनेवाला हुआ कि उसका पाप होना प्रगट हो, और आज्ञा के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे।

7:13

एन ए एस बी ''पाप, पाप दिखाने के लिए...पाप बहुत ही पापमय ठहरे''

एन ए एस वी ''पाप, पाप प्रत्यक्ष होने के लिए...बहुत ही अधिक पापमय हुआ''

एन आर एस वी ''पाप, पाप है यह दिखाने के लिए...माप से अधिक पापमय ठहरा''

टी इ वी ''पाप का असली स्वभाव प्रगट हो''

जे बी ''पाप अपना सही रंग प्रगट करने के लिए...अपने सब पापमय काबलियतों का समर्थन किया''

पाप की असली प्रकृति यहाँ दिखती है कि वह कुछ भले, अच्छे और ईष्वरीय बातों, जैसे कि मूसा की व्यवस्था (भ.सं.19, 119), को लिया और तोड़ मरोड़कर उन्हें दोशारोपण तथा मृत्यु की सामग्री बनाया (इफि.2:15; कुलु.2:14)। पतित मानवजाति ने परमेष्वर की दी गई सीमाओं से बढ़कर परमेष्वर के द्वारा दिए गए तमाम अच्छे वरदानों को अपने वष में लिया।

''बहुत ही पापमय''

देखिए विषेश षीर्शक : पौलुस द्वारा हुपर मिश्रित षब्दों का प्रयोग 1:30

रोमियों.7:14–20

14 क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है, परन्तु मैं शरीरिक और पाप के हाथ बिका हुआ हूं।

15 और जो मैं करता हूं, उस को नहीं जानता, क्योंकि जो मैं चाहता हूं, वह नहीं किया करता, परन्तु जिस से मुझे घृणा आती है, वही करता हूं।

16 और यदि, जो मैं नहीं चाहता वही करता हूं, तो मैं मान लेता हूं, कि व्यवस्था भली है।

17 तो ऐसी दशा में उसका करनेवाला मैं नहीं, वरन पाप है, जो मुझ में बसा हुआ है।

18 क्योंकि मैं जानता हूं, कि मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती, इच्छा तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते।

19 क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूं, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता वही किया करता हूं।

20 परन्तु यदि मैं वही करता हूं, जिस की इच्छा नहीं करता, तो उसका करनेवाला मैं न रहा, परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ है।

7:14

''व्यवस्था तो आत्मिक है''

परमेष्वर की व्यवस्था भली है। यह एक समस्या नहीं है (रोमियों.7:12, 16[ख])।

''मैं षारीरिक हूँ''

इस षब्द का प्रयोग पौलुस ने (1) निश्पक्ष समझ में किया जिसका अर्थ है भौतिक षरीर (रोमियों.1:3; 2:28; 4:1; 9:3–5) तथा (2) नकारात्मक समझ में जिसे वह आदम के द्वारा मनुश्य के पतित स्वभाव को बताते हैं (रोमियों.7:5)। इन दोनों में से कौन सा यहाँ लागु होता है पता नहीं।

''पाप के हाथों बिका हुआ हूँ''

अर्थात मैं लगातार पाप के हाथों बिकता रहूँगा। पाप फिर से एक गुलाम के मालिक के तौर पर जीवधारी ठहराया गया है। इस कर्मवाच्य का अभिकर्ता स्पश्ट नहीं है, यह षैतान, पौलुस या परमेष्वर हो सकते हैं। पुराने नियम का मुख्य षब्द ''मुक्तिधन'' जिसके द्वारा परमेष्वर मानवजाति को अपनी तरफ खींचते थे। इस षब्द का अर्थ है पुनः खरीदा जाना (देखिए विषेश षीर्शक 3:24)। उसका विपरीत विचार यहाँ पर प्रयोग हुआ कि पाप के हाथों बिका हुआ हूँ (न्या.4:2; 10:7; 1षमू.12:9)।

7:15–24

परमेष्वर की संतान के पास ईष्वरीय स्वभाव (2पत.1:4), और पतित स्वभाव भी है (गला.5:17)। सामर्थ से, पाप को निश्फल किया गया (रोमियों.6:6)। परन्तु 7वें अध्याय में मानुशिक स्वभाव जारी है। यहूदी कहते हैं कि प्रत्येक मनुश्य के हृदय के अन्दर एक सफेद और काला कुत्ता रहता है, और जिसका अधिक पालन पोशण किया जाता है वह तगड़ा होता है।

जैसे मैं इस अनुच्छेद को पढ़ रहा हूँ तो मैं पौलुस की उस वेदना को अपने में महसूस कर रहा हूँ, जो हमारे दोनो स्वभावों के संघर्श से पैदा होता है। हालाकी परमेष्वर की मदद से विष्वासी अपने पतित स्वभाव से छुड़ाए गए, फिर भी कई बार उस अनुभव की ओर पुनः बढ़ते हैं। यह कई बार हमें आष्चर्य में डाले देता है कि उद्धार के बाद ही आत्मिक लड़ाई षुरू हाती है। पौढ़ता केवल त्रिएक परमेष्वर के साथ तनावपूर्ण संगति और बुराई के साथ दैनिक लड़ाई के द्वारा प्राप्त होती है।

7:16, 20

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है।

7:18

''मैं जानता हूँ कि
मुझमें अर्थात मेरे षरीर में
कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती''

पौलुस यहाँ पर यह साबित नहीं कर रहे कि भौतिक षरीर बुरा है पर यह कहते हैं कि पवित्र आत्मा और पतित स्वभाव की रणभूमि है षरीर। यूनानियों का विष्वास था कि उनका षरीर बाकी सब चीज़ों के साथ साथ बुराई से भरा है। इसने *नॉस्टीसीज़्म* नामक एक दोहरी झूठी षिक्षा को बढ़ावा दिया। यूनानी लोग प्रत्येक आत्मिक परेषानियों का दोशी भौतिक षरीर को ठहराते थे। पौलुस इस प्रसंग पर बात नहीं कर रहे हैं उन्होंने पाप को जीवधारी ठहराया और मनुश्य का विद्रोह जो परमेष्वर की व्यवस्था के प्रति है दर्षाया, जिसके द्वारा मनुश्य स्वभाव के अन्दर बुराई का आगमन हुआ। पौलुस के लेखों में षरीर षब्द का अर्थ हो सकता है (1) भौतिक षरीर जो नैतिक तौर से निश्पक्ष है (रोमियों.1:3; 2:28; 4:1; 9:3–5) तथा (2) आदम के द्वारा मिला हुआ पतित स्वभाव (रोमियों.7:5)।

7:20

''पाप जो मुझमें बसा हुआ है''

रोमियों की पत्री स्पश्ट रूप से मानवजाति के पाप का चित्रण करती है, लेकिन 16:20 तक षैतान के बारे में कोई उल्लेख नहीं है। पाप की समस्या के लिए मनुश्य षैतान को दोशी नहीं ठहरा सकता। हमारे पास एक चुनाव है। पाप को राजा, गुलाम का मालिक, और अत्याचारी के रूप में दर्षाया है। यह हमें परमेष्वर से स्वतंत्र होकर स्वयं को ऊँचा उठाने का प्रलोभन देता है। पौलुस द्वारा पाप का विवरण उत्प.4:7 के मनुश्य के चुनाव से सम्बन्धित है।

इस अध्याय में षब्द ''बसा हुआ है'' का प्रयोग पौलुस कई बार करते हैं (रोमियों.7:17, 18, 20)। उद्धार के समय में पाप के स्वभाव को निकाला या नाष नहीं किया गया पर प्राथमिक रूप से निश्फल किया गया। हम जितना सहयोग अन्दर निवास आत्मा को देते हैं उतना ही पाप निर्बल होता रहेगा (रोमियों.8:9, 11)। व्यक्तिगत (षैतान और दुश्टआत्मा) और जीवधारी ठहरने

वाले (आक्षरिक) बुराई का सामना करने के लिए जितनी आवष्यक वस्तुओं की ज़रूरत है वे सब परमेष्वर ने विष्वासी को दी हैं। वह है पवित्रात्मा की उपस्थिति और सामर्थ। जैसे हम परमेष्वर के मुफ्त दान उद्धार को ग्रहण करते हैं वैसे ही हमें परमेष्वर के दान पवित्र आत्मा का प्रभाव और निवारण को स्वीकार करना है। उद्धार और मसीही जीवन विष्वासी के दैनिक निर्णय पर आरम्भ तथा अन्त होने वाली दैनिक प्रक्रिया है। हमें जो चाहिए उन सब चीज़ो का प्रावधान परमेष्वर ने किया है : पवित्र आत्मा (रोमियों.8), आत्मिक हथियार (इफि.6:11), प्रकाषन (इफि.6:17) और प्रार्थना (इफि.6:18)।

युद्ध बहुत ही भयानक है (रोमियों.7), पर यह जीता हुआ है (रोमियों.8)।

रोमियों.7:21–25

21 सो मैं यह व्यवस्था पाता हूं, कि जब भलाई करने की इच्छा करता हूं, तो बुराई मेरे पास आती है।

22 क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूं।

23 परन्तु मुझे अपने अंगो में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है।

24 मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?

25 मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं: निदान मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का सेवन करता हूं।

7:22

''परमेष्वर की व्यवस्था''

यहूदियों के लिए यह मूसा की व्यवस्था है। गैर यहूदियों के लिए यह (1) प्रकृति की गवाही है (रोमियों.1:19–20; भ.सं.19:1–6); (2) भीतरी षुद्ध विवेक (रोमियों.2:14–15) तथा (3) समाजिक कानून तथा नैतिकता।

एन ए एस बी ''भीतरी मनुश्यत्व में''

एन के जे वी ''भीतरी मनुश्य के अनुसार''

एन आर एस वी, एन जे बी ''मेरे भीतरी स्वयं में''

टी इ वी ''मेरा भीतरी मनुश्य''

2कुरि.4:16 में पौलुस बाहरी मनुश्य (भौतिक) और भीतरी मनुश्य (आत्मिक) का भेद बताते हैं। इस प्रसंग में निम्नलिखित वाक्यांष पौलुस या तो उद्धार प्राप्त मनुश्य की ओर इषारा करते हैं जिसके ऊपर परमेष्वर की इच्छा और व्यवस्था है।

1) ''व्यवस्था आत्मिक है'' (रोमियों.7:14)

2) ''जो मैं करना चाहता हूँ'' (रोमियों.7:15)

3) ''मैं मान लेता हूँ कि व्यवस्था भली है'' (रोमियों.7:16)

4) ''इच्छा तो मुझमें है'' (रोमियों.7:18)

5) ''जिस अच्छे काम की इच्छा मैं करता हूँ'' (रोमियों.7:19)

6) ''जिस बुराई की इच्छा नहीं करता, वही किया करता हूँ'' (रोमियों.7:19)

7) ''मैं वही करता हूँ जिसकी इच्छा नहीं करता'' (रोमियों.7:20)

8) ''जो कोई भलाई करना चाहता'' (रोमियों.7:21)

9) ''परमेष्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूँ'' (रोमियों.7:22)

10) ''बुद्धि की व्यवस्था'' (रोमियों.7:23)

11) ''मैं आप बुद्धि से तो परमेष्वर की व्यवस्था की सेवा करता हूँ'' (रोमियों.7:25)

7वाँ अध्याय दिखाता है कि परमेष्वर और उनके वचन के बारे में जानना ही काफी नहीं है विष्वासियों को पवित्र आत्मा की भी आवष्यकता है (रोमियों.8)।

7:23

6:2, 8:2 और 7:23 के बीच वास्तव में एक बड़ा अन्तर है। यह आयत पौलुस व्यवस्था (*नोमोस)* के प्रयोग के बारे में निम्नलिखित बातें बताता है :

1) पाप की व्यवस्था (रोमियों.7:21, 25)

2) परमेष्वर की व्यवस्था (रोमियों.7:22, 25)

4, 5, 6, 7, 9 और 12 आयतों में इस षब्द का प्रयोग पुराने नियम के लिए किया गया। पौलुस एक सैद्धान्तिक धर्मषास्त्री नहीं हैं। वह व्यवस्था के सामान्य विचार से उलझ गए हैं। एक तरह से व्यवस्था परमेष्वर का प्रकाषन है जो समस्त मानवजाति के लिए एक अनोखा और अद्भूत तोहफा है। दूसरी तरह से यह पाप की परिभाशा और पतित मानवजाति के लिए रखी हुई सीमाएं हैं जिसका पालन वे सही से नहीं कर पाए। यह सीमाऐं केवल पुराने नियम का ही प्रकाषन नहीं परन्तु विवेकात्मक मार्ग दर्षन, प्रकृति का प्रकाषन (भ.सं.19; रोमियों.1:18–3:31), और सामाजिक नियम और नैतिकता भी है। जो मनुश्य अपने पास सारे अधिकार रखना चाहता है वह विद्रोही है।

7:24

क्या यह वाक्य एक उद्धार प्राप्त व्यक्ति का है? कुछ कहते हैं नहीं, इसलिए, यह अध्याय एक नैतिक तथा धार्मिक और बिना उद्धार पाए हुए लोगों के सम्बन्ध में है। परन्तु, कुछ कहते हैं हाँ, यह उन विष्वासियों के सम्बन्ध में है जो तनाव पूर्ण जीवन बिताते हैं। भविश्यकाल सम्बन्धि बातें अब तक पूरी रीति से प्रगट नहीं हुई हैं। इस अन्तराल को केवल परिपक्व मसीही ही समझ सकते हैं।

एन ए एस बी ''इस मृत्यु की देह''

एन के जे वी, एन आर एस वी ''यह मृत्यु की देह''

टी इ वी ''यह देह जो मुझे मृत्यु की ओर ले जाती है''

एन जे बी ''यह देह जिसे मृत्यु का दण्डादेष प्राप्त है''

भौतिक षरीर और मन दोनों अपने में बुरे नहीं हैं। वे परमेष्वर की ओर से उनके साथ संगति रखने और जीवित रहने के लिए ही रची गई। उनकी सृश्टि ''बहुत ही अच्छी'' हुई (उत्प.1:31)। लेकिन उत्प.3 ने परमेष्वर के उद्देष्य और मानवजाति को बदल डाला। यह संसार और लोग परमेष्वर ने जैसा चाहा था वैसा नहीं है। समस्त सृश्टि को पाप ने प्रभावित किया। पाप ने भलाई को तोड़ मरोड़ कर स्वयं पर केन्द्रीत बुराई बनाया। षरीर और मन प्रलोभन और पाप की रणभूमि बन गई। पौलुस वास्तविक

रूप से इस युद्ध को महसूस कर रहे हैं। पौलुस, नए युग, नया षरीर और परमेष्वर के साथ नई संगति की चाह कर रहे हैं (रोमियों.8:23)।

7:25

यह निचोड तथा 8वें अध्याय के ऊँचे दर्जे की ओर बदलाव की सीढ़ी है। हालाकी 8वें अध्याय में भी यह संघर्श जारी है (रोमियों.8:5–11)। अनुवादकों के लिए सवाल है कि पौलुस किसके विशय में बातें कर रहे हैं?

1) अपने अपने अनुभव के बारे में जो यहूदी धर्म के अन्दर था

2) समस्त मसीहियों

3) आदम जो समस्त मानवजाति का उदाहरण हैं

4) इस्राएल और व्यवस्था के बारें में उसकी जानकारी लेकिन आज्ञाकारी बनने में असफलता

व्यक्तिगत तौर से मैं (1) 7–13[ख] और (2) 14–25[क] से साथ हूँ। देखिए प्रासंगिक अन्तरदृश्टि रोमियों.7:7–25।

8वें अध्याय की महिमा ने 7वें अध्याय की वेदना और रोने को जीत लिया है।

''परमेष्वर का धन्यवाद हो''

देखिए नीचे दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : पौलुस द्वारा परमेष्वर की स्तुति, प्रार्थना और परमेष्वर को धन्यवाद करना

वह पुराने नियम को अच्छी तरह से जानते थे। भजन संहिता के प्रथम 4 भाग ईष्वर स्तुति से अन्त होते हैं, भ.सं 41:13; 72:19; 89:52; 106:48। पौलुस परमेष्वर की स्तुति और बढ़ाई विभिन्न तरीकों से करते हैं।

1) उनकी पत्रियों के षुरूवाती अनुच्छेदों में

(क) आरम्भ का अभीवादन, (रोमियों.1:7; 1कुरि.1:3; 2कुरि.1:2)

(ख) षुरूवाती आषीर्वाद, (इयुलोगेटोस, 2कुरि.1:3–4, इफि.1:3–14)

2) स्तुति के छोटे अंष

(क) रोमियों.1:25; 9:5

(ख) 2कुरि.11:31

3) ईष्वर – स्तुति ((1)*डोक्सा* – महिमा और (2) हमेषा हमेषा के लिए के उपयोग द्वारा चित्रित किया गया है)

(क) रोमियों.11:36; 16:25

(ख) इफि.3:20–21

(ग) फिलि.4:20

(घ) 1तीमु.1:17

(ङ) 2तीमु.4:18

4) आभार प्रर्दषन *(इयुकारिस्टेओ)*

(क) पत्री की षुरूवात (रोमियों.1:8; 1कुरि.1:4; 2कुरि.1:11; इफि.1:16; फिलि.1:3; कुलु.1:3, 12; 1थिस्स.1:2; 2थिस्स.1:3; फिले. 1:4; 1तीमु.1:12; 2तीमु.1:3)

(ख) आभार प्रदर्षन के लिए बुलाहट (इफि.5:4, 20; फिलि.4:6; कुलु.3:15, 17; 4:2; 1थिस्स.5:18)

5) आभार प्रदर्षन के छोटे अंष

(क) रोमियों.6:17; 7:25

(ख) 1कुरि.15:57

(ग) 2कुरि.2:14; 8:16; 9:15

(घ) 1थिस्स.2:13

(ङ) 2थिस्स.2:13

6) अन्तिम आषीर्वाद

(क) रोमियों.16:20, 24 (?)

(ख) 1कुरि016:24

(ग) 2कुरि.13:14

(घ) गला.6:18

(ङ) इफि.6:24

पौलुस त्रिएक परमेष्वर को धर्मषास्त्रीय रूप से और अनुभव से जानते थे। उनके लेखों में वह प्रार्थना और स्तुति से आरम्भ करते हैं। प्रस्तुतिकरण के बीच में वह स्तुति और धन्यवाद के लिए जगह अलग करते हैं। पत्री के अन्त में पहुँच कर वह अवष्य परमेष्वर से प्रार्थना, स्तुति और आभार प्रगट करते हैं। पौलुस के लेख प्रार्थना, स्तुति और धन्यवाद से भरपूर है। वह परमेष्वर को जानते है, वह अपने आप को जानते हैं तथा वह सुसमाचार को भी जानते हैं।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) अध्याय 6, 7 से किस प्रकार सम्बन्धित है?

2) नए नियम के विष्वासियों के साथ पुराने नियम की व्यवस्था का क्या सम्बन्ध है (2कुरि.3:1–11; इब्रा.8:7, 13)?

3) पुराने जीवन के प्रति हमारे सम्बन्ध के विशय में 6वें और 7वें अध्याय में पौलुस द्वारा प्रयोग किए गए 2 उदाहरण कौन कौन से हैं?

4) मूसा की व्यवस्था के साथ एक मसीही का क्या सम्बन्ध है?

5) अपने षब्दों में वर्णन कीजिए कि रोमियों.7:7–25 की व्याख्या में आत्मचरित्रीय और प्रतिनिधी सिद्धान्तों में क्या अन्तर है।

6) क्या रोमियों अध्याय 7 खोए हुए व्यक्ति, या अपरिपक्व विष्वासी, या परिपक्व विष्वासी के प्रति एक टिप्पणी है?

रोमियों – 8

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
आत्मा में जीवन	अन्दर बसे पाप से छुटकारा	परमेष्वर के उद्धार की प्रक्रिया	आत्मा में जीवन	आत्मा में जीवन
8:1–11	8:1–11	8:1–4	8:1–8	8:1–4
		जीवन षरीर और आत्मा में		
		8:5–8		8:5–11
		8:9–11	8:9–11	
		पवित्र आत्मा और लेपालकपन		
8:12–17	8:12–17	8:12–17	8:12–17	8:12–13
				परमेष्वर की संतान
				8:14–17
महिमा जो होने को है	दु:ख से महिमा की ओर	परिपूर्णता की आषा	भविश्य महिमा	महिमा जो हमारी मंज़ील है
8:18–25	8:18–30	8:18–25	8:18–25	8:18–25
		मानवीय निर्बलता को झेलना		
8:26–30		8:26–27	8:26–27	8:26–27

				परमेष्वर ने अपनी महिमा हमारे साथ बाँटने के लिए हमें बुलाया
		8:28—30	8:28—30	8:28—30
परमेष्वर का प्रेम	परमेष्वर के अनन्तकाल का प्रेम	परमेष्वर के प्रेम में हमारी निर्भरता	मसीह यीषु में परमेष्वर का प्रेम	परमेष्वर के प्रेम के प्रति एक गीत
8:31—39	8:31—39	8:31—39	8:31—39	8:31—34
				8:35—37
				8:38—39

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद
2) दूसरा अनुच्छेद
3) तीसरा अनुच्छेद
4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि

क. यह अध्याय 1:18 में पौलुस द्वारा षुरू किए हुए तर्क का षिखर है। यह ''दण्ड की आज्ञा नहीं'' (न्यायिक स्थिति) से षुरू होता है और ''अलग नहीं कर सकता'' (व्यक्तिगत संगति) पर समाप्त होता है। धर्मषास्त्रीय रीति से यह धर्मी ठहराए जाने से षुद्धिकरण द्वारा महिमा की ओर प्रगति करता है (रोमियों.8:29—30)।

ख. यह विष्वासियों को परमेष्वर की ओर से आत्मा की देन के प्रति पौलुस का धर्मषास्त्रीय विकास है (देखिए यूहन्ना.14:12—31; 16:7—16 में यूहन्ना का प्रस्तुतिकरण)। 8:14 में आत्मा कर्मवाच्य क्रिया की अभिकर्ता है। जो सुसमाचार से जुड़कर पतित मानवजाति के जीवन में क्रियाषील बनता है। आत्मा उनके साथ और उनमें रहकर उनके अन्दर मसीह को उत्पन्न करने की कोषिष करती है। 8वें अध्याय में षब्द ''आत्मा'' *(न्यूमा)* 21 से अधिक बार प्रयोग किया गया है परन्तु 7वें अध्याय में इसका कोई उल्लेख नहीं है (3—6 अध्यायों में भी इसका उल्लेख नहीं है, 1—2 अध्यायों में केवल तीन बार इस षब्द का प्रयोग हूआ है)।

ग. एक मनुश्य को पीछे हो लेने के लिए जीवन में दो दृष्य (व्यक्तिगत विष्वस्तर विचार), दो जीवनषैलीयाँ, दो प्राथमिकताऐं, दो मार्ग (सकरा और चौड़ा) हैं, यहाँ पर षरीर और आत्मा है। एक मृत्यु की ओर ले जाता है तो दूसरा जीवन की ओर। इसे पारम्परिक रीति से पुराने नियम के बुद्धि साहित्य का ''दोहरा रास्ता'' कहा जाता है (भ.सं.1; नीति.4:10–19)। अनन्त जीवन, आत्मिक जीवन, में ध्यान देने लायक विषिश्टताएं हैं (षरीर के अनुसार बनाम आत्मा के अनुसार)।

इस धर्मषास्त्रीय प्रसंग में षैतान की गैर हाज़री पर ध्यान दीजिएगा (रोमियों.1–8)। 16:20 तक उसका उल्लेख नहीं है। यहाँ केन्द्रीय बात मनुश्य का पतित स्वभाव है जो आदम से प्राप्त हुआ है। यह पौलुस की तरफ से पतित मानवजाति के बहाने को (षैतान ने मुझे मजबूर किया कि मैं करूँ) निकालने का तरीका है जो परमेष्वर के विरूद्ध विद्रोह करने का अलौकिक प्रलोभन है। इसके लिए केवल मनुश्य ही ज़िम्मेदार है।

घ. इस अध्याय की रूपरेखा तैयार करना कठीन है क्योंकि कई अधिक बातों को लेकर बिना आपसी प्रसंग के इसकी विचारधारा को बढ़ाया गया है।

ङ 8:12–17 विष्वासी को विष्वास की विष्वस्त दृढ निष्चयता के बारे में सूचित करता है।

(1) आत्मा के द्वारा पूरा किया हुआ बदलता सांसारिक विचार और जीवनषैली।

(2) आत्मा के द्वारा परमेष्वर के प्रति भय को हटा कर एक पारिवारिक प्रेम में सम्मिलित करना।

(3) पवित्र आत्मा के अन्दर निवास द्वारा हमारे संतान होने की बात का अन्दरूनी प्रमाणीकरण।

(4) इस पतित संसार की समस्याओं और संघर्शों के बीच में भी यह प्रमाणीकरण स्थिर है।

छ) 8:31–39 एक न्यायलय सम्बन्धी दृष्य है, यह पूराने नियम के नबीयों की साहित्य षैली है। परमेष्वर न्यायाधीष हैं, षैतान अभियोक्ता है, यीषु बचाव पक्ष के वकील हैं *(पैराक्लीटे),* दूत दर्षक हैं और विष्वासी षैतान के दोशारोपण का सामना कर रहे हैं।

(1) कानूनी षब्द

(क) हमारा विरोधी (रोमियों.8:31)

(ख) दोश (रोमियों.8:33)

(ग) धर्मी ठहराया (रोमियों.8:33)

(घ) दण्ड की आज्ञा (रोमियों.8:34)

(ङ) निवेदन करता है (रोमियों.8:34)

(2) कानूनी कार्यवाही ''कौन'' (रोमियों.8:31, 33, 34–तीन बार, 35)

(3) मसीह में परमेष्वर का प्रावधान (रोमियों.8:32, 34[ख])

(4) परमेष्वर से कोई अलगाव नहीं

(क) संसारिक परिस्थितियाँ (रोमियों.8:35)

(ख) पुराने नियम से लिया गया, भ.सं.44:22 (रोमियों.8:36)

(ग) विजय (रोमियों.8:37, 39)

(घ) अलौकिक षक्तियाँ (रोमियों.8:37–39)

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.8:1–8

1 सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं:
2 क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्रा कर दिया।

3 क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।

4 इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।

5 क्योंकि शरीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।

6 शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।

7 क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है, और न हो सकता है।

8 और जो शारीरिक दशा में है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

8:1

एन ए एस बी ''इसलिए वहाँ अब''

एन आर एस वी, एन के जे वी ''वहाँ इसलिए अब''

टी इ वी ''अत:''

जे बी ''इस कारण, इसलिए''

यह इससे पहले के संदर्भ से सम्बन्धित है। कुछ विष्वास करते हैं कि यह 7:24–25 के साथ है, परन्तु इसका सम्बन्ध 3:21–7:25 से है।

''नहीं''

यूनानी वाक्य में 'नहीं' षब्द पहले आता है। यह पूरज़ोर देता है कि ''दण्ड की आज्ञा नहीं'' जो मसीह यीषु में हैं (रोमियों. 8:1–3), और आत्मा के अनुसार चलते हैं (रोमियों.8:4–11)। नई वाचा के दोनों पहलू यहाँ पर हैं : (1) मसीह यीषु में यह मुफ्त वरदान है, तथा (2) वहाँ एक जीवनषैली, वाचा के प्रति प्रतिक्रिया की आवष्यकता है। दोशमुक्ति सकर्मक और कार्तापरक दोनों है। यह एक पदवी और जीवनषैली दोनों है।

''दण्ड की आज्ञा''

सैप्टूआजैन्ट में कई बार *'काटाक्रिमा'* षब्द का प्रयोग नहीं है, लेकिन व्यव.27:26 के अभिषाप से सम्बन्धित है। इस षब्द का अर्थ है ''दण्डादेष के अनुसार सज़ा''। यह कानूनी है और बिलकुल धर्मी ठहराए जाने के विपरीत में है। यह पौलुस के द्वारा पत्रियों में कम प्रयोग किया गया षब्द है (रोमियों.5:16, 18) तथा नए नियम में और कहीं हम इस षब्द को नहीं पाते।

पहले आयत के साथ *के जे वी* ने कुछ और भी जोड़ा है *''क्योंकि वे षरीर के अनुसार नहीं आत्मा के अनुसार चलते हैं''*। यह वाक्यांष हम किसी भी प्राचीन यूनानी हस्तलेख में नहीं पाते। यू बी एस इसको छोड़ देता है, 8:4 में यह नज़र आता है। धर्मषास्त्र के अनुसार यह 4 आयत में ठीक बैठता है न कि पहले आयत में। 8:1–3 पदवीय षुद्धिकरण के प्रति कार्य करता है, 8:4–11 मसीह समानता की ओर के अनुभवीय षुद्धिकरण के प्रति कार्य करता है। विलियम आर. नेवैल, रोमनस वर्स बाए वर्स, (मूड़ी, 1138) के पृश्ठ 289 के नीचे की टिप्पणी पर ध्यान दीजिए।

''क्योंकि वे षरीर के अनुसार नहीं आत्मा के अनुसार चलते हैं, इस बात को *रिवाइस्ड़ वर्सन* साफ रीति से छोड़ देता है। लगभग 300 साल पहले के, प्राचीन यूनानी हस्तलेख, जो सबसे सही है, जो के जे वी अनुवाद है वो हमें हासिल हुआ और परमेष्वर के विष्वस्त दास लोग, नकल करने में जो भूलचूक हुई है, उसे ठीक करने में लगे हैं। और हम जानते हैं कि हमारे पास असल हस्तलेख नहीं है। षायद परमेष्वर ने इस बात को छुपाना सही समझा ताकि उनके लोग इसकी मूर्तिपूजा न करें।

निम्नलिखित 4 कारणों की वजह से ''मसीह यीषु में'' के साथ पहले आयत की समाप्ति करनी चाहिए :

1) यूनानी हस्तलेख के पहले आयत में *''क्योंकि वे षरीर के अनुसार नहीं आत्मा के अनुसार चलते हैं''* का उल्लेख न होने के कारण तथा आयत 4 में इसका उल्लेख होने के कारण।

2) आत्मिक भेद बताने वाले भी इस बात को मानते हैं कि इस वाक्यांष को पहले आयत में षामिल करने का अर्थ है हमारी सुरक्षा हमारे चाल चलन पर आधारित है न कि परमेष्वर की आत्मा पर। लेकिन समस्त पत्रियों में यह सिखाया गया कि जो मसीह यीषु में हैं उनके ऊपर दण्ड की आज्ञा नहीं है। नहीं तो हमारी सुरक्षा हमारे चाल चलन पर आधारित है न कि मसीह यीषु में हमारी पदवी पर।

3) इस वाक्यांष की सही जगह आयत 4 के अन्त में है जहाँ पर एक विष्वासी के चाल चलन की षैली का विवरण है। यह भी देखा गया है कि किसी नकल करने वाले के द्वारा इस वाक्यांष को किनारे के अलग लेख की तरह उपयोग किया गया है। कुछ उत्कृश्ठ हस्तलेखों में भी इसे छोड़ दिया गया है। देखिए *आलेफ, ए, बी, सी, डी, एफ, जी; ऑलेसुयन, आल्फॉर्ड, जे. एफ एण्ड बी,* डारबीस का श्रेश्ठतम तर्क उनके सामान्तर सुसमाचारों में।

परमेष्वर चाहते थे कि उनके वचनों का अनुवाद हो पर वह आधिकारिक रहे, जैसे कि इब्रानी पुराने नियम का यूनानी में अनुवाद, सैप्टूआजैन्ट।

हमें परमेष्वर के उन श्रेश्ठ दासों के लिए परमेष्वर को धन्यवाद कहना चाहिए, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन इन हस्तलेखों को सीखने, जिन्हें परमेष्वर ने हमारे लिए छोड़ा था, तथा सही अनुवाद करने की कोषिष की है। हमें इन्हें आधुनिक अभिमानी पण्डितों से अलग रखना है जो कहते हैं हमें केवल यही देखना है कि परमेष्वर हमसे क्या कहना चाहते थे न कि क्या कहा है।'' (पृश्ठ.289)

''अतः जो मसीह यीषु में हैं''

पौलुस का यह विषेश वाक्यांष ''व्यक्तिगत सम्बन्ध'' का आधुनिक वर्णन षैली की तुलना में है। पौलुस ने यीषु को जाना, प्रेम किया, सेवा की और उनमें खुष रहे। सुसमाचार विष्वास करने योग्य एक संदेष तथा स्वीकार करने योग्य व्यक्ति है। जीने का सामर्थ उन्हें, दमिष्क के फाटक के पास जीवित मसीह के साथ की मुलाकात और सम्बन्ध से प्राप्त हुआ। उनके अनुभव से यीषु का धर्मषास्त्र निकला। उनके अनुभव ने एक अध्यात्म विद्या को जारी नहीं किया पर उन्हें एक प्रभावषाली सेवा कार्यकर्ता बना दिया। यीषु को जानने का अर्थ है उनकी सेवा करना। परिपक्व मसीहत एक संदेष, व्यक्ति और जीवनषैली है। देखिए नोट 1:5।

8:2

''जीवन के आत्मा की व्यवस्था...
पाप और मृत्यु की व्यवस्था''

यह षायद निम्नलिखित बातों की ओर संकेत कर रहा होगा।

1) पाप की व्यवस्था (रोमियों.7:10, 23, 25) और परमेष्वर की नई व्यवस्था (रोमियों.7:6, 22, 25) के बीच का भेद

2) मूसा की व्यवस्था (रोमियों.7:6–12) बनाम प्रेम की व्यवस्था (याक.1:25; 2:8, 12)

3) प्राचीन युग बनाम नवीन युग

4) पुरानी वाचा बनाम नई वाचा (यिर्म.31:31–34, इब्रानियों की पत्री)

भेद बताने की यह षैली स्थिर है।

1) मसीह में जीवन के आत्मा की व्यवस्थ बनाम पाप और मृत्यु की व्यवस्था (रोमियों.8:1)

2) षरीर के अनुसार बनाम आत्मा के अनुसार (रोमियों.8:4–5)

3) षरीर की बातें बनाम आत्मा की बातें (रोमियों.8:5)

4) षारीरिक बातों पर मन लगाना बनाम आत्मा की बातों पर मन लगाना (रोमियों.8:5)

5) षरीर पर मन लगाना बनाम आत्मा पर मन लगाना (रोमियों.8:6)

6) षरीर में बनाम आत्मा में (रोमियों.8:9)

7) षरीर मरा हुआ है बनाम आत्मा जीवित है (रोमियों.8:10)

8) तुम मरोगे बनाम तुम जीओगे (रोमियों.8:13)

9) दास्तव की आत्मा नहीं बनाम लेपालकपन की आत्मा (रोमियों.8:16)

एन ए एस बी, एन आर एस वी, जे बी ''स्वतंत्र कर दिया''

एन के जे वी, टी इ वी ''मुझे स्वतंत्र कर दिया''

6वें अध्याय का धर्मषास्त्रीय संदेष है 8:2–3। प्राचीन यूनानी हस्तलेखों में विभिन्न सर्वनामों का प्रयोग हुआ है। *ए, डी, के,* और *पी* हस्तलेखों में ''मुझे'' का प्रयोग, *आलेफ, बी, एफ* और *जी* में ''तुम'' का प्रयोग हुआ है। दूसरे एक हस्तलेख में ''हम'' का प्रयोग हुआ है।

पौलुस के द्वारा लिखे गए यूनानी अनुच्छेदों में इन सर्वनामों की समस्या साधारण है।

8:3

''व्यवस्था जो नहीं कर सकी''

मूसा की व्यवस्था पवित्र और भली है, परन्तु मानव पापी और निर्बल है (रोमियों.7:12, 16)। यहाँ पर उपयोग की गई क्रिया का अर्थ है *असम्भव* (इब्रा.6:4, 18; 10:4; 11:6), परन्तु इसका अर्थ ''*सामर्थ बिना*'' भी हो सकता है (प्रेरित.14:8; रोमियों.15:1)। छुटकारा दिलाने में व्यवस्था नाकाम रही। इसने केवल दण्डादेष, मृत्यु और अभिषाप को ही उत्पन्न किया।

''षरीर के कारण निर्बल''

यह पौलुस के द्वारा 7वें अध्याय में प्रस्तुत किया गया मुख्य तर्क है। परमेष्वर की व्यवस्था भली और पवित्र है, परन्तु पापमय, पतित और विद्रोही मनुश्य उसकी माँग पूरी नहीं कर सकता। पौलुस ने रब्बीयों से हटकर उत्प.3 के परिणितफल को विषेश महत्व दिया है।

*''परमेष्वर ने किया :
अपने ही पुत्र को भेज कर''*

पुरानी वाचा के अधीन पतित मनुश्य जो नहीं कर पाया उसे परमेष्वर ने यीषु मसीह द्वारा नई वाचा के अधीन कर दिया (यिर्म. 31:31–34; यहे.36:22–36; यषा.53; यूह.3:16)। बाहरी माँग के बदले में परमेष्वर ने अन्दरूनी आत्मा और नए हृदय का प्रावधान किया। मसीह के द्वारा पूरा किए हुए काम के ऊपर विष्वास और मनफिराव पर आधारित है नई वाचा, न कि मनुश्य की काबलियत पर। हालाँकी दोनों वाचाएं एक नए ईष्वरीय जीवनषैली की कामना करते हैं।

''पापमय षरीर की समानता में''

इस सच्चाई का वर्णन फिलि.2:7–8 में भी है। यीषु के पास वास्तव में मनुश्य षरीर था (परन्तु पाप का स्वभाव नहीं था, फिलि. 2:7–8; इब्रा.7:26)। वह वास्तव में हममें से एक थे। हमारे ही समान उनकी भी परीक्षा हुई तौभी वह निर्दोश निकले (इब्रा.4:15)। वह हमें समझते हैं।

''पापबलि होने के लिए''

यह विचार 2कुरि.5:2 और 1पत.2:24 में भी दर्षाया गया है। यीषु मसीह मरने के लिए ही आए (यषा.53:4–6, 10–12; मरकुस. 10:45)। यीषु मसीह का निर्दोश जीवन पापबलि बन गया (यूह.1:29)।

''षरीर में पाप पर
दण्ड की आज्ञा दी''

यीषु की मृत्यु ने समस्त मानवजाति के पाप की समस्या हल कर दी न कि केवल व्यक्तिगत पाप का हल (जैसे मूसा की व्यवस्था करती थी)। परमेष्वर के अनादिकाल के छुटकारे की पद्धती को यीषु के जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान ने पूर्ण किया (प्रेरित.2:23; 3:8; 4:28; 13:29)। उन्होंने यह भी हमें दिखाया कि मनुश्य क्या और कैसा हो सकता है (यूह.13:15; 1पत.2:21)।

8:4

यह आयत षायद नई वाचा की ओर संकेत कर रहा है (यिर्म.31:33; यहे.36:26–27)। हमारे उद्धार के दो पहलूओं के साथ यह कार्य कर रहा है। पहला पहलू यह है कि हमारे पास व्यक्तिगत योग्यता न होने के बावजूद भी यीषु ने पुरानी वाचा की समस्त माँगों को पूरा किया और उन पर विष्वास करने के द्वारा उस धार्मिकता को हमारे ऊपर एक मुफ्त तोहफे के समान स्थान्तरित किया। हम इसे धर्मी ठहराया जाना या पदवीय षुद्धिकरण कहते हैं। परमेष्वर विष्वासी को नया हृदय तथा नई आत्मा देते हैं। सो हम षरीर में नहीं वरन आत्मा में चलते हैं। इसे प्रगतिषील षुद्धिकरण कहते हैं। मसीहत एक नई वाचा है जिसमें न्यायसंगत (उद्धार का वरदान) और उत्तरदायित्व (मसीहसमानता) षामिल है (रोमियों.6:13)। दुःख की बात यह है कि कई विष्वासी गलत रीति से या तो संसारिक जीवन बिताते हैं (1कुरि.3:1–3)।

''जो षरीर के अनुसार नहीं वरन
आत्मा के अनुसार चलते हैं''

गला.5:16–25 में यह भेद हमें नज़र आता है। एक न्यायिक धार्मिकता के पीछे पीछे धार्मिकता की जीवनषैली होना अनिवार्य है। नई वाचा का नया हृदय और मन हमारे उद्धार पर आधारित नहीं वरन परिणाम पर है। अनन्तकाल के जीवन में कई विषेशताऐं हैं।

8:5

पौलुस 8:5–8 में ''आत्मा में'' और ''षरीर में'' जीवन का भेद बता रहे हैं (षरीर का काम – गला.5:19–21; आत्मा का फल – गला.5:22–25)।

8:6

''मन लगाना''

यहूदी जानते थे कि कान और आँखें आत्मा के झरोखे हैं। पाप का जन्म विचार से होता है। हम जैसे जीवन बिताते हैं वैसे ही बन जाते हैं (रोमियों.12:1–2; फिलि.4:8)।

पौलुस ने रब्बीयों की मनुश्य के अन्दर के ''दो उद्देष्यों'' वाली पारम्परिक बातों का पीछा नहीं किया। पौलुस के लिए अच्छा उद्देष्य पतित मानव को प्रस्तुत करना नहीं था वरन परिवर्तन का प्रस्तुतिकरण था। पौलुस के लिए यह पवित्र आत्मा का अन्दर निवास था जिन्होंने अन्दरूनी आत्मिक लड़ाई को छेड़ा है (यूह.16:7–14)।

''जीवन''

यह अनन्तकाल के जीवन को दर्षाता है, नए युग का जीवन।

''षान्ति''

वास्तव में इस षब्द का अर्थ है *''टूटे हुओं को पुनः जोड़ना''* (यूह.14:27; 16:33; फिलि.4:7)। देखिए विषेश षीर्शक : षान्ति 5:1। षान्ति के बारे में तीन प्रकार के विवरण नए नियम में पाए जाते हैं।

1) मसीह के द्वारा परमेष्वर के साथ हमारी षान्ति जो सकर्मक सच्चाई है (कुलु.1:20)

2) परमेष्वर के साथ ठीक होने का हमारा कर्तापरक अनुभव (यूह.14:27; 16:33; फिलि.4:7)

3) परमेष्वर मसीह यीषु के द्वारा अन्यजाति और यहूदी दोनों को एकता में एक षरीर का अंग बना रहे हैं (इफि.2:14–17; कुलु. 3:15)

8:7–11

परमेष्वर बिना मनुश्य के बारे पौलुस कई टिप्पणियाँ देते हैं; (1) परमेष्वर से बैर रखता है (रोमियों.8:7); (2) परमेष्वर के अधीन नहीं है (रोमियों.8:7); (3) परमेष्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते हैं (रोमियों.8:8); (4) आत्मिक रीति से मरा हुआ है जो अनन्तकाल की मृत्यु में परिवर्तित होता है (रोमियों.8:10–11)। रोमियों.5:6, 8 और 10 में इसकी समानता को देखिए।

8:7

एन ए एस बी, एन आर एस वी ''षरीर पर मन लगाना परमेष्वर से बैर रखना है''

एन के जे वी ''षारीरिक मन परमेष्वर से षत्रुता में है''

टी इ वी ''लोग परमेष्वर के षत्रु बन गए हैं''

एन जे बी ''बेलगाम मनुश्य का स्वभाव परमेष्वर के विरूद्ध है''

देखिए इस वाक्यांष की समानता को – ''षरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है'' (रोमियों.8:6), और ''जो षरीर के अनुसार चलते हैं'' (रोमियों.8:4)। ध्यान दीजिए कि पतित मनुश्य का स्वभाव मन लगाना और जीवनषैली दोनों है (रोमियों.7:5)।

''और न हो सकता है''

पतित मानवजाति ने परमेष्वर के पीछे हो लेने को नहीं चुना और वे पीछे हो लेने में सक्षम भी नहीं हैं। पवित्र आत्मा की सहायता के बिना पतित मानवजाति आत्मिक बातों की ओर प्रतिक्रिया नहीं कर सकती (यषा.53:6; 1पत.2:24–25)। परमेष्वर हमेषा उपक्रम करते हैं (यूह.6:44, 65)।

8:8

''जो षारीरिक दषा में हैं''

पौलुस इस वाक्यांष को दो तरह से प्रयोग करते हैं (1) भौतिक षरीर (रोमियों.1:3; 2:28; 4:1; 9:3, 5); (2) मनुश्य का प्रयास, परमेष्वर से हटकर (रोमियों.7:5; 8:4–5)। यहाँ पर दूसरे वाला ठीक बैठता है। यह विद्रोही अविष्वासी मनुश्य की ओर संकेत करता है।

रोमियों.8:9—11

9 परन्तु जब कि परमेश्‍वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।

10 और यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है।

11 और यदि उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है; तो जिस ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।

8:9

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। पौलुस यह विष्वास करते थे कि इसको पढ़ने वाले रोम की कलीसिया के विष्वासी ही होंगे।

''मसीह की आत्मा''

यदि मनुश्य के पास आत्मा है तो वह विष्वासी है, या यदि उसके पास आत्मा नहीं है तो वह आत्मिक रीति से खोया हुआ है। उद्धार के समय हम पवित्र आत्मा को प्राप्त करते हैं। हमें और अधिक आत्मा की आवष्यकता नहीं परन्तु उन्हें हम अधिक चाहिए।

आत्मा (रोमियों.8:9क), परमेष्वर की आत्मा (रोमियों.8:9ख) और मसीह की आत्मा (रोमियों.8:9ग) ये सब पर्यायवाचक हैं।

विषेश षीर्शक : यीषु और पवित्र आत्मा

पवित्र आत्मा और पुत्र के कार्य में मेल जोल है। जी कॉम्पबेल मॉर्गन के अनुसार आत्मा के लिए अच्छा नाम ''दूसरे यीषु'' होगा। पुत्र और आत्मा का षीर्शक और कार्यों की निम्नलिखित रूपरेखा को देखिए।

1) आत्मा को ''मसीह की आत्मा'' कहा गया (रोमियों.8:9; 2कुरि.3:17; गला.4:6; 1पत.1:11)

2) दोनो को एक जैसे षब्दों से पुकारा गया

(क) सत्य

(1) यीषु (यूह.14:6)

(2) पवित्र आत्मा (यूह.14:17; 16:13)

(ख) वकील या सहायक

(1) यीषु (1यूह.2:1)

(2) पवित्र आत्मा (यूह.14:16, 26; 15:26; 16:7)

(ग) पवित्र

(1) यीषु (लूका.1:35; 14:26)

(2) पवित्र आत्मा (लूका.1:35)

3) दोनों ही विष्वासी के अन्दर वास करते हैं

(क) यीषु (मत्ती.28:20; यूह.14:20, 23; 15:4–5; रोमियों.8:10; 2कुरि.13:5; गला.2:20; इफि.3:17; कुलु.1:27)

(ख) पवित्र आत्मा (यूह.14:16–17; रोमियों.8:9, 11; 1कुरि.3:16; 6:19; 2तीमु.1:14)

(ग) पिता भी वास करते हैं (यूह.14:23; 2कुरि.6:16)

8:10

''मसीह तुममें हैं''

तुम षब्द यहाँ पर बहुवचन है। षब्द ''मसीह'' पुत्र या आत्मा के अन्दर निवास की ओर संकेत करता है (यूह.14:16–17; कुलु. 1:27)। यदि लोगों के अन्दर पुत्र या आत्मा नहीं है तो वे मसीही नहीं हैं (1यूह.5:12)। पौलुस के लिए धर्मषास्त्रीय रीति से *''मसीह में'' और ''आत्मा में''* षब्द एक सा है।

''देह पाप के कारण मरी हुई है''

आदम के पाप, पतित संसार, व्यक्तिगत विद्रोह के कारण मसीही लोग भौतिक षरीर में अवष्य मरेंगे (रोमियों.5:12–21)। पाप की मज़दूरी निष्चय ही है – आत्मिक मृत्यु (उत्प.3; इफि.2:1) भौतिक मृत्यु में प्रगट हुई (उत्प.5; इब्रा.9:27)। विष्वासी आत्मा के नए युग (योए.2:28–29; प्रेरित.2:16) और पाप तथा विद्रोह के प्राचीन युग (रोमियों.8:21, 35) में भी जीवित रहते हैं।

''परन्तु आत्मा धार्मिकता के कारण जीवित है''

यहाँ पर कुछ अनुवादकों और टिप्पणी कर्ताओं के बीच ''आत्मा'' षब्द के प्रति असहमती है, कि यह मनुश्य की आत्मा है, ***(एन ए एस बी, ए एस वी, एन आइ वी, विलियम्स, जे बी)*** कि यह पवित्र आत्मा है *(के जे वी, टी इ वी, आर इ बी, कार्लबार्थ, सी के बारट, जॉन मुरे और एवर्ट हैरिसन)*।

इस छोटे से वाक्यांष के प्रति हमारी समझ को बड़ा प्रसंग साफ कर देता है। मसीह पर भरोसा किए हुए लोग पतित संसार में रहने के कारण मृत्यु का सामना करने जा रहे हैं। हालांकी यीषु मसीह पर विष्वास करने के द्वारा उन्हें मिली हुई धार्मिकता के कारण उनके पास अनन्त जीवन है (इफि.2:4–6)। यह परमेष्वर के राज्य के प्रति *''है परन्तु अभी नहीं''* संघर्श है। पुराने और नए युग के बीच एक समय अन्तराल है।

''धार्मिकता''

देखिए विषेश षीर्शक 1:17

8:11

''यदि''

देखिए नोट 8:9

''उन्हीं की आत्मा जिन्होंने यीषु को मरे हुओं में से जिलाया''

त्रिएकता के कौन से व्यक्ति विष्वासी के अन्दर हैं? अधिकतर मसीही कहेंगे आत्मा। यह बिलकुल सही है, लेकिन वास्तविकता में त्रिएकता के तीनों व्यक्ति विष्वासी के अन्दर वास करते हैं।

1) पवित्र आत्मा (यूह.14:16–17; रोमियों.8:11; 1कुरि.3:16; 6:19; 2तीमु.1:14)

2) पुत्र (मत्ती.28:20; यूह.14:20, 23; 15:4–5; रोमियों.8:10; 2कुरि.13:5; गला.2:20; इफि.3:17; कुलु.1:27)

3) पिता (यूह.14:23; 2कुरि.6:16)

यह एक अच्छा वाक्यांष है जिससे यह प्रगट होता है कि छुटकारे के काम में तीनों व्यक्ति सम्मिलित थे।

1) पिता परमेष्वर ने यीषु को जिलाया (प्रेरित.2:24; 3:15; 4:10; 5:30; 10:40; 13:30, 33, 34, 37; 17:31; रोमियों.6:4, 9; 8:11; 10:9; 1कुरि.6:14; 2कुरि.4:14; गला.1:1; इफि.1:20; कुलु.2:12; 1थिस्स.1:10)

2) पुत्र ने स्वयं अपने आप को जिलाया (यूह.2:19–22; 10:17–18)

3) पवित्र आत्मा ने यीषु को जिलाया (रोमियों.8:11)

इस त्रिएकता का प्रभाव रोमियों.8:9–10 में देखा जा सकता है।

विषेश षीर्शक : त्रिएक परमेष्वर

त्रिएकता के तीनों व्यक्तियों के कार्यों को देखिए। षब्द ''त्रिएकता'' बाइबल में नहीं है, इस षब्द का उपयोग तेर्तूलियन ने किया पर विचारधारा बाइबल के अन्दर बहुत ही स्पश्ट है।

क. सुसमाचार

1) मत्ती.3:16–17; 28:19 (और समान आयतें)

2) यूह.14:26

ख. प्रेरितों के काम

प्रेरित.2:32, 33, 38, 39

ग. पौलुस

1) रोमियों.1:4, 5; 5:1, 5; 8:1–4, 8–10

2) 1कुरि.2:8—10; 12:4—6

3) 2कुरि.1:21; 13:14

4) गला.4:4—6

5) इफि.1:3—14, 17; 2:18; 3:14—17; 4:4—6

6) 1थिस्स.1:2—5

7) 2थिस्स.2:13

8) तीत.3:4—6

घ. पतरस

1पत.1:2

ङ. यहूदा

यहू.1:20—21

इसके बारे में पुराने नियम में भी बताया गया है।

क. परमेष्वर के लिए बहुवचन का प्रयोग

1) नाम *''इलोहिम'* बहुवचन है परन्तु परमेष्वर के लिए जब भी इसे प्रयोग किया गया तब एक वचन क्रिया का प्रयोग किया गया।

2) उत्पत्ति में *''हम''* षब्द का प्रयोग 1:26, 27; 3:22; 11:7 किया गया।

3) व्यव.6:4 में *''एक''* का प्रयोग बहुवचन है (जैसे कि उत्प.2:24, यहे.37:17 में है)।

ख. ईष्वरीयता के प्रतिनिधि प्रभु के दूत थे

1) उत्प.16:7—13; 22:11—15; 31:11, 13; 48:15—16

2) निर्ग.3:2, 4; 13:21; 14:19

3) न्या.2:1; 6:22, 23; 13:3—22

4) जक.3:1—2

ग. परमेष्वर और पवित्र आत्मा अलग अलग हैं

उत्प.1:1—2; भ.सं.104:30; यषा.63:9—11; यहे.37:13—14

घ. परमेष्वर *(यहोवा*) और मसीहा *(अडोन)* अलग अलग हैं

भ.सं.45:6—7; 110:1; जक.2:8—11; 10:9—12

ङ. मसीह और पवित्र आत्मा अलग अलग हैं

जक.12:10

च. यषा.48:16; 61:1 में इन तीनों का उल्लेख है।

यीषु की ईष्वरीयता और पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व षुरूवाती अद्वैतवादी, और नियमवद्ध विष्वासियों के लिए समस्याऐं उत्पन्न कर दीं।

1) तेर्तूलियन ने पुत्र को पिता से छोटा प्रगट किया।

2) ऑरिगन ने पुत्र और पवित्र आत्मा के भाव को पिता से छोटा प्रगट किया।

3) एरियस ने पुत्र और पवित्र आत्मा के ईष्वरत्व को नकारा।

4) एक राजा विष्वास में विष्वास किया जाता है कि परमेष्वर उत्तराधिकारी के रूप में अवतार लेते हैं।

बाइबलीय सामग्री के आधार पर त्रिएकता ने ऐतिहासिक रूप से बढ़ौतरी प्राप्त की।

क. निकीया की सभा ने 325 ई0 में पिता की बराबरी में यीषु को परिपूर्ण ईष्वरीयता की मान्यता दी।

ख. कन्सतेनतिनोपल की सभा ने 381 ई0 में पिता और पुत्र की बराबरी में पवित्र आत्मा को परिपूर्ण ईष्वरीयता तथा व्यक्तित्व की मान्यता दी।

ग. *डे ट्रीनीटेट* में अगस्तिन ने त्रिएकता के उपदेष का विवरण किया है।

यहाँ पर अवष्य ही रहस्यमय बात है। परन्तु नया नियम एक ईष्वरीय भाव की मान्यता तीन अलग अलग व्यक्तिगत प्रगटीकरण में देता है।

''तुम्हारी नष्वर देहों को भी जिलाएंगे''

यीषु मसीह और उनके पीछे हो लेने वालों का पुनरूत्थान बहुत ही प्रमुख उपदेष है (1कुरि.15; 2कुरि.4:14)। मसीहत यह सिखाती है कि अनन्तकाल में विष्वासी के पास देह होगी (1यूह.3:2)। यदि आत्मा के द्वारा जिलाए गए तो उनके पीछे हो लेने वाले भी।

रोमियों.8:12–17

12 सो हे भाईयो, हम शरीर के कर्जदार नहीं, ताकि शरीर के अनुसार दिन काटें।

13 क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे।

14 इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्रा हैं।

15 क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिस से हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं।

8:12

''इसलिए अब''

पौलुस अपने प्रस्तुतिकरण (रोमियों.8:1–11) के गूढार्थ को निकालने में व्यस्त हैं।

''हम षरीर के कर्जदार नहीं''

यह मसीही आज़ादी का दूसरा पहलू है (रोमियों.14:1–15:13)। यह 8:1–11 में बताए गए षुद्धिकरण का निशकर्श है जो पदवीय तथा प्रगतिषील है। यह इस बात को और भी प्रमाणित करता है कि विष्वासी को अपने प्राचीन पतित स्वभाव के साथ संघर्श करते रहना है (रोमियों.7)। पहले एक चुनाव करना है (षुरूवाती विष्वास) और लगातार चुनाव करते रहना है (जीवनषैली विष्वास)।

8:13

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। पौलुस यह विष्वास करते थे कि इसको पढ़ने वाले रोम की कलीसिया के विष्वासी ही होंगे और आत्मा के चलाए चलने वाले मसीही होंगे।

''तुम षरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे''

8:13 में प्रयोग की गई दोनों क्रियाऐं वर्तमानकाल की हैं जो एक जारी रहने वाले कार्य को बताती है। बाइबल तीन प्रकार की मृत्यु के बारे में बताती है; (1) आत्मिक मृत्यु (उत्प.2:17; 3:1–7; इफि.2:1); (2) षारीरिक मृत्यु (उत्प.5) तथा (3) अनन्तकाल की मृत्यु (प्रका.2:11; 20:6, 14; 21:8)। यहाँ पर बताई गई मृत्यु आदम की आत्मिक मृत्यु है (उत्प.3:14–19) जिसका परिणाम समस्त मानवजाति की षारीरिक मृत्यु बन गई (उत्प.5)।

आदम का पाप मनुश्य में मृत्यु लाया (रोमियों.5:12–21)। हममें से प्रत्येक ने अपनी ही अभिलाशा से पाप का साथी होने का चुनाव किया। यदि हम पाप में बनें रहें तो वह हमें अनन्तकाल के लिए मार डालेगा (प्रका.29:6, 14 – ''दूसरी मृत्यु'')। मसीही होने के नाते हमें हर दिन पाप और स्वयं के लिए मरते हुए परमेष्वर के लिए जीना है (रोमियों.6)।

''यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे
तो जीवित रहोगे''

विष्वसियों के उद्धार का निष्चय उनकी जीवनषैली से वैध तथा प्रगट है (याकूब और 1यूहन्ना की पत्रियाँ)। विष्वासी इस नए जीवन को अपने बलबूते पर नहीं पर पवित्र आत्मा की सहायता से बिताते हैं (रोमियों.8:14)। तौभी उन्हें प्रतिदिन अपना जीवन उनकी अधीनता में करना है (इफि.5:17–18)। इस प्रसंग में देह की क्रिया प्राचीन पापमय समय के जीवन का है। यह अनन्तकाल में षरीर के अस्तित्व का खण्डन नहीं है (रोमियों.8:23)। लेकिन यह अन्दर निवास आत्मा (नया युग) और पाप के साथ संघर्श (प्राचीन युग) का भेद है।

8:14

''जितने लोग परमेष्वर की आत्मा के
चलाए चलते हैं''

यह परमेष्वर की आत्मा की ओर से लगातार मार्गनिर्देषन को दिखाता है। परमेष्वर की आत्मा हमें मसीह की ओर अगुवाई करती तथा हमारे अन्दर मसीह को उत्पन्न करती है (रोमियों.8:29)। यह एक निर्णय नहीं वर्न मसीहत है। यह एक जारी रहने वाली षिश्यता की प्रक्रिया है जो एक निर्णय के साथ आरम्भ होती है। यह विषेश मौका, घटना, या सेवकाई की ओर इषारा नहीं करता पर यह दैनिक प्रक्रिया है।

''परमेष्वर के पुत्र''

पुराने नियम में इस बहुवचन रूप को स्वर्गदूतों के लिए प्रयोग किया गया है। एकवचन आदम, इस्राएल, उसके राजा, तथा मसीह के लिए प्रयोग हुआ है। यहाँ पर यह समस्त विष्वासियों के लिए है। यूनानी में 14वें आयत में *होयोई* (बेटे), और 16वें आयत में *टेक्ना* (बच्चे) षब्द का प्रयोग किया गया है।

8:15

''आत्मा''

10वें आयत के समान यह भी संदिग्ध है। यह उद्धार प्राप्त लोगों की आत्मा या तो पवित्र आत्मा की ओर संकेत करता है। 16वें आयत में दोनों हैं।

पौलुस ने इस प्रकार के व्यकरण का प्रयोग कई जगहों पर किया कि पवित्र आत्मा एक विष्वासी के अन्दर क्या–क्या उत्पन्न करती है।

1) यहाँ ''दासत्व की आत्मा नहीं'', ''लेपलकपन की आत्मा'' (रोमियों.8:15)

2) नम्रता की आत्मा (1कुरि.4:21)

3) विष्वास की आत्मा (2कुरि.4:13)

4) ज्ञान और प्रकाष की आत्मा (इफि.1:17)

पौलुस ने और भी जगहों में अपने आप को व्यक्त के लिए *न्यूमा* षब्द का प्रयोग किया है (1कुरि.2:11; 5:3, 14; 7:34; 16:89 कुलु.2:5)। इस संदर्भ में 8:10 और 15 इसी श्रेणी में आते हैं।

''दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि भयभीत हों'' भय प्राचीन स्वभाव की विषेशता थी। नए स्वभाव की विषेशता का 8:14–17 में विवरण किया गया है।

''लेपालक संतान''

रोमी कानून के अन्तर्गत लेपालकपन बहुत ही कठीन था, लेकिन एक बार कोई लेपालक हो गया तो वह स्थाई होता था (गला. 4:4–6)। इस रूपक ने एक विष्वासी की सुरक्षा की धर्मषास्त्रीय सच्चाई को प्रगट किया। स्वभाविक पुत्र वारीस बनने से वंचीत रह सकता है परन्तु लेपालक नहीं। उद्धार के बारे में बताने के लिए प्रयोग किए गए रूपकों में पौलुस का सबसे श्रेश्ठ रूपक यही है (रोमियों.8:15, 23)। पतरस और यूहन्ना ने भी इसी प्रकार के रूपकों का प्रयोग किया है ''नया जन्म'' (यूह.3:3; 1पत.1:3, 23)।

''अब्बा''

बच्चे अपने पिता को सम्बोधित करने के लिए इस आरामीक षब्द का प्रयोग करते हैं। यीषु और प्रेरित आरामीक बोलते थे। अब विष्वासी लोग मसीह के लहु के सहारे अन्दरनिवासित आत्मा के द्वारा विष्वास और पारिवारिक निष्चयता के साथ पवित्र परमेष्वर के पास आ सकते हैं (मरकुस.14:36; गला.4:6)। क्या यह आष्चर्य की बात नहीं कि पतित मानवजाति परमेष्वर को पिता कहकर पुकारे? और सनातन परमेष्वर यही चाहते हैं। देखिए विषेश षीर्शक : पिता 1:7

8:16

''आत्मा आप ही''

आत्मा एक व्यक्ति हैं। उन्हें षोकित किया जा सकता है (इफि.4:30; 1थिस्स.5:19)।

''हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि
हम परमेष्वर की संतान हैं''

जैसे आयत 13 में कहा गया कि बदला हुआ जीवन ही एक पहलू है जो विष्वासी के विष्वास जीवन की निष्चयता है। निष्चयता का दूसरा पहलू है कि अन्दर निवासित आत्मा के द्वारा भय हटाकर परमेष्वर के साथ पारिवारिक प्रेम में मिलना। देखिए आर

एस वी और एन आर एस वी अनुवाद : ''जब हम पुकारते हैं, अब्बा, पिता!, आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देती है कि हम उनकी संतान हैं''(गला.4:6)। यह दृढ़ निष्चय तभी आता है जब एक विष्वासी आत्मा के द्वार परमेष्वर को पिता पुकारता है।

आत्मा की अन्दरूनी गवाही प्रायोगिक है।

1) पाप का अपराधबोध

2) मसीह की समान बनने की इच्छा

3) परमेष्वर के परिवार में ही रहने की इच्छा

4) परमेष्वर के वचन के लिए भूख

5) सुसमाचार प्रचार की आवष्यकता के प्रति समझ

6) उदारता के मसीही दान की आवष्यकता के प्रति समझ

उपरोक्त अन्दरूनी इच्छाऐं हमारे परिवर्तन का सबूत हैं।

उद्धार की निष्चयता संस्थाओं का मामला बन गया है

1) इस जीवन में उद्धार के निष्चयता की सम्भावना का रोमन *कैथोलिक* धर्मषास्त्र इन्कार करता है, लेकिन यदि वह एक ''सच्ची कलीसिया'' का सदस्य है तो उद्धार का आष्वासन प्राप्त कर सकता है।

2) जॉन कैल्वीन (*नवीकरण परम्परा*) के अनुसार निष्चयता चुनाव (पूर्व निर्णय) पर आधारित है, लेकिन जब तक न्याय का दिन न आए तब तक कोई सुरक्षित नहीं है।

3) जॉन वैस्ली (*मैथोडिस्ट परम्परा*) के अनुसार निष्चयता सम्पूर्ण प्रेम (जाने हुए पाप के ऊपर जीवन बिताना) पर आधारित है।

4) अधिकतर *बापटिस्ट* की निष्चयता बाइबलीय वायदे ''मुफ्त अनुग्रह'' पर आधारित है (परन्तु आसानी से हर प्रकार की चेतावनी को भूल जाते हैं)।

मसीही निष्चयता के प्रति नए नियम के प्रस्तुतिकरण में दो खतरें हैं।

1) *''एक बार उद्धार पाया'' तो ''हमेषा के लिए उद्धार प्राप्त है''* के ऊपर अधिक ज़ोर।

2) उद्धार प्राप्ति के लिए मनुश्य के व्यवहार के ऊपर अधिक ज़ोर।

इब्रानियों आध्याय 6 सिखता है कि यदि एक बार बाहर गया तो हमेषा के लिए बाहर है। मनुश्य के अच्छे काम उन्हें उद्धार प्राप्त अवस्था में स्थिर नहीं रखती (गला.3:14)। परन्तु अच्छे काम मसीही जीवन का लक्ष्य है (इफि.2:10)। यह परमेष्वर से मिलने तथा पवित्र आत्मा के अन्दर निवास का स्वभाविक परिणाम है। यह सच्चे परिवर्तन का सबूत है।

निष्चयता कभी भी पवित्रताई के लिए बाइबल के आह्वान को कम नहीं करता। धर्मषास्त्रीय रीति से निष्चयता त्रिएक परमेष्वर के कार्य और चरित्र पर आधारित है।

1) पिता का अनुग्रह और प्रेम

2) पुत्र द्वारा पूर्ण किया गया बलिदान का कार्य

3) आत्मा व्यक्तियों को मसीह की ओर बढ़ाती तथा मन फिरे हुए व्यक्तियों के अन्दर यीषु को उत्पन्न करती है।

बदला हुआ सांसारिक विचार, बदला हुआ हृदय, बदली हुई जीवनषैली और बदली हुई आषा ही उद्धार का सबूत है। यह एक भावनात्मक अनुभव से भरे हुए निर्णय पर आधारित नहीं है जिसमें जीवनषैली का कोई सबूत न हो (अर्थात फल – रोमियों. 7:15–23; 13:20–22)। उद्धार के समान, निष्चयता भी मसीही जीवन जैसे परमेष्वर के अनुग्रह के साथ एक प्रतिक्रिया है और वह प्रतिक्रिया जीवनभर जारी रहनी चाहिए। यह बदला हुआ और बदलते रहने वाला विष्वास जीवन है।

''गवाही देता''

यह यूनानी षब्द *सिन* का मिश्रित षब्द है। विष्वासी की आत्मा के साथ पवित्र आत्मा गवाही देती हैं। पौलुस इस प्रकार के षब्दों का प्रयोग 2:15; 8:16; 9:1 में करते हैं।

8:17

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। पौलुस यह विष्वास करते थे कि इसको पढ़ने वाले रोम की कलीसिया के विष्वासी ही होंगे।

इस आयत में तीन मिश्रित षब्द हैं। जिसमें *सिन* का प्रयोग हुआ है। इसका अर्थ है *''सहयोग से सम्मलित होना''*। विष्वासी यीषु के संगी वारिस हैं। विष्वासी दुःख में भी यीषु के संगी हैं, और महिमा के भी संगी हैं। इस अध्याय में और भी *सिन* मिश्रित षब्द हैं (रोमियों.8:22 – दो बार, 26, 28)। इफि.2:5–6 में भी तीन बार सिन मिश्रित षब्द का प्रयोग किया गया है। जिसमें मसीह में विष्वासी के जीवन के बारे में उल्लेख है।

''वारिस''

विष्वासियों के बारे में बताने के लिए प्रयोग किया हुआ यह दूसरा रूपक है (रोमियों.4:13–14, 1, 7; गला.3:29)। देखिए दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : विष्वासियों की विरासत

वचन कहता है कि यीषु के साथ सम्बन्ध होने के कारण विष्वासी के पास कई चीज़ें विरासत में हैं, यीषु समस्त बातों के वारिस हैं (इब्रा.1:2) और विष्वासी निम्नलिखित बातों के संगी वारिस हैं (रोमियों.8:17; गला.4:7)।

क. राज्य (मत्ती.25:26; 1कुरि.6:9–10; 15:50)

ख. अनन्त जीवन (मत्ती.19:29)

ग. परमेष्वर के वायदे (इब्रा.6:12)

घ. परमेष्वर के वायदों की सुरक्षा (1पत.1:4; 5:9)

एन ए एस बी, एन के जे वी ''यदि निष्चय हम उनके साथ दुःख उठाएं''

एन आर एस वी ''सच में, यदि हम उनके साथ दुःख उठाएं''

टी इ वी ''क्योंकि यदि हम उनके दुःखों के भागी हों''

जे बी ''उनके दुःखों को बाँटने से''

इस पतित संसार में विष्वासियों के लिए दुःख सहना एक नियम सा है (मत्ती.5:10–12; यूह.15:18–21; 16:1–2; 17:14; प्रेरित. 14:22; रोमियों.5:3–4; 8:17; 2कुरि.4:16–18; फिलि.1:29; 1थिस्स.3:3; 2तीमु.3:12; याक.1:2–4; 1पत.4:12–19)। यीषु ने आदर्ष रखा (इब्रा.5:8)। इस अध्याय की बाकी आयतें इस विशय को आगे बढ़ाते हैं।

''उनके साथ महिमा पाएं''

यूहन्ना की रचनाओं में जब कभी भी यीषु ने अपनी मृत्यु के बारे में बताया तब ''महिमा पाना'' षब्द का प्रयोग किया। यीषु के दुःख उठाने के द्वारा उन्होंने महिमा पाई। विष्वसी पदवीय स्तर से और कई बार अनुभवों से मसीह के जीवन की घटनाओं के वारिस बनते हैं (रोमियों.6)। देखिए विषेश षीर्शक : परमेष्वर के राज्य में राज करना 5:17–18।

रोमियों.8:18–25

18 क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दुःख और क्लेश उस महिमा के साम्हने, जो हम पर प्रगट होनेवाली है, कुछ भी नहीं हैं।

19 क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है।

20 क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं पर आधीन करनेवाले की ओर से व्यर्थता के आधीन इस आशा से की गई।

21 कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्राता प्राप्त करेगी।

22 क्योंकि हम जानते हैं, कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है।

23 और केवल वही नहीं पर हम भी जिन के पास आत्मा का पहिला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं।

24 आशा के द्वारा तो हमारा उद्धार हुआ है परन्तु जिस वस्तु की आशा की जाती है जब वह देखने में आए, तो फिर आशा कहां रही? क्योंकि जिस वस्तु को कोई देख रहा है उस की आशा क्या करेगा?

25 परन्तु जिस वस्तु को हम नहीं देखते, यदि उस की आशा रखते हैं, तो धीरज से उस की बाट जाहते भी हैं।

8:18

''समझना''

इसका षाब्दिक अर्थ है *''जोड़ना''*/ मसीही दुःख भोग के प्रभाव को लगातार समझने की कोषिष पौलुस कर रहे हैं। यह हिसाब किताब का षब्द है जो ध्यानपूर्वक पहुचे हुए निशकर्श की ओर संकेत करता है। यह रोमियों की पत्री में बार – बार आने वाली मुख्य विचारधारा है। देखिए नोट 2:3। विष्वासियों को मिले हुए और समझे हुए आत्मिक सच्चाई के प्रकाष के अनुसार जीवन बिताना है।

''दुःख''

1कुरि.4:9–12; 2कुरि.4:7–12; 6:4–10; 11:24–27; इब्रा.11:35–38 में हमें मसीह की सेवकाई में षामिल दुःख के बारे में कुछ जानकारी मिलती है।

''इस समय के''

यहूदी यह विष्वास करते थे कि इस संसार का इतिहास दो भागों में बँटा हुआ है : अब का बुरा समय और आने वाला धर्ममय समय (मत्ती.12:32; मरकुस.10:30)। पुराने नियम ने मसीह की प्रतीक्षा की जो इस धर्ममय समय की स्थापना करेंगे। मसीह का आगमन, एक जो उद्धारकर्ता के (देहधारण) रूप में, दूसरा जो प्रभु के (दूसरा आगमन) रूप में, इन दोनों समयों के बीच के

अन्तराल को बढ़ाया। विष्वासी ऐसे एक संदर्भ में जी रहे हैं – परमेष्वर का राज्य ''अब है'' परन्तु ''पूरी रीति से नहीं''। देखिए विषेश षीर्शक : युग और आने वाला युग 12:2।

''महिमा...योग्य (कुछ भी)''

यह दोनों षब्द पुराने नियम के सामान्य विचार वजन–भारी से सम्बन्धित है। ''योग्य'' एक व्योपारिक षब्द है जिसका अर्थ है ''जितना हो सके उतना तौलो''। इब्रानी षब्द महिमा का मूल बहुमूल्य सोने के भारीपन से सम्बन्धित है। देखिए नोट 3:23।

पौलुस के लेखों में षब्द ''महिमा'' भविश्यकाल सम्बन्धि बातों की ओर इषारा करता है। यह महिमा और सामर्थ प्राप्त ऊँचे उठाए हुए यीषु मसीह के पुनः आगमन की ओर संकेत करता है कुलु.3:4। देखिए विषेश षीर्शक : महिमा 3:23।

''हम पर प्रगट होने वाली है''

यह परमेष्वर या पवित्र आत्मा के अभिकर्ता की ओर इषारा करता है (रोमियों.8:20)। विष्वसी विष्वास से जीवन व्यतित करते हैं न कि देखी हुई बातों से (रोमियों.8:24; 1कुरि.2:9; 13:12; 2कुरि.5:7; इब्रा.11:1)

8:19

''सृश्टि बड़ी आषा भरी दृश्टि से बाट जोह रही है''

साहिल तलाषने वाले एक व्यक्ति के समान सृश्टि का चित्रण किया गया है। जब आदम और हव्वा ने पाप किया तब सृश्टि के ऊपर नकारात्मक प्रभाव पड़ा (उत्प.3:17–19)। अन्त में समस्त सृश्टि का छुटकारा होने का है (सिवाय विद्रोही स्वर्गदूत, अविष्वासी मनुश्य और उनकी अलग जगह – ब्रूस कॅरली एण्ड कटीस वॉगन, रोमनस, पृश्ठ.95 पृश्ठ के नीचे का लेख 46)।

विषेश षीर्शक : प्राकृतिक स्रोत

क. परिचय

1) समस्त सृश्टि मनुश्य के साथ परमेष्वर के प्रेम का मंच है।

2) यह पतन में भागी है (उत्प.3:7; 6:1; रोमियों.8:18–20), साथ ही साथ भविश्यकाल के छुटकारे में भी यह भागी है (यषा. 11:6–9; रोमियों.8:20–22; प्रका.21, 22)।

3) स्वर्थीपन से पापमय, पतित मानवजाति ने प्राकृतिक वातावरण को नश्ट कर दिया। द कैनोन ऑफ वैस्टमिनिस्टर के लेखक एडवॉर्ड कारपैन्टर के अनुसार ''...भौगोलिक संदर्भ में इस विष्व के ऊपर मनुश्य का निर्दय व्यवहार है – वो भी परमेष्वर की सृश्टि के ऊपर। वायु के ऊपर आक्रमण जिससे वायु प्रदूशित होती है, नैसर्गिक जल स्रोतों को वह गन्दा करता है, मिट्टी को भी जहरीला करता है, वनों को काट डालता है। असावधानी का यह लम्बा समय बेलगाम नाष की ओर पहुचाता है। यह आक्रमण थोड़ा–थोड़ा और भाँति–भाँति से हैं। हम इस प्रकृति के प्रति कम समझ और कम उत्तरदायित्व रख रहे हैं, और हमें आने वाली पीढ़ी के बारे में कोई चिन्ता नहीं है''।

4) प्रदूशण और षोशण का नतीजा केवल हम ही नहीं काटेंगे परन्तु हमारी संतान इससे अधिक क्लेष भोगेगी।

ख. बाइबलीय सामग्री

पुराना नियम

1) उत्प.1–3

(क) सृश्टि परमेष्वर के द्वारा बनाई हुई विषेश जगह है जहाँ परमेष्वर मनुश्य के साथ संगति रखते हैं (उत्प.1:1–25)।

(ख) सृश्टि अच्छी है (उत्प.1:4, 10, 12, 18, 21, 25), हाँ, बहुत ही अच्छा है (उत्प.1:31)। यह परमेष्वर की गवाही के लिए है (भ.सं.19:1–6)।

(ग) समस्त सृश्टि का मुख्य उद्देष्य मनुश्य के ऊपर है (उत्प.1:26, 27)

(घ) मनुश्य अधिकार (इब्रानी में कुचलना) रखने के लिए है । परमेष्वर के लिए भण्डारी के समान (उत्प.1:28–30; भ.सं.8:3–8; इब्रा.2:6–8)। परमेष्वर सृश्टिकर्ता, परिपालक, छुड़ाने वाले तथा सृश्टि के ऊपर प्रभु हैं (निर्ग.19:5; अय्य.37–41; भ.सं.24:1–2; 95:3–5; 102:25; 115:15; 121:2; 124:8; 134:3; 146:6; यषा.37:16)।

(ङ) सृश्टि के प्रति मनुश्य का भण्डारीपन, हम उत्प.2:15 में देखते हैं कि ''काम करें और उसकी रक्षा करें'' (लैव्य.25:23; 1इति.29:14)

2) परमेष्वर सृश्टि से प्रेम करते हैं विषेश रूप से जानवरों से।

(क) जानवरों के साथ सही व्यवहार के लिए मूसा की व्यवस्था

(ख) यहोवा लिव्यातान के साथ खेलते हैं (भ.सं.104:26)

(ग) परमेष्वर को जानवरों का ध्यान है (योना.4:11)

(घ) भविश्यकाल में प्रकृति का अस्तित्व (यषा.11:6–9; प्रका.21–22)

3) प्रकृति भी, कुछ हद तक परमेष्वर की महिमा करती है।

(क) भ.सं.19:1–6

(ख) भ.सं.29:1–9

(ग) अय्य.37–41

4) वायदे के प्रति परमेष्वर के प्रेम और विष्वासयोग्यता को प्रगट करने का एक साधन है प्रकृति।

(क) व्यव.27–28; 1राजा.17

(ख) नबियों की पुस्तकें

नया नियम

1) परमेष्वर सृश्टिकर्ता के रूप में हैं। एक मात्र सृश्टिकर्ता है जो त्रिएक परमेष्वर हैं (इलोहिम, उत्प.1:1; आत्मा, उत्प.1:2 और यीषु, नया नियम)। बाकी सब कुछ रचा हुआ है।

(क) प्रेरित.17:24

(ख) इब्रा.11:3

(ग) प्रका.4:11

2) यीषु मसीह सृश्टि के लिए परमेष्वर के अभिकर्ता हैं।

(क) यूह.1:6, 10

(ख) 1कुरि.8:6

(ग) कुलु.1:16

(घ) इब्रा.1:2

3) यीषु ने अपने प्रचारों में प्रकृति के प्रति परमेष्वर के ध्यान को अप्रत्यक्ष रीति से प्रगट करते हैं।

(क) मत्ती.6:26, 28–30, आसमान के पक्षी और मैदान के सोसन के फूल

(ख) मत्ती.10:29, गौरैया

4) पौलुस कहते हैं कि सृश्टि के द्वारा परमेष्वर को जानने में मनुश्य जिम्मेदार है (अर्थात प्राकृति का प्रकाषन, रोमियों. 1:19–20; प्रका.21, 22)

ग. सारांष

1) हम इस प्रकृति के नियम से बन्धे हुए हैं।

2) पापमय मानवजाति परमेष्वर के इस तोहफे, जो प्रकृति है, का दुरूपयोग किया है।

3) इस प्रकृति का क्रम अस्थाई है, यह मिट जाने वाला है (2पत.3:7)। परमेष्वर हमारे इस संसार को इतिहास में जोड़ रहे हैं। सृश्टि का छुटकारा होगा (रोमियों.8:18–25)।

''प्रगट हाने के लिए''

इस षब्द का अर्थ है सूचित करने के लिए ''पर्दा हटाना''। नए नियम की अन्तिम पुस्तक का नाम भी यही है (द *अपोकालिप्स*)। दूसरे आगमन को कई बार प्रकाषन या प्रगटिकरण कहते हैं (1कुरि.1:7–8; 1पत.1:7, 13)।

''परमेष्वर के पुत्र''

यह मसीहियों के बारें में बताने के लिए साधारण रूप से प्रयोग किया गया एक रूपक है (रोमियों.8:14, 16)। यह इस बात को प्रगट करता है कि परमेष्वर पिता है और यीषु उनका अनोखा बेटा है (यूह.1:18; 3:16, 18; इब्रा.1:2; 3:6; 5:8; 7:28; 1यूह.4:9)। पुराने नियम में इस्राएल परमेष्वर का पुत्र था (होषे.11:1), और राजा भी परमेष्वर का पुत्र था (2षमू.7)। इस विचार को नए नियम में सबसे पहले मत्ती.5:9 में प्रगट किया गया है (यूह.1:12; 2कुरि.6:18; गला.3:26; 1यूह.3:1, 10; प्रका.21:7)।

8:20

एन ए एस बी, एन के जे वी, एन आर एस वी ''क्योंकि सृश्टि व्यर्थता के अधीन है''

टी इ वी ''क्योंकि सृश्टि को अयोग्यता का दण्ड मिला है''

जे बी ''यह गलती सृश्टि का भाग नहीं है कि वह उस लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाई''

सैप्टुआजैन्ट में व्यर्थ षब्द का प्रयोग कई अर्थों में किया गया है – निरर्थक, अयोग्य, नाकाम, मूर्ति और षून्यता। परमेष्वर के लक्ष्य के प्रति समस्त सृश्टि नाकाम रही (उत्प.3:17, 19), परन्तु पतन के अभिषाप को परमेष्वर एक दिन हटाऐंगे (प्रका.22:3)। वर्तमान संसार परमेष्वर के अनुसार नहीं है।

*''अधीन करने वाले
की ओर से आषा से''*

यहाँ पर अनिष्चित भूतकाल क्रिया है और यह परमेष्वर के बारे में बता रहा है (एन ए एस बी, एन के जे वी, टी इ वी)। उन्होंने भौतिक सृश्टि को व्यर्थता के अधीन इस लिए किया कि : (1) मनुश्य के विद्राह; (2) मनुश्य को अपनी ओर मोड़ने की कोषिष (व्यव.27–29)।

यह उद्देष्यपूण व्यर्थता एक समय के लिए ही है। छुड़ाए गए मनुश्य के पास भौतिक भविश्य का वायदा है (षरीर और संसार)।

परमेष्वर पहले से ही आदम के विद्रोह के बारे में जानते थे। उन्होंने इस बात को होने तथा पतित संसार में पतित मानव के साथ कार्य करने का चुनाव किया। वर्तमान संसार परमेष्वर की कल्पना पर आधारित नहीं है। वर्तमान संसार नहीं होगा भविश्य का संसार (2पत.3:10; प्रका.21:1–3)। देखिए आषा पर नोट 5:2।

8:21

''सृश्टि आप ही विनाष के दासत्व से छुटकारा पाकर''

प्रकृति अनन्तकाल का भाग है (यषा.11:6–10)। पुनः बनाई हुई धरती में स्वर्ग वापस आएगा (मत्ती.5:18; 24:35; 2पत.3:10; प्रका. 21:1)। भविश्य में अदन उस आनन्द की ओर वापस आएगा। परमेष्वर मनुश्य के साथ, व्यक्ति–व्यक्ति के साथ, मनुश्य जानवरों के साथ, और मनुश्य धरती के साथ संगति रखेंगे। बाइबल, वाटिका के अन्दर परमेष्वर, मनुश्य और जानवरों के साथ मेलमिलाप और संगति से षुरू होती है (उत्प.1–2)। बाइबल का अन्त भी वैसा ही है (प्रका.21–22)।

''विनाष''

देखिए विषेश षीर्शक 1:23।

''परमेष्वर की संतानों की महिमा की स्वतंत्रता में''

विष्वासियों को आयत 14 में ''परमेष्वर का पुत्र'' और आयत 16 में ''परमेष्वर की संतान'' और आयत 17 में ''परमेष्वर के वारिस'' कहा गया है। परमेष्वर के भविश्यकाल की महिमा को आयत 18 में विष्वासियों के सामने प्रगट किया गया है। अब आयत 19 में सृश्टि परमेष्वर के संतानों की प्रतीक्षा में है कि वे उनके साथ भविश्यकाल की महिमा बाँटे (रोमियों.8:21)। सृश्टि की यह बहाली, विषेश रूप से मानवजाति के, यथार्त में सृश्टि के उद्देष्य को पूरा करेगी। परमेष्वर और मानवजाति घनिश्ठ सम्बन्ध में बनाए गए।

8:22

''सारी सृश्टि करहाती है''

यह पौलुस का दूसरा *सिन* मिश्रित षब्द है, *''साथ–साथ करहाते हुए''।* षायद पौलुस यिर्म.12:4, 11 का परोक्ष रूप से उल्लेख किया है (व्यव.27–29), जहाँ इस्राएल मनुश्य के पाप के कारण आए हुए विनाष के कारण रो रहा है।

''प्रसवपीड़ा में तड़पती हुई''

यहूदियो के बीच इस विचारधारा को ''नए युग के लिए प्रसवपीड़ा'' कहते हैं (मरकुस.13:8)। धार्मिकता के नए दिन का भोर बिना समस्या के नहीं होगा। इस पतित संसार की नैतिक और आत्मिक स्थिति और भी बुराई की ओर गिरेगी (2थिस्स.2:1–12; 7 कटोरे, नरसींगे, और मुहरें प्रका.5–18)।

यहाँ तीन का कराहना है (1) सृश्टि (रोमियों.8:22); (2) विष्वासी (रोमियों.8:23); (3) एक मध्यस्थ के समान आत्मा (रोमियों.8:26), यह तीनों उत्प.3 के कारण है (इस रूपक का प्रयोग 8:16 से है)।

8:23

''हम भी...आप ही अपने...अपनी''

इस सर्वनामों को दोहराया गया तथा वे महत्वपूर्ण भी हैं।

''आत्मा का पहला फल''

आधुनिक यूनानी में इस षब्द का प्रयोग *''मंगनी की अंगुठी'* को बताने के लिए है। यह *''पवित्र आत्मा की मुहर'* की समानता में है (2कुरि.1:22), और *''आत्मा का बयाना''* की समानता में भी है (2कुरि.5:5; इफि.1:14)।

पुराने नियम में पहला फल आने वाली कटनी को दर्षाता है। यह कटनी के ऊपर परमेष्वर के स्वमित्व को दर्षाता है। जैसे यीषु पुनरूत्थान के पहले फल हैं वैसे आत्मा नए युग का पहला फल हैं (1कुरि.15:20)। विष्वासी उस आत्मा के द्वारा जो उसके अन्दर और साथ–साथ हैं, परमेष्वर की संतान होने के नाते स्वर्ग की खुषियों को चख सकते हैं। यह *''अब है'' पर ''पूर्ण नहीं''* यहूदी युगों का संघर्श है। विष्वासी का स्वदेष स्वर्ग है परन्तु वह धरती पर जीवित है।

''आप ही अपने में कराहते हैं''

यह *''अब है पर पूर्ण नहीं''* यहूदी युग के अन्तराल के विशय की ओर इषारा करता है। परमेष्वर का राज्य उपस्थित है परन्तु सम्पन्न नहीं हुआ है। विष्वासी के पास पुनरूत्थित जीवन है फिर भी वह षारीक रूप से मरने जा रहा है (2कुरि.5:2–4)। हमने उद्धार पाया पर फिर भी हम पाप करते हैं (रोमियों.7)।

''लेपालक होने की बाट जोहते हैं''

उद्धार के लिए पौलुस के द्वारा प्रयोग किया गया प्रमुख रूपक है लेपालक। विष्वासी के उद्धार का आरम्भ मनफिराव के लिए निर्णय तथा विष्वास से होता है और मसीहसमानता की ओर प्रगति प्राप्त करते हैं। जब तक पुनरूत्थान का दिन न आए तब तक विष्वासी पूर्ण रीति से उद्धार प्राप्त नहीं कर सकते (रोमियों.8:30; 1यूह.3:2)।

कुछ यूनानी हस्तलेखों में ''लेपालक'' षब्द का प्रयोग नहीं है। *एम एस एस पी46, डी, एफ, जी* और कुछ *पुराने लातीनी अनुवाद*, हालाँकी इसे *आलेफ, ए, बी, सी* और *कुछ पुराने लातीनी, वल्गेट, सीरीया, कॉप्टिक और अरमेनियन अनुवादों* में प्रयोग किया गया है।

''अपने देह के छुटकारे''

इसका अर्थ है पुनः खरीदा जाना। पुराने नियम के अन्दर इस विचार को किसी गुलाम की आज़ादी उसके रिष्तेदार के द्वारा किए जाने के लिए है *(गोएल)*। आलंकारीक भाशा में इसका प्रयोग मनुश्य का पाप की गुलामी से परमेष्वर की ओर से छुटकारे के लिए प्रयोग करते हैं। इस बात के लिए जो कीमत चुकाई गई वो देहधारी पुत्र का पापरहित जीवन था। देखिए विषेश षीर्शक 3:24।

मसीहत यहूदी धर्म के समान (अय्य.14:14–15; 19:25–26; दानि.12:2) इस बात का प्रमाण देती है कि विष्वासियों के पास अनन्तकाल में भौतिक (मनुश्य रूप जरूरी नहीं है; 1कुरि.15:35–49) षरीर होगा। विष्वासियों की आत्मि देह नए युग में जीवन बिताने लायक होगी कि वे परमेवर के साथ घनिश्ठता से संगति रखें।

8:24

''आषा के द्वारा हमारा उद्धार हुआ है''

जब आयत 23 हमारे भविश्य उद्धार के बारे में बताता है तब आयत 24 आत्मा के कार्य के द्वारा हमारे भूतकाल उद्धार के बारे में बताता है। उद्धार के बारे में बताने के लिए नया नियम में कई प्रकार की क्रियाओं का प्रयोग किया गया है।

क. अनिष्चित भूतकाल क्रिया (प्रेरित.15:11; रोमियों.8:24; 2तीमु.1:9; तीत.3:5; रोमियों.13:11)

ख. आसन्न भूतकाल (इफि.2:5, 8)

ग. वर्तमानकाल (1कुरि.1:18; 15:2; 2कुरि.2:15; 1पत.3:21; 4:18)

घ. भविश्यकाल (रोमियों.5:9, 10; 10:9; 1कुरि.3:15; फिलि.1:28; 1थिस्स.5:8–9; इब्रा.1:14; 9:28)

इसलिए उद्धार एक षुरूवाती विष्वास और निर्णय के साथ आरम्भ होकर समपूर्ण जीवनषैली की प्रक्रिया से गुज़रकर एक दिन प्रत्यक्ष रूप से पूर्ण हो जाती है (1यूह.3:2)।

8:25

''आषा''

देखिए दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : आषा

पौलुस ने इस षब्द का प्रयोग कई बार विभिन्न तथा एक दूसरे से मेल खाने वाले अर्थ से किया है। कई बार यह षब्द विष्वासी के विष्वास के पूर्तिकरण के साथ प्रगट होता है (1तीमु.1:1)। इसको महिमा, अनन्त जीवन, उद्धार का पूर्तिकरण, दूसरा आगमन इत्यादि बातों से प्रगट कर सकते हैं। लक्ष्यक्ष–प्राप्ति निष्चय ही है पर समय भविश्य में है तथा उस घड़ी को कोई नहीं जानता। यह कई बार विष्वास और प्रेम के सहयोगी के रूप में प्रगट होता है (1कुरि.13:13; 1थिस्स.1:3; 2थिस्स. 2:16)। पौलुस के द्वारा प्रयोग की गई ''आषा'' की एक भागिक सूची निम्नलिखित है :

(1) दूसरा आगमन (गला.5:5; इफि.1:18; 4:4; तीत.2:13)

(2) यीषु हमारी आषा है (1तीमु.1:1)

(3) विष्वासी को परमेष्वर की सम्मुख प्रस्तुत किया जाएगा (कुलु.1:22–23; 1थिस्स.2:19)

(4) आषा स्वर्ग में रखी हुई है (कुलु.1:5)

(5) सुसमाचार पर भरोसा (कुलु.1:23; 1थिस्स.2:19)

(6) समपूर्ण उद्धार (कुलु.1:5; 1थिस्स.4:13; 5:8)

(7) परमेष्वर की महिमा (रोमियों.5:2; 2कुरि.3:12; कुलु.1:27)

(8) मसीह के द्वारा अन्यजातियों का उद्धार (कुलु.1:27)

(9) उद्धार की निष्चयता (1थिस्स.5:8)

(10) अनन्त जीवन (तीतु.1:2; 3:7)

(11) मसीही परिपक्वता का परिणाम (रोमियों.5:2–5)

(12) समस्त सृश्टि का छुटकारा (रोमियों.8:20–22)

(13) लेपालकपन की लक्ष्य–प्राप्ति (रोमियों.8:23–25)

(14) परमेष्वर का षीर्शक (रोमियों.15:13)

(15) विष्वासियों के प्रति पौलुस की इच्छा (2कुरि.1:7)

(16) नए नियम के विष्वासियों के लिए पुराना नियम एक मार्गदर्षक के रूप में (रोमियों.15:4)

''धीरज से''

यह षब्द *''होपोमोने''* 5:3 और 15:4–5 में प्रयोग किया गया है। विष्वासियों का उद्धार प्रौढ़ता की ओर बढ़ रहा है तथा एक दिन लक्ष्य–प्राप्त करेगा। धीरज (प्रका.2:8, 11, 17, 26; 3:5, 12, 21; 21:7) बाप्टिस्ट के *''एक बार उद्धार पाया तो हमेषा के लिए उद्धार''* बात पर आवष्यक तालमेल का इषारा करता है। अधिकतर बाइबलीय सच्चाई तर्कषास्त्रीय तथा तनावपूर्ण है।

विषेश षीर्शक : निरन्तर प्रयत्न करने की आवष्यकता

मसीही जीवन से जुड़े बाइबलीय सिद्धान्तों का वर्णन करना बहुत ही कठीन है क्योंकि वे बिलकुल ही पूर्वी विवादीय जोड़े में दिए गए हैं। यह जोड़े विरोधी प्रतीत होते हैं पर दोनों ही बाइबलीय हैं। पष्चिमी मसीही एक सत्य को चुनते और विपरीत सत्य को छोड़ देते हैं। मैं इसे प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

क. क्या उद्धार प्राथमिक निर्णय है मसीह पर भरोसा करने का या षिश्यता का जीवनभर का समर्पण है?

ख. क्या उद्धार श्रेश्ठ परमेष्वर के अनुग्रह के माध्यम से किया गया चुनाव है या मानवजाति का विष्वास करने और पष्चाताप करने के द्वारा किया हुआ परमेष्वर के अवसर का प्रतिउत्तर है?

ग. क्या उद्धार, एक बार पा लिया जाए, तो खो देना असम्भव है, या लगातार प्रयत्न करते रहने की आवष्यकता है?

लगातार प्रयत्न करते रहना का कार्य कलीसिया के इतिहास में सतत है। समस्या नए नियम के विरोधाभासी भागों से षुरू होती है :

क. प्रमाणिकता पर मूलपाठ

1) यीषु के कथन (यूह.6:37; 10:28–29)

2) पौलुस के कथन (रोमियों.8:35–39; इफि.1:13; 2:5, 8–9; फिलि.1:6; 2:13; 2थिस्स.3:3; 2तीमु.1:12; 4:18)

3) पतरस के कथन (1पत.1:4–5)

ख. लगातार प्रयत्न करते रहने की आवष्यकता पर मूलपाठ

1) यीषु के कथन (मत्ती.10:22; 13:1–9, 24–30; मरकुस.13:13; यूह.8:31; 15:4–10; प्रका.2:7, 17, 20; 3:5, 12, 21)

2) पौलुस के कथन (रोमियों.11:22; 1कुरि.15:2; 2कुरि.13:5; गला.1:6; 3:4; 5:4; 6:9; फिलि.2:12; 3:18–20; कुलु.1:23)

3) इब्रानियों के लेखक का कथन (इब्रा.2:1; 3:6, 14; 4:14; 6:11)

4) यूहन्ना के कथन (1यूह.2:6; 2यूह.1:9)

5) पिता के कथन (प्रका.21:7)

बाइबलीय उद्धार त्रिएक परमेष्वर के प्रेम, दया और अनुग्रह से उत्पन्न होता है। कोई भी मनुश्य पवित्र आत्मा के कार्य के बिना उद्धार नहीं पा सकता (यूह.6:44, 65)। परमेष्वर पहले आते और कार्य का निर्धारण करते हैं, पर यह माँग करते हैं कि मनुश्य विष्वास और पष्चाताप से प्रतिउत्तर दे षुरूवात में और लगातार। परमेष्वर वाचा के सम्बन्ध के साथ मानवजाति के से साथ कार्य करते हैं। यहाँ पर विषेश अधिकार और ज़िम्मेदारियाँ दोनों ही हैं।

उद्धार मनुश्यों के सामने प्रस्तुत किया गया है। यीषु की मृत्यु ने पतित मानव के पाप की समस्या का निवारण कर दिया।

परमेष्वर ने मार्ग तैयार कर दिया है और चाहते हैं कि सभी लोग जो उनके स्वरूप में रचे गए हैं उनके प्रेम और मसीह में के उपाय का प्रतिउत्तर दें।

यदि आप इस बारे में गैर–कैल्विनीय विचार में अधिक जानना चाहते हैं तो, देखिए

क. डेल मूडी, द वर्ड ऑफ ट्रूथ, इर्डमनस, 1981 (पृश्ठ.348–365)

ख. होवार्ड मार्षल, कैप्ट बाए द पावर ऑफ गॉड, बेथेनी फैलोषिप, 1969

ग. रॉवर्ट षैन्क, लाईफ इन द सन, वैस्टकौट, 1961

इस क्षेत्र में बाइबल दो भिन्न समस्याओं को प्रस्तुत करती है : (1) प्रमाणिकता को फलरहित और स्वर्थी जीवन के प्रमाण पत्र के रूप में लेना और (2) जो लोग सेवकाई और व्यक्तिगत पाप की समस्या से संघर्श कर रहे हैं उन्हें उत्साहित करना। समस्या यह है कि गलत समूह गलत संदेषों को ले रहे हैं और सीमित बाइबल के पदों पर धर्मषास्त्रीय षिक्षा की रचना कर रहे हैं। कुछ विष्वासियों को प्रमाणिकता के संदेष की अत्यन्त आवष्यकता है जबकी दूसरों को दहला देने वाली चेतावनियों की आवष्यकता है। आप कौन से समूह में हैं?

रोमियों.8:26–27

26 इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर है, हमारे लिये विनती करता है।

27 और मनों का जांचनेवाला जानता है, कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्रा लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है।

8:26

''इसी रीति से''

यह आयत 23–25 में वर्णित आत्मा की मध्यस्थता की सेवकाई जो *''कराहना''* तथा *''आषा''* से सम्बन्धित है।

''आत्मा भी सहायता करती है''

यह *सिन और एन्टी* दोनों का मिश्रित षब्द है (रोमियों.8:28)। इसका सही अनुवाद *''थामते रहना''* है। यह षब्द केवल यहाँ और लूका.10:40 में प्रयोग किया गया है। समपूर्ण त्रिएक परमेष्वर विष्वासियों के लिए है। पिता ने मानवजाति के बदले में पुत्र को मरने भेजा और अब वह हमारे लिए मध्यस्थता कर रहे हैं (रोमियों.8:34; 1यूह.2:1)। आत्मा पतित लोगों को मसीह के पास ले आती हैं और उनके अन्दर मसीह को उत्पन्न करती हैं (यूह.16:8–15)। सहायता षब्द का अर्थ है ''थामते रहना'' – यह विष्वासियों के जीवन में आत्मा की सहायता (मध्यस्थता) के भाग को दर्षाता है।

''आत्मा आप ही ऐसी आहें भर–भर कर
हमारे लिए विनती करती हैं''

विष्वासी अपने पतन के कारण आहें भरते हैं और उनके लिए मध्यस्थता में आत्मा आहें भरती हैं। छुड़ाए हुए के अन्दर से आत्मा विनती करती हैं, और पिता की दाहिनी ओर बैठे यीषु भी उनके लिए प्रार्थना करते हैं (रोमियों.6:27, 34; इब्रा.9:24; 1यूह.2:1)। यह मध्यस्थता विष्वासियों को प्रार्थना करने के लिए सामर्थ देती है (रोमियों.8:15; गला.4:6)। यह वाक्यांष आत्मा के वरदान अन्यभाशा की ओर इस संदर्भ में संकेत नहीं करता परन्तु विष्वासियों के प्रति पिता से आत्मा की मध्यस्थता को दर्षाता है।

''विनती करती हैं (मध्यस्थता)''

देखिए विषेश षीर्शक : पौलुस द्वारा *हुपर* मिश्रित षब्दों का प्रयोग 1:30।

8:27

''मनों को जाँचनेवाला''

यह पुराने नियम में प्रयोग किया गया मुख्य विशय है (1षमू.2:7; 16:7; 1राजा.8:39; 1इति.28:9; 2इति.6:30; भ.सं.7:9; 44:21; नीति.15:11; 20:27; 21:2; यिर्म.11:20; 17:9—10; 20:12; लूका.16:15; प्रेरित.1:24; 15:8)। परमेष्वर हमें सही मायने में जानते हैं तौभी वह हमसे प्रेम करते हैं (भ.सं.139)।

''वह संतों के लिए विनती करती हैं''

यूह.16:2—15 में पवित्र आत्मा के कार्यों स्पश्ट प्रगटीकरण है, उनमें से एक है मध्यस्थता।

फिलि.4:21 को छोड़कर जहाँ कहीं षब्द *''संत''* प्रयोग किया गया है वे सब बहुवचन हैं। मसीही लोग परमेष्वर के घराने के सदस्य हैं, मसीह का षरीर हैं, और प्रत्येक विष्वासी के अन्दर बना हुआ नया मन्दिर है। यह पष्चिमी व्यक्तिगत विचारधारा के लिए आवष्यक धर्मषास्त्रीय तुला है। देखिए विषेश षीर्शक : संत 1:7।

विषेश षीर्शक : पवित्रात्मा का व्यक्तिगत गुण

यह ''पवित्र आत्मा'' के बारे में प्रथम प्रस्तुतिकरण है जो कि प्रेरितों के काम में बहुत ही महत्वपूर्ण थीं। पुराने नियम में ''परमेष्वर की आत्मा'' *(रूह)* वह सामर्थ थीं जिन्होंने यहोवा के उद्देष्य को पूरा किया, पर इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है कि वह व्यक्तिगत थीं (पुराने नियम का एक ही परमेष्वर का विचार)। परन्तु नए नियम में पवित्र आत्मा के पूरे व्यक्तित्व और व्यक्तिगत गुण को प्रस्तुत किया गया है।

(1) उनकी निन्दा की जा सकती है (मत्ती.12:31; मरकुस.3:29)

(2) वह षिक्षा देती हैं (लूका.12:12; यूह.14:26)

(3) वह गवाही देती हैं (यूह.15:26)

(4) वह जागरूक करती और निर्देष देती हैं (यूह.16:7—15)

(5) उन्हें ''वह'' कहा गया है *(होस)* (इफि.1:14)

(6) उन्हें षोकित किया जा सकता है (इफि.4:30)

(7) उन्हें बुझाया जा सकता है (1थिस्स.5:19)

त्रिएकत्व के मूलपाठ तीनों व्यक्तियों के बारे में बताता है

(1) मत्ती.28:19

(2) 2कुरि.13:14

(3) 1पत.1:2

पवित्र आत्मा मानव के कार्यों से जुड़ी हुई हैं।

(1) प्रेरित.15:28

(2) रोमियों.8:26

(3) 1कुरि.12:11

(4) इफि.4:30

(5) 1थिस्स.5:15

प्रेरितों के काम की षुरूवात में ही पवित्र आत्मा के काम पर ज़ोर दिया गया है। पेन्तिकुस्त का दिन पवित्र आत्मा के काम की षुरूवात नहीं था पर एक नया अध्याय था। यीषु में हमेषा ही पवित्र आत्मा थी। उनका बपतिस्मा पवित्र आत्मा के कार्य की षुरूवात नहीं था पर एक नया अध्याय था। लूका कलीसिया की षुरूवात प्रभावषाली सेवकाई के एक नए अध्याय के रूप में तैयार करते हैं। यीषु अब भी केन्द्रबिन्दु हैं, पवित्र आत्मा एक प्रभावषाली साधन और पिता का प्रेम, क्षमा और सारी मानवजाति का उनके स्वरूप में फिर से बनाया जाना लक्ष्य है।

रोमियों.8:28–30

28 और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।

29 क्योंकि जिन्हें उस ने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे।

30 फिर जिन्हें उन से पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है, और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।

8:28

''सब बातें''

प्राचीन यूनानी हस्तलेख ए और बी में ''परमेष्वर सब बातों को होने देते हैं'' का प्रयोग किया गया है। पापीरस हस्तलेख पी46 में ''परमेष्वर'' एक विशय के रूप में ''साथ में कार्य करने'' का प्रयोग किया गया है। व्याकरण के आधार पर यह भी सम्भव है कि आयत 28 में ''पवित्र आत्मा'' विशय हो (आयत 27 और एन इ बी और आर इ बी)। यह आयत, 17–18 आयत के ''कश्टों'' और 23 आयत की ''कराहटों'' से भी सम्बन्धित है। विष्वासियों के संदर्भ में भाग्य, किस्मत और अवसर जैसी चीज़ों का कोई अर्थ नहीं है।

''भलाई ही को उत्पन्न करती हैं''

यह *''सिन''* के साथ मिश्रण भी है (आयत 26)। इसलिए इसका अर्थ है ''सब बातें एक साथ मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं''। यह विचार इस बुरे और दुःख भरे संसार में बहुत ही कठीन है (इस विशय में दो सहायक पुस्तकें हैं द गुडनैस ऑफ गॉड – वैनहम एण्ड विथिल स्मीथ और द क्रीस्चनस सीक्रेट ऑफ हैप्पी लाईफ)। यहाँ पर की ''भलाई'' का वर्णन आयत 29 में किया गया है ''उनके पुत्र के स्वरूप के समान''। प्रत्येक विष्वासी के लिए परमेष्वर की योजना मसीह समानता है धनी होना, प्रसिद्धी या अच्छा स्वस्थय नहीं।

''जो परमेष्वर से प्रेम करते हैं,
और जो परमेष्वर के विषेश उद्‌देष्य के

अनुसार बुलाए गए हैं''

यह दो परिस्थितियाँ है जो विष्वासियों को परिस्थितियों के प्रतिकूल होने पर भी जीवन को सकारात्मक प्रकाष में देखने में लगातार सहायता करती हैं (आयत 15)। फिर से वाचा के दो भागों को देखिए मनुश्य की स्वतंत्रता (प्रेम) और परमेष्वर की श्रेश्ठता (बुलाहट)।

8:29—30

इस आयत के क्रिया षब्द एक जजींर बना लेते हैं पहले समय से तब तक जब समय न रहेगा। परमेष्वर हमें जानते हैं और अब भी हमारे लिए हैं और चाहते हैं कि हम उनके साथ रहें। यह साझा संदर्भ है व्यक्तिगत नहीं। महिमित होने का अन्तिम कार्य अब भी भविश्य में है, परन्तु इस संदर्भ में इसे पूरा किए हुए कार्य के रूप में प्रगट किया गया है।

8:29

''पहले से जानते हैं''

पौलुस दो बार इस षब्द का प्रयोग करते हैं यहाँ और 11:2 में। 11:2 में यह यह समय से पहले इस्राएल के प्रति परमेष्वर के वाचा प्रेम को प्रस्तुत करता है। याद रखिए कि इब्रानी में ''जानना'' षब्द घनिश्ठ और व्यक्तिगत सम्बन्ध से जुड़ा हुआ है, किसी के बारे में तथ्यों से नहीं (उत्प.4:1; यिर्म.1:5)। यहाँ पर यह घटनाओं के चक्र में षामिल है (आयत 29—30)। यह षब्द पहले से ही नियुक्त किए जाने से सम्बन्धित है। यह कहना आवष्यक है कि परमेष्वर का पहले से ही जान लेने का ज्ञान चुनाव का आधार नहीं है यदि ऐसा होता तो चुनाव पतित मानवजाति के भविश्य के प्रतिउत्तर पर आधारित होता, जो कि मनुश्यों के कार्यों पर आधारित होता। यह प्रेरित.26:5; 1पत.1:2, 20 और 2पत.3:17 में भी पाया जाता है।

''पहले से ही ठहराए गए''

षब्द ''पहले से जानना'' *(प्रकोगीनॉस)* और ''पहले से ही ठहराया जाना'' *(प्रूरीज़ो)* दोनों ही ''पहले'' *(प्रो)* के साथ मिश्रित षब्द हैं जिसका अनुवाद ''पहले से ही जान लेना'', ''पहले से सीमायें तय करना'' और ''पहले से ही चिन्ह लगाना'' में किया जाना चाहिए।

नए नियम में पहले से ही नियुक्त किए जाने के लिए निष्चित भाग हैं रोमियों.8:28—30; इफि.1:3—14 और रोमियों.9। यह मूलपाठ निष्चित रूप से ज़ोर देते हैं कि परमेष्वर श्रेश्ठ हैं। सारी वस्तुऐं यहाँ तक कि मानव इतिहास भी उनके अधीन है। पहले से ही तैयार की गई उद्धार की ईष्वरीय योजना है जो समय से पूरी होगी। यह योजना चुनिन्दा नहीं है। यह न केवल परमेष्वर की श्रेश्ठता और पहले से ही जानने पर आधारित है परन्तु उनके अपरिवर्तनषील चरित्र प्रेम, दया और अयोग्यों पर अनुग्रह पर आधारित है।

हमें सावधान रहना चाहिए कि पष्चिमी व्यक्तिगतवाद और हमारा सुसमाचारीय उत्साह कहीं इस अदभुत् सत्य को रंग न दें। हमें ऐतिहासिकता और धर्मषास्त्रीय मतभेद में जो अगस्तिन बनाम पेलेगीअस और कैल्वनिज़म बनाम अरमीनिआनीज़म में एक ध्रुव होने से स्वयं को बचाना चाहिए।

पहले से ही नियुक्त किया जाना परमेष्वर के प्रेम, अनुग्रह और दया को सीमित रखने का सिद्धान्त नहीं है और न ही कुछ लोगों को सुसमाचार से वंचित रखने का। यह विष्वासियों के दृश्टिकोण को रचने के द्वारा उन्हें सामर्थी बनाने के लिए है। परमेष्वर सारी मानवजाति के लिए हैं (यूह.3:16; 1तीमु.2:4; 2पत.3:9)। सारी वस्तुऐं परमेष्वर के अधीन हैं। कौन और क्या हमें उन से अलग कर सकता है (रोमियों.8:31—39)? पहले से ही नियुक्त किया जाना जीवन के दो विचारों में से एक को रचता है। परमेष्वर सारे इतिहास को वर्तमान के समान देखते हैं। मनुश्य समय से बन्धा हुआ है। हमारा दृश्टिकोण और दिमाग की योग्यताऐं सीमित हैं। परमेष्वर की श्रेश्ठता और मानवजाति की स्वतंत्र इच्छा के बीच कोई मतभेद नहीं है। यह वाचामय ढाँचा है। बाइबलीय सच्चाई का एक और उदाहरण है जो मौखिक वादविवाद के रूप में दिया गया है। बाइबलीय सिद्धान्त अक्सर एक अलग ही दृश्टिकोण से प्रस्तुत किए जाते हैं। वे अक्सर विरोधाभासी प्रतित होते हैं। सच्चाई विपरीत प्रतीत होते जोड़ों की तुला है। हमें एक सत्य को लेकर तनाव को समाप्त नहीं करना चाहिए। हमें किसी भी बाइबलीय सत्य को स्वयं ही किसी कक्षा में अलग नहीं करना चाहिए।

यह कहना भी अत्यन्त आवष्यक है कि चुनाव का लक्ष्य मरने के बाद स्वर्ग ही नहीं है पर अभी मसीहसमानता है (इफि.1:4; 2:10)। हमें ''पवित्र और निर्दोश'' होने के लिए चुना गया है। परमेष्वर हमें बदलने का चुनाव करते हैं ताकि दूसरे यह परिवर्तन देखें और मसीह में विष्वास द्वारा उन्हें प्रतिउत्तर दें। पहले से नियुक्त किया जाना व्यक्तिगत विषेश अधिकार नहीं है पर वाचामय ज़िम्मेदारी है।

''उनके पुत्र के स्वरूप के समान हो जाऐं''

इस भाग का यह प्रमुख सत्य है। यह मसीहत का लक्ष्य है (गला.4:19; इफि.4:13)। पवित्रता प्रत्येक विष्वासी के लिए परमेष्वर की इच्छा है। परमेष्वर का चुनाव मसीह की समानता के लिए है (इफि.1:4), विषेश स्तर के लिए नहीं। सृश्टि के समय मानवजाति को परमेष्वर का जो स्वरूप दिया गया था (उत्प.1:26; 5:1, 3; 9:6) उसे पुनः स्थापित करना है (कुलु.3:10)। देखिए नोट 8:21 और विषेश षीर्शक : बुलाए हुए 1:6।

''ताकि वह बहुत से भाईयों में पहिलौठे हों''

भ.सं.89:27 में ''पहिलौठा'' षब्द मसीह का षीर्शक है। पुराने नियम में पहलौठे पुत्र को विषेश अधिकार और श्रेश्ठता प्राप्त थी। कुलु.1:15 में यह षब्द सृश्टि पर यीषु की श्रेश्ठता को और कुलु.1:18 और प्रका.1:5 में पुनरूत्थान पर श्रेश्ठता को प्रगट करने के लिए प्रयोग किया गया है। इस मूलपाठ में विष्वासियों को उनके द्वारा उनकी श्रेश्ठता में लाया गया है।

यह षब्द यीषु के अवतरण का प्रस्तुत नहीं करता, परन्तु उन्हें नई जाति के मुखिया के रूप में प्रस्तुत करता है (रोमियों. 5:12—21), क्रम में पहिलौठे, हमारे विष्वास की षुरूवात करने वाले, विष्वास के परिवार में पिता की आषीशों के साधन। देखिए दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : पहिलौठा

षब्द ''पहिलौठा'' *(प्रोटोटोकोस)* बाइबल में विभिन्नार्थ से प्रयोग किया गया है।

(1) पुराने नियम के पृश्ठभूमि परिवार में पहिलौठा के सौभाग्य को प्रगट किया गया है (भ.सं.89:27; लूका.2:7; रोमियों.8:29; इब्रा.11:28)

(2) कुलु.1:15 में यीषु सृश्टि के अभिकर्ता होकर (यूह.1:3; 1कुरि.8:6; कुलु.1:15—16; इब्रा.1:2) नीति.8:22—31 के अनुसार समस्त सृश्टि के पहिलौठे बन गए।

(3) कुलु.1:18, 1कुरि.15:20 बताता है कि यीषु मृतकों में से पहिलौठे हैं।

(4) यह मसीह के लिए पुराने नियम में प्रयोग किया गया षीर्शक है (भ.सं.89:27; इब्रा.1:6; 12:23)। यह षीर्शक यीषु की कई मुख्य बातों के सामान्य विचार को आपस में जोड़ता है।

इस संदर्भ में तीसरा या चौथा अधिक सही है।

8:30

''महिमित''

बाइबल में अक्सर परमेष्वर का वर्णन ''महिमा'' षब्द से किया जाता है। यह षब्द व्यवसायिक मूल षब्द से आया है जिसका अर्थ है ''भारी'' और थोपने के द्वारा, मूल्यवान जैसे सोना। देखिए विषेश षीर्शक 3:23। धर्मषास्त्रीय तौर पर परमेष्वर पतित मानवजाति को आयत 29—30 में दी गई सूची के क्रमानुसार छुड़ा रहे हैं। अन्तिम कदम ''महिमित'' होना है। यह विष्वासियों का पूर्ण उद्धार होगा। यह पुनरूत्थान के दिन होगा जब उन्हें नई आत्मिक देह दी जाएगी (1कुरि.15:50—58) और पूरी तरह से त्रिएक परमेष्वर और एक—दूसरे से जुड़ जाएंगे (1थिस्स.4:13—18; 1यूह.3:2)।

रोमियों.8:31–39

31 सो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?

32 जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दियाः वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा?

33 परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर वह है जो उनको धर्मी ठहरानेवाला है।

34 फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह वह है जो मर गया वरन मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर की दहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है।

35 कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार?

36 जैसा लिखा है, कि तेरे लिये हम दिन भर घात किए जाते हैं; हम वध होनेवाली भेंडों की नाई गिने गए हैं।

37 परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।

38 क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई,

39 न गहराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।

8:31

''हम इन वस्तुओं से क्या कहें''

यह पौलुस का मनपसंद वाक्यांष है जो पहले से ही नियुक्त किए जाने के विरोधी को प्रगट करता है (रोमियों.3:5; 4:1; 6:1; 7:7; 9:14, 30)। यह प्रष्न पहले दिए गए सत्यों से सम्बन्धित है। यह अनिष्चित है कि यह कितनी पीछे तक सम्बन्धित है। यह षायद 3:21–31 या 8:18 को प्रस्तुत करता है। 8:1 में ''इसलिए'' षब्द का प्रयोग और संदर्भ के कारण 8:18 अच्छा अनुमान है।

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। चौंका देने वाली बात है कि पाप के साथ हमारे संघर्श के बीच भी परमेष्वर हमारे लिए हैं।

''कौन हमारे विरूद्ध है''

सर्वनाम ''कौन'' आयत 33, 34 और 35 में दोहराया गया है। यह षैतान को प्रगट करता है (जिसे नाम से 16:2 तक प्रगट नहीं किया गया है)। यह अनुच्छेद 31–39 पुराने नियम के भविश्यद्वक्ताओं की तकनीक, अदालती कार्यवाही, का प्रयोग है (मीका.1, 6)। यहोवा अपने लोगों को आत्मिक व्यभिचार के लिए अदालत में ले जाते हैं। यह यषा.50:8–9 की ओर संकेत है।

कानूनी षब्दों पर ध्यान दीजिए : ''विरूद्ध'' 8:31; ''दोश'' 8:33; ''दोशमुक्ति'' 8:33; ''दण्ड देना'' 8:34; और ''मध्यस्थता'' 8:34। परमेष्वर न्यायाधीष हैं। मसीह बचाव पक्ष के वकील हैं। षैतान दोश लगाने वाला वकील है (पर वह षान्त है)। स्वर्गदूत दर्षकगण हैं (1कुरि.4:9; इफि.2:7; 3:10)।

8:32

''वह जिन्होंने अपने पुत्र को
भी नहीं छोड़ा''

पिता परमेष्वर ने मानवजाति को अपना सबसे उत्तम दिया है। वह विष्वासियों को अभी नहीं छोड़ेंगे और न ही उन्हें कम देंगे (यूह.3:16; रोमियों.5:8)। पुराने नियम के दण्ड देने वाले परमेष्वर और प्रेम करने वाले मसीह का विचार कितना विचित्र है। यह अनन्त तोहफा उत्प.22:12, 16 में इब्राहीम के साथ परमेष्वर के कथन में प्रगट है। रब्बी इस भाग का प्रयोग करके इब्राहीम के वंष के बदले प्रायष्चित के बलिदान के सिद्धान्त को प्रमाणित करते थे।

''पर उन्हें हम सब के लिए दे दिया''

इस संदर्भ में ''सब'' षब्द बहुत ही महत्वपूर्ण है। यीषु संसार के पापों के लिए मारे गए (लूका.2:10–11; यूह.3:16; 4:42; 11:51; 1तीमु.4:10; 1यूह.2:2; 4:14)। यह 5:12–21 के आदम और मसीह रूपक को प्रस्तुत करता है। मसीह की मृत्यु ने पाप की समास्या का समाधान कर दिया। अब यह ''विष्वास करो और पा लो'' समस्या है।

''मुफ्त में हमें सब वस्तुएं दे दीं''

यह क्रिया षब्द यूनानी के अनुग्रह के मूल से आया है। ''सब वस्तुऐं'' आयत 17 को प्रगट करता है। देखिए नोट 3:34।

8:33–34

''दोश...दोशमुक्ति...दण्ड...मध्यस्थता''

यह सभी कानूनी षब्द हैं। अयात 31–39 स्वर्ग में का अदालती दृष्य है। यह षायद यषा.50:8–9 की ओर संकेत है।

8:33

''परमेष्वर के चुने हुए''

यीषु परमेष्वर के चुने हुए मनुश्य हैं सभी मनुश्यों के लिए *(बार्थ)*। इस बारे में नए नियम का स्पश्ट और पूरा भाग इफि.1:3–4 और रोमियों.9:14–26 है। पिता ने सारी मानवजाति को चुनने के लिए यीषु को चुना। यीषु पतित मानवजाति के ''नहीं'' के लिए परमेष्वर का ''हाँ'' थे।

विषेश षीर्शक : चुनाव या पहले से नियुक्ति और धर्मषास्त्रीय संतुलन की आवष्यकता

चुनाव एक अद्‌भुत सिद्धान्त है। यह पक्षपात के लिए बुलाहट नहीं है, परन्तु दूसरों के छुटकारे का एक साधन और हथियार होने के लिए बुलाहट है। पुराने नियम में यह षब्द प्राथमिक तौर पर सेवा के लिए प्रयोग किया गया, पर नए नियम में यह प्राथमिक तौर पर उद्धार के लिए प्रयोग किया गया जो सेवा को जन्म देती है। बाइबल परमेष्वर की श्रेश्ठता और मानवजाति की स्वतंत्र इच्छा के बीच मतभेद से समझौता नहीं करती पर दोनो को प्रमाणित करती है। एक अच्छा उदाहरण रोमियों.9 में परमेष्वर के श्रेश्ठ चुनाव और रोमियों.10 में मानवजाति के आवष्यक प्रतिउत्तर के बीच तनाव है (रोमियों.10:11, 13)।

इस धर्मषास्त्रीय तनाव की कुन्जी इफि.1:4 में पाई जाती है। यीषु परमेष्वर के चुने हुए व्यक्ति हैं और सभी उनमें चुने गए हैं (कार्ल बार्थ)। यीषु पतित मानवजाति की आवष्यकता के लिए परमेष्वर का ''हाँ'' हैं (कार्ल बार्थ)। इफि.1:4 इस विशय को स्पश्ट करने में सहायक है जो यह प्रमाणित करता है कि पहले से नियुक्त किए जाने का लक्ष्य स्वर्ग नहीं पर पवित्रता (मसीहसमानता) है। हम अक्सर सुसमाचार के लाभों से आकर्शित होते हैं पर उसकी ज़िम्मेदारियों को नकार देते हैं। परमेष्वर की बुलाहट (चुनाव) समय के लिए है और साथ ही अनन्तता के लिए है।

सिद्धान्त दूसरे सत्यों के सम्बन्ध में आते हैं, अकेले या गैरसम्बन्धित सत्यों के साथ नहीं। एक अच्छा रूपक तारामंडल बनाम एक तारा है। परमेष्वर सत्य को पूर्वी षब्दों में प्रस्तुत करते है पष्चिमी नहीं। हमें सत्य सिद्धन्तों के विरोधाभासी जोड़ों के तनाव को हटाना नहीं चाहिए :

(1) पहले से नियुक्ति बनाम मनुश्य की स्वतंत्र इच्छा

(2) विष्वासियों की सुरक्षा बनाम निरन्तर प्रयत्न करते रहने की आवष्यकता

(3) वास्तविक पाप बनाम अभिलाशा से किए गए पाप

(4) पापरहित (सिद्धतावादी) बनाम कम पाप करना

(5) षुरुवाती धर्मी ठहराया जाना और षुद्धिकरण बनाम प्रगतिषील षुद्धिकरण

(6) मसीही स्वतंत्रता बनाम मसीही ज़िम्मेदारी

(7) परमेष्वर की श्रेश्ठता बनाम परमेष्वर का भवितव्य

(8) परमेष्वर को जान नही सकता बनाम परमेष्वर को वचन के द्वारा जान सकते हैं

(9) परमेष्वर का राज्य वर्तमानकाल में बनाम भविश्य लक्ष्य–प्राप्ति

(10) पष्चाताप परमेष्वर की ओर से तोहफा बनाम वाचा के प्रतिउत्तर में मनुश्य के लिए पष्चाताप आवष्यक है

(11) यीषु ईष्वर हैं बनाम यीषु मनुश्य हैं

(12) यीषु पिता के बराबर हैं बनाम यीषु पिता से कम हैं

''वाचा'' का धर्मषास्त्रीय विचार परमेष्वर की श्रेश्ठता को एकत्रित करता है (जो हमेषा उपक्रम करते हैं तथा कार्य प्रणाली का निर्माण करते हैं), मनुश्य का विष्वास प्रतिउत्तर और जारी रहने वाले पष्चाताप के साथ। सो असत्याभास के एक भाग को उछालना और दूसरे भाग को नकारने में सावधान रहें। आपके पसन्दीदा उपदेष या धर्मषास्त्र को अधिक महत्व देने में सावधान रहें।

8:34

इस आयत ने यीषु की सेवकाई के कई पहलूओं को प्रगट किया (1) वह मारे गए; (2) वह जी उठे; (3) वह अब परमेष्वर की दाहिनी ओर हैं तथा (4) वह विष्वासियों के लिए निवेदन कर रहे हैं।

हमारे पाप की मज़दूरी को यीषु की मृत्यु ने चुकाया (यषा.53; मरकुस.10:45; 2कुरि.5:21)। यीषु का पुनरूत्थान पिता द्वारा पुत्र की सेवकाई की मान्यता को प्रगट करता है और हमें मृत्यु एवं सताव के बीच में आषा दिलाता है। यीषु की महिमा, पिता की दाहिनी ओर बैठना और विष्वासियों के लिए विनती करना, हमें विष्वास की अच्छी कुष्ती लडने की हिम्मत प्रदान करती है।

''परमेष्वर की दाहिनी ओर''

यह एक अवतारवाद रूपक है। परमेष्वर के पास भौतिक षरीर नहीं है। वह आत्मा हैं। यह रूपक सामर्थ, अधिकार और अस्तित्व के विशय में बताता है। पौलुस इस वर्णन–षैली का अधिक प्रयोग नहीं करते (इफि.1:20; कुलु.3:1)। 8:34 में पौलुस षायद आरम्भिक मसीही मत का उद्धारण कर रहे होंगे (फिलि.2:6; 1तीमु.3:16)।

''निवेदन करते हैं''

यीषु की सेवकाई अभी भी जारी है। वह आत्मा के समान (8:26–27) हमारे लिए निवेदन कर रहे हैं (इब्रा.4:4–16; 7:25)। यह षब्द *''पाराक्लीटे''* से आया है जिसका उपयोग यूह.16:14 में आत्मा के लिए और 1यूह.2:1 में पुत्र के लिए हुआ है। यह दुःखभोगी सेवक के गीत का दूसरा पहलू है (यषा.53:12)।

8:35

''मसीह के प्रेम''
यह या तो सकर्मक नहीं तो कर्तापरक कारक है। यह या तो (1) विष्वसियों के प्रति मसीह का प्रेम, नहीं तो (2) मसीह के प्रति विष्वासियो का प्रेम है। पहले वाला इस संदर्भ में ठीक बैठता है (2कुरि.5:14) क्योंकि मसीह के प्रति विष्वासियों का प्रेम आता जाता रहता है, किन्तु मसीह का प्रेम पक्का और स्थाई है।

इस वाक्यांष में कुछ यूनानी हस्तलेखों में थोड़ा सा अन्तर है। एक प्रचीन यूनानी हस्तलेख के आधार पर ''परमेष्वर का प्रेम'' (अलेफ)। दूसरा एक हस्तलेख दोनों का मिलाता है ''मसीह में परमेष्वर का प्रेम'' (बी)। और यह सी, डी, एफ, जी हस्तलेखों में तथा लातीनी अनुवाद, वल्गेट और पिषीता मे उपलब्ध है।

''क्या क्लेष, या संकट, या उपद्रव''
यह संसार मसीहियों के लिए समस्याओं से भरा है परन्तु यह समस्या या दुश्ट षक्ति उन्हें परमेष्वर से अलग नहीं कर सकता। देखिए विषेश षीर्शक : क्लेष 5:3।

8:36

यहाँ भ.सं.44:22 से एक उद्धारण है। इस भ.सं में परमेष्वर अपने सताए हुए लोगों को छुटकारा देने के लिए बुला रहे हैं।

8:37

एन ए एस बी ''परन्तु इन सब बातों में हम प्रबलता से जयवन्त हैं''

एन के जे वी ''परन्तु इन सब बातों में हम जयवन्त से भी बढ़कर हैं''

एन आर एस वी ''नहीं, इन सब बातों में हम जयवन्त से भी बढ़कर हैं''

टी इ वी ''नहीं, उनके द्वारा इन सब बातों में हमें परिपूर्ण विजय है''

जे बी ''इन तमाम उपद्रवों में हम जय पाते हैं''

''जयवन्त'' षब्द का अर्थ बहुत गहरा है। पौलुस ने दो मिश्रित षब्दों से *(हाइपर + निकाओ)* इस षब्द को बनाया होगा। यह एक अद्भुत मिश्रित रूपक है। विष्वासी मसीह के द्वारा जयवन्त हैं (यूह.16:33; 1यूह.2:13–14; 4:4; 5:4)। देखिए विषेश षीर्शक : पौलुस द्वारा *हुपर* मिश्रित षब्दों का प्रयोग 1:30।

''जिसने हमसे प्रेम किया है''
यह सर्वनाम पिता या पुत्र को सम्बोधित करता है।

8:38

''मैं निष्चय जानता हूँ''
इसका अर्थ है मैं निष्चय जानता हूँ और लगातार जानता रहूँगा।

''स्वर्गदूत''
रब्बीयों का विचार था कि मानवजाति के प्रति परमेष्वर के ध्यान और प्रेम के कारण स्वर्गदूत जलन रखते हैं तथा वे मनुश्य के विरोधी हैं। नॉस्टिक षिक्षक यह सिखाते थे कि स्वर्गदूतों से निकलने वाले संकेत–षब्द के द्वारा ही उद्धार मिल सकता है (कुलुसियों और इफिसियों)।

स्वर्गदूतों के लिए पौलुस के द्वारा प्रयोग की गई षब्दावली ''ए थियोलॉजी ऑफ द न्यू टैस्टामैन्ट'' का लेखक जॉर्ज एल्डोन लाड के पास है।

''पौलुस न केवल अच्छा और बुरा, षैतान और दुश्ट आत्माओं को ही सम्बोधित कर रहे हैं, वरन् उन्होंने कुछ ऐसे षब्द समूहों का प्रयोग किया जिनके द्वारा वह स्वर्गदूतों की पदवियों के बारे में बताते हैं। षब्दावली निम्नलिखित है :

प्रधानता *(आरके)*, 1कुरि.15:24; इफि.1:21; कुलु.2:10

प्रधान *(आरकाइ*, आर एस वी, प्रधानताएं), इफि.3:10; 6:12; कुलु.1:16; 2:15; रोमियों.8:38

अधिकार *(एक्सुसीया)*, 1कुरि.15:24; इफि.1:21; कुलु.2:10

अधिकारी *(एक्सुसीआइ)*, इफि.3:10; 6:12; कुलु.1:16; 2:15

सामर्थ *(डाइनामिस)*, 1कुरि.15:24; इफि.1:21

षक्तियाँ *(डाइनामेइस)*, रोमियों.8:38

सिंहासन *(थ्रोनोई)*, कुलु.1:16

प्रभुता *(कैरिओटेस)*, इफि.1:21

प्रभुताएं *(कैरिओटेटेस)*, कुलु.1:16

अन्धकार की षक्ति, इफि.6:12

दुश्टता की आत्मिक सेना, इफि.6:12

अन्धकार के अधिकारी, कुलु.1:13

हरेक नाम जो लिया जाएगा, इफि.1:21

स्वर्ग, पृथ्वी, और पृथ्वी के नीचे रहने वाले, फिलि.2:10'' (पृश्ठ.401)

नए नियम का दुश्ट आत्माओं के साथ पुराने नियम के पतित स्वर्गदूतों के सम्बन्ध के विशय में कोई सीधा वचन बाइबल में नहीं है। कई विष्वास करते हैं यह सब एक ही हैं। यहूदी भविश्यकाल सम्बन्धि पुस्तकों में दुश्ट आत्माऐं उत्प.6 के दानव हैं जो आधे स्वर्गदूत और आधे मनुश्य हैं। उनका षरीर जल प्रलय में नाष किया गया इसलिए वे निवास करने की जगह तलाष रहे हैं। यह सब कल्पना मात्र ही है। आरम्भ के विशय में हमारे सारे सवालों के उत्तर बाइबल नहीं दे रही है। इसका उद्‌देष्य मानवजाति का छुटकारा है न कि उनकी उत्सुकता।

विषेश षीर्शक : आरके

यूनानी षब्द *आरके* का अर्थ है किसी चीज़ की उत्पत्ति या आरम्भ।

(1) सृश्टि के क्रम का आरम्भ (यूह.1:1; 1यूह.1:1)

(2) सुसमाचार का आरम्भ (मरकुस.1:1; फिलि.4:15)

(3) पहला गवाह (लूका.1:2)

(4) चिन्हों का आरम्भ (आष्चर्यकर्म, यूह.2:11)

(5) सिद्धान्तों का आरम्भ (इब्रा.5:12)

(6) निष्चयता का आरम्भ (इब्रा.3:14)

यह ''प्रधानता'' या ''अधिकार'' के लिए भी प्रयोग किया गया है।

(क) मानवीय अधिकारी

(१) लूका.12:11

(२) लूका.20:20

(३) रोमियों.13:3; तीत.3:1

(ख) स्वर्गदूत अधिकारी

(१) रोमियों.8:38

(२) 1कुरि.15:24

(३) इफि.1:21; 3:10; 6:10

(४) कुलु.1:16; 2:10, 15

ये झूठे षिक्षक स्वर्गीय तथा पृथ्वी के अधिकारों को निकम्मा करते हैं। वे अधिकार के विद्रोही हैं। वे अपनी इच्छाओं को परमेष्वर, स्वर्गदूत, देष के अधिकारियों और कलीसिया के अगुवों से बढ़कर मान्यता देते हैं।

8:39

''ऊँचाई, गहराई नहीं''

यह षब्द तारों के पृथ्वी से सबसे दूर के स्थान और चन्द्रकक्षा का पृथ्वी से निकटतम भाग के लिए प्रयोग किया जाता है, जो देवताओं के रूप में माने जाते हैं जो मनुश्यों के जीवन का नियन्त्रित करते हैं (*फलित ज्योतिश*)। बाद में ये, *इनोस* या स्वर्गदूत के स्तर और पवित्र देवता और छोटे देवता जो पाप के तत्वों की रचना करते हैं के लिए, नॉस्टीसीज़्म नामक झूठी षिक्षा के तकनीकी षब्द बन गए।

''कोई दूसरी रची गई वस्तु''

यह वास्तव में ''दूसरे प्रकार का प्राणी'' *(हेटेरोस)* के लिए प्रयोग किया गया है। संदर्भ माँग करता है कि यह स्वर्गदूतों के सामर्थ की ओर संकेत करता है। यूनानी विभक्ति *हेटेरोस,* दूसरे प्रकार का और *अल्लोस,* दूसरा समान प्रकार का कोइने यूनानी में अप्रचलित हैं परन्तु इस संदर्भ में यह कुछ भिन्नता प्रगट कर रहे हैं।

''परमेष्वर के प्रेम से हमें कोई भी अलग नहीं कर सकता''

प्रमाणिता का क्या अद्भुत कथन है। यह अध्याय दण्ड की आज्ञा नहीं से षुरू होता है और अलग नहीं कर सकता से समाप्त होता है। विष्वासियों के उद्धार को कोई छीन नहीं सकता। पर व्यक्ति को षुरू में (रोमियों.3:21–31) और लगातार (अध्याय.4–8) प्रतिउत्तर देना होगा। पवित्र आत्मा कुन्जी है परन्तु आज्ञा है वाचा का प्रतिउत्तर देने की। पष्चाताप और विष्वास की आवष्यकता है (मरकुस.1:15; प्रेरित.3:16, 19; 20:21) आज्ञाकरीता और निरन्तर प्रयत्न के रूप में।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) अध्याय 8 किस तरह से अध्याय 7 से सम्बन्धित है?

2) यदि विष्वासी के जीवन में पाप जो करता है उसके लिए कोई दण्ड नही है तो?

3) क्या पवित्र आत्मा या यीषु विष्वासियों के अन्दर निवास करते हैं (8:9)?

4) प्रकृति किस तरह मनुश्य के पाप से प्रभावित हूई (8:19–22)? क्या प्रकृति स्वर्ग का भाग होगी (यषा.11:6–10)?

5) पवित्र आत्मा किस तरह हमारे लिए प्रार्थना करती हैं (8:26–27)? क्या यह ''अन्यभाशा बोलने'' को प्रगट करता है?

6) बाइबल कैसे कह सकती है कि इस बुरे संसार में सब बातें भलाई को उत्पन्न करेंगी 8:28? ''भलाई'' की व्याख्या कीजिए (8:29)।

7) षुद्धिकरण को क्यों 8:30 में धर्मषास्त्रीय जंजीर से अलग रखा गया है?

8) 8:31–39 को क्यों अदालत का दृष्य कहा गया है?

9) आयत 34 में यीषु के बारे में जो चार बातें प्रमाणित की गईं हैं उनकी सूची बनाइए।

रोमियों – 9

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
परमेष्वर का चुनाव	इस्राएलियों द्वारा मसीह का त्याग	इस्राएलियों के अविष्वास की समस्या	परमेष्वर और उनके लोग	इस्राएल का विषेश अधिकार
9:1–5	9:1–5	9:1–5	9:1–5	9:1–5
	इस्राएल का त्याग और परमेष्वर का उद्देष्य	इस्राएलियों के साथ परमेष्वर का वायदा असफल नहीं हुआ है		परमेष्वर ने अपने वायदे को पूरा किया
9:6–13	9:6–13	9:6–13	9:6–9	9:6–13
			9:10–13	
	इस्राएल का त्याग और परमेष्वर का न्याय	चुनाव करने का परमेष्वर का अधिकार		परमेष्वर अन्यायी नहीं हैं
9:14–18	9:14–29	9:14–18	9:14–18	9:14–18
परमेष्वर का क्रोध और दया			परमेष्वर का क्रोध और दया	
9:19–29		9:19–26	9:19–21	9:19–21
			9:22–29	9:22–24
				पुराने नियम में सब कुछ पहले से ही कहा गया है
				9:25–29

		9:27–29		
इस्राएल और सुसमाचार	इस्राएल की वर्तमान स्थिति	सच्ची धार्मिकता विष्वास से है	इस्राएल और सुसमाचार	
9:30–10:4	9:30–33	9:30–10:4	9:30–10:4	9:30–33

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का ह्रदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद
2) दूसरा अनुच्छेद
3) तीसरा अनुच्छेद
4) इत्यादि

9–11 अध्यायों का 1–8 से सम्बन्ध

क. इस लिखित भाग के 1–8 से सम्बन्ध को समझने के दो तरीके हैं।

1) यह पूरी तरह से भिन्न षीर्शक है, धर्मषास्त्रीय निक्षिप्त वाक्यांष

(क) 8:39 और 9:1 में तर्कानुसार जोड़ की कमी और तीव्र विरोधाभास है।

(ख) यह सीधे रोम की कलीसिया में यहूदी और अन्यजातिय विष्वासियों के बीच के तनाव से सम्बन्धित है। सम्भवतः यह उन्नति कर रही अन्यजातिय अगुवाई से सम्बन्धित है।

(ग) पौलुस के इस्राएल (व्यवस्था) से सम्बन्धित प्रचार और अन्यजातियों की उनकी प्रेरिताई (मुफ्त अनुग्रह का अवसर) के बारे में गलत समझ व्याप्त थी इसलिए इस भाग में वे इस विशय में चर्चा करते हैं।

2) यह पौलुस के सुसमाचार की चरमसीमा और तर्कानुसार उपसंहार है।

(क) पौलुस अध्याय 8 का अन्त ''परमेष्वर के प्रेम से अलगाव नहीं'' के वायदे से करते हैं। वाचा के लोगों के अविष्वास के बारे में क्या?

(ख) रोमियों.9–11 इस्राएल के अविष्वास के बारे में सुसमाचार के विरोधाभास का उत्तर देता है!

(ग) पौलुस इस विशय के बारे में पूरे पत्र में चर्चा करते हैं (1:3, 16; 3:21, 31 और 4:1 के बाद)।

(घ) पौलुस इस बात को प्रमाणित करते हैं कि परमेष्वर अपने वायदों के पक्के हैं। इस्राएल से उनके पुराने नियम के वायदों का क्या? क्या वो वायदे अर्थहीन और बेकार हैं?

ख. इस लिखित भाग की रूपरेखा बनाने के कई तरीके हैं

1) पौलुस द्वारा काल्पनिक विरोधी के प्रयोग के माध्यम से

(क) 9:6

(ख) 9:14

(ग) 9:19

(घ) 9:30

(ङ) 11:1

(च) 11:11

2) रोमियों 9–11 एक ही लिखित भाग है (अध्याय और आयत पेरणा पाए हुए नहीं हैं और वे बाद में जोड़े गए हैं)। इस पूरे भाग को एक साथ अनुवाद करना होगा। पर इसमें तीन मुख्य विशय हैं।

(क) 9:1–29 (परमेष्वर की श्रेश्ठता पर केन्द्रीत)

(ख) 9:30–10:21 (मनुश्य की ज़िम्मेदारी पर केन्द्रीत)

(ग) 11:1–32 (परमेष्वर की षामिल करने वाला, अनन्त और उद्धार करने की योजना)

3) मुख्य विशयों से : इस भाग की अच्छी रूपरेखा थॉमस नैलषन पब्लीसर्ष के *एन के जे वी* के अनुच्छेद विभाजन में पाई जाती है

(क) इस्राएल द्वारा मसीह का त्याग, 9:1–5

(ख) इस्राएल द्वारा परमेष्वर की योजना का त्याग, 9:6–13

(ग) इस्राएल द्वारा परमेष्वर की योजना का त्याग, 9:14–29

(घ) इस्राएल की वर्तमान परिस्थिति, 9:30–33

(ङ) इस्राएल और सुसमाचार, 10:1–13

(च) इस्राएल द्वारा सुसमाचार का त्याग, 10:14–21

(छ) इस्राएल का त्याग पर पूरी तरह से नहीं, 11:1–10

(ज) इस्राएल का त्याग अन्तिम नहीं, 11:11–36

ग. यह भाग हृदय की पुकार है जैसे कि यह दिमाग से किया गया प्रस्तुतिकरण है (तर्कानुसार रूपरेखा)। इसकी उत्तेजना होषे. 11:1–4, 8–9 में इस्राएल के विद्रोह के प्रति परमेष्वर के हृदय के दर्द को व्यक्त करती है।

कई तरह से अध्याय 7 की व्यवस्था की दर्द और भलाई अध्याय 9–10 के समानान्तर है। दोनों ही दषाओं पौलुस का हृदय परमेष्वर द्वारा दी गई व्यवस्था की कठोरता दुखित होता है जो जीवन लाने के बदले मृत्यु लाई!

घ. पौलुस द्वारा अध्याय 9–11 में पुराने नियम के भागों का 25 से अधिक बार प्रयोग उनकी इस्राएल के विरोधाभास को पुराने नियम के श्रोतों से प्रस्तुत करने की इच्छा को प्रगट करता है, जैसा उन्होंने अध्याय 4 में किया था, केवल समकालीन अनुभव ही नहीं। भूतकाल में भी इब्राहीम के अधिकतर षारीरिक वंषजों ने परमेष्वर को त्याग दिया था (प्रेरित.7; नेह.9)।

ङ. यह मूलपाठ इफि.1:3–14 से समान ही मानवजाति के उद्धार के प्रति परमेष्वर के अनन्त उद्देष्य को प्रगट करता है। षुरू में यह परमेष्वर द्वारा कुछ लोगों को चुनने और कुछ लोगों को त्यागने का वर्णन करता हुआ प्रगट होता है (सुपरालैप्सरीयन कालवलनिज़म), मैं ऐसा सोचता हूँ कि इसका प्राथमिक केन्द्र एक व्यक्ति नहीं पर परमेष्वर की उद्धार की अनन्त योजना है (उत्प.3:15; प्रेरित.2:23; 3:18' 4:28; 13:29)।

द जेरोम बिबलिकल कॉमेन्ट्री, भाग.2, ''द न्यू टैस्टामैन्ट'' जॉसफ ए. फीटज़मेयर और रेमण्ड इ. ब्राउन द्वारा सम्पादित, कहती है ''यह बाहर से ही समझना बहुत ही महत्वपूर्ण है कि पौलुस का विचार सहभागिता का है; वह व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी के बारे में चर्चा नहीं कर रहे हैं। यदि ऐसा प्रतित होता है कि वह परमेष्वर द्वारा पहले से ही चुने जाने के सवाल को उठा रहे हैं, तो इसका व्यक्तिगत महिमा के लिए पहले से चुनाव के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है'' (पृश्ठ.318)।

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि अध्याय 9

क. अध्याय 8 और 9 के बीच क्या ही तीव्र स्वभाव प्रगट होता है।

ख. यह लिखित भाग (9–11) धर्मषास्त्रीय तौर पर इन बातों के बारे में है (1) उद्धार का अधार, (2) चुनाव का परमेष्वर का उद्देष्य, (3) अविष्वासी इस्राएल का विष्वासघात और परमेष्वर की विष्वासयोग्यता, और (4) यीषु के छुटकारे में सारी मानवजाति का षामिल किया जाना।

ग. अध्याय 9 परमेष्वर की श्रेश्ठता का सबसे दृढ़ नए नियम का भाग है (उदा. दूसरा प्राणी, इफि.1:3–14) जबकी अध्याय 10 मानवजाति की स्वतंत्रता को स्पश्ट रीति से और बार–बार प्रगट करता है (''हरेक'' आयत.4; ''जो कोई'' आयत 11, 13; ''सभी'' आयत 12 {दो बार})। पौलुस इस धर्मषास्त्रीय तनाव से समझौता करने की कोषिष नहीं करते। यह दोनों ही सच्चे हैं। बहुत से बाइबलीय सिद्धान्त विरोधाभासात्मक और वादविवादात्मक जोड़ों को प्रस्तुत करते हैं। अधिकतर धर्मषास्त्रीय ढ़ाँचे तर्कानुसार होते हैं, परन्तु प्रमाण–मूलपाठ में केवल एक ही बाइबलीय सत्य होता है। दोनों ही आगस्तीनीयनानीज़म और कैल्बनीज़म बनाम सैमी–प्लेगीआनीज़म और अरमीनीआनीज़म में सत्य और गलतियाँ हैं। सिद्धान्तों के बीच बाइबलीय तनाव श्रेश्ठ है प्रमाण–मूलपाठ, सैद्धान्तिक, तर्कानुसार, धर्मषास्त्रीय ढ़ाँचा जो बाइबल पर दबाव डालता है पहले से ही नियुक्त अनुवाद पर बना रहे।

घ. 9:30–33 अध्याय 9 का सारांष और अध्याय 10 का मुख्य विशय है।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.9:1–5

1 मैं मसीह में सच कहता हूं, झूठ नहीं बोलता और मेरा विवेक भी पवित्र आत्मा में गवाही देता है।

2 कि मुझे बड़ा शोक है, और मेरा मन सदा दुखता रहता है।

3 क्योंकि मैं यहां तक चाहता था, कि अपने भाईयों, के लिये जो शरीर के भाव से मेरे कुटुम्बी हैं, आप ही मसीह से शापित हो जाता।

4 वे इस्राएली हैं; और लेपालकपन का हक्क और महिमा और वाचाएं और व्यवस्था और उपासना और प्रतिज्ञाएं उन्हीं की हैं।

5 पुरखे भी उन्हीं के हैं, और मसीह भी शरीर के भाव से उन्हीं में से हुआ, जो सब के ऊपर परम परमेश्वर युगानुयुग धन्य है। आमीन।

9:1–2

आयत 1 और 2 यूनानी भाशा में एक ही वाक्य है। पौलुस बहुत से कारण देते हैं कि वे (रोम की कलीसिया) जाने कि पौलुस सच कह रहे हैं : (1) आत्मा द्वारा चलाया गया उनका विवेक, आयत 1; (2) मसीह के साथ उनकी एकता, आयत 1; (3) इस्राएल के प्रति उनकी गहरी भावना, आयत 2।

9:1

''मैं मसीह में सच कहता हूं,
झूठ नहीं बोलता''

पौलुस अक्सर इस वाक्य का प्रयोग करते हैं (2कुरि.11:10; गला.1:20; 1तीमु.2:7) या परमेष्वर के गवाह के रूप में परमेष्वर के प्रति (रोमियों.1:9; 2कुरि.1:23; 11:31; फिलि.1:8; 1थिस्स.2:5, 10)। यह उनका तरीका था षिक्षाओं और प्रचारों की सत्यता को साबित करने का।

''मेरा विवेक''

यह विष्वासी को परमेष्वर द्वारा दी गई और आत्मा द्वारा चलाई जाने वाले नैतिक विवेक को प्रगट करता है। एक तरह से यह विष्वासियों के अधिकार का कुन्जी श्रोत है। यह परमेष्वर का वचन है, जो पवित्र आत्मा द्वारा हमारे दिमाग में समझा और लागु किया गया है (1तीमु.1:5, 19)। समस्या तब पैदा होती है जब विष्वासी–और उसी विशय के लिए, अविष्वासी–लगातार वचन और पवित्र आत्मा को नकारते हैं; तब यह आसान हो जाता है कि किसी के पाप को बुद्धिसंगत प्रस्तुत करें (1तीमु.4:2)। हमारा विवेक सांस्कृतिक और अनुभवी तौर पर ढ़ला हुआ हो सकता है।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''पवित्र आत्मा में गवाही देता है''

एन आर एस वी ''पवित्र आत्मा द्वारा इसे प्रमाणित करता है''

टी इ वी ''पवित्र आत्मा के द्वारा राज किया हुआ''

जे बी ''पवित्र आत्मा के साथ एकता में मुझे ग्रहण करता है''

पौलुस ऐसा विष्वास करते थे कि उन्हें मसीह से विषेश बुलाहट और आज्ञा मिली है (प्रेरित.9:1–22; गला.1:1)। वह एक प्रेरित थे और ईष्वरीय अधिकार से बोलते थे (1कुरि.7:25, 40)। उन्होंने इस्राएल राश्ट्र के अविष्वास और हठी स्वभाव के प्रति परमेष्वर के दर्द को बाँटा (आयत 2)। उनके पास बहुत सारे अवसर थे (रोमियों.8:4–5)।

9:3

एन ए एस बी, एन के जे वी, एन आर एस वी ''मैं ऐसा चाहता था...''

टी इ वी ''उनके लिए मैं चाहता था''

जे बी ''मैं तैयार हूँ...''

पौलुस की अपने लोगों, इस्राएल, के प्रति इतनी गहरी भावना थी कि यदि उनका अलग किया जाना उनके षामिल किए जाने को प्रभावित करता है तो वह तैयार थे, आयत 3। इस आयत की व्याकरण रचना बहुत ही दृढ़ और प्रभावषाली है। इस प्रार्थना का बोझ और तीव्रता निर्ग.32:30–35 में मूसा की पापी इस्राएलियों के लिए बीचवई की प्रार्थना के समान है। इसे उत्तम तौर पर इच्छा वाक्य के रूप में समझा जा सकता है, तथ्य नहीं। यह गला.4:20 के सदृष्य है। देखिए दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : मध्यस्थता प्रार्थना

क. भूमिका

1) प्रार्थना अति महत्वपूर्ण है यीषु के उदाहरण के कारण।

(क) व्यक्तिगत प्रार्थना, मरकुस.1:35; लूका.3:21; 6:12; 9:29; 22:29–46

(ख) मन्दिर का षुद्ध किया जाना, मत्ती.21:13; मरकुस.11:17; लूका.19:46

(ग) प्रार्थना का नमूना, मत्ती.6:5–13; लूका.11:2–4

2) प्रार्थना है हमारा मूर्त कार्य, व्यक्तिगत तौर पर हमारा विष्वास, ध्यान रखने वाले परमेष्वर जो उपस्थित हैं, तैयार और दूसरों की जगह पर और अपने लिए कार्य करने की योग्यता।

3) पौलुस ने अपने बच्चों की प्रार्थनाओं पर कार्य करने के लिए स्वयं को सीमित किया है (याक.4:2)।

4) प्रार्थना का मुख्य उद्देष्य है त्रिएक परमेष्वर के साथ संगति और समय बिताना।

5) प्रार्थना की सीमा है कुछ भी और कोई भी जिसमें विष्वासी की रूचि है। हम एक बार प्रार्थना कर सकते हैं, विष्वास करते हुए, या बार–बार विचार के रूप में या रूचि लौटने पर।

6) प्रार्थना में कई तत्व षामिल हैं

(क) त्रिएक परमेष्वर की स्तुति प्रषंसा

(ख) परमेष्वर की उपस्थिति, संगति और उपायों के लिए धन्यवाद देना

(ग) अपने भूतकालीन और वर्तमान पापी होने को स्वीकार करना

(घ) अपनी समझी गई आवष्यकताओं और इच्छाओं के लिए निवेदन

(ङ) मध्यस्थता जहाँ हम पिता के सामने दूसरों की आवष्यकताओं को रखते हैं

7) मध्यस्थता प्रार्थना एक रहस्य है। परमेष्वर उन लोगों से हमसे भी अधिक प्रेम करते हैं जिनके लिए हम प्रार्थना करते हैं, फिर भी हमारी प्रार्थनाएं परिवर्तन, प्रतिउत्तर, केवल हमारी ही नहीं पर उनकी भी आवष्यकता को प्रभावित करती हैं।

ख. बाइबलीय सामग्री

1) पुराना नियम

(क) मध्यस्थता प्रार्थना के कुछ उदाहरण

(1) इब्राहीम ने सदोम के लिए विनती की, उत्प.18:22 के बाद

(2) इस्राएल के लिए मूसा की प्रार्थनाएं

(१) निर्ग.5:22—23

(२) निर्ग.32:31 के बाद

(३) व्यव.5:5

(४) व्यव.9:18, 25 के बाद

(3) इस्राएल के लिए षमूएल की प्रार्थनाएं

(१) 1षमू.7:5—6, 8—9

(२) 1षमू.12:16—23

(३) 1षमू.15:11

(4) अपने बेटे के लिए दाऊद की प्रार्थना, 2षमू.12:16—18

(ख) परमेष्वर मध्यस्थता प्रार्थना करने वालों की खोज में हैं, यषा.59:16

(ग) जाना हुआ, बिना स्वीकार किया हुआ पाप और पष्चाताप न करने वाला स्वभाव हमारी प्रार्थनाओं को प्रभावित करता है

(1) भ.सं.66:1

(2) नीति.28:9

(3) यषा.59:1—2; 64:7

2) नया नियम

(क) पुत्र और पवित्र आत्मा की मध्यस्थता प्रार्थना की सेवा

(1) यीषु

(१) रोमियों.8:34

(२) इब्रा.7:25

(३) 1यूह.2:1

(2) पवित्र आत्मा, रोमियों.8:26–27

(ख) पौलुस की मध्यस्थता प्रार्थना की सेवा

(1) यहूदियों के लिए प्रार्थना

(१) रोमियों.9:1 के बाद

(२) रोमियों.10:1

(2) कलीसियाओं के लिए प्रार्थना

(१) रोमियों.1:9

(२) इफि.1:16

(३) फिलि.1:3–4, 9

(४) कुलु.1:3, 9

(५) 1थिस्स.1:2–3

(६) 2थिस्स.1:11

(७) 2तीमु.1:3

(८) फिले.1:4

(3) पौलुस कलीसियाओं को अपने लिए प्रार्थना करने को कहते हैं

(१) रोमियों.15:30

(२) 2कुरि.1:11

(३) इफि.6:19

(४) कुलु.4:3

(५) 1थिस्स.5:25

(६) 2थिस्स.3:1

(ग) कलीसिया की मध्यस्थता प्रार्थना की सेवा

(1) एक–दूसरे के लिए प्रार्थना

(१) इफि.6:18

(२) 1तीमु.2:1

(३) याक.5:16

(2) विषेश समूहों के लिए प्रार्थना की अनुरोध

(१) हमारे षत्रुओं, मत्ती.5:44

(२) मसीही सेवकों, इब्रा.13:18

(३) अधिकारियों, 1तीमु.2:2

(४) रोगियों, याक.5:13–16

(५) पाप में लौटने वालों, 1यूह.5:16

(3) सभी मनुश्यों के लिए प्रार्थना, 1तीमु.2:1

ग. उत्तर मिली हुई तमाम प्रार्थनाओं में रूकावटें

1) मसीह और पवित्र आत्मा से हमारा सम्बन्ध

(क) उनमें बने रहो, यूह.15:7

(ख) उनके नाम में, यूह.14:13, 14; 15:16; 16:23–24

(ग) पवित्र आत्मा में, इफि.6:18; यहू.1:20

(घ) परमेष्वर की इच्छा के अनुसार, मत्ती.6:10; 1यूह.3:22; 5:14–15

2) उद्देष्य या कारण

(क) संदेह करने वाले नहीं, मत्ती.21:22; याक.1:6–7

(ख) नम्रता और पष्चाताप, लूका.18:9–14

(ग) बुरी इच्छा से माँगना, याक.4:3

(घ) स्वार्थ, याक.4:2–3

3) दूसरे पक्ष

(क) निरन्तर

(1) लूका.18:1–8

(2) कुलु.4:2

(3) याक.5:16

(ख) लगातार माँगते रहना

(1) मत्ती.7:7–8

(2) लूका.11:5–13

(3) याक.1:5

(ग) घर में फूट, 1पत.3:7

(घ) पाप से स्वतंत्र

(1) भ.सं.66:18

(2) नीति.28:9

(3) यषा.59:1–2

(4) यषा.64:7

घ. धर्मषास्त्रीय उपसंहार

1) क्या विषेश अधिकार है! क्या अवरसर है! क्या कर्तव्य और ज़िम्मेदारी है!

2) यीषु हमारे उदाहरण हैं। पवित्र आत्मा हमारी निर्देषिका है। पिता उत्सुकता से इन्तज़ार कर रहे हैं।

3) यह आपको, आपके परिवार, आपके मित्रों और संसार को बदल सकता है।

एन ए एस बी ''आप ही षापित हो जाता और मसीह से अलग हो जाता''

एन के जे वी ''आप ही मसीह से षापित हो जाता''

एन आर एस वी ''षापित हो जाता और मसीह से अलग हो जाता''

टी इ वी ''परमेष्वर के श्राप के अधीन और मसीह से अलग''

जे बी ''इच्छानुसार षापित हो जाता और मसीह से अलग हो जाता''

''पवित्र'' षब्द का आधारभूत षब्द–साधन है परमेष्वर के कार्य के लिए अलग किया जाना। यही विचार ''श्राप'' षब्द के साथ सम्बन्धित है। यह समारात्मक अनुभव हो सकता है (लैव्य.27:28; लूका.21:5) और नकारात्मक अनुभव भी हो सकता है (यहो.6–7; रोमियों.9:3), यह संदर्भ पर निर्भर करता है।

विषेश षीर्शक : श्राप (अनाथिमा)

इब्रानी में ''श्राप'' के लिए कई षब्द हैं। *हेरम* परमेष्वर को कुछ दिए जाने के लिए प्रयोग किया गया है (सैप्टूआजैन्ट में अनाथिमा, लैव्य.27:28), अक्सर विनाष के लिए (व्यव.7:26; यहो.6:17–18; 17:12)। यह विचार ''पवित्र युद्ध'' के लिए प्रयोग किया गया है। परमेष्वर ने कहा कानानियों को नाष कर दो और यरीहो पहला अवससर और ''पहला फल'' था।

नए नियम में अनाथिमा और इससे सम्बन्धित षब्द विभिन्न विचारों में प्रयोग किए गए हैं :

1) तोहफे के रूप में या परमेष्वर के लिए बलिदान (लूका.21:5)

2) मृत्यु की मन्नत (प्रेरित.23:14)

3) श्राप और षपथ (मरकुस.14:71)

4) श्राप नुसखा जो मसीह से सम्बन्धित है (1कुरि.12:3)

5) किसी को या किसी चीज़ को परमेष्वर के न्याय या विनाष के लिए देना (रोमियों.9:3; 1कुरि.16:22; गला.1:8–9)।

9:4–5

यह नाम संज्ञा इस्राएल के विषेश अधिकार और रेखाचित्र विवरण को वर्णन करता है। उनका अविष्वास इन सुअवसरों के प्रकाष में पूरा दोशी था। जिसे अधिक दिया गया, उससे अधिक अपेक्षा की जाएगी (लूका.12:48)।

9:4

''इस्राएली''

यह इब्राहीम के वंष का वाचा नाम है। याकूब का नाम परमेष्वर के साथ मुठभेड़ के समय के इस्राएल में बदल दिया गया (उत्प. 32:28)। यह यहूदी राश्ट्र के लिए सहभागिता का षीर्शक बन गया। इसका षब्द–साधन षायद ''एल (परमेष्वर) निरन्तर प्रयत्न करें'' और उलझन में डालने के द्वारा याकूब के जालबाजी के कारण नहीं।

''लेपालकपन का हक्क''

पुराने नियम में ''पुत्रों'' बहुवचन का प्रयोग स्वर्गदूतों के लिए किया गया है (अय्य.1:6; 2:1; 38:7; दानि.3:25; भ.सं.29:1; 89:6–7), जबकि एकवचन प्रयोग किया जाता था :

1) इस्राएल के राजा (2षमू.7:14)

2) राश्ट्र (निर्ग.4:22, 23; व्यव.14:1; होषे.11:1)

3) मसीह (भ.सं.2:7)

4) यह मनुश्यों को भी प्रगट कर सकता है (व्यव.32:5; भ.सं.73:15; यहे.2:1; होषे.1:10; उत्प.6:2 में विरोधाभास है; यह कुछ भी हो सकता है)। नए नियम में यह उसके लिए प्रयोग जो परमेष्वर के परिवार से सम्बन्धित है।

पौलुस का उद्धार का मुख्य रूपक ''गोद लेना'' था जबकी पतरस और यूहन्ना ''पुनः जन्म'' पाए हुए लोग थे। यह दोनों ही पारिवारिक रूपक हैं। यह यहूदी नहीं है, परन्तु रोमी रूपक है। रोम के कानून के अधीन गोद लेना बहुत ही कीमती और

अत्यधिक समय लेने वाली प्रक्रिया थी। एक बार यदि किसी को गोद ले लिया गया तो उसे नया व्यक्ति गिना जाता था और उसे कानूनी तौर पर छोड़ा नहीं जा सकता था और गोद लिया हुआ पिता मारा नहीं जा सकता था।

''महिमा''

इब्रानी मूल का अर्थ है ''भारी होना'' जो उस बात का रूपक था जो अत्यधिक मूल्यवान है। यहाँ पर यह प्रगट करता है (1) परमेष्वर स्वयं को सिनै पर्वत पर प्रगट करते हैं (निर्ग.19:18–19); और (2) महिमा का सेकेना बादल जिसने मरूभूमि में इस्राएलियों के भटकते समय उनकी अगुवाई की (निर्ग.40:34–38)। यहोवा ने अद्वितिय रूप से स्वयं को इस्राएलियों पर प्रगट किया। यहोवा की उपस्थिति उनकी महिमा से प्रगट की जाती है (1राजा.8:10–11; यहे.1:28)। देखिए विषेश षीर्शक 3:23।

''वाचाएं''

प्राचीन यूनानी हस्तलेखों पी[46], बी और डी में एकवचन ''वाचा'' का प्रयोग किया गया है। जबकी एम एस एस, सी और कुछ पुराने लातीनी, वलगेट और कॉप्टिक अनुवादों में बहुवचन का प्रयोग किया गया है। पुराने नियम में बहुवचन का प्रयोग नहीं किया गया है। पुराने नियम में कई निष्चित वाचाएं हैं : आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा, और दाऊद। क्योंकि व्यवस्था का दिया जाना आगे दिया गया है, इसलिए यह इब्राहीम की वाचा को प्रगट करता है जिसे पौलुस आधारभूत रूप में देखते हैं (रोमियों. 4:1–25; गला.3:16–17) और कई बार दोहराते हैं (उत्प.12, 15, 17) और हरेक पितरों को भी।

विषेश षीर्शक : वाचा

पुराने नियम के षब्द *बेरेथ,* वाचा, का वर्णन करना इतना आसान नहीं है। इब्रानी में कोई भी समान क्रिया षब्द नहीं है। इस षब्द के षब्द–साधन की परीभाशा देने के लिए जो भी प्रयास किए गए वे प्रभावहीन रहे। इस षब्द की वास्तविक विचार ने ज्ञानियों को विवष किया कि वे इसे कार्यांवित अर्थ का वर्णन करने का प्रयास करें।

वाचा वह माध्यम है जिसके द्वारा एक सच्चे परमेष्वर अपनी रचना मानवजाति से व्यवहार करते हैं। बाइबलीय प्रकाषन को समझने के लिए वाचा और सन्धि का विचार बहुत ही महत्वपूर्ण है। परमेष्वर की श्रेश्ठता और मनुश्यों की स्वतंत्र–इच्छा के बीच तनाव वाचा के विचार में स्पश्ट रूप से देखा जा सकता है। कुछ वाचाएं परमेष्वर के चरित्र, कार्यों और उद्देष्यों पर आधारित हैं।

1) स्वयं सृश्टि (उत्प.1–2)

2) इब्राहीम की बुलाहट (उत्प.12)

3) इब्राहीम के साथ वाचा (उत्प.15)

4) नूह का बचाया जाना और वाचा (उत्प.6–9)

वाचा का स्वभाव प्रतिउत्तर की माँग करता है

1) विष्वास से आदम को परमेष्वर की आज्ञा का पालन करना था और अदन के बीच में लगे पेड़ का फल नहीं खाना था (उत्प.2)

2) विष्वास से इब्राहीम को अपने परिवार को छोड़ना था, परमेष्वर का अनुसरण करना था और भविश्य के वंष पर विष्वास करना था (उत्प.12, 15)

3) विष्वास से ही नूह को पानी से दूर एक जहाज बनाना था और जानवरों को इकट्ठा करना था (उत्प.6–9)

4) विष्वास से ही मूसा ने इस्राएलियों को मिस्र से छुड़ाया और धार्मिक और सामाजिक जीवन के लिए आषीश और श्राप के वायदे के साथ निर्देष प्राप्त किए (व्यव.27–28)

''नई वाचा'' में भी परमेष्वर के मानवजाति के साथ सम्बन्ध के बारे में तनाव पर चर्चा की गई है। यह तनाव स्पश्ट रीति से

यहे.18 की तुलना यहे.36:27–37 के साथ किए जाने पर देखा जा सकता है। क्या वाचा परमेष्वर के अनुग्रहपूर्ण कार्य पर आधारित है या मनुश्यों के आज्ञा के प्रति प्रतिउत्तर पर? यह पुरानी और नई वाचा का तीव्र विशय है। दोनों का उद्देष्य एक ही समान है : (1) उत्प.3 में खोए हुओं के साथ संगति को पुनः स्थापित करना और (2) धर्मी लोगों की स्थापना करना जो परमेष्वर के चरित्र को प्रगट करते हों।

यिर्म.31:31–34 की नई वाचा मानवजाति के कार्यों के माध्यम से स्वकार्य प्राप्त करने के तनाव का समाधान करती है। परमेष्वर की व्यवस्था अन्दरूनी इच्छा बन गई है बाहरी कार्यों की जगह। भक्त, धर्मी लोगों का लक्ष्य समान ही है, केवल तरीका बदल गया है। पतित मानवजाति ने यह साबित कर दिया कि वे परमेष्वर के स्वरूप को प्रगट करने में असमर्थ है (रोमियों.3:9–18)। समस्या वाचा नहीं है पर मनुश्य का पापी और कमज़ोर होना है (रोमियों.7; गला.3)।

पुराने नियम की षर्तरहित और षर्तसहित वाचा के बीच का समान तनाव नए नियम में भी बरकरार है। उद्धार मसीह द्वारा पूरे किए गए कार्य में पूरी तरह से मुफ्त है, पर यह विष्वास और पष्चाताप की माँग करता है (दोनों षुरू में और लगातार)। यह कानूनी घोशणा और मसीहसमानता के लिए बुलाहट दोनों है, स्वीकार करने के लिए संकेत पूर्ण वाक्य और पवित्रता की ओर प्रगतिषील कार्य। विष्वासी अपने कार्यों द्वारा नहीं बचाए गए पर आज्ञापालन के लिए बचाए गए हैं (इफि.2:8–10)। भक्तिपूर्ण जीवन उद्धार का सबूत बन जाता है, उद्धार का माध्यम नहीं।

''व्यवस्था और उपासना''

यह प्रस्तुत करता है (1) सीनै पर्वत पर मूसा का व्यवस्था को पाना (निर्ग.19–20) और दाऊद द्वारा मन्दिर में उपासना को स्थापित करना, और (2) सम्भवतः मरूभूमि में भटकते समय वाचा का तम्बु (निर्ग.25–40 और लैव्यव्यवस्था)।

''प्रतिज्ञाएं उन्हीं की हैं''

पुराने नियम के द्वारा परमेष्वर ने अपने भविश्य की योजना को प्रगट किया (रोमियों.1:2; प्रेरित.13:32; तीत.1:2; इब्रा.1:1)।

क्योंकि ''वाचाएं'' पहले प्रगट की गई हैं, सम्भवतः ''वायदे'' मसीह को प्रगट करते हैं (रोमियों.9:5 उदा. उत्प.3:15; 49:10; व्यव. 18:15, 18–19; 2षमू.7; भ.सं.16:10, 22; 118:22; यषा.7:14; 9:6; 11:1–5; दानि.7:13, 27; मीका.5:2–5[क]; जक.2:6–13; 6:12–13; 9:9; 11:12)।

ये वाचाएं दोनों ही हैं षर्तिया और षर्तहीन। ये परमेष्वर के कार्यों के कारण षर्तहीन थीं (उत्प.15:12–21), पर मानवजाति का विष्वास और आज्ञाकारीता के लिए षर्तिया हैं (उत्प.15:6 और रोमियों.4)। मसीह के आने से पहले परमेष्वर का स्वयं का प्रकाषन केवल इस्राएलियों के पास था।

<u>9:5</u>

''पुरखे''

यह इब्राहीम, इसहाक और याकूब जो उत्प.12–50 के पितरों को सम्बोधित करता है (रोमियों.11:28; व्यव.7:8; 10:15)।

''मसीह भी षरीर के भाव से उन्हीं में से हैं''

यह मसीह के षारिरीक वंष को प्रगट करता है (रोमियों.1:3), अभिशिक्त, परमेष्वर द्वारा चुने गए विषेश दास जो परमेष्वर के वायदों और योजनाओं को पूरा करेंगे, (रोमियों.10:6)।

षब्द ''मसीह'' इब्रानी षब्द ''अभिशिक्त'' का यूनानी अनुवाद है। पुराने नियम में तीन समूह हैं जिनका विषेश पवित्र तेल से अभिशेक किया जाता था (1) इस्राएल के राजा, (2) इस्राएल के महायाजक, और (3) इस्राएल के भविश्यद्वक्ता। यह परमेष्वर के चुनाव का चिन्ह और सेवा के लिए षिक्षित करने का चिन्ह है। यीषु ने इन तीनों दफतरों की पूरी बातों को पूरा किया (इब्रा. 1:2–3)। वह परमेष्वर का पूर्ण प्रकाषन है क्योंकि वह परमेष्वर का प्रतिरूप हैं (यषा.7:14; 9:6; मीका.5:2–5[क]; कुलु.1:13–20)।

एन ए एस बी ''मसीह भी षरीर के भाव से उन्हीं में से हुआ, जो सबके ऊपर परम परमेष्वर युगानुयुग धन्य हैं''

एन के जे वी ''मसीह आए, जो सबके ऊपर परम परमेष्वर युगानुयुग धन्य हैं''

एन आर एस वी ''मसीह जो आए जो सबके ऊपर परम परमेष्वर युगानुयुग धन्य हैं''

टी इ वी ''और मसीह जो मनुश्य के समान, उन्हीं में से हैं। परम परमेष्वर जो सबके ऊपर राज्य करने हैं उनकी प्रषंसा युगानुयुग होती रही''

जे बी ''मसीह आए जो सबसे ऊपर है परम परमेष्वर युगानुयुग धन्य हैं''

व्याकरण तौर पर यह पिता परमेष्वर की प्रषंसा का गीत है (*टी इ वी*) पर संदर्भ पौलुस द्वारा यीषु के ईष्वरत्व को प्रमाणित करने की हिमायत करता है। पौलुस यीषु के लिए *थियोस* षब्द का प्रयोग अक्सर नहीं करते पर वह इसका प्रयोग उनके लिए करते हैं (प्रेरित.20:28; तीत.2:13; फिलि.2:6)। सभी षुरूवाती कलीसिया के पितरों ने इसका अनुवाद यीषु के सम्बन्ध में किया।

''जो सबके ऊपर हैं''

यह पिता परमेष्वर और पुत्र प्रभु यीषु का वर्णन करने के लिए प्रयोग मे लिया जाने वाला वाक्यांष है। यह मत्ती.28:19 में यीषु के षब्दों और कुलु.1:15—20 में पौलुस के षब्दों को प्रस्तुत करता है। यह श्रेश्ठ वाक्यांष इस्राएल द्वारा मसीह के त्याग की मुर्खता को प्रगट करता है।

''युगानुयुग''

यह यूनानी मुहावरा है ''युगानुयुग'' (लूका.1:33; रोमियों.1:25; 11:36; गला.1:5; 1तीमु.1:17)। यह कई सम्बन्धित वाक्यांषों में से एक है (1) ''युगानुयुग'' (मत्ती.21:19 {मरकुस.11:14}; लूका.1:55; यूह.6:5, 58; 8:35; 12:34; 12:8; 14:16; 2कुरि.9:9) और (2) ''युगों का युग'' (इफि.3:21)। इन मुहावरों में ''युगानुयुग'' के लिए कोई भी अन्तर प्रतित नहीं होता। षब्द ''युग'' बहुवचन भी हो सकता है रब्बीयों के ''बहुवचन की श्रेश्ठता'' नामक व्याकरण रचना में और यह ''युगों'' के यहूदी विचार को भी प्रगट कर सकता है, ''निश्पाप युग'', ''घोर पाप का युग'', ''आने वाला युग'' और ''धार्मिकता का युग''।

''आमीन''

देखिए विषेश षीर्शक 1:25।

रोमियों.9:6—13

6 परन्तु यह नहीं, कि परमेश्‍वर का वचन टल गया, इसलिये कि जो इस्राएल के वंश हैं, वे सब इस्राएली नहीं।

7 और न इब्राहीम के वंश होने के कारण सब उस की सन्तान ठहरे, परन्तु (लिखा है) कि इसहाक ही से तेरा वंश कहलाएगा।

8 अर्थात्‌ शरीर की सन्तान परमेश्‍वर की सन्तान नहीं, परन्तु प्रतिज्ञा के सन्तान वंश गिने जाते हैं।

9 क्योंकि प्रतिज्ञा का वचन यह है, कि मैं इस समय के अनुसार आऊंगा, और सारा के पुत्र होगा।

10 और केवल यही नहीं, परन्तु जब रिबका भी एक से अर्थात्‌ हमारे पिता इसहाक से गर्भवती थी।

11 और अभी तक न तो बालक जन्मे थे, और न उन्हों ने कुछ भला या बुरा किया था कि उस ने कहा, कि जेठा छुटके का दास होगा।

12 इसलिये कि परमेश्‍वर की मनसा जो उसके चुन लेने के अनुसार है, कर्मों के कारण नहीं, परन्तु बुलानेवाले पर बनी रहे।

13 जैसा लिखा है, कि मैं ने याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसाव को अप्रिय जाना।

9:6

''परमेष्वर का वचन''

इस संदर्भ में यह वाक्यांष पुराने नियम के वाचामय वायदों को प्रगट करता है। परमेष्वर के वायदे निष्चित हैं (गिन.23:19; यषा. 40:8; 55:11; 59:21)।

एन ए एस बी, एन आर एस वी, टी इ वी, जे बी ''टल गया''

एन के जे वी ''उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ''

यह षब्द *(एकपीपटो)* सैप्टूआजैन्ट में कई बार किसी वस्तु (यषा.6:13) और किसी व्यक्ति (यषा.14:12) के पतन के लिए प्रयोग किया गया है। यह लम्बे समय तक रहने वाले परिणाम को प्रगट करता है। प्रमाणिकता के लिए परमेष्वर के वचन के बारे में ऊपर दिए गए नोट को देखिए।

एन ए एस बी ''इसलिए जो इस्राएल के वंष है, वे सब इस्राएली नहीं हैं''

एन के जे वी ''वे सभी इस्राएली नहीं हैं जो इस्राएल के वंष के हैं''

एन आर एस वी ''सभी इस्राएली इस्राएल के नहीं हैं''

टी इ वी ''इस्राएल के सभी लोग परमेष्वर के लोग नहीं हैं''

जे बी ''सभी जो इस्राएल के वंष हैं इस्राएली नहीं हैं''

इस विरोधाभास कथन का अर्थ बाइबल के ''इस्राएल'' षब्द के अर्थ के इर्द–गिर्द घूमता है : (1) इस्राएल, अर्थात याकूब के वंषज (उत्प.32:22–32); (2) इस्राएल, अर्थात परमेष्वर के चुने हुए लोग (*टी इ वी);* और (3) आत्मिक इस्राएल, अर्थात कलीसिया (गला.6:16; 1पत.2:8, 9; प्रका.1:6) बनाम स्वभाविक इस्राएल (रोमियों.9:3–6)। इब्राहीम की केवल थोड़ी ही संतान वाचा की संतान है (रोमियों.9:7)। यहूदी भी पुरखों के आधार पर परमेष्वर के सामने धर्मी नहीं हो सकते (रोमियों.9:7) पर उनके विष्वास के द्वारा (रोमियों.2:28–29; 4:1 के बाद; यूह.8:31–59; गला.3:7–9; 4:23)। यह बचे हुए लोग हैं जो विष्वास के द्वारा परमेष्वर के वायदों को स्वीकार करते है और उनके साथ विष्वास से चलते हैं (रोमियों.9:27; 11:5)।

आयत 6 काल्पनिक विरोधी के क्रम की षुरूवात करता है (रोमियों.9:14, 19, 30; 11:1)। यह पौलुस के काल्पनिक विद्रोही के कार्य को आगे बढ़ाता है। यह काल्पनिक विरोधी के माध्यम से सच को प्रगट करता है (मला.1:2, 6, 7 {दो बार}, 12, 13; 2:14, 17 {दो बार}; 3:7, 13, 14)।

9:7

इस आयत का दूसरा भाग उत्प.21:12[घ] से लिया गया है। इब्राहीम की सारी संतान परमेष्वर की वाचा की संतान नहीं है (उत्प. 12:1–3; 15:1–11; 17:1–21; 18:1–15; गला.4:23)। यह इष्माएल और इसहाक के बीच अन्तर को प्रगट करता है आयात 8–9 में और याकूब और एसाव के बीच अन्तर 10–11 में।

9:8

यहाँ पर पौलुस ''षरीर'' षब्द का प्रयोग राश्ट्रिय वंषजों के लिए करते हैं (रोमियों.1:3; 4:1; 9:3, 5)। वह इब्राहीम की षारीरिक संतान (यहूदी रोमियों.9:3) और आत्मिक संतान (वाचा की संतान) के बीच अन्तर को प्रगट करते हैं (जो परमेष्वर द्वारा वायदा किए हुए मसीह पर विष्वास करते हैं)। यह रोमियों.8:4–11 के अन्तर के समान नहीं है जहाँ पतित मानवजाति और उद्धार पाए हुए लोगों के बीच अन्तर प्रगट किया गया है।

9:9

यह उत्प.18:10, 14 से लिया गया है। वाचा के पुत्र का जन्म परमेष्वर के षुरूवाती कदम उठाने के द्वारा सारा से होना था। भविश्य में यह मसीह के जन्म के कार्य को अन्जाम देगा। इसहाक उत्प.12:1–3 में परमेष्वर द्वारा इब्राहीम को दिए गए वायदे का पूरक था।

9:10

इब्राहीम, इसहाक और याकूब की पत्नियाँ बाँझ थीं, वे गर्भ धारण नहीं कर सकती थीं। बच्चा पैदा करने में उनकी असमर्थता यह प्रगट करती है कि वाचामय वायदे परमेष्वर के नियन्त्रण में हैं, मसीह का वंष। दूसरा तरीका यह था कि मसीह का वंष पुराने पितरों से न हो (जिसकी अभी अपेक्षा की जा रही है)। कुन्जी परमेष्वर का चुनाव है (रोमियों.9:11–12)।

9:11–12

ये आयतें यूनानी में एक ही वाक्य हैं। यह घटना उत्प.25:19–34 से ली गई है। यह उदाहरण परमेष्वर के चुनाव को प्रमाणित करने के लिए दिया गया है (रोमियों.9:16) ये बातें नहीं (1) मानवीय वंष और (2) मनुश्य की योग्यता या उपलब्धियाँ (रोमियों. 9:16)। यह सुसमाचार का हृदय है, नई वाचा (यिर्म.31:31–34; यहे.36:22–36)। यह याद रखना आवष्यक है कि परमेष्वर का चुनाव बाहर निकालने के लिए नहीं है पर षामिल करने के लिए है। मसीह चुने हुए वंष से आएंगे, परन्तु वह सब के लिए आएंगे (जो विष्वास से चलते हैं, रोमियों.2:28–29; 4:3, 22–25; अध्याय 10)।

9:11

''उद्देष्य''

यह षब्द *प्रो* और *टीथिमी* का मिश्रण है जिसके कई अर्थ हैं।

क. रोमियों.3:25 में

1) लोक प्रसिद्धि करना

2) षान्तिकारी तोहफे

ख. पहले से योजना बनाना

1) पौलुस की, रोमियों.1:13

2) परमेष्वर की, इफि.1:9

नाम संज्ञा (प्रोथिसीस), का प्रयोग इस मूलपाठ में किया गया है, जिसका अर्थ है ''पहले से तय करना''।

क. मन्दिर में भेंट की रोटियों का प्रयोग, मत्ती.12:4; मरकुस.2:26; लूका.6:4

ख. परमेष्वर द्वारा पहले से ही नियुक्त उद्धार की योजना का प्रयोग, रोमियों.8:28; 9:11; इफि.1:5, 11; 3:10; 2तीमु.1:9; 3:10

प्रो विभक्ति के साथ पौलुस रोमियों.8 और 9 अध्यायों और इफि.1 अध्याय में कई मिश्रित षब्दों का प्रयोग करते हैं।

क. *प्रोगिनोस्को* (पहले से जानना), रोमियों.8:29

ख. *प्रोओरीज़ो* (पहले से नक्षा बनाना), रोमियों.8:29 (इफि.1:5, 11), 30 (इफि.1:9)

ग. *प्रोथिसीस* (पहले से नियुक्त किया गया उद्देष्य), रोमियों.9:11

घ. *प्रोइटोइमाज़ो* (प्रस्तावना पहले से तैयार), रोमियों.9:23

ङ. *प्रोलेगो* (पहले से कहा गया), रोमियों.9:29

च. *प्रोएलपीज़ो* (पहले से आषा किया हुआ), इफि.1:12

9:12

यह उत्प.25:32 में एसाव और याकूब से सम्बन्धित भविश्यद्वाणी का लेख है। यह प्रगट करता है रिबका और याकूब ने इसहाक से छल से आषीश लेने के द्वारा भविश्यद्वाणी को पूरा किया अपना लाभ नहीं।

9:13

''पर मैंने एसाव को अप्रिय जाना''

यह मला.1:2–3 से लिया गया लेख है। ''अप्रिय'' षब्द इब्रानी में तुलना करने का मुहावरा है। अंग्रेज़ी में यह कठोर प्रतीत होता है, पर तुलना कीजिए उत्प.29:31–33; व्यव.21:15; मत्ती.10:37–38; लूका.14:14:26 और यूह.12:25 में। मानवीय षब्द ''प्रेम'' और ''अप्रिय'' इन लोगों के प्रति परमेष्वर की भावना नहीं थी, पर उनका मसीह के वंष के साथ वायदा और वाचा थी। याकूब उत्प. 25:23 की भविश्यद्वाणी के आधार पर वायदे का पुत्र था। एसाव, मला.1:2–3 के अनुसार एदोम राश्ट्र को प्रस्तुत करता है (एसाव के वंषज)।

रोमियों.9:14–18

14 सो हम क्या कहें? क्या परमेश्वर के यहां अन्याय है? कदापि नहीं!

15 क्योंकि वह मूसा से कहता है, मैं जिस किसी पर दया करना चाहूं, उस पर दया करूंगा, और जिस किसी पर कृपा करना चाहूं उसी पर कृपा करूंगा।

16 सो यह न तो चाहनेवाले की, न दौड़नेवाले की परन्तु दया करनेवाले परमेश्वर की बात है।

17 क्योंकि पवित्र शास्त्र में फिरौन से कहा गया, कि मैं ने तुझे इसी लिये खड़ा किया है, कि तुझ में अपनी सामर्थ दिखाऊं, और मेरे नाम का प्रचार सारी पृथ्वी पर हो।

18 सो वह जिस पर चाहता है, उस पर दया करता है; और जिसे चाहता है, उसे कठोर कर देता है।

9:14

''सो हम क्या कहें''

पौलुस अक्सर इस काल्पनिक विरोधी षब्द का प्रयोग करते हैं (रोमियों.3:5; 4:1; 6:1; 7:7; 8:31; 9:14, 19, 30)।

''क्या परमेष्वर के यहाँ अन्याय है'' परमेष्वर किस तरह मानव का ज़िम्मेदार ठहरा सकते हैं जब उनकी श्रेश्ठता ही निर्णय लेने का तथ्य है (रोमियों.9:19)? यह चुनाव का रहस्य है। यहाँ पर मुख्य ज़ोर इस बात पर है कि परमेष्वर मानवजाति (विद्रोही मानवजाति) से अपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्र हैं, परन्तु परमेष्वर की श्रेश्ठता उनकी दया में व्यक्त होती है (देखिए नोट आयत 15 में) कठोर सामर्थ में नहीं।

यह भी कहना आवष्यक है कि परमेष्वर के श्रेश्ठ चुनाव मानव के भविश्य के चुनाव और कार्यों पर आधारित नहीं है। यदि यह सच होता तो एक व्यक्ति का चुनाव और योग्यता परमेष्वर के चुनाव का आधार होता (रोमियों.9:16; 1पत.1:2)। इस दृश्टिकोण

के पीछे धर्मियों की समृद्धि का यहूदियों का परम्परागत विचार है (व्यव.27—28; अय्यूब और भ.सं.73)। परन्तु परमेष्वर अयोग्यों को विष्वास के द्वारा आषीश देने के लिए चुनते हैं (कार्य नहीं, रोमियों.5:8)। परमेष्वर सब कुछ जानते हैं पर उन्होंने चुनाव किया है कि वह अपने चुनाव को सीमित करेंगे (1) दया में और (2) वायदे में। मानव प्रतिउत्तर आवष्यक है, परन्तु यह परमेष्वर के जीवन बदलने वाले चुनाव का अनुसरण करता है और उसे प्रमाणित करता है।

''कदापि नहीं''

यह बहुत ही कम प्रयोग में लाया जाने वाला वाक्यांष है जो अक्सर पौलुस द्वारा अपने काल्पनिक विरोधी की बातों को नकारने के लिए प्रयोग किया जाता है (रोमियों.3:4, 6, 32; 6:2, 15; 7:7, 13; 11:1 और साथ ही 1कुरि.6:15; गला.2:17; 3:21; 6:14)।

9:15

यह निर्ग.33:19 से लिया गया भाग है। परमेष्वर अपने उद्धार के उद्देष्य को पूरा करने के लिए स्वतंत्र हैं। यहाँ तक की मूसा में भी परमेष्वर की आषीश पाने की योग्यता नहीं थी (निर्ग.33:20)। वह एक हत्यारे थे (निर्ग.2:11—15)। कुन्जी यह है कि परमेष्वर का चुनाव दया से होता है (रोमियों.9:16, 18—23; 11:30, 31, 32)।

9:15—16

''दया''

इब्रानी के विषेश षब्द *हेसेद* का अनुवाद करने के लिए यूनानी षब्द *एलिओस* (रोमियों.9:15, 16, 18, 23; 11:30, 31, 32) का प्रयोग सैप्टूआजैन्ट में किया गया है, जिसका अर्थ है ''निष्चल रूप से वाचा के प्रति वफादारी''। परमेष्वर की दया और चुनाव बहुवचन हैं, साझे हैं (यहूदी {इसहाक}, अरबी नहीं {इष्माएल}; इस्राएल {याकूब}, एदोम नहीं {एसाव}, परन्तु विष्वास करने वाले यहूदी और विष्वास करने वाले अन्यजातिय, रोमियों.9:24) और साथ ही व्यक्तिगत भी। यह सत्य पहले से ही चुन लिए जाने के सिद्धान्त के रहस्य को खोलने की कुन्जी है (सार्वभौमिक उद्धार)। अध्याय 9—11 के संदर्भ में दूसरी कुन्जी है परमेष्वर का कभी न बदलने वाला चरित्र—दया (रोमियों.9:15, 16, 18, 23; 11:30, 31, 32), मनुश्य का कार्य नहीं। चुनाव के द्वारा दया उन तमाम लोगों तक पहुँचेगी जो मसीह पर विष्वास करते हैं। एक ने विष्वास का द्वार सब के लिए खोल दिया (रोमियों.5:18—19)।

9:17—18

आयत 17 निर्ग.9:16 से लिया गया सार्वभौमिक सामर्थी लेख है और आयत 18 इस लेख का उपसंहार है। निर्ग.8:15, 32; 9:34 में कहा गया है कि फिरौन ने अपना हृदय कठोर कर लिया। निर्ग.4:21; 7:3; 9:12; 10:20, 27; 11:10 में कहा गया है कि परमेष्वर ने उसका हृदय कठोर कर दिया। यह उदाहरण परमेष्वर की श्रेश्ठता को प्रमाणित करने के लिए प्रयोग किया गया है (रोमियों.9:18)। फिरौन अपने चुनाव के लिए ज़िम्मेदार है। परमेष्वर फिरौन के अहंकारी और ज़िद्दी स्वभाव का प्रयोग करते हैं इस्राएल के प्रति अपनी योजना को पूरा करने के लिए (रोमियों.9:18)।

साथ ही ध्यान दीजिए कि फिरौन के साथ परमेष्वर के कार्य का उद्देष्य उद्धार देने वाला और षामिल करने का अवसर था। उनकी अपेक्षा की गई थी :

क. परमेष्वर की सामर्थ प्रगट करने के लिए (बनाम मिस्र के प्रकृति और जानवर देवता; जैसे उत्प.11 में बाबूल के देवताओं के साथ)

ख. मिस्र पर परमेष्वर को प्रगट करने के लिए और इसके द्वारा सारे संसार पर (रोमियों.9:17)।

पष्चिमी विचार एक व्यक्ति को श्रेश्ठ प्रगट करता है, परन्तु पूर्वी विचार साझे में सभी की आवष्यकताओं पर केन्द्रीत है। परमेष्वर ने फिरौन का प्रयोग किया जरूरतमन्द संसार पर स्वयं को प्रगट करने के लिए। वह विष्वास न करने वाले इस्राएल के साथ भी ऐसा ही करेंगे (अध्याय 11)। इस संदर्भ में एक व्यक्ति के अधिकार सभी लोगों की आवष्यकताओं के प्रकाष में खारिज कर दिए गए हैं। साथ ही पुराने नियम के साझे उदाहरणों को भी याद रखिए :

क. परमेष्वर और षैतान के बीच चर्चा के कारण अय्यूब के पहले बच्चे मारे गए (अय्य.1—2)

ख. आकान के पाप के कारण इस्राएल की सेना मर रही थी (यहो.7)

ग. दाऊद के पाप के कारण बतषेबा से जन्मा दाऊद का पहला बच्चा मर गया (2षमू.12:15)

हम सभी दूसरों के चुनाव के कारण प्रभावित होते हैं। यह साझापन नए नियम के रोमियों.5:12–21 में दखा जा सकता है।

रोमियों.9:19–26

19 सो तू मुझ से कहेगा, वह फिर क्यों दोष लगाता है? कौन उस की इच्छा का साम्हना करता हैं?

20 हे मनुष्य, भला तू कौन है, जो परमेश्वर का साम्हना करता है? क्या गढ़ी हुई वस्तु गढ़नेवाले से कह सकती है कि तू ने मुझे ऐसा क्यों बनाया है?

21 क्या कुम्हार को मिट्टी पर अधिकार नहीं, कि एक ही लौंदे मे से, एक बरतन आदर के लिये, और दूसरे को अनादर के लिये बनाए? तो इस में कौन सी अचम्भे की बात है?

22 कि परमेश्वर ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी सामर्थ प्रगट करने की इच्छा से क्रोध के बरतनों की, जो विनाश के लिये तैयार किए गए थे बड़े धीरज से सही।

23 और दया के बरतनों पर जिन्हें उस ने महिमा के लिये पहले से तैयार किया, अपने महिमा के धन को प्रगट करने की इच्छा की?

24 अर्थात् हम पर जिन्हें उस ने न केवल यहूदियों में से वरन अन्यजातियों में से भी बुलाया।

25 जैसा वह होशे की पुस्तक में भी कहता है, कि जो मेरी प्रजा न थी, उन्हें मैं अपनी प्रजा कहूंगा, और जो प्रिया न थी, उसे प्रिया कहूंगा।

26 और ऐसा होगा कि जिस जगह में उन से यह कहा गया था, कि तुम मेरी प्रजा नहीं हो, उसी जगह वे जीवते परमेश्वर की सन्तान कहलाएंगे।

9:19

''कौन उनकी इच्छा का साम्हना कर सकता है''

यह तथ्य सदा रहने वाले परिणाम को प्रगट करता है (2इति.20:6; अय्य.9:12; भ.सं.135:6; दानि.4:35)। काल्पनिक विवाद सतत है। तर्कानुसार पौलुस का काल्पनिक विरोधी का तरीका पौलुस के विचारों को समझने और उनकी रूपरेखा बनाने का उत्तम तरीका है। देखिए अध्याय की भूमिका, बी, 1। परमेष्वर की इच्छा को दो स्तरों में देखना ज़रूरी है। पहला है सारी पतित मानवजाति के उद्धार की उनकी योजना (उत्प.3:15)। यह योजनाऐं एक व्यक्ति के चुनाव से प्रभावित नहीं होतीं। परन्तु दूसरे स्तर में परमेष्वर मनुश्य को साधन के रूप में प्रयोग करने का चुनाव करते हैं (निर्ग.3:7–9, 10)। लोग उनके कार्य को पूरा करने के लिए चुने जाते हैं (दोनो सकारात्मक, मूसा और नकारात्मक, फिरौन)।

9:20–21

यह कल्पना यषा.29:16; 45:9–13; 64:8 और यिर्म.18:1–12 से ली गई हैं। यहोवा को कुम्हार के रूप में प्रस्तुत करना उन्हें रचनाकार परमेष्वर के रूप में प्रगट करता है, जबकी मानवजाति मिट्टी से आई है (उत्प.2:7)। पौलुस सृश्टिकार्ता परमेष्वर की श्रेश्ठता को प्रमाणित करने के लिए तीन और सवालों का प्रयोग करते हैं–पहले दो आयत 20 में और तीसरा आयत 21 में। आखरी सवाल परमेष्वर के मूसा के सकारात्मक और फिरौन के नकारात्मक चुनाव की तुलना करता है। यही विरोधाभास देखा जा सकता है (1) इसहाक–इष्माएल, 9:8–9; (2) याकूब–एसाव, 9:10–12; और (3) इस्राएल राश्ट्र और एदोम राश्ट्र, 9:13। यही

तुलना पौलुस के समय के विष्वास करने वाले और अविष्वासियों के बीच उत्पन्न हुई। परमेष्वर का चुनाव पूरी तरह से विष्वास करने वाले अन्यजातियों को षामिल करने के द्वारा प्रगट हुआ (रोमियों.9:24–29, 30–33)।

9:22

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है पर व्याकरणिय उपसंहार के बिना। आयत 22–24 यूनानी में एक ही वाक्य हैं। आयत 22 परमेष्वर के उद्धारक चरित्र को व्यक्त करता है। परमेष्वर न्यायी परमेष्वर हैं। वह मानवजाति को उनके कार्यों के लिए ज़िम्मेदार ठहराएंगे। पर वह दया के परमेष्वर भी हैं। सारे मनुश्य मृत्यु के योग्य हैं (रोमियों.1:18–3:20)। न्याय षुभ समाचार नहीं है। प्राथमिक तौर पर परमेष्वर का चरित्र दया है क्रोध नहीं (व्यव.5:9–10; 7:9; होषे.11:8–9)। उनका चुनाव उद्धार के लिए है (यहे.36:22–33)। वह पापी मानवजाति के साथ धैर्यवान हैं (यहे.18)। वह बुरे को भी अपने उद्धार की योजना के लिए प्रयोग करते हैं! (उदा. षैतान, फिरौन, एन्दोर की जादुगरनी, असीरिया, नबूकदनेस्सर, कुस्रु और अध्याय 11 में विष्वास न करने वाला इस्राएल राश्ट्र)।

एन ए एस बी ''अपना क्रोध प्रगट करने की इच्छा''

एन के जे वी ''अपना क्रोध प्रगट करना चाहते हैं''

एन आर एस वी ''अपना क्रोध व्यक्त करने की इच्छा''

टी इ वी ''अपना क्रोध प्रगट करना चाहते हैं''

जे बी ''अपना क्रोध प्रगट करने को तैयार हैं''

परमेष्वर अपना क्रोध प्रगट करते हैं अपने सामर्थ (रोमियों.9:22) और अपनी महिमा के धन दोनों को प्रगट करने के लिए (रोमियों.9:23)। परमेष्वर के कार्य में हमेषा उद्धार की योजना थी (सिवाय *गेहेना*, जो कि अन्तिम अलगाव है पाप और अविष्वास का)।

''क्रोध के बरतन''

यह षब्द आयत 20 और 21 से लिए गए पौलुस के मिट्टी के रूपक को जारी रखता है। यह परमेष्वर द्वारा अविष्वासी मानवजाति को प्रयोग करके उद्धार की योजना को पूरा करने को प्रगट करता है।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''तैयार किए गए''

एन आर एस वी ''बनाए गए''

टी इ वी ''चिन्ह''

एन जे बी ''रूपरेखा बनाना''

पापरी में यह षब्द उस चीज़ के लिए प्रयोग किया गया है जो अन्तिम लक्ष्य के लिए तैयार की गई है। विद्रोही अविष्वास का एक दिन न्याय और परिणाम का दिन होगा। परमेष्वर अविष्वासियों का प्रयोग करते हैं अपने बड़ी और षामिल किए जाने और उद्धार की योजना को पूरा करने के लिए।

एम. आर. वीनसेन्ट, वर्ड स्टडिज़, भाग.2 कहता है *''परमेष्वर द्वारा नाष होने के लिए तैयार नहीं किए गए, परन्तु विभक्तिय विचार में, तैयार, नाष के लिए पक्क गए हैं, यह पहले से तैयार की गई वर्तमार दषा को प्रगट करता है, पर कोई भी जानकारी नहीं देता कि यह कैसे रचा गया'' (पृश्ठ.716)।*

''विनाष''

देखिए विषेश षीर्शक 3:3।

9:23

''जिन्हें उन्होंने पहले से ही
महिमा के लिए तैयार कर रखा है''

यही सत्य रोमियों.8:29–30 और इफि.1:4, 11 में प्रस्तुत किया गया है। यह अध्याय नया नियम में परमेष्वर की श्रेश्ठता को व्यक्त करने का दृढ़ भाग है। इसमें कोई विवाद नहीं कि परमेष्वर का अधिकार सृश्टि और उद्धार के ऊपर है। यह सत्य बड़ा है और इसे कोमल नहीं किया जा सकता या चालाकी नहीं की जा सकती। यह परमेष्वर के वाचा के चुनाव के साथ सन्तुलित होना चाहिए मानवजाति की सृश्टि के सम्बन्ध के साधन के रूप में जो उनके स्वरूप में रचे गए हैं। यह निष्चित रूप से सच है कि पुराने नियम की कुछ वाचाएं हैं, उत्प.9:8–17 और 15:12–21, जो बिना षर्त की हैं और मानव प्रतिउत्तर के साथ सम्बन्धित नहीं हैं परन्तु कुछ षर्तिया हैं और मानव प्रतिउत्तर की माँग करती हैं (उदा. अदन, नूह, मूसा, दाऊद)। परमेष्वर की अपनी सृश्टि के लिए उद्धार की योजना है और कोई भी मनुश्य उसे प्रभावित नहीं कर सकता। परमेष्वर ने हरेक व्यक्ति को अपनी योजना में कार्य करने के लिए चुना है। यह कार्य करने का अवसर परमेष्वर की श्रेश्ठता (रोमियों.9) और मानव की स्वतंत्र इच्छा के बीच धर्मषास्त्रीय तनाव है (रोमियों.10)।

यह सही नहीं है कि बाइबल के एक ज़ोर को चुना जाए और दूसरे को छोड़ दिया जाए। सिद्धान्तों के बीच तनाव है क्योंकि पूर्व के लोग सत्य को विवादों के रूप में प्रस्तुत करते हैं या तनाव–भरे जोड़ो में। सिद्धान्तों को दूसरे सिद्धान्तों के सम्बन्ध में रखना चाहिए। सत्य सत्यों का पच्चीकारी का काम है।

यहाँ पर निष्चय ही रहस्य है। पौलुस क्रोध के लिए तैयार *(काटाप्टीज़ो)* अविष्वासियों के बारे में तर्कानुसार उपसंहार नहीं प्रस्तुत करते (रोमियों.9:22) और न ही विष्वासियों का जो महिमा के लिए तैयार किए गए हैं *(प्रोएटोइमाज़ो)* (रोमियों.9:23)। क्या परमेष्वर का चुनाव एक मात्र कारक है या क्या परमेष्वर का चुनाव सभी के लिए दया पर आधारित है, परन्तु कुछ इस निमन्त्रण को ठुकरा देते हैं? क्या मानवजाति का अपने भविश्य में कोई भाग है (रोमियों.9:30–10–21)? दोनों ही पक्षों के लिए अतिरंजनाऐं है (अगस्तिन–पेलागीउस)। मेरे लिए वाचा का विचार दोनों को ही जोड़ देता परमेष्वर पर ज़ोर देकर। मानवजाति केवल परमेष्वर द्वारा षुरू की गई बातों का प्रतिउत्तर दे सकती है (उदा. यूह.6:44, 65)। परन्तु मेरे लिए तो परमेष्वर का चरित्र सनकी नहीं पर दयावान है। वह सभी विवेकपूर्ण मनुश्यों जो उनकी सृश्टि हैं और उनके स्वरूप में रचे गए है उन तक पहुँचते हैं (उत्प.1:26, 27)। मैं इस संदर्भ से संघर्श कर रहा हूँ। यह बहुत ही षक्तिषाली है, फिर भी यह काले–सफेद रंग में रंगा हुआ है। इसका केन्द्रबिन्दु यहूदी अविष्वास है जिसका परिणाम अन्यजातियों का षामिल किया जाना है (रोमियों.11)। पर यह परमेष्वर के चरित्र पर आधारित एक मात्र मूलपाठ नहीं है।

''महिमा''

देखिए नोट 3:23।

9:24

यह प्रगट करता है परमेष्वर के वायदे की द्रव्य–वस्तु जातिय इस्राएल से कहीं बड़ी है। परमेष्वर ने अपने चुनाव के आधार पर मानवजाति पर दया प्रगट की है। उत्प.3:15 का वायदा सारी मानवजाति के लिए है (क्योंकि उत्प.12 तक कोई यहूदी नहीं थे)। उत्प.12:3 में की इब्राहीम की बुलाहट सारी मानवजाति के लिए है। इस्राएल राश्ट्र का राज्य के याजक के रूप में बुलाया जाना सारी मानवजाति के लिए है (निर्ग.19:5–6)। यह परमेष्वर का रहस्य है, जो छुपा हुआ था, पर अब पूरी तरह से प्रगट किया गया है (इफि.2:11–3:13; गला.3:28; कुलु.3:11)।

आयत 4 में पौलुस की निष्चित घोशणा पुराना नियम के लेखों के द्वारा प्रगट होती है (रोमियों.9:25–29)।

क. 9:25, होषे.2:23

ख. 9:26, होषे.1:10[ख]

ग. 9:27, यषा.10:22 और होषे.1:10[क]

घ. 9:28, यषा.10:23

ङ. 9:29, यषा.1:9

9:25–27

इस संदर्भ में यह भाग सैप्टूआजैन्ट के होषे.2:23 (कुछ बदलाव के साथ) और 1:10 से लिया गया है, जहाँ यह उत्तर के दस गोत्रों को सम्बोधित करता है पर यहाँ पौलुस अन्यजातियों के लिए इसका प्रयोग करते हैं। यह पुराने नियम के आयतों का नए नियम के लेखकों द्वारा प्रयोग करने का विषेश तरीका है। उन्होंने इस्राएल के साथ वायदे के पूरक के रूप में कलीसिया को देखा (2कुरि.6:16; तीत.2:14; 1पत.2:5–9)। होषे इस जगह में विष्वासहीन इस्राएल को प्रगट करता हैं। यदि परमेष्वर उत्तर के दस गोत्रों जो कि मूर्तिपूजक हो गए थे उन्हें पुनः वापस ला सकते हैं तो पौलुस इसे प्रेम और क्षमा के प्रमाण की तरह देखते हैं कि एक दिन परमेष्वर मूर्तिपूजक अन्यजातियों को भी षामिल करेंगे।

रोमियों.9:27–29

27 और यशायाह इस्राएल के विषय में पुकारकर कहता है, कि चाहे इस्राएल की सन्तानों की गिनती समुद्र के बालू के बारबर हो, तौभी उनमें से थोड़े ही बचेंगे।

28 क्योंकि प्रभु अपना वचन पृथ्वी पर पूरा करके, धार्मिकता से शीघ्र उसे सिद्ध करेगा।

29 जैसा यशायाह ने पहले भी कहा था, कि यदि सेनाओं का प्रभु हमारे लिये कुछ वंश न छोड़ता, तो हम सदोम की नाई हो जाते, और अमोरा के सरीखे ठहरते।

9:27

एन ए एस बी, एन के जे वी, एन आर एस वी, एन जे बी ''यद्यपि''

टी इ वी ''यदि ऐसा भी''

यह तीतृय श्रेणी षर्तिया वाक्य है जो प्रभावषाली कार्य को प्रगट करता है।

9:27–28

यह यषा.10:22–23 का सैप्टूआजैन्ट से लिया गया हलका लेख है। टैक्सअर रिसिपअस सैप्टूआजैन्ट के यषा.10:23 के अन्त में सतत वाक्यांष षामिल करता है। पर यह प्राचीन यूनानी हस्तलेख पी[46], आलेफ, ए और बी नहीं है जो बताता है कि यह बाद के लेखकों द्वारा जोड़ा गया है।

''समुद्र के बालू के बराबर''

यह इब्राहीम के साथ परमेष्वर के वायदे के बहुतायत परिणाम की रूपक भाशा का भाग है (उत्प.15:5; 22:17; 26:4)।

''तौभी उनमें से थोड़े ही बचेंगे''

षब्द ''बचे हुए'' का प्रयोग पुराने नियम के भविश्यद्वक्ताओं द्वारा उन लोगों के लिए किया गया है जो बन्धुवाई में गए थे, परन्तु परमेष्वर द्वारा वायदे के देष में वापस लाए गए। पौलुस जब इस षब्द का प्रयोग करते हैं तो उन लोगों के लिए करते हैं

जिनका परमेष्वर के साथ विष्वास का सम्बन्ध है या जिन्होंने सुसमाचार सुना है और विष्वास के साथ मसीह को प्रतिउत्तर दिया है।

यहाँ तक कि वाचामय इस्राएल के बीच भी आत्मिक अलगाव हुआ और केवल कुछ ही परमेष्वर के सामन धर्मी जाने गए। इस्राएल के चुनाव ने व्यक्तिगत चुनाव के विष्वास प्रतिउत्तर के महत्व को कम नहीं किया (यषा.1:16–20)। पौलुस पुराने नियम के वाक्यांष का प्रयोग करते हैं, जो प्राथमिक तौर पर यहूदी बन्धुवाई से सम्बन्धित है जिनमें से केवल कुछ ही फारस वापस लौटे, उन लोगों के लिए जिन्होंने सुसमाचार सुना, परन्तु उनमें से अधिकतर ने विष्वास नहीं किया और मसीह को ग्रहण नहीं किया। पहली सदी के थोड़े से लोगों (यहूदी और अन्यजातिय) ने सुसमाचार के संदेष का प्रतिउत्तर दिया। पौलुस उन्हें बचाए गए लोग कहते हैं।

विषेश षीर्शक : बचा हुआ अंष, तीन विचार

पुराने नियम का विचार ''विष्वासयोग्य बचाए गए लोग'' भविश्यद्वक्ताओं को वर्तमान केन्द्रीय विशय है (अधिकतर 18वीं सदी के भविश्यद्वक्ताओं और यिर्मयाह)। यह तीन विचारों में प्रयोग किया गया है :

क. जो बन्धुवाई में बच गए (यषा.10:20–23; 17:4–6; 37:31–32; यिर्म.42:15, 19; 44:12, 14, 28; आमो.1:8)

ख. जो यहोवा के प्रति विष्वासयोग्य रहे (यषा.4:1–5; 11:11, 16; 28:5; योए.2:32; आमो.5:14–15; मीका.2:12–13; 4:6–7; 5:7–9; 7:18–20)

ग. जो अन्त की पुनः स्थापना और पुनः सृश्टि का भाग होंगे (आमो.9:11–15)

इस संदर्भ परमेष्वर केवल कुछ ही लोगों को चुनते हैं (जो विष्वासयोग्य उत्साहित हैं) बचाए गए लोगों में से (बन्धुवाई में बचे लोग) यहूदा वापस लौटने के लिए। जैसा कि हमने इस अध्याय में देखा है, इस्राएल की भूतकाल की घटनाओं से (9:6)। परमेष्वर गिनती कम कर रहे हैं ताकि वह अपना सामर्थ, उपाय और देखभाल दिखा सकें (गिदोन, न्या.6–7)।

9:29

यह सैप्टूआजैन्ट के यषा.1:9 से लिया गया लेख है, जो इस्राएल राश्ट्र के पापी स्वभाव के लिए उन्हें दोशी स्थापित करता है।

''साबोथ के प्रभु''

यह पुराना नियम का यहोवा का षीर्शक है जिसका अनुवाद ''सेनाओं के प्रभु'' के रूप में किया गया है (याक.5:4)। संदर्भ पर निर्भर करता है, यह परमेष्वर को सैनिक षब्दो में व्यक्त करता है, ''स्वर्ग की सेना के कप्तान'' (यहो.5:13–15), और आधिकारिक विचार में, अक्सर बाबुल के बहुदैविय संदर्भ में यह स्वर्गिय प्राणियों से सम्बन्धित है, ''स्वर्गिय प्राणियों के प्रभु''। तारे सृश्टि है देवता नहीं, वे घटनाओं पर नियन्त्रण नहीं रखते (उत्प.1:16; भ.सं.8:3; 147:4; यषा.40:26)।

एन ए एस बी ''यदि...हमारे लिए वंष न छोड़ते''

एन के जे वी ''यदि...वंष न छोड़ते''

एन आर एस वी ''बचे हुओं को नहीं छोड़ा''

टी इ वी ''हमारे लिए कुछ वंष नहीं छोड़ा''

एन जे बी ''हमारे लिए कुछ बचे हुए नहीं छोड़े''

इब्रानी मूलापाठ में यषा.1:9 में ''बचे हुए'' का प्रयोग किया गया है जिसका अनुवाद सैप्टूआजैन्ट में ''वंष'' षब्द का प्रयोग किया गया है (एन के जे वी)। परमेष्वर का इस्राएल के प्रति न्याय बचाया गया (1) विष्वास करने वाले बचाए गए लोग (2) मसीह का वंष। परमेष्वर ने कुछ लोगों चुना बहुतों तक पहुँचने के लिए।

''सदोम...अमोरा''

आयत 28 परमेष्वर के न्याय से सम्बन्धित है। यह आयत दो अन्यजातिय षहरों को प्रगट करता है जो उत्प.19:24–26 में परमेष्वर द्वारा नाष कर दिए गए थे, परन्तु वे परमेष्वर के न्याय के लिए मुहावरा बन गए (व्यव.29:34; यषा.13:19; यिर्म.20:16; 49:18; 50:40; आमो.4:11)।

रोमियों.9:30–33

30 सो हम क्या कहें? यह कि अन्यजातियों ने जो धार्मिकता की खोज नहीं करते थे, धार्मिकता प्राप्त की अर्थात् उस धार्मिकता को जो विश्वास से है।

31 परन्तु इस्राएली; जो धर्म की व्यवस्था की खोज करते हुए उस व्यवस्था तक नहीं पहुंचे।

32 किस लिये? इसलिये कि वे विश्वास से नहीं, परन्तु मानों कर्मों से उस की खोज करते थेः उन्हों ने उस ठोकर के पत्थर पर ठोकर खाई।

33 जैसा लिखा है; देखो मैं सिय्योन में एक ठेस लगने का पत्थर, और ठोकर खाने की चट्टान रखता हूं; और जो उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा।

9:30–31

यह परमेष्वर के चुनाव के उद्देष्य का आष्चर्यचकित कर देने वाला उपसंहार है। आयत 30–33 अध्याय 9 का सारांष और अध्याय 10 की भूमिका है। विष्वास करने वाले अन्यजातिय लोग परमेष्वर के सामने धर्मी ठहरे पर सभी यहूदी नहीं।

परमेष्वर सारी मानवजाति के साथ वाचामय तरीके से व्यवहार करते हैं। परमेष्वर हमेषा षर्तें तय करने की षुरूवात करते हैं। एक व्यक्ति को पष्चाताप और विष्वास, आज्ञाकारीता और धीरज से प्रतिउत्तर देना होगा। क्या मनुश्य बचाए गए हैं (1) परमेष्वर की श्रेश्ठता; (2) मसीह के समाप्त किए गए कार्य पर परमेष्वर की दया के द्वारा; और (3) व्यक्तिगत विष्वास के कार्य के द्वारा? हाँ!

''लगातार कोषिष करते रहने'' के लिए देखिए विवरण 14:19।

''धार्मिकता''

देखिए विषेश षीर्शक 1:17।

9:32

''कर्मों द्वारा''

टैक्सटस रिसिपट्स में ''व्यस्था का'' षब्द जोड़ा गया है। यह बाद के लेखकों द्वारा जोड़ा गया है। पौलुस ने अक्सर इस वाक्यांष का प्रयोग किया है ''व्यवस्था का कार्य'' (रोमियों.3:20, 28; गला.2:16; 3:2, 5, 10)। प्राचीन यूनानी हस्तलेख पी[46], आलेफ, ए, बी, जी में यह षब्द षामिल नहीं है।

परमेष्वर की धार्मिकता की कुन्जी मानवीय कार्य नहीं परन्तु मसीह द्वारा परमेष्वर का चरित्र और दान है। धार्मिकता (रोमियों. 3:21—31) पतित मानवजाति द्वारा हासिल करना नामुम्कीन है, परन्तु यह मसीह पर विष्वास द्वारा मुफ्त वरदान है। इसे ग्रहण करना आवष्यक है (रोमियों.9:33; यूह.1:12; 3:16; रोमियों.4:1 के बाद; 20:9—13; इफि.2:8—9)। यह सत्य है कि वफादार, धार्मिक और नैतिक यहूदियों (और सभी हठधर्मियों) ने खो दिया।

जॉर्ज एलडोन लाड अपनी पुस्तक ए थियोलौजी ऑफ न्यू टैस्टामैन्ट में अच्छा विचार प्रगट करते हैं :

''पौलुस की व्यवस्था के बारे में षिक्षाओं को ऐतिहासिक अनुभव के विचार से तय किया जाता है या तो स्वयं पौलुस की एक यहूदी रब्बी के रूप में या फिर पहली सदी के एक यहूदी जो व्यवस्था के अधीन है, के रूप में। पौलुस के विचारों को न तो उनकी आत्मिक आत्मकाथा के आधार पर और न ही पहली सदी के एक तर्कानुसार फरीसी चरित्र के रूप में, परन्तु एक धर्मषास्त्रीय अनुवादक मसीही विचारक जो धार्मिकता के दो तरीकों : षास्त्रोक्त और विष्वास'' (पृश्ठ.495)।

9:33

यह यषा.28:16 का 8:14 के मिश्रण के साथ लिया गया है।

''मैं सिय्योन में एक ठेस लगने का पत्थर,'' 28:16[क]

''और ठोकर खाने की चट्टान रखता हूं;'' 8:14[ख]

''और जो उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा'' 28:16[ख]

इन आयतों को जोड़ने के द्वारा वह यषा.28:16 का अर्थ सकारात्मक से नकारात्मक में बदल देते हैं। पौलुस ने पुराने नियम को अपने उद्देष्य के लिए बदल दिया।

क. वह कौन सा अनुवाद चुनते हैं (सैप्टूआजैन्ट, एम टी और उनका अपना)

ख. वह आयतों को बदल देते हैं (बन्धुवाई से अन्यजातिय)

ग. वह मूलपाठों को जोड़ देते हैं

घ. वह उन षीर्शकों और सर्वनामों को यीषु के लिए बदल देते हैं जो यहोवा के लिए प्रयोग किए जाते थे।

''जो उस पर विश्वास करेगा,
वह लज्जित न होगा''

यह यषा.28:16[ख] से लिया गया है। इसे रोमियों.10:11 में भी प्रयोग किया गया है और यह योए.2:32 के समान है जिसे रोमियों. 10:13 में प्रयोग किया गया है। उद्धार के लिए कुन्जी दोनों ही हैं (1) वस्तु (सिरे का पत्थर) और (2) एक व्यक्ति का व्यक्तिगत स्वीकार (उन पर विष्वास)। देखिए विषेश षीर्शक : विष्वास 4:5।

''एक पत्थर''

वास्तव में यह परमेष्वर का षीर्शक था (भ.सं.18:1–2, 31, 46; व्यव.32:18; 1षमू.2:2; भ.सं.28:1; 31:3; 42:4; 21:3; 78:15), परन्तु यह मसीह का षीर्शक बन गया (उत्प.49:24; भ.सं.118:22; यषा.8:14; 28:16; दानि.2:34–35, 44–45; मत्ती.21:42–44)। परमेष्वर की वाचामय वायदे (मसीह) के कुन्जी तत्व को गलत समझा गया और त्यागा गया (1कुरि.1:23)। यहूदियों ने न केवल मसीह के उद्देष्य को ही गलत समझा वरन् परमेष्वर की वाचा की आधारभूत माँग को भी। मसीह यहूदियों के लिए ठोकर का कारण बन गए (यषा.8:14; लूका.2:34), परन्तु विष्वासियों के लिए, यहूदी और अन्यजाति दोनों, वह नींव का पत्थर बन गए (यषा.28:16; 1पत.2:6–10)।

विषेश षीर्शक : सिरे का पत्थर

क. पुराने नियम का प्रयोग

1) पत्थर का विचार जो कठोर और लम्बे समय तक रहने वाली वस्तु है और जो अच्छी नींव बनाता है का प्रयोग यहोवा का वर्णन करने के लिए किया गया है (भ.सं.18:1)।

2) बाद में यह मसीह के षीर्शक के रूप में बदल गया (उत्प.49:24; भ.सं.118:22; यषा.28:16)।

3) यह मसीह द्वारा यहोवा के न्याय को प्रस्तुत करने के लिए प्रयोग में लाया गया (यषा.8:14; दानि.2:34–35, 44–45)।

4) यह इमारत के रूपक के तौर पर बदल गया।

(क) नींव का पत्थर, पहले रखा गया, जो सुरक्षित होता है और बाकी की इमारत के लिए दिषा तैयार करता है और ''सिरे का पत्थर'' कहलाता है।

(ख) यह अन्तिम पत्थर के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है जिसे जगह पर रखा गया हो, जो दिवारों को जोड़ता है (जक. 4:7; इफि.2:20, 21) जिसे ''चोटी का पत्थर'' कहा जाता है जो इब्रानी *रष* (चोटी) से आया है ।

(ग) यह ''प्रमुख पत्थर'' को भी प्रगट कर सकता है जो दहलीज़ मेहराब का केन्द्र है और पूरी दीवार का भार सम्भालता है।

ख. नए नियम का प्रयोग

1) यीषु ने भ.सं.118 का प्रयोग कई बार अपने सम्बन्ध में किया (मत्ती.21:41–46; मरकुस.12:10–11; लूका.20:17)

2) पौलुस भ.सं.118 का प्रयोग अविष्वासी और विद्रोही इस्राएल के यहोवा द्वारा त्याग के सम्बन्ध में करते हैं (रोमियों.9:33)

3) पौलुस इफि.2:20–22 में मसीह के सम्बन्ध में ''चोटी के पत्थर'' का प्रयोग करते हैं।

4) 1पत.2:1–10 में पतरस मसीह के सम्बन्ध में इस विचार का प्रयोग करते हैं। यीषु सिरे के पत्थर हैं और विष्वासी जीवित पत्थर हैं (विष्वासी मन्दिर के रूप में, 1कुरि.6:19), जो उन पर बनाए गए हैं (मसीह नए मन्दिर हैं, मरकुस.14:58; मत्ती.12:6; यूह.2:19–20)।

यहूदियों ने अपनी आषा की नींव को ही नकार दिया जब उन्होंने यीषु को मसीह के रूप में नकारा।

ग. धर्मषास्त्रीय कथन

1) यहोवा ने दाऊद/सुलैमान को अनुमति दी मन्दिर बनाने के लिए। उन्होंने उनसे कहा कि यदि वे वाचा का पालन करेंगे तो वह उन्हें आषीश देंगे और उनके साथ रहेंगे, परन्तु यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया तो मन्दिर का विनाष हो जाएगा (1राजा. 9:1–9)।

2) रब्बीयों के यहूदी धर्म का केन्द्र रीतिरिवाज़ और परम्पराएं थीं पर उन्होंने व्यक्तिगत विष्वास के पक्ष को छोड़ दिया (यह अटल कथन नहीं है; भक्त रब्बी भी थे)। परमेष्वर हर दिन, व्यक्तिगत और भक्तिपूर्ण सम्बन्ध चाहते हैं उन लोगों के साथ जो उनके स्वरूप में रचे गए हैं (उत्प.1:26–27)। लूका.20:17–18 में डरा देने वाले न्याय के षब्द हैं।

3) यीषु ने मन्दिर के विचार का प्रयोग अपने षरीर को दर्षाने के लिए किया। यह व्यक्तिगत के विचार को बढ़ावा देता है। यीषु पर मसीह के रूप में विष्वास यहोवा के साथ सम्बन्ध की कुन्जी है।

4) उद्धार मनुश्य के अन्दर परमेष्वर के स्वरूप को पुनः स्थापित करने के लिए है ताकि परमेष्वर के साथ संगति सम्भव हो सके। अभी मसीहत का लक्ष्य मसीहसमानता है। विष्वासियों को मसीह (नया मन्दिर) के अनुसार का जीवित पत्थर बनना चाहिए।

5) यीषु हमारे विष्वासी की नींव और चोटी का पत्थर हैं (अल्फा और ओमेगा)। फिर भी ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान हैं। उन्हें खो देना सबकुछ खो देना है। यहाँ पर कोई बीच का स्थान नहीं है।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) किस तरह अध्याय 9 (पहले से ही नियुक्त या चुने गए) अध्याय 10 (मानवजाति की स्वतंत्र इच्छा) से सम्बन्धित है?

2) अध्याय 9:1–29 के मुख्य केन्द्रीय विशय क्या है?

3) क्या परमेष्वर ने इस्राएल के साथ अपनी वाचा को तोड़ दिया है?

4) इस्राएल राश्ट्र जिन विषेश अधिकारों का आनन्द ले रहा है उसकी सूची बनाइए (9:4–5)।

5) क्या सभी यहूदी परमेष्वर के साम्हने धर्मी हैं? क्यों और क्यों नहीं (9:6)?

6) यदि मनुश्य पर परमेष्वर की इच्छा को पूरा करने का दबाव डाला जाए तो क्या वह नैतिक रूप से इसके लिए ज़िम्मेदार है?

7) किस तरह ''दया'' पहले से ही नियुक्त या चुन लिए जाने की कुन्जी है (9:15, 16, 18, 23; 11:30–32)?

रोमियों – 10

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
इस्राएल और सुसमाचार	इस्राएल को सुसमाचार की आवष्यकता है	सच्ची धार्मिकता विष्वास के द्वारा है	इस्राएल और सुसमाचार	इस्राएल यह देखने में असफल रहा कि परमेष्वर पवित्र हैं
9:30—10:4		9:30—10:4	9:30—10:4	
	10:1—13			10:1—4
उद्धार सबके लिए			उद्धार सबके लिए	
10:5—13		10:5—13	10:5—13	10:5—13
	इस्राएल ने सुसमाचार का इनकार किया	इस्राएल स्वयं अपनी असफलता के लिए ज़िम्मेदार		मूसा की गवाही
10:14—21	10:14—21	10:14—17	10:14—17	10:14—17
		10:18—21	10:18—21	10:18—21

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्‌देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद
2) दूसरा अनुच्छेद
3) तीसरा अनुच्छेद
4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि

क. अध्याय 10 यहोवा द्वारा दया से दिए गए उद्धार का प्रतिउत्तर देने के लिए इस्राएल के अवसर पर केन्द्रीत है। अध्याय 9 में परमेष्वर द्वारा संसार को चुनने के लिए इस्राएल के चुनाव और इस्राएल द्वारा परमेष्वर के इस चुनाव को ठुकराने के बारे में चर्चा की गई है।

ख. पौलुस लगातार पुराने नियम के आयतों का प्रयोग करके अपने सुसमाचार के तर्क को बरकरार रखते हैं। यह प्रेरितों के काम में प्रेरितों के प्रचार का चरित्र है, जिन्हें केरीगमा के नाम से जाना जाता है (जिसकी घोशणा की जाती है)। देखिए विषेश षीर्शक : षुरूवाती कलीसिया का केरीगमा 1:2।

ग. 9:30–10:4 के केन्द्रीय सत्य हैं :

1) मसीह पर विष्वास करने के द्वारा अन्यजातियों के पास परमेष्वर की धार्मिकता है,

2) मसीह पर विष्वास न करने के कारण यहूदियों के पास परमेष्वर की धार्मिकता नहीं है,

3) व्यवस्था धार्मिकता नहीं दे सकती। यह मसीह पर विष्वास के द्वारा परमेष्वर का तोहफा है जो मनुश्य के कार्यों से जीता नहीं जा सकता।

घ. ब्रूस कोरले और क्रूटीस वॉगान, ए स्टडी गाईड कॉमेन्ट्री, रोमनस, प्रगाषित जोन्डरवन, पृश्ठ.115–116, में यहूदियों के पाप की रूपरेखा है।

1) धार्मिक अहंकार, रोमियों.10:2[क]

2) आत्मिक अन्धापन, 10:2[ख], 3[क]

3) स्वधार्मिकता, 10:3[ख]

4) नझुकने वाला ज़िद्‌दीपन, 10:4[क]

मुझे अध्याय 10 के बारे में अध्याय 9 के अन्त में उनके समाप्ति के षब्द बहुत पसंद हैं, ''चुनाव क्रूस के प्रचार में होता है (1थिस्स.1:4–10), जो व्याख्या करता है कि किस प्रकार ईष्वरीय श्रेश्ठता का षास्त्रीय बचाव (रोमियों.9:6–29) का पौलुस के पत्र के इस महान मिष्नरी मूलपाठ कैसे प्रयोग किया गया है (10:1–21)। सुसमाचार को प्रचार करने की सबसे बड़ी आज्ञा इस ज्ञान में है कि मसीह में चुनाव के उद्‌देष्य के लिए परमेष्वर विष्वासयोग्य हैं'' (पृश्ठ.114)।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.10:1–4

1 हे भाइयो, मेरे मन की अभिलाषा और उनके लिये परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है, कि वे उद्धार पाएं।

2 क्योंकि मैं उन की गवाही देता हूं, कि उनको परमेश्वर के लिये धुन रहती है, परन्तु बुद्धिमानी के साथ नहीं।

3 क्योंकि वे परमेश्वर की धार्मिकता से अनजान होकर, और अपनी धार्मिकता स्थापन करने का यत्न करके, परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन न हुए।

4 क्योंकि हर एक विश्वास करनेवाले के लिये धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त है।

10:1

''हे भईयो''

पौलुस नए विशय का परिचय देने के लिए इस षब्द का प्रयोग करते थे (रोमियों.1:13; 7:14; 8:12)।

''मेरे मन की अभिलाषा
और उनके लिये परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है,
कि वे उद्धार पाएं''

पौलुस विष्वास करते थे कि यहूदी उद्धार पाएंगें और उनकी प्रार्थना बदलाव ला सकती है। यह पहले से ही निर्धारण का अष्चर्यजनक रूप से विरोधाभास है। देखिए विषेश षीर्शक : मध्यस्थता प्रार्थना 9:3।

''उनके लिए''

षब्द के लिए यूनानी हस्तलेख में भिन्नता है। टैक्सटस रिसिप्टस ने इसे ''इस्राएल के लिए'' से बदल दिया है। जो ''उनके लिए'' के पक्ष में हैं वे हैं, एम एस एस पी[46], बी सी डी, एफ, जी। यू बी एस[4] इसे ''ए'' श्रेणी प्रदान करती है।

10:2

''उनको परमेश्वर के लिये धुन रहती है''

ईमानदारी और उत्साह ही काफी नहीं हैं (रोमियों.10:3–4)। पौलुस इसे भली भाँती जानते थे (प्रेरित.9:1; गला.1:14; फिलि.3:6)।

10:2–3

''परन्तु बुद्धिमानी के साथ नहीं।
3 क्योंकि वे परमेश्वर की धार्मिकता से
अनजान होकर''

षब्द ''जानना'' (10:2, *एपीगीनोस्को*) दो तरह से कार्य करता है : (1) यहूदी मुफ्त सुसमाचार को नहीं समझे (यूनानी विचार, ''जानना'') या (2) यहूदियों का परमेष्वर के साथ विष्वास का सम्बन्ध नहीं था (इब्रानी विचार, ''जानना'' ; उत्प.4:1; यिर्म.1:5)।

यहूदी परमेष्वर को प्रतिउत्तर देने से अनजान नहीं थे (रोमियों.10:16, 18, 19), पर उन्होंने विष्वास को मनुश्य के कार्यों से बदल दिया, जो अहंकार, हठ और अवरोध लाता है (रोमियों.10:3[क])।

10:3

''परमेष्वर की धार्मिकता''
अध्याय 9–11 में यह वाक्यांष परमेष्वर द्वारा अपने साथ सही ठहराने के लिए प्रयोग किया गया है (रोमियों.4) जो कि पूरी तरह से उनकी दया, मसीह द्वारा पूर्ण किए गए कार्य, पवित्र आत्मा के प्रभाव, पापी मनुश्य के पष्चाताप, विष्वास प्रतिउत्तर और लगातार आज्ञापालन और कोषिष पर आधारित है।

कोई भी आसानी से समझ सकता है कि यहूदियों ने किस प्रकार परमेष्वर की धार्मिकता को गलत समझा। पुराना नियम व्यवस्था के प्रति आज्ञापालन पर ज़ोर देता है (व्यव.4:28–6:3, 17, 24–25)। वे इस बात को समझनें में नाकामयाव रहे कि विष्वास और पष्चाताप में भी समानता की आवष्यक है (व्यव.5:29–30; 6:5)। व्यवस्थाविवरण स्पश्ट रीति से प्रगट करता है कि परमेष्वर ने इस्राएल के एवज़ में कार्य किया उनकी धार्मिकता के कारण नहीं पर अपने चरित्र के कारण (रोमियों.9:6, 7, 13, 24, 27; 10:12–22; यहे.36:22–38)। यहाँ तक कि कानानियों से भी अधिकार इस्राएल की धार्मिकता के कारण नहीं छीना गया परन्तु पर उनके पाप के कारण छीना गया (रोमियों.9:4–6; उत्प.15:16)। देखिए विषेश षीर्शक 1:17।

''परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन न हुए''
यहाँ पर षब्द ''अधीन'' एक सैनिक षब्द है जिसमें क्रमानुसार अधिकारी हैं। यहूदी परमेष्वर की धार्मिकता को कमाना चाहते थे पर यह परमेष्वर का दान है (रोमियों.3:24; 5:15; इफि.2:8–9)। पौलुस ने इस सत्य को दमिष्क मार्ग पर स्पश्ट रीति से देखा।

विषेश षीर्शक : समर्पण (हुपोटासो)

सैप्टूआजैन्ट में इस षब्द का प्रयोग 10 अलग–अलग इब्रानी षब्दों का अनुवाद करने के लिए किया गया है। पुराने नियम में इसका अर्थ है ''आज्ञा देना'' या ''आज्ञा देने का अधिकार''। यह सैप्टूआजैन्ट में लिया गया है।

1) परमेष्वर की आज्ञा (लैव्य.10:1; योना.2:1; 4:6–8)

2) मूसा की आज्ञा (निर्ग.36:6; व्यव.27:1)

3) राजा की आज्ञा (2इति.31:13)

नए नियम में भी यही विचार प्रेरित.10:48 में प्रयोग किया गया जो प्रेरितों की आज्ञा को प्रगट करता है। नए नियम में नए भाव उत्पन्न हुए।

1) स्वेच्छा विचार की उत्पत्ति हुई

2) इस स्वयं को सीमित करने के कार्य को हम यीषु द्वारा स्वयं को परमेष्वर के सामने समर्पण करने के कार्य में देख सकते हैं (लूका.2:51)

3) विष्वासियों को संस्कृति के आधार पर स्वयं को समर्पित करना होगा ताकि सुसमाचार पर विरोधात्मक प्रभाव न पड़े।

(क) सभी विष्वासियों को (इफि.5:21)

(ख) विष्वास करने वाली पत्नियाँ (कुलु.3:18; इफि.5:22–24; तीत.2:5; 1पत.3:1)

(ग) विष्वासियों को अन्यजातिय सरकार के प्रति (रोमियों.13:1–7; 1पत.2:13)

विष्वसियों का कार्य इस लक्ष्य से होना चाहिए, परमेष्वर के प्रति, मसीह के प्रति, परमेष्वर के राज्य के प्रति, दूसरों की भलाई के लिए।

अगापेओ के समान ही कलीसिया ने इस षब्द को इस अर्थ परमेष्वर के राज्य और दूसरों की आवष्यकता के आधार से भर दिया है। इस षब्द ने स्वर्थहीनता की नई कुलीनता को ले लिया है जो आज्ञा पर आधारित नहीं है पर स्वयं को देने वाले परमेष्वर और मसीह के साथ नए सम्बन्ध पर आधारित है। विष्वासी सभी की भलाई के लिए समर्पण करते हैं और परमेष्वर के परिवार की आषीश के लिए समर्पण करते हैं।

10:4

एन ए एस बी, एन के जे वी, एन आर एस वी ''क्योंकि मसीह व्यवस्था का अन्त हैं''

टी इ वी ''क्योंकि मसीह व्यवस्था को अन्त तक लाए हैं''

जे बी ''परन्तु अब मसीह में व्यवस्था अन्त तक पहुँच गई है''

यह वाक्य मत्ती.5:17–48 की समानता में है। व्यवस्था का उद्‌देष्य, लक्ष्य और अन्त (टेलोस) उद्धार नहीं है, परन्तु दोशारोपण है और वह चल रहा है (गला.3:24–25)। नए नियम का इस विशय पर षास्त्रीय मूलपाठ है गला.3:1–29।

इस विशय की चर्चा के लिए संदर्भ बहुत ही महत्वपूर्ण है। पौलुस पुराने नियम का प्रयोग बहुत से अलग–अलग तरह से करते हैं। जब मसीही जीवन के बारे में चर्चा करते हैं तो पुराना नियम परमेष्वर का प्रकाषन है (रोमियों.15:4; 1कुरि.10:6, 11), पर जब उद्धार के विशय में चर्चा करते हैं तो यह निरर्थक है और समाप्त हो चुका है (इब्रा.8:13)। यह इसलिए क्योंकि यह पुराने युग का रूपक है। विष्वास का सुसमाचार यीषु में आत्मा का नया युग है। व्यवस्था का समय अब समाप्त हो चुका है। देखिए विषेश षीर्शक : मूसा की व्यवस्था के प्रति पौलुस का दृश्टिकोण 13:9।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''उन सब की धार्मिकता के लिए जो विष्वास करते हैं''

एन आर एस वी ''ताकि उन तमाम लोगों के लिए धार्मिकता हो जो विष्वास करते हैं''

टी इ वी '' ताकि जो कोई विष्वास करे वह परमेष्वर के सामने सही ठहराया जाए''

एन जे बी '' ताकि जिस किसी के पास विष्वास हो वह धर्मी ठहराया जाए''

अध्याय 9–11 को एक ही साथ अनुवाद किया जाना चाहिए। परमेष्वर की श्रेश्ठता पर अध्याय 9 में बहुत ही ज़ोर दिया गया है जिसे अध्याय 10 में विष्वासियों की बुलाहट के तनाव से जोड़कर रखना चाहिए (रोमियों.10:4, 9, 11, 13; 3:22; 4:11, 16)।

परमेष्वर के प्रेम और छुटकारे के उद्‌देष्य की सार्वभौमिकता उत्प.3:15 में प्रस्तुत किया गया है और इसका दृढ़ता से प्रयोग उत्प. 12:3 और निर्ग.19:5–6 में किया गया है। भविश्यद्वक्ताओं ने अक्सर परमेष्वर के सारी सृश्टि से प्रेम और सारी मानवजाति को एक करने के उद्‌देष्य को प्रगट किया है। यह तथ्य कि एक ही परमेष्वर हैं और उन्होंने सारी मानवजाति को अपने ही स्वरूप में रचा है उद्धार के लिए सार्वभौमिक निमन्त्रण देता है। पर रहस्य यह है कि कोई भी बिना आत्मा की अगुवाई के इस का प्रतिउत्तर नहीं दे सकता (यूह.6:44, 65)। तब सवाल यह उठता है कि, ''क्या परमेष्वर सभी मनुश्यों को उद्धार की ओर लाते हैं?'' उत्तर यह है कि, ''हाँ!'' (यूह.3:16; 4:42; 1यूह.2:2; 4:14; 1तीमु.2:4; 2पत.3:9)। पाप पतन और षैतान के दिल दहला देने वाले विरोधाभास के कारण ही कुछ ''नहीं'' कहते हैं। जब पौलुस ने प्रचार किया तो कुछ यहूदियों ने प्रतिउत्तर दिया और कुछ ने नहीं; कुछ अन्यजातियों ने प्रतिउत्तर दिया और कुछ ने नहीं।

विष्वास के लिए यूनानी षब्द *पीस्टेउओ* का अनुवाद ''विष्वास'' और भरोसे में किया गया है। यह वर्तमानकाल वाक्य है जो लगातार विष्वास को प्रगट करता है। यह तथ्यों को ग्रहण करना नहीं है (धर्मषास्त्र, ऐतिहासिक विवरण, सुसमाचार की जानकारी) जो परमेष्वर के वरदान को मसीह द्वारा ग्रहण करता है। नया नियम एक वाचा है; परमेष्वर विचार रखते हैं और

आवष्यक प्रार्थमिक कदम उठाते हैं, परन्तु व्यक्ति को प्रारम्भिक विष्वास और पष्चाताप तथा बढ़ने वाले विष्वास और पष्चाताप से प्रतिउत्तर देना होगा। आज्ञाकारीता और धीरज महत्वपूर्ण है। मसीहीसमानता और सेवकाई लक्ष्य है।

विषेश षीर्शक : उद्धार के लिए प्रयोग किए गए यूनानी क्रिया पद वाक्य

उद्धार कोई उपज या परिणाम नहीं है, पर यह आपसी सम्बन्ध है। यह किसी के मसीह पर भरोसा करने से समाप्त नहीं होता; परन्तु तब यह षुरू ही होता है। यह आग के लिए बीमा नहीं है और नहीं यह स्वर्ग के लिए यात्रा पत्र है परन्तु यह मसीह की समानता में बढ़ने का जीवन है।

उद्धार पूर्ण किए हुए कार्य के समान

1) प्रेरित.15:11

2) रोमियों.8:24

3) 2तीमु.1:9

4) तीत.3:5

5) रोमियों.13:11

उद्धार होने की प्रक्रिया में

1) इफि.2:5, 8

उद्धार चल रही प्रक्रिया में

1) 1कुरि.1:18; 15:2

2) 2कुरि.2:15

उद्धार भविश्य में पूरा होने वाले के रूप में

1) रोमियों.5:9, 10; 10:9, 13

2) 1कुरि.3:15; 5:5

3) फिलि.1:28; 1थिस्स.5:8–9

4) इब्रा.1:14; 9:28

5) (मत्ती.10:22; 24:13; मरकुस.13:13 में प्रयोग किया गया है)

रोमियों.10:5–13

5 क्योंकि मूसा ने यह लिखा है, कि जो मनुष्य उस धार्मिकता पर जो व्यवस्था से है, चलता है, वह इसी कारण जीवित रहेगा।

6 परन्तु जो धार्मिकता विश्वास से है, वह यों कहती है, कि तू अपने मन में यह न कहना कि स्वर्ग पर कौन चढ़ेगा? (अर्थात् मसीह को उतार लाने के लिये!)

7 या अधोलोक में कौन उतरेगा? (अर्थात् मसीह को मरे हुओं में से जिलाकर ऊपर लाने के लिये!)

8 परन्तु क्या कहती है? यह, कि वचन तेरे निकट है, तेरे मुंह में और तेरे मन में है; यह वही विश्वास का वचन है, जो हम प्रचार करते हैं।

9 कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।

10 क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।

11 क्योंकि पवित्र शास्त्र यह कहता है कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा।

12 यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिये कि वह सब का प्रभु है; और अपने सब नाम लेनेवालों के लिये उदार है।

13 क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।

10:5

यह आयत लैव्य.18:5 की ओर संकेत करता है। इसका वायदा निष्चित है। यदि कोई व्यवस्था का पालन करेगा तो वह परमेष्वर को ग्रहण होगा (लूका.10:28; गला.3:12)। पर समस्या यह है कि रोमियों.3:9, 10–18, 19, 23; 5:18; 11:32 वास्तविकता को प्रगट करता है। सबने पाप किया है। जो प्राण पाप करता है उसे मर जाना चाहिए (उत्प.2:17; व्यव.30:18; यहे.18:4, 20)। पुरानी वाचा का मार्ग बन्द कर दिया गया है। यह मृत्यु दण्ड और श्राप बन चुका है (रोमियों.7:10; गला.3:13; कुलु.2:14)।

10:6–8

यह सैप्टूआजैन्ट में व्यव.30:11–14 की ओर संकेत करता है, जिसे पौलुस ने अपने उद्देष्य के लिए पुनः रचा है। यह मूलपाठ वास्तव में मूसा द्वारा व्यवस्था की और संकेत करते हुए कहा गया है परन्तु यहाँ पर यह यीषु के अवतरण, मृत्यु और पुनरूत्थान की ओर संकेत करता है (रोमियों.10:9; इफि.4:9–10)। पौलुस का तर्क यह है कि उद्धार विष्वास द्वारा मसीह में मिल सकता है (व्यव.30:15–20)। यह आसान है, यह मिल सकती है, यह सभी के लिए है, जो मूसा की व्यवस्था से बहुत ही अलग है।

''परन्तु जो धार्मिकता विश्वास से है,
वह यों कहती है''

पौलुस ने पहले ''पाप'' और ''अनुग्रह'' को व्यक्ति रूप दिया और अब ''विष्वास द्वारा धार्मिकता'' को व्यक्तिरूपक करके प्रगट करते हैं। यह रोमियों.10:6, 7 और 8 में पुराने नियम के भागों के लेखन से प्रगट है।

''चढ़ेगा...उतरेगा''

मनुश्यों को मसीह की खोज में जाने की आवष्यकता नहीं है; परमेष्वर ने उन्हें सार्वजनिक रूप से सब के लिए भेजा है। मनुश्यों की खोज आवष्यक नहीं है।

''मन''

मन स्वयं को प्रस्तुत करता है। देखिए विषेश षीर्शक 1:24।

10:9

''यदि''

यह तृतिय श्रेणी षर्तिया षब्द है जिसका अर्थ है प्रभावषाली भावी कार्य। आयत 9 विष्वास के संदेष का विशय (*होटी)* है।

''अंगीकार''

इस षब्द *होमोलोगेओ* का अर्थ है ''कहना'' या ''वही या समान'' यह ''सार्वजनिक रूप से मान लेना'' (जोर से कहना कि दूसरे सुन सकें)। सार्वजनिक रूप से मसीह का अंगीकार करना बहुत ही महत्वपूर्ण है (मत्ती.10:32; लूका.12:8; यूह.9:22; 12:42; 1तीमु. 6:12; 1यूह.2:23; 4:15)। आरम्भिक कलीसिया का सार्वजनिक अंगीकरण बपतिस्मा था। व्यक्ति को मसीह में अपने विष्वास को यूँ प्रगट करना होता था ''मैं विष्वास करता हूँ कि यीषु ही प्रभु हैं''। देखिए दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : अंगीकार

क. अंगीकार या स्वीकार करने के लिए एक ही मूल के दो यूनानी षब्द हैं, *होमोलेगेओ* और *एक्सोमोलोगेओ*। याकूब मिश्रित षब्द प्रयोग करते हैं *होमो*, समान या वही; *लेगो*, कहना; और *एक्स*, से बाहर। इसका आधारभूत अर्थ है वही कहना जिससे सहमत हों। *एक्स* ने इसमें सार्वजनिक तौर पर मान लेने के विचार को जोड़ दिया।

ख. इस षब्द समूह के अग्रेज़ी अनुवाद हैं

1) प्रषंसा

2) सहमत होना

3) घोशणा करना

4) स्वीकार करना

5) अंगीकार करना

ग. इस षब्द के प्रगट रूप से दो विपरीत प्रयोग हैं

1) प्रषंसा करना (परमेष्वर की)

2) पाप स्वीकार करना

इसका उत्थान षायद परमेष्वर की पवित्रता और अपनी पापपूर्णता के बारे में मनुश्य के विचार से हुआ है। एक सत्य को मान लेना दोनों को मान लेना है।

घ. नए नियम में इस षब्द समूह का प्रयोग

1) वायदा करना (मत्ती.14:7; प्रेरित.7:17)

2) किसी बात से सहमत होना (यूह.1:20; प्रेरित.24:14; इब्रा.11:13)

3) प्रषंसा करना (मत्ती.11:25; रोमियों.14:11; 15:9)

4) से सम्मति करना

(क) व्यक्ति (मत्ती.10:32; यूह.9:22; 12:42; रोमियों.10:9; फिलि.2:11; 1यूह.2:23; प्रका.3:5)

(ख) सत्य (प्रेरित.23:8; 2कुरि.11:13; 1यूह.4:2)

5) सार्वजनिक रूप से घोशणा करना (कानूनी विचार का उत्थान धार्मिक पुश्ठि के रूप में, प्रेरित.24:14; 1तीमु.6:13)

(क) दोश के दाखिले के बिना (1तीमु.6:12; इब्रा.10:23)

(ख) दोश के दाखिले के साथ (मत्ती.3:6; प्रेरित.19:18; इब्रा.4:14; याक.5:16; 1यूह.1:9)

एन ए एस बी ''यीषु को प्रभु करके''

एन के जे वी ''प्रभु यीषु''

एन आर एस वी, टी इ वी, जे बी ''यीषु ही प्रभु हैं''

आरम्भिक कलीसिया के विष्वास की घोशणा और बपतिस्मा कार्य का यह धर्मषास्त्रीय विशय था। ''प्रभु'' का प्रयोग यीषु के ईष्वरत्व को साबित करता है (योए.2:32; प्रेरित.2:32–33, 36; फिलि.2:6–11) जबकि दिया गया नाम ''यीषु'' ऐतिहासिक मनुश्यत्व को साबित करता है (1यूह.4:1–6)।

विषेश षीर्शक : प्रभु का नाम

यह नए नियम का अक्सर प्रयोग किया जाने वाला वाक्यांष है जो कलीसिया में त्रिएक परमेष्वर की व्यक्तिगत उपस्थिति और कार्यरत सामर्थ को प्रगट करता है। यह कोई जादूई नुसखा नहीं है पर परमेष्वर के चरित्र के लिए निवेदन है।

अक्सर यह वाक्यांष यीषु को प्रभु के रूप में सम्बोधित करता है (फिलि.2:11)

1) बपतिस्मे के समय यीषु में एक के विष्वास को स्वीकार करना (रोमियों.10:9–13; प्रेरित.2:38; 8:12, 16; 10:48; 19:5; 22:16; 1कुरि.1:13, 15; याक.2:7)

2) दुश्टआत्मा निकालते समय (मत्ती.7:22; मरकुस.9:38; लूका.9:49; 10:17; प्रेरित.19:13)

3) चंगाई के समय (प्रेरित.3:6, 16; 4:10; 9:34; याक.5:14)

4) सेवकाई के कार्य में (मत्ती.10:42; 18:5; लूका.9:48)

5) कलीसिया में अनुषासन के समय (मत्ती.18:15–20)

6) अन्यजातियों को प्रचार करते समय (लूका.24:47; प्रेरित.9:15; 15:17; रोमियों.1:5)

7) प्रार्थना में (यूह.14:13–14; 15:2, 16; 16:23; 1कुरि.1:2)

8) मसीहत को सम्बोधित करने का तरीका (प्रेरित.26:9; 1कुरि.1:10; 2तीमु.2:19; याक.2:7; 1पत.4:14)

एक प्रचारक, सेवक, सहायक, चगां करने वाले और दुश्टआत्माओं को निकालने वाले इत्यादि के रूप में जो कुछ भी हम करते हैं वो उनके चरित्र, उनकी सामर्थ, उनके द्वारा उपलब्ध और उनके नाम में करते हैं।

''अपने हृदय में विष्वास करो''

यह वाक्यांष अंगीकार के सदृष्य है, और विष्वास के दो विचारों को व्यक्त करता है। बाइबलीय षब्द ''विष्वास'' (पीसटेस) में षामिल है (1) व्यक्तिगत भरोसा (इब्रानी), (2) बुद्धिमता का विशय (यूनानी) और (3) स्वेच्छा से किया हुआ वायदा जो आगे बढ़ रहा है (व्यव.30:20)।

षब्द ''हृदय'' इसके पुराने नियम के समान ही पूरे व्यक्ति को प्रस्तुत करता है। पौलुस इस संदर्भ में ''मुँह'' और ''हृदय'' का प्रयोग व्यव.30:14 के आयत 8 में प्रयोग किए जाने के कारण करते हैं। यह इस नियम को स्थापित करने के लिए नहीं दिया गया कि एक व्यक्ति को उद्धार पाने के लिए जोर से प्रार्थना करनी चाहिए।

10:10

''धार्मिकता के लिए''

सभी विष्वासियों के लिए परमेष्वर का उद्देष्य एक दिन स्वर्ग ही नहीं है पर अभी मसीहसमानता भी है। पहले से ही चुने जाने के बारे में दूसरा दृढ़ भाग है, इफि.1:3–14, जो आयत 4 में इस सत्य को बलपूर्वक साबित करता है। विष्वासियों को पवित्र और निर्दोश होने के लिए चुना गया है। चुनाव केवल एक सिद्धान्त ही नहीं है, पर यह एक जीवनषैली है (व्यव.30:15–20)।

आयत 10 महान आज्ञा के दो तरफा ज़ोर को प्रगट करता है (मत्ती.28:19–20), उद्धार (चेले बनाओ) और धार्मिकता (उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ)। यह समानता इफि.2:8–9 में भी पाई जाती है (परमेष्वर के अनुग्रह से मसीह द्वारा मुफ्त उद्धार) और इफि.2:10 में ''भले कामों'' के लिए बुलाहट। परमेष्वर की इच्छा यह है कि मनुश्य उनके ही स्वरूप में हों।

10:11

यह यषा.28:16 से लिया गया लेख है जिसमें पौलुस ''जो कोई'' जोड़ते हैं। यषायाह में यह मसीहा पर विष्वास को प्रगट करता है, परमेष्वर के कोने का पत्थर (रोमियों.9:32–33)। जैसे कि रोमियों.9 परमेष्वर की श्रेश्ठता को उजागर करता है, वैसे ही अध्याय 10 मसीह को प्रतिउत्तर देने की व्यक्ति की आवष्यकता को उजागर करता है। सार्वभौमिक अवसर देखा जा सकता है 10:4 के ''हरेक'', 10:11, 13 के ''जो कोई'' और 10:12 के ''सभी'' (दो बार) में। यह अध्याय 9 के पहले से ही चुने हुए के सिद्धान्त का धर्मषास्त्रीय रूप से बराबरी का कार्य है।

''उन पर विष्वास करो''

विष्वास करना केवल षुरूवाती प्रतिउत्तर नहीं है पर यह उद्धार के लिए चलते रहने की अति आवष्यक माँग है। यह केवल सच्ची धर्मषास्त्रीय षिक्षा ही नहीं है (सुसमाचार के सत्य) जो बचाता है, पर व्यक्तिगत सम्बन्ध है (सुसमाचार व्यक्ति) जिसका परिणाम भक्तिपूर्ण जीवनषैली है (सुसमाचार जीना)। आसान विष्वास से सावधान जो सत्य और जीवन को अलग करता है। विष्वास जो बचाता है वही विष्वास है जो आगे बढ़ाता और परिवर्तन लाता है। अनन्त जीवन में देख सकने वाले चरित्र हैं। देखिए विषेश षीर्शक : विष्वासी 4:5।

एन ए एस बी, टी इ वी ''निराष न हो''

एन के जे वी, एन आर एस वी ''उन्हें षर्मिन्दा नहीं होने दिया जाएगा''

जे बी ''षर्म के लिए कोई कारण नहीं होगा''

जो मसीह में भरोसा (विष्वास) रखते है वे षर्मिन्दा नहीं होंगे। यह यषा.28:16 से लिया गया लेख है, जो रोमियों.9:23 में पौलुस के प्रस्तुतिकरण का कुन्जी आयत है।

10:12

*''यहूदियों और यूनानियों के बीच
कोई भेद नहीं है''*

यह नई वाचा का मुख्य विशय है (रोमियों.3:22, 29; गला.3:28; इफि.2:11–3:13; कुलु.3:11)। एक परमेष्वर ने अपने ही कार्य से अपनी खोई हुई सृश्टि को छुड़ाया है। उनकी इच्छा है कि सारी मानवजाति जो उनके स्वरूप में हैं उनके पास आएं और उनके समान हों। सभी उनके पास आएं।

सुसमाचार का सार्वभौमिक चरित्र (''सभी'' का प्रयोग आयत 12 में दो बार किया गया है) दो तरह से काटता है (1) यहूदियों और अन्यजाजियों में कोई भेद नहीं है; सभी खोए हुए हैं (रोमियों.3:9, 19, 22–23; 11:32) और (2) यहूदियों और अन्यजाजियों में कोई भेद नहीं है; सभी उद्धार पा सकते हैं। सुसमाचार सभी मानवीय रूकावटों को हटा देता है (योए.2:28–29; 1कुरि.12:13; गला.3:28; कुलु.3:11), कम से कम उद्धार के क्षेत्र में।

''समृद्धि की बहुतायत''

जब पौलुस मसीह में परमेष्वर के अनुग्रह के बारे में सोचते हैं तो इसके लिए वह अक्सर ''समृद्धि या धन'' षब्द का प्रयोग करते हैं (रोमियों.2:4; 9:23; 11:12{दो बार}, 33; 1कुरि.1:5; 2कुरि.8:9; इफि.1:7, 18; 2:7; 3:8, 16; फिलि.4:19; कुलु.1:27; 2:2)।

10:13

यह योए.2:32 के लिया गया प्रसिद्ध लेख है जिसके पौलुस के प्रयोग में दो ज़ोर हैं (1) योएल में यहोवा का नाम प्रयोग किया गया है, रोमियों में पौलुस और प्रेरित.2:21 में पतरस यीषु का नाम प्रयोग करते हैं (ध्यान दीजिए, यूह.12:41 और यषा.6:9–10; फिलि.2:9 और यषा.45:22–25; रोमियों.9:33 और यषा.8:13–14); और (2) योएल मे ''उद्धार'' षारीरिक छुटकारे को प्रगट करता है, और रोमियों में यह आत्मिक क्षमा और अनन्त उद्धार को प्रगट करता है।

पुराने नियम का ''नाम लेने'' का विचार आराधना में सार्वजनिक रूप से विष्वास का अंगीकार है। यही प्रेरित.7:5–9; 9:14, 21; 22:16; 1कुरि.1:2; 2तीमु.2:22 में भी नज़र आता है। देखिए विषेश षीर्शक : बुलाए हुए 1:6।

विषेश षीर्शक : यीषु नासरी

कौन से यीषु इस बात को अभिहित करने के लिए नए नियम में कई यूनानी षब्द प्रयोग किए गए हैं।

क. नए नियम के षब्द

1) नासरत – गलील का षहर (लूका.1:26; 2:4, 39, 51; 4:16; प्रेरित.10:38)। इस षहर के बारे में साथ के लेखों में कोई ज़िक्र नहीं है पर बाद के लेखों में यह पाया जाता है।

यीषु का नासरत से होना कोई प्रषंसा की बात नहीं थी (यूह.1:46)। यीषु के क्रूस पर जो लेख था जिसमें यह नाम लिखा हुआ था वह यहूदियों का अपमान का चिन्ह था।

2) *नाज़ारेनॉस* – यह भी भौगोलिक भाग को प्रस्तुत करता है (लूका.4:34; 24:19)

3) *नाज़ोरायोस* – षायद षहर को प्रगट करता है, पर षायद इब्रानी मसीहानिक षब्द ''डाली'' का प्रयोग भी हो सकता है (*नेटज़र,* यषा.4:2; 11:1; 53:2; यिर्म.23:5; 33:15; जक.3:8; 6:12)। लूका इसका प्रयोग यीषु के लिए लूका.18:37 और प्रेरित. 2:22; 3:6; 4:10; 6:14; 22:8; 24:5; 26:9 में करते हैं।

ख. नए नियम के बाहर के ऐतिहासिक प्रयोग। इस अभिहित के और भी ऐतिहासिक प्रयोग हैं।

1) यह यहूदियों के झूठे समूह (मसीहत से पहले) को प्रस्तुत करता है।

2) यहूदियों के बीच मसीहियों का वर्णन करने के लिए यह प्रयोग किया जाता था (प्रेरित.24:5, 14; 28:22)।

3) सिरियन (अरामीक) कलीसिया में विष्वासियों को व्यक्त करने के लिए हमेषा यह षब्द प्रयोग किया जाता था। ''ख्रिश्टियन'' षब्द यूनानी कलीसिया में विष्वासियों के लिए प्रयोग किया जाता था।

4) यरूषलेम के पतन के कुछ समय बाद, फरीसियों ने स्वयं को जमानिआ में इकट्ठा किया और कलीसिया और आराधनालयों के बीच अलगाव लाए। एक उदाहरण जिसके द्वारा मसीहियों के विरूद्ध श्राप का प्रयोग किया गया वो बेराकोथ 28[ख]–29[क] के ''18वीं सदी के आषीर्वादों'' में मिलता है जिसमें विष्वासियों को ''नासरी'' कहा गया है।

''नासरी और झूठे एक ही क्षण में गायब हो जाएं, वे जीवन की पुस्तक से मिटा दिए जाएं और विष्वासयोग्यों के साथ कभी लिखे न जाएं।''

ग. लेखक का विचार

इस षब्द की कई षब्द रचनाओं से मैं आष्चर्यचकित हूँ, जबकि मैं जानता हूँ कि यह पुराने नियम में अनसुना नहीं है क्योंकि ''यहोषू'' में इब्रानी में अलग–अलग षब्द रचना है। फिर भी इस कारण (1) मसीह से सम्बन्धित षब्द ''डाली'' से करीब का सम्बन्ध होने के कारण; (2) नकारात्मक भाव से मिले होने के कारण; (3) साथ के साहित्यों में गलील के षहर नासरत के बारें में कम या बिलकुल भी जानकारी न होने के कारण मैं इसके वास्तविक अर्थ को तलाषने में असमर्थ हूँ; और (4) यह भविश्य के विचार में दुश्टआत्मा के मुँह से निकला है (''क्या तू हमें नाष करने आया है?'')।

इस षब्द समूह के विस्तारपूर्ण अध्ययन के लिए और सम्बन्धित पुस्तकों की जानकारी के लिए देखिए कॉलीन ब्राऊन द्वारा सम्पादित, न्यू इन्टरनैष्नल ड़ीक्सनरी ऑफ न्यू टैस्टामैन्ट थियोलॉजी, भाग.2, पृश्ठ.346।

रोमियों.10:14–15

14 फिर जिस पर उन्हों ने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम क्योंकर लें? और जिस की नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें?

15 और प्रचारक बिना क्योंकर सुनें? और यदि भेजे न जाएं, तो क्योंकर प्रचार करें? जैसा लिखा है, कि उन के पाँव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं।

10:14—15

पुराने नियम के लेखों के बाद क्रमानुसार कुछ प्रष्न हैं जो यह प्रगट करते हैं कि इस्राएल ने कभी भी यहोवा के संदेष या संदेषक को ग्रहण नहीं किया (नेह.9; प्रेरित.7)। परमेष्वर संदेषवाहकों को भेजते हैं (भविश्यद्वक्ता, प्रेरित, प्रचारक, षिक्षक, सुसमाचार प्रचारक)। यह संदेषवाहक इस जरूरतमन्द संसार के लिए परमेष्वर की आषीश हैं। जैसे परमेष्वर बड़े अनुग्रह से सुसमाचार प्रचारकों को भेजते हैं यह सुनने वालों की ज़िम्मेदारी है कि वह सही तरीके से उनके संदेष को ग्रहण करे। पौलुस इस विचार को यषा.52:7 के द्वारा प्रमाणित करते हैं। पौलुस सुसमाचार प्रचारकों को सम्बोधित करने के लिए इस पुराने नियम के भाग की व्यख्या करते हैं।

बचाने वाले विष्वास में कई बातें हैं (1) संदेष जिस पर विष्वास करना है; (2) व्यक्ति जिसे ग्रहण करना है; (3) षुरूवाती और उन्नत होने वाला पष्चाताप और विष्वास प्रतिउत्तर; (4) आज्ञाकारीता का जीवन ; और (5) धीरज (देखिए नोट 1:5)।

10:15

यह रोमियों का महान आदेष है। उद्धार सुसमाचार सुनने से और सुसमाचार को ग्रहण करने से आता है। प्रचारक इसलिए भजे गए हैं ताकि ''सभी'' उद्धार पा सकें।

रोमियों.10:16—17

16 परन्तु सब ने उस सुसमाचार पर कान न लगाया : यशायाह कहता है, कि हे प्रभु, किस ने हमारे समाचार की प्रतीति की है?

17 सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।

10:16

फिर से पौलुस पुराने नियम के भविश्यद्वाणी लेख का प्रयोग यीषु मसीह के सुसमाचार को प्रगट करने के लिए करते हैं जो वास्तव में इस्राएल के लिए यहोवा के संदेष को प्रगट करता है। जैसे पुराने नियम के यहूदियों ने परमेष्वर के संदेष का तिरस्कार किया ठीक उसी तरह से पौलुस के समय के यहूदियों ने भी इसको नकारा। यह यषा.53:1 का लेख है परन्तु यह धर्मषास्त्रीय तौर पर यषा.6:9—13 में इस्राएल द्वारा परमेष्वर के संदेष को नकारने से भी सम्बन्धित है।

10:17

सुसमाचार पहले केवल एक संदेष है (गला.3:2)। पर यह संदेष व्यक्तिगत कथन बन जाता है ''मसीह का कथन'' (कुलु. 3:15—16)।

''मसीह के षब्द या कथन''

संदर्भ के कारण यह मसीह के बारे में संदेष को प्रगट करता है जिसका कि प्रचार किया जाता है। सुसमाचार प्रचार परमेष्वर का तरीका है मसीह में अपने अवसर को संसार के सामने रखने का।

यहाँ पर प्राचीन यूनानी हस्तलेख में भिन्नता है : (1) एम एस एस पी[46], बी, सी, डी में लिखा है ''मसीह के षब्द या कथन'' जबकी (2) एम एस एस, ए, डी[ग], के, पी में लिखा ''परमेष्वर के षब्द या वचन''। पहला बहुत ही असामान्य है (कुलु.3:16) और इसलिए षायद वास्तव में (यह मूलपाठ के विरोधाभास का यह मुख्य कारण है)। यू बी एस[4] इसे ''ए'' श्रेणी प्रदान करता है। यह दूसरी जगह है नए नियम में जहाँ यह षब्द प्रयोग किया गया है। दूसरा, ''परमेष्वर के षब्द या वचन'' बहुत बार प्रयोग किया गया है (यूह.3:34; इफि.6:17; इब्रा.6:5, 11:3)।

रोमियों.10:18–21

18 परन्तु मैं कहता हूं, क्या उन्होंने नहीं सुना? सुना तो सही क्योंकि लिखा है कि उन के स्वर सारी पृथ्वी पर, और उन के वचन जगत की छोर तक पहुंच गए हैं।

19 फिर मैं कहता हूं। क्या इस्राएली नहीं जानते थे? पहले तो मूसा कहता है, कि मैं उन के द्वारा जो जाति नहीं, तुम्हारे मन में जलन उपजाऊंगा, मैं एक मूढ़ जाति के द्वारा तुम्हें रिस दिलाऊंगा।

20 फिर यशायाह बड़े हियाव के साथ कहता है, कि जो मुझे नहीं ढूंढ़ते थे, उन्हों ने मुझे पा लियाः और जो मुझे पूछते भी न थे, उन पर मैं प्रगट हो गया।

21 परन्तु इस्राएल के विषय में वह यह कहता है कि मैं सारे दिन अपने हाथ एक आज्ञा न माननेवाली और विवाद करनेवाली प्रजा की ओर पसारे रहा।

10:18

यह आयत इस बात को प्रमाणित करता है कि अधिकतर यहूदियों ने संदेष सुना है और वह इसे नकारने के लिए ज़िम्मेदार हैं। समस्या अज्ञानता नहीं है पर अविष्वास है।

पौलुस भ.सं.19:4 के लेख का प्रयोग करते हैं। इस भ.सं के 1–6 आयत प्राकृतिक प्रकाषन को प्रस्तुत करते हैं, जो कि परमेष्वर सृष्टि के द्वारा बात कर रहे हैं (रोमियों.1–2)। पौलुस बदलते हैं (1) सर्वव्यापि गवाह (''पूरी पृथ्वी में'') और (2) संदेष को पहुँचाने वाली खामोष आवज़ से सुसमाचार प्रचारक (प्रेरित, भविश्यद्वक्ता, सुसमाचार प्रचारक, पासबान/रखवाले, और षिक्षक, इफि.4:11), जो विषेश प्रकाषन को प्रगट करता है (भ.सं.19:8–14)। प्रमुख विचार यह है कि सुसमाचार संदेष पौलुस के समय के पहचाने गए संसार में प्रचार किया गया (यूनानी–रोमी संसार)। पौलुस रब्बीयों के अनुवाद की विधि का प्रयोग करते हैं; वे पुराना नियम के वास्तविक संदर्भ को बदल देते हैं अपने धर्मषास्त्रीय वाद–विवाद के उद्देष्य के लिए। यह भी कहना अति आवष्यक है कि पौलुस द्वारा पुराने नियम का प्रयोग बाकी प्रेरितों के समान ही अद्वितिय और पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित है (2पत.1:20–21)। आज के विष्वासी पवित्र आत्मा के प्रकाषन में नए नियम के लेखकों के अनुवाद के तरीकों को पुनः रच नहीं सकते।

10:19–20

यहूदियों ने संदेष सुना था यहाँ तक कि मूसा से। यहूदियों ने सुना था और परमेष्वर के साथ किस प्रकार सही हो सकते हैं में षामिल विष्वास संदेष को समझ सकते थे।

इन आयतों में, परमेष्वर अपनी वाचा के लोगों से बातें कर रहे हैं अन्यजातियों को षामिल करने के विशय में। यह आयत 19 में व्यव.32:21 के लेख को प्रयोग करने के द्वारा और आयत 20–21 में यषा.65:1–2 का प्रयोग करने के द्वारा किया गया है। चौंका देने वाली अन्यजातियों को षामिल करने की बात का उद्देष्य यहूदियों को विष्वास के लिए उत्साहित करना था (रोमियों.11:11, 14)।

10:21 यह वाचा के लोगों द्वारा परमेष्वर के त्याग के बारे में सैप्टूआजैन्ट से यषा.65:2 से लिया गया लेख है (यषा.65:1–7)। परमेष्वर विष्वासयोग्य थे; इस्राएल विष्वासघाती था। उनका विष्वासघात भूतकाल में उन प्रत्येक के ऊपर अस्थाई न्याय लाया पर मसीह में विष्वास करके प्राप्त होने वाली धार्मिकता को नकारना अनन्त दण्ड लाएगा।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) यदि परमेष्वर का चुनाव इतना महत्वपूर्ण है तो पौलुस 10:1 में इस्राएल के लिए क्यों प्रार्थना करते हैं? 10:9–13 में मनुश्य के प्रतिउत्तर पर इतना ज़ोर क्यों दिया गया है?

2) 10:4 का क्या अर्थ है? ''क्या मसीह ने व्यवस्था का अन्त कर दिया है?''

3) 10:9–10 में विष्वास में षामिल तत्वों की सूची बनाईए।

4) पौलुस क्यों अक्सर पुराने नियम के लेखों का प्रयोग करते हैं? यह प्राथमिक तौर से किस प्रकार रोम की अन्यजातिय कलीसिया से सम्बन्धित है।

5) 10:11–13 किस प्रकार अध्याय 9 से सम्बन्धित है?

6) 10:14–15 किस प्रकार पूरे संसार के मिषन या सुसमाचार प्रचार के लक्ष्य से सम्बन्धित है?

7) अध्याय 10 में किस प्रकार मनुश्य की स्वतंत्र इच्छा को मनुश्य के उद्धार के भाग के रूप में प्रगट किया गया है?

रोमियों – 11

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
इस्राएल का बचा हुआ अंष	इस्राएल को नकारना पर पूरी तरह से नहीं	इस्राएल को नकारना पर अन्तिम नहीं	इस्राएल पर परमेष्वर की दया	इस्राएल का बचा हुआ अंष
11:1–10	11:1–10	11:1–10	11:1–6	11:1–10
			11:7–10	
अन्यजातियों का उद्धार	इस्राएल को नकारना पर अन्तिम नहीं			यहूदी भविश्य में पुनः स्थापित किए जाऐंगे
11:11–12	11:11–36	11:11–12	11:11–12	11:11–15
			अन्यजातियों का उद्धार	
11:13–16		11:13–16	11:13–15	यहूदी अब भी चुने हुए लोग
		जैतून के पेड़ का रूपक	11:16–18	11:16–24
11:17–24		11:17–24		
			11:19–24	
इस्राएल का छुटकारा		पूरा इस्राएल उद्धार पाएगा	परमेष्वर की दया सभी पर	यहूदियों का परिवर्तन
11:25–32		11:25–32	11:25–32	11:25–27

				11:28—29
				11:30—32
			परमेष्वर की प्रषंसा	परमेष्वर की दया और बुद्धि के लिए गीत
11:33—36		11:33—36	11:33—36	11:33—36

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का ह्रदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद
2) दूसरा अनुच्छेद
3) तीसरा अनुच्छेद
4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि

क. अध्याय 11 चुनाव और सुसमाचार के बीच के विरोधाभासात्मक सम्बन्ध की चर्चा को आगे बढ़ाता है। पुराने नियम का चुनाव सेवा के लिए था, जबकी नए नियम का चुनाव उद्धार के लिए है (अपना षब्दकोश देखिए)। एक विचार में विष्वासी परमेष्वर के परिवार (नया नियम) और दास होने के लिए बुलाए गए हैं (पुराना नियम)। चुनाव दोनों है सहभागिता में और व्यक्तिगत, सकारात्मक और नकारात्मक (याकूब/इस्राएल–एसाव/एदोम; मूसा/फिरौन)। अन्त में तनाव केवल परमेष्वर की श्रेश्ठता और मनुश्य की स्वतंत्र इच्छा के बीच नहीं है पर परमेष्वर के चरित्र में है। अध्याय 9–11 बार–बार परमेष्वर के अनुग्रह और पतित मानवजातिके विद्रोह पर ज़ोर डालते हैं। परमेष्वर विष्वासयोग्य हैं और मानव विष्वासहीन है।

चुनाव कुछ लोगों को निकाल देने का सिद्धान्त नहीं है पर आषा की नींव है, उन लोगों के लिए सुरक्षा और भरोसा है जिन्होंने वाचा बाँधने वाले परमेष्वर के पुत्र और वायदों का प्रतिउत्तर दिया है।

ख. अध्याय 9 में पौलुस ने परमेष्वर की श्रेश्ठता और स्वतंत्रता को साबित किया है। यहाँ तक कि वाचा सम्बन्ध में भी परमेष्वर स्वतंत्र हैं। अध्याय 10 में पौलुस यह प्रमाणित कर रहे हैं कि यहूदी परमेष्वर के वायदों और वाचा को ग्रहण करने और नकारने के लिए स्वतंत्र हैं। क्योंकि उनके बारे में यह साबित हो चुका है कि वे विष्वासघाती है और उन्होंने परमेष्वर के वायदों और

वाचा को नकार दिया है एक तरह से वे परमेष्वर के द्वारा त्याग दिए गए हैं। अध्याय 11 में पौलुस परमेष्वर की विष्वासयोग्यता को प्रमाणित करेंगे, इस्राएल के विष्वासघाती होने के बावजूद भी (व्यव.8)।

ग. भूतकाल में भी वर्तमान की तरह ही यहूदी बचे हुए लोग परमेष्वर के मसीहा पर विष्वास करते थे। पौलुस स्वयं भी इसका उदाहरण हैं। कुछ अविष्वासी यहूदियों के त्याग ने ही विष्वास करने वाल अन्यजातियों को षामिल होने दिया। अन्यजातियों के षामिल होने का परिणाम होगा (1) परमेष्वर के लोगों का पूरा होना; या (2) परमेष्वर के चुने हुओं की पूरी संख्या, यहूदी और अन्यजातिय दोनों। अन्यजातियों का षामिल किया जाना इस्राएलियों को प्रोत्साहन देगा कि वे परमेष्वर के मसीह, यीषु पर भरोसा करें।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.11:1–6

1 इसलिये मैं कहता हूं, क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग दिया? कदापि नहीं; मैं भी तो इस्राएली हूं: इब्राहीम के वंश और बिन्यामीन के गोत्र में से हूं।

2 परमेश्वर ने अपनी उस प्रजा को नहीं त्यागा, जिसे उस ने पहले ही से जाना : क्या तुम नहीं जानते, कि पवित्र शास्त्र एलिय्याह की कथा में क्या कहता है; कि वह इस्राएल के विरोध में परमेश्वर से विनती करता है।

3 कि हे प्रभु, उन्होंने तेरे भविष्यद्वक्ताओं को घात किया, और तेरी वेदियों को ढ़ा दिया है; और मैं ही अकेला बच रहा हूं, और वे मेरे प्राण के भी खोजी हैं।

4 परन्तु परमेश्वर से उसे क्या उत्तर मिला कि मैं ने अपने लिये सात हजार पुरूषों को रख छोड़ा है जिन्हों ने बाअल के आगे घुटने नहीं टेके हैं।

5 सो इसी रीति से इस समय भी, अनुग्रह से चुने हुए कितने लोग बाकी हैं।

6 यदि यह अनुग्रह से हुआ है, तो फिर कर्मों से नहीं, नहीं तो अनुग्रह फिर अनुग्रह नहीं रहा।

11:1

''क्या परमेश्वर ने
अपनी प्रजा को त्याग दिया?''

यह प्रष्न उत्तर ''नहीं'' में चाहता है। पौलुस इस प्रष्न का उत्तर 11:1[ख]–10 में देते हैं। यह भाग पौलुस के पिछले तर्क से जुड़ा होना चाहिए। अध्याय 9–11 एक ही लेखन भाग है, साबित किया हुआ तर्क।

यह ध्यान देने योग्य है कि षुरूवाती यूनानी पापीरस हस्तलेख पी[46] और एफ और जी में ''उत्तराधिकारी'' लिखा है ''प्रजा'' के स्थान पर जो कि सैप्टूआजैन्ट के भ.सं.94:14 से लिया गया है।

''कदापि नहीं''

यह काल्पनिक विरोधी के प्रष्न को नकारने का पौलुस का तरीका है (रोमियों.3:4, 6, 31; 6:2, 15; 7:7, 13; 9:14; 11:1, 11)।

''मैं भी इस्राएली हूँ''

पौलुस यहूदी विष्वासियों के बचाए गए अंष के रूप में साबित करने के स्वयं को एक उदाहरण के तौर पर प्रयोग करते हैं। पौलुस के बाकी यहूदी पृश्ठभूमी के लिए देखिए फिलि.3:5।

11:2

''परमेष्वर ने अपनी उस प्रजा को नहीं त्यागा''

यह षायद भ.सं.94:14 की ओर संकेत है (व्यव.31:6; 1षमू.12:22; 1राजा.6:13; विलाप.3:31–32)। यह आयत 1 के सवाल का निष्चित उत्तर है।

''जिन्हें वह पहले से जानते हैं''

यह परमेष्वर द्वारा इस्राएल के चुनाव को प्रगट करता है। देखिए नोट 8:29। यह तर्क को वापस अध्याय 9 में लेकर जाता है जैसे आयत 4–6। कुन्जी इस्राएल का कार्य नहीं पर परमेष्वर का चुनाव है। परमेष्वर अपने ही अस्तित्व के कारण अपने वायदों के प्रति विष्वासयोग्य हैं, इस्राएल के कार्यों के कारण नहीं (यहे.36:22–32)।

''पवित्र षास्त्र कहता है''

यह 1राजा.19:10 के एलिय्याह के ईज़ेबेल के सामने से भाग जाने के वृतान्त की ओर संकेत करता है जिसे रोमियों.11:3 में प्रयोग किया गया है।

11:4

''मैंने अपने लिए 7000 पुरूशों को रख छोड़ा है''

''अपने लिए'' षब्द *मैसोरेटीक* इब्रानी लेख के 1राजा,19:18 में नहीं है (पौलुस एम टी और सैप्टूआजैन्ट के लेख का प्रयोग नहीं करते) पर यह पौलुस द्वारा जोड़ा गया है ताकि परमेष्वर के चुनाव पर ज़ोर डाल सकें। 1राजा.19:18 में विष्वासयोग्य बचाए गए अंष परमेष्वर के चुनाव को प्रगट करते हैं न कि उनके द्वारा बाअल की आराधना के त्याग को।

जो बात पौलुस यहाँ कहना चाहते हैं वह यह है कि एलिय्याह के समय में विष्वासहीन और मूर्तिपूजक इस्राएल के बीच भी कुछ विष्वासी समूह था। पौलुस के समय में भी विष्वास करने वाले कुछ बचाए गए यहूदी हैं। सभी युगों में कुछ यहूदियों ने विष्वास के द्वारा प्रतिउत्तर दिया है अपने ही कार्यों के द्वारा नहीं। पौलुस प्रमाणित करते हैं कि ये यहूदी परमेष्वर की दया और करूणा के द्वारा उत्साहित किए गए हैं (रोमियों.11:5–6)।

''बाअल को''

यह स्त्रीलिंग विभक्ति का प्रयोग किया गया है पुरूश नाम के साथ। यह इसलिए है क्योंकि यहूदी स्त्रीलिंग इब्रानी क्रिया ''षर्म'' *(बोसेथ)* का प्रयोग अन्यजातियों के देवताओं के नाम के साथ करते थे उनका मज़ाक उड़ाने के लिए।

11:5–6

यह कुन्जी आयत हैं। ये पुराने नियम नियम के भूतकाल के कार्यों को वर्तमान परिस्थिति से जोड़ते हैं। जोड़ है दया से परमेष्वर का चुनाव (रोमियों.9:15, 16, 18; 11:30, 31, 32)। परमेष्वर का अनुग्रह प्राथमिक है पर मनुश्य का विष्वास आवष्यक है (मरकुस. 1:15; प्रेरित.3:16, 19; 20:21), यह किसी भी तरह से मनुश्यों की श्रेश्ठता पर आधारित नहीं है (इफि.2:8–9; 2तीमु.1:9; तीत.3:5)। यह सत्य पौलुस के 9–11 अध्यायों के तर्क में बहुत ही महत्वपूर्ण हैं।

11:6

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। उद्धार परमेष्वर के अनुग्रह से है (देखिए नोट 3:24, रोमियों.6:23; इफि.2:8–9)।

के जे वी आयत 6 में समाप्ति का वाक्यांष जोड़ता है, ''परन्तु यदि ये कर्म से है, तो अनुग्रह नहीं है : अन्यथा कर्म अब कर्म नहीं है।'' यह वाक्यांष अधिकतर यूनानी हस्तलेखों में नहीं है पी[46], आलेफ, ए, सी, डी, जी और पी और पुराना लैटिन लेख, परन्तु इस वाक्यांष के दो दूसरे रूप आलेफग और बी में मिलते हैं। यू बी एस[4] इस छोड़ देने को ''ए'' श्रेणी में रखता है।

रोमियों.11:7–10

7 सो परिणाम क्या हुआ? यह कि इस्राएली जिस की खोज में हैं, वह उन को नहीं मिला; परन्तु चुने हुओं को मिला और शेष लोग कठोर किए गए हैं।

8 जैसा लिखा है, कि परमेश्वर ने उन्हें आज के दिन तक भारी नींद में डाल रखा है और ऐसी आंखें दी जो न देखें और ऐसे कान जो न सुनें।

9 और दाऊद कहता है; उन का भोजन उन के लिये जाल, और फन्दा, और ठोकर, और दण्ड का कारण हो जाए।

10 उन की आंखों पर अन्धेरा छा जाए ताकि न देखें, और तू सदा उन की पीठ को झुकाए रख।

11:7

''इस्राएली जिस की खोज में हैं,
वह उन को नहीं मिला''

यह यूनानी वाक्य में पहले लिखा गया है पौलुस के विचार पर ज़ोर देने के लिए। बहुत से यहूदी परमेष्वर के सामने सही होना चाहते थे और उन्होंने ऐसा करने की कोषिष धार्मिक परम्पराओं, जातिय सौभाग्य, और अपने कार्यों द्वारा की। उन्होंने अपना लक्ष्य खो दिया। कोई भी व्यक्ति परमेष्वर के सामने घमण्ड नहीं कर सकता (1कुरि.1:29; इफि.2:9)।

एन ए एस बी ''पर जो चुने गए हैं उन्हें यह मिला''

एन के जे वी ''पर चुने हुओं को मिला''

एन आर एस वी ''चुने हुओं को मिला''

टी इ वी ''यह केवल लोगों का एक छोटा सा समूह है जिसे परमेष्वर ने चुना और उन्हें मिला''

जे बी ''पर केवल चुने हुए थोड़े''

यह पुराने नियम के ''बचाए गए'' का विचार है यहाँ पर ये 1राजा.19:18 के 7000 लोगों को सम्बोधित करता है। कुन्जी मनुश्य के कार्य, जाति या धार्मिकता नहीं है (रोमियों.11:6), परन्तु चुनाव में परमेष्वर का अनुग्रह है (इफि.1:3–14)।

''षेश लोग कठोर किए गए हैं''

यहाँ पर प्रयोग यह है कि परमेष्वर ने उन्हें कठोर कर दिया है (रोमियों.11:8–10)। कठोर करने के लिए एजेन्ट षैतान है (2कुरि. 4:4)। ''कठोर'' *(पोरूओ)* अन्धेपन के लिए प्रयोग किया जाने वाला चिकित्सा–सम्बन्धि षब्द है (रोमियों.11:25; 2कुरि.3:14; इफि.

4:18)। यही षब्द प्रेरितों के लिए मरकुस.6:52 में प्रयोग किया गया है। यह 9:18 के भिन्न यूनानी षब्द *(स्केलेरूनो)* है जो दया के विपरीत है (इब्रा.3:8, 15; 4:7)।

यह आयत बहुत ही स्पश्ट है और 11:1–6 का सारांष है। जो चुने गए है उन्होंने विष्वास किया और जो चुने नहीं गए वे कठोर कर दिए गए। फिर भी यह आयत धर्मषास्त्रीय नारे के रूप में अलग से नहीं लिखा गया। यह साबित किए गए धर्मषास्त्रीय तर्क का एक भाग है। यह इस आयत में स्पश्ट रीति से बयान किए गए सत्यों के बीच और अध्याय 10 के निमन्त्रण के बीच तनाव है। यहाँ पर रहस्य है। पर समाधान यह नहीं है कि दोनों ही चेतावनियों को कम कर दें या नकार दें, विरोधाभासात्मक ध्रुव।

11:8–10

यह आयत यषा.29:10 (रोमियों.11:8[क]), व्यव.29:4 (रोमियों.11:8[ख], पर एम टी और सैप्टूआजैन्ट से लिया गया नहीं है) और भं.सं. 69:22–23 (रोमियों.11:9–10) से लिए गए हैं। यह सच में ही यषायाह की बुलाहट और मिषन को विद्रोही इस्राएल के बीच में प्रगट करते हैं 6:9–13। यषायाह परमेष्वर के वचन को प्रस्तुत करेंगें पर परमेष्वर के लोग प्रतिउत्तर नहीं दे पाएंगे या नहीं देंगे। पौलुस यहाँ पर परमेष्वर द्वारा कठोर किए जाने का प्रमाण दे रहे हैं जैसा उन्होंने रोमियों.9:13, 15, 17 में किया था।

11:8

एन ए एस बी, एन के जे वी ''परमेष्वर ने उन्हें भारी नींद की आत्मा दी है''

एन आर एस वी, जे बी ''परमेष्वर ने उन्हें आलसी आत्मा दी है''

टी इ वी ''परमेष्वर ने उनके मनों और हृदयों को आलसी कर दिया है''

यूनानी षब्द *काटानुक्सीस* का प्रयोग केवल यहीं नए नियम में किया गया है, और यह कीड़े के काटने के लिए प्रयोग किया गया है जिससे बहुत सारी परेषानी पैदा हो जाती है और व्यक्ति सुस्त हो जाता है।

11:10

''उन की आंखों पर अन्धेरा छा जाए
ताकि न देखें,
और तू सदा उन की पीठ को झुकाए रख''

यह परमेष्वर की श्रेश्ठता और मनुश्य के आवष्यक प्रतिउत्तर का रहस्य है। परमेष्वर सभी चीज़ों के श्रोत हैं, सभी चीज़ो को षुरू करने वाले हैं, फिर भी अपनी श्रेश्ठ इच्छा में उन्होंने यह आज्ञा दी है कि उनकी उत्तम सृश्टि मनुश्य स्वतंत्रता के उन्हें उत्तर दे। जो विष्वास में प्रतिउत्तर नहीं देते वे अपने अविष्वास में कठोर किए गए हैं।

इस संदर्भ में पौलुस आदम की संतान के छुटकारे की परमेष्वर की अनन्त योजना को प्रमाणित करते हैं। यहूदियों के अविष्वास ने अन्यजातियों के लिए द्वार खोल दिए और जलन के द्वारा इस्राएल राश्ट्र बचाया जाएगा। यह षामिल करने की योजना है (इफि.2:11–3:13) हटा देने की नहीं। कठोरता अधिक फसल लाएगी।

रोमियों.11:11–16

11 सो मैं कहता हूँ क्या उन्हों ने इसलिये ठोकर खाई, कि गिर पड़ें? कदापि नहींः परन्तु उन के गिरने के कारण अन्यजातियों को उद्धार मिला, कि उन्हें जलन हो।

12 सो यदि उन का गिरना जगत के लिये धन और उन की घटी अन्यजातियों के लिये सम्पत्ति का कारण हुआ, तो उन की भरपूरी से कितना न होगा।

13 मैं तुम अन्यजातियों से यह बातें कहता हूं: जब कि मैं अन्याजातियों के लिये प्रेरित हूं, तो मैं अपनी सेवा की बड़ाई करता हूँ।

14 ताकि किसी रीति से मैं अपने कुटुम्बियों से जलन करवाकर उन में से कई एक का उद्धार कराऊं।

15 क्योंकि जब कि उन का त्याग दिया जाना जगत के मिलाप का कारण हुआ, तो क्या उन का ग्रहण किया जाना मरे हुओं में से जी उठने के बराबर न होगा?

16 जब भेंट का पहला पेड़ा पवित्र ठहरा, तो पूरा गुंधा हुआ आटा भी पवित्र हैः और जब जड़ पवित्र ठहरी, तो डालियां भी ऐसी ही हैं।

11:11

''सो मैं कहता हूँ''

यह 11:1 के समान ही वाक्यांष है। यह पौलुस के धर्मषास्त्रीय तर्क को दूसरी तरह से जारी रखता है। 11:1–10 में सम्पूर्ण इस्राएल को परमेष्वर ने नहीं त्यागा; 11:11–24 में इस्राएल का त्यागा जाना स्थाई नहीं है; यह उद्देष्यपूर्ण है। इसके द्वारा अन्यजातिय षामिल किए जाऐंगे।

एन ए एस बी ''उन्हों ने इसलिये नहीं ठोकर खाई कि गिर पड़ें?, क्या ऐसा है''

एन के जे वी, एन आर एस वी ''क्या उन्हों ने इसलिये ठोकर खाई, कि गिर पड़ें?''

टी इ वी ''जब यहूदियों ने ठोकर खाई तो, क्या वो उनके विनाष के लिए थी?''

जे बी ''क्या यहूदी हमेषा के लिए गिर गए या फिर उन्होंने केवल ठोकर खाई है''

यह प्रष्न ''नहीं'' में उत्तर चाहता है। इस्राएल का अविष्वास स्थाई नहीं है।

एन ए एस बी ''उनके उल्लंघन के द्वारा''

एन के जे वी ''उनके गिरने के द्वारा''

एन आर एस वी ''उनके ठोकर खाने के द्वारा''

टी इ वी ''क्योंकि उन्होंने पाप किया''

जे बी ''उनका गिरना''

इस संदर्भ में यह यहूदियों द्वारा यीषु को मसीह के रूप में नकारने को प्रगट करता है (रोमियों.11:12)।

''अन्यजातियों को उद्धार मिला''

पहली सदी के यहूदियों के लिए यह कितना चौंका देने वाला वाक्य है (रोमियों.11:12; प्रेरित.13:46; 18:6; 22:21; 28:28)।

''ताकि उन्हें जलन हो''

परमेष्वर द्वारा अन्यजातियों को षामिल करने के दो उद्‌देष्य थे (1) परमेष्वर द्वारा सारी मानवजाति का छुटकारा; और (2) परमेष्वर द्वारा इस्राएल के पष्चातापी और बचाए गए लोगों को व्यक्तिगत विष्वास के लिए बचाना। मैं व्यक्तिगत रूप से आष्चर्यचकित हूँ कि यदि '(2)' में यहूदियों की अन्त की बेदारी षामिल है (जक.12:10) या आधुनिक मसीह से सम्बन्धित आराधनालय वायदों के पूरक हैं।

11:12–14

इन आयतों में दस षर्तिया वाक्य हैं जो यहूदियों के अविष्वास और अन्यजातियों के विष्वास से जुड़े हैं। आयत 12, 14, 15, 16, 17, 18, 21, 24 यह पहले दर्जे के षर्त वाक्य हैं जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य हैं। जबकी आयत 22, 23 तृतिय श्रेणी के वाक्य हैं जो भविश्य की ओर संकेत करते हैं।

11:12

एन ए एस बी ''उनकी भरपूरी से कितना न होगा''

एन के जे वी ''उनकी भरपूरी कितनी होगी''

एन आर एस वी ''उनकी भरपूरी के षामिल होने का अर्थ क्या होगा''

टी इ वी ''फिर, कितनी अधिक आषीश होगी, जब यहूदियों के पूरी गिनती षामिल होगी''

जे बी ''तो सोचो कि उन सभी के परिवर्तन से कितना लाभ होगा''

अनुवाद का मुख्य भाग है ''उनकी भरपूरी'' का अर्थ। क्या यह सम्बन्धित है (1) यहूदी बचाए जाऐंगे, 11:14[ख], 26[क] या (2) चुने हुए यहूदियों और अन्यजातियों की अन्तिम गिनती?

11:13

''मैं तुम अन्यजातियों से ये बात कर रहा हूँ ''

अध्याय 9–11 एक लेख भाग है जो इस प्रष्न का उत्तर देता है, ''यहूदी मसीह क्यों यहूदियों द्वारा नकारा गया?'' सवाल यह उठता है कि पौलुस को इस प्रस्तुतिकरण में इस प्रष्न के बारे में चर्चा करने की क्या आवष्यकता पड़ गई।

आयत 13–24, 25[ग] रोम की कलीसिया की जातिय यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की समस्या को प्रगट करता है। चाहे यह विष्वास करने वाले यहूदियों और विष्वास करने वाले अन्यजातियों के बीच हो चाहे विष्वास करने वाले अन्यजातियों और अविष्वासी यहूदियों के बीच (आराधनालय) यह अनिष्चित है।

''मैं अन्यजातियों के लिए प्रेरित हूँ''

पौलुस ने अद्वितिय रूप से ऐसा अनुभव किया कि उन्हें अन्यजातिय संसार की सेवा के लिए बुलाया गया है (प्रेरित.9:15; 22:21; 26:17; रोमियों.1:5; 15:16; गला.1:16; 2:7, 9; 1तीमु.2:7; 2तीमु.4:17)।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''मैं अपनी सेवा की बड़ाई करता हूँ''

एन आर एस वी ''मैं अपनी सेवकाई की महिमा करता हूँ''

टी इ वी ''मैं अपने काम पर घमण्ड करता हूँ''

जे बी ''और मुझे घमण्ड है कि मुझे भेजा गया है''

षब्द ''बड़ाई करने'' का अर्थ हो सकता है (1) धन्यवादी; (2) उसमें घमण्ड करना; या सम्भवतः (3) कुछ से बहुत कुछ बनाना। यह रोम की कलीसिया की समस्या को भी प्रगट कर सकता है। पौलुस अन्यजातियों की सेवा करने से प्रसन्न थे; या पौलुस ने अपनी सेवा को यहूदियों में जलन पैदा करने वाली के रूप में देखा, जिसका परिणाम उनका उद्धार होगा (रोमियों.11:11, 14; 9:1–3)।

11:14

''उनमें से कई एक का उद्धार कराऊँ''

यह पौलुस की सुसमाचार प्रचारक की बुलाहट थी। वह जानते थे कि कुछ सुसमाचार प्रचार का प्रतिउत्तर देंगे (1कुरि.1:21) जबकी कुछ नहीं (1कुरि.9:22)। यह चुनाव का रहस्य है (पुराना नियम और नया नियम)।

11:15

पुराने नियम के चुने हुए इस्राएलियों का त्याग परमेष्वर की सारी मानवजाति *(कोसमोस)* के उद्धार की योजना का एक भाग था। यहूदी स्व–धार्मिकता, जातिय अहंकार और कट्टरपन स्पश्ट रूप से विष्वास की आवष्यकता को प्रगट करता है (रोमियों. 9:30–33)। यहोवा और उनके मसीह पर विष्वास ही परमेष्वर के सामन धर्मी होने की कुन्जी है मनुश्य के धार्मिक कार्य नहीं। पर याद रखिए कि इस्राएलियों के त्याग का उद्देष्य सारी मानवजाति का उद्धार था। मनुश्य के घमण्ड के लिए कोई जगह नहीं है, न ही यहूदी और न ही अन्यजाति के लिए। यह अवष्य की वह संदेष था जिसे सुनने की रोम की कलीसिया को आवष्यकता थी।

''जगत के मिलाप का कारण''

यह धर्मषास्त्रीय तौर पर ''परमेष्वर की धार्मिकता'' के तुल्य है। ये षब्द *काटा* और *आलासो* (बदलना, या रूपान्तरण) से आए हैं। यह विद्रोह के षान्ति में परिवर्तन को प्रगट करता है, और उससे पक्ष की वापसी (रोमियों.5:11; 11:15; 2कुरि.5:18, 19)। परमेष्वर अदन की वाटिका की संगति चाहते हैं। पाप ने यह संगति तोड़ दी, परन्तु मसीह ने उन तमाम पतित मानवों में परमेष्वर के स्वरूप को पुनः स्थापित किया जो विष्वास करते हैं। उनका मिलाप हो चुका है और ग्रहण किए गए हैं (रोमियों.11:15 का सदृष्यत्व)। मानवजाति इस सम्बन्ध को कभी भी फिर से स्थापित नहीं कर सकती पर परमेष्वर कर सकते हैं और उन्होंने किया।

11:16

''यदि भेंट का पहला पेड़ा पवित्र ठहरा''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। यह गिन.15:17–21 की ओर संकेत करता है। यह एक रूपक है पुराने नियम के पहले फल के समान जो परमेष्वर को दिया जाता था यह दिखाने के लिए कि फसल उनकी है।

प्राचीन विष्वास करने वाले यहूदियों का आज भी पूरे राश्ट्र पर प्रभाव है (उत्प.18:27–33; 2इति.7:14)। ''पहले पेड़े'' का रूपक ''मूल'' के सदृष्य है (यिर्म.11:16–17), दोनों ही इस्राएल के विष्वासयोग्य लोगों को प्रगट करते हैं, विषेश करके पुराने नियम के पूर्वजों को (रोमियों.11:28)।

रोमियों.11:17–24

17 और यदि कई एक डालियाँ तोड़ दी गईं, और तू जंगली जैतून होकर उन में साटा गया, और जैतून की जड़ की चिकनाई का भागी हुआ है।

18 तो डालियों पर घमण्ड न करना : और यदि तू घमण्ड करे, तो जान रख, कि तू जड़ को नहीं, परन्तु जड़ तुझे सम्भालती है।

19 फिर तू कहेगा डालियां इसलिये तोड़ी गई, कि मैं साटा जाऊं।

20 भला, वे तो अविश्वास के कारण तोड़ी गई, परन्तु तू विश्वास से बना रहता है इसलिये अभिमानी न हो, परन्तु भय कर।

21 क्योंकि जब परमेश्वर ने स्वाभाविक डालियां न छोड़ी, तो तुझे भी न छोड़ेगा।

22 इसलिये परमेश्वर की कृपा और कड़ाई को देख! जो गिर गए, उन पर कड़ाई, परन्तु तुझ पर कृपा, यदि तू उस में बना रहे, नहीं तो, तू भी काट डाला जाएगा।

23 और वे भी यदि अविश्वास में न रहें, तो साटे जाएंगे क्योंकि परमश्वेर उन्हें फिर साट सकता है।

24 क्योंकि यदि तू उस जैतून से, जो स्वभाव से जंगली है काटा गया और स्वभाव के विरूद्ध अच्छी जैतून में साटा गया तो ये जो स्वाभाविक डालियां हैं, अपने ही जैतून में साटे क्यों न जाएंगे।

11:17

''यदि''

देखिए नोट 11:12–14।

''कई एक डालियाँ तोड़ दी गई''

यह अविष्वासी इस्राएलियों को प्रगट करता है (रोमियों.11:18, 19, ''स्वभाविक डालियाँ'' 11:21)।

''जंगली जैतून''

यह विष्वासी अन्यजातियों को दर्षाता है जिन्होंने सुसमाचार प्रचार का प्रतिउत्तर दिया।

''साटा गया''

अयात 16 से षुरू हुए खेती–बाडी के रूपक को पौलुस जारी रखते हैं। जंगली जैतून की डालियों को स्थापित पेड़ में साटने से अधिक फल आता है (रोमियों.11:24)।

''जैतून का पेड़''

यह इस्राएल राश्ट्र का चिन्ह है (रोमियों.11:24; भं.सं.52:8; 128:3; यिर्म.11:16; होषे.14:6)। यह पौलुस द्वारा प्रयोग किया गया दूसरा पुराने नियम का रूपक है यहूदियों और अन्यजातियों के बीच सम्बन्ध को प्रगट करने के लिए।

11:18

''तो डालियों पर घमण्ड न करना''

यह आयत और 13, 20, 25 प्रगट करता है कि रोम की कलीसिया में यहूदियों और अन्यजातियों के बीच तनाव था।

11:19–20

आयत 19 एक और काल्पनिक विरोधी है। पौलुस व्यख्या करते हैं कि क्यों यहूदी त्यागे गए। यह उनके अविष्वास के कारण है, इसलिए नहीं कि अन्यजातियों से अधिक प्रेम किया गया। अन्यजातिय षामिल किए गए केवल परमेष्वर के प्रेम के कारण (उत्प. 3:15) और उनके विष्वास के कारण। वे यहूदियों को परमेष्वर के पास आने में बाध्य कर सकते हैं जलन के कारण (रोमियों. 11:11, 14)।

11:20

एन ए एस बी ''और तुम केवल अपने विष्वास के कारण बने रहते हो''

एन के जे वी ''और तुम विष्वास के बने रहते हो''

एन आर एस वी ''परन्तु तुम केवल अपने विष्वास ही के कारण बने रहते हो''

टी इ वी ''जब तुम उस जगह पर विष्वास के कारण बने रहते हो''

जे बी ''यदि तुम अब तक दृढ़ता से पकड़े हुए हो, इसमें केवल तुम्हारें विष्वास का धन्यवाद हो''

यह दस षर्तिया वाक्यों के संदर्भ में है। परमेष्वर के सामने हमारा बना रहना केवल विष्वास के कारण है और जारी रहता है। यदि विष्वास समाप्त हो जाता है तो हमारा बने रहना भी समाप्त हो जाता है। उद्धार है (1) विष्वास के साथ षुरूवाती प्रतिउत्तर; (2) विष्वास में बने रहने की स्थिति; (3) जारी रहने वाली विष्वास की प्रक्रिया; और (4) अन्त में विष्वास का पूरा हो जाना। ऐसी किसी भी धर्मषास्त्रीय प्रणाली से सावधान जो इनमें से किसी एक बाइबलीय सत्य पर केन्द्रीत है। देखिए विषेश षीर्शक 10:4।

परमेष्वर वाचा की प्रणाली में उद्धार के लेखक, षुरू करने वाले, बनाए रखने वाले, और पूरा करने वाले हैं। उन्होंने ऐसा चुनाव किया है कि पापी मानवजाति इस प्रक्रिया के प्रत्येक कदम में पष्चाताप और विष्वास से प्रतिउत्तर दे और देती रहे।

एन ए एस बी ''अभिमानी न हो पर भय कर''

एन के जे वी ''हठी न हो पर भय कर''

एन आर एस वी ''इसलिए अहंकारी न हो, पर भय से खड़ा रह''

टी इ वी ''इस बात पर घमण्ड मत कर, इसकी जगह भय मान''

जे बी ''तुम्हें अहंकारी बनाने की बजाए यह तुम्हे भय दिलाए''

यह रोम की कलीसिया की समस्या को प्रगट करता है। भय का कारण 11:21 में बताया गया है।

11:21

''वह तुम्हें भी नहीं छोड़ेंगे''

जैसे इस्राएल ने यहोवा का विद्रोह किया और उनसे घमण्ड और अविष्वास के कारण दूर हो गया और काट डाला गया, वैसे ही यदि कलीसिया घमण्ड और स्व–धार्मिकता के कारण मसीह में विष्वास छोड़ दे तो वह भी काट डाली जाएगी। षुरूवाती विष्वास के बाद जीवनषैली विष्वास आना चाहिए (मत्ती.13:1–23; मरकुस.4:1–12; लूका.8:4–10)। घमण्ड को लगातार दूर हटाना चाहिए। हम जो हैं वह परमेष्वर के अनुग्रह के कारण है और हम उन लोगों के भाई हैं जो मसीह पर भरोसा रखते हैं।

11:22

''परमेष्वर की कृपा और कड़ाई''

परमेष्वर का मार्ग हमेषा पतित मानवजाति के विरोधाभास में होता है (यषा.55:8–11)। हमारे चुनाव के परिणाम हैं। परमेष्वर का चुनाव मानवजाति की ज़िम्मेदारी को कम नहीं करता। इस्राएल राश्ट्र का चुनाव प्रत्येक इस्राएली के उद्धार की प्रमाणिकता नहीं है।

''यदि तुम उनकी कृपा में बने रहो''

यह रचना बताती है कि विष्वास करने वाले अन्यजातियों का बना रहना षर्तपूर्ण है (यह रोमियों.9 में परमेष्वर की श्रेश्ठता का दूसरा भाग है); हमें बड़ी ही सावधानी से अपने विष्वास को बनाए रखना है (फिलि.2:12–13)। यह समूह और व्यक्तिगत दोनों तरह से कोषिष करते रहने को प्रगट करता है (गला.6:9; प्रका.2:7, 17; 3:6, 13, 22)। यह सामूहिक और व्यक्तिगत रहस्य और तनाव का बाइबलीय विचार है। दोनों ही वायदे हैं (परमेष्वर के चरित्र पर आधारित) और षर्तिया वाचाएं (मनुश्य के प्रतिउत्तर पर आधारित)। देखिए विषेश षीर्शक : निरन्तर प्रयत्न करने की आवष्यकता 8:25।

11:23

यह आयत भी 22 आयत की ही धर्मषास्त्रीय और व्याकरणीय प्रणाली का प्रयोग करता है। यदि यहूदी पष्चाताप करें और विष्वास करें तो वे भी षामिल हो जाऐंगे। यदि अन्यजातियाँ विष्वास करना छोड़ दें तो वे त्याग दी जाएंगी (रोमियों.11:20)। मसीह में षुरूवाती और जारी रहने वाला विष्वास दोनों ही के लिए महत्वपूर्ण है।

रोमियों.11:25–32

25 हे भाइयों, कहीं ऐसा न हो, कि तुम अपने आप को बुद्धिमान समझ लो; इसलिये मैं नहीं चाहता कि तुम इस भेद से अनजान रहो, कि जब तक अन्यजातियाँ पूरी रीति से प्रवेश न कर लें, तब तक इस्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा।

26 और इस रीति से सारा इस्राएल उद्धार पाएगा; जैसा लिखा है, कि छुड़ानेवाला सिय्योन से आएगा, और अभक्ति को याकूब से दूर करेगा।

27 और उन के साथ मेरी यही वाचा होगी, जब कि मैं उन के पापों को दूर कर दूंगा।

28 वे सुसमाचार के भाव से तो तुम्हारे बैरी हैं, परन्तु चुन लिये जाने के भाव से बापदादों के प्यारे हैं।

29 क्योंकि परमेश्वर अपने वरदानों से, और बुलाहट से कभी पीछे नहीं हटता।

30 क्योंकि जैसे तुम ने पहले परमेश्वर की आज्ञा न मानी परन्तु अभी उन के आज्ञा न मानने से तुम पर दया हुई।

31 वैसे ही उन्हों ने भी अब आज्ञा न मानी कि तुम पर जो दया होती है इस से उन पर भी दया हो।

32 क्योंकि परमेश्वर ने सब को आज्ञा न मानने के कारण बन्द कर रखा ताकि वह सब पर दया करे।

11:25

''हे भाइयों...
मैं नहीं चाहता कि
तुम इस भेद से अनजान रहो''

यह पौलुस की चरित्रिक कहावत है (रोमियों.1:13; 1कुरि.10:1; 12:1; 2कुरि.1:8; 1थिस्स.4:13)। अक्सर यह विषेश चर्चा का परिचय देता है। यह यीषु मसीह द्वारा प्रयोग किए गए ''आमीन, आमीन'' के समान है। पौलुस अक्सर इसका प्रयोग नए विशय की ओर संकेत करने के लिए करते हैं।

एन ए एस बी, एन के जे वी, एन आर एस वी ''रहस्य''

टी इ वी ''छिपा हुआ सत्य''

जे बी ''इस सब का छिपा हुआ कारण''

विषेश षीर्शक : रहस्य

परमेष्वर के पास मानवजातिके छुटकारे के लिए एकतापूर्ण उद्‌देष्य है जो पतन के तुरन्त बाद षुरू हो गया (उत्प.3)। इस योजना के बारे में थोड़ी–थोड़ी जानकारी पुराने नियम में प्रस्तुत की गई है (उत्प.3:15; 12:3; निर्ग.19:5–6; और भविद्वक्ताओं में सार्वभौमिक लेख)। पर यह पूरी बात स्पश्ट नहीं थी (1कुरि.2:6–8)। यीषु और पवित्र आत्मा के आगमन से यह धीरे–धीरे निष्चित होने लगा। इस पूरे छुटकारे की योजना को बयान करने के लिए पौलुस ''रहस्य'' षब्द का प्रयोग करते हैं (1कुरि.4:1; इफि.6:19; कुलु.4:3; 1तीमु.1:9)। वे इसका प्रयोग विभिन्न विचारों में करते हैं :

1) अस्थाई रूप से इस्राएल का कठोर होना ताकि अन्यजातियाँ षामिल की जा सकें। अन्यजातियों का इस तरह से आना यहूदियों द्वारा यीषु को भविश्यद्वक्ताओं की पुस्तक के मसीह के रूप में ग्रहण करने के कारक के रूप में कार्य करेगा (रोमियों. 11:25–32)।

2) सुसमाचार सारे राश्ट्रों में पहुँचा दिया गया, जो मसीह द्वारा और में षामिल किए गए (रोमियों.16:25–27; कुलु.2:2)।

3) दूसरे आगमन में विष्वासियों की नई देह (1कुरि.15:5–57; 1थिस्स.4:13–18)।

4) मसीह में सभी चीज़ों का एकत्र होना (इफि.1:8–11)

5) अन्यजाति और यहूदी दोनों की सहभागी उत्तराधिकारी हैं (इफि.2:11–3:13)।

6) मसीह और कलीसिया के बीच के सम्बन्ध की घनिश्ठता का विवाह के षब्दों में वर्णन किया गया है (इफि.5:22–33)।

7) अन्यजातिय जो वाचा के लोगों में षामिल किए गए हैं उनके अन्दर मसीह की आत्मा निवास करती हैं ताकि उनमें मसीह के समान परिपक्वता उत्पन्न हो, वो है, पतित मानवजातिमें नश्ट हो रहा परमेष्वर का स्वरूप (उत्प.6:5, 11–13; 8:21) परमेष्वर मनुश्य में (उत्प.1:26–27; 5:1; 9:6; कुलु.1:26–28)।

8) अन्त के समय मसीह–विरोधी (2थिस्स.2:1–11)।

9) आरम्भिक कलीसिया के रहस्य का सारांष 1तीमु.1:16 में मिलता है।

''कहीं तुम अपने आप को
बुद्धिमान न समझ लो''

यह रोम की कलीसिया में के तनाव की तरफ एक और संकेत है (रोमियों.11:18)।

एन ए एस बी ''इस्राएल का जो एक भाग इस्राएल कठोर है''

एन के जे वी ''इस्राएल का एक भाग कठोर किया गया है''

एन आर एस वी ''इस्राएल के एक भाग पर कठोरता आ गई है''

टी इ वी ''कि इस्राएल के लोगों की कठोरता स्थाई नहीं है''

जे बी ''इस्राएल का एक भाग अन्धा हो गया है''

यह कथन निष्चित तौर पर 11 अध्याय से जुड़ा होना चाहिए। कुछ यहूदी विष्वास में थे और रहेंगे। यह आंषिक अन्धापन परमेष्वर द्वारा ठहराया गया है (रोमियों.11:8–10) क्योंकि यहूदियों द्वारा यीषु का त्याग सारी मानवजाति के छुटकारे के लिए परमेष्वर की योजना का अंग है। परमेष्वर ने उद्धार का वायदा सभी से किया था (उत्प.3:15)। उन्होंनें इब्राहिम को सभी तक पहुँचने के लिए चुना (उत्प.12:3)। उन्होंने इस्राएल को सब तक पहुँचने के लिए चुना (निर्ग.19:5–6)। इस्राएल अपने लक्ष्य में अपने घमण्ड, विष्वासघात और अविष्वास के कारण असफल रहा। परमेष्वर इस्राएल पर अपनी आषीशों के द्वारा अन्यजातियों तक पहुँचना चाहते थे (व्यव.27–29)। इस्राएल वाचा का पालन नहीं कर सका इस कारण परमेष्वर का अस्थाई न्याय उस पर आ पड़ा। अब परमेष्वर ने इस न्याय को ले लिया है और इसका प्रयोग करके सारी मानवजाति के छुटकारे की अपनी वास्तविक योजना को विष्वास द्वारा पूरा करने के लिए प्रयोग कर रहे हैं (रोमियों.11:30–31; यहे.36:22–38)।

''जब तक कि अन्यजातियाँ
पूरी रीति से प्रवेष न कर लें''

यही षब्द *(प्लेरोमा)* आयत 12 में यहूदियों के लिए प्रयोग किया गया है। दोनों ही आयत परमेष्वर के पहले से ही जानलेने के बारे में और चुनाव के बारे में बात करते हैं। ''जब तक'' अन्यजातियों को दिए गए समय को प्रगट करता है (लूका.21:24)।

11:26

''सारा इस्राएल उद्धार पाएगा''

इसके सम्भावित दो अनुवाद हैं (1) यह इस्राएल राश्ट्र को प्रगट करता है – प्रत्येक यहूदी को नहीं परन्तु इतिहास के एक समय में अधिकतर। (2) कुछ हद तक यह आत्मिक इस्राएल को प्रगट करता है, कलीसिया। पौलुस रोमियों.2:28–29; गला.1:16; (1पत.2:5, 9 और प्रका.1:6) इस विचार का प्रयोग करते हैं। आयत 12 में ''इस्राएलियों का पूरा भाग'' और आयत 25 में ''अन्यजातियों का पूरा भाग'' सदृष्य सम्बन्ध में हैं। यहाँ ''सब'' परमेष्वर द्वारा चुने हुओं को प्रगट करता है प्रत्येक व्यक्ति को नहीं। जैतून के पेड़ का वायदा एक दिन पूरा हो जाएगा।

कुछ टीका लेखक कहते हैं कि यह राश्ट्र को प्रगट करता हैं क्योंकि (1) 9–11 अध्याय का संदर्भ; (2) आयत 22–27 में पुराने नियम के लेखों का प्रयोग; और (3) आयत 28 का स्पश्ट कथन। परमेष्वर को इब्राहीम की असल संतान को बचाने की इच्छा है और वह उनसे प्रेम करते हैं। उन्हें मसीह पर विष्वास द्वारा आना होगा (जक.12:10)।

यह सवाल कि जो यहूदी ''कठोर'' हो गए क्या उन्हें अन्त समय में प्रतिउत्तर देने का अवसर मिलेगा उसका उत्तर देना इस आयत यह फिर किसी भी दूसरे मूलपाठ से देना असम्भव है। अमेरीकन होने के कारण सांस्कृतिक रूप से हम व्यक्तिगत सवाल पूछने के लिए बाध्य हैं पर बाइबल समूह या सभी पर केन्द्रीत है। इस प्रकार के सभी सवाल परमेष्वर के सामने छोड़ देना चाहिए। वह अपनी सृश्टि के प्रति न्यायी ही होंगे जिससे वह प्रेम करते हैं।

''जैसा पवित्र षास्त्र में लिखा है''

यह सैप्टूआजैन्ट से दो लेखों यषा.59:20–21 (रोमियों.11:26) और यषा.27:9 (रोमियों.11:27) की ओर संकेत करता है। उद्धार का आधार यीषु मसीह पर विष्वास है। कोई योजना नम्बर 2 नहीं है केवल एक ही योजना है। उद्धार पाने के लिए केवल एक ही रास्ता है (यूह.10:7–18; 11:25–29; 14:6)।

11:27

यषा.27:9 जिसे 27 आयत में लिखा गया है इस्राएल के वायदे के देष में पुनः स्थापन (रोमियों.11:1–11) को प्रगट करता है और उनके परम्परागत षत्रु (अन्यजातियों) को उसमें षामिल करता है (रोमियों.11:12–13)। यदि यह पुनः स्थापन वास्तविक है तो 1000 साल का राज्य इस भविश्यद्वाणी को पूरा करेगा। यदि यह रूपक है तो नई वाचा, सुसमाचार का रहस्य, जिसमें यहूदी और अन्यजाति जुड़े हैं मसीह पर विष्वास करने के द्वारा वही लक्ष्य है (इफि.2:11–3:13)। यह निष्चित करना कठीन है। पुराने नियम की कुछ भविश्यद्वाणियाँ नई वाचा कलीसिया पर लागू होती हैं। फिर भी परमेष्वर अपने वायदों के लिए विष्वासयोग्य हैं, जब मनुश्य न हों तब भी (यहे.36:22–36)।

11:28

यह आयत चुनाव के दोहरे पक्ष को प्रगट करता है (1) पुराना नियम में चुनाव सेवा के लिए होता था। परमेष्वर लोगों को मानवजाति के छुटकारे के लिए हथियार की तरह प्रयोग करते थे; (2) नए नियम मे चुनाव सुसमाचार और अनन्त उद्धार से सम्बन्धित है। परमेष्वर के स्वरूप में रची गई मानवजाति का उद्धार ही सदैव से लक्ष्य रहा है (उत्प.3:15)।

परमेष्वर अपने वायदों के प्रति विष्वासयोग्य हैं। यह पुराने नियम के विष्वासियों और नए नियम के संतों के लिए सत्य है। कुन्जी परमेष्वर की विष्वासयोग्यता है मनुश्य की नहीं, परमेष्वर की दया है मनुश्य के कर्म नहीं। चुनाव आषीश के उद्देष्य से है छोड़ देने के उद्देष्य से नहीं।

''परन्तु चुन लिये जाने के भाव से
बापदादों के प्यारे हैं''

यह निर्ग.20:5–6 और व्यव.5:9–10 और 7:9 का वायदा है। परिवारों को पीछली पीढ़ी के विष्वास की वजह से आषीश दी जाती है। इस्राएल को इसी लिए आषीश दी क्योंकि उनके बापदादे विष्वासयोग्य थे (व्यव.4:37; 7:8; 10:15)। मसीह यहूदा के वंष से आएंगे यह दाऊद से किया गया वायदा था (2षमू.7)। यह भी कहना आवष्यक है कि विष्वासयोग्य भी पूरी व्यवस्था का पालन नहीं कर सके (यहे.36:22–36)। विष्वास – व्यक्तिगत विष्वास, पारिवारीक विष्वास, परन्तु सिद्ध विष्वास नहीं – परमेष्वा द्वारा ग्रहणयोग्य है और प्रभावषाली रूप से पीढ़ियों तक चला आता है (1कुरि.7:8–16)।

11:29

एन ए एस बी, एन के जे वी, एन आर एस वी ''परमेष्वर के वरदान और बुलाहट लौटाए नहीं जा सकते''

टी इ वी ''परमेष्वर जिन्हें चुनते और आषीश देते हैं उनके प्रति अपने मन को नहीं बदलते''

जे बी ''परमेष्वर अपने वरदान वापस नहीं लेते और न ही अपने चुनाव को टालते हैं''

यह प्रत्येक व्यक्ति को दिए जाने वाले आत्मिक वरदान को प्रगट नहीं करता (1कुरि.12), परन्तु परमेष्वर के उद्धार के वायदे को प्रगट करता है, पुराना नियम और नया नियम। चुनाव प्रभावषाली है। परमेष्वर की विष्वासयोग्यता इस्राएल राश्ट्र की आषा है (मला.3:6)।

11:30–32

यह आयत परमेष्वर की योजना और उद्देष्य का सारांष हैं : (1) वे हमेषा उनकी दया पर आधारित हैं (देखिए नोट 9:15–16), स्वच्छन्द निर्णय पर नहीं। षब्द ''दया'' इस बड़े संदर्भ में चार बार प्रयोग किया गया है (रोमियों.9:15, 16, 18, 32)। (2) परमेष्वर ने सभी मनुश्यों का न्याय किया है। यहूदी और अन्यजातियाँ सभी पापी हैं (रोमियों.3:9, 19, 23; 5:11)। (3) परमेष्वर ने मनुश्य की आवष्यकता और अयोग्यता को सारी मानवजाति पर दया दिखाने के लिए अवसर के रूप में प्रयोग किया है (रोमियों.11:22)। फिर से इस संदर्भ में ''सब'' षब्द को 11:12, 25–26 के प्रकाष में देखना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति परमेष्वर के इस निमन्त्रण को स्वीकार नहीं करेगा पर सभी छुटकारे की सम्भावना में षामिल हैं (रोमियों.5:12–21; यूह.3:16)। हे परमेष्वर ऐसा ही हो।

11:30 और 31

''पर अब''
यह दृढ़ता से यीषु पर विष्वास करने के द्वारा इस्राएल के आत्मिक परिवर्तन को प्रगट करता है। जैसे अन्यजातियों के ''अविष्वास'' को परमेष्वर की दया द्वारा जीत लिया गया, वैसे ही यहूदियों का ''अविष्वास'' भी।

रोमियों.11:33–36

33 आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गम्भीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!

34 प्रभु की बुद्धि को किस ने जाना? या उसका मंत्री कौन हुआ?

35 या किस ने पहले उसे कुछ दिया है जिस का बदला उसे दिया जाए।

36 क्योंकि उस की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिये सब कुछ है: उस की महिमा युगानुयुग होती रहे : आमीन।

11:33–36

यह पौलुस के अद्भुत प्रषंसा गीतों में से एक है। पौलुस परमेष्वर के तरीकों से अतिउत्साहित हो गए थे : वाचा के प्रति विष्वासयोग्यता, वाचा में षामिल करना, वाचा का पूरा होना।

11:33

''धन''
यह पौलुस का मन–पसंद मुहावरा है (रोमियों.2:4; 9:23; 10:12; 11:12, 33; इफि.1:7, 8; 2:7; 3:8, 16; फिलि.4:19; कुलु.1:27)। सुसमाचार और मानवजाति की आषा का मुख्य भाग परमेष्वर के चरित्र और योजना की दया पूर्ण बहुतायत है (यषा.55:1–7)।

''उनके विचार कैसे अथाह,
और उनके मार्ग कैसे अगम हैं''
यह अध्याय 9–11 के विरोधाभासात्मक सत्यों के लिए उत्तम प्रषंसा गीत है (यषा.55:8–11)।

11:34

यह सैप्टूआजैन्ट के यषा.40:13–14 का लेख है, जहाँ परमेष्वर अपने लोगों को बन्धुवाई से लौटा ले आते और छुटकारा देते हैं। 1कुरि.2:16 में पौलुस इसी लेख का प्रयोग करते है पर ''प्रभु'' की जगह यीषु के षीर्शक का प्रयोग करते हैं।

11:35

यह अय्य.35:7 और 41:11 से लिया गया लेख है।

11:36

''क्योंकि उनकी ओर से, और उन्हीं के द्वारा,
और उन्हीं के लिये सब कुछ है''

इस संदर्भ में यह वाक्यांष पिता परमेष्वर को प्रगट करता है (1कुरि.11:12), परन्तु नए नियम के उन सभी भागों के सदृष्य है जो पुत्र परमेष्वर को प्रगट करते हैं (1कुरि.8:6; कुलु.1:16; इब्रा.2:10)। पौलुस साबित करते हैं कि सब चीज़ें परमेष्वर से है और परमेष्वर के पास ही लौट जाती हैं।

''उनकी महिमा युगानुयुग होती रहे''

यह नया नियम में ईष्वर की महिमा को प्रगट करने का चित्रण है। यह प्रगट करता है (1) कभी–कभी पिता परमेष्वर को (रोमियों.16:27; इफि.3:21; फिलि.4:20; 1पत.4:11; 5:11; यहू.1:25; प्रका.5:13; 7:12); और (2) कभी–कभी पुत्र परमेष्वर को (1तीमु. 1:17; 2तीमु.4:18; 2पत.3:18; प्रका.1:16)। देखिए पूरा नोट 3:23।

''आमीन''

देखिए विषेश षीर्शक 1:25।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) इस्राएल ने किस तरह से परमेष्वर के उद्धार के मार्ग को खो दिया?

2) इस बात को प्रमाणित करने के लिए कि परमेष्वर ने इस्राएल को नहीं त्यागा है, पौलुस कौन से दो कारण देते हैं?

3) परमेष्वर ने यहूदियों के हृदयों को क्यों कठोर कर दिया? कैसे?

4) यहूदियों में से ''बचाए गए या अलग किए गए'' का क्या अर्थ है (रोमियों.11:2–5)?

5) नए नियम के ''रहस्य'' षब्द की व्याख्या कीजिए।

6) रोमियों.11:26 का क्या अर्थ है? क्यों? यह 9:6 से किस तरह सम्बन्धित है?

7) अन्यजातिय विष्वासियों को पौलुस क्या चेतावनी देते हैं (रोमियों.11:17–24)?

रोमियों – 12

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
मसीह में नया जीवन	परमेष्वर के लिए जीवित बलिदान	षुद्ध किया हुआ जीवन	परमेष्वर की सेवा में जीवन	आत्मिक आराधना
12:1–2	12:1–8	12:1–2	12:1–2	12:1–2
				नम्रता और प्रेम
12:3–8		12:3–8	12:3–8	12:3–8
मसीही जीवन के नियम	मसीही के समान व्यवहार करो	उत्साहित करना		सभी से प्रेम करना, षत्रुओं को भी
12:9–21	12:9–21	12:9–13	12:9–13	12:9–13
		12:14–21	12:14–16	12:14–21
			12:17–21	

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद
2) दूसरा अनुच्छेद
3) तीसरा अनुच्छेद
4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि रोमियों.12:1–8

क. यह रोमियों के व्यवहारिक भाग की षुरूवात करता है (12:1–15:13)। पौलुस के अधिकतर पत्र परिस्थितियों पर आधारित लेख थे; इसलिए उनमें दोनों ही भाग होते थे सैद्धान्तिक और व्यवाहारिक। पौलुस ने स्थानिय समस्या को सम्बोधित करने के लिए यह पत्र लिखा। क्योंकि रोमियों.1–8 बहुत ही अद्‌भुत सैद्धान्तिक सारांष है, इसलिए इसका नैतिक और व्यवहारिक भाग भी उतना ही प्रभावषाली है।

ख. जीवनषैली में व्यवहारिकता में न लाया गया धर्मषास्त्रीय षिक्षण परमेष्वर का नहीं है (मत्ती.7:21, 24–27; लूका.11:28; यूह. 13:17; रोमियों.2:13; याक.1:22, 25; 2:14–26)। पौलुस मसीह यीषु पर विष्वास के द्वारा परमेष्वर के अनुग्रह से मुफ्त उद्धार की षिक्षा देते हैं, पर यह मुफ्त वरदान इसलिए दिया गया है कि हमारा जीवन पूरी तरह से बदल जाए। उद्धार मुफ्त है पर इसके बाद प्रभावषाली मसीहसमानता आनी चाहिए।

ग. आयत 1–2 पूरे व्यवहारिक भाग का परिचय देता है। यह आत्मा द्वारा चलाए जा रहे जीवन का आधार है (अध्याय 8)।

घ. आयत 3–8 आत्मिक वरदानों के बारे में चर्चा करते हैं। मसीह के प्रति हमारे पूर्ण झुकाव द्वारा परमेष्वर की सेवा का जन्म होना चाहिए (व्यव.6:4–5; मत्ती.22:37) और दूसरों की सेवा (लैव्य.19:18; मत्ती.19:19)। यह वरदान मसीह में हमारी समानता को प्रगट करते हैं और साथ ही विभिन्न वरदानों को प्रगट करते हैं (इफि.4:1–10)। विष्वासियों को एकता के लिए प्रयासरत रहना चाहिए, समानता के लिए नहीं। हम परमेष्वर द्वारा षिक्षित किए गए हैं एक दूसरे की सेवा के लिए (1कुरि.12:7, 11; इफि. 4:11–13)।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.12:1–2

1 इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूं, कि अपने शरीरो कों जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ : यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।

2 और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।

''इसलिए''

पौलुस इस षब्द का प्रयोग रोमियों की पत्री में सुसमाचार के प्रस्तुतिकरण में विषेश दिषा बदलने वाले षब्दों के लिए करते हैं। रोमियों.5:1 से आगे यह ''विष्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने'' को व्यक्त करता है; 8:1 से आगे यह पाप के साथ विष्वासी के सम्बन्ध को व्यक्त करता है, जिसे षुद्धिकरण कहा जाता है; 12:1 से आगे यह विष्वासी के प्रतिदिन के जीवन में धर्मी ठहराए जाने और षुद्धिकरण की व्यवहारिकता को व्यक्त करता है।

12:1

एन ए एस बी ''मैं तुमसे विनती करता हूँ''

एन के जे वी ''मैं तुमसे याचना करता हूँ''

एन आर एस वी, टी इ वी ''मैं तुमसे निवेदन करता हूँ''

जे बी ''मैं तुमसे माँगता हूँ''

यह वाक्यांष कठोर और नम्र दोनों ही है। यह सही जीवन जीने के लिए बुलाहट है। पौलुस इस षब्द का अक्सर प्रयोग करते हैं (रोमियों.12:1; 15:30; 16:17; 1कुरि.1:10; 4:16; 16:15; 2कुरि.2:8; 5:20; 6:1; 10:1; 12:8; इफि.4:1; फिलि.4:2; 1थिस्स.4:10; 1तीमु. 1:3; फिले.1:9–10)।

''हे भाईयो''

पौलुस इस षब्द का प्रयोग अक्सर नए विशय का परिचय देने के लिए करते हैं।

''परमेष्वर की दया स्मरण दिलाकर''

सैप्टूआजैन्ट में यह परमेष्वर के दयावान चरित्र को प्रगट करता है (निर्ग.34:6)। यहाँ पर यह 1–11 अध्याय की सैद्धान्तिक प्रक्रिया को प्रगट कर रहा है। रोमियों में पतित मानवजाति के साथ व्यवहार करते समय परमेष्वर की ''दया'' *(दोनों ओईकेइरा और इलीओ)* पर स्वभाविक ज़ोर दिया गया है (रोमियों.9:15, 16, 18, 23; 11:30, 31, 32; 12:8; 15:9)। क्योंकि परमेष्वर की दया और अनुग्रह मुफ्त में दिए गए हैं विष्वासियों को भक्तिपूर्ण जीवन जीना अवष्य है (इफि.1:4; 2:10) धन्यवादी हृदय के साथ, उत्तम श्रेणी पाने के लिए नहीं (इफि.2:8–9)।

''चढ़ाओ''

इस संदर्भ में बलिदानी भाव के लिए जितने षब्द प्रयोग किए गए हैं यह उनमें से एक है : बलिदान–12:1; पवित्र–12:1; भावता हुआ–12:1। यही विचार रोमियों.6:13, 16, 19 में भी व्यक्त किया गया है। मानव स्वयं को या तो परमेष्वर को देंगे या फिर षैतान को। जैसे मसीह ने स्वयं को परमेष्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए पूरी तरह से अर्पण कर दिया, यहाँ तक कि क्रूस की मृत्यु के लिए भी, उनके अनुयायियों को भी इसी प्रकार की आत्महीन जीवन जीने की आवष्यकता है (2कुरि.5:14–15; गला. 2:20; 1यूह.3:16)।

''अपने षरीरों को''

मसीहत यूनानी तर्कषास्त्रों से बहुत ही अलग है जो सोचते हैं कि षरीर बुरा है। यह परीक्षाओं का क्षेत्र है पर नैतिक रूप से यह पक्षहीन है। षब्द ''षरीर'' आयत 2 में ''मन'' के सदृष्य प्रतित होता है। विष्वासियों को अपने पूर्ण अस्तित्व को परमेष्वर के सामने सर्मपण करना चाहिए (व्यव.6:5; 1कुरि.6:20) जैसे उन्होंने पहले इस पाप के लिए सर्म्पित किया था (रोमियों 6)।

''जीवित''

यह यहूदी और अन्यजातिय मन्दिरों में चढ़ाए जाने वाले मृत बलिदानों के पूरी तरह से विपरीत था (रोमियों.6:13; गला.2:20)।

''और पवित्र बलिदान''

षब्द ''पवित्र'' का अर्थ है ''परमेष्वर के लिए अलग किया हुआ''। इस षब्द का इस संदर्भ में केन्द्र विष्वासी का षुद्धिकरण और परमेष्वर के उद्देष्य के लिए प्रयोग किए जाने के लिए उपलब्धि से है।

विषेश षीर्शक : पवित्र

क. पुराने नियम में प्रयोग

1) इस षब्द *(कादोश)* की व्युत्पत्ति अनिष्चित है, सम्भवतः कनानी है। यह सम्भव है कि मूल का एक भाग (*केड*) का अर्थ है

''बाँटना''। यह ''परमेष्वर के प्रयोग के लिए अलग करने'' की विख्यात परिभाशा का श्रोत है (कनानी संस्कृति से, व्यव.756; 14:2, 21; 26:19)।

2) यह धार्मिक वस्तुओं, स्थानों, समयों और व्यक्तियों से सम्बन्धित है। यह उत्पत्ति में प्रयोग नहीं किया गया, परन्तु निर्गमन, लैव्यव्यवस्था और गिनती में सामान्य बन गया।

3) भविश्यद्वक्ताओं के साहित्य (विषेशकर यषायाह और होषे) में पहले प्रस्तुत किए गए व्यक्तिगत तत्व, परन्तु ज़ोर नही पहले से आता है। यह परमेष्वर के स्वत्व को सम्बोधित करने का तरीका बन गया (यषा.6:3)। परमेष्वर पवित्र हैं उनका नाम यह प्रगट करता है कि उनका चरित्र पवित्र है। उनके लोग जो उनके चरित्र को जरूरतमन्द संसार पर प्रगट करते हैं (यदि वाचा का पलन विष्वास से करते हैं)।

4) परमेष्वर की दया और प्रेम वाचा, न्याय और स्वत्व चरित्र के धर्मषास्त्रीय विचारों सें अलग नहीं हैं। यहाँ पर परमेष्वर और अपवित्र, पतित, विद्रोही मानवजाति के बीच तनाव है। ''दयावान'' परमेष्वर और ''पवित्र'' परमेष्वर के सम्बन्ध के बारे में रॉबर्ट बी. ग्रीडलस्टोन की पुस्तक, सीनॉनिमस ऑफ द ओल्ड टैस्टामैन्ट, पृश्ठ. 112–113 में एक रूचीकर लेख है।

ख. नया नियम

1) नए नियम के लेखक इब्रानी विचारक थे (लूका को छोड़कर), परन्तु कोइनी यूनानी से प्रभावित थे (जो सैप्टूआजैन्ट है)। यह पुराने नियम का यूनानी अनुवाद है जो उनकी षब्द प्रयोगों को वष में रखता है, यूनानी षास्त्रीय साहित्य, विचार और धर्म नहीं।

2) यीषु पवित्र हैं क्योंकि वह परमेष्वर से हैं और परमेष्वर के समान हैं (लूका.1:35; 4:34; प्रेरित.3:14; 4:27, 30)। वह पवित्र और धर्मी हैं (प्रेरित.3:14; 22:14)। यीषु पवित्र हैं क्योंकि वह पापरहित हैं (यूह.8:46; 2कुरि.5:21; इब्रा.4:15; 7:26; 1पत.1:19; 2:22; 1यूह.3:5)।

3) क्योंकि परमेष्वर पवित्र हैं, उनके बच्चों को पवित्र होना चाहिए (लैव्य.11:44–45; 19:2; 20:7, 26; मत्ती.5:48; 1पत.1:16)। क्योंकि यीषु पवित्र हैं उनके अनुयायियों को पवित्र होना चाहिए (रोमियों.8:28–29; 2कुरि.3:18; गला.4:19; इफि.1:4; 1थिस्स. 3:13; 4:3; 1पत.1:15)। मसीही इसलिए बचाए गए कि वे मसीहसमानता में सेवा कर सकें।

''परमेष्वर को भावता हुआ''

यह पुराना नियम में सही बलिदान को व्यक्त करता है (रोमियों.12:2)। यह ''निर्दोश'' के विचार के समान है जब लोगों के लिए प्रयोग किया जाता है (उत्प.6:9; 17:1; व्यव.18:13; अय्य.1:1)।

एन ए एस बी ''जो तुम्हारी आराधना की आत्मिक सेवा है''

एन के जे वी ''जो तुम्हारी औचित्य सेवा है''

एन आर एस वी ''जो तुम्हारी आत्मिक आराधना है''

टी इ वी ''यह सच्ची आराधना है जो तुम अर्पित कर सकते हो''

जे बी ''एक तरह से यह सोच सकने वाले प्राणियों के योग्य है''

यह षब्द *(लोगीकोस)* *लोगीज़ोमाई* से लिया गया है जिसका अर्थ है ''सोच–विचार करना'' (मरकुस.11:31; 1कुरि.13:11; फिलि. 4:8)। इस संदर्भ में इसका अर्थ है सोच–विचार करना। पर यह षब्द 1पत.2:2 के समान ''आत्मिक'' के लिए भी प्रयोग किया गया है। इसका स्वत्व यह है कि जानबूझकर अपने अस्तित्व का बलिदान करना बनाम मृत या परम्परागत तौर पर मृत जानवर का बलिदान। परमेष्वर प्रेम और सेवा में हमारा जीवन चाहते हैं, कानूनी प्रक्रियाऐं नहीं जो हमारे प्रतिदिन के जीवन को प्रभावित न कर सकें।

12:2

''सदृष्य न बनो''

आयत 2 में विरोधाभास है फिलि.2:6–8 के समान जहाँ पर बाहरी परिवर्तन (षेकेमा, 2:8) और अन्दरूनी अपरिवर्तित स्वत्व (*मॉर्फी,* 2:6–7) के बीच अन्तर है। विष्वासियों को उत्साहित किया जा रहा है कि वे इस पतित संसार के समान न बदलें (विद्रोह का पुराना युग) जिसमें वे अब भी षारीरिक रूप भागी हैं परन्तु अब विपरीतरूप से मसीहसमानता में बदलना है (पवित्र आत्मा का नया युग)।

''इस संसार के''

वास्तविकता में यह षब्द है ''युग''। यहूदियों ने दो युग देखे (मत्ती.12:32; मरकुस.10:30; लूका.20:34–35), अभी का बुरा युग (गला.1:4; 2कुरि.4:4; इफि.2:2) और आने वाला युग (मत्ती.28:20; इब्रा.1:3; 1यूह.2:15–17)। विष्वासी तनाव भरे समय में जी रहे हैं जहाँ पर आष्चर्य पूण तरह से इन युगों को फाँदा गया है। मसीह के दो आगमनों के कारण, विष्वासी ''है भी और अभी नहीं आया'' के परमेष्वर के राज्य वर्तमान है और आने वाला है के तनाव में जी रहे हैं।

विषेश षीर्शक : युग और आने वाला युग

पुराने नियम के भविश्यद्वक्ताओं ने भविश्य को वर्तमान के विस्तार के द्वारा देखा। उनके लिए भविश्य भौगोलिक इस्राएल का पुनः र्निमाण था। उन्होंने नया दिन भी देखा (यषा.65:17; 66:22)। स्वेच्छा से लगातार इब्राहिम के वंष द्वारा यहोवा को त्यागने (बन्धुवाई के बाद भी) के साथ ही पुराने नियम और नए नियम के बीच के यहूदियों के भविश्यदर्षी पुस्तकों आ उत्थान हुआ (1हनोक, 4एज्रा, 2कारूख)। ये लेख दो युगों के अन्तर का वर्णन करने लगे : अभी का बुरा युग जो षैतान के अधीन है और धार्मिकता का आने वाला युग जो आत्मा के अधीन होगा और मसीह द्वारा षुरू किया जाएगा (अक्सर प्रभावषाली योद्धा)।

धर्मषास्त्र के इस क्षेत्र (भविश्य सम्बन्धी) में स्वभाविक उन्नति है। धर्म विज्ञानी इसे ''प्रगतिषील प्रकाषन'' कहते हैं। नया नियम संसार के वास्तविक दो युगों को प्रमाणित करता है (अस्थाई बहुदेववाद)।

यीषु	पौलुस	इब्रानीयों
मत्ती.12:32	रोमियों.12:2	1:2
मत्ती.13:22, 29	1कुरि.1:20; 2:6, 8; 3:18	6:5
मरकुस.10:30	2कुरि.4:4	11:3
लूका.16:8	गला.1:4	
लूका.18:30	इफि.1:21; 2:1, 7; 6:12	
लूका.20:34–35	1तीमु.6:17	
	2तीमु.4:10	
	तीत.2:12	

नए नियम के धर्मषास्त्र में इन दोनों यहूदी युगों को फाँदा गया है मसीह के दो आगमानों जिनकी प्रतीक्षा न की गई और भूला दिया गया हो के अनुमानों के कारण। यीषु का देहधारण ने पुराने नियम के नए युग की षुरूवात को पूरा किया। जबकि पुराने नियम ने उनके आगमन को एक न्यायी और विजेता के रूप में देखा, फिर भी वह पहली बार दुःख उठाने वाले दास (यषा.53), नम्र और दीन (जक.9:9) के रूप में आए। वह सामर्थ के साथ लौटेंगे जैसे पुराना नियम बताता है (प्रका.19)। इन दो–स्तरों को पूरे होने ने वर्तमान राज्य (षुरू किए गए), परन्तु भविश्य (पूरी तरह से नहीं आया) को जन्म दिया। यह नए नियम का ''है पर अभी नहीं'' का तनाव है।

''बदलता जाए''

विष्वासियों को बदलना आवष्यक है केवल जानकारी होना ही काफी नहीं है। इसका व्यकरण प्रस्तुत करता है ''लगातार स्वयं को बदलते जाओ''। यह आयत 2[क] के ''समान'' के लिए भी सच है। इसी के समान विरोधाभास के लिए यहे.18:31 (मनुश्य का सम्पर्ण और कर्म) की तुलना यहे.36:26–27 (ईष्वरीय वरदान) से कीजिए। दोनों ही आवष्यक हैं।

इसी षब्द के रूप ''रचा गया'' का प्रयोग यीषु के परिर्वतन के लिए प्रयोग किया है (मत्ती.17:2), जहाँ पर उनका सच्चा स्वत्व प्रगट हुआ। उद्धार के बाद, पवित्र आत्मा के अन्दर निवास करने के द्वारा, विष्वासियों के पास नया दृश्टिकोण आ जाता है (इफि.4:13, 23; तीत.3:5)। यह नया बाइबलीय दृश्टिकोण, पवित्र आत्मा के अन्दर निवास करने के द्वारा, ही नए विष्वासियों के मन और जीवनषैली को बदल देता है। विष्वासी वास्तविकता की ओर बिलकुल ही अलग तरह से देखते हैं क्योंकि उनके मन पवित्र आत्मा के द्वारा उत्साहित किए जाते हैं। एक नया छुड़ाया हुआ और आत्मा द्वारा चलाए गए मन का परिणाम नई जीवनषैली होती है।

विषेश षीर्शक : नया करना (अनाकाइनोसिस)

इस यूनानी षब्द के इसके विभिन्न रूपों में (*अनाकाइनो, अनाकाइनीज़ो*) के दो आधारभूत अर्थ हैं।

1) ''किसी वस्तु को नया और अलग बनने में कार्य करना (उत्तम)'' – रोमियों.12:2; कुलु.3:10

2) ''पीछले उत्तम स्तर में बदलने में कार्य करना'' – 2कुरि.4:16; इब्रा.6:4–6

(लोउ और नीडा की ग्रीक–इग्लिष लैक्सीकन, भाग–1, पृश्ठ.157, 594 से लिया गया है)

माऊल्टोन एण्ड मीतीगन, द वकाबलरी ऑफ द न्यू टैस्टामैन्ट, कहते हैं कि यह षब्द *(अनाकाइनोसीस)* पौलुस से पहले यूनानी साहित्य में नहीं मिलता। पौलुस ने षायद इस षब्द को स्वयं षुरू किया हो (पृश्ठ.34)।

फ्रेन्क स्टैग, न्यू टैस्टामैन्ट थियोलौजी, में इस पर एक रूचीकर टिप्पणी है।

'' नया जन्म और पुनः नया करना परमेष्वर का है। अनाकाइनोसीस षब्द जो ''पुनः नया करने'' के लिए प्रयोग किया गया है वह कार्य के लिए प्रयोग की गई संज्ञा है, और यह नए नियम में प्रयोग किया गया है, विषेशण रूपों के साथ, लगातार नया करने के लिए, जैसा कि रोमियों.12:2 में, ''परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए'' और 2कुरि.4:16 में, ''तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है''। कुलु.3:10 वर्णन करता है ''नया मनुश्य'' के बारे में ''जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है''। इस तरह ''नया मनुश्य'', ''जीवन का नयापन'', ''नया जन्म'' या ''नया करना'' चाहे कैसे भी नाम दें, परमेष्वर अनन्त जीवन के देने वाले और पालन करने वाले परमेष्वर की ओर संकेत करता है जो इसे षुरू करते और बरकरार रखते हैं'' (पृश्ठ.118)।

''जिस से तुम परमेश्वर की भली,
और भावती,
और सिद्ध इच्छा अनुभव से
मालूम करते रहो''

षब्द (*डोकीमाज़ो*) इस अर्थ में प्रयोग किया गया है ''प्रमाणित करने के नज़रीए से परिक्षा'' देखिए विषेश षीर्शक 2:18।

परमेष्वर की इच्छा यह है कि हम मसीह द्वारा उद्धार पाऐं (यूह.6:39–40), और फिर मसीह के समान जीएं (रोमियों.8:28–29; गला.4:19; इफि.1:4; 4:13, 15; 5:17–18)। मसीहियों की प्रमाणिकता इस बात पर आधारित है :

1) भरोसेमन्द परमेष्वर के वायदों पर

2) अन्दर निवास करने वाली पवित्र आत्मा (रोमियों.8:14–16)

3) विष्वासियों का बदला हुआ और बदलता हुआ जीवन (याकूब और 1यूहन्ना) ''फल नहीं, जड़ नहीं'' (मत्ती.13:1–9, 19–23)।

''परमेष्वर की इच्छा क्या है''

देखिए दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : परमेष्वर की इच्छा (थेलेमा)

यूहन्ना रचित सुसमाचार

1) यीषु पिता की इच्छा पूरी करने आए (यूह.4:34; 5:30; 6:38)

2) उन्हें अन्तिम दिन जिला उठाऊँ जिन्हें पिता ने पुत्र को दिया है (यूह.6:39)

3) ताकि सभी पुत्र पर विष्वास करें (यूह.6:29, 40)

4) प्रार्थनाओं के उत्तर परमेष्वर की इच्छा को पूरा करने से सम्बन्धित हैं (यूह.9:31; 1यूह.5:14)

सदृष्य सुसमाचार

1) परमेष्वर की इच्छा को पूरा करता महत्वपूर्ण है (मत्ती.7:21)

2) परमेष्वर की इच्छा पूरी करने से एक मसीह का भाई या बहन बनते है (मत्ती.12:5; मरकुस.3:35)

3) यह परमेष्वर की इच्छा नहीं है कि कोई नाष हो (मत्ती.18:14; 1तीमु.2:4; 2पत.3:9)

4) यीषु के लिए कलवरी पिता की इच्छा थी (मत्ती.26:42; लूका.22:42)

पौलुस के पत्र

1) सभी विष्वासियों की सेवा और परिपक्वता (रोमियों.2:1–2)

2) विष्वासी इस बुरे युग से छुड़ाए गए हैं (गला.1:4)

3) परमेष्वर की इच्छा उनकी छुटकारे की योजना थी (इफि.1:5, 9, 11)

4) विष्वासी पवित्र आत्मा से भरे जीवन को जीते और अनुभव करते हैं (इफि.5:17)

5) विष्वासी परमेष्वर के ज्ञान से भरे हैं (कुलु.1:9)

6) विष्वासी सिद्ध और पूर्ण बनाए जाते हैं (कुलु.4:12)

7) विष्वासी षुद्ध किए गए (1थिस्स.4:3)

8) विष्वासी हर बातों में धन्यवाद देते हैं (1थिस्स.5:18)

पतरस के पत्र

1) विष्वासी सही करते हैं (सरकारी अधिकारियों के प्रति सर्म्पित) और इसके द्वारा मुर्ख व्यक्तियों को षान्त करते हैं (1पत. 2:15)

2) विष्वासी दुःख उठाते हैं (1पत.3:17; 4:19)

3) विष्वासी स्वयं पर केन्द्रीत जीवन नहीं जीते (1पत.4:2)

यूहन्ना के पत्र

1) विष्वासी हमेषा बने रहेंगे (1यूह.2:17)

2) उत्तर प्राप्त प्रार्थनाओं की विष्वासियों की कुन्जी (1यूह.5:14)

''वह जो भली, और भावती, और सिद्ध है''

यह उद्धार के बाद विष्वासियों के परमेष्वर की इच्छा को प्रगट करता है (फिलि.4:4–9)। प्रत्येक विष्वासियों के लिए परमेष्वर का लक्ष्य है अभी मसीह के समान परिपक्वता (मत्ती.5:48)।

''सिद्ध'' इस षब्द का अर्थ है ''परिपक्व, दिए गए कार्य को पूरा करने के लिए पूरी तरह से षिक्षित, पका हुआ, पूर्ण''। इसका अर्थ ''पापरहित'' नहीं है। यह प्रयोग किया जाता था (1) टुटे हुए हाथ और पैरों के लिए जो पूरी तरह से चंगे हो चुके है और काम में लाए जा सकते हैं; (2) मछली पकड़ने के जाल जो फट चुके थे पर ठीक किए गए और अब मछली पकड़ने के लिए प्रयोग किए जा सकते हैं; (3) चूज़े जो अभी बड़े हो चुके हैं और बाज़ार में मास के रूप में बेचे जा सकते हैं; (4) पानी जहाज़ जो यात्रा के लिए तैयार हैं।

रोमियों.12:3–8

3 क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुम में से हर एक से कहता हूँ, कि जैसा समझना चाहिए, उस से बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार बाँट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे।

4 क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं।

5 वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं।

6 और जब कि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें विभिन्न वरदान मिले हैं, तो जिस को भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे।

7 यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा रहे।

8 जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता से दे, जो अगुआई करे, वह उत्साह से करे, जो दया करे, वह हर्ष से करे।

12:3

आयत 1–2 ''नए मन'' की स्वराघात करने की आवष्यकता को प्रगट करता है। आयत 3 में षब्द ''समझ'' का चार बार प्रयोग किया गया है। जॉन्डरवन स्टडी गाईड कॉमेन्ट्री, रोमन्स, ब्रूस कॉर्ले और करटीस वाउघान यह निरिक्षण करते हैं :

''विस्तारपूर्ण सोचना...सही सोचना...उद्देष्यपूर्ण सोचना...गम्भीरतापूण सोचना'' पृश्ठ.138। यह चित्रण महत्वपूर्ण है।

यह आयत 11:13–24 के समान प्रगट करता है (1) रोम की कलीसिया में विष्वास करने वाले यहूदियों और अन्यजातियों के बीच तनाव या (2) यह तथ्य कि पौलुस ने रोमियों की पत्री कुरिन्थ से लिखी (अपनी तीसरी मिष्नरी यात्रा के अन्त में) जहाँ उनका सामना अहंकारी और अपनी प्रषंसा करने वाले विष्वासियों से हुआ।

''जो अनुग्रह मुझे दिया गया है उसके द्वारा''

भूतकाल में अनुग्रह परमेष्वर से आया, पूर्ण कार्य (दमिष्क मार्ग में सामना)। इस संदर्भ में ''अनुग्रह'' आत्मिक वरदान से सम्बन्धित है (रोमियों.15:15; 1कुरि.3:10; 15:10; गला.2:9; इफि.3:7–8), धार्मिकता का वरदान नहीं (रोमियों 4)। यह पौलुस के परिवर्तन और अन्यजातियों का प्रेरित होने के लिए बुलाए जाने को प्रगट करता है (प्रेरित.9:15; रोमियों.1:1, 5; गला.1:15–16; 2:7–8; इफि. 3:1–2, 8; 1तीमु.2:7; 2तीमु.4:17)।

''मैं तुम में से हर एक से कहता हूँ''

आयत 3 की चेतावनी सभी विष्वासियों के लिए है केवल मसीही अगुवों के लिए नहीं।

''कोई भी अपने को बढ़कर न समझे''

देखिए विषेश षीर्शक : पौलुस द्वारा *हुपर* मिश्रित षब्दों का प्रयोग 1:30।

''जैसा परमेष्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार बाँट दिया है''

विष्वासी अपने आत्मिक वरदानों का चुनाव नहीं करते (1कुरि.12:11; इफि.4:7)। वे पवित्र आत्मा द्वारा उद्धार के समय दिए जाते हैं सब के भले के लिए (1कुरि.12:7)। आत्मा के वरदान श्रेश्ठता के चिन्ह नहीं हैं पर कमर पर बन्धा हुआ गमच्छा है जो मसीह की देह, कलीसिया की सेवा करने के लिए दिया गया है।

''विष्वास का परिमाण''

ये एक के अपने वरदान में प्रभावषाली रूप से कार्य करने की योग्यता को प्रगट करता है (रोमियों.12:6)। स्वस्थ रहने के लिए वरदानों को आत्मा के फल के आधार पर प्रयोग करना चाहिए (रोमियों.12:9–12; गला.5:22–23)। वरदान हैं यीषु की सेवकाई उनके अनुयायियों के बीच में बाँटी गई, जबकी फल मसीह का मन है। प्रभावषाली सेवकाई के लिए दोनों ही आवष्यक हैं।

12:4

यह पौलुस के लेखों में सामान्य रूपक है। मनुश्य के देह के अंगों का एक दूसरे पर निर्भर रहना कलीसिया के वरदान की व्यख्या करता है (1कुरि.12:12–27; इफि.1:23; 4:4, 12, 16; 5:30; कुलु.1:18, 24; 2:19)। मसीहत सहभागिता और व्यक्तिगत दोनों है।

12:5

''हम, जो बहुत हैं,
मसीह में एक देह हैं''

यह आयत विष्वासियों की एकता और विभिन्नता पर ज़ोर देता है। यह कलीसिया में आत्मिक वरदानों के प्रति तनाव है। प्रेम का अध्याय 1कुरि.13 वरदानों में विभिन्नता के तनाव की चर्चा करता है (1कुरि.12 और 14)। मसीही स्पर्धा में नहीं हैं, परन्तु सहभागिता में हैं।

12:6–8

यह आयत यूनानी भाशा में एक ही वाक्य है जिसमें दो कृदन्त हैं पर कोई क्रिया नहीं। इसका अनुवाद ''आओ हम प्रयोग करें'' के रूप में किया गया है।

12:6

''वरदान...अनुग्रह''

षब्द ''वरदान'' *(करीस्मा)* और ''अनुग्रह'' *(करीस)* में एक ही यूनानी मूल षब्द है जिसका अर्थ है ''मुफ्त में देना''। देखिए नोट 3:24। आत्मा के वरदानों की सूची 1कुरि.12; रोमियों.12; इफि.4 और 1पत.4 में दी गई है। सूची और उनके क्रम समान नहीं हैं, वे प्रतिनिधि हैं, परिपूर्णता नहीं। बाइबल विष्वासियों को इस बात की जानकारी नहीं देती कि वे कैसे अपने वरदानों को पहचानें। इसके बारे में गैरबाइबलीय मसीही बुद्धि, इन्टर वारसीटी प्रैस की पुस्तिका जो कि पॉल लीटल द्वारा लिखी गई है जिसका नाम है ''परमेष्वर की इच्छा को प्रमाणित करना'' में पाई जाती है। परमेष्वर की इच्छा को जानने के निर्देषेन ही एक व्यक्ति की प्रभावषाली सेवकाई के क्षेत्र को भी जानने में सहायता करते हैं। यह जानना कि विष्वासियों को वरदान मिला है अधिक महत्वपूर्ण है इसकी जगह कि कैसे और किस क्षेत्र में उन्हें वरदान मिला है।

''यदि''

यह *एईटे* (रोमियों.12:6, 7–दो बार, 8) है जिसका अनुवाद ''यदि...यदि'' के अर्थ में किया गया है। इस आयत में इसके बाद कोई क्रिया षब्द नहीं है (1कुरि.3:22; 8:5; 2कुरि.5:10), पर अक्सर इसके बाद वर्तमान सूचक षब्द का प्रयोग किया गया है (1कुरि.12:26; 2कुरि.1:6) और इसलिए यह प्रथम श्रेणी षर्त वाक्य है जो आत्मिक वरदानों के होने की कल्पना करता है।

''भविश्यद्वाणी''

यह पुराने नियम के समान परमेष्वर द्वारा प्रकाषन पाए हुए संदेष को प्रगट नहीं करता। पुराने नियम में भविश्यद्वाक्ताओं ने वचन (पवित्र षास्त्र) लिखे। नए नियम में यह परमेष्वर के सत्य की घोशणा करने को कार्य था। इसमें पूर्वानुमान भी षामिल है (प्रेरित. 11:27–28; 21:10:11)। केन्द्र नया विशय नहीं है पर सुसमाचार को वर्णन करना है और आज के दिन में इसे कैसे लागु कर सकते हैं। यह षब्द में तरल पदार्थ है। यह विष्वासियों द्वारा किए गए कार्य को प्रस्तुत कर सकता है (1कुरि.14:1, 39) और विषेश आत्मिक वरदान को प्रगट कर सकता है (1कुरि.12:28; 13:28; इफि.4:11)। यह तरल पदार्थ पौलुस के कुरिन्थियों के पत्र में भी देखा जा सकता है जो इसी समय लिखा गया है (1कुरि.12:10, 2; 13:8; 14:1, 5, 29, 39)।

विषेश षीर्शक : नए नियम की भविश्यद्वाणी

क. यह पुराना नियम की भविश्यद्वाणी के समान नहीं है, जिसमें यहोवा द्वारा प्रेरित प्रकाषन में रब्बीयों की विचारधारा षामिल होती थी (प्रेरित.3:18, 21; रोमियों.16:26)। केवल भविश्यद्वक्ता ही वचन लिख सकते थे।

1) मूसा को भविश्यद्वक्ता कहा गया (व्यव.18:15–21)।

2) इतिहास की पुस्तकों (यहोषू–राजा {रूत को छोड़कर}) को ''पूर्वकालिक भविश्यद्वक्ता'' कहा गया (प्रेरित.3:24)।

3) परमेष्वर से जानकारी के श्रोत के रूप में भविश्यद्वक्ताओं ने महायाजक से स्थान को ले लिया (यषायाह–मलाकी)।

4) इब्रानी कनान का दूसरा विभाजन ''भविश्यद्वक्ताओं की पुस्तक'' है (मत्ती.5:17; 22:40; लूका.16:16; 24:25, 27; रोमियों.

3:21)।

ख. नया नियम में यह विचार विभिन्न तरह से प्रयोग किया गया है।

1) पुराने नियम के भविश्यद्वक्ताओं की ओर और उनके संदेष की ओर संकेत करते हुए (मत्ती.2:23; 5:12; 11:13; 13:14; रोमियों.1:2)

2) एक व्यक्ति के लिए संदेष बजाए समूह के (पुराने नियम के भविश्यद्वक्ता प्रार्थमिक रूप से इस्राएल से बात करते थे)।

3) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले (मत्ती.11:9; 14:5; 21:26; लूका.1:76) और यीषु को परमेष्वर के राज्य का प्रचार करने वाले के रूप में प्रस्तुत करके (मत्ती.13:57; 21:11, 46; लूका.4:24; 7:16; 13:33; 24:19)। यीषु ने भी यह दावा किया कि वह भविश्यद्वक्ताओं से बड़े हैं (मत्ती.11:9; 12:41; लूका.7:26)।

4) नए नियम में बाकी भविश्यद्वक्ता

क) यीषु का षुरूवाती जीवन जिसे लूका के सुसमाचार में लिखा गया है (जो हैं मरियम की यादें)

(1) इलीषिबा (लूका.1:41–42)

(2) जकरयाह (लूका.1:67–79)

(3) षमौन (लूका.2:25–35)

(4) हन्नाह (लूका.2:36)

ख) ताने देने वाले पूर्वानुमान (काइफा, यूह.11:51)

5) जो सुसमाचार की घोशणा करता है उसकी ओर संकेत करता है (1कुरि.12:28–29; इफि.4:11 में घोशणा करने वाले वरदानों की सूची)।

6) कलीसिया में आगे चले जा रहे वरदान की ओर संकेत (मत्ती.23:34; प्रेरित.13:1; 15:32; रोमियों.12:6; 1कुरि.12:10, 28–29; 13:2; इफि.4:11)। कई बार यह महिलाओं की ओर भी संकेत कर सकता है (लूका.2:36; प्रेरित.2:17; 21:9; 1कुरि.11:4–5)।

7) भविश्यद्वाणी की पुस्तक प्रकाषितवाक्य की ओर संकेत करता है (प्रका.1:3; 22:7, 10, 18, 19)।

ग. नए नियम के भविश्यद्वक्ता

1) वे पुराना नियम के भविश्यद्वक्ताओं के समान प्रेरित प्रकाषन नहीं देते (पवित्रषास्त्र)। वाक्यांष ''विष्वास'' के कारण यह कथन सम्भव है (पूर्ण सुसमाचार का विचार) जो प्रेरित.6:7; 13:8; 14:22; गला.1:23; 3:23; 6:10; फिलि.1:27; यहू.1:3, 20 में प्रयोग किया गया है।

यह विचार यहू.1:3 के पूरे वाक्यांष के द्वारा स्पश्ट होता है ''विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था''। ''एक ही बार सब को'' में विष्वास सत्य, सिद्धान्त, विचारों, दृश्टिकोण के बारे में मसीहत की षिक्षा को प्रगट करता है। यह ''एक ही बार'' इस बात पर ज़ोर डालता और धर्मषास्त्रीय रूप से प्रेरणा को नए नियम के लेखकों तक ही सीमित करने का बाइबलीय आधार है और बाकी लेखों को प्रकाषन नहीं मानता। नए नियम में बहुत से क्षेत्र हैं जो विवादास्पद, अनिष्चित और धुंधले हैं, परन्तु विष्वासी विष्वास द्वारा इस बात को प्रमाणित करते हैं कि विष्वास और व्यवहारिकता के लिए जो भी बातें ''आवष्यक'' हैं वे स्पश्ट और पूर्ण रीति से नए नियम दी गई हैं। यह विचार ''प्रकाषित त्रिकोण'' में अंकित हैं।

(क) परमेष्वर ने स्वयं को समय भाग के इतिहास में प्रगट किया है (प्रकाषन)

(ख) परमेष्वर ने कुछ मानव लेखकों को चुना अपने कार्यों को लिखने और उनका वर्णन करने के लिए (प्रेरणा)

(ग) उन्होंने अपनी आत्मा दी है कि लोगों के मन और हृदय खुल जाएं इन लेखों को समझने के लिए – पूरी तरह से नहीं पर पर्याप्त तौर पर कि उद्धार पा सकें और प्रभावषाली मसीही जीवन जी सके (प्रकाष)

इसका बिन्दु पवित्र षास्त्र के लेखकों की प्रेरणा तक सीमित है। दूसरी कोई भी अधिकारपूर्ण लेख, दर्षन या प्रकाषन नहीं हैं। बाइबलीय कनान बन्द कर दिया गया है। हमारे पास वे सारे सत्य हैं जिनसे हम परमेष्वर का सही तरह से प्रतिउत्तर दे सकते हैं।

यह हम अच्छी तरह से बाइबल के लेखकों की सहमती बनाम इमानदार और भक्त विष्वासियों की असहमती में देख सकते हैं। आज के लेखकों और वक्ताओं का अगुवाई का उतना स्तर नहीं है जो बाइबल के लेखकों का था।

2) कुछ बातों में नए नियम के लेखक पुराने नियम के लेखकों के समान हैं।

(क) भविश्य घटनाओं के बारे में बताना (पौलुस, प्रेरित.27:22; अगबुस, प्रेरित.11:27–28; 21:10–11; दूसरे भविश्यद्वक्ता जिनका नाम नहीं दिया गया, प्रेरित.20:23)

(ख) न्याय की घोशणा (पौलुस, प्रेरित.13:11; 28:25–28)

(ग) भविश्य में होने वाली घटना को नमूने के रूप में प्रगट करना (अगबुस, प्रेरित.21:11)

3) उन्होंने सुसमाचार की सत्यता का प्रचार भविश्य बताने के समान किया (प्रेरित.11:27–28; 20:23; 21:10–11), परन्तु यह उनका प्राथमिक कार्य नहीं था। 1कुरिन्थियों की पुस्तक में भविश्यवाणी आधारभूत तौर पर सुसमाचार बाँटना है (1कुरि.14:24, 39)।

4) यह पवित्र आत्मा के समकालिक माध्यम थे नई परिस्थितियों, संस्कृतियों और समय सीमा में परमेष्वर के वचन की व्यवहारिकता और समकालीनता को प्रगट करने के लिए (1कुरि.14:3)।

5) वे पौलुस की षुरूवाती कलीसियाओं में कार्यषील थे (1कुरि.11:4–5; 12:28, 29; 13:29; 14:1, 3, 4, 5, 6, 6, 22, 24, 29, 31, 32, 37, 39; इफि.2:20; 3:5; 4:11; 1थिस्स.5:20) और यह *डिडाके* (पहली सदी के अन्त और दूसरी सदी में समय निष्चित नहीं है) में इसके बारे में चर्चा की गई है और मॉन्सटिसिज़म में दूसरी सदी और तीसरी सदी में उत्तरी अफ्रिका में।

घ. क्या नए नियम के वरदान रूक हो चुके हैं?

1) इस सवाल का उत्तर देना कठिन है। यह वरदान के उद्देष्य को स्पश्ट करने में सहायता करता है। क्या वे सुसमाचार के प्रारम्भिक प्रचार को साबित करने के लिए थे या फिर क्या वे कलीसिया की अपनी सेवा या खोए हुए संसार की सेवा के लिए आगे भी दिए गए हैं?

2) क्या कोई कलीसिया के इतिहास को या फिर नए नियम को इस सवाल का उत्तर देने के लिए देखता है? नए नियम में इस बारे में कोई भी प्रगटिकरण नहीं है कि ये आत्मिक वरदान अस्थाई थे। जो इस विशय की चर्चा के लिए 1कुरि.15:8–13 का प्रयोग करते हैं वे इस मूलपाठ के उद्देष्य का दुरूपयोग करते हैं क्योंकि यह बताता है कि सब कुछ टल जाएगा पर प्रेम नहीं।

3) मैं यह कहने के लिए मजबूर हूँ कि नए नियम से ही, कलीसिया के इतिहास से नहीं, विष्वासियों को यह प्रमाणित करना चाहिए कि वरदान सतत हैं। पर मैं यह विष्वास करता हूँ कि संस्कृति अनुवाद को प्रभावित करती है। कुछ प्रगट मूलपाठ अब व्यवहारिक नहीं हैं (उदा. पवित्र चुम्बन, महिलाओं को घुंघट पहनना, कलीसिया का घरों में मिलना इत्यादि)। यदि संस्कृति मूलपाठ को प्रभावित करती है तो कलीसिया का इतिहास क्यों नहीं?

4) यह ऐसा सवाल है जिसका पूरी तरह से उत्तर नहीं दिया जा सकता। कुछ विष्वासी यह प्रमाणित करेंगे कि ''यह रूक चुके हैं'' और कुछ ''यह नहीं रूक सकते''। इस क्षेत्र में भी अन्य अनुवाद की चर्चा विशयों के समान ही हृदय ही कुन्जी है। नया नियम विरोधाभासी और संस्कृति से जुड़ा हुआ है। दुविधा यह निर्णय करना है कि कौन से मुलपाठ संस्कृति और

इतिहास से प्रभावित हैं और कौन से अनन्त हैं (फी एण्ड स्ट्राउट, हाऊ टू रीड द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ, पृश्ठ.14–19 और 69–77)। यहाँ पर स्वतंत्रता और जिम्मेदारी के बारे में चर्चा की गई है, जो रोमियों.14:1–15:13 और 1कुरि.8–10 में पाया जाता है और बहुत ही महत्वपूर्ण है। हम सवाल का उत्तर कैसे देते हैं यह दो तरह से महत्वपूर्ण है।

(क) हरेक विष्वासी को विष्वास के साथ उस प्रकाष में चलना है जो उनके अन्दर है। परमेष्वर हमारे हृदय और कार्य करने के उद्‌देष्य को देखते हैं।

(ख) प्रत्येक विष्वासी को दूसरे विष्वासियों को अपने विष्वास की समझ में चलने देना चाहिए। बाइबलीय बन्धनों में सहनषीलता होनी चाहिए। परमेष्वर चाहते हैं कि हम एक दूसरे से प्रेम करें जैसा उन्होंने किया।

5) इस चर्चा को समाप्त करने के लिए, मसीहत प्रेम और विष्वास का जीवन है, एक सिद्ध धर्मषास्त्रीय षिक्षा नहीं। परमेष्वर के साथ हमारा सम्बन्ध जो दूसरों के साथ हमारे सम्बन्ध को प्रभावित करता है राश्ट्रीय सिद्धता और निष्चित ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण है।

''उसके विश्वास के परिमाण के अनुसार''

यह आयत 3 से सीधे सम्बन्धित है, ''हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है '' (इफि.4:7)। यह बड़े संदर्भ से भी सम्बन्धित है कि कैसे विष्वासी अपने वरदानों का प्रयोग करते हैं। यह विष्वासियों के व्यवहार, उद्‌देष्य, और परमेष्वर द्वारा व्यक्तिगत तौर पर उन्हें दी गई सेवा में कार्य करने की उर्जा से सम्बन्धित है, जो वास्तव में गला.5:22–23 में सूचीबद्ध किया गया आत्मा का फल है।

12:7

एन ए एस बी ''यदि सेवा''

एन के जे वी, एन आर एस वी ''या सेवा, हमें इसे अपनी सेवा में लगाने दो''

टी इ वी ''यदि सेवा करनी है तो हम सेवा करेंगे''

जे बी ''यदि यह कर्मकांड के लिए है तो इसे कर्मकांड के लिए प्रयोग करो''

आधुनिक अनुवाद अलग अलग षब्दों का प्रयोग करते है क्योंकि इस यूनानी षब्द *(डायकोनीया)* का समानार्थ अंग्रेजी षब्द नहीं है। इसका अर्थ है (1) प्रयोगिक सेवा और (2) कर्मकांड (प्रेरित.6:1; 1कुरि.12:5, 28)। द एनालिटिकल ग्रीक लैक्सीकन, हारॉल्ड के माउल्टोन, इसे यूँ बयान करते हैं, ''कार्य, सेवा, और कार्यस्थान'' रोमियों.12:7; 1कुरि.12:5; कुलु.4:17; 2तीमु.4:5 (पृश्ठ.92)। संदर्भ का केन्द्रीय उद्‌देष्य दूसरे विष्वासियों की सहायता करना है।

''षिक्षक...षिक्षा''

यह वरदान *(डिडास्को)* 1कुरि.12:28 और 14:26 में लिखा गया है। यह प्रेरित.13:1 में भविश्यद्वक्ताओं के साथ जुडा हुआ है और इफि.4:11 में पासबानों के साथ। षुरूवाती कलीसिया ने इन वरदान पाए हुए लोगों को कई प्रभावषाली तरीकों से कार्य करते हुए देखा। प्रचार करते, भविश्यद्वाणी करते, सुसमाचार प्रचार करते और षिक्षा देते हुए सभी ने सुसमाचार बाँटा, पर भिन्न तरीकों और विशयों पर ज़ोर के द्वारा।

12:8

''उपदेष देता हो...उत्साह''

यह षब्द *(पाराकालेओ)* षिक्षा से सम्बन्धित है (1तीमु.4:13)। समभवतः यह वह कौषल है जिसके द्वारा सत्य जीवन में लागु किया जा सकता है। तब यह इफि.4:15, 16 के ''प्रेम से सत्य बोलना...कि देह प्रेम में उन्नति करती जाए'' से सम्बन्धित है।

''दान देनेवाला उदारता से दे''

देखिए दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : उदार, ईमानदार (हपलोटेस)

यह षब्द (***हपलोटेस)*** के दो विचार हैं ''उदार'' और ''ईमानदार''। यह रूपक दर्षन से जुड़ा हुआ है। पुराने नियम में आँख षब्द को उद्देष्य रूपक तौर पर दो तरह से प्रयोग किया गया है (1) बुरी आँखें (लोभी, व्यव.15:9; भ.सं.23:6) और (2) अच्छी आँखें (उदार, नीति.22:9)। यीषु ने इस प्रयोग का अनुसरण किया (मत्ती.6:22–23; 20:15)। पौलुस इस षब्द का प्रयोग दो अर्थों में करते हैं (1) ''भोलापन, ईमानदारी, षुद्धपन'' (2कुरि.1:12; 11:3; इफि.6:5; कुलु.3:22) और (2) ''स्वतंत्र'' (रोमियों.12:8; 2कुरि.8:2; 9:11, 13)।

''जो अगुवाई करे,
वह उत्साह से करे''

यह मसीही अगुवाई को प्रगट करता है, चाहे स्थानीय या दौरा करते समय।

''जो दया करे,
वह हर्ष से करे''

यह रोगी और जरूरतमंदों की सहायता को सम्बोधित करता है। विष्वास करने वाले समाज में सैद्धान्तिक प्रचार के साथ सामाजिक देखभाल के बीच कोई अन्तर नहीं है। ये सीक्के के दो पहलु हैं। कोई ''सामाजिक सुसमाचार'' नहीं है केवल सुसमाचार है।

चर्चा के लिए प्रष्न, आयत 1–8

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) अपने षरीर को जीवित बलिदान के रूप में प्रस्तुत करने में क्या षामिल है (12:1)?

2) क्या सभी विष्वासियों के पास आत्मिक वरदान होते हैं (रोमियों.12:3–8; 1कुरि.12:7)? यदि यह सच है तो क्या वो चुन सकते हैं कि उन्हें कौन सा चाहिए?

3) आत्मिक वरदानों का उद्देष्य क्या है?

4) क्या बाइबल में वरदानों की परिपूर्ण सूची है?

5) कोई कैसे अपने वरदान को पहचान सकता है?

प्रासंगिक निरिक्षण, आयत 9–21

क. इस भाग का उत्तम षीर्शक ''व्यक्तिगत सम्बन्ध के लिए मसीही निर्देषन'' होना चाहिए। यह प्रेम पर प्रयोगिक चर्चा है (मत्ती.5–7; 1कुरि.13; 1यूह.3:18; 4:7–21)।

ख. रोमियों के 12 अध्याय के विशय और रचना 1कुरि.12–13 अध्याय के विशय और रचना के समान हैं। आत्मिक वरदानों पर चर्चा करने के तुरन्त बाद घपण्ड के खिलाफ़ चेतावनी और प्रेम की प्रायोगिक जीवनषैली पर ज़ोर दिया गया है।

ग. संदर्भ इन बातों की चर्चा करता है

(1) दूसरे मसीहियों के साथ हमारा सम्बन्ध (रोमियों.12:9–13)। इसकी चर्चा विस्तार पूर्वक रोमियों.14:1–15:13 और 1कुरि.8:11 के बाद; 10:23–33 में की गई है।

(2) अविष्वासियों और सम्भवतः उन विष्वासियों के साथ हमारा सम्बन्ध जिनसे हमारा मतभेद है (रोमियों.12:14–21)। यह भाग यीषु के पहाड़ी उपदेष को प्रकट करता हुआ प्रतित होता है (मत्ती.5–7)।

(3) यह मूलपाठ प्रगतिषील जीवनषैली द्वारा प्रभावित है। उद्धार परमेष्वर के अनुग्रह का मसीह में और पवित्र आत्मा के उत्साह में मुफ्त वरदान है पर एक बार इसे ग्रहण कर लिया तो सब चीज़ों, संकल्प और जीवनषैली की माँग करता है। यीषु को ''प्रभु'' कहकर पुकारना रूपक नहीं है (लूका.6:46)।

ङ. पहले से चल रहे कार्य को रोकने के अर्थ में इस मूलपाठ में कई विभक्तिया प्रयोग की गई हैं, 12:14, 16 (दो बार), 17, 19, 21। मसीही स्वतंत्र रूप से जीवन बिता रहे हैं। एक विचार में पाप की व्याख्या इस प्रकार से भी की जा सकती है कि परमेष्वर द्वारा दिए गए वरदानों को उनकी सीमा से बाहर प्रयोग करना।

च. मसीहत ''खुली'' होनी चाहिए – खुला–मन, खुले–हाथ, खुला–हृदय, खुले–द्वार (याक.2)।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.12:9–13

9 प्रेम निष्कपट हो; बुराई से घृणा करो; भलाई में लगे रहो।

10 भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर मया रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो।

11 प्रयत्न करने में आलसी न हो; आत्मिक उन्माद में भरो रहो; प्रभु की सेवा करते रहो।

12 आशा मे आनन्दित रहो; क्लेश मे स्थिर रहो; प्रार्थना मे नित्य लगे रहो।

13 पवित्रा लोगों को जो कुछ अवश्य हो, उस में उन की सहायता करो; पहुनाई करने मे लगे रहो।

<u>*12:9*</u>

''प्रेम निष्कपट हो''

इस संदर्भ के यूनानी मूलपाठ में जोड़ने वाले षब्द नहीं है ***(एसीनडेटोन)*** जो कोइने यूनानी में सामान्य है। यह मत्ती.5 के पहाड़ी उपदेष के पीछे के इब्रानी व्यकरण रचना को प्रगट कर रहा है। यह व्याकरण रचना के प्रत्येक वाक्यांष को अकेले खड़े रहने वाले सत्य के रूप में ज़ोर देती है।

''कपट या पाखण्ड''

मंच का षब्द है जिसका अर्थ है ''मुखौटे के पीछे से बोलना''। प्रेम कोई खेल कार्य या झूठ नहीं होना चाहिए (2कुरि.6:6)। प्रेम विष्वासियों का चरित्र है (यूह.13:34—35; 15:12, 17; 1यूह.3:11, 18; 4:7—21) क्योंकि यह परमेष्वर का चरित्र है।

''बुराई से घृणा करो''

विष्वासियों को बुराई से आष्चर्य और घृणा होनी चाहिए (1थिस्स.5:21—22)। अक्सर हम उन परिणामों से आष्चर्यचकित हो जाते है जो हमारे जीवन को सीधे प्रभावित करते हैं।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''भलाई में लगे रहो''

एन आर एस वी ''जो भला है उसे दृढ़ता से पकड़े रहो''

टी इ वी ''जो भला है उसे पकड़े रहो''

एन जे बी ''जो भला है उससे चिपके रहो''

यह ''गोंद से चिपके रहने'' के विचार में प्रयोग किया गया है (सैप्टूआजैन्ट, उत्प.2:24; प्रेरित.8:29, फिलि.4:8; 1थिस्स.5:21—22)।

<u>*12:10*</u>

एन ए एस बी ''भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे से स्नेह रखो''

एन के जे वी '' भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर दया करो''

एन आर एस वी ''एक दूसरे को भाईचारे के प्रेम से स्नेह करो''

टी इ वी ''मसीहियों के समान एक दूसरे से अत्यधिक प्रेम करो''

जे बी ''एक दूसरे से इतना प्रेम करो जितना एक भाई को करना चाहिए''

यह मिश्रित यूनानी षब्द है (*फिलेओ + स्टोरजे*) जिसमें ''भाईचारे के प्रेम'' को ''पारिवारीक प्रेम'' के साथ जोड़कर नए नियम में प्रयोग किया गया है। मसीही एक ही परिवार हैं। हमें आज्ञा दी गई है कि हम एक दूसरे से प्रेम करें (1थिस्स.4:9)।

एन ए एस बी ''परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो''

एन के जे वी ''आदर में एक दूसरे को प्राथमिकता दो''

एन आर एस वी ''आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो''

टी इ वी ''उत्सुकता से एक दूसरे को आदर दो''

जे बी ''एक दूसरे के लिए अधिक आदर रखो''

विष्वासियों को बाकी वाचा के सदस्यों को स्वयं से अधिक महत्वपूर्ण समझना चाहिए (इफि.4:2; फिलि.2:3)।

12:11

एन ए एस बी ''प्रयत्न करने में आलसी न हो''

एन के जे वी ''प्रयत्न में आलसी न हो''

एन आर एस वी ''उत्साह में आलस मत करो''

टी इ वी ''मेहनत से कार्य करो और आलसी न हो''

जे बी ''परमेष्वर के लिए बिना थके परिश्रम से कार्य करो''

सच्चा प्रेम बहुत अधिक उर्जा उत्पन्न करता है (गला.6:9)।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''आत्मिक उन्माद में भरो रहो''

एन आर एस वी ''आत्मा में प्रज्वलित रहो''

टी इ वी ''भक्ति से भरे हुए हृदय के साथ''

जे बी ''आत्मा के उन्माद में''

वास्तव में इसका अर्थ है ''उबलना''। यह नया जन्म पाई हुई आत्मा या भीतर निवास करने वाली पवित्र आत्मा को प्रगट करता है (आर एस वी, प्रेरित.18:25; प्रका.3:15–16)।

''परमेष्वर की सेवा करने में''

यहाँ पर हस्तलेख भिन्नता है। यूनानी हस्तलेख के कुछ पष्चिमी परिवार (एम एस एस डी, एफ और जी) इसे ''समय में'' (*काएरोस*) पढ़ते है बजाए इसके कि ''परमेष्वर में'' (*कुरियोस*) पढ़ें। भिन्नता यह है कि जैसे ही अवसर मिलता है परमेष्वर और उनकी कलीसिया की सेवा करें (यूह.9:4; इफि.5:16)।

सभी संमभावनाओं में यह उलझन इसलिए है क्योंकि *कुरियोस* को या तो गलत समझा गया या पढ़ा गया। उत्तम और पुराने यूनानी हस्तलेख में ''परमेष्वर की सेवा करना'' लिखा गया है। यू एस बी में ''परमेष्वर'' को ''निष्चय'' का स्तर दिया गया है।

12:12

''आषा में आनन्दित रहो''

अक्सर ''आषा'' षब्द का प्रयोग दूसरे आगमन के सम्बन्ध में किया गया है (रोमियों.5:2)। यह आषा अंग्रजी के तात्पर्य इच्छा में नहीं है परन्तु नए नियम के तात्पर्य विषेश घटना में है, पर असीमित समय अन्तराल में। देखिए नोट 4:18 और 5:2।

''स्थिर रहो''

इस षब्द का अर्थ है ''कार्यषील, स्वेच्छा से, स्थिर धैर्य''।

''क्लेष में''

जैसे 5:3, 5 में ''आषा'' क्लेष के साथ सम्बन्धित है (*थेलीप्सीस*)। यह मसीह के अनुयायियों के लिए पतित संसार में कानून है (मत्ती.5:10–16; प्रेरित.14:22; रोमियों.8:17 के बाद; 2तीमु.3:12; 1पत.4:12 के बाद)। हमें इसकी न तो खोज करनी चाहिए न ही इसका त्याग करना चाहिए। देखिए विषेश षीर्शक : सताव या क्लेष 5:3।

''प्रार्थना मे नित्य लगे रहो''

प्रार्थना आत्मिक अनुषासन है और वह वरदान है जो परमेष्वर के कार्यषील हाथ को इतिहास में पहचानता है। विष्वासी प्रेमी स्वर्गीय पिता को प्रभावित कर सकते हैं। परमेष्वर ने स्वयं को अपने बच्चों की प्रर्थानाओं में सीमित करने का चुनाव किया है (प्रेरित.1:14; 2:42; 6:4; इफि.6:18–19; कुलु.4:2)। यह प्रार्थना को एक महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी बना देता है। देखिए क्लीन्टोन आरनॉल्ड द्वारा आत्मिक युद्ध के बारे में तीन महत्वपूर्ण प्रष्न, पृश्ठ.43–44, 187–188।

12:13

एन ए एस बी, एप आर एस वी ''संतों की आवष्यकता में उनकी सहायता करना''

एन के जे वी ''संतों की आवष्यकता में उनके लिए आवष्यक वस्तुऐं देना''

टी इ वी ''अपनी वस्तुओं को अपने जरूरतमंद संगी मसीहियों से बाँटो''

जे बी ''जो भी परमेष्वर के पवित्र जन जरूरत में है उनके साथ बाँटो''

यूनानी षब्द *कोईनोनिया* का अर्थ है ''साथ में संगति करना''। पौलुस के लिए इस षब्द के बहुत अर्थ हैं। इसमें दोनों बातें षामिल हैं सुसमाचार में संगति और षारीरिक आवष्यकता (गला.6:6)। यह मसीह के दुःख को बाँटने के लिए भी प्रयोग किया गया है (फिलि.3:8–10; 1पत.4:13) और पौलुस की भी (फिलि.4:14)। मसीह के साथ जुड़ने का अर्थ है हर स्तर में उनके लोगों से जुड़ना। देखिए विषेश षीर्शक : संत 1:7।

विष्वासियों को यीषु के नाम में अधिक परिश्रम करना चाहिए कि दूसरों के लिए भी हो (2कुरि.8:11–12; इफि.4:28)

विषेश षीर्शक : कोईनोनिया

षब्द ''संगति'' *(कोईनोनिया)* का अर्थ है

1) एक व्यक्ति के साथ नज़दिकी सम्बन्ध

क. पुत्र के साथ (1यूह.1:6; 1कुरि.1:9)

ख. आत्मा के साथ (2कुरि.13:13; फिलि.2:1)

ग. पिता और पुत्र के साथ (1यूह.1:3)

घ. दूसरे वाचा के भाई/बहनों के साथ (1यूह.1:7; प्रेरित.2:42; गला.2:9; फिले.1:17)

2) वस्तुओं या समूहों के साथ नज़दीकि सम्बन्ध

क. सुसमाचार के साथ (फिलि.1:5; फिले.1:6)

ख. मसीह के लहु के साथ (1कुरि.10:16)

ग. अन्धेरे के साथ नहीं (2कुरि.6:14)

घ. दुःखों के साथ (फिलि.3:10; 4:14; 1पत.4:13)

3) उदारता से तोहफे या दान देने के लिए (रोमियों.12:13; 15:26; 2कुरि.8:4; 9:13; फिलि.4:15; इब्रा.13:16)।

4) मसीह द्वारा परमेष्वर का अनुग्रह का वरदान, जो मनुश्य की संगति को पुनः परमेष्वर और उसके भाई/बहनों से स्थापित करता है।

यह मनुश्य से मनुश्य के सम्बन्ध को स्थापित करता है जो मनुश्य और सृश्टिकर्ता के सम्बन्ध से आया है। यह मसीही समाज की आवष्यकता और आनन्द पर ज़ोर देता है। क्रिया वाक्य इस मसीही अनुभव की षुरूवात और इसके प्रगतिषील होने पर ज़ोर देता है (रोमियों.1:3—दो बार, 6, 7)। मसीहत सहभागिता है।

''पहुनाई करने मे लगे रहो''

वास्तव में इसका अर्थ है ''पहुनाई में लगे रहना'' (देखिए नोट 14:19; 1तीमु.3:2; तीत.1:8; इब्रा.13:2; 1पत.4:9)। यह सेवा षुरूवाती कलीसिया में ''धर्मषालाओं'' के बुरे व्यवहार के कारण बहुत ही महत्वपूर्ण थी। प्राथमिक तौर पर यह दौरे पर आए मसीही सेवकों को रहने की जगह और भोजन देने के लिए प्रयोग किया गया है।

रोमियों.12:14—21

14 अपने सतानेवालों को आशीष दो; आशीष दो श्राप न दो।

15 आनन्द करनेवालों के साथ आनन्द करो; और रोनेवालों के साथ रोओ।

16 आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी न हो; परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो।

17 बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उन की चिन्ता किया करो।

18 जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।

19 हे प्रियो अपना पलटा न लेना; परन्तु क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा।

20 परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा।

21 बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई का जीत लो।

12:14

''अपने सतानेवालों को आशीष दो''

हमें इस षब्द ''आषीश'' से अंग्रेजी षब्द ''प्रषंसा'' मिला है (मत्ती.5:44; लूका.6:28; 1कुरि.4:12; याक.3:9—12; 1पत.3:9)। पी[46] (द चेस्टर बिआटी पापीरी) का हस्तलेख बी (वेटीकानुस), में ''तुम'' को छोड़ दिया गया है इस कथन को दूसरी तरह से प्रस्तुत करने के लिए, इसे सामान्य कथन के रूप मे प्रस्तुत किया गया है। सताव के लिए देखिए नोट 14:9।

''श्राप न दो''

इसका अर्थ है जो कार्य प्रगति में है उसे रोक दो। यह परमेष्वर के नाम को श्राप देने के लिए प्रार्थना में पुकारने को प्रगट करता है (1कुरि.12:3 के ही श्राप के समान)। यह गन्दी बात को प्रगट नहीं करता (इफि.4:29; 1पत.3:9)।

12:15

''आनन्द करनेवालों के साथ आनन्द करो;
और रोनेवालों के साथ रोओ''

मसीही एक परिवार हैं। विष्वासी किसी प्रतियोगिता में नहीं हैं पर उन्हें एक दूसरे को पारिवारीक प्रेम के साथ व्यवहार करना चाहिए। 12:14–21 के संदर्भ के अनुसार यह भी सम्भव है कि यह विष्वासियों द्वारा अविष्वासी समाज के साथ व्यवहार को भी दर्षाता हो और सांस्कृतिक अवसरों और परिस्थितियों को सुसमाचार सुनाने के अवसर के रूप में प्रयोग करें।

12:16

एन ए एस बी, एन के जे वी ''आपस में एक सा मन रखो''

एन आर एस वी ''एक दूसरे के साथ भाईचारे से जीवन बिताओ''

टी इ वी ''एक दूसरे का समान खयाल रखो''

जे बी ''सभी के साथ समान दया का व्यवहार करो''

आयत 16 को निम्न बातों के मतभेद के सम्बन्ध में भी देखा जा सकता है (1) रोम की कलीसिया के यहूदी और अन्यजातिय विष्वासी (रोमियों.11:13–24); (2) आर्थिक समूदायों के बिच प्राचीन मतभेद;(3) विभिन्न आत्मिक वरदान (4) पुर्खों से चले आ रह रीति–रिवाज़ और व्यक्तिगत प्राथमिकताएं...

''अभिमानी न हो;
परन्तु दीनों के साथ संगति रखो''

इसका अर्थ है जो कार्य पहले से चला आ रहा है उसे रोकना। ''दीन'' षब्द व्यक्तिवाचक और सामान्य दोनों के लिए प्रयोग किया जा सकता है। अगर यह सामान्य है तो इसका अनुवाद ''दीन कार्यों को ग्रहण करो'' हो सकता है और यदि व्यक्तिवाचक है तो इसका अनुवाद ''गरीब और दीन मनुश्यों के साथ संगति रखो'' हो सकता है।

''अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो''

इसका अर्थ है जो कार्य पहले से चला आ रहा है उसे रोकना (नीति.3:7; यषा.5:21; 1कुरि.10:12; गला.6:3)। विष्वासियों को स्वयं को दूसरे से श्रेश्ठ नहीं समझना चाहिए और न ही अविष्वासी समाज के साथ अहंकार से पेष आना चाहिए।

12:17

''बुराई के बदले किसी से बुराई न करो''

इसका अर्थ है जो कार्य पहले से चला आ रहा है उसे रोकना। यह परमेष्वर के ऊपर है कि वह चीज़ों को सही करें न कि विष्वासी के (नीति.20:22; 24:29; मत्ती.5:38–48; लूका.6:27; 1थिस्स.5:15; 1पत.3:9)।

''जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं,
उन की चिन्ता किया करो''

2कुरि.8:21; 1थिस्स.5:22; 1तीमु.3:7 में भी प्रयोग किया गया है। यह षायद सैप्टूआजैन्ट में नीति.3:4 की और संकेत कर रहा है। विष्वासी सुसमाचार के लिए अविष्वासियों की ओर आँख लगाए हुए जीवन बिताते हैं। हमें कुछ भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए

जिससे अविष्वासी को ठेस लगे या वह पराया हो जाए (1कुरि.9:19–23)। यहाँ तक कि हमारी गहरी भावना भी प्रेम से प्रगट की जानी चाहिए।

12:18

''जहां तक हो सके,
तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ
मेल मिलाप रखो''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। यह हमेषा विष्वासी का चुनाव नहीं है, परन्तु व्याकरण रचना बताती है कि यह अक्सर सम्भव है (मरकुस.9:50; 2कुरि.13:11; 1थिस्स.5:13)।

12:19

''अपना पलटा न लेना''

इसका अर्थ है जो कार्य पहले से चला आ रहा है उसे रोकना। परमेष्वर एक दिन सब ठीक करेंगे।

''क्योंकि लिखा है''

यह कथन प्रेरणा पाऐ हुए वचन की ओर संकेत करने का तरीका है। यह कथन ''परमेष्वर यूँ कहते हैं'' के सदृष्य है (1कुरि. 14:21; 2कुरि.6:17)। यह व्यव.32:35 से लिया गया है।

12:20

''परन्तु यदि तेरा बैरी''

यह तृतिय श्रेणी षर्त वाक्य है जिसका अर्थ है प्रभावषाली भविश्य कार्य। बैरी आएंगे।

''उसके सिर पर आग के अंगारों
का ढेर लगाएगा''

यह नीति.25:21–22 की ओर संकेत करता है। अनुवाद के सिद्धान्त निम्नलिखित हैं

1) यह सम्भवतः मिस्र की कहावत है जिसका अर्थ है कि बैरी को मित्र बनाने के लिए दया का कार्य उत्तम तरीका है। यह आज भी मसीही तरीका है बुराई के विरोध में (मत्ती.5:44)।

2) ''जलते हुए अंगारे'' का अर्थ है किसी के बुरे काम की षर्म जो कि दूसरे के प्रेम और क्षमा के प्रकाष में स्पश्ट दिखाई देती है (अम्ब्रोइस्टर, अगस्टीन और जेरोम)।

3) ऑरीगन और क्रिसोस्टम ने कहा यह मसीही दयाभाव को प्रगट करता है जो परमेष्वर को पष्चाताप न करने वालों को और भी कठोरता से दण्ड देने पर मजबूर करता है (द जेरोम बाइबल कॉमेन्ट्री, भाग.2, पृश्ठ.326)।

ऊपर के सिद्धान्त सिर्फ यही है। कुन्जी पौलुस का 12:21 में का कथन है।

12:21

''बुराई से न हारो परन्तु
भलाई से बुराई का जीत लो''

अन्याय के प्रति हमारा व्यवहार हमारे अन्दर की षान्ति और आनन्द को प्रगट करेगा। कड़ुवाहट आत्मिक कैन्सर है। विष्वासियों को इसे परमेष्वर को दे देना चाहिए।

''बुराई''

यह व्यक्तिवाचक है इसलिए बुरे व्यक्ति को सम्बोधित करता है या फिर यह सामान्य है तो बुराई को सामान्य तौर पर प्रगट करता है। यह नए नियम का सामान्य अनेकार्थता है (मत्ती.5:37; 6:13; 13:19, 28; यूह.17:15; 2थिस्स.3:3; 1यूह.2:13—14; 3:12; 5:18—19)।

चर्चा के लिए प्रष्न, आयत 9—21

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) इन आयतों में जितनी भी आज्ञाऐं हैं उन्हें अलग से लिखिए। यह महत्वपूर्ण सूची है कि प्रयोगिक प्रतिदिन की मसीही समानता में क्या षामिल है।

2) यह निष्चित करना क्यों इतना कठीन है कि कौन से आयत मसीहियों द्वारा विष्वासियों के साथ व्यवहार को प्रगट करते हैं और कौन से अविष्वासियों के साथ?

रोमियों –13

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
नियमों के प्रति आज्ञाकारीता	सरकार के अधीन रहो	मसीही और राज्य	राज्य के अधिकारियों के प्रति ज़िम्मेदारियाँ	अधिकारियों के अधीन
13:1–7	13:1–7	13:1–7	13:1–5	13:1–7
			13:6–7	
भाईचारे का प्रेम	अपने पड़ोसी से प्रेम करो	प्रेम व्यवस्था को पूरा करता है	एक दूसरे मे प्रति ज़िम्मेदारियाँ	प्रेम और युद्ध
13:8–10	13:8–10	13:8–10	13:8–10	13:8–10
मसीह के दिन के नज़दिक जाना	मसीह को पहनना	मसीह का दूसरा आगमन निकटवर्तित्व		ज्योति की संतान
13:11–14	13:11–14	13:11–14	13:11–13	13:11–14
			13:14	

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का ह्रदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद
2) दूसरा अनुच्छेद
3) तीसरा अनुच्छेद
4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि, आयत 1–7

क. जैसे अध्याय 12 प्राथमिक तौर पर मसीहियों उनके संगी विष्वासियों के साथ (12:9–13) और समाज (12:14–21) के बारे में चर्चा करता है, वैसे ही 13:1–7 प्राथमिक तौर पर मसीहियों और सरकार के बारे में चर्चा करता है। इन विशयों के बीच में कोई संदर्भ विभाजन नहीं है। पौलुस ने उन्हें एक समान देखा। कोई पवित्र और सामाजिक नियम नहीं हैं। सभी जीवन परमेष्वर के हैं। विष्वासी सभी क्षेत्रों के भंण्डारी हैं। इन दोनो अध्यायों के बिच का सम्बन्ध 12:18 में देखा जा सकता है।

ख. विष्वासियों के सरकार के प्रति विचार अलग अलग हैं। पुराने नियम में सरकार कैन के वंष से थी (उत्प.4:16–22)। बाबुल का गुमट (उत्प.11) मानवजाति के स्वयं षासन परमेष्वर से परे से सम्बन्धित है। इस्राएल में राजा का नेतृत्व उनके द्वारा परमेष्वर के ईष्वरीय व्यवस्था और चरवाहे (राजा) के रूप में राज्य करने के उद्देष्य से था, पर यह मानवजाति के पाप के कारण सफल नहीं हुआ। मत्ती.22:21 और मरकुस.12:17 में सरकार के बारे के यीषु की चर्चा महत्वपूर्ण है। यह आष्चर्य की बात है कि पौलुस ने यीषु द्वारा कही गई बातों का यहाँ पर जिक्र नहीं किया (जबकि रोमियों.13:1–7 और 11 मत्ती.22:15–22 और 39 के सदृष्य हैं)। पतित संसार में सरकार के लिए परमेष्वर द्वारा दिया गया विषेश कार्य है। अक्सर प्रेरितों पर यह दबाव ड़ला जाता था कि कैसे अधिकारियों, दोनों धार्मिक और प्रषासनिक, से पेष आएें। यह मानव अधिकारियों के नियम के अनुसार नकारात्मक और सकारात्मक व्यवहार होता था। पौलुस को सरकार द्वारा सुरक्षा भी मिली और सताया भी गया। प्रकाषितवाक्य में यूहन्ना सरकार को बड़ी वेष्या के रूप में सम्बोधित करते हैं (प्रका.17)।

हमें सरकार की सहायता करनी चाहिए तब तक जब तक कि वो हमारी आत्मा द्वारा निर्देषित बुद्धि के विरूद्ध नहीं होती या फिर हमसे पूर्ण त्याग नहीं मांगती। प्रषासनिक सरकार के नियम विनाष के लिए श्रेश्ठ हैं (2थिस्स.2:6–7)।

ग. इसी विशय के बारे में तीत.3:1 और 1पत.2:13–17 भी चर्चा की गई है।

घ. पहली षताब्दी में यहूदी धर्म रोम की सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त धर्म था। बहुत वर्शों तक मसीहत को इसी के एक पंथ के रूप में देखा गया (प्रेरित.18:12–16)। इन षुरूवाती दिनों में इस बात ने सेवकाई के कार्य को सरकारी सुरक्षा प्रदान की। प्रेरितों के काम का एक उद्देष्य यह भी है कि बताए कि मसीहत रोम की सरकार के लिए डर का कारण नहीं है। रोम ने विष्वव्यापि षान्ति और स्थिरता प्रदान की जिसमें सुसमाचार फैलाया गया (1तीमु.2:1–2)।

ङ. यह मूलपाठ पौलुस के सरकार के साथ व्यक्तिगत अनुभव के प्रकाष द्वारा तीव्र किया गया है। यह भी सम्भव है कि यह भाग निम्न बातों के कारण षामिल किया गया (1) रोम की कलीसिया के बीच सरकार के नियमा के कारण चिन्ता का विशय (यहूदी रीति रिवाज़ों पर पावन्दी)। इसने षायद कुछ विष्वास करने वाले यहूदियों को राजधानी छोड़ने पर विवष कर दिया (अक्विला और प्रिस्किल्ला, प्रेरित.18:2)। उनकी गैर मौजुदगी में अन्यजातिय अगुवाई की उन्नति हुई। (2) रोम के बड़े यहूदी समाज को सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा आए तनाव के बारे में। इतिहासकार स्युटोनीयस, लाईफ ऑफ क्लाउडियस, 25:2 में यूँ लिखते हैं, कि सम्राटों ने यहूदियों को तत्कालिक समस्या जो ''ख्रिश्टुस'' द्वारा पैदा की गई के कारण राजधानी से निकाल दिया।

रोमियों.13:1–7

1 हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के अधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर स न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं।

2 इस से जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का साम्हना करता है, और साम्हना करनेवाले दण्ड पाएंगे।

3 क्योंकि हाकिम अच्छे काम के नहीं, परन्तु बुरे काम के लिये डर का कारण हैं; सो यदि तू हाकिम से निडर रहना चाहता है, तो अच्छा काम कर और उस की ओर से तेरी सराहना होगी;

4 क्योंकि वह तेरी भलाई के लिये परमेश्वर का सेवक है। परन्तु यदि तू बुराई करे, तो डर; क्योकि वह तलवार व्यर्थ लिये हुए नहीं और परमेश्वर का सेवक है; कि उसके क्रोध के अनुसार बुरे काम करनेवाले को दण्ड दे।

5 इसलिये अधीन रहना न केवल उस क्रोध से परन्तु डर से अवश्य है, वरन विवेक भी यही गवाही देता है।

6 इसलिये कर भी दो, क्योंकि परमश्ेवर के सेवक हैं, और सदा इसी काम में लगे रहते हैं।

7 इसलिये हर एक का हक्क चुकाया करो, जिस कर चाहिए, उसे कर दो; जिसे महसूल चाहिए, उसे महसूल दो; जिस से डरना चाहिए, उस से डरो; जिस का आदर करना चाहिए उसका आदर करो।

13:1

''हर एक व्यक्ति...
अधीन रहे''

इसका अर्थ है 'लगातार अधिनता में रहना' (तीत.3:1; 1पत.2:13)। 'अधीनता' सैनिक षब्द है जो अधिकारियों की जंजीर को प्रस्तुत करने के लिए प्रयोग किया जाता है। पौलुस इस संदर्भ में सभी विष्वासियों को सम्बोधित कर रहे हैं (इफि.5:21) जहाँ वह कहते हैं कि विष्वासियों को एक दूसरे के अधीन रहना चाहिए।

हमारे समय में अधीन रहना नकारात्मक विचार प्रतित होता है। यह षब्द नम्रता और परमेष्वर के इस संसार में हमारे स्थान की समझ की मांग करता है। यीषु मसीह भी निम्न बातों के अधीन थे (1) उनके संसारिक माता–पिता (लूका.2:51) और (2) उनके स्वर्गीय पिता (1कुरि.15:28)। वह हमारे अगुवे हैं इस क्षेत्र में।

''प्रधान अधिकारियों के''

अक्सर दूसरे संदर्भों में पौलुस इस षब्द ***(एक्सुसीया)*** का प्रयोग स्वर्गदूतों की सामर्थ, प्राथमिक रूप से षैतानिक के लिए करते हैं (रोमियों.8:38; कुलु.1:16; 2:10, 15; इफि.1:21; 3:10; 6:12), पर यहाँ संदर्भ ''प्रषासनिक सरकार'' के रूप में इसकी मांग करता है (1कुरि.2:6, 8; तीत.3:1; 1पत.2:13)। बाइबल बताती है कि मानव सरकार के पीछे स्वर्गदूतों के अधिकारी कार्य करते हैं (दानि.10 और सैप्टूआजैन्ट में व्यव.32:8 ''जब परमप्रधान ने एक एक जाति को निज – निज भाग बांट दिया, और आदमियों को अलग अलग बसाया, तब उस ने देश देश के लोगों के सिवाने परमेष्वर के स्वर्गदूतों की गिनती के अनुसार ठहराए'')। अब भी सरकारी अधिकारी परमेष्वर के अधीन कार्य करते हैं (रोमियों.13:1[क], 4[ख], 6)। देखिए दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : मानवीय सरकार

क. भूमिका

1) परिभाशा – सरकार मानव द्वारा स्वयं को एक समूह में रखना है ताकि षारीरिक ज़रूरतों को पूरा कर सकें और सुरक्षित रख सकें।

2) उद्देष्य – परमेष्वर की इच्छा है कि अराजकता के लिए क्रम श्रेश्ठ हैं।

(क) मूसा की व्यवस्था, विषेश कर दस आज्ञा, मानव समाज के लिए परमेष्वर की इच्छा थी। यह जीवन और आराधना को समानता में लाती है।

(ख) सरकार का ढाँचे की वचन में वकालत नहीं की गई, यद्धपि प्राचीन इस्राएल में परमेष्वर का राज स्वर्ग के ढाँचे रूप में षामिल किया गया। न तो गणतंत्र और न ही तानाषाही बाइबल का सत्य है। मसीहियों को चाहे वे किसी भी सरकार के अधीन हो सही व्यवहार करना चाहिऐ। मसीहियों का उद्देष्य सुसमाचार प्रचार और सेवकाई है विद्रोह नहीं।

3) मानवीय सरकार की षुरूवात

(क) रोमन कैथोलिकवाद ने यह तर्क किया कि मानवीय सरकार बहुत ही आवष्यक थी यहाँ तक कि पतन से पहले भी। अरीस्टोटिल इस बात से सहमत थे। वह कहते हैं,''मनुश्य प्रषासनिक जानवर या प्राणी है'' इसके द्वारा उनका तात्पर्य यह था कि ''सरकार अच्छे जीवन के उत्थान के लिए आवष्यक है।''

(ख) जागृत, विषेश कर मार्टिन लूथर, कहते है कि मानवीय सरकार पतन के समय निहिन हुई। वह इस कहते हैं ''परमेष्वर के राज्य का बाँया हाथ''। उन्होंने कहा ''बुरे लोगों को वष में करने का परमेष्वर का तरीका यह है कि बुरे लोगों को सत्ता में रखें''।

(ग) कार्ल मार्कस का कहना है कि सरकार वह है जिसमें कुछ ज्ञानी लोग झुण्डों को वष में रखते हैं। उनके लिए सरकार

और धर्म एक ही कार्य करते हैं।

ख. बाइबलीय साधन

1) पुराना नियम

(क) इस्राएल वह प्रतिमान है जिसका प्रयोग स्वर्ग में किया जाएगा। प्राचीन इस्राएल में यहोवा राजा थे। ईष्वरीय षासन वह षब्द है जो सीधे परमेष्वर के षासन को प्रगट करता है (1षमू.8:4–9)।

(ख) मानवीय सरकार में परमेष्वर की श्रेश्ठता स्पश्ट देखी जा सकती है :

(1) यिर्म.27:6; एज्रा.1:1

(2) 2इति.36:22

(3) यषा.44:28

(4) दानि.2:21

(5) दानि.2:44

(6) दानि.4:17, 25

(7) दानि.5:28

(ग) परमेष्वर के लोगों को अधीनता में रहना और आदर करना होगा आक्रामक और दबाने वाली सरकार के :

(1) दानि.1–4, नबूकदनेस्सर

(2) दानि.5, बेलशस्सर

(3) दानि.6, दारा

(4) एज्रा और नेहम्याह

(घ) परमेष्वर के लोगों को प्रषासनिक अधिकारियों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए :

(1) यिर्म.28:7

(2) मीषनाह, अवोट.3:2

2) नया नियम

(क) यीषु ने मानव सरकार का आदर किया

(1) मत्ती.17:24–27; मन्दिर का कर चुकाया

(2) मत्ती.22:15–22; रोम के कर और रोमन अधिकारियों की वकालत की

(3) यूह.19:11; परमेष्वर ही प्रषासनिक अधिकार देते हैं

(ख) मानव सरकार के प्रति पौलुस के षब्द

(1) रोमियों.13:1–7, विष्वासियों को प्रषासनिक अधिकारियों के अधीन रहना और उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए

(2) 1तीमु.2:1–3, विष्वासियों को प्रषासनिक अधिकारियों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए

(3) तीत.3:1, विष्वासियों को प्रषासनिक अधिकारियों के अधीन रहना चाहिए

(ग) मानव सरकार के प्रति पतरस के षब्द

(1) प्रेरित.4:1–31; 5:29, पतरस और यूहन्ना न्यायलय के सामने (यह प्रषासनिक अनाज्ञाकारीता को दर्षाता है)

(2) 1पत.2:13–17, विष्वासियों को प्रषासनिक अधिकारियों के अधीन रहना चाहिए

(घ) मानव सरकार के प्रति यूहन्ना के षब्द

(1) प्रका.17, परमेष्वर के विरूद्ध बाबुल की वेष्या मानव सरकार के रूप में खड़ी है

ग. सारांष

1) मानव सरकार परमेष्वर के द्वारा नियुक्त है। यह ''राजाओं का ईष्वरीय अधिकार नहीं है'', परन्तु सरकार का ईष्वरीय स्थान है। किसी भी सांचे की ऊपर वकालत नहीं की गई।

2) यह विष्वासियों के लिए धार्मिक कर्तव्य है कि वे प्रषासनिक अधिकारियों की आज्ञा का पालन आवष्यक आदर के साथ करें।

3) यह विष्वासियों के लिए सही है कि वे प्रार्थना और कर से सरकार का साथ दें।

4) मानव सरकार नियम लाने के उद्देष्य के लिए है। वे इस कार्य के लिए परमेष्वर के दास हैं।

5) मानव सरकार अंतिम नहीं है। यह अपने अधिकारों में सीमित है। जब मानव सरकार परमेष्वर की आज्ञा के ऊपर आने की कोषिष करती है तो विष्वासियों को अपने विवेक के आधार पर उसका विरोध करना चाहिए। जैसा की अगस्टीन ने, द सिटी ऑफ गॉड, में कहा है, ***''हम दो परिमण्डल के नागरिक हैं, एक अस्थाई और एक अनन्त। हमारी ज़िम्मेदारी दोनों के लिए है, परन्तु परमेष्वर का राज्य अंतिम और स्थाई है।''*** परमेष्वर के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी व्यक्तिगत और सहभागिता दोनों में है।

6) हमें विष्वासियों को प्रजातंत्र सरकार की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, और जब सम्भव हो वचन की षिक्षाओं को लागु करें।

7) सामाजिक परिवर्तन व्यक्तिगत परिवर्तन से आता है। सरकार में कोई वास्तविक अनन्त आषा नहीं है। सभी मानव सरकारें, यद्धपि परमेष्वर की इच्छा और उनके द्वारा प्रयोग की जाती हैं, परमेष्वर से अलग मानव संस्था का पापमय प्रगटीकरण है। यह विचार यूहन्ना के ''संसार'' के प्रयोग में नज़र आता है।

एन ए एस बी ''जो हैं वह परमेष्वर द्वारा स्थिर किए गए हैं''

एन के जे वी ''जों हैं वह परमेष्वर द्वारा नियुक्त किए गए हैं''

एन आर एस वी ''वो परमेष्वर द्वारा ठहराए गए हैं''

टी इ वी ''वहाँ परमेष्वर द्वारा रखे गए हैं''

एन जे बी ''परमेष्वर द्वारा नियुक्त किए गए हैं''

यह प्रगट करता है कि हरेक मानव अधिकार के पीछे परमेष्वर हैं (यूह.19:11)। यह ''राजा के ईष्वरीय अधिकार'' को नहीं दर्षाता परन्तु नियम के लिए परमेष्वर की इच्छा को प्रगट करता है। यह विषेश सरकार को सम्बोधित नहीं करता पर सभी सरकारों को प्रगट करता है। प्रषासनिक नियम विनाष से बहतर हैं (रोमियों.13:6)।

13:2

''जो कोई अधिकार का विरोध करता है''

यह स्थिर किए हुए नियम के खिलाफ व्यक्तिगत विद्रोह को दर्षाता है, वास्तविकता में,''स्वयं को विरोध में रखना'' (प्रेरित.18:6; याक.5:6)। मरकुस.12:17 में यीषु ने स्पश्ट रूप से सरकार और कलीसिया के राज्य के बारे में बताया। प्रेरित.5:25–32 में हम देखते हैं कि जब अधिकारी अपने अधिकार से बाहर कार्य करते हैं।

''सामना करता है...
सामना करने वाला''

ये स्थिर किए हुए विद्रोह के बारे में बताता है। परमेष्वर ने इस पतित संसार में नियम दिए हैं (रोमियों.13:4, 6)। नियम का विरोध करना परमेष्वर का विरोध करना है, जब तक कि प्रषासनिक अधिकारी परमेष्वर द्वारा दी गई सीमाओं को पार नहीं करते। वास्तविक आत्मिक तर्क है अधिकार की अधीनता। पतित मनुश्य स्वयं का अधिकार चाहता है।

''अपने लिए दण्ड लाते हैं''

के जे वी में ''विनाष'' लिखा है। इस षब्द ने अपना अंग्रेज़ी अर्थ 1611 ई0 से तीव्र किया है। एन के जे वी इसका अनुवाद ''न्याय'' में करती है। इस संदर्भ में इसे निम्न बातों के लिए प्रयोग किया जा सकता है (1) परमेष्वर का न्याय या (2) प्रषासनिक दण्ड (रोमियों.13:4)। यह लोग अपने ऊपर दण्ड लाते है अपने व्यवहार और अधिकारियो के विरोध में कार्यों द्वारा (यूह. 3:17–21)।

13:3

देखिए सदृष्य विचार 1पत.2:14 में।

''अधिकार''

देखिए विषेश षीर्शक : *आरके* 8:38।

13:4

''क्योंकि वह तेरी भलाई के लिये
परमेश्वर का सेवक है''

प्रषासनिक अधिकारी प्रषासन के खिलाफ बुरा काम करने वालों के विरूद्ध कार्य करते हैं जबकि विष्वासी अपने ही व्यक्तिगत सम्बन्ध में सीमित होते हैं (रोमियों.12:17–19)। लूथर कहते हैं ***''बुरे लोगों को वष में करने का परमेष्वर का तरीका बुरे लोगों को सत्ता मे रखना है''***।

''यदि''

यह तीसरे दर्जे का षर्त वाक्य है जिसका अर्थ है सम्भावित भविश्य कार्य।

एन ए एस बी ''क्योंकि वह बिना किसी कारण तलवार लिए हुए नहीं है''

एन के जे वी ''क्योंकि वह व्यर्थ में तलवार लिए हुए नहीं है''

एन आर एस वी ''क्योंकि अधिकारी व्यर्थ में तलवार लिए हुए नहीं है''

टी इ वी ''दण्ड देने का उनका सामर्थ वास्तविक है''

एन जे बी ''बिना किसी कारण के उनके अधिकार का चिन्ह तलवार नहीं है''

'तलवार' *(माकाइरा)* षब्द छोटी रोमन तलवार को प्रगट करता है जो मृत्यु दण्ड के लिए प्रयोग की जाती थी (प्रेरित.12:2; रोमियों.8:35)। यह मूलपाठ और प्रेरित.25:11 नए नियम में मृत्यु दण्ड का आधार है, जबकि उत्प.9:6 पुराने नियम के विचार को स्पश्ट रूप से व्यक्त करता है। डर विनाष का एक प्रभावषाली निवारक है।

''क्योंकि वह परमेष्वर का सेवक है,
एक बदला लेने वाला''

पुराने नियम में षब्द बदला लेने वाला *(एकडीकोस)* कई बार प्रयोग किया गया है। यहाँ तक कि यह लैव्य.19:18 के पहले भाग में भी प्रयोग किया गया है। पुराने नियम में यदि कोई व्यक्ति गलती से भी किसी को मार देता था तो उसके परिवार वालों को पूरा हक था कि वह ''आँख के बदले आँख'' का प्रयोग करें (खून का बदला)। ऐसा प्रतित होता है कि पौलुस पुराने नियम के रिवाज़ों को प्रषासनिक सरकार के अधिकारों के साथ जोड रहे हैं।

13:5

''यह आवष्यक है कि
अधीनता में रहें''

इसके दो कारण हैं (1) दण्ड से बचने के लिए चाहे परमेष्वर की ओर से चाहे सरकार के अधिकारियों के और (2) विष्वासियों के विवेक के लिए।

''विवेक की खातिर''

'विवेक' के लिए यूनानी षब्द का समानार्थ पुराने नियम का षब्द है जब तक कि ''छाती'' के लिए इब्रानी षब्द का अर्थ स्वयं का ज्ञान और उसके उद्देष्य न हो। वास्तव में यूनानी षब्द विवेक पाँच इन्द्रीयों को दर्षाता है। यह अन्दरूनी विचार को व्यक्त करने के लिए प्रयोग में लाया जाने लगा (रोमियों.2:15)। पौलुस प्रेरित.23:1 और 24:16 में अपने न्याय सभा के सामने इस षब्द का प्रयोग दो बार करते हैं। यह उनके विचार को व्यक्त करता है कि उन्होंने जानबूझकर किसी धार्मिक कर्तव्य को नहीं तोड़ा (1कुरि.4:4)।

विवेक विष्वासियों के उद्देष्य की समझ और कार्य की प्रगति पर आधारित है (1) बाइबलीय दृश्टिकोण; (2) अन्दर निवास आत्मा; और (3) जीवनषैली का ज्ञान जो परमेष्वर के वचन पर आधारित हो। यह व्यक्तिगत तौर पर सुसमाचार को ग्रहण करने के द्वारा सम्भव है।

13:6

''इसलिए तुम भी कर दो''

यह एक उदाहरण है मसीहियों की प्रषासनिक अधिकारियों के प्रति ज़िम्मेदारी का क्योंकि प्रषासनिक अधिकारी परमेष्वर के दास हैं।

13:7

एन ए एस बी ''जो जिसका हक है उसे दो : कर...; महसूल...; भय...; आदर''

एन के जे वी ''उनका हक उन्हें दो : कर...; महसूल...; भय...; आदर''

एन आर एस वी ''सब को दो जो उन्हें देना चाहिए : कर...; महसूल...; भय...; आदर''

टी इ वी ''चुका दो जो तुम्हारे ऊपर कर्ज है; उन्हें अपनी व्यक्तिगत संपत्ती का कर दो, और उन सब का आदर और सत्कार करो''

जे बी ''कानूनी तौर पर सरकार का जो तुमसे मांगने का अधिकार है उसे दो – चाहे वह सीधा कर हो चाहे किसी वस्तु पर, भय और आदर''

यह दो अलग अलग प्रषासनिक अधिकारियों के समूह को दर्षाता है (आर एस वी), परन्तु सम्भवतः इसका अर्थ यह है कि मसीहियों को सरकार का कर चुकाना चाहिए और प्रषासनिक अधिकारियों का आदर करना चाहिए क्योंकि वे परमेष्वर के दास के रूप में कार्य करते हैं (रोमियों.13:1, 4–दो बार, 6; मत्ती.22:15–22)।

यहाँ पर दो षब्द 'कर' और 'महसूल' समानार्थ में प्रयोग किए गए हैं (यद्धपि टी इ वी इसमें अन्तर प्रस्तुत करती है)। यदि गहराई से इसका अर्थ देखा जाए तो पहले का अर्थ है जीते गए राश्ट्र द्वारा दिया जाने वाला कर (लूका.20:22) और दूसरे का अर्थ है व्यक्तिगत कर (मत्ती.17:25; 22:17, 19)।

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि रोमियों.13:8–14 पर

क. यह समझना सम्भव है कि 13:1–7 स्वयं पर घटित संदर्भ है। विशय ''कर्जदार'' जो 13:7 में षुरू हुआ वो 13:8 में दूसरे विचार में प्रयोग किया गया है। विष्वासी राज्य के कर्जदार हैं; विष्वासी दूसरे मनुश्यों के भी कर्जदार हैं।

ख. 13:8–10 एक ही विचार है जैसा कि 13:11–14। वे अध्याय 12 से मसीहियों को दूसरों को प्रेम करने की ज़िम्मदारी को बरकरार रखते हैं।

ग. पौलुस द्वारा पुराने नियम की दस आज्ञाओं का प्रयोग नई वाचा के विष्वासियों के लिए पुराने नियम को नैतिक अगुवे के रूप में प्रगट करता है जो भक्तिपूर्ण जीवन के लिए आवष्यक है (षुद्धिकरण), उद्धार के लिए नहीं (धर्मी ठहराया जाना, गला.3)। ऐसा प्रतित होता है कि पौलुस ने कई श्रोतों का प्रयोग किया है इस नैतिक नियमावली को बनाने के लिए :

(1) यीषु के षब्द

(2) पवित्र आत्मा की अगुवाई

(3) पुराना नियम

(4) रब्बीयों का प्रषिक्षण

(5) यूनानी विचारकों का ज्ञान (विषेश तौर पर स्टोइक्स)

यह ''प्रेम की व्यवस्था'' का चित्रित करता है – परमेष्वर के लिए प्रेम, मानवजाति के लिए प्रेम, परमेष्वर की सेवा, मानवजाति की सेवा।

घ. 13:11–14 अन्तिम समय पर केन्द्रीत है। अन्धकार और ज्योति के बीच विरोध यहूदी साहित्य और मृत सागर लेख में पाए जाते हैं। यह पौलुस और यूहन्ना के लेखों में भी सामान्य बात है। ''अभी'' और इसके विपरीत ''अभी नहीं'' मसीही जीवन की चिन्ता जो उन्हें भक्तिपूण जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करती है। 'नया युग' (परमेष्वर का राज्य) षुरू हो गया है और जल्द की यह अपनी पूर्णता में आएगा। यह मूलपाठ 1थिस्स.5:1–11 के समान है।

ङ. 13:13–14 ने अगस्टीन का जीवन बदल दिया 386 ई0 की गर्मियों में। वह अपने दोश मानते समय कहते हैं, ''मैं आगे नहीं पढूंगा, क्योंकि मुझे आवष्यकता नहीं है, इस वाक्य के अन्त में अचानक एक स्पश्ट प्रकाष मेरे हृदय में बाढ़ के समान आया और सारा षक का अन्धकार बह गया।''

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.13:8–10

8 आपस के प्रेम से छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है।

9 क्योंकि यह कि व्यभिचार न करना, हत्या न करना; चोरी न करना; लालच न करना; और इन को छोड़ और कोई भी आज्ञा हो तो सब का सारांश इस बात में पाया जाता है, कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।

10 प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिये प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है।

13:8

''किसी बात में किसी के
कर्जदार न हो''

जिसका अर्थ है जो पहले से चल रहा है उसे रोकना। इस वाक्यांष में दो नकारात्मक बाते हैं। यह षायद कर देने के विशय में है (रोमियों.13:6–7)। आर्थिक कर्ज हमेषा भावनात्मक और प्रभावषाली गड़हा है। संसारिकता से सावधान रहो। यह विष्वासियों से उनकी मसीही कार्य की सहायता करने का कारण और व्यक्तिगत प्रेम छीन लेता है। कुछ भी हो पर यह आयत ''ग्राहक को कर्ज नहीं'' के लिए सबूत के तौर प्रयोग नहीं किया जा सकता। बाइबल को उसी के समय के प्रकाष में अनुवाद करना चाहिए। यह सुबह का समाचार पत्र नहीं है। आयत 8–10 हमें एक दूसरे से प्रेम करने के लिए प्राथमिक देने पर ज़ोर देते हैं (1) वाचा भाई (मत्ती.13:34–25; 22:39–40); और (2) सहभागी मानव (मत्ती.5:42; गला.6:10)।

''एक दूसरे को
प्रेम करने के इलावा''

यह 13:8–10 का मुख्य विचार है (यूह.13:34; 15:12; रोमियों.12:10; 1कुरि.13; फिलि.2:3–4; 1थिस्स.4:9; इब्रा.13:1; 2पत.1:7; 1यूह.3:11; 4:7, 11–12)।

''जो अपने पड़ोसी से
प्रेम करता है''

यह कभी–कभी के प्रेम को प्रगट नहीं करता, पर मसीह के समान प्रेम की जीवनषैली को दर्षाता है।

षब्द ''पड़ोसी'' का वास्तविक अर्थ है ''भिन्न रूप का दूसरा'' (हिटेरोस), यद्धपि कोइनी यूनानी में *हिटेरोस* और *आलोस* (एक की रूप का दूसरा) के बीच के अन्तर को लगभग समाप्त कर दिया गया है। इस संदर्भ में यह किसी के पड़ोसी को सम्बोधित करता है, विसतार में विष्वासी या अविष्वासी (लूका.12:14–21; 10:25–37)। लैव्य.19:18 से लिया गया आयत इस संदर्भ में दूसरे वाचा के सदस्य को प्रगट करता है (संगी इस्राएली)।

विष्वासियों को दूसरे विष्वासियो को भाईयों के समान प्रेम करना चाहिए और खोए हुए व्यक्तियों को सम्भावित भाईयों के रूप में। मसीहत एक परिवार है। प्रत्येक सदस्य सभी की सेहत और उन्नति के लिए कार्य करता ओर जीवन जीता है (1कुरि.12:7)।

एन ए एस बी, एन के जे वी, एन आर एस वी ''व्यवस्था को पूरा किया''

टी इ वी ''व्यवस्था को माना''

जे बी ''तुम्हारी ज़िम्मेदारियों को उठाया''

इस सामान्य यूनानी क्रिया *(प्लेरो)* का अनुवाद कई तरह से किया जा सकता है। इसका तात्पर्य है कि ''यह पूरा कर दिया गया है और पूरा किया जा रहा है''। रॉबर्ट हन्ना, ए ग्रामेटिकल ऐड टू द ग्रीक न्यू टैस्टामैन्ट से ए टी रॉबर्टसन लिखते और कहते हैं ''ए नॉमिक परफैक्ट (सांस्कृतिक सत्य या प्राप्तकार्ताऔ की अच्छी जानकारी में को सम्बोधित करता है)'' (पृश्ठ.28)। यह दोहराया गया है 13:10 में (गला.5:14; 6:2)।

13:9

नई वाचा के विष्वसियों को उत्साहित करने के लिए पौलुस का मूसा की व्यवस्था का प्रयोग करना सामान्य बात नहीं है (निर्ग. 20:13–17 और व्यव.5:17–21 और लैव्य19:18)। इफि.6:2–3 में भी पौलुस ने दस आज्ञाओं में से एक आज्ञा का प्रयोग किया है विष्वासियों को उत्साहित करने के लिए (1तीमु.1:9–10)। यह पुराने नियम का मूलपाठ उद्धार के लिए साधन नहीं है परन्तु फिर भी परमेष्वर का प्रकाषन है कि विष्वासियों को किस प्रकार परमेष्वर और सह विष्वासियों के साथ व्यवहार करना चाहिए (रोमियों. 15:4; 1कुरि.10:6, 11)। सम्भवतः पुराने नियम की बातों को लेना पौलुस का तरीका था रोमियों की कलीसिया के दोनों यहूदी और अन्यजातिय विष्वासियों को सम्बोधित करने का। ''पूरा किया'' षब्द यीषु के मत्ती.5:17 के तर्क से सम्बन्धित है।

यह भी सम्भव है कि यह समाज के कानून को प्रस्तुत कर रहा हो न कि विषेश तौर पर मूसा की व्यवस्था को (जे बी)। पर तथ्य यह है कि 13:9 में पौलुस द्वारा पुराने नियम के आयत का प्रयोग मूसा की व्यवस्था को प्रगट कर रहा है। ध्यान दीजिए कि केवल प्रेम न कि मनुश्यों द्वारा व्यवस्था का पालन करना ही व्यवस्था को पूरा कर सकता है। देखिए दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : मूसा की व्यवस्था के प्रति पौलुस का दृश्टिकोण

क. यह परमेष्वर की ओर से अच्छा है (रोमियों.7:12, 16)

ख. यह धार्मिकता और परमेष्वर द्वारा ग्रहण किए जाने के लिए मार्ग नहीं है (यहाँ तक कि यह श्राप भी हो सकता है, गला.3)

ग. यह फिर भी विष्वासियों के लिए परमेष्वर की इच्छा है क्योंकि यह यह परमेष्वर द्वारा स्वयं का प्रगटीकरण है (पौलुस अक्सर पुराने नियम के भागों का प्रयोग विष्वासियों को उत्साहित करने और उन्हें विष्वास दिलाने के लिए करते हैं)

घ. विष्वासी पुराने नियम द्वारा बताए गए हैं (रोमियों.4:23–24; 15:4; 1कुरि.10:6, 11), परन्तु बचाए नहीं गए (प्रेरित.15; रोमियों. 4; गला.3; इब्रनियों)

ङ. यह नई वाचा में निम्न बातों के लिए कार्य करता है

(1) पाप को बताने के लिए (गला.3:15–29)

(2) छुड़ाए गए मानव को समाज में चलने का निर्देषन करना

(3) मसीहियों को नैतिक निर्णय बताना

यह वह धर्मषास्त्रीय बदलाव है श्राप और समाप्त हो जाने से आषीश और स्थिर रहने कि ओर जिसने मूसा की व्यवस्था के प्रति पौलुस के दृश्टिकोण को समझने में समस्याएं पैदा कर दीं। ए मैन इन क्राइस्ट में जेम्स स्टीवर्ट पौलुस के विचारों और लेखों के तरीके को प्रगट करते हैं :

''आप ऐसे व्यक्ति की आषा करेंगे जो विचारों और सिद्धान्तों के ढाँचे को कठोरता से रचने में स्वयं को लगाए हुए है तकि अपने द्वारा प्रयोग किए गए षब्दों को साबित कर सके। आप उससे आषा करेंगे कि वह अपने अगुवाई करने वाले विचारों की ओर लक्ष्य रखे। आप ऐसी आषा करेंगे कि आपके लेखक द्वारा विषेश अर्थ के लिए प्रयोग किया गया षब्द हमेषा वही अर्थ दे। पौलुस में इसे देखना निराषाजनक है। उनके बहुत से वाक्यांष या षब्द लचकदार हैं कठोर नहीं...''। 'व्यवस्था पवित्र है' वह लिखते हैं, '' मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूँ'' (रोमियों.7:12, 22), परन्तु यह ***नोमॉस***

का दूसरा पहलू है जो उन्हें इसके विपरीत कहलवाता है, ''मसीह ने हमें व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया है'' (गला.3:13) – पृश्ठ. 26

विषेश षीर्शक : निर्गमन 20 पर नोट

निर्ग.20:13, हत्या

क. *संदर्भ*

1) यह याद रखने की आवष्यकता है कि जो आज्ञाएं सामाजिक प्रतित होती हैं वे वास्तव में धार्मिक हैं। सृश्टि और उद्धार के ऊपर परमेष्वर की श्रेश्ठता इन आज्ञाओं में छाया के रूप में प्रगट की गई हैं। यह आज्ञा कि हत्या न करना, पूर्ण केन्द्रीय बिन्दु से, प्रत्येक मनुश्य में परमेष्वर के स्वरूप के लिए षब्द है और मानव जीवन के प्रति परमेष्वर के ध्यान और चिन्ता को प्रगट करता है।

2) यह याद रखने की आवष्यकता है कि प्रत्येक आज्ञा विष्वास के समाज को दर्षाती है। गैर कानूनी तौर पर किसी के जीवन को लेना प्राथमिक और वास्तविक रूप से विष्वास करने वाले समाज की ओर केन्द्रीत है। इसका प्रयोग इतना ही है जितना की मानवजाति।

ख. *मुख्य षब्दों का अध्ययन*

1) 'हत्या'

क) यह जीवन लेने (***राष***) के लिए कम प्रयोग किया गया षब्द है, पुराने नियम में केवल 46 बार प्रयोग किया गया। दो दूसरे बहुत सामान्य षब्द हैं।

(1) ***हागार,*** 165 बार प्रयोग किया गया

(2) ***हेमिट,*** 201 बार प्रयोग किया गया

ख) ***राष*** षब्द के पास वास्तविक सीमित अर्थ और विस्तृत अर्थ है।

(1) वास्तव में यह वाचा के साथी के जीवन को कानूनन लेने के लिए प्रयोग किया गया है, पहले से ही सोचकर, अक्सर यह ''रिष्तेदार छुड़ाने वाले'' से जुड़ा हुआ है या ''***गाएल***''। यह षब्द पहले से ही सोचे हुए परन्तु कानूनन बदले को दर्षाता है (गिन.35:30–34; लैव्य.24:13–23)। वास्तव में ''आँख के बदले आँख'' (उत्प.9:5–6) बदले को सीमित करने का तरीका था। बाद में षरण षहर (व्यव.4:14; यहो.20:3) की स्थापना की गई ताकि वाचा का सदस्य जिसने दुर्घटनावष या भावना में बहकर समाज के दूसरे सदस्य की हत्या कर दी हो वहाँ भाग कर उत्पीड़ित व्यक्ति के परिवार वालों के क्रोध से भाग सके।

(2) बाद में यह षब्द जीवन लेने के पीछे के उद्देष्य और व्यवहार के लिए प्रयोग में लाया गया। विचार ''जानबूझकर'' सबसे मुख्य हो गया (निर्ग.21:12–14; गिन.35:11, 22; व्यव.28:24)।

(3) यह भिन्नता आज्ञा में बहुत महत्वपूर्ण हो गई। इस संदर्भ में ऐसा प्रतित होता है कि यह केवल वाचा समाज के सदस्यों के लिए ही थी। यह रिष्तेदार छुड़ाने वाले या लहु के बदले से जुड़ा हुआ है। यह षब्द बाद के मूलपाठों में भी प्रयोग किया गया है जो दस आज्ञाओं को प्रगट करते हैं, होषे.4:2 और यिर्म.8:9, हत्यारे को व्यक्त करने के लिए। यह षब्द केवल कानून से जुड़ा हुआ नहीं है परन्तु उद्देष्य से भी जुड़ा हुआ है। यह पड़ोसी से संगी मनुश्यों तक फैलता है।

ग) यह षब्द आधुनिक मृत्यु दण्ड और युद्ध के नैतिक विवाद से सम्बन्धित नहीं है। यहूदियों को समाज के संहार और पवित्र युद्ध से कोई समस्या नहीं थी (या उस बात के लिए, अपवित्र युद्ध)।

घ) हमारे आज के अधुनिक अनुवाद में ''पहले से योजना बनाकर की हुई हत्या''।

ग. *प्रासंगिक अन्तरदृश्टि*

1) 6वीं, 7वीं, और 8वीं आज्ञाऐं एक ही इब्रानी षब्द से बनी हैं। वे बहुत ही छोटे और पूर्णतया केन्द्रीत हैं।

2) जीवन, पूर्ण जीवन के समान, परमेष्वर से जुड़ा हुआ है। हम दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं यह प्रगट करता है कि हम परमेष्वर के बारे में क्या सोचते हैं।

घ. *नए नियम के समानार्थ*

1) यीषु

क) उनकी इस आज्ञा की व्याख्या (मत्ती.5:21–26) हमें पूर्ण षिक्षा देती है कि आधुनिक समय में इस मूलपाठ का कैसे प्रयोग किया जाए।

ख) यीषु ने दस आज्ञाओं को कार्यों के क्षेत्र से उद्‌देष्य के क्षेत्र मे बदल दिया। हम जो सोचते हैं वही होते हैं। ''जैसा मनुश्य अपने हृदय में विचार करता है, वैसा ही होता है''। विचारपूर्ण जीवन जितना हम उसे महत्व देते हैं उससे अधिक महत्वपूर्ण होता है।

2) यूहन्ना

क) 1यूह.3:5, यही नफ़रत करने को हत्या मानने का विचार पहले भी प्रस्तुत किया जा चुका है।

ख) मत्ती.5:21 के बाद और 1यूह.3:5 में जो यूनानी षब्द प्रयोग किए गए है वे भिन्न हैं पर अर्थ एक ही है।

ग) 1यूह.4:19–21 के सकारात्मक विचार पर ध्यान दीजिए।

ङ. *व्यवहारिकता में लाने वाले सत्य*

1) अनजाने में की हुई हत्या का हत्यारा षरण षहर में भाग जाने के कारण लहु के बदला लेने वाले से बच सकता है (गिन. 35; यहो.20), परन्तु माहायाजक की मृत्यु तक उसे उस षहर में बन्दीकरण का दण्ड भुगतना पड़ता था। उसके कार्य का परिणाम फिर भी रहता था।

2) यद्धपि यह आयत सीधे तौर पर आत्महत्या के बारे में नहीं बताता, षायद प्राचीनों ने इसके बारे में नहीं सोचा होगा, पर मूलपाठ फिर भी मनुश्य जीवन की पवित्रता और परमेष्वर की श्रेश्ठता और मनुश्य जीवन जो परमेष्वर के स्वरूप में रचा गया है उसके उद्‌देष्य के आत्मिक सिद्धान्त को प्रगट करता है। यह मूलपाठ इस क्षेत्र में हमारे समय से कठोरता से बात करता है।

3) यह प्रमाणिक तौर पर आज के इन सवालों का उत्तर नहीं देता : (क) मृत्यु दण्ड और (ख) युद्ध। इस्राएलियों में अपने आप में ये बुरी बात नहीं थी। इस्राएली इन दोनों में षामिल थे। फिर भी परमेष्वर के स्वरूप में रचे जीवन और उनके द्वारा नियंत्रित जीवन का महत्व इस क्षेत्र की सच्चाई का महत्वपूर्ण भाग है।

4) यह मूलपाठ मनुश्य जीवन के अस्तित्व और पवित्रता के लिए आवष्यक षब्द के बारे में कहता है। विष्वासियों के समाज में हम भंडारी हैं केवल हमारे कार्यों के ही नहीं परन्तु हमारे समाज के भी। जीवन रूपी वरदान दोनों है व्यक्तिगत भी और सामूहिक भी।

हम अपने षरीर के षारीरिक, सामाजिक और मानसिक षोशण के लिए ज़िम्मदार हैं जैसे कि हम दूसरों का षारीरिक, सामाजिक और मानसिक षोशण करते हैं। यह हमारे समाज के लिए सत्य हैं जहाँ हमें इजाज़त है कि हम बोल सकते हैं और कानून व्यवस्था को बदल सकते हैं। हम अपने भाई के रखवाले हैं।

निर्ग.20:14, व्यभिचार

क. *संदर्भ*

1) यह स्वभाविक है कि यह आज्ञा किसी के परमेष्वर के आदर से सम्बन्धित है जो पड़ोसी के जीवन, पत्नी और सम्पत्ती के आदर में नज़र आता है (यिर्म.5:8)। यह सैप्टूआजैन्ट में पाए जाने वाले इन आज्ञाओं के विभिन्न क्रमों से प्रमाणित होता है।

2) व्यवस्थविवरण में इसका दोहराया जाना बताता है कि इस प्राचीन सत्य को अपनी संस्कृति में ग्रहण करना बिलकुल सही है।

3) जैसे कि माता–पिता का आदर करना समाज के स्थिर रहने की कुन्जी है वैसे ही यह आज्ञा भी।

4) इस आज्ञा में परमेष्वर का मालिक होना और हमारे यौन और पारिवारीक जीवन में परमेष्वर का नियंत्रण षामिल है।

5) ऐसा प्रतित होता है कि यह आज्ञा उत्प.2:24 पर आधारित है जैसे कि चौथी आज्ञा उत्प.2:1–3 पर आधारित है।

ख. *षब्द अध्ययन*

1) इस मूलपाठ में मुख्य षब्द ''व्यभिचार'' है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि कोई इसे प्राचीन इब्रानी संस्कृति के प्रकाष में समझे।

(क) यह पुराने नियम के ''परस्त्रीगमन'' से अलग है। व्यभिचार में यौन सम्बन्ध में एक साथी का विवाहित होना आवष्यक है। षब्द ''परस्त्रीगमन'' प्रगट करता है कि दोनों ही अविवाहित हैं (नीति.29:3; 31:3)। यह भिन्नता नए नियम के यूनानी षब्दों में खो गई।

(ख) यह सम्भावना व्यक्ति के विवाहित होने पर ज़ोर देने की व्याख्या करती है क्योंकि यह उत्तराधिकार से सम्बन्धित है जिसमे परमेष्वर द्वारा ''देष'' देने का वायदा षामिल है। प्रत्येक 50 वर्शों में भूमि उसके गोत्र मालिक को लौटा दी जाती थी।

(ग) मूसा की व्यवस्था से पहले व्यभिचार को सांस्कृतिक रूप से गलत ठहराया जाता था (उत्प.12:10 के बाद; 26:7 के बाद; 39:9)।

(घ) व्यभिचार को इनके विरूद्ध पाप के रूप में देखा जाता था :

(1) पड़ोसी – निर्ग.20:14; व्यव.5:18

(2) विवाह – लैव्य.18:20

(3) परमेष्वर – उत्प.20:1–13; 26:7–11

(ङ) इसके लिए दोनों साथियों को मृत्यु दण्ड दिया जाता था :

(1) लैव्य.20:10

(2) व्यव.22:22–24

(3) यहे.16:40 (रूपक)

(4) इसके खिलाफ नीति.1–9 में कठोर चेतावनियाँ पाई जाती हैं

ग. *नए नियम के साथ सम्बन्ध*

1) यीषु ने पुराने प्रकाषन के सारांष के तौर पर लैव्य.19:18 का प्रयोग किया (लूका.10:27)। यह साबित करता है कि दस आज्ञाऐं दूसरों के साथ हमारे व्यवहार से सम्बन्धित हैं।

2) यीषु ने मत्ती.5:28 में इस आज्ञा को तीव्र कर दिया है। वे उद्देष्य पर ज़ोर डालते हैं कार्यों पर नहीं। यहूदी दिमाग को प्राण के बीज–बिस्तर के रूप में देखते थे। एक व्यक्ति जो सोचता है वह वास्तव में वही होता है (नीति.23:7)। यह दस आज्ञाओं का पालन करना लगभग असम्भव कर देता है – वही उद्देष्य है (गला.2:15–3:29)।

घ. आधुनिक व्यवहारिकता

1) सम्भवतः विवाह परमेष्वर के नाम में आजीवन विष्वास वाचा का उत्तम आधुनिक रूपक है। यह हमारे लिए उत्तम अवसर है पुराने नियम के वाचा विचार की वास्तविकता को समझने का (मला.2:14)। हमारे साथी के प्रति आदर पूर्ण क्षेत्रों में, मानवीय लिंग विषिश्टता भी षामिल है, इस आयत की गहराई को समझने में हमारी सहायता करता है।

2) वैवाहिक स्थिरता और वफ़ादारी, माता–पिता का आदर करने के समान ही, सामाजिक स्थिरता और दृढ़ता का मुख्य स्तम्भ है।

3) इस पर ज़ोर देना आवष्यक है कि मानवीय यौन इच्छा परमेष्वर की ओर से वरदान है। यह मनुश्य के लिए परमेष्वर का विचार और इच्छा थी। नियम इसलिए नहीं दिए गए कि मनुश्य की स्वतंत्रता और आनन्द को दबा दिया जाए परन्तु पतित मनुश्य को कुछ ईष्वरीय नियम दिए गए हैं। यह बन्धन हमारे लम्बे समय के लाभ और खुषी के लिए हैं। यद्धपि मनुश्य ने यौन इच्छा का दुरूपयोग किया है, जैसा कि उसने परमेष्वर के प्रत्येक वरदानों के साथ किया है, फिर भी यह मानवजाति में एक षक्तिषाली इच्छा है जिसे परमेष्वर के नियंत्रण में और अगुवाई में होना चाहिए।

4) यौन इच्छा को वष में रखना आवष्यक है ताकि मनुश्य (स्त्री और पुरूश) की पवित्रता का आदर किया जाए क्योंकि वे परमेष्वर के स्वरूप में रचे गए हैं। हमारा पतित ''स्वयं'' पर केन्द्र इस क्षेत्र में भी सामान्य है।

निर्ग.20:15, चोरी

क. *सामान्य जानकारी*

1) दस आज्ञाओं की बाकी आज्ञाओं के समान ही, हमारा विष्वास, प्रेम और परमेष्वर के लिए आदर हमारे प्रतिदिन के पवित्र और सामाजिक जीवन क्षेत्र में भी नज़र आना चाहिए। यह परमेष्वर के लिए घृणित है कि हम कहें कि हम परमेष्वर को जानते हैं और अपने वाचा के साथी का षोशण करें (1यूह.4:20–21; 2:7–11)।

2) इस आज्ञा का उद्देष्य वाचा समाज में संगति बनाऐ रखना है। आत्मिक संगति का गुण हमारे परमेष्वर की ओर विचलित और खोजी संसार को आकर्शित करेगा जो वचन का उद्देष्य है।

3) जैसे कि बाकी आज्ञाऐं जीवन के हर क्षेत्र में परमेष्वर की अधीनता पर केन्द्रीत हैं वैसे ही यह भी है। हम भंण्डारी हैं मालिक नहीं। इस प्रतिबन्ध के पीछे बिना दाम चुकाए सम्पत्ती पाने की हमारी पतित लालसा है (भ.सं.50:10–12)।

ख. *षब्द और वाक्यांष अध्ययन*

1) यह दस आज्ञा के दूसरे भाग में तीसरी आज्ञा है जो इब्रानी के दो षब्दों से बनी है।

2) प्रतिबन्ध का कर्म गैर हाजिर है। यह अक्सर निम्न बातों द्वारा सहाया जाता है :

(क) पिछली मृत्यु दण्ड के योग्य दो अपराधों के विरूद्ध आज्ञाओं के संदर्भ
से सम्बन्ध।

(ख) व्यवहारिक सदृष्य मूलपाठों की उपस्थिति साथ की (निर्ग.21:6) और दूर की (व्यव.24:7)। देखिए उत्प.37।

3) छोटे षब्द भी प्रतिरक्षक हैं

(क) यह प्रेरण द्वारा हमारे लिए लिखा गया है

(ख) यह निशेधाज्ञा के अवसर को बढ़ा देता है

(ग) नज़दिकी संदर्भ में चोरी से सम्बन्धित सदृष्य मूलपाठ हैं – निर्ग.22:1 के बाद।

(घ) यीषु इस भाग का प्रयोग चोरी को सम्बोधित करने के लिए इस आयत का प्रयोग करते हैं (मत्ती.19:18)।

4) चोरी के बारे में बाकी प्राचीन कानूनों में भी ज़िक्र किया गया है और इसकी सज़ा मृत्यु दण्ड, या 30 गुणा भरना है।

5) कुछ सदृष्य मूलपाठ हैं जो इस सत्य की व्यख्या करते हैं :

(क) लैव्य.19:1–18, ''तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेष्वर यहोवा पवित्र हूँ''

(1) हमारी जीवनषैली हमारे पिता और परमेष्वर के चरित्र को प्रगट करने वाली होनी चाहिए (रोमियों.13:18)।

(2) हमारा विष्वास हमारे प्रतिदिन के जीवन को प्रभावित करने वाला होना चाहिए, दोनों सकारात्मक कार्य और नकारात्मक प्रतिबन्ध में क्योंकि दोनो सही उद्देष्य द्वारा बताए जाते हैं (रोमियों.13:17)।

(3) जरूरतमंदों और बहिश्कृत के लिए दया (रोमियों.13:9–10, 13) उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि अपने पड़ोसी का षोशण न करना (रोमियों 13:11)।

(ख) आमोस.8:4–7, परमेष्वर षोशण से घृणा करते हैं।

(ग) मला.6:6–8, परमेष्वर हमारे प्रत्येक कार्य में षुद्ध उद्देष्य चाहते हैं। हमें क्यों चोरी नहीं करनी चाहिए ही यहाँ पर विचार है।

(घ) निर्ग.22:1 के बाद, अक्सर डाके के आधुनिक तर्क में छूटी हुई सच्चाई है उसे भर देना। पाप की हमेषा कीमत होती है।

ग. *व्यवहारिक सत्य*

1) जॉय डेविडमैन, सी. एस. लूईस की पत्नी ने दस आज्ञाओं के ऊपर एक प्रभावषाली पुस्तक लिखी है। वो इस आज्ञा का अनुवाद यूँ करती हैं ''तुम बिना किसी चीज़ के कुछ पाने की कोषिष मत करना''। यह सम्पत्ती के बाहर अवसर को फैलाता है। वह ऐसा भी कहती हैं कि ''सम्पत्ती न तो पाप है और नहीं असंकाय अधिकार है, परन्तु कर्ज है, भरोसा है परमेष्वर द्वारा''।

2) चोरी, पतित हृदय के बाकी पापों के ही समान, नए हृदय से निपटाया जाता है, इफि.4:28। यह आष्चर्य की बात है कि कैसे पुराना स्वभाव ''लेना'' नए स्वभाव ''बाँटने'' में बदल जाता है।

3) परमेष्वर के प्रति हमारा आदर बाकी वाचा के सदस्यों के साथ हमारे व्यवहार के द्वारा प्रगट होता है। यह सत्य दस आज्ञाओं को ढ़क लेता है।

4) आधुनिक मनुश्य कई तरह से चोरी करता है।

चर्चा के लिए प्रष्न

1) आधुनिक मनुश्य किस तरह चोरी अभ्यास करता है?

2) लौटा देना किस तरह पष्चाताप से सम्बन्धित है?

3) यह आयत किस तरह से सम्पत्ती के पूंजीवाद से सम्बन्धित है?

निर्ग.20:17, लालच

क. भूमिका

1) आखरी 5 आज्ञाओं के बीच के सम्बनध को इस प्रकार से देखना सम्भव है :

(क) गिन.6, 7 और 8 विषिश्ट अधिकारपत्र के कार्य में वाचा साथी की हानी पर प्रतिबन्ध लगाते हैं।

(ख) गिन.9 बोलने में वाचा साथी की हानी पर प्रतिबन्ध लगाता है।

(ग) गिन.10 विचार में वाचा साथी की हानी पर प्रतिबन्ध लगाता है।

2) यह सच है कि लालच का कार्य जो व्यक्ति लालच कर रहा है उसे विचलित कर देता है, वस्तु को नहीं, या पड़ोसी को। यह सम्भव है कि यह आज्ञा आषा करती है कि विचार कार्य में तबदील हो जाते हैं।

3) बहुत से इस आज्ञा को यहूदी प्राचीनतम व्यवस्था में ही पाते है और यह प्राचीनतम नज़दिकी पुर्व के कानून में नहीं है। यह नई बात सोच–विचार पर पाबन्दी के लिए है। यह सत्य है कि इस्राएली मानते थे कि बुरे कार्य विचार पूर्ण जीवन से उत्पन्न होते हैं (नीति.23:7; याक.1:14–15)। फिर भी यह आयत उन विचारों से सम्बन्धित है जो कार्यों को उत्पन्न करते हैं। बहुत से मूलपाठ ''लालच'' षब्द का प्रयोग परिणामित कार्य के लिए प्रयोग करते हैं (व्यव.7:25; यहो.7:21; मीका.2:2)।

4) यदि यह सच है कि जो पहले और अन्तिम पर ज़ोर दिया गया है तो आज्ञा का सच्चा अभिप्राय नज़र आ गया है। प्रथम परमेष्वर की निवारक आराधना है, परन्तु इस संसार की वस्तुओं के प्रति हमारा व्यवहार और उद्देष्य परमेष्वर की सच्ची आराधना को प्रभावित करती है। यह यमल ज़ोर यीषु के पहाड़ी उपदेष में भी नज़र आता है, मत्ती.6:33, ''इसलिये पहले तुम उनके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं (रोमियों.13:19–32) तुम्हें मिल जाएंगी।''

ख. षब्द और वाक्यांष अध्ययन

1) निर्ग.20:17 और व्यव.5:21, वास्तव में एक ही हैं, फिर भी इनमें बहुत से महत्वपूर्ण अन्तर हैं :

(क) निर्ग.20 में पत्नी ''घर'' या पुरूश की सम्पत्ती के विस्तृत विचार में षामिल है जबकी व्यव.5 में उसे अलग, प्राथमिकता के क्षेत्र में रखा गया है।

(ख) निर्ग.20 में ''लालच'' के लिए जिस इब्रानी षब्द का प्रयोग किया गया है उसका अर्थ है ''हासिल कर लेने की इच्छा'' जबकी व्यव.5 में दूसरा षब्द है, ''इच्छा'' और साथ ही ''लालच''। ''लालच'' उस इच्छा के बारे में बात करता है जिसमें हासिल कर लेने का कार्य भी षामिल हो पर ''इच्छा'' केवल व्यवहार पर केन्द्रीत है।

(ग) साथ ही निर्ग.20 इस्राएलियों की मरूभूमि यात्रा के दौरान लिखा गया जिसमें ''खेतों'' के बारे में सम्पत्ती में ज़िक्र नहीं किया गया जबकी व्यव.5 वायदे देष में बसे लोगों के लोगों के लिए पुनः आरम्भ की हुई आज्ञा है।

2) ''लालच'' षब्द सामान्य षब्द है। यह अच्छी वस्तुओं की इच्छा के लिए प्रयोग की जा सकती है (भ.सं.19:10; 1कुरि.12:31)।

3) बुरी इच्छा षैतान के पतन का कारण बनी, आदम और हव्वा और हम सभी के। पौलुस लालच के साथ अपनी परेषानी के बारे में रोमियों.7:7–8 बात करते हैं। लालच वास्तव में असन्तोश और परमेष्वर की देखभाल और उपाय पर भरोसे की कमी को दिखाता है।

4) नए नियम के लालच से सम्बन्धित भाग :

(क) मनुश्य की समस्या असन्तोश और लालच है (लूका.12:15; 1तीमु.6:8–10)।

(ख) यीषु ने मनुश्य को भ्रश्ट करने वाली जो सूची बनाई उसमें लालच भी षामिल है (मरकुस.7:17–23; 1कुरि.5:10; इफि.5:5; कुलु.3:5)।

ग. <u>व्यवहारिकता में लाने वाले सत्य</u>

1) बुरी अभिलाशाओं से भरे लालच और असन्तोश का उत्तर है :

(क) प्रेम – रोमियों.13:8–10

(ख) सन्तोश – इब्रा.14:5; फिलि.4:11–13 (और बाँटना, फिलि.4:14)

2) आज्ञा कहती है ''रोको'' परन्तु केवल मसीह ही हमें रोकने का ज़रिया दे सकते हैं। उनमें हम अपने विचार पूर्ण जीवन को कुछ हद तक वष में रख सकते हैं।

3) परमेष्वर हमारे हृदय और मन को जानते हैं

(क) 1इति.28:9

(ख) नीति.20:27

(ग) भ.सं.139:1, 23

(घ) यिर्म.17:10

(ङ) रोमियों.8:27

(च) प्रका.2:23

4) वस्तुएं बुरी नहीं हैं परन्तु जब वे प्राथमिकता बन जाती हैं तो वे पाप बन जाती हैं। वस्तुएं अन्तिम और अनन्त नहीं हैं; लोग जो परमेष्वर के स्वरूप में रचे गए हैं जब वे लालच करते हैं तो यह वाचा समाज को व्यक्तिगत और विनाषकारी तौर पर प्रभावित करता है।

<u>चर्चा के लिए प्रष्न</u>

1) लालच करना क्या है?

2) आधुनिक मनुश्य किस प्रकार लालच करता है?

3) क्या हमारे विचार पाप हैं?

4) मसीही जीवन में हमारे विचार इतने महत्वपूर्ण क्यों हैं?

5) निर्ग.20:17 की आज्ञा व्यव.5:21 की आज्ञा से भिन्न क्यों है?

<u>विषेश षीर्शक : दस आज्ञा (निर्ग.20:1–17; व्यव.5:6–21)</u>

क. षब्द

1) वास्तव में ''दस षब्द'' (निर्ग.34:28; व्यव.4:13; 10:4)

2) सिकन्द्रिया के क्लेमन्त इसे कहते हैं ''दस आज्ञाएं'' और षुरूवाती कलीसियाई पिताओं ने इसका अनुसरण किया।

3) बाइबल में इसे कहा जाता है :

(क) ''वाचा'' (इब्रानी बेरिथ, निर्ग.34:28; व्यव.4:13; 9:9)

(1) अकाडियन के, बाराह से – खाना (सामान्य भोजन)

(2) अकाडियन के, बेरीटु से – बाँधना (लोगों के बीच बाँधना)

(3) अकाडियन के, बेरीट से – बीच में (दो समूहों के बीच सन्धि)

(4) बारू – स्वाद (ज़िम्मेदारी)

(ख) ''गवाही'' – निर्ग.16:34; 25:16 (दो तखतियाँ)

ख. उद्देष्य

1) वे परमेष्वर के चरित्र को प्रगट करते हैं

(क) अद्वितिय और अधिकारपूर्ण (एक ही परमेष्वर हैं)

(ख) नैतिक, व्यक्ति और समाज दोनों के प्रति

2) वे इनके लिए हैं

(क) सभी लोगों के लिए क्योंकि वे मनुश्य के प्रति परमेष्वर की इच्छा को प्रगट करते हैं और मानव परमेष्वर के स्वरूप में रचा गया है

(ख) वाचा के विष्वासियों के लिए है क्योंकि परमेष्वर की सहायता के बिना इन्हें समझना और मानना असम्भव है

(ग) सी. एस. लूइस – प्राचीन जातियों में भी अन्दरूनी विवेक (रोमियों.1:19–20; 2:14–15) यहाँ पर प्रस्तुत किया गया है।

3) जैसा कि प्राचीन कानून थे

(क) आपसी सम्बन्ध को नियन्त्रण में रखने और बनाए रखने के लिए

(ख) समाज की स्थिरता को बनाए रखने के लिए

4) वे भिन्न जाति समूहों गुलामी में बाँधते हैं और मिस्री विष्वास और व्यवस्था के समाज से बाहर हो गए।

बी. एस. चील्डस, ओल्ड टेस्टामैन्ट लाइब्रेरी, ''एक्सोडस''

''आठ नकारात्मक विचार वाचा की बाहरी सीमाओं को प्रगट करते हैं। कोई अपराध नहीं हैं पर उस तार को तोड़ना है जिससे मनुश्य और परमेष्वर का सम्बन्ध जुड़ा हुआ है। दो सकारात्मक विचार वाचा में जीवन की परिभाशा को प्रगट करते हैं। दस आज्ञाएं बाहरी और अन्दरूनी दोनों ही प्रतीत होती है; यह मृत्यु के मार्ग से रक्षा और जीवन की ओर ले जाती हैं

(पृश्ठ.398)।''

ग. दृश्टान्त

1) बाइबलीय

(क) दस षब्द दो बार लिखे गए हैं, निर्ग.20 और व्यव.5 में। 4थी, 5वीं और 6वीं आज्ञाओं में थोड़ा सा परिवर्तन इन सिद्धान्तों द्वारा विभिन्न परिस्थितियों को ग्रहण करने के बारे में प्रगट करते हैं।

(ख) उनकी समानता इस बात को प्रगट करती है कि ये कहाँ से आई हैं।

(ग) जैसे यहो.24 प्रगट करता है वे अक्सर पढ़े और पुनः निष्चित किए जाते थे।

2) संस्कृति

(क) प्राचीन नज़दिकी पूर्व के बाकी कानून

(1) ऊर–नामू (सुमेरियन, 2050 ई.पू) ऊर षहर से

(2) लीपीट–ईषटार (सुमेरियन, 1900 ई.पू) ईषीन षहर से

(3) एषूना (अकाडियन, 1875 ई.पू) एषूना षहर से

(4) हमूरबी का कानून (बाबूल, 1690 ई.पू) बाबूल से पर सुसा में स्टीला पाया जाता है

(ख) निर्ग.20:18–23:37 में व्यवस्था का ढाँचा अपने प्राचीन नज़दिकी पूर्वी कानूनों से काफी मिलता जुलता है। दस षब्द अद्वितिय रचना में हैं जो उनके अधिकार से सम्बन्धित है (द्वितिय पुरूश आज्ञाएं – परिणाम उपवाक्य)।

(ग) सबसे वास्तविक सांस्कृतिक सम्बन्ध हीताई सुज़ेरेन्टी सन्धि 1450–1200 ई.पू के साथ है। इस समानता के कुछ उत्तम उदाहरण निम्नलिखित हैं :

(1) दस षब्द

(2) व्यवस्था की पुस्तक

(3) यहोषू 24

इस सन्धि के मूल तत्व हैं

(1) राजा की पहचान

(2) महान कार्यों को लिखना

(3) वाचा की ज़िम्मेदारियाँ

(4) जन साधारण के पढ़ने के लिए सन्धि को पवित्र स्थान में रखना

(5) गवाही में षामिल समूहों का देवत्व

(6) आज्ञापलन के लिए आषीश और उल्लंघन के लिए श्राप

4) इस विशय के कुछ अच्छे श्रोत

(क) जॉर्ज मैन्डेहॉल, लॉ एण्ड कवनैन्ट इन इस्राएल एण्ड द एनसियन्ट नियर इस्ट

(ख) डीवे बीगली, मॉसस, द सरवैन्ट ऑफ यावे

(ग) डबल्यु. बेजालीन, ऑरीजन एण्ड हिस्ट्री

(घ) डी. जे. मैक्कार्थी, सन्धि और वाचा

घ. अन्दरूनी ढाँचा

1) अल्ट, ने अपनी पुस्तक, द ऑरीजन ऑफ इस्रालाइट लॉ, पहले व्यक्ति थे जिन्होंने परिणम सम्बन्धि और नैतिकता सम्बन्धि के बीच अन्तर को प्रगट किया।

(क) नैतिकता सम्बन्धि कानून वह सामान्य कानून है जो प्राचीन नज़दिकी पूर्वी व्यवस्था में था जिसमें षर्त षामिल थी – ''यदि'' – ''फिर''

(ख) परिणात्मक सम्बन्धि कानून वह है जो असामान्य है जो सीधि आज्ञा को प्रगट करती है ''तुम...'' या ''तुम नहीं...''

(ग) रॉनाल्ड डी वॉउक्स, एनषीयन्ट इस्राएल : षोसल इन्सटीट्यूट, भाग.1, पृश्ठ.146 में कहते हैं कि नैतिकता सम्बन्धि कानून प्राथमिक तौर पर समाजिक क्षेत्र में प्रयोग किए जाते हैं और परिणात्मक कानून धार्मिक क्षेत्र में।

2) दस षब्द प्राथमिक तौर पर अपने प्रगटिकरण में नकारात्मक हैं – 10 में से 8। इसमें द्वितिय पुरूश का प्रयोग किया गया है। वे या तो सम्पूर्ण वाचा समाज को सम्बोधित करने के लिए रचे गए हैं या प्रत्येक व्यक्ति को या फिर दोनो ही को।

3) पत्थर की दो तखतियाँ (निर्ग.24:12; 31:18) का अनुवाद दस आज्ञाओं के परमेष्वर तथा मनुश्य के प्रति विचार के सम्बन्ध में किया जाता है। मनुश्य का यहोवा से सम्बन्ध 4 आज्ञाओं और दूसरे मनुश्यों के साथ सम्बन्ध बाकी 6 आज्ञाओं में बतलाया गया है। हीताई सुज़ेरेन्टी सन्धि के प्रकाष में ये सम्पूर्ण आज्ञाओं की दो सूचियाँ हैं।

4) दस षब्दों का एतिहासिक क्रम

(क) यह सच है कि हमारे पास 10 आज्ञाएं हैं। परन्तु स्पश्ट भेद नहीं दिया गया है।

(ख) आधुनिक यहूदी निर्ग.20:2 को पहली आज्ञा मानते हैं। अंकों को दस रखने के लिए वे 3–6 आयत को दूसरी आज्ञा मानते हैं।

(ग) रोमन कैथोलिक और लूथरन कलीसियाऐं अगस्टीन का अनुसरण करती हैं, निर्ग.20:3–6 को पहली आज्ञा मानते हैं और अंकों को दस रखने के लिए 17 आयत को दो भागों में बाँट देते हैं।

(घ) जागृत कलीसियाएं, ऑरीगन और षुरूवाती पूर्वीय और पष्चिमी कलीसियाओं का अनुसरण करती हैं, और साबित करती हैं कि निर्ग.20:2 पहली आज्ञा है। यह प्राचीनतम यहूदी नज़रिया था जो फीलो और जॉसेफस द्वारा प्रस्तुत किया गया।

ङ. मसीहियों को किस प्रकार दस आज्ञाओं से जुड़ना है?

1) पहाड़ी उपदेष मत्ती.5–7 में यीषु के वचन के प्रति श्रेश्ठ नज़रिये को देखा जा सकता है और विषेश 5:17–48 इस सवाल की गम्भीरता को प्रगट करता है। उनका प्रचार दस आज्ञाओं और उनकी व्यवहारिकता पर आधारित प्रतीत होता है।

2) आपसी सम्बन्ध के सिद्धान्त

(क) विष्वासियों के लिए

(1) रॉय हनीकट, दिज़ टैन वर्डस

(१) ''हम दस आज्ञाओं को नहीं बढ़ा सकते क्योंकि हम परमेष्वर को नहीं बढ़ा सकते'' (पृश्ठ.7)

(२) ''क्योंकि आज्ञाएं परमेष्वर के लिए गवाही हैं इसलिए वह विचार जिसमें उनकी अनुरूपता और परमेष्वर की अनुरूपता एक दूसरे से बाँट न सकने के समान जुड़ी हुई हैं। यदि परमेष्वर आपके जीवन के लिए अनुरूप हैं तो यह आज्ञाऐं भी होंगी क्योंकि वे परमेष्वर के चरित्र और मांगों से सम्बन्धित हैं'' (पृश्ठ.8)।

(2) व्यक्तिगत तौर पर हमें इन निर्देषकों को पहले से ही स्थापित विष्वास के सम्बन्ध से आता हुआ देखना है। उन्हें परमेष्वर के प्रति समर्पण और विष्वास से जुदा करना उन्हें नाष करना है। इसलिए मेरे लिए वे विष्व व्यापि हैं केवल इसी विचार में कि परमेष्वर चाहते हैं की सभी मनुश्य उन्हें जानें। यह सारी मानवजाति के लिए परमेष्वर के प्रति अन्दरूनी गवाही से सम्बन्धित हैं। पौलुस इसे रोमियों.1:19–20; 2:14–15 में व्यक्त करते हैं। इस विचार में यह आज्ञाऐं निर्देषक प्रकाष को प्रगट करती हैं जो प्रत्येक मनुश्य के अन्दर बसती है।

(ख) प्रत्येक मनुश्य के लिए, हर समाज में, हर समय के लिए

(१) एल्टोन ट्रूबल्ड, फाऊन्डेषन फॉर रीकन्सट्रक्सन

''इस छोटी सी पुस्तक षोध–प्रबन्ध है नैतिक कानून की प्रत्यादान, जैसा की इब्रानी दस आज्ञाओं से प्रगट हुआ है, एक तरीका है जिससे सषक्त पतन का विशध्न प्राप्त होता है (पृश्ठ.6)''

(२) जॉर्ज रॉलीनसन, पुल्पीट कॉमेन्ट्री, ''एक्सोडस''

''इसमें सभी समयों के लिए मनुश्य के कर्तव्यों का सारांष षामिल है जो ईष्वरत्व को अपने सामने रखता है, जो हर प्रकार के मानव समाज के लिए बेहतर है, जो जब तक संसार सहन कर सकता है, अप्रचलित नहीं हो सकता। दस आज्ञाओं की प्रतिधारणा मसीही समाज के द्वारा नैतिक व्यवस्था के उत्तम सारांष के रूप में यहाँ प्रमाणित है, और स्वयं ही सार के प्रभु की प्रबल गवाही देता है (पृश्ठ.130)।''

(ग) वे उद्धार के लिए नहीं हैं और न ही पतित मनुश्य के आत्मिक छुटकारे के लिए हैं। पौलुस स्पश्ट रूप से इसका वर्णन गला.2:15–4:13 और रोमियों.3:21–6:23 में करते हैं। समाज में मनुश्यों के लिए वह निर्देषन के रूप में कार्य करते हैं। वे परमेष्वर की ओर संकेत करते हैं और फिर हमारे संगी मनुश्यों की ओर। पहले तत्व को खोना सभी तत्वों को खोना है। नैतिक कानून, बिना परिवर्तन, अन्तर्यामिता हृदय, सभी मनुश्य के आषाहीन पतन का चित्रण है। दस आज्ञाएं प्रमाणित हैं पर केवल हमारी अयोग्यता के बीच परमेष्वर से मिलने के लिए। छुटकारे से अलग वे निर्देषन हैं बिना निर्देषक के।

''और इनको''

यह दस आज्ञाओं **को** प्रगट करता है। इस दूसरे चरण की दस आज्ञाओं की सूची का क्रम यूनानी हस्तलेख बी से आया है जिसे वैटिकानुस कहते हैं। यह मूसा के निर्ग.20 और व्यव.5 के इब्रानी लेख से थोड़ा भिन्न है। दस आज्ञाओं का दूसरा चरण इस्राएलियों के आपसी सम्बन्ध के बारे में है जो यहोवा के साथ उनके सम्बन्ध पर आधारित है।

''और यदि कोई और आज्ञा है''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। और भी आज्ञाएं हैं। इस वाक्यांष का अर्थ है ''यदि दस आज्ञाओं से बाहर कोई और आज्ञा है।'' दूसरे षब्दों में यह मूसा की पूरी व्यवस्था के बारे में बताता है या सम्भवतः सामान्य ''कानून'' को भी।

यूनानी परम्परागत हस्तलेखों में भिन्नता है कि कितनी आज्ञाएं हैं और इन दस आज्ञाओं का क्रम कैसा है। यहूदी धर्म का एक क्रम है; कैथोलिक और जागृत कलीसिया का अलग क्रम है। इसकी भिन्नता ने इसके अर्थ को प्रभावित नहीं किया जो कि अधिकतर हस्तलेखों की भिन्नता में सत्य है।

''सब का सारांष
इस बात में पाया जाता है''

यह लैव्य19:18 से लिया गया है। सुसमाचार में इसका प्रयोग कई बार किया गया है (मत्ती.5:43; 19:19; 22:39; मरकुस.12:31; लूका.10:27)। यीषु इसे दूसरी सबसे बड़ी आज्ञा कहते हैं। इसका प्रयोग गला.5:14 और याक.2:8 में भी किया गया है। यदि कोई परमेष्वर से प्रेम करता है तो वह उस वस्तु से भी प्रेम करेगा जिससे परमेष्वर प्रेम करते हैं – मनुश्य जो परमेष्वर के स्वरूप में रचे गए हैं।

''तुम अपने पड़ोसी से
अपने समान प्रेम करो''

विष्वासियों को एक दूसरे से उतना प्रेम करना चाहिए जितना परमेष्वर उनसे करते हैं, इससे पहले कि वे दूसरों से प्रेम करें और उन्हें ग्रहण करें। अपने आप से सही प्रेम करना बुरा नहीं है। इस भाग का मुख्य सत्य स्पश्ट रूप से कहा गया है – दूसरों से प्रेम करो (रोमियों.13:10)। जो परमेष्वर के स्वयं को देने और बलिदान प्रेम से प्रभावित हुए हैं वे उसी तरह दूसरों से प्रेम करेंगे। यह मसीहसमानता की पहेली है (पुनः रचित परमेष्वर का स्वरूप)। इस प्रकार के प्रेम की उपस्थिति में ''व्यवस्था'' की कोई आवष्यकता नहीं।

रोमियों.13:11–14

11 और समय को पहचान कर ऐसा ही करो, इसलिये कि अब तुम्हारे लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है।

12 रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है; इसलिये हम अन्धकार के कामों को तज कर ज्योति के हथियार बान्ध लें।

13 जैसा दिन को सोहता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें; न कि लीला क्रीड़ा, और पियक्कड़पन, न व्यभिचार, और लुचपन में, और न झगड़े और डाह में।

14 वरन प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो, और शरीर के अभिलाषों को पूरा करने का उपाय न करो।

13:11

एन ए एस बी ''ऐसा ही करो''

एन के जे वी ''और ऐसा ही करो''

एन आर एस वी ''इसके इलावा''

टी इ वी ''तुम्हें ऐसा ही करना है''

एन जे बी ''इलावा''

यह पहले लिखी गई बातों (रोमियों.13:9–10) से आगे आने वाली बातों को जोड़ने का तरीका है (13:11–14)। वचन पर अमल करने वाले बनो केवल सुनने वाले नहीं। प्रेम को कार्य में लाना आवष्यक है।

''समय को पहचान कर''

समय के लिए यह षब्द (*काएरोस*) समय के विषेश अन्तराल के विचार में प्रयोग किया गया है, सामान्य काल क्रमानुसार समय के लिए नहीं *(कोरनॉस)*। विष्वासियों को इस प्रकाष में रहना चाहिए कि मसीह कभी भी आ सकते हैं।

''घड़ी आ पहुँची है''

यह रूपक, ''घड़ी'' (अक्सर यूहन्ना के सुसमाचार में प्रयोग किया गया है), विषेश समय (*काएरोस* के समान) को प्रगट करता है परमेष्वर के छुटकारे की योजना में (रोमियों.3:26; 1कुरि.7:29; 10:11; याक.5:8; 1पत.4:7; 2पत.3:9—13; 1यूह.2:19; प्रका.1:3; 22:10)। यह दोनों ही समय के लिए प्रयोग किया गया है यीषु के क्रूसीकरण के लिए और उनकी वापसी के लिए।

''नींद''

यह षब्द रूपक तौर पर नैतिक और आत्मिक आलस्य के लिए प्रयोग किया गया है (इफि.5:8—14; 1थिस्स.5:6)। षब्दों का अर्थ केवल विषेश संदर्भ में होता है। निष्चित परिभाशा के लिए सावधान। सभी षब्दों के कई सम्भावित अर्थ होते हैं।

''क्योंकि अब उद्धार निकट है''

उद्धार षुरूवाती निर्णय और प्रक्रिया है। देखिए विषेश षीर्शक 10:13। उद्धार तब तक पूरा नहीं होगा जब तक विष्वासियों को उनकी नई देह नहीं मिल जाती (1यूह.3:2; 1थिस्स.4:13—18; इब्रा.9:28; 1पत.1:5)। धर्मषास्त्रीय षब्दों में इसे ''महिमित'' कहते हैं (रोमियों.8:30)। यह प्रत्येक पीढ़ी के मसीहियों की आषा होनी चाहिए कि मसीह उनके समय में वापस आएंगे (लूका.21:28)। पौलुस कुछ अलग नहीं थे (1थिस्स.4:15)।

''जब हमने विष्वास किया''

मसीहत निर्णय से षुरू होती है (तुरन्त धर्मी ठहराया जाना और षुद्धिकरण) परन्तु इसका परिणाम भक्तिपूर्ण जीवनषैली होना चाहिए (प्रगतिषिल षुद्धिकरण) और अन्त मसीह की समानता है (महिमा)। प्रत्येक को मसीह में परमेष्वर के अवसर को ग्रहण करना आवष्यक है (यूह.1:12; 3:16; रोमियों.10:9:13)। यह षुरूवाती निर्णय अन्त नहीं है परन्तु केवल षुरूवात ही है।

13:12

''रात बहुत बीत गई है''

यह वर्तमान अधर्मी युग को सम्बोधित करता है जो नाष हो चुका है और बदल दिया गया है (1कुरि.7:29—31; 10:11; याक.5:8; इफि.5:8, 14; 1यूह.4:7; 2यूह.2:17—18; प्रका.1:3; 22:10)। देखिए विषेश षीर्शक 12:2।

''दिन निकलने पर है''

यह अन्तिम दिन हैं (फिलि.4:5; याक.5:9)। यीषु के देहधारण से ही हम अन्तिम दिनों में हैं। वे तब तक रहेंगे जब तक वह महिमा में नहीं लौट आते। पहली सदी से ही विष्वासी मसीह की वापसी में इतनी देरी के कारण आष्चर्यचकित हैं। मसीह में नया युग प्रारम्भ हो गया है।

''तज कर...
बाँध कर''

यहाँ पर सम्बोधन यह है कि ''तुम स्वयं ही तज दो...हमेषा के लिए बाँध लो''। दोनों परमेष्वर और मानव कार्यषील हैं दोनों कार्यों, धर्मी ठहराए जाने (पष्चाताप और विष्वास) और षुद्धिकरण (भक्तिपूर्ण जीवन) में। कपड़ों का रूपक पौलुस के लेखों में सामान्य है। विष्वासियों को अपने सोने के समय प्रयोग करने वाले कपड़े उतारकर अपने युद्ध के कवच को पहनना है (इफि. 4:22—25; कुलु.3:10, 12, 14)। हम मसीही सैनिक हैं जो प्रतिदिन के आत्मिक युद्ध के लिए तैयारी कर रहे हैं (इफि.6:10—18)।

''ज्योति के हथियार''

समभवतः यह यषा.59:17 की ओर संकेत करता है। विष्वासियों को निर्णय से धार्मिकता के हथियार पहनने चाहिए (2कुरि.6:7; 10:4; इफि.6:11, 13; 1थिस्स.5:8)। परमेष्वर के हथियार विष्वासियों के लिए मौजुद हैं पर उन्हें (1) अपनी आवष्यकता को पहचानना है; (2) परमेष्वर की प्रबन्ध को पहचानना है; और (3) व्यक्तिगत तौर पर और जानबुझकर अपने प्रतिदिन के जीवन और विचार में लागु करना है। आत्मिक युद्ध प्रतिदिन का होता है।

13:13

''आओ हम सीधी चाल चलें''

यह जीवनषैली के लिए इब्रानी कहावत थी। पौलुस इसका प्रयोग 33 बार करते हैं।

इस आयत में पाई जाने वाली पाप की सूची दो षब्दों के तीन समूहों से है। यह सम्भव है कि ये समानार्थ हैं। देखिए विषेश षीर्शक : पाप और सदाचार 1:28–31।

ये षब्द षायद रोम की कलीसिया में यहूदी और अन्यजातिय विष्वासियों के बीच मतभेद से सम्बन्धित है। नए अन्यजातिय विष्वासी षायद लगातार षामिल थे (1) उनकी कुछ अनैतिक आराधना की प्रथाओं में या (2) वापस आए यहूदी अगुवों के साथ कठोरता का व्यवहार करके जो थोडे ही समय पहले नीरो के सताव के कारण भाग गए थे जिसने रोम में यहूदी प्रथाओं पर रोक लगा दी थी।

''न कि लीला क्रीड़ा,
और पियक्कड़पन''

यह अनैतिक यौन सम्बन्ध से सम्बन्धित है जो अन्यजातिय धार्मिक प्रथाओं के पियक्कड़पन से जुड़ा है। गला.5:21 में षरीर के पापों की सूची में ये भी साथ ही साथ षामिल है।

''न व्यभिचार,
और लुचपन में''

यह जोड़ा पहले के ऊपर है। दूसरा षब्द नए नियम में विस्तृत रूप में पर प्रयोग किया गया है (मरकुस.7:22; 2कुरि.12:21; गला.5:19; इफि.4:19; 1पत.4:3; 2पत.2:7)। यदि पहला जोड़ा पियक्कड़पन पर केन्द्रीत है तो यह अनैतिक यौन सम्बन्ध पर, यहाँ तक कि सामाजिक तौर से अनियन्त्रीत लुचपन का त्याग।

''न झगड़े और डाह में''

यह षब्द लोगों के बीच झगड़े के बारे में बताता है (गला.5:20)। यह षायद पहले दो जोड़ों के गलत प्रयोग का परिणाम है। यदि यह मसीहियों के लिए है तो (1कुरि.3:3; कुलु.3:8), ये अन्यजातिय प्रथाओं को प्रगट करते हैं जो विष्वासियों के जीवन में रोकी जानी चाहिए। इस संदर्भ में ये आयत विष्वासियों के विपरीत है सो यह एक चेतावनी है।

13:14

''प्रभु यीषु मसीह को पहन लो''

यह रूपक यीषु मसीह के राजकीय वस्त्रों को प्रगट करता है जो अभी विष्वासियों के कंधों पर ड़ाले गए हैं (पदवीय षुद्धिकरण)। कुछ ज्ञानी इसे बपतिस्में के कपड़ों की ओर संकेत मानते हैं। यह वस्त्रों का रूपक पहले रोमियों.13:12 में प्रयोग किया गया था। यह मसीह में विष्वासियों की नई पदवी को बताने का तरीका है। यह इस पर भी ज़ोर ड़लता है कि विष्वासियों को अपनी नई जीवनषैली चुनाव को लागु करना है (प्रगतिषील षुद्धिकरण) मसीह में उनकी नई पदवी के कारण (इफि.4:22, 24; कुलु.3:8)। गला.3:27 में इस सत्य को तथ्य के वाक्य के रूप में प्रगट किया गया है और यहाँ पर एक आज्ञा के रूप में।

हम ''संत'' (पवित्र लोग) हैं उद्धार की घड़ी में परन्तु हमें ''पवित्र'' बनने के लिए चेतावनी दी जाती है। यह मसीह में मुफ्त उद्धार का बाइबलीय पूर्ण विरोधाभास है और तुरही की पुकार में मसीह की समानता के लिए बुलाहट है।

''उपाय न करो''

यह व्याकरण ढाँचा अक्सर प्रयोग किया जाता है प्रगतिषील कार्य को रोकने के लिए। ऐसा प्रतित होता है कि रोम में कुछ मसीही अनैतिक जीवन यापन कर रहे थे। यह षायद उनके अन्यजातिय आराधना से आया था।

षारीरिक मसीहत का वर्णन नए नियम से करना कठीन है। नए नियम के लेखक मानवजाति की दषा को काले और सफेद षब्दों में बयाँ करते हैं। षारीरिक मसीही तर्कपूर्ण षब्द है। पर यह वास्तविकता है हमारे ''अभी'' पर ''न आए हुए'' जीवन के लिए। पौलुस मनुश्यों को तीन समूहों में बाँट देते हैं (1कुरि.2:14–3:1) :

1) प्राकृतिक मनुश्य (खोया हुआ व्यक्ति), 2:14

2) आत्मिक मनुश्य (उद्धार पाया हुआ व्यक्ति), 3:1

3) षरीर के लोग (षारीरिक मसीही या षिषु मसीही), 3:1

''शरीर की अभिलाषाओं
को पूरा करने''

पौलुस आदम के पतित स्वभाव के प्रगतिषील खतरे को भली भाँती जानते थे (रोमियों.7; इफि.2:3), परन्तु यीषु हमें सामर्थ और इच्छा देते है परमेष्वर के लिए जीने के लिए (रोमियों.6)। यह प्रगतिषील संघर्श है (रोमियों.8:5–7; 1यूह.3:6–9)।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) सरकार के बारे में पौलुस के षब्द षुरूवाती मसीहियों के लिए मौलिक क्यों थे?

2) क्या मसीहियों को हर प्रकार की सरकार के तअधीन होना चाहिए?

3) क्या मसीहियों को सरकार की हरेक कानूनी माँग के अधीन होना चाहिए?

4) क्या आयत 1 राजा के ईष्वरीय अधिकार के बारे में सिखाता है?

5) क्या पौलुस धर्मषास्त्रीय तौर पर नया मंच बना रहे हैं या फिर मत्ती.22:21 में यीषु के षब्दों में वह पहले से षामिल हैं?

6) क्या प्रषासनिक अनाज्ञाकारीता मसीहियों के लिए कभी भी सही है (प्रेरित.5:25–32)?

7) आयत 4 कैसे मृत्यु दण्ड से सम्बन्धित है?

8) क्या मसीहियों का विवेक हमेषा सही होता है (रोमियों.13:5)?

9) आयत 8 के आधार पर क्या मसीहियों के पास कैर्डिट कार्ड नहीं होना चाहिए?

10) आयत 8 दूसरे मसीहियों के प्रति हमारे प्रेम को दर्षाता है या फिर सभी लोगों के लिए?

11) पौलुस दस आज्ञाओं को नए नियम के विष्वासियों के लिए प्रेरणादायक रूप में क्यों प्रयोग करते हैं?

12) पौलुस ऐसे भयानक पापों की सूची विष्वासियों के सम्बन्ध में क्यों प्रयोग करते हैं?

13) कोई व्यक्ति कैसे ''प्रभु यीषु मसीह को पहन सकता है''?

रोमियों – 14

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
अपने भाई पर दोश मत लगाओ	स्वतंत्रता का कानून	प्रेम दूसरों की शंकाओं का आदर करता है	दूसरों पर दोश मत लगाओ	शंका करने वालों के प्रति प्रेम
14:1–12	14:1–13	14:1–4	14:1–4	14:1–12
		14:5–6	14:5–12	
		14:7–9		
		14:10–12		
अपने भाईयों को ठोकर मत खिलाओ	प्रेम का कानून		दूसरों को मत गिराओ	
14:13–23		14:13–23	14:13–18	14:13–15
	14:14–23			
				14:16–21
			14:19–23	
				(14:22–15:6)
				14:22–23

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद
2) दूसरा अनुच्छेद
3) तीसरा अनुच्छेद
4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि रोमियों.14:1–12

क. यह अध्याय मसीही स्वतंत्रता और ज़िम्मेदारी के विरोधाभास को बराबरी में लाने की कोषिष करता है। लेख भाग 15:13 तक जाता है।

ख. यह अध्याय जिस समस्या के बारे में बताता है वह सम्भवतः रोम की कलीसिया में यहूदी और अन्यजातिय विष्वासियों के बीच मतभेद है (और सम्भवतः कुरिन्थ में पौलुस का वर्तमान अनुभव है)। परिवर्तन से पहले यहूदी लोग धर्मी और अन्यजातिय अनैतिक गिने जाते थे। याद रखिए कि यह अध्याय यीषु के वफादार अनुयायियों को सम्बोधित कर रहा है। यह अध्याय षारीरिक विष्वासियों को सम्बोधित नहीं करता (1कुरि.3:1)। श्रेश्ठ उद्देष्य दोनों ही समूहों को आरोपित करना है। दोनों ही किनारों के अन्त में खतरा है। यह तर्क स्वधार्मिकता या मनमानी स्वतंत्रता के लिए प्रमाणपत्र नहीं है।

याद रखिए कि पौलुस नें रोमियों की पत्री कुरिन्थ से लिखी थी। वहाँ की समस्या दल की आत्मा थी और रोम में दूसरे ही तरह के विष्वासी थे।

ग. विष्वासियों को सावधान रहना चाहिए कि वे अपनी षिक्षाओं और नैतिकता को सभी विष्वासियों के लिए नियम न बनाऐं (2कुरि.10:12)। विष्वासियों के पास जो प्रकाष है उन्हें उसके आधार पर चलना चाहिए पर उन्हें यह भी समझना चाहिए कि उनकी धार्मिक षिक्षा अपने आप ही परमेष्वर की षिक्षा नहीं बन जाऐगी। विष्वासी अब भी पाप द्वारा प्रभावित हैं। हमें एक दूसरे को वचन, खोज, और अनुभव से उत्साहित करना चाहिए, षिक्षा देनी चाहिए, परन्तु हमेषा प्रेम में। एक व्यक्ति जितना अधिक जानता है वो उतना ही अधिक जानता है कि वह नहीं जानता (1कुरि.13:12)।

घ. एक व्यक्ति की परमेष्वर के सामने की अवस्था और उद्देष्य उसके कार्यों को जाँचने की कुन्जी है। मसीही यीषु मसीह के सामने इस बात के न्याय के लिए खड़े होंगे कि उन्होंने दूसरों के साथ कैसा व्यवहार किया (रोमियों.14:10, 12; 2कुरि.5:10)।

ङ. मार्टिन लूथर ने कहा ''एक मसीही व्यक्ति सभी बातों पर स्वतंत्र मालिक है, किसी के तअधीन नहीं है; एक मसीही व्यक्ति सभी का ज़िम्मेदार दास है, सभी के तअधीन है।'' बाइबलीय सत्य अक्सर चिन्ताओं से भरे विरोधाभास में प्रस्तुत किया जाता है।

च. कठीन परन्तु महत्वपूर्ण विशय की चर्चा रोमियों.14:1–15:13 के पूरे लिखित भाग में की गई है और साथ ही 1कुरि.8–10 और कुलु.2:8–23 में।

छ. इस बात को कहना आवष्यक है कि वफादार विष्वासियों के बीच बहुवाद बुरा नहीं है। हरेक विष्वासी में सामर्थ और कमज़ोरी होती है। प्रत्येक अपने अन्दर के प्रकाष में चलना चाहिए पर हमेषा पवित्र आत्मा और बाइबल से और प्रकाष पाने के लिए तैयार रहना चाहिए। इस समय जब दर्पण में धुंधला सा नज़र आता है (1कुरि.13:8–13) व्यक्ति को प्रेम (रोमियों.14:15) और षान्ति (रोमियों.14:17, 19) से एक दूसरे के सुधार के लिए चलना चाहिए।

ज. ''बलवान'' और ''निर्बल'' षीर्शक जो पौलुस इस समूहों को देते हैं वे इनसे हमारा पक्षपात करते हैं। यह पौलुस का उद्देष्य नहीं था। दोनों ही समूह वफादार विष्वासी हैं। हम दूसरे विष्वसियों को अपने में बदलने में नहीं लगे हुए हैं। हम एक दूसरे को मसीह में ग्रहण करते हैं।

झ. पूरे तर्क की रूपरेखा इस प्रकार हो सकती है

(1) एक दूसरे को ग्रहण करो क्योंकि परमेष्वर हमें मसीह में ग्रहण करते हैं (रोमियों.14:1, 3; 15:7)

(2) एक दूसरे पर दोश मत लगाओ क्योंकि केवल मसीह ही हमारे प्रभु और न्यायी हैं (रोमियों.14:3–12)

(3) प्रेम व्यक्तिगत स्वतंत्रता से अधिक महत्वपूर्ण है (रोमियों.14:13–23)

(4) मसीह के उदाहरण का अनुसरण करो और दूसरो की बढ़ौतरी और भलाई के लिए अपने अधिकारों को सौंप दो (रोमियों. 15:1–13)।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.14:1–4

1 जो विश्वास के निर्बल है, उसे अपनी संगति में ले लो; परन्तु उसी शंकाओं पर विवाद करने के लिये नहीं।

2 क्योंकि एक को विश्वास है, कि सब कुछ खाना उचित है, परन्तु जो विश्वास में निर्बल है, वह साग पात ही खाता है।

3 और खानेवाला न–खानेवाले को तुच्छ न जाने, और न–खानेवाला खानेवाले पर दोष न लगाए; क्योंकि परमेश्वर ने उसे ग्रहण किया है।

4 तू कौन है जो दूसरे के सेवक पर दोष लगाता है? उसक स्थिर रहता या गिर जाना उसके स्वामी ही से सम्बन्ध रखता है, वरन वह स्थिर ही कर दिया जाएगा; क्योंकि प्रभु उसे स्थिर रख सकता है।

14:1

एन ए एस बी ''अभी ग्रहण करो''

एन के जे वी ''ग्रहण करो''

एन आर एस वी, टी इ वी ''स्वागत''

एन जे बी ''स्वागत करो''

यह प्रगतिषील आज्ञा है जो विशय पर ज़ोर देती है। सर्वनाम ''तुम'' यूनानी क्रिया है, परन्तु अंग्रजी में प्रयोग किया गया है और ''बलवन्त'' मसीही को प्रगट करता है (रोमियों.15:1)। यह रोम की कलीसिया में दो समूहों को प्रगट करता है। यह षायद सम्बन्धित है (1) यहूदी और अन्यजातिय विष्वासियों के बीच मतभेद (रोमियों.15:7–21) या (2) विभिन्न व्यक्तित्व। यह पूरा संदर्भ सच्चे और वफादार विष्वासियों के बारे में है कुछ अपने विष्वास में बलवान और कुछ निर्बल हैं। विष्वास यहाँ पर सुसमाचार की समझ के लिए प्रयोग किया गया है, और इसकी नई मौलिकता और स्वतंत्र करने के लिए प्रयोग किया गया है।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''वह जो विष्वास में निर्बल है''

एन आर एस वी, टी इ वी ''वे जो विष्वास में निर्बल हैं''

जे बी ''यदि व्यक्ति का विष्वास बलवान नहीं है''

यह वाक्यांष यूनानी मूलपाठ में पहले रखा गया है। वास्तव में इसका अर्थ है ''विष्वास में निर्बल''। वर्तमान वाक्य इस तथ्य पर केन्द्रीत है कि यह जीवनषैली चरित्र है। यह स्वधर्मी विचार को प्रगट करता है। अधिक षंका करने वाले मसीही भाईयों का वर्णन इस अध्याय में तीन तरह से किया गया है (1) भोजन के लिए पाबन्दी (रोमियों.14:2, 6, 21); (2) विषेश दिनों पर ज़ोर (रोमियों.14:5–6); और (3) दाखरस पर पाबन्दी (रोमियों.14:17, 21)। इसी प्रकार के व्यक्ति के बारे में रोमियों.15:1 और 1कुरि. 8:9–13; 9:22 में भी लिखा गया है। सावधान रहो स्वयं को बलवान या निर्बल मसीही की श्रेणी में लाने में जल्दी मत करो। अक्सर विष्वासी एक क्षेत्र में निर्बल और दूसरे में बलवान होते हैं।

इन बातों के प्रति पौलुस का व्यवहार गला.4:9–10 और कुलु.2:16–23 में बहुत ही अलग है। ये मूलपाठ झूठ षिक्षकों की षिक्षा और अवस्था को प्रगट करता है। रोमियों में ये वफादार विष्वासी है जिनका विवेक अधिक षंका करने वाला है।

विषेश षीर्शक : निर्बलता

यहाँ पर विरोध है। झूठ षिक्षक अपने परिचय पत्रों और साहित्यों की बनावट पर घमण्ड करते थे परन्तु पौलुस ''निर्बलता'' (*अस्थेनेआे*) के मूल्य को जानते थे। ध्यान दीजिए कि कितनी अधिक बार यह षब्द (अलग तरह से) 1 और 2 कुरिन्थियों में प्रयोग किया गया है।

घमण्ड	निर्बल
1कुरि.1:29, 31	1कुरि.1:25, 27
3:21	2:3
4:7	4:10
5:6	8:7, 9, 10, 11, 12
9:15, 16	9:22
2कुरि.1:12, 14	11:30
5:12 (दो बार)	12:22
7:4, 14 (दो बार)	15:43
8:24	2कुरि.10:10
9:2, 3	11:21, 29, 30
10:8, 13, 15, 16, 17	12:5, 9, 10 (दो बार)
11:12, 16, 17, 18, 30	13:3, 4 (दो बार), 9
12:1, 5, 6, 9	

पौलुस निर्बलता के विचार को अलग अलग तरह से प्रयोग करते हैं

1) परमेष्वर की निर्बलता, 1कुरि.1:25

2) संसार में निर्बल, 1कुरि.1:27

3) पौलुस की निर्बलता और डर, 1कुरि.2:3; 9:22; 2कुरि.11:29, 30; 12:5

4) पौलुस और उनका सेवकाई समूह, 1कुरि.4:10; 2कुरि.11:21

5) निर्बल विष्वासी, (रोमियों.14:1:15:13), 1कुरि.8:7, 9, 10, 11, 12; 9:22

6) षारीरिक बीमारी, 1कुरि.11:30

7) मानव षरीर के अंग, 1कुरि.12:22

8) षारीरिक देह, 1कुरि.15:43

9) पौलुस की षारीरिक उपस्थिति या उनके मौलिक गुण, 2कुरि.10:10

10) पौलुस की निर्बलता परमेष्वर की सामर्थ को प्रगट करती है, 2कुरि.12:9, 10; 13:4, 9

11) मसीह का संदेष पौलुस के द्वारा, 2कुरि.13:3

12) मसीह की षारीरिक देह, 2कुरि.13:4

एन ए एस बी ''उसके विचारो का न्याय करने के उद्देष्य से नहीं''

एन के जे वी ''षंका पूर्ण वस्तुओं पर विवाद करने के लिए नहीं''

एन आर एस वी ''विचारों पर झगड़ा करने के उद्देष्य से नहीं''

टी इ वी ''उनके व्यक्तिगत विचारों के लिए उनसे विवाद मत करो''

जे बी ''बिना विवाद षुरू किए''

विष्वासियों को दूसरे विष्वासियों को जिनके साथ वह सहमत नहीं उन्हें बिना बदले उन्हें ग्रहण करना चाहिए। यह संगति के आधार के रूप में स्वतंत्र विवेक की मांग करता है, न कि थोपी गई एकता। सभी विष्वासी प्रक्रिया में हैं। उन्हें पवित्र आत्मा को समय देना चाहिए कि वह प्रत्येक को प्रौढ़ता में लाऐं पर प्रौढ़ता में भी वे एक दूसरे से सहमत नहीं होंगे।

14:2

इस आयत में दिया गया भोजन पदार्थ धर्म के उद्देष्य के लिए है, स्वास्थ्य के नहीं। यह भोजन की समस्या दो श्रोतों से उभरी (1) यहूदी भोजन व्यवस्था (लैव्य.11) और (2) मांस जो अन्यजातिय मूर्तियों को बलिदान चढ़ाया जाता था (1कुरि.8–10)। यीषु ने स्पश्ट रूप से सिखाया कि यह भोजन नहीं है जो मनुश्य को अषुद्ध करता है (मत्ती.15:10–20; मरकुस.7:14–23)। यह सत्य प्रेरित.10 में कुरनेलियुस के प्रति पतरस के दर्षन से प्रमाणित होता है।

14:3

''खाने–पीने वाले को तुच्छ न जानो''

''तुच्छ'' का वास्तविक अर्थ है ''प्रकाषित करना'', ''नकारना'' और ''तुच्छ गिनना'' (रोमियों.14:10; लूका.18:9; 1कुरि.6:4; 16:11; 2कुरि.10:10; गला.4:14; 1थिस्स.5:20)। विष्वासियों को स्वधार्मिकता से अपनी सुरक्षा करनी चाहिए। जो विष्वास में बलवान है उसे निर्बल को दोशी नहीं ठहराना चाहिए।

''न्याय''

जो विष्वास में निर्बल है उन्हें अपने उन भाई–बहनों के कार्यों का न्याय नहीं करना चाहिए जो व्यक्तिगत विष्वासयोग्ता के मामले में उनसे सहमत नहीं होते।

''क्योंकि परमेष्वर ने उन्हें ग्रहण किया है''

यही षब्द 'स्वीकार' के लिए आयत 1 में प्रयोग किया गया है। विष्वासियों को एक दूसरे को ग्रहण करना इस बात पर आधारित है कि परमेष्वर ने भी उन्हें मसीह में ग्रहण किया है (रोमियों.15:7)। इस संदर्भ में आयत 3 सीधे उन लागों से बात कर रहा है जो षंका करते है, मसीही जो विष्वास में निर्बल हैं।

14:4

''तुम कौन हो''

यह जोरदार यूनानी षब्द है जो निर्बल भाईयों और बहनों से सम्बन्धित है।

''सेवक''

यह षब्द ***ओईकेटेस*** है जो ***ओईकोस*** से रचा गया है और जिसका अर्थ है ''घर'' इसलिए यह घर का सेवक है (लूका.16:13; प्रेरित.10:7; रोमियों.14:4; 1पत.2:18)। इस विचार में इसका प्रयोग सैप्टूआजैन्ट में किया गया है (उत्प.9:25; 27:37; 44:16, 33; 50:18)। यह नए नियम में दास या सेवक के लिए अक्सर प्रयोग होने वाला षब्द नहीं है, जो कि ***डूलोस*** है। यह घरेलू सेवक या दास को प्रगट करता है।

यहाँ पौलुस का तर्क यह है कि प्रत्येक विष्वासी मसीह का सेवक या दास है। वह ही उनके ''स्वामी'' हैं और केवल वह ही उनकी अगुवाई करेंगे और उनके कार्य और उद्देष्यों के लिए उन्हें ज़िम्मेदार ठहराएंगे (2कुरि.5:10)।

''उसका स्थिर रहना
और गिर जाना
उसके स्वामी ही से सम्बन्ध रखता है''

इस संदर्भ में पौलुस षंका करने वालों के बारे में कह रहे हैं पर यह वाक्य दोनों के ही बारे में बताता है। विष्वासियों को अपनी आँखों से लट्ठा निकालने के लिए बेहतर प्रयत्न करना चाहिए (मत्ती.7:1–15)।

''और वह स्थिर ही कर दिया जाएगा,
क्योंकि प्रभु उसे स्थिर कर सकते हैं''

यह अद्भुत वायदा है (रोमियों.5:1–2; यहू.1:24–25)। इसमें प्रत्येक विष्वासी की सहभागिता आवष्यक है (1कुरि.15:1–2)। देखिए विषेश षीर्शक : खड़ा या बने रहना 5:2।

यहाँ पर यूनानी हस्तलेख में भिन्नता है। एन के जे वी डी, एफ, जी, 048 और 0150 के यूनानी हस्तलेखों का और साथ ही वल्गेट अनुसरण करता है जहाँ ''परमेष्वर'' षब्द का प्रयोग किया गया है, जबकी एम एस एस पी46 में ''प्रभु'' (कुरियोस) षब्द का प्रयोग किया गया है। यू एस बी भी ''प्रभु'' षब्द का प्रयोग करता है।

रोमियों.14:5–9

5 कोई तो एक दिन को दूसरे से बढ़कर जानता है, और कोई सब दिन एक सा जानता है: हर एक अपने ही मन में निश्चय कर ले।

6 जो किसी दिन को मानता है, वह प्रभु के लिये मानता है: जो खाता है, वह प्रभु के लिये खाता है, क्योंकि परमेश्वर का धन्यवाद करता है, और जा नहीं खाता, वह प्रभु के लिये नहीं खाता और परमेश्वर का धन्यवाद करता है।

7 क्योंकि हम में से न तो कोई अपने लिये जीता है, और न कोई अपने लिये मरता है।

8 क्योंकि यदि हम जीवित हैं, तो प्रभु के लिये जीवित हैं; और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिये मरते हैं; सो हम जीएं या मरें, हम प्रभु ही के हैं।

9 क्योंकि मसीह इसीलिये मरा और जी भी उठा कि वह मरे हुओं और जीवतों, दोनों का प्रभु हो।

14:5

''कोई तो एक दिन को
दूसरे से बढ़कर जानता है''

धर्म के मामले में कुछ लोग अभी भी दिनांक सूचीका पर ध्यान रखते हैं (गला.4:10; कुलु.2:16–17)। हरेक दिन समानता से परमेष्वर के ही हैं। कोई विषेश दिन नहीं हैं। कोई ''सांसारिक'' और ''पवित्र'' नहीं है। सब पवित्र हैं।

''हर एक अपने ही मन में
निश्चय कर ले''

इस क्षेत्र में यह षान्ति की कुन्जी है। विष्वासी का व्यक्तिगत निष्चय उसके कार्यों के लिए प्राथमिकता है (रोमियों.14:23), परन्तु सभी विष्वासियों के लिए नहीं। परमेष्वर मेरे धर्मषास्त्रीय बक्से में नहीं रहते। मेरा धर्मषास्त्रीय विचार आवष्यक नहीं कि परमेष्वर का भी हो।

14:6

''प्रभु के लिए''

यह वाक्यांष तीन बार आयत 6 में और 2 बार आयत 8 में प्रयोग किया गया है। वफादार विष्वासियों के जीवनषैली चुनाव ''प्रभु के लिए'' होने चाहिए (इफि.6:7; कुलु.3:23), अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के लिए नहीं।

14:7

*''क्योंकि हम में से न तो कोई
अपने लिये जीता है''*

कोई भी मसीही टापू नहीं है। मसीही प्राथमिक तौर पर मसीह के लिए जीते हैं (रोमियों.14:8)। विष्वासियों के कार्य दूसरों को प्रभावित करते हैं। वे एक बहुत बड़े आत्मिक परिवार के सदस्य हैं। इसलिए उन्हें अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्रेम में सीमित करना होगा (1कुरि.10:24, 27–33)। उन्हें दूसरों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता में बढ़ने देना चाहिए। कट्टरपंथी विचार स्वधार्मिकता की ओर ले जाता है जो परमेष्वर की ओर से नहीं है। यीषु मसीह के कठोर षब्द और दोश स्वधर्मी फरीसियों के लिए थे।

14:8

''यदि...यदि''

यह तृतिय श्रेणी षर्तीया वाक्य है जिसका अर्थ है सम्भावित भविश्य कार्य। विष्वासी परमेष्वर की सेवा करते हैं हरेक सम्भावित आकस्मिक घटना में (इफि.6:7; कुलु.3:23)।

14:9

*''दोनों मरे हुओं और
जीवितों के प्रभु हैं''*

यह इन षब्दों के क्रम का अनियमित प्रयोग है। यह क्रम यीषु की मृत्यु और पुनरूत्थान को प्रगट कर सकता है। वह अब दोनों राज्यों के ऊपर श्रेश्ठ हैं। यह रचना धर्मषास्त्रीय कारण प्रगट करती है कि क्यों मसीहियों को अपने लिए नहीं जीना चाहिए, परन्तु दूसरे विष्वासियों के लिए जीना चाहिए। अब वह अपने नहीं है पर दाम देकर खरीदे गए हैं। वे अब यीषु के सेवक हैं, जो उनके पापों के लिए मारे गए ताकि वे अब पाप के गुलाम न रहें पर परमेष्वर के हों (रोमियों.6)। विष्वासियों को यीषु के प्रेम और सेवा के जीवन को प्राप्त करना चाहिए अपनी स्वार्थपूर्ण इच्छाओं के लिए मर कर (2कुरि.5:14–15; गला.2:20; 1यूह.3:16)।

रोमियों.14:10–12

10 तू अपने भाई पर क्यों दोष लगाता है? या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है? हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के साम्हने खड़े होंगे।

11 क्योंकि लिखा है, कि प्रभु कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध कि हर एक घुटना मेरे साम्हने टिकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर को अंगीकार करेगा।

12 सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा।

14:10

''पर तुम''

यह ज़ोर देने के लिए षुरू में प्रयोग किया गया है।

आयत 10 के दो सवाल आयत 1–12 का केन्द्र हैं। आयत 3 में सम्बोधित किए गए दो समूह यहाँ पर फिर से प्रकट किए गए हैं। एक समूह ''न्याय'' करता है और दूसर ''तुच्छ'' जानता है। ''सेवकों'' के लिए दोनों ही व्यवहार ठीक नहीं हैं। उनके स्वामी, यीषु मसीह, को ही केवल अधिकार है कि वह ''अवहेलना करें'' या ''नीचा दिखाऐं''। विष्वासियों को न्यायी के समान कार्य करना (1) परमेष्वर के स्थान को हथियाना है और (2) प्रारम्भीक और अधूरा है।

''हम सभी परमेष्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे''

यही सत्य 2कुरि.5:10 में भी प्रगट किया गया है। विष्वासी परमेष्वर के सामने वर्णन करेंगे कि उन्होंने दूसरों के साथ कैसा व्यवहार किया है। यीषु ईष्वरीय न्यायी कें रूप में कार्य करेंगे (मत्ती.25:31–46)।

एन के जे वी में ''मसीह के न्याय सिंहासन'' लिखा है। यूनानी हस्तलेख जो के जे वी को सहमती प्रदान करते हैं वे प्राचीन यूनानी हस्तलेखों को ठीक करने वाले हैं। एम एस एस, बी, सी, डी, एफ और जी में परमेष्वर, थियोस, षब्द का प्रयोग किया गया है। सम्भवतः लेखकों ने यूनानी षब्द को बदल दिया 2कुरि.5:10 को साबित करने के लिए। यह भी सम्भव है कि लेखकों ने इस आयत को ''गोद लेने'' के मसीह के दृश्टिकोण का विरोध करने के लिए इसे बदला हो। बहुत से मूलपाठ की भिन्नताऐं हैं जिनका प्रयोग मूलपाठ को कट्टर बनाने के लिए प्रयोग किया गया है (बार्ट डी. एरमैन, द ऑर्थोड़ोक्स करप्षन ऑफ स्कृप्चर, ऑक्सफॉर्ड विष्वविद्यालय द्वारा प्रकाषित, 1993), पृश्ठ.90–91।

14:11

''क्योंकि यह लिखा है''

यह विषेशतम कहावत है जिसका प्रयोग प्रेरणा पाए पुराने नियम के वचन के प्रयोग के लिए किया जाता है। यह यषा.45:23 की ओर संकेत करता है, जो कि फिलि.2:10–11 में भी लिखा है।

''जैसे मैं जीवित हूँ''

यह षपथ का तरीका है जो कि परमेष्वर के वाचा नाम यहोवा षब्द का षब्दप्रयोग है। यहोवा रचना करने की इब्रानी क्रिया से लिया गया है जिसका अर्थ है ''होना'' (निर्ग.3:14)। वह हमेषा जीवित रहने वाले या एकमात्र जीवित परमेष्वर हैं। इसलिए वह अपने ही होने की षपथ खाते हैं।

14:12

''सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा''

विष्वासियों का न्याय होगा (2कुरि.5:10), और तिरस्कार करने वाले भाई उस अनुभव का हिस्सा बनेंगे। कुछ प्राचीन यूनानी हस्तलेखों में ''परमेष्वर को'' षब्द छोड़ दिया गया है। यह संदर्भ से निष्चय ही जुड़ा हुआ है। यह भिन्नता आयत 10 की भिन्नता के प्रभाव के कारण है।

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि, रोमियों.14:13–23

क. मसीहियों को एक दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए यह विशय 1–12 से षुरू होता है। यह इस सत्य पर आधारित है कि उन्हें सभी प्रकार के मसीहियों को ग्रहण करना होगा क्योंकि मसीह, जो उनके प्रभु और न्यायी हैं, दोनों ही समूहों को पूर्ण तौर पर ग्रहण करते हैं। कई बार एक समूह की आत्मिक बातें जो उनके लिए महत्वपूर्ण हैं उनके भूतकाल, व्यक्तित्व का

तरीका, उनके माता–पिता, उनकी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं और अनुभवों इत्यादि के कारण वे बातें परमेष्वर के लिए मायने नहीं रखतीं।

ख. मसीही स्वतंत्रता और ज़िम्मेदारी की चर्चा का यह दूसरा चरण किसी और दृश्टिकोण से विशय को बढ़ाता है। इन आयतों में यह मसीह में, परमेष्वर के लिए विष्वासी का प्रेम है जो उसे प्रात्साहित करता है कि वह अपने से भिन्न मसीही भाईयों से प्रेम करे। जैसे यीषु ने विष्वासियों के लिए अपना जीवन दे दिया वैसे ही उन्हें अपनी स्वतंत्रता उन लोगों के लिए दे देनी है जिनके लिए वह मारे गए। यह प्रेम पर ज़ोर मसीही जीवन का आधारभूत उद्देष्य है जो रोमियों.13:8–10 में अविष्वासियों के साथ विष्वासी के सम्बन्ध के रूप में भी दिखाई देता है।

ग. यह सच्चाई कि इस भौतिक संसार में सब कुछ षुद्ध है कुछ मसीहियों के लिए ग्रहण करना मुष्किल है। अक्सर विष्वासी पाप का दोश अपने ऊपर लेने की वजाए ''वस्तुओं'' पर लगाते हैं। पौलुस बार बार कहते हैं कि सब वस्तुऐं षुद्ध हैं (रोमियों.14:14, 20; 1कुरि.6:12; 10:25–26; 1तीमु.4:4; तीत.1:15)। उनके वाक्य मरकुस.7:18–23 में भोजन के प्रति यीषु के षिक्षा का अनुसरण हैं। प्रेरित.10:15 में पतरस द्वारा कुरनेलियुस को ग्रहण करने के लिए षुद्ध और अषुद्ध भोजन के उदाहरण का प्रयोग किया गया है।

घ. यह भाग प्राथमिक तौर पर ''बलवान भाईयों'' को सम्बोधित करता है। पौलुस वाक्य के आधे सच ''सब वस्तुऐं षुद्ध हैं'' को स्वीकार करते हैं परन्तु उसमें जोड़कर कहते हैं कि लेकिन सब वस्तुऐं परमेष्वर के परिवार को नहीं बनातीं या महिमा नहीं दिलातीं (1कुरि.6:12; 10:23)। बलवान भाई की स्वतंत्रता दूसरे मसीही भाई का नाष कर सकती है। विष्वासी अपने भाईयों के रखवाले हैं, मसीह द्वारा और मसीह के लिए।

ङ. यह बहुत ही रूचिकर बात है कि पौलुस नहीं कहते कि ''निर्बल भाई'' एक आत्मिक प्रक्रिया में है जो उसे ''बलवान भाई'' बनाएगी। सारी चर्चा अनुग्रह में बढ़ने के बारे में कहीं पर भी नहीं कहती पर प्राथमिक रूप से भिन्न मसीही समझ के बीच प्रेम के बारे में है। विष्वासी का किसी एक समूह में आना उसके व्यक्तित्व तरीके, धार्मिक षिक्षा और व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है न कि ''सही'' और ''गलत'' पर। विष्वासी का कार्य दूसरों को बदलना नहीं है पर दूसरे समूह से प्रेम करना और उनका आदर करना है। यह हृदय की बात है न कि दिमाग की। परमेष्वर प्रेम करते हैं, ग्रहण करते हैं और अपने एकलौते पुत्र को सारी मानवजाति के लिए दे दिया, दोनों समूहों के लिए।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.14:13–23

13 सो आगे को हम एक दूसरे पर दोष न लगाएं पर तुम यही ठान लो कि कोई अपने भाई के साम्हने ठेस या ठोकर खाने का कारण न रखे।

14 मैं जानता हूं, और प्रभु यीशु से मुझे निश्चय हुआ है, कि कोई वस्तु अपने आप से अशुद्ध नहीं, परन्तु जो उस को अशुद्ध समझता है, उसके लिये अशुद्ध है।

15 यदि तेरा भाई तेरे भोजन के कारण उदास होता है, तो फिर तू प्रेम की रीति से नहीं चलताः जिस के लिये मसीह मरा उस को तू अपने भोजन के द्वारा नाश न कर।

16 अब तुम्हारी भलाई की निन्दा न होने पाए।

17 क्योंकि परमश्ेवर का राज्या खाना–पीना नहीं; परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है;

18 जो पवित्र आत्मा से होता है और जो कोई इस रीति से मसीह की सेवा करता है, वह परमेश्वर को भाता है और मनुष्यों में ग्रहणयोग्य ठहरता है।

19 इसलिये हम उन बातों का प्रयत्न करें जिनसे मेल मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो।

20 भोजन के लिये परमेश्वर का काम न बिगाड़ः सब कुछ शुद्ध तो है, परन्तु उस मनुष्य के लिये बुरा है, जिस को उसके भोजन करने से ठोकर लगती है।

21 भला तो यह है, कि तू न मांस खाए, और न दाखरस पीए, न और कुछ ऐसा करे, जिस से तेरा भाई ठोकर खाए।

22 तेरा जो विश्वास हो, उसे परमेश्वर के साम्हने अपने ही मन में रखः धन्य है वह, जो उस बात में, जिसे वह ठीक समझता है, अपने आप को दोषी नहीं ठहराता ।

23 परन्तु जो सन्देह करके खाता है, वह दण्ड के योग्य ठहर चुका, क्योंकि वह निश्चय धारणा से नहीं खाता, और जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है।

14:13

*''सो आगे को हम
एक दूसरे पर दोष न लगाएं''*

यह चेतावनी नहीं है पर प्रतिबन्ध है। यह आयत 16 के समान है। ''दोश'' षब्द का प्रयोग पौलुस द्वारा 5 बार 1–12 में पहले ही किया जा चुका है और अब 4 और बार 13:23 में किया गया है।

विषेश षीर्शक : क्या मसीहियों को एक दूसरे पर दोश लगाना चाहिए?

इस विशय पर दो तरह से चर्चा करना आवष्यक है। पहले तो मसीहियों को एक दूसरे दोश लगाने के लिए चेतावनी (मत्ती. 7:1–5; लूका.6:37, 42; रोमियों.2:1–11; याक.4:11–12)। अगुवों को जाँचने के लिए चेतावनी (मत्ती.7:6, 15–16; 1कुरि.14:29; 1थिस्स.5:21; 1तीमु.3:1–13; 1यूह.4:1–6)।

सही जाँच के कुछ नियम जो सहायक होंगे

1) साबित करने के उद्देष्य से जाँच होनी चाहिए (1यूह.4:1 – ''परीक्षा'' जो स्वीकृति के दृश्टिकोण से हो)

2) जाँच नम्रता और कोमलता से की जानी चाहिए (गला.6:1)

3) जाँच व्यक्तिगत प्राथमिकताओं पर आधारित नहीं होनी चाहिए (रोमियों.14:1–23; 1कुरि.8:1–13; 10:23–33)

4) जाँच द्वारा उन अगुवों की पहचान होनी चाहिए जिन्होंने ''समालोचना का सामना न किया हो'' न तो कलीसिया से और न ही समाज से (1तीमु.3)।

*''कोई अपने भाई के साम्हने
ठेस या ठोकर खाने का कारण न रखे''*

यही सत्य आयत 21 और 1कुरि.8:9 में भी लिखा गया है।

षब्द ''बाधा'' उस वस्तु को प्रगट करता है जो रास्ते पर हो और किसी के ठोकर खाने का कारण बनती है। षब्द ''विघ्न रखना'' का वास्तविक अर्थ है जानवर के लिए चारा रखे जाने वाले फन्दे का लिबालिनी तरीका।

मसीहत में सहभागिता का तत्व है। हम अपने भाई के रखवाले हैं, प्रोत्साहित करने वाले है, और मित्र हैं। विष्वास परिवार है।

14:14

एन ए एस बी ''मैं जानता हूँ और प्रभु यीषु में निष्चित हूँ''

एन के जे वी ''मैं जानता हूँ और प्रभु यीषु द्वारा निष्चय कराया गया है''

एन आर एस वी ''मैं जानता हूँ और प्रभु यीषु में विष्वास दिलाया गया हूँ''

टी इ वी ''प्रभु यीषु के साथ मेरी एकता मुझे निष्चित करती है''

जे बी ''अब मैं पूरी तरह से जानता हूँ, और अवष्य ही, मैं प्रभु यीषु के लिए बोलता हूँ''

वास्तव में इसका अर्थ है ''मैं लगातार जानता हूँ और निष्चित हूँ और मुझे लगातार निष्चय है''। यह 5[ख] और 22–23 का दोहराया गया सत्य है। विष्वासियों को आत्मिक चीज़ों के बारे में समझ पवित्र आत्मा द्वारा प्रभु यीषु के साथ सम्बन्ध से आती है। उन्हें उस प्रकाष में रहना चाहिए जो उनके पास है।

''कि कोई वस्तु अपने आप से
अषुद्ध नहीं''

यही सत्य प्रेरित.10:9–16 में भी प्रगट किया गया है। वस्तुएं बुरी नहीं हैं, पर लोग बुरे हैं। सृश्टि में कुछ भी बुरा नहीं है और न ही वस्तु अपने आप में (रोमियों.15:20; मरकुस.7:18–23; 1कुरि.10:25–26; 1तीमु.4:4; तीत.1:15)।

''परन्तु जो उसको अशुद्ध समझता है,
उसके लिये अशुद्ध है''

इसका अर्थ है धार्मिक तौर पर अषुद्ध। विष्वासियों को अपने विवेक के द्वारा अपने कार्यों को जाँचना चाहिए (रोमियों.15:5, 22–23)। यदि उन्हें किसी कार्य या बात के बारे में गलत समझ मिली है तो भी उन्हें परमेष्वर के सामने अपने अन्दर दिए गए प्रकाष में चलना चाहिए। उन्हें अपने अन्दर के प्रकाष द्वारा दूसरे विष्वासियों का न्याय नहीं करना चाहिए विषेश कर संदिग्ध क्षेत्रों में (रोमियों.14:1, 3, 4, 10, 13)।

14:15

''यदि तेरा भाई
तेरे भोजन के कारण उदास होता है''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। प्रेम, अधिकार नहीं; ज़िम्मेदारियाँ, स्वतंत्रता नहीं हमारी जीवनषैली का निर्धारण करती है।

यह या तो सम्बन्धित है (1) यहूदी भोजन की व्यवस्था (लैव्य.11); और (2) मांस जो बलिदान रूप में मूर्तियों को चढ़ाया गया हो (1कुरि.8:8–10)। आयत 20 इस सत्य को बहुत ही स्पश्ट रीति से व्यक्त करता है।

''तो फिर तुम प्रेम की रीति पर
नहीं चलते''

इसे अक्सर ''स्वतंत्रता का नियम'' (याक.1:25; 3:12), या ''राजकीय नियम'' (याक.2:8), या ''मसीह के नियम'' (गला.6:2) कहा जाता है। नई वाचा की ज़िम्मेदारियाँ और निर्देषन हैं।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''उसे अपने भोजन से नाष मत करो जिसके लिए मसीह मारे गए''

एन आर एस वी ''तुम जो खाते हो उसके द्वारा उसे नाष मत होने दो जिसके लिए मसीह मारे गए''

टी इ वी ''तुम जो भोजन खाते हो उससे उस व्यक्ति को नश्ट मत करो जिसके लिए मसीह मारे गए''

जे बी ''तुम निष्चय ही वह खाना खाने के लिए स्वतंत्र नहीं हो जो किसी व्यक्ति के लिए पतन का कारण बने जिसके लिए मसीह मारे गए''

यह बहुत ही स्थिर वाक्यांष है। कुछ मसीहियों की स्वतंत्रता बाकी मसीहियों के विनाष का कारण न बनने पाए। यह उद्धार के नश्ट होने को प्रगट नहीं करता पर षान्ति, निष्चय और प्रभावषाली सेवकाई का नाष है।

षब्द ''नाष'' का यूनानी षब्द है '***लुपेओ*** जिसका अर्थ है ''दुःख, वेदना या दर्द का कारण'' (सैप्टूआजैन्ट में भी समान ही है)। पौलुस इस षब्द का प्रयोग मुख्यतः 2कुरिन्थियों में करते हैं (2कुरि.2:2, 4, 5; 6:10; 7:8, 9, 11)। नाष करना बहुत ही कठोर षब्द है। यह उद्धार के नाष हो जाने से सम्बन्धित नहीं है परन्तु किसी के व्यक्तिगत विचारों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करने के पवित्र आत्मा द्वारा चेतना जगाना। यदि विष्वासी के कार्य विष्वास से नहीं है तो वह पाप है (रोमियों.15:23)।

14:16

एन ए एस बी ''तुम्हारे लिए जो भलाई है उसकी निन्दा न होने पाए''

एन के जे वी, एन आर एस वी ''अब तुम्हारी भलाई की निन्दा न होने पाए''

टी इ वी ''तुम जिसे भला कहते उसका नाम बुरा मत होने पाए''

जे बी ''तुम्हें अपने अवसरों में समझौता नही करना चाहिए''

स्वतंत्रता आसानी से प्रमाणपत्र में बदल सकती है।

यह ''भली वस्तु'' षब्द इस आयत में बलवन्त भाई के कार्य को प्रगट करता है। यह बलवन्त मसीही अपनी स्वतंत्रता को इस तरह से प्रयोग करते हैं कि वह निर्बल विष्वासियों पर नकारात्मक प्रभाव डाले और उनकी आत्मिकता का नुकसान हो तो वह ''भली वस्तु'' षैतान के लिए अवसर बन जाती है।

यह आयत ऐसा प्रतीत होता है कि विष्वासियों द्वारा एक दूसरे के व्यवाहर पर केन्द्रीत विशय से हट कर अविष्वासियों के प्रति रूची को प्रगट कर रहा है (रोमियों.14:18[ख])। यह क्रिया ''ईष्वर निन्दा'' से लिया गया है जो अक्सर अविष्वासियों के लिए प्रयोग की जाती है।

14:17

''परमेष्वर का राज्य''

रोमियों में इस वाक्यांष का केवल यहीं पर प्रयोग किया गया है। यह यीषु मसीह द्वारा लगातार प्रयोग में लाया जाना वाला षीर्शक। यह यहाँ पर वास्तविकता है और साथ ही आने वाले समय में भी (मत्ती.6:10)

व्यक्तिगत स्वतंत्रता का प्रयोग करने से कहीं अधिक मूल्यवान मसीह की देह के साथ सहभागिता का जीवन बिताना है। देखिए दिया गया षीर्शक।

विषेश षीर्शक : परमेष्वर का राज्य

पुराने नियम में यहोवा को इस्राएलियों के राजा के रूप में देखा गया (1षमू.8:7; भ.सं.10:16; 24:7–9; 29:10; 44:4; 89:18; 95:3; यषा.43:15; 44:6) और मसीहा एक आदर्ष राजा (भ.सं.2:6)। बैतलहम में यीषु के जन्म के साथ (6–4 ई0 पू) परमेष्वर का राज्य मानव इतिहास में नई सामर्थ और छुटकारा लेकर आया (नई वाचा, यिर्म,31:31–34; यहे.36:27–36)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने घोशणा की कि परमेष्वर का राज्य निकट है (मत्ती.3:2; मरकुस.1:15)। यीषु ने स्पश्ट रीति से षिक्षा दी कि परमेष्वर का राज्य उनमें और उनकी षिक्षाओं में आ चुका है (मत्ती.4:17, 23; 9:35; 10:7; 11:11–12; 12:28; 16:19; मरकुस. 12:34; लूका.10:9, 11; 11:20; 12:31–32; 16:16; 17:21)। फिर भी परमेष्वर का राज्य भविश्य है (मत्ती.16:28; 24:14; 26:29; मरकुस.9:1; लूका.21:31; 22:16, 18)।

सामान्य अवलोकन सदृष्यों मरकुस और लूका में हमें वाक्यांष ''परमेष्वर का राज्य'' मिलता है। यीषु की षिक्षाओं के इस सामान्य षीर्शक में मनुश्य के हृदय में परमेष्वर का राज्य षामिल है और एक दिन पूरी पृथ्वी पर परमेष्वर का राज्य आएगा। यह मत्ती.6:10 की यीषु की प्रार्थना से प्रगट होता है। मत्ती ने यहूदियों के लिए लिखा इसलिए ऐसा वाक्यांष लिखा जिसमे परमेष्वर का नाम षामिल नहीं है (स्वर्ग का राज्य), जबकी मरकुस और लूका अन्यजातियों के लिए लिखते हैं इसलिए सामान्य षब्द जो ईष्वर के लिए प्रयोग होता है उसका प्रयोग करते हैं।

यह सामान्य अवलोकन सुसमाचारों का कुन्जी वाक्यांष है। यीषु का पहला प्रचार और अन्तिम प्रचार और उनके अधिकतर दृश्टान्त इसी विशय पर हैं। अभी यह मनुश्य के हृदय में परमेष्वर के राज्य को प्रगट करता है। यह आष्चर्य की बात है कि यूहन्ना इस वाक्यांष का प्रयोग केवल दो ही बार करते हैं (और वह भी यीषु के दृश्टान्तों में नहीं)। यूहन्ना के सुसमाचार में ''अनन्त जीवन'' मुख्य षब्द और रूपक है।

यह विवाद मसीह के दो आगमनों के कारण है। पुराना नियम परमेष्वर के मसीह के केवल एक ही आगमन पर केन्द्रीत है – सेना, न्याय के लिए, महिमय आगमन – पर नया नियम प्रगट करता है कि वह पहली बार दुःख उठाने वाले दास यषा.53 और नम्र राजा जक.9:9 के रूप में आ चुके हैं। दो यहूदी युग, अधर्म का युग और धार्मिकता का नया युग अतिच्छादित कर दिया गया। यीषु अभी विष्वासियों के हृदयों में राज्य करते हैं पर एक दिन सारी सृश्टि पर राज्य करेंगे। जैसा कि पुराना नियम कहता है वैसे ही वह आएंगे। विष्वासी परमेष्वर के राज्य ''अभी मौजुद'' और ''अभी नहीं आया'' में जी रहे हैं (गॉर्डन डी. फी एण्ड डोगलस स्ट्राउटस हाउ टु रीड बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ, पृश्ठ.131–134)।

''परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है;
जो पवित्र आत्मा में होता है''

यह पवित्र आत्मा है जो व्यक्तिगत विष्वासी और विष्वास करने वाले समाज को यह गुण प्रदान करती है। यह परमेष्वर के परिवार का चरित्र है, बाहरी और भीतरी।

षब्द ''धार्मिकता'' यहाँ पर पौलुस द्वारा विषेश विचार के लिए प्रयोग किया गया है। देखिए विषेश षीर्शक 5:1। उनके लिए यह थोपी गई धार्मिकता है, विष्वासी की क्षमा के लिए परमेष्वर की घोशणा और मसीह में स्थिरता (रोमियों.3:21–31; 4)। पापी मानवता केवल धर्मी गिनी ही नहीं गई पर उन्हें धर्मी बनना है। यह दोनों ही है वरदान भी और लक्ष्य भी, खड़े रहना और सीढ़ी, विष्वास का कार्य और विष्वास का जीवन। देखिए विषेश षीर्शक 6:4।

14:18

विष्वासी द्वारा निर्बल विष्वासियों के लिए अपनी स्वतंत्रता को सीमित रखना मसीह की सेवा है। यीषु के प्रति अपने प्रेम को साबित करने का इससे उत्तम और कोई तरीका नहीं है कि जिनके लिए वह मारे गए उनसे प्रेम करें, उनकी देखभाल करें और उनकी सुरक्षा करें।

''मनुश्यों में ग्रहणयोग्य''

यह षायद बताने का तरीका है कि मसीही का दूसरों के लिए प्रेम सेवकाई के लिए द्वार खोल देता है और अविष्वासी समाज के लिए गवाही द्वार खोल देता है (रोमियों.14:16; 2कुरि.8:21; 1पत.2:12)। हम विष्वासी समाज में एक दूसरे के साथ जैसा बर्ताव करते हैं वो एक प्रभावषाली गवाही है, चाहे सकारात्मक या नकारात्मक।

14:19

''हम उन बातों का प्रयत्न करें''

यह षब्द ***''डीओको''*** पुराने नियम की कहावत सैप्टूआजैन्ट और पौलुस के लेखों में सामान्य बात है जिसका अर्थ है ''उत्सुकता से अनुसरण करना'' और ''पाने के लिए उत्सुकता से प्रयत्न करना''। पौलुस इस षब्द का प्रयोग रोमियों.9:30, 31; 12:13 और यहाँ पर ''प्रयत्न'' करने के विचार में करते हैं परन्तु 12:14 में उन लोगों के लिए जो विष्वासियों को सताते हैं (1कुरि.4:12; यहाँ तक कि अपने लिए; 15:9; 2कुरि.4:9; गला.1:13, 23; फिलि.3:6)।

ध्यान दीजिए कि मसीहियों को इन चीज़ों का प्रयत्न करना है।

1) अतिथि सत्कार, 12:13

2) वह वस्तुएं जो षान्ति लाती हैं और एक दूसरे की उन्नति के लिए हैं, 14:19

3) प्रेम, 1कुरि.14:1

4) मसीह की समानता, फिलि.3:12, 14

5) जो एक दूसरे के लिए भला है और सभी लोगों के लिए भी, 1थिस्स.5:15

6) धार्मिकता, भक्तिपूर्ण, विष्वास, प्रेम, धीरज, और कोमलता, 1तीमु.6:11

7) धार्मिकता, विष्वास, प्रेम और षान्ति उन लोगों के लिए जो परमेष्वर को पवित्र हृदय से पुकारते हैं, 2तीमु.2:22

''षान्ति के लिए और एक दूसरे की उन्नति के लिए''

यह हर बात में विष्वासी का लक्ष्य होना चाहिए (भ.सं.34:14; इब्रा.12:14)। एक व्यक्ति की स्वतंत्रता और धार्मिक समझ मसीह की देह की स्थिरता और उन्नति में अगुवाई करने वाली होनी चाहिए (रोमियों.15:2; 1कुरि.6:12; 14:26; इफि.4:12)। देखिए विषेश षीर्शक : आध्यात्मिक विकास करना या सुधारना 15:2

14:20

''परमेष्वर के कार्य को मत बिगाड़ो''

पौलुस के लेखों में इसका प्रयोग केवल तीन बार हुआ (2कुरि.5:1 मृत्यु के लिए और गला.2:18 नाष करने के विचार में)। यह ''बनाने'' आयत 19 और इस षब्द के बीच का षब्द है जिसका वास्तविक अर्थ है ''फाड़ डालना''। दानों ही रचना के रूपक हैं।

इस संदर्भ में ''परमेष्वर का कार्य'' क्या है? यह परिपक्वता को प्रस्तुत नहीं करता परन्तु ''निर्बल'' विष्वासी के जीवन में परमेष्वर की आत्मा के कार्य को व्यक्त करता है। इस संदर्भ और 1कुरि.8–10 में पौलुस ने कहीं भी नहीं कहा कि एक समूह को दूसरे समूह की बदलने में सहायता करे।

''सब कुछ षुद्ध तो है''

देखिए नोट. रोमियों.14:14।

एन ए एस बी ''परन्तु उस मनुष्य के लिये बुरा है, जिस को उसके भोजन करने से ठोकर लगती है''

एन के जे वी ''पर यह उस व्यक्ति के लिए बुरा है जो ठोकर के साथ भोजन खाता है''

एन आर एस वी ''पर यह तुम्हारे लिए बुरा है कि तुम दूसरों के लिए अपने भोजन द्वारा ठोकर खिलाते हो''

टी इ वी ''पर यह गलत है कि कुछ ऐसी वस्तु खाई जाए जिसके कारण दूसरा पाप में गिरे''

जे बी ''पर यह बुरा बन जाता है कि इसे खाने के द्वारा तुम दूसरों के गिरने का कारण बनो''

यह आयत इस अध्याय को केन्द्रीय सत्य है (1कुरि.10:25–26; तीत.1:15)। यह मूर्तियों को चढ़ाए गए मांस को प्रगट करता है (1कुरि.8–10)। मांस अच्छा या बुरा नहीं होता, परन्तु यदि निर्बल भाई जो सोचता है कि यह गलत है, और दूसरे मसीही को खाते देखता है और खाता है तो वह जो नैतिक तौर पर सामान्य है उसके लिए बुरा बन जाता है क्योंकि ये उसके व्यक्तिगत विवेक जो परमेष्वर की इच्छा से है का विरोध करता है।

बहुत से अंग्रज़ी अनुवाद इस वाक्यांष को ''बलवन्त भाई'' के सम्बन्ध में प्रयाग करते हैं कि उनके खाने के द्वारा निर्बल भाई प्रभावित होता है। जबकी कैथोलिक अनुवाद एन ए बी दूसरी तरह से इसे ''निर्बल भाई'' से सम्बन्ध में प्रयोग करता है और इसका अनुवाद करता है, ''पर यह मनुश्य के लिए गलत है कि वह ऐसा भोजन खाए जो उसके विवेक को ठोकर खिलाता है''। इस संदर्भ में पहला सही प्रतीत होता है पर उद्देष्यपूर्ण संदेह दोनों को प्रस्तुत करता है जैसा कि 14:22–23।

14:21

यह ''बलवन्त भाईयों'' के लिए षब्द हैं। कुछ खाने पीने की वस्तुओं से ''पूर्णतया परहेज'' के धार्मिक विचार के लिए ये एक मात्र बाइबलीय आधार है। बलवन्त मसीहियों को स्वयं को अपने मसीही भाईयों/बहनों और खोए हुए लोगों के लिए प्रेम मे सीमित रखना चाहिए। स्वयं को सीमित रखने का मुख्य कारण सांस्कृतिक, क्षेत्रीय और संस्थागत है। खाने और पीने पर पाबन्दी नहीं लगाई जा सकती।

14:22

एन ए एस बी ''तेरा जो विश्वास हो, उसे परमेश्वर के साम्हने अपने ही मन में रख : धन्य है वह, जो उस बात में, जिसे वह ठीक समझता है, अपने आप को दोषी नहीं ठहराता''

एन के जे वी ''क्या तुममें विश्वास है? उसे परमेश्वर के साम्हने अपने ही मन में रख : धन्य है वह, जो उस बात में, जिसे वह ठीक समझता है, अपने आप को दोषी नहीं ठहराता''

एन आर एस वी ''तेरा जो विश्वास हो, उसे परमेश्वर के साम्हने अपने ही मन में रख : धन्य है वह जिसमें दोशी ठहराने को कोई कारण नहीं, उस बात में, जिसे वह ठीक समझता है''

टी इ वी ''इस विशय के बारे में तुम जो विष्वास करते हो उसे अपने ही मन में रखो, फिर, तुम्हारे और परमेष्वर के बीच। धन्य है वह जो दोशी महसूस नहीं करते जब वह ऐसा कार्य करते हैं जिसे वह ठीक समझते हैं''

जे बी ''अपने विष्वास को पकड़े रहो, अपने और परमेष्वर के बीच – धन्य है वह जिसमें दोशी ठहराने को कोई कारण नहीं, उस बात में, जिसे वह ठीक समझता है''

यह फिर से इस बात की पुश्टि है कि विष्वासियों को अपने अन्दर के प्रकाष में जीवन बिताना है पवित्र आत्मा द्वारा निद्रेषित, बाइबल द्वारा ज्ञान प्राप्त विवेक (रोमियों.14:5)। उसे अपने ही अन्दर के प्रकाष में चलना होगा परन्तु अपने संगी विष्वासी के विष्वास को खेदित करके नहीं। आयत 22 ''बलवन्त भाई'' से सम्बन्धित है जबकी 23 ''निर्बल भाई'' से सम्बन्धित है।

आयत 22 हस्तलेखों की विभिन्नताओं से षुरू होता है। यह सवाल हो सकता है कि *(एन के जे वी)* यह फिर कथन *(एन ए एस बी, एन आर एस वी, टी इ वी और जे बी)*।

''प्रसन्न होना''

देखिए विषेश षीर्शक 2:18।

14:23

''पर जो संदेह करता है''

यह 14:3 के अधिक षंकालू मसीहियों से सम्बन्धित है।

''दण्ड के योग्य ठहर चुका''

यह ***काटा+करीनो*** से आया है जिसका अर्थ है (1) ''विरोध के प्रकाष में दोशी ठहराया जा चुका'' (हारोल्ड के माउल्टन, द एनालिटीकल ग्रीक लैक्सीकन रिवाइस्ड, पृश्ठ.216) और (2) ''दण्डित नहीं किया गया, पर दण्ड से पहले का वाक्य'' (रोमियों. 5:16, 18; 8:1) – (माउल्टन एण्ड मीलीगन, द वकाब्लरी ऑफ द ग्रीक टैस्टामैन्ट, पृश्ठ.328)। यहाँ पर यह एक व्यक्ति के अपने विवेक के विरोध और परिणामस्वरूप पवित्र आत्मा के उकसाने की वजह से दर्द को व्यक्त करता है।

''यदि वह खाता है''

तृतिय श्रेणी षर्तिया वाक्य।

''और जो कुछ भी विष्वास से नहीं है
वह पाप है''

बाइबल के संदिग्ध क्षेत्रों में पाप हमारे विवेक का विद्रोह है, व्यवस्था की विद्रोह नहीं। हमें उस प्रकाष में चलना चाहिए जो हमारे अन्दर है – हमेष बाइबल और पवित्र आत्मा से अधिक प्रकाष पाने के लिए तैयार रहिए।

परमेष्वर की इच्छा के बारे में विष्वासी की समझ ही उनके कार्यों का निर्णय करते हैं। यह सम्भव है कि परिपक्व विष्वासी बाइबल के संदिग्ध विशयों के बारे में अलग विचार रखे और परमेष्वर की इच्छा में भी हो।

कुछ यूनानी हस्तलेखों में 16:25–26 की प्रषंसा का संक्षित गीत अध्याय 14 की समाप्ती में है। कुछ में यह दोनों जगह है। एक पापरी हस्तलेख पी[46] में यह अध्याय 15 के अन्त में है। रोमियों के 6 यूनानी परम्परागत हस्तलेखों में यह भिन्न – भिन्न स्थानों में है। पूरी चर्चा के लिए देखिए, ए टैक्सटुकल कॉमेन्ट्री ऑफ द ग्रीक न्यू टैस्टामैन्ट, ब्रूस एम. मेटज़गर, यूनाईटेड़ बाइबल सोसाईटी द्वारा प्रकाषित, पृश्ठ.533–536। इन सिद्धन्तों का सारांष यहाँ है (1) ऑरीगन ने कहा रोम के प्रारम्भिक झूठ षिक्षक मारसीयोन ने रोमियों के आखरी दो अध्याय हटा दिए। यह प्रषंसा के संक्षित गीत का वर्णन अध्याय 14 में करता है। (2) दूसरे ज्ञानीयों ने इसे ऐसा देखा कि पौलुस ने रोमियों.1–14 को रोम भेजने के लिए लिखा और आवष्यकता देखकर वही पत्र रोमियों. 1–16 इफसुस भेजा। अध्याय 16 की अभिवादन की लम्बी सूची इफसुस को प्रगट करती है रोम को नहीं; (3) अध्याय 16 का अभीवादन उन विष्वासियों के लिए था जो रोम के मार्ग में थे क्योंकि अक्विला और प्रिस्किल्ला इफसुस में थे और उनके रोम लौटने के बारे में कोई जानकारी नहीं है; और (4) यह प्रषंसा का संक्षित गीत वास्तविक नहीं है पर बाद में सार्वजनिक आराधना में प्रयोग करने के उद्देष्य से लेखकों द्वारा जोड़ा गया।

एम. आर. वीनसेन्ट, वर्ड स्टडीस, भाग.2 रूचीकर है।

''इन सिद्धान्तों के विरोध में एक अटल तथ्य है पौलुस के एम एस एस विद्यमान है (लगभग 300) यह सभी एम एस एस अब तक विस्तारपूर्वक तुलना करते हैं, सभी महत्वपूण बातों की, इन अध्यायों प्राप्ति के सम्बन्ध और क्रम में प्रगट करता है, इस प्रषंसा के संक्षित गीत को त्याग कर'' (पृश्ठ.750)।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) ''निर्बल'' भाई का वर्णन कीजिए? क्या पौलुस का कहना है कि वे अपरिपक्व हैं?

2) मसीही स्वतंत्रता किस प्रकार मसीही ज़िम्मेदारी से सम्बन्धित है?

3) क्या प्रकृति में सब कुछ ''षुद्ध'' है या नैतिक रूप से सामान्य है (रोमियों.14:14, 20)?

4) कुरिन्थ में भोजन का सवाल इतना महत्वपूर्ण क्यों था (1कुरि.8, 10), याद रखिए पौलुस ने रोमियों की पत्री कुरिन्थ से लिखी थी?

5) इस अध्याय के ज्ञान, स्वतंत्रता और प्रेम के बीच के सम्बन्ध का वर्णन कीजिए।

6) कलीसिया में संगति हमें किस पर आधारित करनी चाहिए?

7) हमें अपने व्यक्तिगत चुनाव और कार्य किस पर आधारित करने चाहिए?

8) हमारे कार्य किस तरह दूसरों को प्रभावित करते हैं? यह हमसे क्या माँग करता है?

9) हम किस तरह सही मसीही नैतिकता का निर्धारण करें?

10) परिपक्व मसीहियों के लिए क्या यह सम्भव है कि वे असहमत हों और परमेष्वर के लिए ग्रहणयोग्य हों?

रोमियों – 15

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
अपने संगी मनुश्यों को प्रसन्न करो न कि स्वयं को	दूसरों के बोझों को उठाते हुए	बलवान को निर्बल का सहन करना होगा	दूसरों को प्रसन्न करो स्वयं को नहीं	(14:22–15:6)
15:1–6	15:1–6	15:1–6	15:1–6	
अन्यजातियों और यहूदियों के लिए समान सुसमाचार	साथ में परमेष्वर की महिमा करो		अन्यजातियों के लिए सुसमाचार	एकता के लिए अनुरोध
15:7–13	15:7–13	15:7–13	15:7–12	15:7–12
			15:13	15:13
पौलुस की सेवकाई के लिए नियुक्ति	यरूषलेम से इल्लुरिकुस	व्यक्तिगत लेख	इतनी हिम्मत के साथ पौलुस के लिखने का कारण	पुस्तक का परिषिश्ट भाग
15:14–21	15:14–21	15:14–21	15:14–21	15:14–16
				15:17–21
पौलुस की रोम जाने की योजना	रोम जाने की योजना		पौलुस की रोम जाने की योजना	पौलुस की योजना
15:22–29	15:22–33	15:22–29	15:22–29	15:22–29
15:30–33		15:30–33	15:30–33	15:30–33

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का ह्रदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद
2) दूसरा अनुच्छेद
3) तीसरा अनुच्छेद
4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि, रोमियों.15:1–13

क. मसीही स्वतंत्रता और ज़िम्मेदारी की चर्चा अध्याय 14 से 15:1–13 में जारी है।

ख. 14:1–15:13 के तर्क की रूपरेखा ऐसी हो सकती है

1) एक दूसरे को ग्रहण करो क्योंकि परमेष्वर हमें मसीह में ग्रहण करते हैं (रोमियों.141, 3; 15:7)

2) एक दूसरे का न्याय मत करो क्योंकि केवल मसीह ही हमारे स्वमी और न्यायी हैं (रोमियों.14:3–12)

3) व्यक्तिगत स्वतंत्रता से प्रेम अधिक महत्वपूर्ण है (रोमियों.14:13–23)

4) मसीह के उदाहरण का अनुसरण करो और अपने अधिकारों को दूसरों की उन्नति और भले के लिए त्याग दो (रोमियों. 15:1–13)

ग. 15:5–6 पूरे 14:1–15:13 के संदर्भ के तीन उद्देष्यों को प्रगट करता है

1) एक दूसरे के साथ मेल मिलाप से रहो

2) मसीह के उदाहरण की अनुरूपता में रहो

3) एक ही हृदय और ओंठों से परमेष्वर की स्तुति करो

घ. 1कुरि.8–10 में भी इसी व्यक्तिगत स्वतंत्रता और संयुक्त ज़िम्मेदारी के बीच तनाव के बारे में चर्चा की गई है।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.15:1–6

1 निदान हम बलवानों को चाहिए, कि निर्बलों की निर्बलताओं को सहें; न कि अपने आप को प्रसन्न करें।

2 हम में से हर एक अपने पड़ोसी को उस की भलाई के लिये सुधारने के निमित्त प्रसन्न करे।

3 क्योंकि मसीह ने अपने आप को प्रसन्न नहीं किया, पर जैसा लिखा है, कि तेरे निन्दकों की निन्दा मुझ पर आ पड़ी।

4 जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्र षास्त्र की शान्ति के द्वारा आशा रखें।

5 और धीरज, और शान्ति का दाता परमेश्वर तुम्हें यह वरदान दे, कि मसीह यीशु के अनुसार आपस में एक मन रहो।

6 ताकि तुम एक मन और एक मुंह होकर हमारे प्रभु यीशु मसीह कि पिता परमेश्वर की बड़ाई करो।

15:1

एन ए एस बी ''निदान हम बलवानों को चाहिए, कि निर्बलों की निर्बलताओं को सहें''

एन के जे वी ''हम जो बलवान हैं को चाहिए कि निर्बलों की निर्बलताओं को सहें''

एन आर एस वी ''हम जो बलवान हैं को चाहिए कि निर्बलों की असफलताओं को सहें''

टी इ वी ''हम जो विष्वास में बलवान हैं को चाहिए कि निर्बलों की सहायता करें कि वे अपनो बोझ उठा सकें''

जे बी ''हम जो बलवान हैं का यह कर्तव्य है कि निर्बलों की निर्बलताओं में उनका साथ दें''

बलवान और निर्बल का प्रयोग बताता है कि 14:1 में की षुरू हुई चर्चा अध्याय 15 में भी जारी है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह रोम की कलीसिया में के तनाव, और सभी कलीसियाओं के तनाव को प्रस्तुत करता है, और मार्ग में मसीही किस तरह बाइबल के संदिग्ध क्षेत्रों में अपना जीवन जीते हैं। परमेष्वर के साथ उनका सम्बन्ध इस बात पर आधारित नहीं है कि वे कुछ विषेश कार्य करें या फिर कुछ धार्मिक निशेध वस्तुओं से अलग हो जाए। दूसरा समूह भी पूर्णतया मसीही है, पूर्णतया ग्रहणयोग्य है, और पूर्णतया समर्पित विष्वासियों का समूह है। पर वे अपने विष्वास को अपने धार्मिक विचारों और पुराने अनुभवों के अनुसार देखते हैं। यहूदी विष्वासी यहूदी धर्म के पुरानी वाचा की व्यवहारिकता को पकड़े रहते थे। अन्यजातियों से आए विष्वासी अपने पुराने धर्म के विचारों और व्यवहारिकताओं को पकड़े रहते थे। पर ध्यान दीजिए कि पौलुस ने इस विचारधारा को विष्वासियों के ''पाप'' नहीं कहा। जब वे अपने विवेक के कार्य करते हैं तो वह पाप होता है (रोमियों.15:23)।

षब्द ''निर्बल'' (***अडुनाटेस,*** बिना बल के, रोमियों.8:3) षब्द रोमियों.14:1, 21 (1कुरि.8:7, 10, 11, 12; 9:22) के *अस्थेनो* से अलग है जिसका अर्थ भी बिना बल है।

यह मूलपाठ सीखाता है कि मसीहियों को धीरे धीरे दूसरे मसीहियों को सहना नहीं चाहिए परन्तु प्रेम के साथ एक दूसरे की ''देखभाल'' या एक दूसरे के ''साथ कार्य'' करना चाहिए। षब्द ''उठाना'' युह.19:17 और लूका.14:27 में यीषु के ''क्रूस उठाने'' के लिए भी प्रयोग किया गया है। पौलुस धार्मिक लोगों के बीच उभरने वाले तनाव को जानते थे। उन्हें गमालियेल से प्रषिक्षण मिला था जो हिलेल लिबरल स्कूल के रब्बी थे।

''न कि अपने आप को प्रसन्न करें''

स्वार्थ अपरिपक्वता का निष्चित चिन्ह है और मसीह के उदाहरण का अनुसरण करना (रोमियों.15:3; फिलि.2:1–11) निष्चय ही परिपक्वता का चिन्ह है। फिर से यहाँ पर बलवानों को सम्बोधित किया गया है (रोमियों.14:1, 14, 16, 21, 27)। इसका अर्थ यह नहीं है कि संगति को बनाए रखने की पूरी ज़िम्मेदारी उनकी ही है। निर्बलों को रोमियों.14:3, 20, 23; 15:5, 6, 7 में सम्बोधित किया गया है।

15:2

''हमसे में से हर एक अपने... पड़ोसी को प्रसन्न करे''

इस 'पड़ोसी' षब्द का प्रयोग संगी विष्वासियों के लिए किया गया है। यह विष्वासो के व्यक्तिगत समझौते को व्यक्त नहीं करता, पर इस बात को प्रगट करता है कि कोई भी अपने व्यक्तिगत विचारों को संदिग्ध क्षेत्रों पर न थोपे। मसीह की देह की उन्नति और एकता ही यहाँ पर लक्ष्य है व्यक्तिगत स्वतंत्रता नहीं (1कुरि.9:19–23; 10:24–33; इफि.4:1–16)।

एन ए एस बी ''उसे सुधारने के लिए''

एन के जे वी ''सुधार की ओर''

एन आर एस वी ''पड़ोसी को सुधारने के भले उद्देष्य के लिए''

टी इ वी ''उन्हें विष्वास में बनाने के लिए''

जे बी ''बलवन्त मसीही होने के लिए उनकी सहायता करना''

यह अध्याय 14 को मुख्य विशय है (रोमियों.14:16, 19)। यह एक आत्मिक वरदान भी है जो 1कुरि.10:23; 11:7; 14:26; इफि. 4:29 पाया जाता है।

इस संदर्भ में यह बलवन्त विष्वासी द्वारा प्रेम में अपनें संगी विष्वासियों की विष्वास में बढ़ौतरी में सहायता के उद्देष्य को प्रगट करता है। जॉसफ ए. फीटज़मेयर और रेमण्ड इ. ब्राउन, द्वारा सम्पादित, द जेरोम बीबलिकल कॉमेन्ट्री, भाग.2 में इस आयत पर विषेश टिप्पणी है।

''यह वाक्यांष अक्सर इस अर्थ में लिया जाता है कि ''उसे सुधारना'' (पड़ोसी), एक के मसीही पड़ोसी की व्यक्तिगत उन्नति। पर ध्यान दीजिए कि पौलुस अक्सर अपने पत्रों में रचना रूपक का प्रयोग संयुक्त रूप में करते हैं, यहाँ पर भी इस वाक्यांष का निसंदेह सामाजिक, संयुक्त अर्थ है (1कुरि.14:12; इफि.4:12; रोमियों.14:19)'' (पृश्ठ.328)।

विषेश षीर्शक : आध्यात्मिक विकास करना या सुधारना

षब्द ***ओइकोडोमेओ*** और इसके बाकी समानार्थों का प्रयोग पौलुस द्वारा अक्सर किया गया है। वास्तविकता में इसका अर्थ है ''घर बनाना'' (मत्ती.7:24), पर यह रूपक तौर पर इन बातों के लिए भी प्रयोग में लाया गया :

क. मसीह की देह, कलीसिया, 1कुरि.3:9; इफि.2:21; 4:16

ख. बनाना

(1) निर्बल भाईयों को, रोमियों.15:1

(2) पड़ोसियों को, रोमियों.15:2

(3) एक दूसरे को, इफि.4:29; 1थिस्स.5:11

(4) संतों को सेवा के लिए, इफि.4:11

ग. हमें बनाया जाता है या सुधारा जाता है

(1) प्रेम से, 1कुरि.8:1; इफि.4:16

(2) व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सीमित रखकर, 1कुरि.10:23–24

(3) षंकाओं को छोड़कर, 1तीमु.1:4

(4) आराधना में वक्ताओं को सीमित करके (गायकों, षिक्षकों, भविश्यद्वक्ताओं, अन्य भाशा बोलने वालों और अनुवादकों), 1कुरि. 14:3–4, 12

घ. प्रत्येक वस्तु आध्यात्मिक विकास और सुधारने के लिए हो

(1) पौलुस का अधिकार, 2कुरि.10:8; 12:19; 13:10

(2) रोमियों.14:19 और 1कुरि.14:26 का सारांष वाक्य

15:3

''क्योंकि मसीह ने भी''

मसीह ही हमारी प्रणाली और उदाहरण हैं। रोमियों.15:5; फिलि.2:1:11; 1पत.2:21; 1युह.3:16 में इस सत्य पर भी ज़ोर दिया गया है।

''लिखा है''

जो पुराने नियम की कहावत है। यह भ.सं.69:7 और 9 का लेख है। मसीह के उदाहरण का प्रयोग करके (उन्होंने स्वयं को प्रसन्न नहीं किया, फिलि.2:5–8) पुराने नियम के लेख के इलावा, पौलुस षुरूवाती कलीसिया में अधिकार के दो महत्वपूर्ण श्रोतों का प्रयोग करते हैं (न्यूमैन एण्ड नीडा, ए ट्राँस्लेटरस हैन्डबुक ऑन पौलस लैटर टू द रोमनस, पृश्ठ.271)। मसीह का स्वार्थरहीत होना कि उन्होंने सारे संसार के पाप उठा लिए हमारे लिए उदाहरण है (1यूह.3:16)।

15:4

''जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं''

पुराना नियम नए नियम के विष्वासियों के लिए भी लिखा गया है (रोमियों.4:23–24; 15:4; 1कुरि.9:10; 10:6, 11)। यह नई वाचा के विष्वसियों के लिए सही है (2तीमु.2:15; 3:16–17)। पुराने नियम और नए नियम में अविच्छिन्नता भी है और विच्छिन्नता भी है।

''धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति''

ध्यान दीजिए कि कैसे परमेष्वर के वचन का सत्य और विष्वासी की जीवनषैली प्रतिउत्तर इससे जुड़ा हुआ है। विष्वास और व्यवहारिकता आपस में जुड़े हुए हैं (रोमियों.15:5)। इसका परिणाम जीवन, मृत्यु और मसीह के पुनः आगमन की आषा पर भरोसा है।

''हम आषा रखें''

इसका अर्थ है कि हमारी आषा 15:4 में दिए गए कार्य पर आश्रित है। नए नियम में ''आषा'' अक्सर दूसरे आगमन को प्रगट करती है जब हमारा उद्धार पूरा होगा (रोमियों.8:30; 1यूह.3:2)। इस यूनानी षब्द में अंग्रेजी के समान अनिष्चितता नहीं है। दूसरा आगमन निष्चित घटना है जो अनिष्चित समय में होगी।

पौलुस इस षब्द का प्रयोग अलग अलग तरह से करते हैं पर सम्बन्धित विचारों में। अक्सर यह विष्वासी के विष्वास की पूर्णता से सम्बन्धित है। इसका वर्णन महिमा, अनन्त जीवन, अन्तिम उद्धार, दूसरे आगमन इत्यादि में किया जा सकता है। पूर्णता निष्चित है पर समय तत्व भविश्य का और अनजाना है। यह अक्सर ''विष्वास'' और ''प्रेम'' से सम्बन्धित है (1कुरि.13:13; 1थिस्स.1:3; 2थिस्स.2:16)। पौलुस द्वारा इसके प्रयोग की एक सूची :

1) दूसरा आगमन, गला5:5; इफि.1:18; 4:4; तीत.2:13

2) यीषु हमारी आषा हैं, 1तीमु.1:1

3) सुसमाचार पर भरोसा रखो, कुलु.1:23; 1थिस्स.2:15

4) अन्तिम उद्धार, कुलु.1:5; 1थिस्स.4:13; 5:8

5) परमेष्वर की महिमा, रोमियों.5:2; 2कुरि.3:12; कुलु.1:27

6) उद्धार की पुश्टि, 1थिस्स.5:8

7) अनन्त जीवन, तीत.1:2; 3:7

8) सारी सृश्टि का छुटकारा, रोमियों.8:20

9) विष्वास, रोमियों.8:23–25; 15:4

10) परमेष्वर के लिए षीर्शक, रोमियों.13:13

11) परमेष्वर के षीर्शक, रोमियों.15:13

12) विष्वासियों के लिए पौलुस की इच्छा, 2कुरि.1:7

15:5

''परमेष्वर तुम्हें...दें''

यह प्रार्थना और इच्छा को प्रगट करता है। पौलुस की प्रार्थना 15:5–6 में दो निवेदन थे (1) एक मन के (रोमियों.12:16; 2कुरि. 13:11; फिलि.2:2) और (2) एक आवाज़ में बड़ाई करें (रोमियों.15:6, 7, 9)।

''परमेष्वर जो धीरज और
षान्ति देते हैं''

यह परमेष्वर का बहुत ही व्याख्यात्मक षीर्शक है (रोमियों.15:13; 1कुरि.1:3)। परमेष्वर के ये चरित्र विष्वासियों में वचनों द्वारा आते हैं (रोमियों.15:4)। देखिए विषेश षीर्शक : निरन्तर प्रयत्न करने की आवष्यकता 8:25।

15:6

''परमेष्वर हमारे प्रभु यीषु मसीह के पिता''

यह ईष्वर हैं पूरे नए नियम के षीर्शक में (2कुरि.1:3; इफि.1:3; 1कुरि.1:3)। यह तत्वज्ञान आवष्यकता के परमेष्वर नहीं हैं पर प्रकाषन के परमेष्वर हैं। पौलुस की 15:5–6 की प्रार्थना में परमेष्वर के दो षीर्शकों पर ध्यान दीजिए (1) धीरज और षान्ति के परमेष्वर; और (2) परमेष्वर हमारे प्रभु यीषु मसीह के पिता। देखिए विषेश षीर्शक : पिता 1:7।

रोमियों.15:7–13

7 इसलिये, जैसा मसीह ने भी परमेश्वर की महिमा के लिये तुम्हें ग्रहण किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे को ग्रहण करो।

8 मैं कहता हूं, कि जो प्रतिज्ञाएं बापदादों को दी गई थीं, उन्हें दृढ़ करने के लिये मसीह, परमेश्वर की सच्चाई का प्रमाण देने के लिये खतना किए हुए लोगों का सेवक बना।

9 और अन्यजाति भी दया के कारण परमेश्वर की बड़ाई करें, जैसा लिखा है, कि इसलिये मैं जाति जाति में तेरा धन्यवाद करूंगा, और तेरे नाम के भजन गाऊंगा।

10 फिर कहा है, हे जाति–जाति के सब लोगों, उस की प्रजा के साथ आनन्द करो।

11 और फिर हे जाति–जाति के सब लागो, प्रभु की स्तुति करो; और हे राज्य राज्य के सब लोगो; उसे सराहो।

12 और फिर यशायाह कहता है, कि यिशै की एक जड़ प्रगट होगी, और अन्यजातियों का हाकीम होने के लिये एक उठेगा, उस पर अन्यजातियां आशा रखेंगी।

13 सो परमेश्वर जो आशा का दाता है तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, कि पवित्रआत्मा की सामर्थ से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए।

15:7

एन ए एस बी, टी इ वी ''एक दूसरे को ग्रहण करो''

एन के जे वी ''एक दूसरे को स्वीकार करो''

एन आर एस वी ''एक दूसरे का स्वगत् करो''

जे बी ''एक दूसरे के साथ समान मित्रता भाव का व्यवहार करो''

विष्वासियों को लगातार एक दूसरे को ग्रहण करते रहना चाहिए क्योंकि मसीह ने उन्हें ग्रहण किया है। यही सत्य 14:1 में भी पाया जाता है। यहाँ पर ये परमेष्वर द्वारा अन्यजातियों को ग्रहण करने के पुराने नियम के भागों का परिचय देता है (रोमियों. 15:9–12)। इसमें षायद रोम की कलीसिया के तनाव को भी प्रगट किया है।

मसीहत का चित्रण एक दूसरे के लिए विष्वासियों के स्वयं के देने में किया गया है (रोमियों.1:12; 12:5, 10, 16; 13:8; 14:13, 19; 15:5, 7, 14; 16:16)।

''जैसे कि मसीह ने भी
हमें ग्रहण किया है''

यहाँ पर विष्वासियों के दूसरों के प्रति कार्य का उद्‌देष्य और उत्तेजन है (रोमियों.14:3)। अध्याय 14 में केन्द्र बिन्दु था (1) मसीह स्वामी और न्यायी के रूप में (रोमियों.14:1—12); और (2) मसीह स्वयं को दे देने वाले प्रेम के उदाहरण (रोमियों. 14:13—23)। मसीह ने हमें ग्रहण किया है, हमें दूसरों को ग्रहण करना चाहिए।

''परमेष्वर की महिमा के लिए''

देखिए नोट 3:23।

15:8

''मसीह खतना किए हुए
लोगों के दास बन गए''

यीषु परमेष्वर के पुराने नियम की भविश्यवाणियों के पूरक हैं (मत्ती.15:24)। यह षायद रोम की कलीसिया में विष्वास करने वाले यहूदियों और अन्यजातियों के बीच तनाव की ओर संकेत कर सकता है।

एन ए एस बी ''परमेष्वर के सत्य की ओर से बाप दादाओं को दिए गए वायदों की पुश्टि''

एन के जे वी ''परमेष्वर के सत्य के लिए, बाप दादाओं को दिए गए वायदों का प्रमाण''

एन आर एस वी ''परमेष्वर के सत्य की ओर से ताकि वह बाप दादाओं को दिए गए वायदों को साबित कर सकें''

टी इ वी ''यहूदियों की ओर से, यह प्रगट करना कि परमेष्वर विष्वासयोग्य हैं, उनके पुर्वजों से किए गए वायदों को सत्य होने के लिए''

जे बी ''ताकि परमेष्वर विष्वासयोग्यता से बाप दादों से किए वायदों को पूरा कर सकें''

निष्चय ही यह पुराने नियम के इस्राएल के साथ किए वायदों को प्रगट करता है (रोमियों.4:16)। यह सारी मानवजाति को छुड़ाने के परमेष्वर के वायदे को भी प्रगट कर सकता है (उत्प.3:15; 12::3; निर्ग.19:5—6; यषा.2:2—4; 56:7; 66:18—24)। सुसमाचार का रहस्य यह है कि परमेष्वर की योजना हमेषा से यहूदियों और अन्यजातियों को मसीह द्वारा एक करने की थी (इफि.2:11—3:13)।

नए नियम के संदेष पुराने नियम की आषाओं की पूर्णता है, कुछ पूरी तरह से नया नहीं है। मसीह का महान लक्ष्य था (1) इस्राएल से किए गए आषा के वायदे को पूरा करना; और (2) अन्यजातियों के लिए द्वार खोलना (रोमियों.3:29—30; 9:30; 10:11—12, 16—20; 11:25; इफि.2:11—3:21)। जैसे इस्राएल अपने प्रचार द्वारा परमेष्वर को प्रगट करने और अन्यजातियों को विष्वास में लाने के लक्ष्य में असफल रहे, यीषु नए आत्मिक इस्राएल को सामर्थ देते हैं (गला.6:16) इस विष्वव्यापी कार्य को पूरा करने के लिए (मत्ती.28:19—20; यूह.3:16)।

''पुश्टि करना''

देखिए विषेश षीर्शक 4:16।

15:9—12

यह पुराने नियम से लिए गए लेख हैं यह प्रगट करने के लिए कि अन्यजातियाँ हमेषा से परमेष्वर की योजना का भाग रही हैं (रोमियों.10:16—20)। यह लेख पुराने नियम के भ.सं.18:49; 2षमू.22:50; व्यव.32:43; भ.सं.117:1; यषा.11:1, 10 से लिए गए हैं। ध्यान दीजिए कि इब्रानी बाइबल कनान के सभी भागों के लेख हैं : व्यवस्था, भविश्यद्वक्ता, लेख।

15:9 ''परमेष्वर की दया के लिए उनकी महिमा'' रोमियों के पहले से चुनाव (रोमियों.9:15, 16, 18, 23) और अन्यजातियों के षामिल होने (रोमियों.11:30, 31, 32; 15:9) की धर्मषास्त्रीय कुन्जी है परमेष्वर की दया। यह परमेष्वर की दया है जिसने इस्राएल को बचाया। यह परमेष्वर की दया है जो विष्वास करने वाले अन्यजातियों को बचाती है। यहाँ पर तकनीकि मानव का कार्य नहीं है (रोमियों.9) परन्तु परमेष्वर का दयालु और अपरिवर्तनीय स्वभाव (निर्ग.34:6; नेह.9:17; भ.सं.103:4, 8; योए.2:13) और मसीह का वायदा है (यषा.11:1, 10)।

15:13
''आषा के परमेष्वर''

यह 14:1 में षुरू हुए लेखन भाग का अन्तिम स्तुति गीत है। यह ईष्वर के लिए एक और अद्भत षीर्शक है – आषा के परमेष्वर।

15:13
''तुम्हें सारे आनन्द और षान्ति से भरें''

यह रोम के विष्वासियों के लिए पौलुस की प्रार्थना को प्रस्तुत करता है। ''सारे'' की उपस्थिति पर ध्यान दीजिए (रोमियों.5:1–2; 14:17)।

एन ए एस बी, एन के जे वी, एन आर एस वी ''विष्वास करने में''

टी इ वी ''उन पर तुम्हारे विष्वास के आधार पर''

जे बी ''तुम्हारे विष्वास में''

यह धीरज में भरोसे को व्यक्त करता है मसीह पर अविच्छिद विष्वास, पवित्र आत्मा के सामर्थ और व्यक्तिगत आनन्द और षान्ति के आधार पर। मसीह पर विष्वास कोई षुरूवाती निर्णय नहीं है पर जीवनषैली प्रतिउत्तर है।

''ताकि तुम आषा में बढ़ते जाओ''

यह ***पैरीसियुओ*** से लिया गया है जिसका वास्तविक अर्थ है ''ऊपर''।

विषेश षीर्शक : भरपूर होना (पैरिसीयुओ)

पौलुस अक्सर इस षब्द का प्रयोग करते हैं :

1) परमेष्वर का सत्य उनकी महिमा तक भरपूर हो गया, रोमियों.3:7

2) उन एक व्यक्ति, यीषु मसीह, के अनुग्रह में मुफ्त वरदान, भरपूर हुआ, रोमियों.5:15

3) विष्वासी आषा में भरपूर, रोमियों.15:13

4) विष्वासी परमेष्वर के सामने भोजन खाने के द्वारा सुरक्षित नहीं हैं या विषेश भोजन, 1कुरि.8:8

5) विष्वासी कलीसिया को बनाने में भरपूर हैं, 1कुरि.14:12

6) विष्वासी प्रभु का काम करने में भरपूर हैं, 1कुरि.15:58

7) विष्वासी भरपूरी से मसीह के दुःख और सांत्वना को बाँटते हैं, 2कुरि.1:5

8) धार्मिकता की सेवा महिमा में भरपूर, 2कुरि.4:15

9) विष्वासियों का धन्यवाद देना परमेष्वर की महिमा से भरपूर होना है, 2कुरि.4:15

10) विष्वासियों की आनन्द में भरपूरी, 2कुरि.8:2

11) हर बात में विष्वासियों की भरपूरी (विष्वास, बोलने, ज्ञान, उत्साह और प्रेम), साथ ही यरूषलेम कलीसिया के लिए वरदानों से, 2कुरि.8:7

12) सभी अनुग्रह विष्वासीयों के लिए भरपूर हैं, 2कुरि.9:8

13) विष्वासियों द्वारा परमेष्वर को भरपूर धन्यवाद, 2कुरि.9:12

14) परमेष्वर के अनुग्रह का धनीपन विष्वासियों पर भरपूर है, इफि.1:8

15) विष्वासियों का प्रेम अब भी अधिक अधिक बढ़ता जाता है, फिलि.1:9

16) पौलुस पर विष्वासियों का भरोसा मसीह में भरपूर है, फिलि.1:26

17) भरपूरी होना, फिलि.4:12, 18

18) विष्वासी कृतज्ञनता से भरपूर, कुलु.2:7

19) विष्वासी एक दूसरे के लिए प्रेम में बढ़ते और भरपूर होते हैं, 1थिस्स.3:12

20) भक्तिपूर्ण जीवनषैली से भरपूर, 1थिस्स.4:1

21) संगी विष्वासियों के लिए प्रेम में भरपूर, 1थिस्स.4:10

मसीह में परमेष्वर के अनुग्रह के बारे पौलुस की समझ थी ''ऊपर'' इसी लिए विष्वासियों को इस ''ऊपर'' अनुग्रह और प्रेम में अपने प्रतिदिन के जीवन में चलना है।

''पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा''

पवित्र आत्मा त्रिएकता के व्यक्ति हैं जो नए युग में कार्यरत हैं। उनके बिना किसी वस्तु का अनन्त मूल्य या प्रभाव नहीं है (रोमियों.15:19; 1कुरि.2:4; 1थिस्स.1:5)। देखिए विषेश षीर्शक 8:9 और 8:11।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रत्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) रोमियों.14:1–15:13 का केन्द्रीय सत्य क्या है?

2) 9–12 में पौलुस पुराने नियम के लेख क्यों लिखते हैं? वे क्या महान सत्य सीखाते हैं?

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि रोमियों.15:14–33

क. कई तरह से इस पत्र का अन्त इसके षुरूवात के समान है, 1:8–15

1) यह उनके विष्वास की प्रषंसा करता है (रोमियों.1:8)

2) यह अन्यजातियों के लिए पौलुस के सुसमाचार की प्रेरिताई का बचाव करता है (रोमियों.1:13, 14)

3) यह पौलुस के उनके पास जाने की इच्छा को प्रगट करता है (रोमियों.1:10, 13)

4) यह पौलुस की इच्छा को व्यक्त करता है कि वे दूसरे क्षेत्र, जहाँ सुसमाचार नहीं पहुँचा, में जाने में उनकी मद्द करें (स्पेन, रोमियों.1:13)

ख. फिर से यह रोम की कलीसिया में विष्वास करने वाले यहूदियों और अन्यजातियों के बीच मतभेद की ओर संकेत करता है, वैसे तो यह पूरे पत्र में है, पर विषेश करके 9–11 अध्यायों और 14:1–15:13 में है।

ग. साथ ही षुरूवाती कलीसिया में पौलुस की प्रेरिताई पर तनाव की ओर भी संकेत करता है। ऐसा प्रतित होता है कि वह रोमियों.15:15–19; 1:2, 5 में अपना बचाव कर रहे हैं।

घ. इस लिखित भाग में दो षीर्शक हैं।

1) पौलुस की प्रेरिताई, सुसमाचार प्रचारक, अन्यजातियों पर केन्द्रीत सेवकाई (रोमियों.15:14–21)

2) पौलुस की इस उद्देष्य को पूरा करने की यात्रा की योजना उन्हें रोम से ले जाऐगी (रोमियों.15:22–33)

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.15:14–21

14 हे मेरे भाइयो; मैं आप भी तुम्हारे विषय में निश्चय जानता हूं, कि तुम भी आप ही भलाई से भरे और ईश्वरीय ज्ञान से भरपूर हो और एक दूसरे को चिता सकते हो।

15 तौभी मैं ने कहीं–कहीं याद दिलाने के लिये तुम्हें जो बहुत हियाब करके लिखा, यह उस अनुग्रह के कारण हुआ, जो परमेश्वर ने मुझे दिया है।

16 कि मैं अन्याजातियों के लिये मसीह यीशु का सेवक होकर परमेश्वर के सुसमाचार की सेवा याजक की नाई करूं; जिस से अन्यजातियों का मानों चढ़ाया जाना, पवित्र आत्मा से पवित्र बनकर ग्रहण किया जाए।

17 सो उन बातों के विषय में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, मैं मसीह यीशु में बड़ाई कर सकता हूं।

18 क्योंकि उन बातों को छोड़ मुझे और किसी बात के विषय में कहने का हियाब नहीं, जो मसीह ने अन्यजातियों की अधीनता के लिये वचन, और कर्म।

19 और चिन्हों और अदभुत् कामों की सामर्थ से, और पवित्र आत्मा की सामर्थ से मेरे ही द्वारा किए : यहां तक कि मैंने यरूशलेम से लेकर चारों ओर इल्लुरिकुस तक मसीह के सुसमाचार का पूरा–पूरा प्रचार किया।

20 पर मेरे मन की उमंग यह है, कि जहां–जहां मसीह का नाम नहीं लिया गया, वहीं सुसमाचार सुनाऊं; ऐसा न हो, कि दूसरे की नींव पर घर बनाऊँ।

21 परन्तु जैसा लिखा है, वैसा ही हो, कि जिन्हें उसका सुसमाचार नहीं पहुंचा, वे ही देखेंगे और जिन्हों ने नहीं सुना वे ही समझेंगे।

15:14

एन ए एस बी ''और तुम्हारे बारे में, मेरे भाईयो, मैं आप भी निष्चित हूँ''

एन के जे वी ''अब मैं आप भी तुम्हारे बारे में निष्चित हूँ, मेरे भाईयो''

एन आर एस वी ''तुम्हारे बारे में आप भी निष्चित महसूस करता हूँ, हे मेरे भाईयो और बहनों''

टी इ वी ''मेरे मित्रों : मैं आप तुम्हारे बारे में निष्चित महसूस करता हूँ''

जे बी ''यह इसलिए नहीं कि तुम्हारे विशय में मुझे कुछ संदेह है, हे मेरे भाईयो, पर इसके विपरीत मैं तुम्हारे बारे में निष्चित हूँ''

''मैं'' यूनानी भाशा में काफी प्रभावषाली षब्द है। पौलुस सच में ही इस कलीसिया की सराहना कर रहे हैं।

पौलुस 15:14 में इन रोमी मसीहियों के बारे में तीन बातें कहते हैं (1) वे भालाई से भरे हुए हैं; (2) वे ज्ञान से भरपूर हैं; और (3) वे एक दूसरे को चेतावनी दे सकते हैं। यह आयत बताता है कि पौलुस उनके पास कोई नया संदेष नहीं ला रहे हैं, पर जो षुभ संदेष उन्होंने ने सुना और ग्रहण किया है उसकी व्यख्या कर रहे हैं और उसे स्पश्ट कर रहे हैं (रोमियों.15:15)।

''तुम आप ही भलाई से
भरे हो और ईष्वरीय ज्ञान...''

जैसा कि ''मैं आप'' पिछले आयत में प्रभावषाली है वैसे ही यहाँ पर ''तुम आप'' प्रभावषाली है। षब्द ''भरे'' (*मेसटोस*) का अर्थ है ''भरे हुए'' या ''परिपूर्ण'' है। पौलुस ने इस षब्द का प्रयोग केवल दो बार किया और दोनों ही बार रोमियों में (रोमियों.1:29; 15:14)।

पौलुस ने ''भरा हुआ'' (*प्लेरो*) का प्रयोग अक्सर रोमियों में किया है (रोमियों.1:29; 8:4; 13:8; 15:13, 14, 19)। वे संज्ञा *प्लेरोमा* का भी अक्सर प्रयोग करते हैं (रोमियों.11:12, 25; 13:10; 15:29), पर कहीं पर भी यह विषेशण के रूप में उनके लेखों में प्रयोग नहीं किया गया है।

यह पौलुस की इच्छा थी कि पूरा सुसमाचार पूरी तरह से विष्वासियों को भर दे और प्रेम और सेवा के रूप में बहे। विष्वासियों को जो भी चाहिए वो सब उनके पास मसीह में है। उन्हें इस पुश्टि कों पूरी तरह से ग्रहण करना और स्वीकार करना है।

''भलाई से भरपूर,
ज्ञान से भरपूर''

इस षब्द को समझने के दो तरीके हैं : (1) कि वे पिछले भाग से संदर्भ 14:1–15:13 से जुड़े हुए हैं – संदिग्ध बाइबल क्षेत्र के बारे में विचारों में भिन्नता होने के बावजूद विष्वासियों का एक दूसरे के प्रति प्रेम। यह ''भले'' षब्द के सामान्य प्रयोग से साबित होता है 14:16; 15:2 और यहाँ पर; और (2) कि ये पूरे विष्वास के सुसमाचार और व्यवहारिकता से सम्बन्धित है, परम्परावाद और धर्मपरायणता।

15:15

''मैंने बहुत ही हियाब के साथ
तुम्हें लिखा है''

पौलुस ने यह पत्र रोमियों के लिए कुरिन्थ से लिखा। उन पर एक विरोधी पक्ष द्वारा इस बात के लिए आक्रमण किया गया कि वह अपने पत्रों में हिम्मत वाले हैं पर व्यक्तित्व में निर्बल हैं। यह क्रिया षब्द ''हिम्मत से'' 2कुरि.10:2, 12;11:21 में भी मिलता है। पौलुस की हिम्मत उनके परिवर्तन, बुलाहट और सुसमाचार के ज्ञान से आई।

''उस अनुग्रह के कारण
जो मुझे परमेष्वर से मिला''

पौलुस परमेष्वर के अनुग्रह की ओर संकेत कर रहे हैं (रोमियों.1:5; 12:3; 1कुरि.3:10; 15:10; गला.2:9; इफि.3:7–8), जिन्होंने उन्हें बुलाया, बचाया, वरदान दिया और अन्यजातियों के पास भेजा (रोमियों.11:13; 15:16)। यह अपनी प्रेरिताई और अधिकार को साबित करने का उनका तरीका है (रोमियों.1:1, 5)।

15:16

''सेवक...सेवकाई...
चढ़ाया जाना...ग्रहणयोग्य''

16 और 17 आयतों में बहुत सारे याजकीय षब्द षामिल हैं। ''सेवा'' षब्द 15:27 में याजकीय सेवकाई के लिए प्रयोग किया गया है। इब्रा.8:2 में यह मसीह की सेवकाई के लिए प्रयोग किया गया है। पौलुस ने स्वयं को याजक के समान देखा (फिलि.2:17) अन्यजातियों को परमेष्वर से सामने चढ़ाते हुए, जो कि इस्राएल का कार्य था (निर्ग.19:5–6; यषा.66:20)। कलीसिया को यह कार्य सौपा गया है (मत्ती.28:18–20; लूका.24:47)। कलीसिया को 1पत.2:5, 9; प्रका.1:6 में पुराने नियम के याजकपद के षब्दों द्वारा बुलाया जाता है।

''पवित्र आत्मा द्वारा
षुद्ध किए गए''

इसका अर्थ है ''पवित्र आत्मा के द्वार षुद्ध किए गए और लगातार षुद्ध किए जा रहें हैं''। यह फिर से रोम की कलीसिया में यहूदी और अन्यजातिय विष्वासियों के बीच के तनाव को प्रस्तुत कर रहा है। पौलुस स्पश्ट रीति से कहते हैं कि राश्ट्र (अन्यजातियाँ) पवित्र आत्मा के द्वारा ग्रहण और षुद्ध किए गए और लगातार ग्रहण किए जाएंगे (1कुरि.6:11)।

15:17–19

त्रिएक परमेष्वर के एकता पूर्ण कार्य की ओर ध्यान दीजिए (रोमियों.15:17) और पवित्र आत्मा की सामर्थ में (रोमियों.15:19)। रोमियों.15:30 में ईष्वरत्व के तीन व्यक्तित्वों पर ध्यान दीजिए। यद्धपि षब्द ''त्रिएक'' बाइबल का नहीं है, पर विचार है (मत्ती. 3:16–17; 28:19; प्रेरित.8:9–10; 1कुरि.12:4–6; 2कुरि.1:21; 13:14; इफि.1:3:14; 4:4–6; तीत.3:4–6; 1पत.1:2)। देखिए विषेश षीर्शक : त्रिएक परमेष्वर 8:11।

15:18–19

पौलुस अपनी अन्यजातियों के बीच सेवकाई के प्रभावषाली होने के कुछ तरीके बताते हैं (1) वचन द्वारा; (2) कार्य द्वारा; (3) चिन्हों में; (4) चमत्कारों में और (5) सब कुछ पवित्र आत्मा की सामर्थ द्वारा।

हस्तलेखों की भिन्नता के बारें में छोटी सी टिप्पणी कुछ यूनानी मूलपाठ ''आत्मा'' में ''पवित्र'' जोड़ते हैं और कुछ में ''परमेष्वर की'' षब्द जोड़कर प्रयोग किया गया है। ऐसी ही भिन्नताओं में यह जोड़ या अप्रेरित स्पश्टीकरण इस भाग के सत्य को प्रभावित नहीं करते। यह वास्तव में वाक्यांष को बाद के लेखकों द्वारा उच्च स्तर पर लाने की कोषिष थी।

15:18

''अन्यजातियों की अधीनता के लिये''

परमेष्वर का उद्देष्य हमेषा से ऐसे लोग हैं जो उनके चरित्र को प्रगट करें। मसीह का सुसमाचार पतन उत्प.3 में जो परमेष्वर का स्वरूप खो गया था उसे पुनः रचना है। भक्तिपूर्ण चरित्र परमेष्वर के साथ निकट के सम्बन्ध का प्रमाण है। मसीहत का लक्ष्य परमेष्वर के साथ संगति और अब मसीह समानता है।

''वचन और कर्म''

यह पौलुस की सेवकाई को प्रगट करता है, न कि रोम के मसीहियों की आज्ञाकारीता को। निसंदेह आयत 19 में ये आत्मा के सामर्थ से सम्बन्धित है।

15:19

''और चिन्हों और अदभुत् कामों की सामर्थ से''

यह दो षब्द प्रेरितों के काम में कई बार साथ में नज़र आते हैं (प्रेरित.14:8–10; 16:16–18,25–26; 20:9–12; 28:8–9), सुसमाचार के द्वारा परमेष्वर की सामर्थ को कार्य करने का वर्णन करने के लिए (2कुरि.12:12)। ये दोनों समानार्थ लगते हैं। निष्चित रूप से इसका अर्थ क्या है – आष्चर्य कर्म या परिवर्तन – यह कह पाना कठीन है। यहाँ षायद फिर से यह पौलुस की प्रेरित पद के तनाव की ओर संकेत है। जैसे कि परमेष्वर ने 12 चेलों के कार्यों को यरूषलेम में साबित किया, ठीक वैसे ही उन्होंने पौलुस के कार्यों को भी अन्यजातियों के बीच प्रगट चिन्हों से साबित किया।

''मैंने पूरी रीति से मसीह का सुसमाचार सुनाया है''

इसका अर्थ यह है कि पौलुस विष्वास करते थे कि उन्होंने पूर्वी भूमध्य सागर में अपने प्रचार का कार्य समाप्त कर लिया है (रोमियों.15:23)।

''इल्लुरिकुस तक''

यह रोमी साम्राज्य के, जो ***दलमाटिया*** के नाम से भी जाना जाता है, ***अद्रीयाटिक*** सागर के उत्तर पष्चिम तट के पूरव की ओर, ग्रीस देष सम्बन्धि *प्रायद्वीप* (मकिदुनिया), है। प्रेरितों में नहीं लिखा कि पौलुस ने वहाँ प्रचार किया पर वह उस क्षेत्र में थे (प्रेरित. 20:1–2)। ''तक'' का अर्थ है ''उसकी सरहदों तक'' या फिर ''उस क्षेत्र तक''।

15:20

*''पर मेरे मन की उमंग यह है,
कि जहां जहां मसीह का नाम नहीं लिया गया,
वहीं सुसमाचार सुनाऊं''*

यह पौलुस की हमेषा से सुसमाचार प्रचार करने की रणनीति रही है (1कुरि.3:10; 2कुरि.10:15–16)। वह हमेषा उन अन्यजातियों तक पहुँचना चाहते थे जिन्हें सुसमाचार सुनने और ग्रहण करने का मौका नहीं मिला। उन्होंने रणनीति के अनुसार रोमन साम्राज्य के मुख्य षहर को चुना ताकि वहाँ पर स्थापित कलीसिया सारे क्षेत्र में सुसमाचार प्रचार कर सके या उन्हें षिश्य बना सके।

15:21

यह सैप्टूआजैन्ट के यषा.52:15 से लिया गया लेख है जो अन्यजातियों के द्वारा सुसमाचार सुनने के बारे में बताता है। पौलुस इस भविश्यद्वाणी को अपनी रणनीति के रूप में प्रयोग करते हैं।

रोमियों.15:22–29

22 इसी लिये मैं तुम्हारे पास आने से बार–बार रूका रहा।

23 परन्तु अब मुझे इन देशों में और जगह नहीं रही, और बहुत वर्षों से मुझे तुम्हारे पास आने की लालसा है।

24 इसलिये जब स्पेन को जाऊंगा तो तुम्हारे पास होता हुआ जाऊंगा क्योंकि मुझे आशा है, कि उस यात्रा में तुम से भेंट

करूं, और जब तुम्हारी संगति से मेरा जी कुछ भर जाए, तो तुम मुझे कुछ दूर आगे पहुँचा दो।

25 परन्तु अभी तो पवित्र लोगों की सेवा करने के लिये यरूशलेम को जाता हूं।

26 क्योंकि मकिदुनिया और अखया के लोगों को यह अच्छा लगा, कि यरूशलेम के पवित्र लोगों के कंगालों के लिये कुछ चन्दा करें।

27 अच्छा तो लगा, परन्तु वे उन के कर्जदार भी हैं, क्योंकि यदि अन्यजाति उन की आत्मिक बातों में भागी हुए, तो उन्हें भी उचित है, कि शारीरिक बातों में उन की सेवा करें।

28 सो मैं यह काम पूरा करके और उन को यह चन्दा सौंपकर तुम्हारे पास होता हुआ इसपानिया को जाऊंगा।

29 और मैं जानता हूं, कि जब मैं तुम्हारे पास आऊंगा, तो मसीह की पूरी आशीष के साथ आऊँगा।

15:22

''इसीलिए''

इस कारण की व्याख्या 15:20 में की जा चुकी है।

''मैं तुम्हारे पास आने से
बार–बार रूका रहा''

उन्हें बार–बार रोका गया (रोमियों.1:13)। ज़रिए के बारे में लिखा नहीं गया। यह षायद परमेष्वर, षैतान, बुरे लोग और बाकी जगह सुसमाचार सुनाने के अवसर हो सकते है।

याद रखिए कि पौलुस ने रोमियों की पत्री कुरिन्थ से लिखी। कुरिन्थ में उनके विद्रोहियों ने उन पर आक्रमण किया ताकि वह अपनी यात्रा की योजना को पूरा नहीं कर सके। कुरिन्थियों की कलीसिया से ही अन्दरूनी आक्रमण ने पौलुस को बहुत प्रभावित किया। उन्होंने षायद ऐसा कहा होगा कि उनकी यात्रा की योजना बार बार असफल हो रही है।

15:23

''परन्तु अब मुझे इन देशों में
और जगह नहीं रही''

यह आयत षायद एषिया माइनर के सीमित भौगोलिक क्षेत्र या फिर भूमध्य सागर के पूर्वी क्षेत्र को प्रगट करता है। पौलुस ने सभी लोगों और सभी जगहों पर सुसमाचार प्रचार नहीं किया पर केवल कुछ ही।

''और बहुत वर्षों से मुझे
तुम्हारे पास आने की लालसा है''

पौलुस ने अक्सर रोम जाने की अपनी इच्छा व्यक्त की है (रोमियों.1:10–15; प्रेरित.19:21; 23:11)।

15:24

''जब कभी मैं स्पेन जाऊँगा''

पौलुस रोमी साम्राज्य के पूर्वी भाग में जाना चाहते थे (2कुरि.10:16)। उन्हें रोम की कैद से प्रेरितों के काम के अन्त में छोड़ दिया गया और वह अपनी चौथी मिष्नरी यात्रा के लिए चल पड़े। पास्तरीय पत्र (1 और 2तीमु; तीतुस) इसी यात्रा के दौरान लिखे गए। सम्भवतः इसके बारे में 2तीमु.4:10 में सम्बोधन किया गया है। रोम के क्लेमन्त, जिन्होंने पहली सदी के अन्त से पहले अपने ''कुरिन्थियों के लिए पत्र'' में लिखा, 5:7 भी इस बात को प्रमाणित करता है कि पौलुस ''पष्चिम की छोर'' तक गए।

''और मेरी यात्रा के दौरान
तुमसे सहायता पाऊँ''

यह वाक्यांष कलीसिया में तकनीकि कहावत बन गया षुरूवाती सुसमाचार प्रचारकों की उनके प्रचार के लक्ष्य की सहायता के लिए (प्रेरित.15:3; 1कुरि.16:6; 2कुरि.1:16; तीत.3:13; 3यूह.1:6)। रोम यरूषलेम कलीसिया को सहायता राषी पहुँचाने में असफल रही पर वे पौलुस की पष्चिम की मिष्नरी यात्रा में आर्थिक रूप से सहायता कर सकते थे।

15:25

''पवित्र लोगों की सेवा करना''

यह षब्द अक्सर पैसे उठाने के लिए प्रयोग किया जाता था (रोमियों.15:31; 1कुरि.16:15; 2कुरि.8:4;द्ध 9:1)। देखिए षीर्शक : संत 1:7।

15:26

''यरूशलेम के पवित्र लोगों
के कंगालों के लिये कुछ चन्दा करें''

पौलुस यह चन्दा कई वर्शों से प्राप्त कर रहे थे (देखिए विषेश षीर्शक : *कोइनोनिया* 12:13) इन स्थानों से (1) गलातिया और एषिया माइनर (1कुरि.16:1–4); और (2) मकिदुनिया और अखया (2कुरि.8–9)। उन्हें यह तरीका अन्ताकिया की कलीसिया से मिला (प्रेरित.11:30; 12:25)। यह षुरूवाती कलीसिया के दो भागों को जोड़ने के उद्देष्य से था – यहूदी और अन्यजाति। अन्यजाति कलीसियाओं का वर्णन इस कार्य के लिए ''उत्साहित'' के रूप में किया है (रोमियों.15:26–27)। देखिए दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : मसीही और भूखे

क. *भूमिका*

1) मानवता और सृश्टि के पतन को हमेषा स्मरण रखने का एक चिन्ह है भूख।

2) बुराई और दुःख की समस्या का एक अंष है भूख। यह सीधे मनुश्य से जुड़ा है परमेष्वर से नहीं। यद्धपि परमेष्वर ने खेती बाड़ी की आषीश और श्राप को अपनी वाचा के लोगों को प्रतिफल और सज़ा देने के लिए प्रयोग किया (व्यव.27–28), पर ये अविष्वासियों के लिए सामान्य तौर पर सत्य नहीं है (मत्ती.5:45)। भूख लोभी, स्वार्थी और पदार्थ केन्द्रीत मानवजाति का एक और उदाहरण है। भूख की समस्या वास्तव में भोजन से सम्बन्धित नहीं है पर मनुश्य के उद्देष्य और प्राथमिकताओं से सम्बन्धित है।

3) भूख एक अवसर है छुड़ाई गई मानवजाति का परमेष्वर के प्रति अपने प्रेम को प्रगट करने का। कलीसिया की षारीरिक आवष्यकताओं के प्रति विष्वासी के कार्यों द्वारा प्रगट होना चाहिए कि हम कौन हैं।

ख. *बाइबल की सामग्री*

1) पुराना नियम

(क) *मूसा*

(1) प्राचीन इस्राएल में तीन में से एक दषवांस गरीबों के लिए होता था (व्सव.14:28–29)

(2) व्यवस्था ने गरीबों के खाने के लिए विषेश प्रावधान किए थे (निर्ग.23:11; लैव्य.19:10; 23:22; व्यव.24:19–22)

(3) व्यवस्था ने गरीबों के लिए विषेश सस्ते बलिदानों का भी प्रावधान दिया (लैव्य.14:21)

(4) इस्राएलियों को गरीबों और जरूरतमन्दों के लिए दयालु और खुले हृदय के स्वभाव का होना अनिवार्य था (व्यव.15:7–11; अय्य.29:16; 30:25; 31:16–23)

(ख) *बुद्धि साहित्य*

(1) जो गरीबों की सहायता करते थे उनके लिए विषेश आषीशें रखी गई थीं (भ.सं.41:4)

(2) गरीबों की सहायता करना परमेष्वर की सहायता करना है (नीति.14:31; 17:5; 19:17)

(ग) *भविश्यद्वक्ता*

(1) परमेष्वर ने अपनी आराधना की माँग की सामाजिक न्याय और जरूरतमन्दों पर दया के तौर पर (यषा.58:6–7; मीका.6:8)

(2) परमेष्वर के संदेष का एक चिन्ह यह था कि ये गरीबों और जरूरतमन्दों को प्रचार किया गया (यषा.61:1–2)

(3) परमेष्वर के भविश्यद्वक्ताओं ने सामाजिक षोशण का विद्रोह किया (आमो.2:6–8; 5:10–13; मीका)

2) नया नियम

(क) सुसमाचार

(1) गरीबों की सहायता के लिए चेतावनी (मरकुस.10:21; लूका.3:11)

(2) यीषु के नाम पर दूसरों के प्रति हमारे सामाजिक प्रेम के आधार पर ही हमारा न्याय होगा। सच तो यह है कि दूसरों की सहायता करना यीषु की सहायता करना है (मत्ती.25:31–46)

(3) मरकुस.14:7 को बुरी तरह से गलत समझा गया है कि यह यीषु की गरीबों के प्रति गैर सहायक भावना को प्रगट करता है। यह आयत उनकी अद्वितियता को साबित करने के लिए दिया गया है गरीबों को नीचा दिखाने के लिए नहीं।

(4) यषा.61:1–2 प्रगट करता है कि परमेष्वर के संदेष को प्राप्त करने वाले सामाजिक तौर पर बहिश्कृत लोग होंगे (लूका. 4:18; 7:22; 14:21)।

(ख) पौलुस

(1) पौलुस ने सीरिया के अन्ताकिया से यरूषलेम की कलीसिया के लिए प्रेम तोहफों का विचार सीखा (रोमियों.15:26; 1कुरि. 16:1; 2कुरि.8:4ख 6, 19; गला.2)।

(2) पौलुस अनुग्रह, विष्वास और कार्यों पर ज़ोर देते हैं (इफि.2:8–10)।

(ग) याकूब (नए नियम का बुद्धि साहित्य)

(1) मसीह द्वारा परमेष्वर पर विष्वास बिना सामाजिक कार्यों के स्वभाव के मरा हुआ है (याक.2:14–17)।

(2) वह तो यहाँ तक कहते हैं कि कर्म बिना विष्वास मरा हुआ है।

(घ) यूहन्ना

(1) 1यूहन्ना इस बात को प्रमाणित करता है कि मसीही जीवन बदले हुए विष्वासी जीवन और सेवा पर आधारित है (1यूह. 3:17–18)।

ग. *सारांष*

1) मनुश्य की वेदना और जरूरत मानवजाति के पाप से सम्बन्धित है। भूख के कई रूप हैं :

(क) निर्बुद्धि बरताव (नीति.19:15)

(ख) परमेष्वर का दण्ड (व्यव.27–28)

(ग) आत्मिक सेवा से सम्बन्धित (2कुरि.11:27)

(घ) सांस्कृतिक परिस्थितियाँ (लालच, गर्भधारण, इत्यादि)

(ङ) पदार्थ की परिस्थितियाँ (आकाल, बाढ़, ओले, इत्यादि)

2) परमेष्वर वास्तव में ही मनुश्य की चिन्ता करते हैं। वह अद्वितिय रूप से उन लोगों से प्रेम करते हैं जो जरूरत में हैं।

3) कार्यषील कलीसिया मानव आवष्यकता के लिए परमेष्वर का उत्तर है (षारीरिक और आत्मिक)

(क) सीधे, व्यक्तिगत कार्य

(ख) संयुक्त कार्य या कलीसिया का कार्य

(ग) राजनैतिक संस्था परिवर्तन के लिए

4) हमें सावधानी पूर्वक अपनी संस्कृति और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को परमेष्वर के वचन के प्रकाष में जाँचना चाहिए (2कुरि. 8–9)।

5) हमें घर पर और बाहर तथा कलीसिया और संसार में मानव आवष्यकता के लिए अपनी आँखों, हृदय और हाथों को खुला रखना चाहिए।

6) महान आदेष के प्रकाष में सहायता उन लोगों से सम्बन्धित होनी चाहिए जो मसीह में हैं (मत्ती.28:18–20)। सहायता षारीरक और आत्मिक दोनों होनी चाहिए।

15:27

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। यदि अन्यजातियाँ यहूदियों की आत्मिक आषीशों को बाँट रहें हैं तो (रोमियों.10–11) तो उन्हें यरूषलेम की माता कलीसिया की षारीरिक सहायता करना आवष्यक है।

15:28

एन ए एस बी ''जब मैंने इसे तैयार किया, और उनके इस फल पर अपनी मुहर लगाई''

एन के जे वी ''जब मैंने यह किया और उन पर इस फल की मुहर लगाई''

एन आर एस वी ''जब मैंने यह पूरा किया, और जो कुछ इकट्ठा किया था उन्हें दे दिया''

टी इ वी ''जब मैंने यह कार्य पूरा कर लिया और उन्हें सारा पैसा दे दिया जो उनके लिए इकट्‌ठा किया था''

जे बी ''और जब मैंने यह कर लिया और पूरी विधि के साथ जो कुछ उनके लिए इकट्‌ठा किया था उन्हें दे दिया''

यह किसी सामग्री के बक्से पर मुहर लगाकर उसकी सामग्री की सुरक्षा को साबित करने की और संकेत करता है। यह षायद पौलुस साबित करने का तरीका था कि जो भी पैसा दिया गया वो भेजा और प्राप्त कर लिया गया है। इस बात को प्रमाणित करने के लिए वह अपने साथ उन कलीसियाओं के प्रतिनिधियों को अपने साथ ले जाते थे (प्रेरित.20:4)।
मुहर के लिए देखिए विषेश षीर्शक 4:11।

15:29

ध्यान दीजिए कि षब्द ***प्लेरा/प्लेरोमा*** फिर से प्रयोग किया गया है। देखिए नोट 15:14।

रोमियों.15:30—33

30 और हे भाइयों; मैं यीशु मसीह का जो हमारा प्रभु है और पवित्र आत्मा के प्रेम का स्मरण दिला कर, तुम से विनती करता हूं, कि मेरे लिये परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो।

31 कि मैं यहूदिया के अविश्वासियों से बचा रहूं, और मेरी वह सेवा जो यरूशलेम के लिये है, पवित्र लोगों को भाए।

32 और मैं परमेश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास आनन्द के साथ आकर तुम्हारे साथ विश्राम पाऊं।

33 शान्ति का परमेश्वर तुम सब के साथ रहे। आमीन।

15:30

''मैं तुमसे विनती करता हूँ...
कि मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो''

ये दृढ़ यूनानी षब्द हैं। पहला षब्द 12:1 में प्रयोग किया गया है। दूसरा षब्द गतसमने बाग में यीषु के संघर्श लिए प्रयोग किया गया है। पौलुस अपने लिए और अपने सुसमाचार की सेवा के लिए प्रार्थना की आवष्यकता को गहराई से पहचानते थे (2कुरि. 1:11; इफि.6:18—20; कुलु.4:3; 1थिस्स.5:25; 2थिस्स.3:1)। यरूषलेम में उनका अनुभव कठीन था (रोमियों.15:31)। वे रोम पहुँचे पर उस तरह से नहीं जिस तरह से उन्होंने दर्षन देखा था। देखिए विषेश षीर्शक : मध्यस्थता प्रार्थना 9:3।

15:30—33

पौलुस की प्रार्थना तीन इच्छाओं को प्रगट करती है : (1) कि वह यहूदा में अपने षत्रुओं के हाथ छुटकारा प्राप्त कर लें (प्रेरित. 20:22—23); (2) कि अन्यजातिय कलीसियाओं द्वारा दिए गए तोहफे यरूषलेम कलीसिया द्वारा स्वीकार किए जाएं (प्रेरित.15:1 के बाद; 21:17 के बाद); और (3) ताकि वह स्पेन जाते समय रास्ते में रोम जा सकें।

15:30

''मेरे साथ लौलीन रहो''

यह षब्द केवल नए नियम में ही प्रयोग किया गया है। यह *सन* (साथ में) और *अगोनिज़ोमाय* (लड़ना, लौलीन रहना, 1कुरि.9:25; कुलु.1:29; 4:12; 1तीमु.4:10; 6:12)। यह रोम की कलीसिया के लिए पौलुस के साथ प्रार्थना करने की दृढ़ अनियमित पुकार कि यरूषलेम की माता कलीसिया अन्यजातियों द्वारा दी गई सहायता को ग्रहण कर लें।

15:31

''जो अविष्वासी हैं''
यह यहूदी विद्रोह को प्रगट करता है सम्भ्सवतः यहूदी विद्रोही समूह को प्रगट करता है परन्तु सामान्य तौर पर कलीसिया को प्रगट नहीं करता (रोमियों.11:30, 31)।

15:32
पौलुस की प्रार्थना दो और निवेदनों से समाप्त होती है (1) ताकि वह उनके पास आनन्द से जाएें और (2) ताकि उनके पास आराम कर सकें, इस षब्द का प्रयोग यषा.11:6 में किया गया है। पौलुस ने यषा.11:1, 10 का प्रयोग रोमियों.15:12 में किया है। पौलुस को षान्ति से आराम करने का समय चाहिए था और परिपक्व विष्वासियों के बीच समय बिताने की आवष्यकता थी (2कुरि.4:7–12; 6:3–10; 11:23–33)। परन्तु उन्हें ऐसा नहीं मिला। लेकिन पलिस्तीन में उनके लिए बन्दी बनना और सताव और सालों जेल में रहना इन्तज़ार कर रहा था।

15:33

''षान्ति के परमेष्वर''
यह परमेष्वर के लिए बहुत ही अद्भुत षीर्शक है (रोमियों.6:20; 2कुरि.13:11; फिलि.4:9; 1थिस्स.5:23; 2थिस्स.3:16; इब्रा.13:20)।

''आमीन''
देखिए विषेश षीर्शक 1:25।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रत्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) पुराना नियम किस प्रकार से नए नियम के विष्वासियों के लिए फायदेमन्द है (रोमियों.15:4–5; 1कुरि.10:6, 11)?

2) पौलुस क्यों 15:9–12 में पुराने नियम के आयत का प्रयोग करते हैं? वे कौन सा महान सत्य सिखाते हैं?

3) रोमियों के इस भाग में यहूदी और अन्यजातिय विष्वासियों के बीच तनाव सम्भवतः कहाँ पर नज़र आता है?

4) रोमियों के इस भाग में पौलुस की प्रेरिताई के बारे में तनाव कहाँ नज़र आता है?

5) यरूषलेम कलीसिया के लिए अन्यजातिय कलीसिया से चन्दा लेने का पौलुस का क्या कारण है (रोमियों.15:15–28)?

6) पौलुस की मिष्नरी रणनीति क्या थी? वह स्पेन क्यों जाना चाहते थे?

7) पौलुस अपने कार्य की व्याख्या याजक के कार्य के रूप में क्यों करते हैं (15:16) इस्राएल को याजकों के समाज के रूप में प्रस्तुत करते हुए (निर्ग.19:5–6) या कलीसिया को (1पत.2:5, 9; प्रका.1:6)?

8) क्या परमेष्वर ने 15:30–33 में की पौलुस की प्रार्थना का उत्तर दिया?

रोमियों – 16

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
व्यक्तिगत अभिवादन	बहन फीबे की सिफारिष	अभिवादन	व्यक्तिगत अभिवादन	अभिवादन और भलाई की कामना
16:1–2	16:1–2	16:1–2	16:1–2	16:1–2
	रोम के पवित्र लोगों को अभिवादन			
16:3–16	16:3–16	16:3–16	16:3–5क	16:3–5क
			16:5ख–7	16:5ख–16
			16:8–11	
			16:12–15	
			16:16	
	विभाजन करने वाले व्यक्ति से बचना		अन्तिम सुझाव	चेतावनी और पहला पष्चलेख
16:17–20	16:17–20	16:17–20	16:17–20क	16:17–20
			16:20ख–21	

	पौलुस के मित्रों का नमस्कार			अन्तिम नमस्कार और दूसरा पष्चलेख
16:21—23	16:21—24	16:21		16:21—23
		16:22	16:22	
		16:23	16:23	
परमेष्वर की प्रषंसा का सक्षिप्त गीत	आषीर्वाद		स्तुति की समाप्ति की प्रार्थना	परमेष्वर की प्रषंसा का संक्षिप्त गीत
16:25—27	16:25—27	16:25—27	16:25—26	16:25—27
			16:27	

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद
2) दूसरा अनुच्छेद
3) तीसरा अनुच्छेद
4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि, रोमियों.16:1—27

क. ध्यान दीजिए कि इस अन्तिम भाग में जितनी भी महिलाओं का ज़िक्र किया गया है वे सुसमाचार में पौलुस की सहकर्मी थीं (फिलि.4:3) : फीबे 16:1; प्रिसका 16:3; मरियम 16:6; युनिया (या युनियास – यदि ऐसा है तो वह पुरूश है) 16:7; त्रूफैना और त्रूफोसा 16:12; पिरसिस 16:12; ''उनकी माँ'' 16:13; यूलिया 16:15 और ''उनकी बहन'' 16:15। महिलाओं की सेवकाई में होने के सिद्धान्त के लिए सावधान। प्रत्येक विष्वासी को वरदान मिला है (1कुरि.12:7, 11), पूरे समय के सेवक (इफि.4:12)। बाइबल

पुरूश के स्वामित्व को परमेष्वर की इच्छा के रूप में साबित करती है। इस सूची में हमारे पास महिला सेविका, फीबे, और सम्भवतः प्रेरित–महिलाऐं, युनिया (योए.2:28; प्रेरित.2:16–21)। इस बात को बाइबलीय रूप से साबित करना बहुत ही कठीन, 1कुरि.11:4–5 और 14:34 में पौलुस के विरोधाभासी प्रतीत होते षब्दों के कारण।
ख. इन नामों की सम्भवतः जातिय पृश्ठभूमि

1) यहूदी विष्वासी : अक्विला, प्रिसका, अन्द्रुनीकुस, युनियास, मरियम

2) रोम के कुलीन परिवारों से : प्रिसका, अम्पलियातुस, अपिल्लेस, नरकियुस, यूलिया, फिलुलुगुस

3) यहूदी कुलीन परिवारों से : अरिस्तुबुलुस, हेरोदियोन।

ग. आयत 1–16 पौलुस का व्यक्तिगत अभिवादन है, जबकी 17–20 झूठे षिक्षकों के बारे में उनके समाप्ति की चेतावनी है। 21–23 में लक्ष्य समूह कुरिन्थ से अभिवादन भेजता है।

घ. एफ. एफ. ब्रूस, टीन्ड़ेल न्यू टैस्टामैन्ट कॉमैन्ट्री में अध्याय 16 के बारे में चर्चा काफी लाभदायक है। यदि आप इस अध्याय में पाए जाने वाले नामों के बारे में विस्तारपूर्वक अध्ययन करना चाहते हैं तो पृश्ठ.266–284 पढ़िये।

ङ इसमें कुछ संदेह है कि पत्र कहाँ पर समाप्त होता है। यूनानी हस्तलेखों में समाप्ति कई बार नज़र आती है अध्याय 14 में, 15 में और 16 में। 16:25–27 की परम्परागत समाप्ति एम एस एस पी[61], बी, सी, डी और साथ ही रोम के क्लेमन्त के यूनानी लेख (95 ई0) में पाई जाती है।

आयत 24 पुराने यूनानी हस्तलेखों में नहीं पाया जाता, पी[46], पी[61], ए, बी, सी और न ही लैटीन के वल्गेट अनुवाद और न ही सिकन्द्रीया के ऑरिगन के लेखों में। इस भिन्नता की पूर्ण चर्चा के लिए देखिए ब्रूस एम. मैटज़गर, ए टैक्सटुअल कॉमैन्ट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामैन्ट, पृश्ठ.533–536।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

रोमियों.16:1–2

1 मैं तुम से फीबे की, जो हमारी बहिन और किंख्रिया की कलीसिया की सेविका है, विनती करता हूँ।

2 कि तुम जैसा कि पवित्र लोगों को चाहिए, उसे प्रभु में ग्रहण करो; और जिस किसी बात में उस को तुम से प्रयोजन हो, उस की सहायता करो; क्योंकि वह भी बहुतों की वरन मेरी भी उपकारिणी हुई है।

16:1

''मैं तुम से विनती करता हूँ''

यह सेविका फीबे के बारे में सिफारिस पत्र है। सम्भवतः वह पौलुस का पत्र रोम लेकर आईं थीं। इस प्रकार के सिफारिस और परिचय करवाने वाले पत्रों के कई उदाहरण नए नियम में हैं (प्रेरित.18:27; 1कुरि.16:3; 2कुरि.3:1; 8:18–24; फिलि.2:19–30)।

''फीबे''

उनके नाम का अर्थ है ''उज्वल'' या ''प्रकाषमान''।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''जो कलीसिया के सेवक हैं''

एन आर एस वी ''कलीसिया के सेवक''

टी इ वी ''जो कलीसिया की सेवा करते हैं''

जे बी ''कलीसिया की सेविका''

यह षब्द है *डायाकोनोस*। यह सेवक या नौकर के लिए यूनानी षब्द है। रोमियों.15:8 में यह षब्द मसीह के लिए प्रयोग किया गया है और इफि.3:7; कुलु.1:23, 25 में पौलुस के लिए।

यह सेविका के दफतर के लिए नए नियम और बाइबल के बाद के कलीसिया के षरूवाती लेखों में प्रयोग किया गया षब्द है। स्थानिय कलीसिया में महिलाओं की सेवकाई का दूसरा उदाहरण है नए नियम के पास्टरीय पत्रों में प्रस्तुत ''विधवाओं की भूमिका'' (1तीमु.3:11; 5:3–16)। *आर एस वी, एम्पलिफाइड़ और फिलिप्स अनुवादो* में रोमियों.16:1 में ''सेविका'' षब्द का प्रयोग किया गया है। *एन ए एस बी* और *एन आई वी* में यह पृश्ठ के नीचे के लेख में दिया गया है। *एन इ बी* में लिखा है ''जो दफतर सम्भालता है''। सभी विष्वासी बुलाए गए है, वरदान पाए हुए हैं, पूरे–समय के सेवक हैं (इफि.4:12)। कुछ अगुवे के रूप में सेवा करने के लिए बुलाए गए हैं। हमारी परम्पराओं को वचन को मार्ग देना चाहिए। ये षुरूवाती सेवक और सेविकाऐं सच में ही सेवा करने वाले थे न कि आज के समान कलीसिया के कुलीन और आला अधिकारी।

एम. आर. वीनसिन्ट, वर्ड स्टडी, भाग.2 पृश्ठ.752 और 1196, कहता है कि प्रेरिताई संघ की जो स्थापना दूसरी सदी के अन्त या तीसरी सदी आरम्भ में हुई जिसमें कलीसिया की महिला सहायकों के कर्तव्यों और अभिशेक स्थान में भिन्नता आई।

1) सेविकाएं

2) विधवाएं (1तीमु.3:11; 5:9–10)

3) कुवाँरियाँ (प्रेरित.21:9 और सम्भवतः 1कुरि.7:34)

इन कर्तव्यों में निम्न कार्य षामिल थे :

1) रोगीयों की देखभाल

2) जो षारीरिक तौर पर सताए गए हैं उनकी देखभाल करना

3) विष्वास के लिए जो जेल में हैं उनसे भेंट करना

4) नए विष्वासियों को षिक्षा देना

5) महिलाओं के बपतिस्में में सहायता करना

6) कलीसिया की महिला सदस्यों की देखरेख करना

विषेश षीर्शक : परमेष्वर की योजना में महिलाएं

क. पुराना नियम

1) सांस्कृतिक तौर पर महिलाओं को सम्मपत्ती समझा जाता था।

(क) सम्पत्ती की सूची में षामिल (निर्ग.20:17)

(ख) गुलाम महिलाओं के साथ व्यवहार (निर्ग.21:7–11)

(ग) महिला की मन्नतें सामाजिक रूप से उसके प्रति ज़िम्मेदार पुरूश द्वारा स्थापित की जानी चाहिए (गिन.30)

(घ) महिलाएं युद्ध में की लूट (व्यव.20:10–14; 21:10–14)

2) व्यवहारिक तौर पर परस्पर सहायता है

(क) स्त्री और पुरूश परमेष्वर के स्वरूप में रचे गए (उत्प.1:26–27)

(ख) पिता और माता का आदर करो (निर्ग.20:12; व्यव.5:16)

(ग) माता और पिता का भय मानो (लैव्य.19:3; 20:9)

(घ) पुरूश और स्त्री दोनों ही *नाज़ीर* हो सकते हैं (गिन.6:1–2)

(ङ) बेटियों का सम्पत्ती पर अधिकार (गिन.27:1–11)

(च) वाचा के लोगों का हिस्सा (व्यव.29:10–12)

(छ) माता और पिता की षिक्षाओं पर कान लगा (नीति.1:8; 6:20)

(ज) हेमान के बेट और बेटियाँ (लेवी परिवार) मन्दिर में संगीत की अगुवाई करते थे (1इति.25:5–6)

(झ) बेटे और बेटियाँ नए युग में भविश्यद्वाणी करेंगे (योए.2:28–29)

3) महिलाएं अगुवों के रूप में

(क) मूसा की बहन, मरियम, को नबिया कहा गया (निर्ग.15:20–21)

(ख) महिलाओं को परमेष्वर ने तम्बू की सामग्री बुनने का वरदान दिया (निर्ग.35:25–26)

(ग) एक महिला, दबोरा, नबिया (न्या.4:4) इस्राएल के गोत्रों की अगुवाई करती थीं (न्या.4:4–5; 5:7)

(घ) हुल्दा नबिया थीं जिन्हें योषिय्याह राजा ने ''व्यवस्था की पुस्तक'' जो उन्हें मिली पढ़ने और अनुवाद करने को कहा (2राजा.22:14; 1इति.34:22–27)

(ङ) एस्तेर रानी, भक्तिन महिला जिन्होंने फारस में यहूदियों को बचाया

ख. नया नियम

1) सांस्कृतिक तौर पर यहूदी धर्म और ग्रीक–रोमन संसार में महिलाएं द्वितीय श्रेणी नागरीक थी बहुत ही कम अधिकारों और अवसरों के साथ (मकिदुनिया को छोड़कर)

2) महिला अगुवों के रूप में

(क) इलीषिबा और मरियम, भक्तिन महिलाएं जो परमेष्वर के लिए उपस्थित थीं (लूका.1–2)

(ख) हन्ना, भक्तिन जो मन्दिर में सेवा करती थीं (लूका.2:36)

(ग) लुदिया, विष्वासी और घरेलू कलीसिया की अगुवा (प्रेरित.16:14, 40)

(घ) फिलिप्पुस की 4 कुवाँरी बेटियाँ जो नबिया थीं (प्रेरित.21:8–9)

(ङ) फीबे, किंख्रिया की सेविका (रोमियों.16:1)

(च) प्रिसका (प्रिसकिल्ला), पौलुस की सहकर्मी और अपुल्लोस की षिक्षिका (प्रेरित.18:26; रोमियों.16:3)

(छ) मरियम, त्रूफैना, त्रूफोसा, पिरसिस, यूलिया, नेर्यस की बहन, और भी कई पौलुस की सहकर्मी महिलाएं (रोमियों.16:6–16)

(ज) यूनियास (के जे वी), सम्भवतः महिला प्रेरित (रोमियों.16:7)

(झ) यूआदिया और सुन्तुखे, पौलुस के सहकर्मी (फिलि.4:2–3)

ग. आधुनिक विष्वासी किस प्रकार से बाइबल के विभिन्न उदाहरणों का प्रयोग करते हैं?

1) कोई किस प्रकार से ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सत्यों का फैसला कर सकता है, जो वास्तविक संदर्भ में लागु होते हैं, अनन्त सत्य जो कलीसियाओं के लिए सही हैं, सभी विष्वासियों के लिए सभी युगों में?

(क) हमें वास्तविक लेखक के उद्देष्य को गम्भीरता से लेना चाहिए। बाइबल परमेष्वर का वचन है जो विष्वास और व्यवहारिकता के लिए एकमात्र श्रोत है।

(ख) हमें निष्चय ही प्रेरणा प्राप्त मूलपाठों के साथ व्यवहार करना होगा जो ऐतिहासिक परिस्थिति हैं।

(1) इस्राएल के धार्मिक विष्वास (प्रेरित.15; गला.3)

(2) पहली सदी का यहूदी धर्म

(3) 1कुरि. निष्चय ही पौलुस के इतिहास की परिस्थिति से प्रभावित कथन है।

(१) अन्यजातिय रोम की कानून व्यवस्था (1कुरि.6)

(२) दास ही रहना (1कुरि.7:20–24)

(३) ब्रह्मचार्य (1कुरि.7:1–35)

(४) कुवाँरियाँ (1कुरि.36–38)

(५) मूर्तियों को चढ़ाया हुआ भोजन (1कुरि.10:23–33)

(६) प्रभुभोज में अयोग्य कर्म (1कुरि.11)

(ग) परमेष्वर ने स्वयं को पूरी तरह से और स्पश्ट रूप से एक विषेश संस्कृति और एक विषेश समय पर प्रगट किया। हमें प्रकाषन को गम्भीरता से लेना चाहिए पर ऐतिहासिक तौर पर जोड़े गए प्रत्येक भाव को नहीं। परमेष्वर का वचन मनुश्यों के षब्दों में लिखा गया है, एक विषेश समय में एक विषेश संस्कृति को सम्बोधित किया गया।

2) बाइबलीय अनुवाद में वास्तविक लेखक के उद्देष्य को जानना आवष्यक है। वह अपने दिनों में क्या कह रहे थे? यह सही अनुवाद के लिए अति आवष्यक और आधारभूत है। पर फिर हमें इसे आज के दिन व्यवहार में लाना है। महिलाओं की अगुवाई में ये समस्या है (वास्तविक समस्या है षब्दों की व्याख्या करने में। क्या पासबानों, जो अगुवों के रूप में दिखाई देते हैं, के इलावा भी और कोई सेवकाई है? क्या सेविकाओं और नबियाओं को अगुवों के रूप में देखा जाता है?) यह बिलकुल स्पश्ट है कि पौलुस 1कुरि.14:34–35 और 1तीमु.2:9–15 में कहते हैं कि महिलाओं को सार्वजनिक आराधना में अगुवाई नहीं करनी चाहिए। पर आज मैं इसे कैसे व्यवहार में ला सकता हूँ? मैं नहीं चाहता कि पौलुस की संस्कृति या मेरी संस्कृति परमेष्वर के वचन और इच्छा को दबा दे। सम्भवतः पौलुस का समय बहुत ही सीमित था, और षायद मेरा समय बहुत ही खुला हुआ है। मैं ऐसा कहते हुए बहुत ही कठीन महसूस करता हूँ कि पौलुस के षब्द और षिक्षाएं परिस्थितियों के आधार पर थीं, पहली सदी की स्थानिय परिस्थितिय सत्य। मैं कौन होता हूँ कि मेरा मन या मेरी संस्कृति प्रेरणा पाए हुए लेखक को नकारे?

सो मैं क्या करूँ जब महिला अगुवों के बाइबलीय उदाहरण हैं (यहाँ तक कि पौलुस के लेखों में भी, रोमियों.16)? इसका एक उत्तम उदाहरण है 1कुरि.11–14 में पौलुस द्वारा सार्वजनिक आराधना के बारे में चर्चा। 11:5 में वह महिलाओं को सार्वजनिक आराधना में सर ढ़क कर प्रार्थना करने और प्रचार करने की अनुमति देते हुए प्रतीत होते हैं और फिर भी 14:34–35 में वह उनसे षान्त रहने की माँग करते हैं। सेविकाएं (रोमियों.16:1) और नबियाएं (प्रेरित.21:9) थीं। यह भिन्नता है जो मुझे पौलुस की बातों को पहचानने में स्वतंत्रता प्रदान करती है (महिलाओं को सीमित रखने के सम्बन्ध में) कि वह पहली सदी के कुरिन्थ और इफसुस तक सीमित थीं। दोनों ही कलीसियाओं में महिलाओं द्वारा प्राप्त की गई नई स्वतंत्रता को प्रयोग में लाने की समस्या थी (ब्रूस विन्टर, कुरिन्थ आफ्टर पॉल लैफ्ट), जिसने मसीह के लिए समाज तक पहुँचने में समस्या खड़ी कर दी। उनकी स्वतंत्रता को सीमित रखना आवष्यक था ताकि सुसमाचार प्रभावषाली हो सके।

मेरे दिन पौलुस के दिनों के ठीक विपरीत हैं। मेरे दिनों में सुसमाचार सीमित हो जाएगा यदि प्रषिक्षित और स्पश्ट महिलाओं को सुसमाचार सुनाने नहीं दिया गया तो यह उन्हें अगुवाई करने नहीं दिया गया। सार्वजनिक आराधना का अन्तिम लक्ष्य क्या है? क्या यह सुसमाचार प्रचार और षिश्यता नहीं है? क्या परमेष्वर महिला अगुवों से प्रसन्न होंगे और बड़ाई पाएंगे? बाइबल कहती है ''हाँ''।

मैं पौलुस की ओर झुकना चाहता हूँ; मेरी धर्मषिक्षा पौलुस के अनुसार है। मैं महिलावाद से अत्यधिक प्रभावित होना नहीं चाहता। पर मैं कहना चाहता हूँ कि कलीसिया बाइबल के सत्य का प्रतिउत्तर देने में ढ़ीली है, जैसे दासत्व, जातिवाद, धर्मान्धता, लिगंभेद इत्यादि की अनुपयुक्तता के बारे में। आधुनिक संसार में यह महिलाओं पर अत्याचार के प्रति कार्य करने में भी यह धीमी है। मसीह में परमेष्वर ने दासों और महिलाओं को स्वतंत्र किया है। मैं इस बात की हिम्मत नहीं कर सकता की संस्कृति में बन्धा मूलपाठ को फिर से बन्धन में डाले।

एक और बात : एक अनुवादक के रूप में मैं जानता हूँ कि कुरिन्थ की कलीसिया बहुत ही अपमानित कलीसिया थी। बड़े दिन के तोहफों का मूल्य लगाया जाता था और उनकी मिथ्या प्रषंसा की जाती थी। षायद महिलाएं इस में फंस गई थीं। मैं विष्वास करता हूँ कि इफसुस भी झूठे षिक्षकों की षिक्षाओं द्वारा प्रभावित हुआ जो इन महिलाओं को अपनी षिक्षाओं को इफसुस की घरेलु कलीसियाओं में पहुँचाने के लिए प्रयोग करते थे।

3) आगे के अध्ययन के लिए कुछ सुझाव

हाउ टू रीड द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ, गोर्डन फी एण्ड डोउग स्टूअर्ट (पृश्ठ.61–77)

गॉस्पल एण्ड स्पीरीट : इसूस इन न्यू टैस्टामैन्ट हरमिन्यूटिक्स, गॉर्डन फी

हार्ड सेइन्गस ऑफ द बाइबल, वॉल्टर सी. कैसर, पीटर एच. डेवीडस, एफ. एफ. ब्रूस एण्ड मैनफ्रैड टी. ब्रान्च (पृश्ठ. 613–616; 665–667)

''कलीसिया''

देखिए दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : कलीसिया (एकलेषिया)

यह यूनानी षब्द एकलेषिया दो षब्दों से आया है ''से'' और ''बुलाए गए'' इसलिए इसका अर्थ है ईष्वरीय तौर पर बुलाए गए लोग। षुरूवाती कलीसिया ने यह षब्द इसके सांसारिक प्रयोग से लिया है (प्रेरित.19:32, 39, 41) और इसलिए इसका सैप्टूआजैन्ट में इस्राएल की ''सभा'' के लिए प्रयोग किया गया है (गिन.16:3; 20:4)। उन्होंने अपने लिए इसका प्रयोग पुराने

नियम के परमेष्वर के लोगों के क्रम में किया। वे नया इस्राएल थे (रोमियों.2:28–29; गला.6:16; 1पत.2:5, 9; प्रका.1:6), परमेष्वर के सम्पूर्ण संसार के लक्ष्य को पूरा करने वाले (उत्प.3:15; 12:3; निर्ग.19:5–6; मत्ती.28:18–20; लूका.24:47; प्रेरित. 1:8)।

यह षब्द सुसमाचारों और प्रेरितों के काम में विभिन्न विचारों में प्रयोग किया गया है :

1) असाम्प्रदायिक षहर सभा, प्रेरित.19:32, 39, 41

2) सारी सृश्टि के परमेष्वर के लोग मसीह में, मत्ती.16:18 और इफिसियों

3) विष्वासियों की स्थानीय कलीसिया मसीह में, मत्ती.18:17; प्रेरित.5:11 (इन आयतों में यरूषलेम)

4) सामूहिक तौर पर इस्राएल के लोग, प्रेरित.7:38, स्तिफनुस का प्रचार

5) एक क्षेत्र में परमेष्वर के लोग, प्रेरित.8:3 (यहूदा और पलिस्तिन)

''किंख्रिया''

यह कुरिन्थ के बन्दरगाहों में से एक है। यह पूर्वी ओर था (प्रेरित.18:18)।

16:2

''कि तुम जैसा कि पवित्र लोगों को चाहिए,
उसे प्रभु में ग्रहण करो''

इसका अर्थ है ''उदारता से अतिथि ग्रहण करना'' (फिलि.2:29)। पौलुस इस महिला पर विष्वास करते थे और चाहते थे कि उनकी जगह पर कलीसिया उन्हें ग्रहण करे और उनकी सहायता करे।

''संत''

इस षब्द का अर्थ है ''पवित्र लोग''। यह मसीह में केवल विष्वासियों के स्तर को ही प्रगट नहीं करता पर उनके भक्तिपूर्ण जीवन को भी प्रगट करता है, प्रगतिषील तौर से मसीह में उनके नए पवित्र स्तर का चित्रण करता है। संत षब्द हमेषा बहुवचन में ही होता है केवल फिलि.4:21 को छोड़कर और यहाँ पर भी यह सामूहिक भावार्थ में प्रयोग किया गया है। मसीही बनना विष्वास करने वाले समाज, परिवार और देह का सदस्य बनना है। पष्चिम की आधुनिक कलीसियाओं ने बाइबल के इस सामूहिक विचार के मूल्य को घटा दिया है। देखिए विषेश षीर्शक : संत 1:7।

''और जिस किसी बात में उस को
तुम से प्रयोजन हो,
उस की सहायता करो''

इसका अर्थ है ''जिस किसी वस्तु की आवष्यकता है उससे सहायता करो'' (2कुरि.3:1)।

यह सेवकाई के लिए अतिआवष्यक वस्तुओं को प्रगट करता है। यह सिफारिस के पत्रों का उद्देष था।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''बहुतों के लिए सहायक रहीं हैं''

एन आर एस वी ''बहुतों के लिए उपकारिणी रहीं हैं''

टी इ वी ''क्योंकि वह स्वयं भी बहुत से लोगों की अच्छी मित्र रहीं हैं''

जे बी ''बहुत से लोगों की देखभाल की है''

यह षब्द *प्रोइसटेटीस* केवल नए नियम में ही मिलता है। यह आर्थिक और षारीरिक दोनों सहायताओं को प्रगट करता है। यह षब्द वास्तव में धनवान संरक्षिका को प्रगट करता है। क्योंकि फीबे रोम की ओर यात्रा कर रही थीं (रोमियों.16:1) और उन्होंने बहुतों की सहायता की थी (रोमियों.16:2) यह ऐतिहासिक तौर पर उनके लिए सत्य था होगा।

रोमियों.16:3—16

3 प्रिसका और अक्विला को भी यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, नमस्कार।

4 उन्होंने मेरे प्राण के लिये अपना सिर दे रखा था और केवल मैं ही नहीं, वरन अन्यजातियों की सारी कलीसियाएं भी उन का धन्यवाद करती हैं।

5 और उस कलीसिया को भी नमस्कार जो उन के घर में है। मेरे प्रिय इपैनितुस को जो मसीह के लिये आसिया का पहिला फल है, नमस्कार।

6 मरियम को जिस ने तुम्हारे लिये बहुत परिश्रम किया, नमस्कार।

7 अन्द्रुनीकुस और यूनियास को जो मेरे कुटम्बी हैं, और मेरे साथ कैद हुए थे, और प्रेरितों में नामी हैं, और मुझ से पहले मसीह में हुए थे, नमस्कार।

8 अम्पलियातुस को, जो प्रभु में मेरा प्रिय है, नमस्कार।

9 उरबानुस को, जो मसीह में हमारा सहकर्मी है, और मेरे प्रिय इस्तखुस को नमस्कार।

10 अपिल्लेस को जो मसीह में खरा निकला, नमस्कार। अरिस्तुबुलुस के घराने को नमस्कार।

11 मेरे कुटुम्बी हेरोदियोन को नमस्कार। नरकियुस के घराने के जो लोग प्रभु में हैं, उन को नमस्कार।

12 त्रूफैना और त्रूफोसा को जो प्रभु में परिश्रम करती हैं, नमस्कार। प्रिया पिरसिस को जिस ने प्रभु में बहुत परिश्रम किया, नमस्कार।

13 रूफुस को जो प्रभु में चुना हुआ है, और उस की माता को जो मेरी भी है, दोनों को नमस्कार।

14 असुक्रितुस और फिलगोन और हिमस और पत्रुबास और हिमांस और उन के साथ के भाइयों को नमस्कार।

15 फिलुलुगुस और यूलिया और नेर्युस और उस की बहिन, और उलुम्पास और उन के साथ के सब पवित्र चुम्बन से नमस्कार करोः तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।

16 आपस में पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।

16:3

''प्रिसका और अक्विला''

लूका इन्हें ''प्रिसकिल्ला'' कहते हैं। उनका नाम अक्सर उनके पति से पहले आता है, जो कि बहुत ही असामान्य है (प्रेरित. 18:18, 26; 1कुरि.16:19; 2तीमु.4:19)। सम्भवतः वह रोमी कुलीन थीं या फिर इस जोड़े की प्रमुख व्यक्ति थीं। यह जोड़ा और पौलुस दोनों ही तम्बु बनाने वाले और चमड़े का काम करने वाले थे। पौलुस उन्हें ''मसीह यीषु में सहकर्मी'' कहते हैं। सम्भवतः पौलुस ने रोम की कलीसिया की सामर्थ्य और कमज़ोरियों के बारे में इस जोड़े से सुना।

<u>*16:4*</u>

''अपना सिर दे रखा था''

यह ''जल्लाद की कुल्हाड़ी'' के लिए एक कहावत है। पौलुस इस वाक्यांष के द्वारा क्या कहना चाहते हैं बाइबल इस बारे में चुप है।

''केवल मैं ही नहीं,
वरन् अन्यजातियों की सारी कलीसियाएं भी
उन का धन्यवाद करती हैं''

पौलुस इस जोड़े की मित्रता और कार्यषील सहायता के लिए बहुत ही आभारी थे। वह उनकी सेवा को ''पूरी अन्यजातिय कलीसियाओं तक फैला देते हैं''। यह क्या ही विस्तृत प्रगटिकरण और धन्यवाद है। यह षायद अपुल्लोस को उत्साहित करने और षिक्षा देने को भी प्रगट करता है (प्रेरित.18:24–28)।

<u>*16:5*</u>

''कलीसिया''

यह लोगों को प्रगट करता है, इमारत को नहीं। इस षब्द का अर्थ है ''बुलाए गए लोग''। यूनानी पुराने नियम, सैप्टूआजैन्ट में यह षब्द इब्रानी षब्द क्वाहल का अनुवाद, ''सभा'' में करने के लिए प्रयोग किया गया है। षुरूवाती कलीसिया ने स्वयं को पुराने नियम के ''इस्राएल की सभा'' के उत्तराधिकारी और पूरक के रूप में देखा, अलग हुए पंथ के रूप में नहीं। देखिए विषेश षीर्शक 16:1।

''जो उनके घर में है''

षुरूवाती मसीही घरों में इकट्ठे होते थे (रोमियों.16:23; प्रेरित.12:12; 1कुरि.16:19; कुलु.4:15; फिले.1:2)। तीसरी सदी तक कलीसिया की इमारतें नहीं थीं।

''इपैनितुस''

इस पुरूश के नाम का अर्थ है ''प्रषंसा करना''।

''जो पहले फल हैं''

1कुरि.16:15 में स्तिफनास के घराने के लिए भी ऐसा कहा गया है।

''अखया से''

यह रोम साम्राज्य को प्रगट करता है जो कि आधुनिक तूर्की का एक तीहाई पष्चिम भाग है।

<u>*16:6*</u>

''मरियम,
जिसने तुम्हारे लिए
बहुत परिश्रम किया है''

इस व्यक्ति के बारे में कोई जानकारी नहीं है। वह रोम की कलीसिया से मिष्नरी थीं। बहुत से अद्‌भुत, भक्त विष्वासी हमारे लिए अनजान हैं पर परमेष्वर उन्हें अच्छी तरह से जानते हैं।

16:7

''मेरे साथ कैद हुए थे''

आधुनिक ज्ञानी इस बात में स्पश्ट नहीं हैं कि यह किस कैद के बारे में है। पौलुस ने अपने विष्वास के लिए बहुत दुःख उठाए (2कुरि.4:8–11; 6:4–10; 11:25–28)। वह फिलिप्पी, कैसरिया, रोम और भी बहुत सी जगहों में कैद में थे (इफिसियों; 1कुरि. 15:32; 2कुरि.1:8)।

''यूनियास''

यह नाम पुरूश और स्त्री दोनों का हो सकता है, जिसे स्वराघात चिन्ह से निष्चित किया जाना चाहिए। यूनानी हस्तलेखों में भिन्नता है, एम एस एस आलेफ, ए, बी, सी, डी, एफ, जी और पी में ''लौनियान'' पाया जाता है, पर कोई स्वराघात चिन्ह नहीं मिलता। महिला स्वराघात चिन्ह एम एस एस बी^{2}, डी^{2} और 0150 में पाया जाता है। आरम्भिक पापीरस हस्तलेख पी^{46} और कुछ वलगेट और कॉप्टीक अनुवादों में और यूनानी मूलपाठ जो जेरोम द्वारा प्रयोग किए गए हैं उनमें ''लौउलियन'' पाया जाता है जो की स्त्रीलिंग है। कुछ ज्ञानी सोचते हैं कि यह लेखको की गलती है। यह स्त्रीलिंग 16:15 में भी आता है। यह भी सम्भव है कि 16:7 में जिन दो लोगों के नाम लिखे हैं वे (1) यहूदी विष्वासी थे जो पौलुस के साथ कैद में थे; (2) भाई और बहन; या (3) पति और पत्नी। यदि यह स्त्रीलिंग है और यदि यह वाक्यांष ''प्रेरित'' उन ''बारह'' से विस्तृत विचार में प्रयोग किया गया है तो यह महिलाप्रेरित हैं।

यह भी रूचीकर है कि षब्द ''यूनियास'' रोमन साहित्य में कहीं नहीं मिलता परन्तु ''युनिया'' नाम बहुत ही सामान्य है। यह रोमी पारिवारिक नाम है। सेवकाई में की महिलाओं के बारे में अधिक जानकारी के लिए देखिए ''वुमन लिडरस एण्ड द चर्च'', लीन्डा एलत्र बिलिवील्ली, पृश्ठ.188 पृश्ठ के नीचे का लेख 42।

एन ए एस बी ''पेरितों में नामीं हैं''

एन के जे वी ''जो प्रेरितों में जाने जाते हैं''

एन आर एस वी ''वे प्रेरितों में प्रसिद्ध हैं''

टी इ वी ''वे प्रेरितों के बीच में जाने माने हैं''

एन जे बी ''उन नामीं प्रेरितों को''

यह षायद बारह को प्रगट करता है, यदि ऐसा है तो ये दोनों उनके बीच प्रसिद्ध थे, या विस्तृत सेवको के बीच ''प्रेरितों'' के रूप में जाने जाते थे (प्रेरित.14:4, 14; 18:5; 1कुरि.4:9; गला.1:19; फिलि.2:25; 1थिस्स.2:6)। संदर्भ इसके विस्तृत प्रयोग को प्रगट करता है पर निष्चित साहित्य लेख बारह को प्रगट करता है। देखिए विषेश षीर्शक : भेजा हुआ (अपोस्टेलो) 1:1।

''जो मुझ से पहले मसीह में हुए थे''

निष्चय ही इसका अर्थ यह है कि वे दामिष्क मार्ग में पौलुस के अनुभव से पहले से ही उद्धार पर चुके थे और सेवा कार्य में लग गए थे।

16:8–16

इस भाग के नाम ज्ञानीयों की जानकारी में नहीं हैं। वे परमेष्वर और पौलुस को प्रिय हैं पर उनके नाम और सेवा का नए नियम और आरम्भीक मसीही साहित्य में कोई वर्णन नहीं दिया गया। यहाँ पर सराहनीय बात यह है कि दासों, रोमी कुलीनों और यहूदी परिवारों के नाम साथ में दिए गए हैं। यहाँ पर स्त्री और पुरूश दोनों ही हैं। यहाँ पर धनवान स्वतंत्र लोग और घूमने वाले प्रचारकों के नाम हैं। यहाँ पर फारस के विदेषियों के नाम भी हैं। यीषु मसीह की कलीसिया में सारे बन्धन तोड़ दिए गए हैं (रोमियों.3:22; 10:12; योए.2:28–32; प्रेरित.2:14–21; 1कुरि.12:11; गला.3:28; कुलु.3:11)।

16:8

''अम्पलियातुस''
यह नाम, प्रिसका और यूनिया के समान ही, भी रोमी परिवार का ही जाना माना है।

''प्रभु में मेरे प्रिय''
यह षब्द ''प्रिय'' मत्ती.3:17 और 17:5 में पिता परमेष्वर द्वारा पुत्र प्रभु यीषु मसीह के लिए प्रयोग किया गया है, जो षायद यषायाह के सेवक गीत से लिया गया षीर्शक है (मत्ती.12:18, यषा.42:1 से लिया गया है)। पौलुस विष्वासियों को सम्बोधित करने के लिए प्रयोग करते हैं (रोमियों.1:7; 16:8, 9; 1कुरि.4:14, 17; 15:58; इफि.6:21; फिलि.2:12; कुलु.4:7, 9, 14; 1तीमु.6:2; फिले.1:16)।

16:9

''उरबानुस''
इस नाम का अर्थ है ''षहर में रहने वाला'' या ''षहर में पला हुआ''।

''मसीह में''
यह वाक्यांष इस पूरे अध्याय में ''प्रभु में'' के साथ बार बार दौहराया गया है। ये मसीही सेवक एक ही परिवार के सदस्य हैं और इनका एक ही मसीह है।

''इस्तखुस''
यह दुर्लभ नाम है जिसका अर्थ है फसल का ''बाला''। पुरातत्ववादियों ने पाया है कि यह नाम कैसर के परिवार से जुड़ा हुआ है।

16:10

''मसीह में खरा निकला''
यह कहावत उस व्यक्ति के लिए है जो परीक्षाओं से गुज़र कर विष्वासयोग्य निकला हो। देखिए विषेश षीर्शक 2:18।

''जो घराने के हैं''
कुछ ज्ञानी ऐसा कहते हैं कि यह वाक्यांष अरिस्तुबुलुस के घर के दासों के लिए है न कि उनके परिवार के सदस्यों के लिए और यह 16:11 के लिए भी सत्य है, ''जो नरकियुस के घराने के हैं''।

''अरिस्तुबुलुस के''
कुछ ज्ञानी कहते हैं कि यह हेरोद अग्रीपा 1 के भाई हैं (जिसने प्रेरित 12 में प्रेरित याकूब को मारा था)। यदि ऐसा है तो यह प्रगट करता है कि इस कठोर राजकीय परिवार में सुसमाचार ने कैसे स्थान बनाया।

16:11

''हेरोदियोन''
यह षायद हेरोद के परिवार की गुलाम थीं।

''जो निरकियुस के घराने के हैं''
यह सम्राट क्लाउडियस के जाने माने नौकर थे। यदि ऐसा है तो यह प्रगट करता है कि इस कठोर राजकीय परिवार में सुसमाचार ने कैसे स्थान बनाया।

16:12

''त्रूफैना''
इस नाम का अर्थ है ''स्वादिश्ट भोजन''।

''त्रुफोसा''
इस नाम का अर्थ है ''कोमल''। सम्भवतः ये दोनों जुड़वा बहनें हैं।

''परिश्रम''
इस षब्द में श्रम का अनुमान है ''थकावट की हद तक''।

''पिरसिस''
इसका अर्थ है ''फारसी महिला''।

16:13

''रूफुस''
इस नाम का अर्थ है ''लाल'' या ''लाल–सर वाला''। यह रोम में निष्चय ही जाने माने रूफुस थे (मरकुस.15:21)। षायद वह इस व्यक्ति के साथ पहचाने जाते हैं यह अनिष्चित है पर निष्चिय ही सम्भव है।

एन ए एस बी ''प्रभु में चुना हुआ व्यक्ति''

एन के जे वी, एन आर एस वी ''प्रभु में चुने हुए''

टी इ वी ''प्रभु की सेवा में प्रसिद्ध कार्यकर्ता''

जे बी ''प्रभु के चुने हुए दास''

वास्तविक रूप में इसका अर्थ है ''चुना हुआ व्यक्ति''। यहाँ पर यह षब्द केवल परमेष्वर की बुलाहट के लिए नहीं है पर साथ ही जीवनषैली सेवा के लिए भी है। उनकी माँ ने पौलुस से बहुत प्रिति रखी।

16:14

''हिर्मेस''
यह नाम अच्छे भाग्य के देवता का है। यह पहली सदी में यूनानी–रोमी संसार में दासों का सामान्य नाम था।

16:15

''सभी संत''
देखिए विषेश षीर्शक 1:7।

16:16 ''पवित्र चुम्बन'' यहाँ पर कोई आरम्भीक सबूत नहीं है कि किसने किसे चुम्बन दिया, या कब और कहाँ। आराधनालय में, जहाँ का अभिवादन करने का तरीका कलीसिया में भी चलता रहा, पुरूश पुरूशों को गालों में चुम्बन देते थे और महिलाएं महिलाओं को (1कुरि.16:20; 2कुरि.13:12; 1थिस्स.5:26; 1पत.5:14)। यह अभिवादन करने का तरीका कलीसिया में समस्या बन गया और अविष्वासियों द्वारा गलत समझा गया इसलिए इसे समाप्त कर दिया गया।

रोमियों.16:17–20

17 अब हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट पड़ने, और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उन से दूर रहो।

18 क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते है; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे सादे मन के लोगों को बहका देते हैं।

19 तुम्हारे आज्ञा मानने की चर्चा सब लोगों में फैल गई है; इसलिये मैं तुम्हारे विषय में आनन्द करता हूं; परन्तु मैं यह चाहता हूं, कि तुम भलाई के लिये बुद्धिमान, परन्तु बुराई के लिये भोले बने रहो।

16:17

यह चेतावनी इस संदर्भ में अचानक से आ गई। यह झूठे षिक्षक क्या कर रहे हैं इसके बारे में 17–18 आयत में एक सूची है।

1) वे फूट लाते हैं

2) विष्वासियों के मार्गों में रूकावटें लाते हैं

3) कलीसिया को जो षिक्षाएं मिली हैं उनके विपरीत षिक्षा देते हैं

4) वे अपने ही पेट की सेवा करते हैं

5) वे अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे–सादे मन वालों को बहका देते हैं

यह सूची रोमियों.14:1–15:13 के बलवान या निर्बल विष्वासियों से सम्बन्धित नहीं है।

''उन से दूर रहो''

यह तत्काल केन्द्रीय विशय है (गला.1:8–9; 2थिस्स.3:6, 14; 2यूह.1:10)।

16:18

एन ए एस बी, एन आर एस वी, टी इ वी ''उनकी अपनी भूख''

एन के जे वी ''उनके अपने पेट''

एन जे बी ''उनकी अपनी लालसा''

वास्तविकता में ''पेट'' (फिलि.3:19; तीत.1:12)। झूठे षिक्षकों ने सब कुछ अपने लाभ के लिए बदल दिया।

''अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से''

झूठे षिक्षक अक्सर षारीरिक रूप से आकर्शक और प्रभावषाली व्यक्तित्व के होते हैं (कुलु.2:4)। वे अपने प्रगटन में सही प्रतीत होते हैं। सावधान! इन झूठे षिक्षकों को पहचानने के कुछ बाइबलीय जाँच व्यव.13:1–5; 18:22; मत्ती.7; फिलि.3:2–3, 18–19; 1यूह.4:1–6 में पाई जाती है।

''सीधे–सादे मन वालों को
बहका देते हैं''

इनके लिए नए विष्वासी आसान षिकार थे (बुराई के लिए अनुभवहीन)।

16:19

''तुम्हारे आज्ञा मानने की चर्चा
सब लोगों में फैल गई है''

यह 1:8 से सम्बन्धित है। यह पौलुस का एक मुहावरा था।

''तुम भलाई के लिये बुद्धिमान,
परन्तु बुराई के लिये भोले बने रहो''

यह यीषु की षिक्षाओं को प्रगट करता है (मत्ती.10:16; लूका.10:3)।

16:20

''षान्ति के परमेष्वर''

यह परमेष्वर के लिए अद्‌भुत षीर्शक है (रोमियों.15:33; 2कुरि.13:16; फिलि.4:9; 1थिस्स.5:23; इब्रा.13:20)।

''शैतान को तुम्हारे पाँवों से
शीघ्र कुचलवा देंगे''

यह उत्प.3:15 की ओर संकेत करता है। मसीह के साथ विष्वासियों का सम्बन्ध उन्हें विजय भी दिलाता है (1यूह.5:18–20)। यह अद्‌भुत वायदा और ज़िम्मेदारी है। इस संदर्भ में षैतान कलीसिया में व्याकुलता और विभाजन का संचालन करता है जो झूठे षिक्षकों की वजह से फैला है और कलीसिया के कन्द्रीय उद्‌देष्य को महान आज्ञा से हटा देता है। झूठे षिक्षकों के पीछे षैतान है। सुसमाचार अन्धकार और बुराई को दूर करता है उन लोगों के लिए जो इसे गले लगाते और जीते हैं। इसके बारे में अधिक जानकारी के लिए, थ्री क्रूसीयल क्वचनस अबाउट स्पीरीचुअल वॉरफयर, क्लीन्टोन इ. आरनॉल्ड।

विषेश षीर्शक : व्यक्तिगत बुराई

बहुत से कारणों से बहुत ही मुष्किल विशय है :

क. पुराना नियम भलाई के किसी भी षत्रु को प्रगट नहीं करता, परन्तु यहोवा के एक दास को प्रगट करता है जो मानवजाति को एक विकल्प देता है और अधार्मिकता के लिए मानवजाति पर दोश लगाता है।

ख. परमेष्वर के साथ व्यक्तिगत षत्रुता का विचार बाइबल के समय के साहित्यों से जन्मा है जो कि फारस के धर्म के प्रभाव के कारण हुआ है। इसने रब्बीयों की षिक्षाओं को बुरी तरह से प्रभावित किया।

ग. नया नियम पुराने नियम के केन्द्रीय विशयों को आष्चर्यजनक कड़े रूप से विकसित करता है, परन्तु चुनी हुई श्रेणी में।

यदि कोई बाइबल की धर्मषास्त्रीय षिक्षा के विचार अनुसार बुराई का अध्ययन करता है तो बुराई के बारे में बहुत ही अलग दृश्टिकोण प्रगट होंगे।

यदि कोई बुराई का अध्ययन बाइबल के बाहर के विचारों के अनुसार करता है तो फिर नए नियम का विस्तार फारस के बहुधर्म और यूनानी–रोमी आत्माओं की उपासना द्वारा दबा दिया जायेगा।

यदि कोई पूर्वधारणा से ही वचन के ईष्वरीय अधिकार के लिए समर्पित है तो नया नियम का विस्तार उसे प्रगतिषील प्रकाषन

के रूप में नज़र आयेगा। मसीहियों के यहूदी परम्परा और पष्चिमी साहित्य द्वारा बाइबल के विचारों के वर्णन से स्वयं को बचाना चाहिए। प्रकाषन के इस क्षेत्र में निष्चय ही रहस्य और संदेह है। परमेष्वर ने बुराई के सभी पहलूओं को प्रगट करने का चुनाव नहीं किया, इसकी षुरूवात, इसका उद्देष्य परन्तु इसकी हार को प्रगट किया है।

पुराने नियम में षैतान या दोश लगाने वाला षब्द तीन अलग अलग समूहों से सम्बन्धित हैं

1) दोश लगाने वाले मानव (1षमू.29:4; 2षमू.19:22; 1राजा.11:14, 23, 25; भ.सं.109:6)

2) दोश लगाने वाले दूत (गिन.22:22–23; जक.3:1)

3) दोश लगाने वाली दुश्टआत्माएं (1इति.21:1; 1राजा.22:21; जक.13:2)

केवल बाद में ही नए और पुराने नियम के बीच के अन्तराल में उत्प.3 का साँप षैतान के रूप में पहचाना गया (बुद्धि की पुस्तक.2:23–24; 2हनोक.31:3), और तब तक इसका अधिक प्रयोग नहीं हुआ जब तक यह रब्बीयों की षिक्षा नहीं बना (सोट 9[ख] और स्नाहत्र29[क])। 1हनोक.54:6 में उत्प.6 के ''परमेष्वर के पुत्र'' स्वर्गदूत बन गए। मैंने इसे धर्मषास्त्रीय तौर पर सही साबित करने के लिए नहीं लिखा पर इसके विस्तार को प्रगट करने के लिए लिखा है। नए नियम में पुराने नियम के यह कार्य दूतों से सम्बन्धित हैं, जीवधारी बुराई (उदा. षैतान) 2कुरि.11:3; प्रका.12:9 में।

पुराने नियम में जीवधारी बुराई की षुरूवात को तय करना कठीन और असम्भव है (यह आपके दृश्टिकोण पर आधारित है)। इसका एक कारण है इस्राएल का कट्टर एक ईष्वरवाद (1राजा.22:20–22; सभो.7:14; यषा.45:7; आमो.3:6)। सभी कार्णत्व यहोवा के गुणों को प्रगट करते है ताकि उनकी अद्वितियता और श्रेश्ठता को व्यक्त कर सके (यषा.43:11; 44:6, 8, 24; 45:5–6, 14, 18, 21, 22)।

सम्भावित जानकारी का श्रोत इन बातों पर केन्द्रीत है (1) अय्यूब. 1–2 जहाँ पर षैतान ''परमेष्वर के पुत्रों'' में से एक है (वो हैं स्वर्गदूत) और (2) यषा.14; यहे.28 जहाँ पर नज़दीकि पूर्वी राजाओं (बाबुल और सोर) का घमण्ड षैतान के घमण्ड को प्रगट करता है (यहे.28:12–16), परन्तु मिस्र के राजा को भी जैसे भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष (यहे.31)। यषा.14, विषेश कर 12–14 आयत, स्वर्गदूतों के घमण्ड के कारण विद्रोह को प्रगट करता हुआ प्रतीत होता है। यदि परमेष्वर हमें षैतान की षुरूवात और उसके स्वभाव के बारे में बताना चाहते हैं तो यह निष्चय ही सही जगह है। हमें क्रम सिद्धान्त धर्मषास्त्रीय षिक्षा के झुकाव से बचना चाहिए जहाँ वह विभिन्न पुस्तकों, लेखकों, लेखों के छोट, संदिग्ध भागों को मिलाकर एक ईष्वरीय रहस्य गुत्थी बना देते हैं।

एल्फर्ड एडरषीम (द लाईफ एण्ड टाईमस ऑफ जीसस द मसीहा, भाग,2, षब्दावली 13 – पृश्ठ.748–763 और 16 – पृश्ठ. 770–776) कहते हैं कि रब्बीय यहूदी धर्म फारस के बहुदेववाद और दुश्टाआत्मा की उपासना से अत्यधिक प्रभावित हुआ। रब्बी इस क्षेत्र के सत्य के लिए सही श्रोत नहीं हैं। यीषु ने मौलिक रूप से आराधनालय की षिक्षाओं से स्वयं को अलग कर लिया। मैं ऐसा सोचता हूँ कि रब्बीयों का यह विचार कि स्वर्गदूत की मध्यस्तता और मूसा को सीनै पर्वत पर व्यवस्था देते वक्त स्वर्गदूत के विरोध ने यहोवा और मानव जाति के षत्रु के रूप में सर्वश्रेश्ठ देवदूत के विचार के लिए द्वार खोल दिए। इरान बहुदेववाद के दो उच्च देवताओं, *अखीमान और ओरमाज़ा,* अच्छे और बुरे, और इसकी उन्नति यहूदा के सीमित बहुदेववाद यहोवा और षैतान में हुई।

निष्चय ही नया नियम में बुराई के बारे में प्रगतिषील प्रकाषन है परन्तु जैसे रब्बी प्रस्तुत करते है वैसा नहीं। इस भिन्नता का उत्तम उदाहरण है ''स्वर्ग में युद्ध''। षैतान का पतन स्वभाविक है पर उसके बारे में कोई विषेश जानकारी नहीं है। जो दिया गया है वो भविश्य में होने वाली बात है (प्रका.12:4, 7, 12–13)। यद्धपि षैतान हारा हुआ है और उसे पृथ्वी पर निकाल दिया गया है पर फिर भी वह यहोवा के दास के समान कार्य करता है (मत्ती.4:1; लूका.22:31–32; 1कुरि.5:5; 1तीमु.1:20)।

इस क्षेत्र में हमें अपनी विलक्षणता को अवरोधित करना चाहिए। बुराई और परीक्षा के लिए एक व्यक्तिगत ताकत है, परन्तु फिर भी एक ही परमेष्वर हैं और मानवजाति अपने चुनावों के लिए ज़िम्मेदार है। उद्धार से पहले और बाद में आत्मिक युद्ध है। विजय केवल त्रिएक परमेष्वर द्वारा मिल सकती है और रह सकती है। बुराई को हरा दिया गया है और उसे निकाल दिया जाएगा।ण

*''हमारे प्रभु यीषु का अनुग्रह
तुम्हारे साथ हो''*
यह पौलुस के पत्रों की सामान्य समाप्ति है (1कुरि.16:23; 2कुरि.13:14; गला.6:18; फिलि.4:23; कुलु.4:18; 1थिस्स.5:28; 2थिस्स. 3:18 और प्रका.22:21 में भी)। सम्भवतः यह उनके ही हाथों में लिखा गया है। यह अपने पत्रों को साबित करने का उनका तरीका है (2थिस्स.3:17; 1कुरि.16:21; कुलु.4:18)।

रोमियों 16:21

21 तीमुथियुस मेरे सहकर्मी का, और लूकियुस और यासोन और सोसिपत्रुस मेरे कुटुम्बियों का, तुम को नमस्कार।

16:21–23

ये आयत पष्चलेख हैं। कुरिन्थ के पौलुस के सहकर्मी अपना अभिवादन भेजते हैं।

16:21

''लूकियुस''
यह षायद हो सकते हैं (1) डॉक्टर लूका (कुलु.4:14) या फिर ''अधिक षिक्षित व्यक्ति'' के लिए कहावत; (2) कुरैनी लूकियुस (प्रेरित.13:1); या (3) अनजान मसीही।

''यासोन''
सम्भवतः ये वही यासोन हैं, थिस्सलोनिका में, जिनके घर पर पौलुस ठहरे थे (प्रेरित.17:5–9)।

''सोसिपत्रुस''
यह निष्चय ही प्रेरित.20:4 में के बिरिया के रहने वाले सोपत्रुस हैं।

रोमियों 16:22

22 मुझ पत्री के लिखनेवाले तिरतियुस का प्रभु में तुम को नमस्कार।

16:22

''मुझ पत्री के लिखनेवाले तिरतियुस''
पौलुस ने इस पत्र को लिखने कि लिए लेखक का प्रयोग किया (1कुरि.16:21; गला.6:11; कुलु.4:18; 2थिस्स.3:17)। मेरा ऐसा मानना है कि पौलुस की नज़र कमज़ोर थी और वह छोटे अक्षर नहीं लिख सकते थे कि पापीरस या चमड़े के पन्ने पर कम जगह पर लिख कर जगह बचा सकें (गला.6:18)।

रोमियों 16:23–24

23 गयुस का जो मेरी और कलीसिया का पहुनाई करनेवाला है उसका तुम्हें नमस्कार : इरास्तुस जो नगर का भण्डारी है, और भाई क्वारतुस का, तुम को नमस्कार।

24 {प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे।}

16:23

''गयुस''

यह षायद (1) प्रेरित.18:7 के गयुस तितुस युस्तुस हैं; (2) दरबे के गयुस हैं (प्रेरित.19:29; 20:4; 1कुरि.1:14); या (3) 3यूह.1:1 के गयुस हैं।

''जो मेरी और कलीसिया का पहुनाई करनेवाला है''

इसी पहुनाई की कलीसिया में आवष्यकता थी। कुछ विष्वासी यात्रा करने वाले मसीही सेवकों को अपने घर में ठहराते और उनकी देखभाल करते थे। कुछ इस मनुश्य की तरह, अपने घर को लोगों को इकट्ठा होने का स्थान बना लेते थे। घरेलु कलीसिया 100 वर्शों तक नियम बनी रहीं। देखिए विषेश षीर्शक : कलीसिया (एकलेषिया) 16:1।

''इरास्तुस जो नगर का भण्डारी है''

इनका ज़िक्र प्रेरित.19:22; 2तीमु.4:20 में भी किया गया है। उनकी पौलुस के साथ जुड़ी घूमने वाली सेवकाई थी।

16:24 यह आयत प्राचीन यूनानी हस्तलेख पी[46,61], ए, बी, सी और 0150 में मौजुद नहीं है। यह कई यूनानी हस्तलेखों में 16:23 के बाद और कई में 16:27 के बाद मिलता है। निष्चय ही यह पौलुस के साथ वास्तविक नहीं है। इसे *एन ए एस बी, एन आर एस वी, टी इ वी और एन जे बी* अनुवादों में छोड़ दिया गया है। यह पत्र के निकट का प्रयास है जो कि समाप्ति के परमेष्वर की प्रषंसा के संक्षिप्त गीत की समस्या से सम्बन्धित है जो 14, 15 और 16 के अन्त में विभिन्न यूनानी मूलपाठों में पाया जाता है।

रोमियों.16:25—27

25 अब जो तुम को मेरे सुसमाचार अर्थात् यीशु मसीह के विषय के प्रचार के अनुसार स्थिर कर सकता है, उस भेद के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से छिपा रहा।

26 परन्तु अब प्रगट होकर सनातन परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों के द्वारा सब जातियों को बताया गया है, कि वे विश्वास से आज्ञा माननेवाले हो जाएं।

27 उसी अद्वैत बुद्धिमान परमेश्वर की यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग महिमा होती रहे। आमीन।

16:25—27

यूनानी में यह एक ही वाक्य है। यह आषीर्वाद अध्याय 14 और 15 के अन्त में भी मिलता है। यह संदर्भ पौलुस द्वारा लिखी गई पुस्तकों के प्रमुख केन्द्रीय विशय को फिर से दोहराना है।

कुछ विष्वास करते हैं कि यह प्रषंसा का संक्षिप्त गीत :

1) इफिसियों को चक्रवत होन वाले पत्र का आड़ पत्र है

2) जो रोम के मार्ग में हैं

(क) पौलुस कभी रोम नहीं गए फिर भी वह 26 लोगों को नमस्कार कहते हैं

(ख) अध्याय 16 पहली जगह है जहाँ झूठे षिक्षकों के बारे में बताया गया है

(ग) यह प्रषंसा का संक्षिप्त गीत यूनानी हस्तलेखों में विभिन्न स्थानों में नज़र आता है।

यह सम्भव है कि पौलुस ने इसकी दो प्रतियाँ बनाई हों रोम के लिए 1–14 और 1–16 इफिसियों के लिए। सामान्य तौर पर इन कल्पनाओं का उत्तर पौलुस ने दिया है (1) तथ्य कि इनमें से बहुत से मसीही सेवक यात्रा करते थे; (2) तथ्य कि कोई भी यूनानी हस्तलेख रोमियों के 16 अध्याय के बिना नहीं है; और (3) सम्भावना कि झूठे षिक्षक 14:1–15:13 में सामने आए हैं।

16:25

''उनके लिए जो स्थिर कर सकते हैं''

यह और एक अद्भूत षीर्शक है जो परमेष्वर के लिए नए नियम में तीन बार प्रयोग किया गया है (इफि.3:20; यहू.1:24)।

ध्यान दीजिए कि परमेष्वर किस प्रकार विष्वासियों की सहायता करते हैं।

1) पौलुस का सुसमाचार

2) यीषु के बारे में प्रचार

3) परमेष्वर की उद्धार की योजना को प्रगट करने के द्वारा जो अब तक रहस्य रखा गया था।

विष्वासी सुसमाचार के ज्ञान के द्वारा सामर्थ पाते हैं। यह सुसमाचार सभी के लिए उपस्थित है।

''रहस्य''

परमेष्वर की मानवजाति के छुटकारे के लिए एकरूपी योजना है जो पतन से भी पहले की है (उत्प.3)। इस योजना के बारे में थोड़ी–थोड़ी जानकारी पुराने नियम में प्रगट है (उत्प.3:15; 12:3; निर्ग.19:5–6; और भविश्यद्वक्ताओं में सर्वव्यापि लेख)। पर यह पूरी बात स्पश्ट नहीं थी (1कुरि.2:6–8)। यीषु के आने के साथ ही और पवित्र आत्मा के द्वारा यह निष्चित होता गया। इस पूरे छुटकारे की योजना का वर्णन करने के लिए पौलुस ''रहस्य'' षब्द का प्रयोग करते हैं (1कुरि.4:1; इफि.2:11–3:13; 6:19; कुलु. 4:3; 1तीमु.1:9)। वह इसका प्रयोग विभिन्न तरह से करते हैं :

1) थोड़े समय के लिए इस्राएल की कठोरता ने अन्यजातियों को इसमें षामिल होने का मौका दिया। इस तरह से अन्यजातियों का मसीह में आना यहूदियों के लिए एक तकनीक का काम करेगा कि वे यीषु को भविश्यद्वाणी के मसीह के रूप में ग्रहण कर लें (रोमियों.11:25–32)।

2) सुसमाचार सारे राश्ट्रों पर प्रगट हुआ, जो मसीह द्वारा मसीह में षामिल हो गए (रोमियों.16:25–27; कुलु.2:2)।

3) दूसरे आगमन पर विष्वासियों की नई देह (1कुरि.15:5–57; 1थिस्स.4:13–18)।

4) मसीह में सभी वस्तुओं का संकलन (इफि.1:8–11)।

5) अन्यजातियाँ और यहूदी संगी उत्तराधिकारी हैं (इफि.2:11–3:13)।

6) मसीह और कलीसिया के बीच के नज़दिक के सम्बन्ध को विवाह के षब्दों में बयान किया गया है (इफि.5:22–33)।

7) अन्यजातिय वाचा के लोगों में षामिल किए गए और मसीह की आत्मा के अन्दर वास करने के द्वारा मसीह की समानता की परिपक्वता को प्रस्तुत करेंगे, जो है, पतित मानवजाति में नश्ट हुए परमेष्वर के स्वरूप (उत्प.1:26–27; 5:1; 9:6; कुलु.1:26–28) को पुनः स्थापित करना (उत्प.6:5, 11–13; 8:21)।

8) अन्तिम समय में मसीह–विरोधी (2थिस्स.2:1–11)।

9) 1तीमु.1:16 में षुरूवाती कलीसिया के रहस्य का सारांष मिलता है।

16:26

''अब प्रगट होकर''

यह रहस्य या परमेष्वर की योजना अब स्पश्ट रूप से सारी मानवजाति पर प्रगट हुई है। यह यीषु मसीह का सुसमाचार है (इफि.2:11–3:13)।

''और भविश्यद्वक्ताओं की पुस्तकों द्वारा''

परमेष्वर ने इस रहस्य को यीषु के कार्यों और व्यक्तित्व में प्रगट किया। यह पुराने नियम के भविश्यद्वक्ताओं द्वारा पहले ही कहा जा चुका था। नए नियम की कलीसिया की स्थापना, यहूदियों और अन्यजातिय विष्वासियों से, परमेष्वर की योजना में पहले से ही थी (उत्प.3:15; 12:3; निर्ग.19:5–6; यिर्म.31:31–34)।

''अनन्त परमेष्वर''

देखिए दिया गया विषेश षीर्शक।

विषेश षीर्शक : अनन्त

रॉबर्ट बी ग्रीडलस्टोन, अपनी पुस्तक, सीनोनीमस ऑफ द ओल्ड टैस्टामैन्ट, में ''अनन्त'' षब्द पर अच्छी टिप्पणी है :

''विषेशण *एओनिओस* अनन्त जीवन के सम्बन्ध में नए नियम में 40 से अधिक बार प्रयोग किया गया है, जिसकी सराहना कुछ तो वर्तमान वरदान और कुछ भविश्य के वायदे के रूप मे की जाती है। यह रोमियों.16:26 में परमेष्वर के अन्त रहीत अस्तित्व के लिए भी प्रयोग किया गया है और इब्रा.9:12, 13, 20 में मसीह के बलिदान के अन्त रहीत प्रभाव के लिए प्रयोग किया गया है और रोमियों.16:25; 2तीमु.1:9; तीत.1:2 में बीते हुए युगों के लिए प्रयोग किया गया है।

यह षब्द अनन्त आग के संदर्भ में भी प्रयोग किया गया है, मत्ती.18:8, 25, 41, यहू.1:7; अनन्त दण्ड, मत्ती.25:46; अनन्त न्याय और दण्ड, मरकुस.3:29; इब्रा.6:2; अनन्त विनाष, 2थिस्स.1:9। इन भागों में षब्द का अर्थ है अन्तिम, और विषेश रूप से प्रगट करता है कि जब यह न्याय हो जाएंगे, परीक्षा का समय, परिवर्तन, या किसी के भाग्य को पुनः प्राप्त करना, हमेषा के लिए चला जाएगा। हम भविश्य के बारे में बहुत ही कम जानते हैं, उस समय के मानवजाति के अस्तित्व के बारे में, और अविष्वास के नैतिक भार के बारे में, जैसा कि अनन्तता के प्रकाष में देखा जा सकता है। एक हाथ से यदि परमेष्वर के वचन में कुछ भी जोड़ना गलत है तो दूसरे हाथ में हम इसमें से कुछ घटा भी नहीं सकते, और यदि हम अनन्त दण्ड के सिद्धान्त के अधीन दृढ़ता से रहें जो वचन में दिया गया है, तो हमें प्रतिक्षा करनी होगी, मसीह में परमेष्वर के प्रेम के सुसमाचार से चिपके रहना होगा, इस बात को ध्यान में रखते हुए कि हमारी एक अन्धकारमय पृश्टभूमि है जिससे हम जीत नहीं पाए'' (पृश्ठ. 318–319)।

''सब जातियों को बताया गया है''

ज़ोर देने के उद्देष्य से यह यूनानी वाक्य में अन्त में रखा गया है। परमेष्वर ने सुसमाचार सभी के सामने प्रस्तुत किया है जो उनका उद्देष्य था (उत्प.3:15)।

एन ए एस बी ''विष्वास की आज्ञाकारीता की ओर अगुवाई की''

एन के जे वी ''विष्वास के आज्ञा पालन के लिए''

एन आर एस वी ''विष्वास की आज्ञाकारीता लाना''

टी इ वी ''विष्वास की आज्ञाकारीता की ओर अगुवाई की''

जे बी ''उन्हें विष्वास की आज्ञाकारीता में लाना''

इस वाक्यांष को समझने के कई तरीके हैं, यह षायद सम्बन्धित है (1) मसीह के बारे में सिद्धान्त; (2) मसीह पर भरोसा; या (3) सुसमाचार का आज्ञा पालन षुरू में और लगातार। आज्ञाकरीता धर्मषास्त्रीय तौर पर पष्चाताप और विष्वास के विचार से जुड़ी हुई है (मरकुस.1:15; प्रेरित.3:16, 19; 20:21)।

16:27

''अद्वैत बुद्धिमान परमेष्वर''

यह एक ही परमेष्वर के विचार की ओर संकेत कर रहा है (व्यव.6:4–5)। मसीहत में यहूदी धर्म के समान एक ही परमेष्वर हैं, यीषु का पूर्ण ईष्वरत्व और आत्मा सामर्थ के व्यक्तित्व की वजह सें हमारे पास त्रि–एकता है, त्रिएक।

''युगानुयुग महिमा होती रहे''

देखिए नोट 3:23।

''आमीन''

देखिए विषेश षीर्शक 1:25।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रत्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टीका लेखक पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने वाले।

1) पौलुस रोम की कलीसिया के इन तमाम लोगों को कैसे जानते थे जब वह कभी वहाँ गए ही नहीं?

2) क्या महिला सेविकाओं के लिए कोई बाइबलीय सबूत है (रोमियों.16:1; 1तीमु.3:11; 5:3–16)?

3) इस अध्याय की सूची में इतनी सारी महिलाओं के नाम होने का क्या तात्पर्य है?

4) झूठे षिक्षकों के संदेष और तरीको का वर्णन करो (रोमियों.16:17–18)।